गद्य रामायण



गोस्वामी तुलसीदास कृत

GADHYA RAMAYANA - SHRI RAMCHARITMANAS

गद्‌य रामायण

(श्री रामचरितमानस)

विशेष अंक

अनुक्रमणिका

- - - - - - - - -

<u>गद्य रामायण</u>

(श्री रामचरितमानस)

<u>विशेष अंक</u>

<u>**परिचय**</u>

मैं आप सभी भक्त-प्रेमी पाठकों के समक्ष "गद्य रामायण" (श्री रामचरितमानस) का यह विशेषांक प्रस्तुत करते हुए अत्यंत उत्साह एवं प्रसन्नता महसूस कर रहा हूँ।

भगवान राम के महान आदर्शों, भक्ति, प्रेम और ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने में महाकाव्य रामचरितमानस की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखित रामचरितमानस 966 दिनों में पूरा हुआ था।

एक मंत्र का जाप करके विधि-विधान से करने पर संपूर्ण रामायण का फल प्राप्त होता है। इसे एक्श्लोकिय रामायण कहा जाता है। - - “आदि राम तपोवनादि गमनं, हत्वा मृगं कांचनम्। वैदीहीहरणं जटायुमरणं, सुग्रीव संभाषणम्।”

घर में कैसे पढ़ी जाती है रामायण?

रामचरितमानस का नियमित पाठ करने के नियम; रामचरितमानस का पाठ करने से पहले चौकी पर सुंदर वस्त्र बिछाकर भगवान राम की मूर्ति स्थापित करें। सबसे पहले हनुमान जी का आह्वान करें और उन्हें राम कथा में आमंत्रित

करें। हनुमान जी का आह्वान करने के बाद श्री गणपति महाराज का आह्वान करके रामचरितमानस का पाठ शुरू करें।

अगर आप यह सब नहीं कर सकते तो सिर्फ मानसिक रूप से भगवान श्री राम का स्मरण और आह्वान करें, फिर हनुमानजी का ध्यान करके श्री राम चरित मानस पाठ का पाठ शुरू कर सकते हैं। यह उच्चतम मानसिक ध्यान पद्धति है। जिससे महान् दिव्य अनुभूति होती है तथा सर्वोत्तम आध्यात्मिक एवं सर्वोच्च परिणाम की प्राप्ति सहज ही हो जाती है। अर्थात् उचित इच्छाएँ बिना किसी प्रयास के स्वतः पूर्ण हो जाती हैं। ऐसा दूरदर्शी ऋषि-मुनियों, महात्माओं का अनुभव है।

इस कृति को लोकप्रिय रूप से तुलसी रामायण, तुलसीकृत रामायण, तुलसीदास रामायण या केवल मानस भी कहा जाता है। रामचरितमानस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "राम के कर्मों का सरोवर"; श्री रामचरितमानस 16वीं शताब्दी में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखा गया एक प्रसिद्ध महाकाव्य है। इसके महानायक मर्यादा पुरूषोत्तम राम हैं और इसकी भाषा अवधी है। यह पुस्तक अवधी साहित्य (हिन्दी साहित्य) की एक महान कृति मानी जाती है।

श्रीरामचरितमानस तुलसीदासजी की कीर्ति का सुदृढ़ स्तंभ है जिसके कारण वे विश्व के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में जाने जाते हैं। मानस की कथावस्तु, काव्यात्मक रूप, अलंकार, छंद योजना और उसका प्रयोगात्मक सौंदर्य, लोक संस्कृति का मनोवैज्ञानिक पक्ष और जीवन मूल्य अपने सर्वोत्तम रूप में हैं।

रामचरितमानस में 12,800 पंक्तियाँ हैं, जो 1,073 दोहों और सात काण्डों में विभाजित हैं। गोस्वामी तुलसीदास का रामचरितमानस सरल हिन्दीकालीन शैली में है। रामचरितमानस के चार अध्यायों में हिंदू धार्मिक दर्शन की जटिलताओं, सगुण और निर्गुण भक्ति के बीच विभाजन और राम के प्रति समर्पण में समर्पण शामिल है। श्लोकों की संख्या के अनुसार बालकाण्ड और किष्किन्धाकाण्ड क्रमशः सबसे बड़े और सबसे छोटे काण्ड हैं।

रामायण ऋषि वाल्मिकी द्वारा लिखी गई थी, जो भगवान राम के समकालीन थे। जबकि रामचरितमानस की रचना तुलसीदास ने की थी, जो मुगल सम्राट अकबर के समकालीन थे; रामचरितमानस 16वीं शताब्दी में 'कलियुग' में अवधी भाषा में लिखी गई थी।

रामचरितमानस ऋषि वाल्मिकी के महान महाकाव्य रामायण पर आधारित है। यह सिंधु-गंगा क्षेत्र का सबसे पवित्र ग्रंथ है, और दुनिया में सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली पवित्र पुस्तकों में से एक है। तुलसीदास जी ने श्री राम को एक आदर्श

पुरुष के रूप में चित्रित किया है, जिनमें सभी प्रकार के गुण मौजूद हैं। वे करुणा, दया, क्षमा, सत्य, न्याय, सदाचार, साहस, धैर्य और नेतृत्व जैसे गुणों से भरपूर हैं। वह एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा और मित्र हैं।

भारत में राम अत्यंत पूजनीय हैं और एक आदर्श पुरुष हैं तथा दुनिया के कई देशों जैसे नेपाल, थाईलैंड, इंडोनेशिया आदि में भी श्री राम को एक आदर्श के रूप में पूजा जाता है।

वैसे तो ओम और राम में कोई अंतर नहीं है, लेकिन अगर आप दोनों का उच्चारण लंबे समय तक करेंगे तो पाएंगे कि एक ही ध्वनि उत्पन्न हो रही है, लेकिन ओम शब्द उकार, इकार, मकार से बना है जबकि राम शब्द बना है। रकार, आकार, मकार से। प्रभु श्री राम ईश्वर है जिन्होंने मानव रूप में लीला रची। रामायण के मुख्य पात्र भगवान श्री राम को भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। जबकि लक्ष्मण जी को शेषनाग का अवतार बताया गया है।

भगवान श्री रामचन्द्र जी सम्पूर्ण जगत को आश्रय देने वाले हैं। श्री राम के बिना और कौन सी गति है? श्री राम कलियुग के सभी पापों का नाश करते हैं, इसलिए श्री रामचन्द्र जी को नमस्कार करना चाहिए। कालरूपी भयंकर सर्प भी श्री राम से डरता है। संसार में सब कुछ भगवान श्री राम के अधीन है। श्री राम के प्रति मेरी अखंड भक्ति बनी रहे।' हे राम! तुम मेरा सहारा हो.

रामकथा के इस महान मौलिक काव्य को संक्षिप्त रूप में रूपांतरित करते समय मुझे अद्भुत आनंद और आत्मिक संतुष्टि का अनुभव हुआ। गद्य संक्षिप्त रूप होने के बावजूद प्रयास यह था कि इसमें सभी प्रसंग, घटनाएँ और विवरण सुरक्षित रहें।

मैं तुलसी दासजी द्वारा लिखित रामचरितमानस की यह छोटी गद्य कविता और व्याख्या समर्पित करता हूं पर भगवान श्री राम के चरण. जय श्री राम।

अंत में मेरा सभी आदरणीय पाठकों से विनम्र निवेदन है कि इस विशेषांक को सच्ची श्रद्धा एवं भक्ति से पढ़कर इस ब्रह्माण्ड के सर्वोत्तम आध्यात्मिक एवं नैतिक ग्रन्थ, जो 'गद्य रामायण' के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है, से लाभ उठायें।

<u>कबीर</u> : कबीरा सो धन संचिये ; जो आगे को होय।
शीश चढ़ाये गाँठरी ; ले जात न देखा कोय।।

राम नाम लड्डू ; गोपाल नाम घी।
ॐ नाम मिश्री   ; तू घोल - घोल पी।

टिप्पणी : त्रुटियों को सुधारने का हरसंभव प्रयास किया गया है, तथापि, जहाँ भी त्रुटियाँ पाई जाएँ, कृपया क्षमा करें।

- संपादक

स्थान: हैदराबाद - तेलंगाना - भारत।
दिनांक: 21-06-2024.

OM SHRI GANESHAYA NAMAH :

गद्य रामायण

श्री रामचरित मानस

Goswami Tulsidas Krit

(गद्य विशेषांक)

प्रस्तुति: वी.सी.सिंह

श्री रामचरितमानस

पहला अध्याय

1/7 .बाल कांड

(1.बालकाण्ड **)**

गद्य रामायण

Ram Charit Manas

Shri Tulsidas Krit

(गद्य विशेषांक)

मैं अक्षरों से, अर्थ समूहों से, रसों से, छंदों से तथा मंगलमय सरस्वतीजी और गणेशजी की पूजा करता हूँ। मैं श्री पार्वती जी और श्री शंकर जी को श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक मानकर उनकी पूजा करता हूं, जिनके बिना सिद्ध लोग अपने हृदय में स्थित भगवान को नहीं देख सकते। मैं गुरुजी की पूजा करता हूं जो ज्ञानी, शाश्वत और शंकर के रूप में हैं, जिनकी हर जगह पूजा की जाती है। मैं श्री रामचन्द्रजी की प्रियतमा श्री सीताजी को नमस्कार करता हूँ, जो सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारक, संकटों का नाश करने वाली और सभी कल्याण देने वाली हैं।

स्वप्न की माया के समान यह सारा दृश्यमान जगत सत्य प्रतीत होता है और जिनके चरण ही भवसागर में तैरने की इच्छा रखने वालों के लिए एकमात्र सहारा हैं। मैं उन भगवान हरि की पूजा करता हूँ जो सभी कारणों से ऊपर (सभी कारणों के कारण और सर्वश्रेष्ठ) राम कहलाते हैं।

अनेक पुराणों, वेदों तथा तन्त्र शास्त्रों के अनुसार तथा जिसका उल्लेख रामायण में है तथा कुछ अन्य स्थानों से भी उपलब्ध है, तुलसीदासजी अपने अन्तःकरण की प्रसन्नता के लिये श्रीरघुनाथजी की कथा को अत्यन्त सुन्दर भाषा में विस्तार देते हैं। जिनका स्मरण करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं, वे अंकों के स्वामी तथा सुंदर हाथी के मुख वाले, बुद्धि राशि तथा शुभ गुणों के स्वामी (श्री गणेश) मुझ पर कृपा करें।

भगवान (नारायण) जो नीले कमल के समान काले हैं, जिनकी आंखें पूरी तरह से खिले हुए लाल कमल के समान हैं और जो सदैव क्षीरसागर में शयन करते हैं, वे

मेरे हृदय में निवास करें। जिनका शरीर पुष्प और चंद्रमा के समान है, जो पार्वती के प्रिय और कृपा के धाम हैं और जो गरीबों पर स्नेह रखते हैं, जो कामदेव (शंकरजी) को मारते हैं, वे मुझ पर कृपा करें।

मैं उन गुरु महाराज के चरण कमलों की वन्दना करता हूँ, जो कृपा के सागर और मानव रूप में श्रीहरि हैं और जिनके शब्द महामोह रूपी घने अंधकार को नष्ट करने के लिए सूर्य किरणों के समूह के समान हैं। मैं गुरु महाराज के चरण कमलों की पूजा करता हूं, जो अच्छे स्वाद, सुगंध और प्रेम के सार से भरे हुए हैं। यह अमरमूल (संजीवनी बूटी) का एक सुंदर चूर्ण है, जो रोगों के पूरे परिवार को नष्ट कर देता है।

वह राजा सुकृति (पवित्र पुरुष) के रूप में शिव के शरीर पर सुशोभित शुद्ध महिमा है और भक्त के मन रूपी सुंदर दर्पण की गंदगी को दूर करने वाली, सुंदर कल्याण और आनंद की जननी है।

श्री गुरु महाराज के चरणों और नखों की रोशनी रत्नों की रोशनी के समान है, जिसके स्मरण मात्र से हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। जिसके हृदय में वह प्रकाश आ जाता है जो अज्ञानता के अंधकार को नष्ट कर देता है, उसका महान भाग्य है। उनके हृदय में आते ही हृदय की निर्मल आंखें खुल जाती हैं और संसार रूपी रात्रि के दोष और दुख दूर हो जाते हैं और श्री राम के चरित्र के रत्न और माणिक, छिपे और प्रत्यक्ष, जहां कहीं भी हों, प्रकट हो जाते हैं।

जैसे कोई साधक सिद्धांजन को अपनी आंखों में रख लेता है तो सिद्ध और सुजान को धरती के अंदर पहाड़, जंगल और कई खदानें दिखाई देने लगती हैं। श्री गुरु महाराज के चरणों का रज कोमल एवं सुन्दर नयनामृत-अज्जन है, जो नेत्र दोषों का नाश करता है। उस अग्नि से विवेक-चक्षुओं को पवित्र करके संसार के बंधन से मुक्त करने वाले श्री राम के चरित्र का वर्णन करता हूं।

सबसे पहले मैं पृथ्वी के देवता ब्राह्मणों के चरणों की पूजा करता हूं, जो अज्ञान से उत्पन्न सभी संदेहों को दूर करने वाले हैं। फिर सबके मूलस्रोत संत समाज को प्रणाम करता हूं
सद्गुण, प्रेम के साथ सुन्दर आवाज के साथ।

संतों का चरित्र कपास के चरित्र (जीवन) के समान शुभ होता है, जिसका फल नीरस, उज्ज्वल और सात्विक होता है। (कपास की डोरी नीरस होती है, संत का चरित्र भी विषय-सुखों के प्रति आसक्ति नहीं रखता, इस कारण वह भी नीरस होता है, कपास उज्ज्वल होती है, संत का हृदय भी अज्ञान और पाप के अंधकार

से मुक्त होता है, इसलिए) उज्ज्वल है, और कपास में गुण (रेशे) हैं, इसी प्रकार संत का चरित्र भी गुणों का भंडार है, इसलिए वह गुणी है।

जैसे रुई में डूबा हुआ सूती धागा. यह अपना शरीर देकर छिद्रों को ढक देता है, या कपास की तरह काता, काता और बुना जा सकता है। जिस प्रकार कष्ट सहकर भी वह वस्त्र बनकर दूसरों के गुप्त स्थानों को ढक देता है, उसी प्रकार संत भी कष्ट सहकर दूसरों के छिद्रों (दोषों) को ढक देता है, जिससे उसे संसार में प्रशंसनीय प्रसिद्धि प्राप्त होती है। .

संतों का समाज आनंद और कल्याण से परिपूर्ण होता है, जो चलने वाला होता है महान की तीर्थयात्रा (प्रयाग) संसार में। जहाँ (उस संतसमाज रूपी प्रयागराज में) रामभक्ति रूपी गंगाजी की धारा है और सरस्वतीजी ब्रह्मविचार का प्रचार कर रही हैं। नियम और निषेध रूप में कर्म की कथाएँ (यह करो और यह मत करो) कलियुग की बाधाओं को हरने वाली सूर्य तनया यमुनाजी हैं और भगवान विष्णु और शंकरजी की कथाएँ त्रिवेणी रूप में सुशोभित हैं, जो सभी आनंद देती हैं और सुनते ही कल्याण हो जाता है।

[उस संत समुदाय की प्रार्थना में] किसी के धर्म में अटूट विश्वास अटूट है, और अच्छे कर्म उस तीर्थयात्री का समाज (परिकर) हैं। यह (संत समाज के रूप में प्रयागराज) सभी देशों में, हर समय सभी को आसानी से प्राप्त हो सकता है और आदरपूर्वक इसका सेवन करने से सभी कष्टों का नाश हो जाता है। वह तीर्थराज अलोकिक और अव्याख्य है तथा तत्काल फल देने वाला है; इसका असर सीधा होता है.

जो मनुष्य प्रसन्न मन से इस संत-समाज रूपी तीर्थराज के प्रभाव को सुनते और समझते हैं और फिर अत्यंत प्रेम से उसमें डुबकी लगाते हैं, वे इसमें रहते हुए चारों मोक्ष (धर्म, अर्थ, काम) फल प्राप्त कर लेते हैं। शरीर। वाल्मिकीजी, नारदजी और अगस्त्यजी ने अपनी कथा (जीवन वृत्तांत) अपने मुख से कही है। इस संसार में अनेक प्रकार के निर्जीव और चेतन जीव-जंतु हैं जो जल में रहते हैं, भूमि पर चलते हैं और आकाश में विचरण करते हैं।

उनमें से जिसने भी, जब भी, जहां भी, ज्ञान, प्रसिद्धि, सौभाग्य, महिमा और अच्छाई प्राप्त की है, उसे यह सब सत्संग का प्रभाव समझना चाहिए। इनकी प्राप्ति का वेद अथवा संसार में अन्य कोई उपाय नहीं है। सत्संग के बिना ज्ञान नहीं और श्री रामजी की कृपा के बिना ज्ञान नहीं। वह सत्संग आसानी से उपलब्ध नहीं है. अच्छी संगति ही खुशी और खुशहाली की जड़ है। सत्संग की सिद्धि (प्राप्ति) ही फल है और सभी साधन फूल हैं।

अच्छी संगति पाकर दुष्ट भी सुधर जाते हैं, जैसे पारसमणि के स्पर्श से लोहा सुहावना हो जाता है (सुंदर सोने में बदल जाता है)। परंतु देवयोग के प्रभाव से यदि कोई अच्छा व्यक्ति कभी बुरी संगत में पड़ जाता है तो वहां भी वह अपने गुणों का उसी प्रकार अनुसरण करता है जैसे मणि सांप के पीछे पड़ जाती है (अर्थात् जिस प्रकार मणि सांप के संपर्क में आने पर भी अपने गुणों का अनुसरण नहीं करती) उसके जहर को सोख लेता है और अपने प्रकाश के सहज गुण को नहीं छोड़ता, उसी प्रकार साधु पुरुष दुष्टों की संगति में रहकर भी दूसरों को प्रकाश देते हैं, दुष्टों पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता;

मैं उन संतों को नमस्कार करता हूँ जिनके मन में समता है, जिनके न कोई मित्र हैं और न शत्रु! जिस प्रकार अंजलि में सुंदर फूल रखे होते हैं, उसी प्रकार फूल तोड़ने वाले और उन्हें रखने वाले दोनों हाथों को समान सुगंध देते हैं [उसी प्रकार संत शत्रु और मित्र दोनों का समान कल्याण करते हैं।

संत तो सरल हृदय वाले और जगत के हितैषी होते हैं, उनके स्वभाव और प्रेम को जानकर मैं उनसे प्रार्थना करता हूँ कि कृपया मेरी विनम्र विनती सुनें और मुझे श्री रामजी के चरणों में प्रेम प्रदान करें। अब मैं उन दुष्टों को हृदय से प्रणाम करता हूं, जो अपने हित में लगे लोगों के प्रति भी प्रतिकूल व्यवहार करते हैं। जिनका एकमात्र लाभ दूसरों के कल्याण की हानि है, जो दूसरों के विनाश में आनंद और उनके पुनः बसने में दुःख पाते हैं।

वे हरि के रूप में पूर्णिमा के चंद्रमा के लिए राहु के समान हैं और हारा की प्रसिद्धिअर्थात जहां भी भगवान विष्णु या शंकर की महिमा का वर्णन किया जाता है, वे उसमें विघ्न डालते हैं। और दूसरों का बुरा करने में वह सहस्त्रबाहु के समान वीर होता है। जो दूसरों के दोषों को हजारों नेत्रों से देखते हैं और जिनका मन दूसरों के हित के लिए मक्खी के समान होता है, अर्थात जैसे मक्खी घी में गिरकर उसे खराब कर देती है और मर भी जाती है, उसी प्रकार दुष्ट लोग घी को खराब कर देते हैं। स्वयं को हानि पहुंचाकर दूसरों द्वारा किया गया कार्य। हैं।

जो तेज में अग्नि (दूसरों को जलाने वाली गर्मी) और क्रोध, पाप आदि में यमराज के समान हैं। वह कुबेर के समान अवगुणों से भरपूर है, जिसका उदय केतु (एक धूमकेतु) के समान है जो सभी के कल्याण को नष्ट कर देता है, और जो कुंभकर्ण की तरह सोने से बेहतर है। जैसे ओलों से खेत नष्ट हो जाते हैं और आप भी पिघल जाते हैं, उसी प्रकार वे दूसरों का काम बिगाड़ने के लिए अपना शरीर भी त्याग देते हैं। मैं दुष्टों को शेषजी के समान मानकर नमस्कार करता हूं, जो हजारों मुखों से बड़े क्रोध के साथ दूसरों के दोषों का वर्णन करते हैं।

पुनः, मैं उन्हें राजा पृथु (जिन्होंने भगवान की महिमा सुनने के लिए दस हजार कान मांगे थे) के समान मानते हुए नमस्कार करता हूं, जो दस हजार कानों से दूसरों के पापों को सुनते हैं। फिर जिन्हें सुरा (शराब) भी लाभदायक लगता है, उन्हें मैं इन्द्र के समान मानकर उनका आवाहन करता हूँ। इंद्र के लिए भी सुरनिक यानी देवताओं की सेना लाभकारी है।

जो सदैव कठोर वचन रूपी वज्र को प्रिय समझते हैं तथा दूसरों के दोषों को सहस्र नेत्रों से देखते हैं। दुष्टों की चाल यह है कि वे किसी का भी हित सुनकर ईर्ष्या करने लगते हैं, चाहे वह शत्रु हो या मित्र। ये जानकर ये शख्स प्यार से हाथ जोड़कर उनसे विनती करता है. मैंने अपनी ओर से निवेदन किया है, लेकिन वे अपनी ओर से कभी असफल नहीं होंगे। कौवों को बड़े प्यार से पालते हैं, लेकिन क्या वे कभी मांस खाना छोड़ सकते हैं?

मैं साधु और असंत दोनों के चरणों की वन्दना करता हूँ; दोनों ही दर्दनाक हैं; लेकिन इनके बीच कुछ मतभेद बताए गए हैं. अंतर इतना है कि एक (संत) बिछड़ते समय प्राण ले लेता है और दूसरा (संत) मिलते समय भयंकर कष्ट देता है। अर्थात् संतों का वियोग मृत्यु के समान दुःखदायी होता है; और असंतों/दुष्टों का मिलन भी उतना ही कष्टकारी होता है।

संसार में दोनों (संत और असंत) एक साथ जन्म लेते हैं; लेकिन जैसे कमल और जोंक एक साथ पैदा होते हैं, उनके गुण अलग-अलग होते हैं। कमल देखने और छूने से आनंद देता है, लेकिन जोंक शरीर का स्पर्श होते ही खून चूसने लगती है। साधु अमृत के समान है जो मृत्युलोक से मुक्ति दिलाता है और बुरी शराब के समान मोह, प्रमाद और जड़ता उत्पन्न करता है। दोनों को उत्पन्न करने वाला संसार रूप सागर एक ही है। शास्त्रों में अमृत और मदिरा दोनों की उत्पत्ति समुद्र मंथन से बताई गई है।

अच्छे और बुरे दोनों को अपने-अपने कर्मों के अनुसार अच्छाई, यश और बदनामी का धन मिलता है। अमृत, चंद्रमा, गंगा और ऋषियों तथा विष, अग्नि, कलियुग की पापों की नदी अर्थात् कर्मों का नाश करने वाली और हिंसा को नष्ट करने वाली नदी के गुण-अवगुणों को सभी जानते हैं; लेकिन जिसको जो अच्छा लगता है, वही अच्छा लगता है।

अच्छा केवल अच्छे को ही स्वीकार करता है और बुरा केवल बुरे को ही स्वीकार करता है। अमृत की प्रशंसा अमर बनाने के लिए और जहर की हत्या करने के लिए की जाती है। दुष्टों के पाप-दुर्गुणों की कथाएँ और संतों के गुणों की कथाएँ -

दोनों एक विशाल और अथाह महासागर हैं। इसी कारण कुछ गुण-दोषों का वर्णन किया गया है, क्योंकि उन्हें पहचाने बिना न तो उन्हें स्वीकार किया जा सकता है और न ही त्यागा जा सकता है। सभी अच्छे और बुरे ब्रह्मा द्वारा बनाए गए हैं, लेकिन गुण और दोषों पर विचार करने के बाद वेदों ने उन्हें अलग कर दिया है। वेद, इतिहास और पुराण कहते हैं कि ब्रह्मा की यह सृष्टि गुण और अवगुणों से परिपूर्ण है।

दुःख-सुख, पाप-पुण्य, दिन-रात, साधु-वैराग्य, सज्जन-अच्छे मनुष्य, दानव-देवता, ऊँच-नीच अमृत-विष, उत्तम जीवन (सुन्दर जीवन)-मृत्यु, माया-ब्रह्ममय, जीव-भगवान् , अमीरी-गरीबी. , दरिद्र-राजा, काशी-मगध, गलन्या-कर्मनाशा, मारवाड़-मालवा, ब्राह्मण-कसाई, स्वर्ग-नरक, राग-विराग, ये सभी चीजें ब्रह्मा की रचना में हैं। वेदों और शास्त्रों ने इनके गुण और दोषों का विभाजन किया है।

विधाता ने इस जड़-चेतन ब्रह्माण्ड को गुण-अवगुणों सहित रचा है; परंतु साधु रूपी हंस दोष रूपी जल को छोड़ देते हैं और गुण रूपी दूध का ही सेवन करते हैं। जब विधाता इस प्रकार का (हंसी जैसा) विवेक देता है, तब मन दोषों को छोड़कर गुणों में लग जाता है। समय-प्रकृति और कर्म की शक्ति के कारण, अच्छे लोग (साधु) भी कभी-कभी माया के चक्कर में पड़कर अच्छाई से चूक जाते हैं।

जिस प्रकार भगवान के भक्त अपनी भूलों को सुधार लेते हैं और उनके दुःख तथा दोषों को मिटाकर उन्हें शुद्ध यश प्रदान करते हैं, उसी प्रकार दुष्ट भी कभी-कभी उत्तम स्थिति प्राप्त करके अच्छा कार्य करते हैं; लेकिन इन्हें कभी भी तोड़ना नहीं चाहिए. जो अशुद्ध प्रकृति है वह मिटती नहीं। छद्मवेशी धोखेबाजों को तो भली भाँति (संत की भाँति) देखकर संसार पूजता है; लेकिन एक न एक दिन वे सामने आ ही जाते हैं; उनका छल अंत तक काम नहीं आता, जैसा कि कालनेमि, रावण और राहुक के साथ हुआ था।

साधु का वेश धारण करने पर भी उनका आदर उसी प्रकार होता है, जिस प्रकार जगत में जाम्बवंत और हनुमानजी का था। बुरी संगति से हानि होती है और अच्छी संगति से लाभ होता है, ऐसा शास्त्रों और वेदों में कहा गया है और यह बात सभी जानते हैं। धूल हवा के साथ आकाश की ओर उठती है और नीचे की ओर बहते पानी की सहायता से कीचड़ में मिल जाती है। साधु के घर के तोते और मैना राम-राम जपते हैं और साधु के घर के तोते और मैना गालियां देते हैं।

कुसंगति के कारण धुआँ कालिख कहलाता है, वही धुआँ [अच्छी संगति से] सुन्दर स्याही बन जाता है और पुराण लिखने के काम आता है तथा वही धुआँ

जल, अग्नि और वायु के संयोग से बादल बन कर दाता बन जाता है। दुनिया के लिए जीवन. ग्रह, औषधियाँ, जल, वायु ये सभी भी संसार में बुरी और अच्छी संगति पाकर अच्छे और बुरे पदार्थ बन जाते हैं। इसे केवल बुद्धिमान एवं विचारशील मनुष्य ही जान पाते हैं।

समय में अन्तर आ गया है (एक का नाम शुक्ल और दूसरे का कृष्ण था)। एक को मानते हुए बढ़ानेवाला चंद्रमा का और दूसरा उसके जैसा घटनेवाला, दुनिया ने एक को सौभाग्य दिया और दूसरे को अपयश। मैं संसार के समस्त जड़-चेतन प्राणियों को राममय मानकर सदैव हाथ जोड़कर उनके चरणकमलों की वन्दना करता हूँ।

मैं सभी देवताओं, दानवों, मनुष्यों, नागों, पक्षियों, भूतों, पितरों, गंधर्वों, किन्नरों तथा रात्रिचर प्राणियों को नमस्कार करता हूँ। अब सब लोग मुझ पर कृपा करें। चौरासी लाख योनियों में चार प्रकार के जीव (स्वेदज, अंडज, उद्धिज्ज, जरायुज) जल, पृथ्वी और आकाश में रहते हैं, उनसे परिपूर्ण इस संपूर्ण जगत को श्रीसीताराम मानकर मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूं।

कृपाकी खान मुझे अपना दास समझकर तुम सब लोग मिलकर छल-कपट छोड़कर दया करो। मुझे अपनी बुद्धि पर भरोसा नहीं है, इसलिये सबसे निवेदन करता हूँ। मैं श्रीरघुनाथजी के गुणों का वर्णन करना चाहता हूँ, परन्तु मेरी बुद्धि छोटी है और श्री रामजी का चरित्र अपरिमेय है। इसके लिए मुझे एक भी उपाय यानि रत्ती भर भी उपाय नहीं सूझ रहा है. मेरा मन और बुद्धि कमजोर है, लेकिन मेरी इच्छा राजा है.

मेरी बुद्धि बहुत कम है और मेरी इच्छाएँ बहुत ऊँची हैं; चाहत तो अमृत पाने की है, लेकिन दुनिया में थोड़ी सी छाछ भी नहीं है। सज्जन लोग मेरी धृष्टता क्षमा करेंगे और मेरी बचकानी बातें ध्यानपूर्वक (प्रेम सहित) सुनेंगे। उदाहरण के लिए, जब कोई बच्चा छोटे-छोटे शब्द बोलता है तो उसके माता-पिता प्रसन्न मन से उसे सुनते हैं। लेकिन कुछ कुटिल और दुष्ट मानसिकता वाले लोग भी होते हैं जो दूसरों के दोषों को आभूषण के रूप में धारण करते हैं।

सरस हो या अत्यंत नीरस, उनकी कविता किसे पसंद नहीं? परन्तु संसार में ऐसे सत्पुरुष बहुत नहीं हैं जो दूसरों की रचना सुनकर प्रसन्न होते हों, हे भाई! संसार में तालाबों और नदियों के समान मनुष्य भी अधिक हैं, जो जल पाकर अपनी ही बाढ़ से बढ़ते हैं (अर्थात् अपनी ही उन्नति से प्रसन्न रहते हैं)। समुद्र की भाँति कोई विरला सज्जन ही होता है जो पूर्णिमा के चाँद को देखकर (दूसरों की महिमा देखकर) उमड़ पड़ता है।

मेरी किस्मत छोटी है और मेरी इच्छा बहुत बड़ी है, लेकिन मेरा विश्वास है कि इसे सुनने के बाद अच्छे लोगों को सभी सुख मिलेंगे और दुष्ट लोग हँसेंगे, लेकिन दुष्टों की हँसी से मुझे ही फायदा होगा। मीठे गले वाली कोयल को कठोर कहा जाता है। जैसे बगुले हंसों को देखकर और मेंढ़क चिड़ियों को देखकर हंसते हैं, उसी प्रकार दुष्ट हृदय वाले शुद्ध वाणी पर हंसते हैं।

जिन्हें न काव्य का शौक है और न श्री रामचन्द्रजी के चरणों में प्रेम है, उनके लिए यह कविता एक सुखद परिहास का भी काम करेगी। एक तो यह भाषा की रचना है, दूसरे मेरी बुद्धि निर्दोष है; इससे वे हँसने योग्य हो जाते हैं, हँसने में उनका कोई दोष नहीं है।

जिनको न तो भगवान के चरणों में प्रेम है और न अच्छी समझ है, उन्हें यह कथा नीरस लगेगी। जिन लोगों को श्री हरि (भगवान विष्णु) और श्री हर (भगवान शिव) के चरणों में प्रेम है और जिनकी बुद्धि निंदा करने में सक्षम नहीं है। जो लोग श्रीहरि और हर में अथवा ऊँच-नीच में कोई भेद नहीं सोचते, उन्हें श्रीरघुनाथजी की यह कथा मधुर लगेगी।

सज्जन लोग इस कथा को सुनेंगे और अपनी सुन्दर वाणी से इसकी सराहना करेंगे, यह जानकर कि उनके हृदय श्री रामजी की भक्ति से भरे हुए हैं। मैं न तो कवि हूं, न वाक्य-विन्यास में कुशल हूं, मैं समस्त कलाओं और समस्त विद्याओं से रहित हूं। काव्य में विभिन्न प्रकार के अक्षर, अर्थ और अर्थ, अनेक प्रकार की छंद, भाव और रुचि में अत्यधिक अंतर तथा अनेक गुण-अवगुण होते हैं।

इनमें से काव्य-सम्बन्धी एक भी बात का ज्ञान मुझे नहीं है, मैं यह बात कोरे कागज पर लिख रहा हूँ और (शपथ लेकर) सत्य कह रहा हूँ। मेरी रचना सभी गुणों से रहित है; उसमें एक ही गुण है, जगद्सिद्ध। इस पर विचार करने के बाद अच्छी बुद्धि और शुद्ध ज्ञान वाले पुरुष इसे सुनेंगे। इसमें श्री रघुनाथजी का उदार नाम है, जो अत्यंत पवित्र है, वेदों और पुराणों का सार है, कल्याण का धाम है और दुष्टों का नाश करने वाला है, जिसे भगवान शिव पार्वतीजी सहित सदैव जपते हैं।

किसी अच्छे-अच्छे कवि की लिखी हुई अनोखी कविता भी राम के नाम के बिना अच्छी नहीं लगती। जिस प्रकार चाँद के समान मुख वाली सुन्दर स्त्री चाहे पूर्ण रूप से सुसज्जित क्यों न हो, वस्त्रों के बिना अच्छी नहीं लगती। इसके विपरीत बुद्धिमान लोग यह जानकर कि वे राम के नाम और यश से विभूषित हैं, यहाँ

तक कि कुकवि रचित कवि भी, जो सभी गुणों से रहित हैं, उन्हें आदरपूर्वक बोलते और सुनते हैं, क्योंकि संत, जैसे बीटल कारों, वे ही हैं जो गुणों को ही स्वीकार करते हैं।

यद्यपि मेरी इस रचना में काव्य का तनिक भी स्वाद नहीं है तथापि इसमें श्री रामजी का माहात्म्य दृष्टिगोचर होता है। मेरे मन में बस यही विश्वास है. अच्छी संगति में किसने महानता हासिल नहीं की है? आगर मिलाने से धुआं भी सुगंधित हो जाता है और अपनी प्राकृतिक कड़वाहट छोड़ देता है। मेरी कविता अश्लील अवश्य है, परंतु इसमें रामकथा जैसी अद्भुत बात का वर्णन है, जो जगत् के लिए कल्याणकारी है। ये भी अच्छा माना जाएगा.

तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीरघुनाथजी की कथा कल्याणकारी और कलियुग के पापों को दूर करने वाली है। मेरी अश्लील कविता की इस नदी की धारा पवित्र जल नदी (गंगाजी) की तरह टेढ़ी-मेढ़ी है। भगवान श्रीरघुनाथजी की सुन्दर महिमा से यह काव्य सुन्दर और सज्जनों के हृदय को सुखदायक हो जायेगा। श्मशान की अपवित्र राख भी श्री महादेवजी के शरीर के सान्निध्य में सुखदायक लगती है और स्मरण करने पर पवित्र हो जाती है।

श्री रामजी की कीर्ति के सान्निध्य में मेरी कविता सभी को अत्यंत प्रिय होगी, जैसे मलय पर्वत के सान्निध्य में लकड़ी का एक मात्र टुकड़ा [चंदन के रूप में] पूजनीय हो जाता है, तो क्या कोई लकड़ी की तुच्छता के बारे में सोचता है? श्यामा गाय भले ही काली होती है, लेकिन उसका दूध चमकीला और बहुत लाभकारी होता है। लोग इसे अमृत समझकर पीते हैं। इसी प्रकार श्रीसीता-रामजी का नाम भी कच्ची भाषा में होने पर भी बड़े-बड़े विद्वान बड़े चाव से गाते और सुनते हैं।

मणि, माणिक और मोती की छवि उतनी ही सुंदर होती है जितनी सांप, पहाड़ या हाथी की। राजा का राजमुकुट और एक युवती का शरीर पाकर ही ये सब और भी सुंदर हो जाते हैं। इसी प्रकार बुद्धिमान लोग कहते हैं कि सुकवि काव्य भी कहीं और उत्पन्न होता है और अन्यत्र महिमा पाता है (अर्थात् कवि की वाणी से उत्पन्न काव्य वहीं महिमा पाता है, जहाँ उसका विचार, प्रचार और उसमें बताये गये आदर्श को स्वीकार किया जाता है और उसका पालन किया जाता है)। कवि का स्मरण ऐसा करते ही उनकी भक्ति के कारण सरस्वतीजी ब्रह्मलोक छोड़कर पृथ्वी पर आ जाती हैं।

सरस्वती जी के द्वार पर आने की वह थकावट राम के चरित्र के सरोवर में स्नान कराये बिना अन्य लाखों उपायों से भी दूर नहीं हो सकती। कवि और विद्वान

हृदय में ऐसा विचार करके कलियुग के पापों को हरने वाले श्रीहरि की स्तुति करते हैं।

सांसारिक लोगों की प्रशंसा करने के बाद, सरस्वती को पछतावा होने लगा कि वह उसके बुलावे पर क्यों आई।

बुद्धिमान लोग हृदय को समुद्र के समान, बुद्धि को सीप के समान और सरस्वती को स्वाति नक्षत्र के समान कहते हैं। यदि उसमें महान विचारों रूपी जल की वर्षा हो तो वह मुक्तामणि के समान सुन्दर काव्य बन जाता है।

जो लोग कराल कलियुग में जन्मे हैं, जिनके कर्म कौवे के समान हैं और जिनका स्वरूप हंस के समान है, जो वेदों का मार्ग छोड़कर पाप के मार्ग पर चलते हैं, जो छल के अवतार हैं और पापों के भागी हैं कलियुग. संसार के ऐसे मनुष्यों में मेरी गिनती प्रथम स्थान पर होती है जो स्वयं को श्री रामजी का भक्त बताकर लोगों को ठगते हैं, जो धन (लोभ), क्रोध और काम के दास हैं तथा घमंडी, अभिमानी (धर्म की झूठी ध्वजा फहराने वाले-अहंकारी) हैं। और कपटपूर्ण कामों का बोझ ढोते हैं।

अगर मैं अपनी सारी कमियां बताने लगूंगा तो कहानी बहुत लंबी हो जाएगी और मैं इसे पूरा नहीं कर पाऊंगा. इसके साथ ही मैंने बहुत कम अवगुणों का वर्णन किया है। बुद्धिमान लोग कभी नहीं समझेंगे. मेरे विभिन्न अनुरोधों को समझते हुए इस कहानी को सुनने के बाद कोई भी मुझे दोष नहीं देगा। जो लोग इसके बाद भी संदेह करेंगे वे मुझसे भी अधिक मूर्ख और बुद्धि में गरीब हैं।

न मैं कवि हूं, न चतुर हूं; मैं अपनी बुद्धि के अनुसार श्री रामजी के गुण गाता हूँ। कहाँ श्रीरघुनाथजी का अपार चरित्र, कहाँ संसार में लगी मेरी बुद्धि॥

सुमेरु जैसे पर्वतों को उड़ा ले जाने वाली वायु से कपास की तुलना कैसे की जा सकती है? मेरा मन श्री रामजी को अनंत भगवानों - सरस्वतीजी, शेषजी, शिवजी, ब्रह्माजी, शास्त्र, वेद और पुराण - उन सभी को 'नेति-नेति' (ऐसा नहीं, ऐसा नहीं) कहकर सदैव स्तुति करता हूँ, ऐसा मानकर कथा रचने में बहुत संकोच करता है इस तरह, रास्ता पार करने के बाद)। चलो यह करते हैं।

यद्यपि सभी जानते हैं कि प्रभु श्री रामचन्द्रजी की प्रभुता ऐसी ही (अकथनीय) है, तथापि कहे बिना कोई नहीं रहता। इसमें वेदों ने ऐसा कारण बताया है कि स्तोत्र का प्रभाव कई प्रकार से बताया गया है। अर्थात्, कोई भी परमेश्वर की

महिमा का पूरी तरह से वर्णन नहीं कर सकता है; परन्तु जितना हो सके ईश्वर की स्तुति करनी चाहिए।

क्योंकि भगवान की स्तुति गाने का प्रभाव बहुत अनोखा होता है, इसका वर्णन शास्त्रों में विभिन्न प्रकार से किया गया है। ईश्वर की थोड़ी सी स्तुति भी व्यक्ति को भवसागर से सहज ही जोड़ देती है।

परमेश्वर, जो एक है, जिसकी कोई इच्छा नहीं है, जिसका कोई रूप और नाम नहीं है, जो अजन्मा है, जो सत्य और सर्वोच्च है और जो सर्वव्यापी और सर्वव्यापी है, वह वही भगवान है जिसने विभिन्न प्रकार की लीलाएँ की हैं दिव्य शरीर धारण करके. वह लीला तो भक्तों के हित के लिये ही है; क्योंकि ईश्वर अत्यंत दयालु और शरणागत लोगों का बड़ा प्रेमी है। जिनके मन में अपने भक्तों के प्रति बहुत प्रेम और दया है, जो जिस पर कृपा कर देते हैं उस पर फिर कभी क्रोध नहीं करते।

भगवान श्रीरघुनाथजी खोई हुई वस्तु को पुनः प्राप्त कराने वाले, दरिद्र-प्रेमी, सरल स्वभाव वाले, सर्वशक्तिमान और सबके स्वामी हैं। इस बात को समझकर बुद्धिमान लोग अपनी वाणी को शुद्ध बनाते हैं और श्रीहरि की महिमा का वर्णन करके शुभ फल देते हैं। इसी विचार से वाल्मिकी, व्यास आदि ऋषियों ने पहले हरिकी कीर्ति का गायन किया है। भाई ! मेरे लिए उस रास्ते पर चलना आसान होगा.'

यदि राजा बड़ी-बड़ी नदियों पर पुल बनवा दे तो छोटी-छोटी चींटियाँ भी उन पर चढ़कर बिना किसी प्रयास के उन्हें पार कर सकेंगी। इसी प्रकार ऋषियों के वर्णन की सहायता से मैं श्री राम के चरित्र का वर्णन आसानी से कर सकूंगा। इस प्रकार मैं अपने मन का बल दिखाकर श्रीरघुनाथजी की मनोहर कथा रचूँगा। व्यास आदि अनेक महान कवि हुए हैं, जिन्होंने श्रीहरि सुयश का बड़े आदर से वर्णन किया है।

मैं उन सभी (महान कवियों) के चरण कमलों में प्रणाम करता हूँ, वे मेरी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण करें। कलियुग के उन कवियों को भी मैं नमस्कार करता हूँ जिन्होंने श्रीरघुनाथजी के गुणों का वर्णन किया है। जो बहुत बुद्धिमान प्राकृत कवि हैं, जिन्होंने भाषा में हरि के चरित्रों का वर्णन किया है, ऐसे कवि। मैं सभी पाखंडों को त्यागता हूं और उन लोगों के प्रति अपना सम्मान व्यक्त करता हूं जो पहले यहां थे, जो अब मौजूद हैं और जो इसके बाद होंगे।

आप सभी प्रसन्न होकर मुझे यह वरदान दें कि ऋषि समाज में मेरे काव्य का आदर हो, क्योंकि मूर्ख कवि ही व्यर्थ में काव्य रचने का परिश्रम करते हैं जिसका आदर बुद्धिमान लोग नहीं कर पाते। यश, काव्य और धन वही अच्छे हैं जो गंगाजी की तरह सभी को लाभान्वित करें। श्री रामचन्द्रजी की कीर्ति अत्यन्त सुन्दर है (उससे सबका अनन्त कल्याण होता है), परन्तु मेरा काव्य अश्लील है। यही भ्रम है (अर्थात ये दोनों मेल नहीं खाते), इसी बात से मैं चिंतित हूं।

परन्तु हे कवियों! क्या आप कृपया यह चीज़ मुझे भी उपलब्ध करा सकते हैं? रेशम की सिलाई फटे कपड़ों पर भी सुन्दर लगती है। चतुर मनुष्य केवल उसी काव्य का आदर करते हैं, जो सरल हो तथा जिसमें शुद्ध चरित्र का वर्णन हो और जिसे सुनकर शत्रु भी अपना स्वाभाविक द्वेष भूलकर उसकी सराहना करने लगते हैं।

शुद्ध बुद्धि के बिना ऐसी कविता नहीं लिखी जा सकती और मेरी बुद्धि तो बहुत छोटी है। इसीलिए मैं बार-बार कहता हूं, हे कवियों! कृपया, ताकि मैं हरियश का वर्णन कर सकूं।

कवियों एवं विद्वानों! आप राम के चरित्र रूपी मानसरोवर के सुन्दर हंस हैं, कृपया मेरे बालक की विनती सुनें और मेरी सुन्दर रुचि देखकर मुझे आशीर्वाद दें।

मैं ऋषि वाल्मिकी के चरणकमलों की पूजा करता हूं, जिन्होंने रामायण की रचना की, जो खर (राक्षस) के साथ होने के बावजूद खर (कठोर) के विपरीत बहुत नरम और सुंदर है, और जो दूषण के साथ होने के बावजूद प्रदूषण यानी दोषों से मुक्त है। (राक्षस)।

मैं चारों वेदों की पूजा करता हूं, जो संसार सागर को पार करने के लिए जहाज के समान हैं और जो श्री रघुनाथजी की पवित्र महिमा का वर्णन करते समय स्वप्न में भी थकते नहीं हैं।

मैं ब्रह्माजी के चरणों की पूजा करता हूं, जिन्होंने भवसागर की रचना की है, जहां से एक तरफ ऋषि, चंद्रमा और कामधेनु के रूप में अमृत निकला और दूसरी तरफ दुष्ट मनुष्यों के रूप में जहर और शराब का उत्पादन हुआ। मैं समस्त देवताओं, ब्राह्मणों, विद्वानों, ग्रहों के चरणों की वन्दना करके हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि आप प्रसन्न होकर मेरी सभी सुन्दर मनोकामनाएँ पूर्ण करें।

फिर मैं सरस्वतीजी और देवनदी गंगाजी की पूजा करता हूं। दोनों पवित्र हैं और सुन्दर चरित्र वाले हैं। एक (गंगाजी) स्नान और जल पीने से पापों का नाश करती है और दूसरी (सरस्वतीजी) गुण और स्तुति के कहने और सुनने से अज्ञान का नाश करती है। जो मेरे गुरु और माता-पिता हैं, जो विनम्र और दैनिक दाता हैं, जो सीतापति श्री रामचन्द्रजी के सेवक, स्वामी और सखा हैं और जो मुझ तुलसीदासजी का हर प्रकार से बिना किसी कपट के कल्याण करते हैं, उन श्री महेश और पार्वती को मैं प्रणाम करता हूँ।

जिन शिव-पार्वती ने कलियुग को देखकर संसार के कल्याण के लिए शाबर मंत्र समूह की रचना की, जिन मंत्रों के अक्षर बेमेल हैं, जिनका न तो कोई उचित अर्थ होता है और न ही जप किया जाता है, फिर भी जिनका प्रभाव श्री की महिमा से स्पष्ट है शिवजी. वे उमापति शिवजी मुझ पर प्रसन्न होंगे और इस कथा (श्री रामजी की) को मद्‌दल में आनंद और प्रसन्नता का स्रोत बना देंगे। इस प्रकार पार्वतीजी और शिवजी दोनों का स्मरण करके और उनका प्रसाद ग्रहण करके मैं सच्चे मन से श्री राम के चरित्र का वर्णन करता हूँ।

भगवान शिव की कृपा से मेरी कविता उतनी ही सुंदर होगी जितनी रात चंद्रमा के साथ तारों से सुशोभित होती है। जो इस कथा को प्रेम और सावधानी से, समझकर कहेंगे और सुनेंगे, वे कलियुग के पापों से मुक्त होकर श्री रामचन्द्रजी के चरणों के प्रेमी बनेंगे और सुन्दर कल्याण में भाग लेंगे। यदि मैं सचमुच श्री शिवजी और पारबतीजी के आत्मप्रेम से प्रसन्न हूँ तो इस भाषा काव्य का जो प्रभाव मैंने कहा है, वह सब सत्य होना चाहिए।

मैं परम पवित्र श्री अयोध्यापुरी तथा कलियुग के पापों का नाश करने वाली श्री सरयू नदी की पूजा करता हूँ। फिर मैं अवधपुरी के उन नर-नारियों को नमस्कार करता हूँ जिनके प्रति प्रभु श्री रामचन्द्रजी का प्रेम थोड़ा नहीं है (अर्थात् बहुत है)। उन्होंने अपनी पुरी में रहने वाले लोगों से कहा; सीताजी की निन्दा करने वालों (धोबी तथा उसके समर्थक स्त्री-पुरुषों) के पाप समूह का नाश करके उन्हें शोकमुक्त कर अपने लोक (धाम) में बसाया। मैं कोसल्या के रूप में पूर्व दिशा की पूजा करता हूं, जिसकी प्रसिद्‌धि पूरे विश्व में फैल रही है।'

जहाँ से (पूर्व दिशा में कोसल्या के रूप में) रामचन्द्रजी के रूप में सुन्दर चन्द्रमा प्रकट हुआ, जो जगत् को सुख देने वाला तथा दुष्टरूपी कमलों को पाले के समान प्रदान करने वाला है॥ मैं सभी रानियों सहित राजा दशरथजी को सदाचार और सुन्दर कल्याण की मूर्ति मानती हूँ और मन, वचन और कर्म से उन्हें नमस्कार करती हूँ। वे मुझे अपने पुत्र का सेवक समझकर आशीर्वाद दें, जिसकी रचना

करके ब्रह्माजी को भी महिमा प्राप्त हुई और जो श्री रामजी के माता-पिता होने के कारण महिमा की सीमा है।

मैं अवध के राजा श्री दशरथ की पूजा करता हूं, जिनका श्री राम के चरणों में सच्चा प्रेम था, जिन्होंने दयालु प्रभु के वियोग होते ही अपने प्रिय शरीर को एक छोटे से तिनके की तरह छोड़ दिया। मैं अपने परिवार सहित राजा जनकजी को नमस्कार करता हूँ, जिनकी श्री रामजी के चरणों में अगाध प्रीति थी, जिसे उन्होंने योग और भोग में छिपा रखा था, परन्तु श्री रामचन्द्रजी के दर्शन करते ही वह प्रकट हो गया।

(भाइयों में) मैं सबसे पहले श्री भरतजी के चरणों को प्रणाम करता हूं, जिनके नियमों और व्रतों का वर्णन नहीं किया जा सकता और जिनका मन श्री रामजी के चरणकमलों में प्रभात के समान आकर्षित होता है और उनका साथ कभी नहीं छोड़ता। मैं शीतल श्री लक्ष्मणजी के चरणकमलों को प्रणाम करता हूँ। , सुन्दर है और भक्तों को सुख देने वाली है। जिनकी (लक्ष्मणजी की) कीर्ति विमल पताका में श्रीरघुनाथजी के रूप में ध्वजा को ऊँचा फहराने वाले खम्भे के समान थी।

जिन शेषजी के हजार सिर हैं और जो जगत के कारण हैं (हजारों सिरों पर संसार को धारण करते हैं), जिन्होंने पृथ्वी का भय दूर करने के लिए अवतार लिया है, गुणों की खान, सुमित्रानंदन श्री लक्ष्मण जी की कृपा सदैव बनी रहे मुझ पर प्रसन्न रहो. मैं श्री शत्रुघ्नजी के चरण कमलों को प्रणाम करता हूँ, जो अत्यंत वीर, विनम्र और श्री भरतजी का अनुसरण करने वाले हैं। मैं महावीर श्री हनुमान जी को प्रणाम करता हूँ, जिनकी कीर्ति का वर्णन स्वयं श्री रामचन्द्र जी ने (अपने मुख से) किया है।

मैं पवनकुमार श्री हनुमानजी को नमस्कार करता हूं, जो दुष्टों के जंगल को नष्ट करने के लिए अग्नि रूप हैं, जो ज्ञान के अवतार हैं और जिनके हृदय के आकार के महल में श्री रामजी धनुष-बाण धारण किए हुए रहते हैं। वानरों के राजा सुग्रीवजी, रीछों के राजा जाम्बवानजी, राक्षसों के राजा विभीषणजी और अंगदजी आदि उन सभी वानरों के सुंदर चरणों की मैं पूजा करता हूं, जिन्होंने हीन (पशु या राक्षस) शरीर में भी श्री रामचन्द्रजी को प्राप्त कर लिया है।

पशु, पक्षी, देवता, मनुष्य, दानव सहित जो श्री रामजी के निःस्वार्थ सेवक हैं, उन सभी के चरण कमलों की मैं वन्दना करता हूँ। मैं पृथ्वी पर सिर झुकाकर शुकदेवजी, सनकादि, नारदमुनि आदि सभी भक्तों और परम ज्ञानी ऋषियों को प्रणाम करता हूँ। हे ऋषियों! आप सभी कृपया मुझे अपना सेवक समझें।

राजा जनक की पुत्री, जगत जननी तथा श्री रामचन्द्र जी की प्रिया श्री जानकी की स्थिति; मैं दोनों चरण कमलों की पूजा करता हूँ, जिनकी कृपा से मुझे शुद्ध बुद्धि प्राप्त हो सकती है। फिर मैं अपने मन, वचन और कर्म से, कमल नेत्रों वाले, धनुष-बाणधारी, भक्तों के संकटों को नष्ट करने वाले और उन्हें सुख देने वाले, भगवान श्री रघुनाथजी के सर्वशक्तिमान कमल चरणों की पूजा करता हूं।

मैं श्रीसीतारामजी के चरणों की वन्दना करता हूँ, जो वाणी और उसके अर्थ में भिन्न हैं तथा पानी और पानी की लहरों के समान बोलते हैं, परन्तु वास्तव में एक ही हैं, जो दीन-दुःखियों को अत्यंत प्रिय हैं। मैं श्रीरघुनाथजी के 'राम' नाम की पूजा करता हूं, जो कृष्णु (अग्नि), भानु (सूर्य) और हिमकर (चंद्रमा) का कारण है यानी 'र', 'आ' और 'म' रूप का बीज है। वह 'राम' नाम ब्रह्मा, विष्णु और शिव का स्वरूप है। वह वेदों का प्राण है; निर्गुण, उपमा रहित और गुणों का भंडार।

वह कौन सा महान मंत्र है, जिसे महेश्वर श्री शिवजी जपते हैं और जिनके द्वार पर उपदेश काशी में मुक्ति का कारण है, और जिसकी महिमा गणेशजी जानते हैं, जो इस राम नाम के प्रभाव से सबसे पहले पूजे जाते हैं '. आदिकवि श्री वाल्मिकीजी राम नाम की महिमा जानते हैं, जो उल्टा नाम ('मरा', 'मरा') जपकर पवित्र हो गये। श्री शिवजी के यह वचन सुनकर कि एक राम नाम हजार नामों के समान है, पार्वती जी अपने पति (श्री शिवजी) के साथ सदैव राम नाम का जाप करती रहती हैं।

पार्वती जी के मन में नाम के प्रति ऐसा प्रेम देखकर श्री शिव जी प्रसन्न हो गये और उन्होंने स्त्रियों में मणि (पतियों में शिरोमणि) पार्वती जी को अपना रत्न बना लिया। अर्थात उसने उसे अपने शरीर में धारण कर लिया और उसे अपनी अर्धांगिनी बना लिया। श्री शिवजी नाम के प्रभाव को भली प्रकार जानते हैं, जिससे कालकूट विष ने उन्हें अमृत का फल दे दिया। श्रीरघुनाथजी की भक्ति वर्षा ऋतु है, तुलसीदासजी कहते हैं कि सबसे अच्छे सेवक धान हैं और 'राम' नाम के दो सुंदर अक्षर सावन और भादों के महीने हैं।

दोनों अक्षर मधुर और सुंदर हैं, जो अक्षर रूपी शरीर की आंखें हैं, भक्तों के प्राण हैं और सभी के लिए स्मरण करने योग्य और आनंद देने वाले हैं तथा जो इस लोक में लाभ और परलोक में जीविका प्रदान करते हैं। ; अर्थात् भगवान के दिव्य धाम में दिव्य शरीर सदैव भगवान की सेवा में लगा रहता है।

ये कहने, सुनने और याद करने में बहुत अच्छे (सुन्दर और मधुर) हैं; तुलसीदास उन्हें श्री राम और लक्ष्मण के समान ही प्रिय हैं। प्रीति उनका ('आर' और 'एम') अलग-अलग वर्णन करने में झिझकती हैं; अर्थात बीज मंत्र की दृष्टि से इनके

उच्चारण, अर्थ और फल में अंतर होता है। लेकिन ये जीवित प्राणी और जो अपने स्वभाव से एक साथ रहते हैं वे हमेशा एक दूसरे के साथ एकरूप और सुसंगत होते हैं।

ये दोनों पात्र नर और नारायण के समान सुन्दर भाई हैं, संसार के और विशेषकर भक्तों के रक्षक हैं। ये भक्तिरूपी सुन्दर स्त्री के कानों के लिये सुन्दर आभूषण हैं और जगत् के कल्याण के लिये शुद्ध चन्द्रमा और सूर्य हैं। ये सुंदर गति (मोक्ष) अमृत के स्वाद और तृप्ति के समान हैं, कछुए और शेषजी के समान हैं, ये पृथ्वी को धारण करने वाले हैं, भक्तों के मन रूपी सुंदर कमल में घूमने वाले भौंरों के समान हैं और ये यशोदाजी के लिए हैं जिह्वा के रूप में वे श्रीकृष्ण और बलरामजी के समान आनन्द देने वाले हैं।

समझने में नाम और नाम दोनों एक जैसे हैं, लेकिन दोनों एक-दूसरे से मालिक और नौकर जैसा प्यार रखते हैं। अर्थात् नाम और यश में पूर्ण एकता होने पर भी जैसे नौकर स्वामी के पीछे चलता है, वैसे ही प्रसिद्ध लोग नाम के पीछे चलते हैं। प्रभु श्री रामजी अपने 'राम' नाम का पालन करते हैं और नाम लेते ही वहाँ आ जाते हैं। नाम और रूप दोनों ही ईश्वर की उपाधियाँ हैं; ये (भगवान का नाम और रूप) दोनों अवर्णनीय, शाश्वत हैं और केवल एक सुंदर (शुद्ध भक्ति) बुद्धि के माध्यम से ही उनके दिव्य अविनाशी स्वरूप को जाना जा सकता है।

इनमें से कौन (नाम और रूप) बड़ा है और कौन छोटा है, यह कहना अपराध है। ऋषिगण इनके बारे में सुनकर स्वयं ही इनके गुणों का अन्तर (समायोजन) समझ जायेंगे। नाम के नीचे रूप दिखते हैं; नाम के बिना रूप का पता नहीं चलता। किसी भी विशेष रूप को उसका नाम जाने बिना पहचाना नहीं जा सकता, भले ही वह हथेली पर रख दिया गया हो, और यदि रूप देखे बिना भी नाम याद आ जाए, तो वह रूप हृदय में विशेष प्रेम के साथ आ जाता है।

नाम और रूप की गतिशील कथा (विशेषता कथा) अकथनीय है। इसे समझना सुखद है, लेकिन इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। नाम निर्गुण और सगुण के बीच एक सुंदर साक्षी है और एक चतुर व्याख्याता है जो दोनों का सच्चा ज्ञान देता है। तुलसीदासजी कहते हैं, यदि भीतर और बाहर दोनों ओर प्रकाश चाहते हो, तो मुख की जिह्वा रूपी देहली पर राम नाम रूपी रत्नमय दीपक रख दो।

ब्रह्मा द्वारा निर्मित इस प्रपन्न (दृश्य जगत) से अच्छी तरह मुक्त होकर, तपस्वी मुक्त योगी अपनी जीभ से इस नाम का जप करके सार के ज्ञान के दिन जागता है और नाम और रूप से रहित अद्वितीय, अवर्णनीय, अनंत ब्रह्म आनंद का अनुभव करता है। जो लोग ईश्वर के रहस्य (सच्ची महिमा) को जानना

चाहते हैं, वे (जिज्ञासु) जीभ से नाम जपकर भी उसे जान लेते हैं। [ऐश्वर्य चाहने वाले साधक, जो सांसारिक सिद्धियों की इच्छा रखते हैं, लोभ से नाम का जाप करते हैं और चेतन [आठ] सिद्धियों को प्राप्त कर सिद्ध हो जाते हैं।

किसी भी संकट से डरे हुए आनर्त भक्त जब नाम का जाप करते हैं तो उनके बड़े-बड़े संकट दूर हो जाते हैं और वे प्रसन्न हो जाते हैं। दुनिया में चार तरह की चीजें हैं: 1. अमीर - जो धन के लिए पूजा करते हैं। 2. आनर्त - जो संकट निवारण के लिए पूजा करते हैं, 3. जिज्ञासु - जो भगवान को जानने की इच्छा से पूजा करते हैं, 4. ज्ञानी - जो स्वाभाविक रूप से भगवान को तत्व से जानकर प्रेम से उनकी पूजा करते हैं, वे राम के भक्त हैं और ये चारों हैं पुण्यात्मा, पापरहित और उदार।

जो लोग सभी प्रकार के सुखों और मोक्ष की इच्छा से मुक्त हैं और श्री राम की भक्ति में लीन हैं, उन्होंने भी अपने मन को नाम में सुंदर प्रेम के अमृत के झील में मछली की तरह रखा है। अर्थात् वे नाम की मिठास का आनंद लेते रहते हैं और एक क्षण के लिए भी उससे अलग नहीं होना चाहते।

निर्गुण और सगुण ब्रह्म के दो रूप हैं। ये दोनों ही अनिर्वचनीय, अथाह, शाश्वत एवं अद्वितीय हैं। मेरी राय में नाम इन दोनों से बड़ा है, जिसने अपनी शक्ति से इन दोनों को वश में कर रखा है। सज्जन लोग इसे मेरे सेवक का अहंकार अथवा कोरी काव्यात्मक अभिव्यक्ति न समझें। मैं अपने विश्वास, प्रेम और रुचि के कारण बोलता हूं। निर्गुण और सगुण; दोनों प्रकार के ब्रह्म का ज्ञान अग्नि के समान है। निर्गुण उस अव्यक्त अग्नि के समान है जो लकड़ी के अन्दर तो है, परन्तु दिखाई नहीं देती; और सगुण प्रत्यक्ष अग्नि के समान है जो प्रत्यक्ष दिखाई देता है। मूलतः दोनों एक ही हैं; वे व्यक्त और अव्यक्त के अन्तर से ही भिन्न प्रतीत होते हैं।

इसी प्रकार निर्गुण और सगुण भी मूलतः एक ही हैं। इसके बावजूद दोनों को जानना बहुत मुश्किल है, लेकिन नाम से दोनों आसान हो जाते हैं। इसीलिए मैंने नाम को निर्गण ब्रह्म और सगुण राम से भी बड़ा कहा है, ब्रह्म सर्वव्यापक है, एक है, अविनाशी है; यह शक्ति, चेतना और आनंद का घन है।

ऐसे विकाररहित भगवान के हृदय में रहते हुए भी संसार के सभी प्राणी दीन-दुःखी हैं। नाम का निरूपण करने (नाम का वास्तविक रूप, महिमा, रहस्य और प्रभाव जानने) और भक्तिपूर्वक नाम का जाप करने से वही ब्रह्म उसी प्रकार प्रकट हो जाता है, जैसे रत्न का मूल्य जानने से। इस प्रकार नाम का प्रभाव

निर्गुण से कहीं अधिक होता है। अब मैं अपने मत के अनुसार कहता हूं कि सगुण नाम राम से भी बड़ा है।

भक्तों के हित के लिए श्री रामचन्द्रजी ने मानव शरीर धारण किया और स्वयं कष्ट सहकर संतों को प्रसन्न किया; लेकिन जो भक्त प्रेम से नाम जपते हैं, वे सहज ही आनंद और कल्याण के घर बन जाते हैं। श्री रामजी ने केवल एक तपस्विनी (अहिल्या) का उद्धार किया, परन्तु नाम ने करोड़ों दुष्टों की बिगड़ी हुई बुद्धि को सुधार दिया।

ऋषि विश्वामित्र के हित के लिए, श्री रामजी ने सुकेतु यक्ष को उसकी बेटी ताड़काकी और बेटे (सूबा) सहित मार डाला; परन्तु यह अपने भक्तों के दोषों, दुःखों और कष्टों का नाम है। "वह वैसे ही नष्ट कर देता है जैसे सूरज रात को नष्ट कर देता है। शिवाजी का धनुष तो श्री रामजी ने स्वयं तोड़ दिया, परंतु नमक प्रताप तो संसार के समस्त भयों को नष्ट करने वाला है।

भगवान श्री राम ने भयानक दण्डक वन को तो सुखमय बना दिया, परन्तु नाम ने असंख्य लोगों के हृदय को पवित्र कर दिया। श्रीरघुनाथजी ने राक्षसों के समूह को मार डाला, परंतु नाम ही कलियुग के समस्त पापों का नाश करने वाला है। श्रीरघुनाथजी ने शबरी, जटायु आदि श्रेष्ठ सेवकों को ही मुक्त किया, परंतु नाम ने असंख्य दुष्टों का उद्धार किया। नाम के गुणों की कथा वेदों में प्रसिद्ध है।

श्री रामजी ने सुग्रीव और विभीषण दोनों को अपनी सुरक्षा में रखा, यह तो कोई नहीं जानता लेकिन उन्होंने कई गरीबों पर दया की है। यह सुन्दर नाम शब्द संसार और वेदों में विशेष रूप से प्रकाशित है। श्री राम जी ने रीछ-वानरों की सेना इकट्ठी की और समुद्र पर पुल बनाने में कोई परिश्रम नहीं किया; लेकिन नाम लेते ही संसार-सागर सूख जाते हैं। सज्जनों! अपने मन में सोचो कि दोनों में से कौन बड़ा है.

श्री रामचन्द्रजी ने युद्ध में रावण को परिवार सहित मार डाला, फिर सीता सहित अपनी नगरी (अयोध्या) में प्रवेश किया। राम राजा बने, अवध उनकी राजधानी बनी, जिसकी स्तुति देवता और ऋषि-मुनि सुन्दर स्वरों से गाते हैं। परंतु सेवक (भक्त) प्रेमपूर्वक नाम स्मरण मात्र से बिना किसी प्रयास के मोह की प्रबल सेना पर विजय प्राप्त कर प्रेम में डूबे हुए अपने सुख में विचरण करते हैं; नाम के प्रसाद से उन्हें स्वप्न में भी कोई चिन्ता नहीं सताती।

इस प्रकार [निर्गण] ब्रह्म और [सगुण] राम नाम दोनों से बड़ा है। वह वरदान देने वालों को वरदान भी देते हैं। ऐसा हृदय में जानकर श्री शिवजी ने सौ करोड़

रामचरित्रियों में से इस 'राम' नाम को [तत्वतः चुनकर] स्वीकार किया है। नमः के प्रसाद के कारण भगवान शिव अविनाशी हैं और अशुभ रूप में होते हुए भी शुभ लक्षण वाले हैं। शुकदेवजी और सनकादि सिद्धों, मुनियों और योगियों के प्रसाद से ब्रह्मानंद का आनंद लेते हैं।

प्रल्हाद नामक नारदजी को जाना होगा। हरि सारे संसार को प्रिय हैं, हरि सबको प्रिय हैं और आप (श्री नारदजी) हरि तथा सबको प्रिय हैं। नाम जपने से भगवान ने उसे आशीर्वाद दिया, जिससे प्रल्हाद एक महान भक्त बन गया। ध्रुवजी ने पश्चाताप करके (विमाता के वचनों से दुःखी होकर) हरिनाम का जप किया और उसके तेज से अटल अद्वितीय स्थान (ध्रुवलोक) प्राप्त किया। हनुमानजी ने पवित्र नाम का स्मरण करके श्री रामजी को अपने वश में कर लिया है।

नीच अजामिल, गज और गणिका (वेश्या) भी श्रीहरि के नाम के प्रभाव से मुक्त हो गये। नाम का गुणगान कितना करूँ, राम नाम का गुणगान भी नहीं कर सकता। कलियुग में राम का नाम कल्पतरु (अभीष्ट वस्तु देने वाला) और कल्याण का निवास (मुक्तिका घर) है, जिसका स्मरण करने से भांग के समान (हीन) तुलसीदास तुलसी के समान पवित्र हो गये।

बात केवल कलियुग की ही नहीं है, चारों युगों में, तीनों कालों में और तीनों लोकों में जीव नाम जपकर ही दुःखों से मुक्त हुए हैं। वेद, पुरुण और संतों का मत है कि सभी गुणों का फल श्री रामजी या रामनाम में प्रेम है। पहले (सत्य) युग में भगवान ध्यान से, दूसरे (त्रेता) युग में यज्ञ से और द्वापर युग में पूजा से प्रसन्न होते हैं; परन्तु कलियुग केवल पाप की जड़ और गंदगी है, इसमें मनुष्य का मन पाप के सागर में मछली बन गया है; अर्थात् कोई पाप से कभी अलग नहीं होना चाहता; इससे ध्यान, यज्ञ और पूजा नहीं की जा सकती।

कराल (कलियुग) में इसका नाम ही कल्पवृक्ष है, जिसका स्मरण करने से संसार के समस्त जंजाल नष्ट हो जाते हैं। कलियुग में यह राम नाम मनोवांछित फल देने वाला, परलोक का परम हितैषी तथा इस लोक का माता-पिता है (अर्थात परलोक में भगवान का परमधाम देने वाला तथा पालन-पोषण करने वाला है) इस संसार में माता-पिता के समान हर तरह से रक्षा करता है)।

कलियुग में न कर्म है, न भक्ति है, न ज्ञान है; रामनाम ही एकमात्र आधार है. कलियुग रूपी पाखंड की खान को नष्ट करने के लिए रामनाम ही बुद्धिमान और समर्थ श्री हनुमानजी हैं। कलियुग हिरण्यकशिपु है और इसका जप करने वाले लोग प्रल्हाद के समान हैं; यह रामनाम देवताओं के शत्रु (कलियुग रूपी राक्षस) को मार डालेगा और इसका जप करने वालों की रक्षा करेगा।

किसी भी तरह से नाम जपने से, चाहे अच्छे भाव (प्रेम) से, बुरे भाव (घृणा) से, क्रोध से या आलस्य से, दसों दिशाओं में कल्याण होता है। उसी (परम हितकारी) रामनाम का स्मरण करके और श्री रघनाथजी को सिर झुकाकर मैं रामजी के गुणों का वर्णन करता हूँ। वे (श्री रामजी) मुझे हर प्रकार से सुधारेंगे; जिसकी दया करने से कोई नहीं मरता। राम से भी अच्छा स्वामी और मेरे जैसा निकृष्ट सेवक! इतना सब होते हुए भी उन दयालु लोगों ने स्वयं पर दृष्टि रखकर मेरा अनुसरण किया है।

अच्छे गुरु का यही तरीका लोक और वेदों में भी प्रसिद्ध है कि वह निवेदन सुनते ही प्रेम को पहचान लेते हैं। अमीर और गरीब, असंस्कृत और नगरवासी, विद्वान और मूर्ख, बदनाम, प्रसिद्ध, अच्छे और बुरे, सभी स्त्री-पुरुष अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार राजा की स्तुति करते हैं। और भगवान के अंश से उत्पन्न बुद्धिमान, बुद्धिमान, सदाचारी, दयालु राजा सबकी बात सुनकर और उनकी वाणी, भक्ति, विनम्रता और व्यवहार को पहचानकर, सुंदर (मीठी) वाणी से सभी का उनकी गरिमा के अनुसार सम्मान करते हैं।

सांसारिक राजाओं का यही स्वभाव है, कोसलनाथ श्री रामचन्द्रजी तो चतुर पुरुष हैं। श्री रामजी तो शुद्ध प्रेम से ही प्रसन्न होते हैं, परंतु मुझसे बढ़कर मूर्ख और मुर्ख संसार में कौन होगा? तथापि, दयालु श्री रामचन्द्रजी मेरे दुष्ट सेवक का प्रेम और हित अवश्य बनाये रखेंगे, जिसने पत्थरों को जहाज और बंदरों और भालुओं को बुद्धिमान मंत्री बना दिया।

सब मुझे श्री रामजी का सेवक कहते हैं और मैं भी कहता हूँ (बिना किसी शर्म या झिझक के) (ऐसा कहने वालों का विरोध नहीं करता); दयालु श्री रामजी यह आलोचना सहन कर लेते हैं कि श्री सीतानाथजी स्वामीका तुलसीदास के समान सेवक हैं। यह मेरा सबसे बड़ा दुस्साहस और दोष है, मेरा पाप सुनकर नरक ने भी अपनी नाक सिकोड़ ली है; अर्थात नर्क में भी मेरे लिए कोई जगह नहीं है.

ऐसा समझकर मैं अपने ही कल्पित भय से डरता हूं, परंतु प्रभु श्री रामचन्द्र जी ने इस (मेरी धृष्टता और दोष) पर अपने मन में भी ध्यान नहीं दिया। अवलोकन करने के बाद उन्होंने मेरी भक्ति और बुद्धिमत्ता की सराहना की। क्योंकि वाणी में भले ही बुरा हो (अर्थात् मैं अपने को ईश्वर का सेवक कहता रहूँ), परन्तु हृदय में अच्छाई होनी चाहिए। मैं मन में अपने को उनका सेवक बनने के योग्य नहीं समझता, अपने को पापी और दरिद्र समझता हूँ, यही भलाई है। दास के हृदय का हाल जानकर श्री रामचन्द्रजी भी प्रसन्न होते हैं।

भगवान अपने भक्तों द्वारा की गई गलतियों और भूलों को याद नहीं रखते (उन्हें भूल जाते हैं) और उनके दिलों की अच्छाइयों को सौ बार याद करते रहते हैं। जिस पाप के कारण उसने बाली को शिकारी की भाँति मारा था, उसी पाप के कारण सुग्रीव ने पुनः उस पर उसी प्रकार आक्रमण किया। विभीषण की भी यही मंशा थी, परंतु श्री रामचन्द्रजी ने अपने मन में इसका विचार तक नहीं किया। इसके विपरीत भरतजी से मिलते समय श्रीरघुनाथजी ने उनका आदर किया और राज्यसभा में उनके गुणों की प्रशंसा भी की।

वृक्ष के नीचे भगवान (श्री रामचन्द्रजी) हैं और शाखाओं पर बन्दर हैं (अर्थात कहाँ मर्यादा पुरूषोत्तम सच्चिदानन्दघन परमेश्वर श्री रामजी हैं और कहाँ वृक्षों की शाखाओं पर उछल-कूद करने वाले बन्दर हैं)। लेकिन उन्होंने अपने जैसे ऐसे बंदर भी बनाये. तुलसीदासजी कहते हैं कि श्री रामचन्द्रजी के समान पूज्य गुरु कहीं नहीं है। हे श्री रामजी! आपकी अच्छाई से सभी का कल्याण होता है अर्थात आपका परोपकारी स्वभाव सभी के लिए लाभकारी होता है। यदि यह सत्य है तो तुलसीदासजी की भी सदैव कृपा रहेगी।

इस प्रकार अपने गुण-दोष बताकर और फिर सबको सिर झुकाकर मैं श्री रघुनाथजी की निर्मल महिमा का वर्णन करता हूं, जिसके सुनने से कलियुग के पाप नष्ट हो जाते हैं। मुनि याज्ञवल्क्य जी ने मुनिश्रेष्ठ भारद्वाज जी को जो सुखद कथा सुनाई थी, वह मैं सुनाऊँगा; सभी सज्जनों को प्रसन्नता का अनुभव करते हुए उसे सुनना चाहिए।

भगवान शिव ने सबसे पहले इस मनोहर चरित्र की रचना की, फिर अपनी कृपा से यही चरित्र पार्वतीजी को सुनाया, भगवान शिव ने काकभुशुण्डजी को राम का भक्त और अधिकारी पहचान लिया। याज्ञवल्क्य ने इसे फिर काकभुशुण्डिजी से प्राप्त किया और फिर उन्होंने इसे भारद्वाजजी से गाया। वक्ता और श्रोता (याज्ञवल्क्य और भारद्वाज) दोनों समान आचरण और दृष्टि वाले हैं और श्रीहरि की लीला को जानते हैं।

हम अपने ज्ञान से तीनों कालों की बातों को हथेली पर रखे आँवले की भाँति (सीधे) जान लेते हैं। तथा जो सुजान के भक्त हैं (जो भगवान की लीलाओं के रहस्य को जानते हैं), वे इस चरित्र को भिन्न-भिन्न प्रकार से कहते, सुनते और समझते हैं।

फिर यही कहानी मैंने बराह-क्षेत्र में अपने गुरुजी से सुनी; परन्तु उस समय बचपन के कारण मैं बहुत अज्ञानी था, इसलिये उसे उस प्रकार (अच्छी तरह) नहीं समझा जाता था। श्रीरामजी की गूढ़ कथा के वक्ता (कहने वाले) और श्रोता

(श्रोता) दोनों ही ज्ञान से परिपूर्ण हैं और ज्ञान का खजाना हैं। फिर भी जब गुरुजी ने बार-बार कहानी सुनाई तो मुझे अपनी बुद्धि के अनुसार कुछ-कुछ समझ में आ गया। अब वही मैं भाषा में बनाऊंगा, जिससे मेरा मन संतुष्ट होगा।

मुझमें बुद्धि और विवेक की जो शक्ति होगी, वह हृदय में हरि की प्रेरणा के अनुसार कहूँगा। मैं अपने संदेह, अज्ञान और भ्रम को दूर करने वाली एक कहानी रचता हूं, जो संसार रूपी नदी को पार करने के लिए एक नाव है। रामकथा विद्वानों को विश्राम देती है, सभी मनुष्यों को प्रसन्न करती है और कलियुग के पापों का नाश करती है। राम कथा में कलियुग रूपी सर्प के लिए मोर है और विवेक रूपी अग्नि के प्राकट्य के लिए अरणी (मंथन की लकड़ी) है; अर्थात इस कथा से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

रामकथा: कामधेनु गाय कलियुग में सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली तथा सज्जनों के लिए सुंदर जीवनदायिनी बूटी है। यह पृथ्वी पर अमृत की नदी है, जो जन्म और मृत्यु के भय को नष्ट कर देती है और भ्रम रूपी मेंढकों को खाने वाली सर्प है। इस रामकथा में पार्वती (दुर्गा) राक्षसों की सेना आदि नरकों का नाश करने वाली तथा साधु-कुल और देवताओं का कल्याण करने वाली हैं। ये संत समाज रूपी क्षीर सागर के लिए लक्ष्मीजी के समान हैं और संपूर्ण जगत का भार धारण करने में अचल पृथ्वी के समान हैं।

यह संसार यमदूतों के मुख को काला करने के लिए यमुनाजी के समान है। ऐसा लगता है मानो काशी मुक्ति प्रदान करने के लिए ही है। वह श्री रामजी को तुलसी के समान प्रिय है और तुलसीदास के लिए हुलसी (तुलसीदासजी की माता) के समान हृदय से कल्याणकारी है। यह रामकथा शिवजी को नर्मदाजी के समान प्रिय है, समस्त सिद्धियों और सुख-संपत्ति की द्योतक है। सद्गुणों के रूप में देवताओं को जन्म देने और पालन-पोषण करने में माता अदिति के समान हैं। यह श्री रघनाथजी के प्रति भक्ति और प्रेम की चरम सीमा है।

तुलसीदासजी कहते हैं कि रामकथा मन्दाकिनी नदी है, सुन्दर (शुद्ध) मन चित्रकूट है, और सुन्दर प्रेम वह वन है जिसमें श्रीसीतारामजी निवास करते हैं। श्री रामचन्द्रजी का चरित्र सुन्दर है और साधुओं की विदुषी स्त्री का श्रृंगार सुन्दर है। श्री रामचन्द्रजी के गुण विश्व का कल्याण करने वाले तथा मुक्ति, धन, धर्म तथा परमधाम के दाता हैं।

वे ज्ञान, अभय और योग के लिये सद्गुरु हैं तथा संसार के भयानक रोगों को नष्ट करने के लिये देवताओं के चिकित्सक (अश्विनीकुमार) के समान हैं। ये ही श्रीसीतारामजी के प्रेम को जन्म देने वाले माता-पिता हैं तथा सम्पूर्ण व्रत, धर्म

और नियम के बीज हैं। ये भक्तों के मन रूपी वन में निवास करने वाले कलियुग के काम, क्रोध और पाप के हाथियों को मारने के लिए सिंह के बच्चे हैं।

वे भगवान शिव के पूजनीय और प्रिय अतिथि हैं और दरिद्रता की आग को बुझाने वाले मनोकामना पूर्ण करने वाले बादल हैं। विषय-वासना रूपी साँप के विष को उतारने के लिए मन्त्र और महारत्न हैं। ये माथे पर लिखी मुश्किल से मिटने वाली बुरी इबारत (धीमी नियति) को मिटाने वाले होते हैं। वह अज्ञान के अंधकार को दूर करने के लिए सूर्य की किरणों के समान है और सेवक के अनाज का पोषण करने के लिए बादल के समान है।

वह कल्पवृक्ष के समान है, इच्छित वस्तु देने में सर्वोत्तम है और सेवा करने में हरि हर के समान सहज और सुखद है। वे शरद ऋतु के सुन्दर आकाश को सुशोभित करने वाले तारों के समान हैं और श्री रामजी के भक्तों के लिए जीवन का धन हैं। सभी अच्छे कर्मों का फल महासुख के समान होता है। वे छल-कपट के बिना संसार का सच्चा हित करने में ऋषि-मुनियों के समान हैं। सेवकों के मन पूजा के लिए हंस के समान हैं और उन्हें पवित्र करने के लिए गंगा की लहरों के समान हैं।

श्री रामजी के गुणों का समुच्चय कलियुग के बुरे आचरण, कुतर्क, छल-कपट, अहंकार और पाखण्ड को उसी प्रकार जलाने के लिए है, जैसे भड़कती आग ईंधन के लिए होती है। रामचरित्र पूर्णिमा के चंद्रमा की किरणों के समान सभी को सुख देने वाला है, परंतु कुमुदिनी और चकोर जैसे सज्जनों के मन के लिए यह विशेष लाभकारी और अत्यंत लाभकारी है।

जिस प्रकार श्री पार्वती जी ने श्री शिव जी से प्रश्न किया था और जिस प्रकार श्री शिव जी ने विस्तारपूर्वक उसका उत्तर दिया था, मैं एक विचित्र कथा रचूँगा और गाकर वह सब कारण बताऊँगा। जिस किसी ने भी यह कहानी पहले नहीं सुनी है उसे इसे सुनकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए। जो ज्ञानी लोग इस विचित्र कथा को सुनते हैं उन्हें यह जानकर आश्चर्य नहीं होता कि संसार में रामकथा की कोई सीमा नहीं है (रामकथा अनन्त है)। उनके मन में ऐसी आस्था है. श्री रामचन्द्रजी के अनेक अवतार हुए हैं और करोड़ों-अनन्त रामायणें हैं।

कल्पभेद के अनुसार ऋषियों ने श्रीहरि के सुन्दर चरित्रों को अनेक प्रकार से गाया है। ऐसा सोचकर अपने हृदय में कोई संदेह न रखें और आदर तथा प्रेमपूर्वक इस कथा को सुनें। श्री रामचन्द्रजी अनन्त हैं, उनके गुण भी अनन्त हैं और उनकी कथाओं का विस्तार भी अनन्त है। अत: जिनके विचार शुद्ध हैं उन्हें यह कथा सुनकर आश्चर्य नहीं होगा।

सभी प्रकार के संदेहों को दूर करके और श्री गुरुजी के चरण कमलों का मुकुट अपने मस्तक पर धारण करके मैं एक बार फिर सभी से हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूं कि कथा की रचना में कोई दोष न निकाला जाए। अब मैं आदरपूर्वक भगवान शिव को सिर झुकाता हूं; श्री रामचन्द्रजी के गुणों की निर्मल कथा, मैं संवत् 1631 में हरि के चरणों में सिर रखकर इस कथा को प्रारम्भ करता हूँ। यह चरित्र चेत्र मास की नवमी तिथि मंगलवार को श्री अयोध्याजी में प्रकाशित हुआ था।

जिस दिन श्री रामजी का जन्म होता है, वेद कहते हैं कि उस दिन सभी तीर्थ वहाँ (श्री अयोध्याजी) आते हैं। राक्षस, नाग, पक्षी, मनुष्य, ऋषि और देवता सभी अयोध्या आते हैं और भगवान रघुनाथ की सेवा करते हैं। बुद्धिमान लोग जन्मोत्सव मनाते हैं और श्री रामजी के सुन्दर गुण गाते हैं।

सज्जनों के अनेक समूह उस दिन श्री सरयूजी के पवित्र जल में स्नान करते हैं और सुन्दर श्यामल श्रीरघुनाथजी का ध्यान करते हैं और मन ही मन उनके नाम का जप करते हैं। वेद और पुराण कहते हैं कि श्री सरयूजी के दर्शन, स्पर्श, स्नान और पान से पाप दूर हो जाते हैं। यह नदी अत्यंत पवित्र है, इसकी महिमा अपरंपार है, जिसे बुद्धिमान सरस्वती भी नहीं कह सकते।

यह यशस्वी अयोध्यापुरी श्री रामचन्द्रजी का परमधाम है, समस्त लोकों में विख्यात है और अत्यन्त पवित्र है। संसार में चार प्रकार (अंडज, स्वेदज, उद्धिज और जरायुज) के अनंत जीव हैं, उनमें से जो कोई भी अयोध्याजी में अपना शरीर त्यागता है, वह इस संसार में वापस नहीं आता है, वे जन्म के चक्र से मुक्त हो जाते हैं और मरो और भगवान के परमधाम में निवास करो।

इस अयोध्यापुरी को सब प्रकार से सुन्दर, सब सिद्धियों को देने वाली और कल्याण की खान समझकर मैंने यह पवित्र कथा प्रारम्भ की, जिसके सुनने से काम, मद और अभिमान नष्ट हो जायें। इसका नाम है रामचरितमानस, जिसे सुनते ही शांति मिलती है। मन रूपी हाथी काल के जंगल में जल रहा है, यदि वह इस रामचरितमानस के सरोवर के पास आ जाए तो प्रसन्न हो जाएगा।

यह रामचरितमानस ऋषि-मुनियों को प्रिय है, इस मनोहर एवं पवित्र मानस की रचना भगवान शिव ने की थी। यह तीनों प्रकार के दोषों, दुःख-दारिद्रय, कलियुग के कष्टों तथा समस्त पापों का नाश करने वाली है। श्री महादेवजी ने इसे रचकर अपने मन में रख लिया और अवसर पाकर पार्वतीजी से कहा। इससे भगवान

शिव इसे अपने हृदय में देखकर प्रसन्न हो गये और इसका सुंदर नाम 'रामचरितमानस' रख दिया।

मैं वही सुखदायी रामकथा कहता हूँ, हे सज्जनों! इसे आदर और ध्यान से सुनो. यह रामचरितमानस के समान है, जिस प्रकार इसकी रचना हुई और जिस कारण से इसका संसार में प्रचार हुआ, वही बात अब मैं श्री उमा-महेश्वर का स्मरण करके कथा में कहता हूँ। श्री शिवजी की कृपा से उनके हृदय में सुन्दर बुद्धि का विकास हुआ, जिससे तुलसीदास श्री रामचरितमानस के कवि बन गये। वह अपनी बुद्धि के अनुसार उसे सुन्दर बनाता है। लेकिन फिर भी, सज्जनों! आप ख़ूबसूरत दिल से सुनकर इसे ठीक कर सकते हैं।

जिस सगुण लीला का विस्तार से वर्णन किया गया है, वह राम रूपी जल की वही पवित्रता है, जो मलका को नष्ट कर देती है; और जिस प्रेम का वर्णन नहीं किया जा सकता वह है इस पानी की मिठास और सुंदर शीतलता। वह जल (राम-सुयशा रूप में) पुण्य रूपी धान के लिए लाभदायक है और श्री रामजी के भक्तों का जीवन है। वह पवित्र जल बुद्धि रूपी पृथ्वी पर गिरा और सिकुड़कर सुहावने कानों के मार्ग से होकर मन (हृदय) रूप ऊंचे स्थान को भरकर वहीं स्थिर हो गया। वही वस्तु पुरानी होकर सुन्दर, रुचिकर, शीतल और सुखद हो जाती है।

इस कथा में विचारपूर्वक विचार करने के बाद जो चार अत्यंत सुंदर और उत्कृष्ट संवाद (भुशुंडी-गरुड़, शिव-पार्वती, याज्ञवल्क्य-भारद्वाज और तुलसीदास और संत) रखे गए हैं, वे इस पवित्र और सुंदर सरोवर के चार सुंदर घाट हैं। सात कांड इस मानसिक सरोवर की सात सुंदर सीढ़ियां हैं, जिन्हें ज्ञान की आंखों से देखने पर मन प्रसन्न हो जाता है। श्रीरघुनाथजी के निर्गुण (प्राकृतिक गुणों से परे) और निर्बाध (नीरस) महिमा का वर्णन ही इस सुन्दर जल की अथाह गहराई है।

श्री रामचन्द्रजी और सीताजी का यश जल के समान अमृत के समान है। इसमें दी गई उपमाएँ लहरों का सुन्दर विलास हैं। सुंदर चतुर्भुज घने फैले हुए कमल के फूल हैं और कविता की नोकें सुंदर मोती पैदा करने वाली सुखद सीपियाँ हैं। सुंदर छंद, छंद और दोहे बहुरंगी कमलों के समूहों से सुशोभित हैं। अद्वितीय अर्थ, उच्च भावनाएँ और सुन्दर भाषा पराग (पुष्पराज), अमृत (पुष्परस) और सुगंध हैं।

अच्छे कर्मों का फल मधुमक्खियों की सुन्दर पंक्तियाँ हैं, ज्ञान, वैराग्य और विचार हंस हैं। काव्य की ध्वनि, उसके वक्ता, गुण और प्रजातियाँ अनेक प्रकार की सुन्दर मछलियाँ हैं। अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष - ये चार, वैज्ञानिकों की बुद्धि

कहती है, काव्य का सार, जप, तप, योग और त्याग - ये सभी इस झील के सुंदर जलीय जीव हैं।

सत्पुरुषों, संतों के गुण और श्री राम के नाम का गान विचित्र जलपक्षियों के समान है। इस झील के चारों ओर अमराई (आम के बगीचे) और भक्ति संतों का जमावड़ा है। ऐसा कहा जाता है कि यह वसंत ऋतु की तरह है। विभिन्न प्रकार से भक्ति का निरूपण तथा क्षमा, दया तथा नियंत्रण (इंद्रियग्रह) के मंडप लताएँ हैं। मन का निग्रह, यम (अहिंसा, सत्य, निःस्वार्थता, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह), नियम (शौच, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय और भगवान की भक्ति) उनके फूल हैं, ज्ञान फल है और प्रेम है श्रीहरि के चरण ही इस ज्ञानरूपी फल का रस हैं। ऐसा वेदों ने कहा है.

इसमें (रामचरितमानस) अन्य अनेक प्रसंगों की कथाएँ भी हैं, तोते, कोयल आदि रंग-बिरंगे पक्षियों का भी वर्णन है। जो लोग इन चरित्रों को ध्यानपूर्वक गाते हैं, वे इस तालाब के चतुर रखवाले हैं तथा जो स्त्री-पुरुष इसे सदैव आदरपूर्वक सुनते हैं, वे श्रेष्ठ हैं। देवताओं के पास यह सुंदर मन है। जो अत्यंत दुष्ट और कामुक हैं, वे अभागे बगुले और कौवे हैं, जो इस सरोवर के निकट नहीं जाते। क्योंकि यहां (मन की इस झील में) घोंघों और नारी शृंगार जैसी विषय-सुख की कहानियाँ नहीं हैं।

यही कारण है कि कौए और बगुले जैसे बेचारे लोग यहां आकर अपने मन में हार का अनुभव करते हैं। क्योंकि इस झील तक पहुंचने में कई कठिनाइयां आती हैं। श्री रामजी की कृपा के बिना यहाँ नहीं आ सकते थे। सबसे बुरी बुराई सबसे खराब मार्ग है; उन उपद्रवियों के शब्द बाघ, सिंह और साँप हैं। घरेलू कामकाज और घरेलू कामकाज की विभिन्न उलझनें विशाल, दुर्गम पहाड़ हैं।

मोह, मान और मान अनेक बीहड़ वन हैं और नाना प्रकार के कुतर्क भयानक नदियाँ हैं। जिनके पास भक्ति का साधन नहीं है और संतों की संगति नहीं है तथा जो श्रीरघुनाथजी में अनुराग नहीं रखते, उनके लिए यह मानस अत्यंत अप्राप्य है। अर्थात आस्था, सत्संग और ईश्वर भक्ति के बिना कोई भी इसे प्राप्त नहीं कर सकता।

भले ही कोई व्यक्ति कितना भी कष्ट सहकर वहां पहुंच जाए लेकिन वहां पहुंचते ही उसे नींद आ जाती है। हृदय में मूर्खता की भयंकर ठंडक महसूस होने लगती है, जिससे अभागा व्यक्ति वहां जाकर भी बच नहीं पाता। उसे उस झील में स्नान करने या पानी पीने की अनुमति नहीं है, लेकिन वह गर्व के साथ लौटता है। फिर

यदि कोई उनसे [वहां की स्थिति के बारे में] पूछने आता है, तो वे अपने दुर्भाग्य के बारे में बात करने के बजाय झील की आलोचना करके उन्हें समझाते हैं।

श्री रामचन्द्रजी सुन्दर कृपा दृष्टि से जिसे देखते हैं, उस पर ये सब विघ्न प्रभाव नहीं डालते (बाधा नहीं डालते)। वही इस सरोवर में आदरपूर्वक स्नान करता है और बड़े-बड़े भयानक त्रितापों (आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक ताप) से नहीं जलता। जिनका श्री रामचन्द्रजी के चरणों में सुन्दर प्रेम है, वे इस सरोवर को कभी नहीं छोड़ते। अरे भाई जिस किसी को इस सरोवर में स्नान करना हो तो उसे पूरे मन से सत्संग करना चाहिए।

मन के विचारों को हृदय की आँखों से देखने और उनमें गोता लगाने से कवि की बुद्धि शुद्ध हो गयी, हृदय आनंद और उत्साह से भर गया और प्रेम और आनंद की धारा उमड़ पड़ी। उसमें से काव्यरूपी वह सुन्दर नदी प्रवाहित हुई, जो श्री रामजी के यश के निर्मल जल से भरी हुई है। कबितरूपिणी मंगलों का शरीर है। इस (कबितारूपिणी नदी) का नाम सरयू है, जो समस्त सुन्दर मंगलों की मूल है। लोकमत और वेदमत इसके दो सुन्दर किनारे हैं।

तीन प्रकार के श्रोताओं का समाज इस नदी के दोनों किनारों पर स्थित कस्बे, गाँव और शहर हैं; और संतों का समागम ही समस्त सुन्दर मंगलमय आयोजनों की मूल अद्वितीय अयोध्याजी है। यश और कीर्ति रूपी सुन्दर सरयूजी रामभक्त रूपी गंगाजी में मिल गईं। उसमें श्री राम के साथ उनके छोटे भाई लक्ष्मण के युद्ध की पवित्र कीर्ति रूपी सुन्दर महानद स्वर्ण मिला हुआ था।

इन दोनों के बीच ज्ञान और वैराग्य रूपी भक्ति रूपी गंगा की धारा प्रवाहित हो रही है। तीनों तापों को डराने वाली यह तिमुहानी नदी राम रूप में समुद्र की ओर जा रही है। इसका (कीर्ति रूप में सरयू) मूल मानस (श्री रामचरित) है और यह [रामभक्ति के रूप में] गंगाजी में पाया जाता है, अत: यह सुनने वाले सज्जनों के मन को पवित्र कर देगा। बीच-बीच में तरह-तरह की विचित्र कहानियाँ मानो नदी तट के आसपास के जंगल और बगीचे हों।

श्री पार्वती और शिव की बारात इस नदी में अनेक प्रकार के असंख्य जलीय जीव-जन्तु रहते हैं। श्रीरघुनाथजी के जन्म की खुशी और बधाई ही इस नदी के भँवरों और लहरों की शोभा है। चारों भाइयों के बचपन के पात्र इसमें खिले आनंद के कमल हैं। महाराज श्री दशरथजी तथा उनकी रानियों तथा सम्बन्धियों के पुण्य (पुण्य) ही माया तथा जलपक्षी हैं॥

श्रीसीताजी के स्वयंवर की सुन्दर कथा इस नदी में परिलक्षित हो रही है। अनेक सुंदर विचारशील प्रश्न इस नदी की नावें हैं और उनके बुद्धिमान उत्तर चतुर नाविक हैं। इस कथा को सुनने के बाद आपस में जो चर्चा होती है वही इस नदी के किनारे यात्रा करने वाले यात्रियों के समाज के लिए उपयुक्त है। परशुरामजी का क्रोध इस नदी की भयंकर धारा है और श्री रामचन्द्रजी के महान वचन सुन्दर बाँधे हुए घाट हैं।

भाइयों सहित श्री रामचन्द्रजी के विवाह का उत्साह इस कथा-नदी की कल्याणकारी बाढ़ है, जो सबको सुख देती है। जो यह सुनकर और कहकर प्रसन्न और रोमांचित होते हैं, वे पुण्यात्मा हैं, जो प्रसन्न मन से इस नदी में स्नान करते हैं। श्री रामचन्द्रजी के राज्याभिषेक के लिये जो मंगलमय श्रृंगार किया गया था, वह ऐसा है मानो उत्सव के समय यात्रियों के समूह इस नदी पर एकत्र हुए हों। इस नदी के पीछे केकेयी की मूर्खता ही है, जिसके फलस्वरूप भारी विपत्ति उत्पन्न हुई।

असंख्य संकटों को शांत करने वाले भरतजी का चरित्र नदी तट पर की जाने वाली पूजा है। कलियुग के पापों और दुष्टों के अवगुणों का वर्णन इस नदी के जल की कीचड़ और बगुले और कौवे हैं। श्री रामचन्द्रजी के विवाह और समाज का वर्णन वसन्त ऋतु की हर्षोल्लास और मंगलमय ऋतु है। श्री रामजी की वन यात्रा कष्टदायक ग्रीष्म ऋतु की है और यात्रा की कथा ही कड़ी धूप और गर्मी की है।

राक्षसों के साथ होने वाला भीषण युद्ध ही वर्षा ऋतु है, जो देवकुल के धान के लिए सुंदर कल्याण लाने वाली है। रामचन्द्रजी के राज्य की प्रसन्नता, नम्रता और महिमा शुद्ध सुख देने वाली सुहावनी शरद ऋतु के समान है। सती-शिरोमणि श्री सीताजी के गुणों की कथा इस जल का शुद्ध एवं अद्वितीय गुण है। श्रीभरतजी का स्वभाव इस नदी की सुन्दर शीतलता है, जो सदैव एक समान रहती है और जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

चारों भाइयों का एक दूसरे को देखना, बोलना, एक दूसरे से मिलना, एक दूसरे से प्यार करना, हंसना और सुंदर भाई होना इस पानी की मिठास और खुशबू है। मेरी नम्रता, नम्रता और नम्रता इस सुन्दर और निर्मल जल के हल्केपन (अर्थात अत्यंत हल्के) से कम प्रकाशमान नहीं है। यह जल बड़ा अनोखा है, जिसके सुनने मात्र से शीतलता मिलती है और आशा की प्यास तथा मन का मैल दूर हो जाता है।

यह जल श्री रामचन्द्रजी के सुन्दर प्रेम को पुष्ट करता है तथा कलियुग के समस्त पापों तथा उनसे उत्पन्न दोष को दूर कर देता है। यह संसार के श्रम को

(जन्म और मृत्यु के रूप में) अवशोषित कर लेता है, इच्छाओं को संतुष्ट कर देता है और पाप, ताप, दरिद्रता और दोषों को नष्ट कर देता है। यह जल काम, क्रोध, नशा और मोह को नष्ट कर शुद्ध ज्ञान को बढ़ाता है। इसमें आदरपूर्वक स्नान करने और पीने से हृदय में रहने वाले सभी पाप और ताप स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं।

जिन्होंने इस रामरूपी बारात से अपने हृदय नहीं धोये, वे कायर कलिकाल द्वारा छले गये। जैसे प्यासा हिरण रेत पर पड़ने वाली सूर्य की किरणों से उत्पन्न हुए पानी को असली पानी समझकर पीने के लिए दौड़ता है और पानी न मिलने से दुखी होता है, उसी प्रकार वे जीव (कलियुग से धोखा खाए हुए) भी दुखी होंगे [वस्तुओं के पीछे भटकने से]। इस सुन्दर जल के गुणों का अपनी बुद्धि के अनुसार विचार करना, उसमें मन को स्नान करना और श्री भवानी-शंकर का स्मरण करना, (कवि तुलसीदास) एक सुन्दर कथा कहते हैं।

अब मैं श्रीरघुनाथजी के चरणकमलों को हृदय में धारण करके और उनका प्रसाद ग्रहण करके उन दोनों महर्षियों के मिलन का सुन्दर संवाद सुनाऊंगा। भरतद्वाज मुनि प्रयाग में रहते हैं, उन्हें श्री रामजी के चरणों में बड़ा प्रेम है। वह तपस्वी है, विरक्त मन वाला है, अच्छी इंद्रियों वाला है, दया में निहित है और दान के मार्ग में बहुत चतुर है। माघ में जब सूर्य मकर राशि पर आता है तो सभी लोग तीर्थराज प्रयाग आते हैं। देवता, किन्नर और मनुष्यों के समूह आदरपूर्वक त्रिवेणी में स्नान करते हैं। भारद्वाज जी का आश्रम अत्यन्त पवित्र, अत्यन्त प्रशंसनीय और बड़े-बड़े ऋषियों के हृदय को सुख देने वाला है।

तीर्थराज प्रयाग में स्नान करने के लिये जाने वाले ऋषि-मुनियों का समुदाय वहीं (भारद्वाज के आश्रम में) एकत्रित होता है। सुबह सभी लोग उत्साहपूर्वक स्नान करते हैं और फिर एक-दूसरे को भगवान के गुणों की कहानियाँ सुनाते हैं। इसमें ब्रह्म के निरूपण, धर्म के नियम और तत्वों के विभाग का वर्णन है तथा ज्ञान और वैराग्य से भगवान की भक्ति की बात कही गई है। इसी प्रकार पूरे माघ माह में लोग स्नान करते हैं और फिर सभी अपने-अपने आश्रम को चले जाते हैं। हर साल ऐसी ही बड़ी खुशी होती है. मकर स्नान करके ऋषिगण आनन्द मनाते हैं और चले जाते हैं।

एक बार पूर्ण मकराभर स्नान करने के बाद सभी भिक्षु अपने-अपने आश्रम को लौट गये। भारद्वाज जी ने परम ज्ञानी याज्ञवल्क्य के चरण पकड़कर उन्हें सुरक्षित रखा। आदरपूर्वक उनके चरण कमल धोये और उन्हें अत्यंत पवित्र आसन पर बैठाया। पूजा करने के बाद उन्होंने ऋषि याज्ञवल्क्य के सौभाग्य का वर्णन किया और फिर अत्यंत पवित्र और कोमल वाणी में बोले-

हे नाथ! मेरे मन में एक बड़ा संदेह है; वेदों के सभी तत्त्व आपके ही हाथ में हैं (अर्थात वेदों के तत्त्वों को जानने वाले होने के कारण आप ही मेरे संदेह का निवारण कर सकते हैं), परन्तु उस संशय को व्यक्त करते हुए मुझे भय और लज्जा आती है। डर इसलिए कि कहीं तुम्हें लगे कि वह मेरी परीक्षा ले रहा है, शर्म इसलिए कि इतनी उम्र बीत गई, अभी तक ज्ञान नहीं मिला और नहीं तो। यदि मैं ऐसा कहूँगा तो इससे बड़ी हानि होगी, क्योंकि मैं अज्ञानी बना हुआ हूँ।

हे प्रभो! ऐसी नीति संत कहते हैं और वेद, पुराण और संत भी यही बताते हैं कि गुरु से छिपने से हृदय में शुद्ध ज्ञान नहीं आता। यह सोचकर मैं अपनी अज्ञानता प्रकट करता हूँ। हे नाथ! कृपया सेवक पर दया करके इस अज्ञान का नाश करें। संतों, पुराणों और उपनिषदों ने रामनाम के अपार प्रभाव का गान किया है।

कल्याण स्वरूप, ज्ञान और गुणों के अवतार भगवान शंभु निरंतर राम नाम का जप करते रहते हैं। संसार में प्राणियों की चार जातियाँ हैं, वे सभी काशी में मरकर परम पद को प्राप्त करते हैं। हे मुनिराज! वह भी राम [नाम] की महिमा है, क्योंकि भगवान शिव कृपा करके काशी में मरने वाले जीवों को राम नाम का उपदेश देते हैं, जिससे उन्हें परम पद की प्राप्ति होती है। हे प्रभो ! मैं तुमसे पूछता हूं कि वह राम कौन है? हे धन्य! कृपया मुझे समझाएं।

एक राम अवधनरेश दशरथजी के कुमार हैं, उनका चरित्र जग विख्यात है। पत्नी के वियोग में उन्हें अत्यधिक दुःख हुआ और क्रोधित होकर उन्होंने युद्ध में रावण का वध कर दिया। हे नाथ! मेरा यह बड़ा भ्रम मिट जाय, इसके लिये आप वही कथा विस्तारपूर्वक सुनाइये। इस पर याज्ञवल्क्यजी मुस्कुराये और बोले, आप श्रीरघुनाथजी की प्रभुता को जानते हैं, आप मन, वचन और कर्म से श्री रामजी के भक्त हैं। मैं तुम्हारी चतुराई समझ गया. तुम श्री रामजी के रहस्यमय गुणों को सुनना चाहते हो; तभी तो तुमने ऐसा प्रश्न पूछा है मानो तुम बहुत मूर्ख हो।

हे पिता! तुम आदर और ध्यान से सुनो; मैं श्री रामजी की सुन्दर कथा कहता हूँ। प्रचंड अज्ञान ही विशाल महिषासुर है और उसका नाश करने वाली भयंकर कालीजी हैं, श्री रामजी की कथा। श्री रामजी की कथा चन्द्रमा की किरणों के समान है, जिसे मुनि रूपी चकोर सदैव पीते रहते हैं। पार्वतीजी ने भी ऐसी ही शंका की थी, तब महादेवजी ने उसका विस्तारपूर्वक उत्तर दिया था।

अब मैं अपनी बुद्धि के अनुसार वही उमा और शिवजी का संवाद कहता हूँ। जिस समय और जिस कारण से ऐसा हुआ, हे ऋषि! तुम सुनो, तुम्हारा दुःख दूर हो जायेगा। त्रेतायुग में एक बार भगवान शिव अगस्त्य ऋषि के पास गये। उनके साथ जगज्जननी भवानी सतीजी भी थीं। ऋषि उन्हें संपूर्ण जगत का ईश्वर मानते थे और उनकी पूजा करते थे। मुनिवर अगस्त्यजी ने विस्तार से रामकथा सुनाई, जिसे महेश्वर ने बड़े प्रसन्न होकर सुना। तब मुनि ने शिवजी से सुन्दर हरिभक्ति के विषय में पूछा और योग्य पाकर शिवजी ने भक्ति का [रहस्य सहित] वर्णन किया।

शिवजी कुछ दिन तक वहाँ रुके और श्रीरघुनाथजी के गुणों की कथाएँ सुनते रहे। फिर मुनि को विदा करके शिवजी दक्षकुमारी सतीजी के साथ अपने घर (कैलाश) चले गये। उन्हीं दिनों पृथ्वी का भार उतारने के लिए श्रीहरि ने रघुवंश में अवतार लिया था। उस समय, उस अमर भगवान ने अपने पिता के वचन के अनुसार राज्य छोड़ दिया था और एक तपस्वी या संत के रूप में दंडकवन में घूम रहे थे।

शिवजी मन ही मन विचार कर रहे थे कि मुझे भगवान के दर्शन कैसे हों। प्रभु ने गुप्त रूप से अवतार लिया है, मेरे ज्ञान से सभी को पता चल जायेगा। इन बातों से श्रोशंकरजी के हृदय में बड़ी अशांति होने लगी, परंतु सतीजी को यह रहस्य मालूम नहीं हुआ। तुलसीदासजी कहते हैं कि शिवजी के मन में भेद खुलने का भय तो था, परंतु दर्शन के लोभ से उनकी आंखें ललचा गईं।

रावण ने ब्रहमाजी से मनुष्य के हाथों अपनी मृत्यु मांगी थी। भगवान ब्रहमाजी के वचनों को सत्य करना चाहते हैं। यदि मैं निकट न जाऊँ तो मुझे बहुत पछताना पड़ेगा। भगवान शिव इसी प्रकार सोचते थे, परन्तु कोई भी युक्ति काम नहीं करती थी। मूर्ख (रावण) छल से सीताजी को हर ले गया। श्री रामचन्द्रजी के वास्तविक प्रभाव के बारे में उन्हें कुछ भी पता नहीं था। हिरण को मारकर श्रीहरि भाई लक्ष्मण सहित आश्रम में आये और आश्रम को खाली देखकर (अर्थात् सीताजी को वहां न पाकर) उनकी आँखों में आँसू भर आये।

श्रीरघुनाथजी मनुष्यों की भाँति दुःख से व्याकुल हैं और दोनों भाई सीता की खोज में वन में भटक रहे हैं। बिछड़ने का दर्द उन लोगों में साफ देखा गया, जिनका कभी मिलन या अलगाव नहीं हुआ। श्रीरघुनाथजी का चरित्र बड़ा विचित्र है, उन्हें बड़े-बड़े ज्ञानी लोग ही जानते हैं। विशेषतया जो मंदबुद्धि हैं वे आकर्षण के वश होकर अपने दिल में कुछ और ही समझते हैं।

उसी समय श्री शिवजी ने श्री रामजी को देखा और उनके हृदय में बड़ा हर्ष उत्पन्न हुआ। भगवान शिव ने उस सुन्दर समुद्र (श्री रामचन्द्रजी) को खुली

आँखों से देखा, परन्तु अवसर ठीक न होने के कारण उनका परिचय नहीं दिया। संसार को पवित्र करने वाले सच्चिदानंद की जय हो, ऐसा कहकर कामदेव को भस्म करने वाले श्री शिवजी चल पड़े। कृपालु भगवान शिव अपनी पत्नी के साथ बार-बार हर्ष से पुलकित होते हुए चले जा रहे थे।

उन्होंने राजपुत्र को सच्चिदानंद परधाम कह कर स्वागत किया और उसके सौंदर्य को देखकर वे प्रेम में ऐसे डूब गये कि अब तक हृदय में प्रेम करना बंद नहीं कर सके। क्या वह ब्रह्म जो सर्वव्यापक, मायारहित, अजन्मा, अदृश्य, इच्छारहित और भेदरहित है और जिसे वेद भी नहीं जानते, वह शरीर धारण करके मनुष्य बन सकता है?

देवताओं की भलाई के लिए मानव शरीर धारण करने वाले भगवान विष्णु भी भगवान शिव की तरह सर्वज्ञ हैं। क्या ज्ञान के भंडार, लक्ष्मी के स्वामी और राक्षसों के शत्रु भगवान विष्णु एक अज्ञानी व्यक्ति की तरह किसी स्त्री की खोज करेंगे? फिर भगवान शिव की बात भी झूठी नहीं हो सकती. यह तो सभी जानते हैं कि भगवान शिव सर्वज्ञ हैं। सती के मन में इस प्रकार का अपार संदेह उत्पन्न हो गया, उनके हृदय में किसी प्रकार भी ज्ञान का उदय नहीं हो सका।

हालाँकि भवानीजी ने खुलकर कुछ नहीं कहा, लेकिन अन्तर्यामी भगवान शिव सब कुछ जानते थे। उन्होंने कहा- हे सती! सुनो, तुममें स्त्री स्वभाव है। इस तरह का संदेह कभी भी मन में नहीं रखना चाहिए। ज्ञानी मुनि, योगी तथा सिद्ध जिनका शुद्ध मन से निरंतर ध्यान करते रहते हैं तथा वेद, पुराण तथा शास्त्र 'नेति-नेति' कहकर जिनकी कीर्ति गाते हैं, वही सर्वव्यापी, समस्त ब्रह्मांडों का स्वामी है। , भगवान श्री राम ने सनातन परम स्वतंत्र ब्रह्मा के रूप में अपने भक्तों के हित के लिए रचना की है। [अपनी इच्छा से] मैंने रघुकुल के रत्न के रूप में अवतार लिया है।

यद्यपि भगवान शिव ने कई बार समझाया, फिर भी सतीजी के हृदय में उनकी बात नहीं बैठी। तब महादेवजी ने मन में भगवान की माया की शक्ति जानकर मुस्कुराते हुए कहा- यदि तुम्हारे मन में बहुत संदेह है, तो जाकर परीक्षा क्यों नहीं ले लेते? जब तक तुम मेरे पास न लौट आओगे, मैं इसी बड़ी छाया में बैठा रहूँगा। अज्ञानजनित अपने इस भारी भ्रम को दूर करने के लिये तुम्हें अपने विवेक से सोच-विचारकर वैसा ही करना चाहिये। भगवान शिव की आज्ञा पाकर सती मन में सोचने लगीं, भाई! मुझे क्या करना चाहिए (परीक्षा कैसे लें)?

इधर भगवान शिव ने मन में सोचा कि दक्षिणा सातिका उनके कल्याण के लिए नहीं है। जब मेरे समझाने पर भी संदेह दूर नहीं होता तो यह स्पष्ट हो जाता है

कि विधाता उल्टा हो गया और अब सातिका सफल नहीं रही। ईश्वर ने जो योजना बनाई है वह घटित होगी। तर्क द्वारा किस शाखा का विस्तार करना चाहिए? [मन में] ऐसा कहकर शिवजी भगवान श्रीहरि का नाम जपने लगे और सतीजी उस स्थान पर चली गईं, जहां श्री रामजी सुख के धाम हैं।

मन में बार-बार विचार करके सती ने सीताजी का रूप धारण किया और उस मार्ग की ओर आगे बढ़ीं, जिधर से (सतीजी के विचार के अनुसार) मनुष्यों के राजा रामचन्द्रजी आ रहे थे। सतीजी का कृत्रिम भेष देखकर लक्ष्मणजी को आश्चर्य हुआ और उनके हृदय में बड़ी भ्रान्ति हुई। वह बहुत गंभीर हो गया और कुछ भी नहीं कह सका। बुद्धिमान लक्ष्मण भगवान रघुनाथजी के प्रभाव को जानते थे। सब कुछ देखने वाले और सबके हृदय जानने वाले देवाधिदेव श्री रामचड्ढाजी सती के कपट को समझ गये; सर्वज्ञ भगवान श्री रामचन्द्रजी ही वे हैं जिनके स्मरण मात्र से अज्ञान नष्ट हो जाता है।

स्त्री रज का प्रभाव तो देखो कि सतीजी वहाँ भी (उस सर्वज्ञ भगवान के सामने) छिपना चाहती हैं। श्री रामचन्द्रजी ने हृदय में अपनी माया का बल प्रकट करके हँसते हुए मन्द स्वर में कहा- तुम इस घने वन में अकेली क्यों घूम रही हो? शिवजी कहाँ हैं?

वह (चुपचाप) भगवान शिव के पास गयी; उनके हृदय में बड़ी चिंता हुई कि मैंने शंकरजी की बात नहीं मानी और अपनी अज्ञानता का दोष श्री रामचन्द्रजी पर लगाया है। अब मैं भगवान शिव को क्या उत्तर दूँगा? ऐसा सोचते-सोचते सतीजी के हृदय में भयंकर जलन उत्पन्न हो गयी।

श्री रामचन्द्रजी समझ गये कि सतीजी दुःखी हैं; फिर उसने अपना कुछ प्रभाव प्रकट किया और उन्हें दिखाया। रास्ते में जाते समय सतीजी ने कौतूहल से देखा कि सीताजी और लक्ष्मणजी सहित श्री रामचन्द्रजी आगे-आगे चले आ रहे हैं। [इस अवसर पर इसे सीताजी को दिखाया गया ताकि सतीजी श्री राम के सच्चे और आनंदमय स्वरूप को देख सकें, उनके मन में जो विरह और दुख के विचार थे वे दूर हो जाएं और वे प्रकृति में लौट आएं। तब उन्होंने (सतीजी ने) पीछे मुड़कर देखा तो श्री रामचन्द्रजी को भाई लक्ष्मणजी और सीताजी सहित सुन्दर पोशाक में देखा। वह जिधर भी देखती है, उधर ही भगवान श्री रामचन्द्रजी उपस्थित हैं और सिद्ध मुनिश्चवर उनकी सेवा कर रहे हैं।

सतीजी ने अनेक शिव, ब्रह्मा तथा विष्णु देखे, जो एक-दूसरे से अधिक शक्तिशाली थे। उन्होंने देखा कि सभी देवता भिन्न-भिन्न रूप धारण करके श्री रामचन्द्रजी के चरणों की पूजा कर रहे हैं। सेवा कर रहे हैं. उन्होंने असंख्य

अद्वितीय सती, ब्राह्मणी और लक्ष्मी के दर्शन किये। ब्रह्मा आदि देवता जिस भी रूप में थे, हमने उनकी सभी शक्तियों को अपने-अपने रूप में देखा।

सतीजी ने जहाँ-जहाँ रघुनाथजी को देखा, वहाँ-वहाँ शक्तियों सहित देवताओं की संख्या भी उतनी ही देखी। दुनिया में जीव-जंतुओं ने भी कई तरह की चीजें देखी हैं।
उन्होंने देखा कि देवता अनेक वेश बनाकर भगवान श्री रामचन्द्रजी की पूजा कर रहे हैं। परन्तु श्री रामचन्द्रजी का दूसरा रूप कहीं देखने को नहीं मिला। श्रीरघुनाथजी ने सीता सहित बहुत से लोगों को देखा, परन्तु उनके वेश अधिक नहीं थे।

सर्वत्र वही रघुनाथजी, वही लक्ष्मण और वही सीताजी - यह देखकर सती बहुत भयभीत हो गयीं। उसका दिल कांपने लगा और उसका पूरा शरीर बेहोश होने लगा। वह आंखें बंद करके सड़क पर बैठ गई। फिर जब दक्षकुमारी (सतीजी) ने आँखें खोलीं तो उन्हें वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर वह बार-बार श्री रामचन्द्रजी के चरणों में सिर नवाकर वहाँ गयी, जहाँ श्रीशिवजी थे।

जब वह निकट पहुंची तो श्री शिवजी ने हंसकर प्रश्न किया कि तुमने रामजी की परीक्षा कैसे ली, सब कुछ सच-सच बताओ। सतीजी ने स्वयं को श्रीरघुनाथजी का प्रभाव समझकर भय के मारे शिवजी से छिपते हुए कहा- हे स्वामिन, मैंने तो कुछ भी परीक्षण नहीं किया है। जैसे आपने प्रमाण दिया।

उन्होंने जो कहा वह झूठ नहीं हो सकता, यह मेरे मन में दृढ़ विश्वास है. तब भगवान शिव ने ध्यान किया और सती ने जो कुछ किया था वह सब समझ गये। तब उन्होंने श्री रामचन्द्रजी की माया को सिर झुकाया, जिसने उन्हें सती से भी झूठ बोलने की प्रेरणा दी। सुजान शिवजी ने मन में सोचा कि हरिकी की इच्छा रूपी भविष्य प्रबल है. यह जान कर कि सतीजी ने सीताजी का रूप धारण किया है, शिवजी को मन में बहुत दुःख हुआ। उन्होंने सोचा कि यदि मैं अब सती से प्रेम करूंगा तो भक्ति का मार्ग लुप्त हो जायेगा और यह बहुत बड़ा अन्याय होगा।

सती अत्यंत पवित्र है इसलिए उसे छोड़ना असंभव है और उससे प्रेम करना बहुत बड़ा पाप है। महादेवजी खुल कर तो कुछ नहीं कहते, परन्तु उनके हृदय में बड़ा दुःख है। तब भगवान शिव ने भगवान श्री रामचन्द्रजी के चरणकमलों में सिर झुकाया और जैसे ही उन्हें श्री रामजी का स्मरण आया, उनके मन में आया कि मैं सती के इस शरीर को पति-पत्नी के रूप में नहीं मिल सकता और भगवान शिव ने यह संकल्प कर लिया। उसका मन।

यह सोचकर शंकरजी स्थिरचित्त होकर श्रीरघुनाथजी का स्मरण करते हुए अपने घर (कैलाश) को चले गये। चलते समय आकाशवाणी हुई कि हे महेश! आपकी जय हो। आपके अतिरिक्त आपकी भक्ति के इतने अच्छे संकल्प की प्रतिज्ञा और कौन कर सकता है? श्री रामचन्द्रजी के भक्त आप शक्तिशाली और भगवान हैं। आकाशवाणी सुनकर सतीजी चिंतित हो गईं और कुछ संकोच के साथ उन्होंने शिवजी से पूछा-

वह दयालु है! बताओ, तुमने क्या वादा किया है? हे प्रभो! आप सत्य के धाम और गरीबों पर दया करने वाले हैं। यद्यपि सतीजी ने बहुत कुछ पूछा, परन्तु त्रिपुरारि शिवजी कुछ न बोले। सतीजी ने मन ही मन अनुमान किया कि सर्वज्ञ शिवजी सब कुछ जानते हैं। मैंने भगवान शिव को धोखा दिया, ईर्ष्या के कारण ही स्त्री मूर्ख और मूर्ख बन जाती है।

प्यार का खूबसूरत तरीका देखिए कि दूध में मिला पानी भी दूध के बराबर बिकता है; परन्तु फिर कपट की खटास आते ही पानी अलग हो जाता है (दूध फट जाता है) और स्वाद (प्यार) चला जाता है। वृषकेतु को चिंतित जानकर भगवान शिव ने उसे प्रसन्न करने के लिए सुंदर कथाएँ सुनाईं। इस प्रकार रास्ते में तरह-तरह की कहानियाँ सुनाते हुए विश्वनाथ कैलाश पहुँचे।

वहाँ फिर भगवान शिव अपने वचन को याद करके एक बड़े वृक्ष के नीचे पद्मासन में बैठ गये। भगवान शिव ने अपना प्राकृतिक रूप धारण कर लिया। उनकी अखण्ड एवं विशाल समाधि स्थापित की गई। तब सतीजी कैलाश पर रहने लगीं। उसके हृदय में बड़ा दुःख हुआ। इस रहस्य के बारे में किसी को कुछ नहीं पता था. एक-एक दिन एक युग की भाँति बीत रहा था। सतीजी के हृदय में प्रतिदिन एक नया और भारी विचार उठता रहता था कि वे इस दुःख सागर से कब पार होंगी। मैंने श्रीरघुनाथजी का अपमान किया और फिर अपने पति की बात को झूठ समझा।

विधाता ने मुझे इसका प्रतिफल दिया, मैंने जो कुछ उचित किया; परन्तु हे विधाता! अब यह तुम्हारे लिये ठीक नहीं जो शंकर से विमुख होकर भी मुझे जीवित रखे हुए हो। भाभी के हृदय में ग्लानि का लेश भी नहीं। विदुषी सतीजी ने मन में श्री रामचन्द्रजी का स्मरण किया और कहा- हे प्रभु! यदि आप दयालु कहलाते हैं और वेदों ने आपकी स्तुति गाई है कि आप दुःखों का नाश करने वाले हैं, तो मेरी आपसे हाथ जोड़कर विनती है कि आप शीघ्र ही इस शरीर को त्याग दें।

यदि मुझे भगवान शिव के चरणों में प्रेम है और मेरा प्रेम व्रत मन, वचन और कर्म (आचरण) में सच्चा है, तो हे सर्वद्रष्टा प्रभु! सुनो और तुरंत कोई ऐसा उपाय करो जिससे मेरी मृत्यु सुनिश्चित हो जाए और पति के त्याग की यह असह्य विपत्ति अनायास ही दूर हो जाए।

इस प्रकार दक्षसुता सतीजी अत्यंत दुःखी हुईं, उन्हें इतना भयंकर दुःख हुआ कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। सत्तासी हजार वर्ष बीत जाने पर अमर भगवान शिव ने अपनी समाधि खोली। शिवजी राम नाम का स्मरण करने लगे, तब सतीजी को एहसास हुआ कि अब जगत के स्वामी (शिवजी) जाग गये हैं। उन्होंने जाकर भगवान शिव के चरणों में प्रणाम किया। भगवान शिव ने उन्हें बैठने के लिए सामने आसन दिया। भगवान शिव हरि के बारे में प्रेमपूर्ण कहानियाँ सुनाने लगे।

उसी समय दक्ष प्रजापति का जन्म हुआ। ब्रह्मा जी ने दक्ष को हर प्रकार से सक्षम समझकर उन्हें प्रजापतियों का नायक बना दिया। जब दक्षिणा को इतनी बड़ी शक्ति प्राप्त हुई तो उसके हृदय में बहुत अभिमान हो गया। इस संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति पैदा नहीं हुआ जो सत्ता पाकर खुश न हो।

दक्ष ने सभी ऋषियों को बुलाया और वे एक बड़ा यज्ञ करने लगे। लाक्षण ने यज्ञ में भाग लेने में सक्षम सभी देवताओं को आदरपूर्वक आमंत्रित किया। विष्णु, ब्रह्मा और महादेवजी को छोड़कर सभी देवता अपने-अपने विमान सजाकर प्रस्थान कर गये।

सतीजी ने आकाश में अनेक प्रकार के सुन्दर विमान उड़ते देखे। दिव्य सुंदरियाँ मधुर गीत गा रही हैं, जिन्हें सुनकर ऋषियों का ध्यान भटक जाता है। सतीजी ने पूछा (देवताओं के विमानों में जाने का कारण) तब शिवजी ने सब कुछ बता दिया। अपने पिता के यज्ञ की बात सुनकर सती कुछ प्रसन्न हुईं और सोचने लगीं कि यदि महादेवजी आज्ञा दें तो इसी बहाने अपने पिता के घर जाकर कुछ दिन रहूँ।

क्योंकि उसके हृदय में अपने पति द्वारा त्याग दिये जाने का बड़ा दुःख था, परन्तु वह इसे अपनी गलती समझकर कुछ नहीं कहती थी। अन्त में सतीजी भय, संकोच और प्रेम से भीगी हुई सुन्दर वाणी से बोलीं- हे प्रभु! मेरे पिता के घर पर एक बड़ा उत्सव है। यदि आपकी आज्ञा हो तो हे कृपाधाम! मैं आदरपूर्वक उनसे मिलने जाऊँगा।

शिवजी बोले- तुमने अच्छा कहा, मुझे भी अच्छा लगा. लेकिन उन्होंने निमंत्रण नहीं भेजा, यह अनुचित है.' दक्ष ने अपनी सभी लड़कियों को बुलाया है; परन्तु हमारी नफरत के कारण वे तुम्हें भी भूल गये। हे भवानी! बिना बुलाये जायेंगे तो न शिष्टता रहेगी, न स्नेह, न आदर।

यद्यपि इसमें कोई संदेह नहीं है कि मित्र, गुरु, पिता और गुरु के घर बिना बुलाए भी जाना चाहिए, फिर भी ऐसे व्यक्ति के घर जाना चाहिए जो उसका विरोध करता हो। भगवान शिव ने अनेक प्रकार से समझाया, परन्तु अपने वचन के कारण सती को समझ नहीं आया। तब भगवान शिव ने कहा कि यदि तुम बिना बुलाए जाओगे तो हमारी राय में यह अच्छी बात नहीं होगी।

भगवान शिव ने बहुत प्रयत्न किये, परन्तु जब सती किसी प्रकार न रुकीं, तब त्रिपुरारी महादेवजी ने उन्हें अपने मुख्य गणों सहित विदा कर दिया। जब भवानी अपने पिता (दक्ष) के घर पहुँची तो दक्ष के डर के कारण किसी ने उनका स्वागत नहीं किया, केवल एक माँ ने उनसे आदरपूर्वक मुलाकात की। दक्ष ने उनका हाल-चाल नहीं पूछा, उलटे सतीजी को देखकर उनके सारे अंग खिल उठे। तब सैटिन ने जाकर यज्ञ देखा तो शिवजी का भाग कहीं भी दिखाई नहीं दिया।

वह समझ गया कि भगवान शिव ने क्या कहा था। सातिका का हृदय जल उठा क्योंकि उसने इसे अपने स्वामी का अपमान समझा। पिछला दुःख (पति के त्यागने का) उसके हृदय में उतना गहरा नहीं था जितना इस बार (पति के अपमान के कारण) था। वैसे तो संसार में अनेक प्रकार के भयंकर दुःख हैं, पर जातीय अपमान सबसे कठिन है। यह समझकर सतीजी को बहुत क्रोध आया। माँ ने उन्हें अनेक प्रकार से सांत्वना दी।

परंतु वह भगवान शिव का अपमान सहन नहीं कर सके, इससे उनके हृदय को कोई ज्ञान नहीं हुआ। तब उसने हठपूर्वक सारी सभा को डांटा और क्रोध भरे शब्द कहे-
हे पार्षदों और सभी भिक्षुओं! सुनना। यहां जिन-जिन लोगों ने शिवजी की निन्दा की है या उनकी बात सुनी है, उन्हें तुरन्त ही इसका फल मिलेगा और मेरे पिता दक्ष को भी घोर पश्चाताप होगा।

जहां कोई संत, भगवान शिव और भगवान विष्णु की निंदा सुनता है, वहां ऐसी आचार संहिता है कि यदि वश में हो तो निंदा करने वाले की जीभ काट लेना चाहिए, अन्यथा कान बंद करके भाग जाना चाहिए वहाँ से। त्रिपुर राक्षस का वध करने वाले भगवान महेश्वर संपूर्ण जगत की आत्मा हैं, जगत के पिता हैं। और ये

सभी के लिए फायदेमंद होते हैं. मेरे मंदबुद्धि पिता उनकी आलोचना करते हैं; और मेरा यह शरीर दक्षाशाही के वीर्य से उत्पन्न हुआ है।

अत: मस्तक पर चंद्रमा को धारण करने वाले वृषकेतु शिव को हृदय में धारण करके मैं तुरंत ही इस शरीर को त्याग दूंगी। यह कहकर सतीजी ने अपने शरीर को योगाग्नि से भस्म कर दिया। पूरे यज्ञ में हाहाकार मच गया। सातिका की मृत्यु सुनकर भगवान शिव के अनुयायी यज्ञ को नष्ट करने लगे। मुनिथर भृगुजी ने यज्ञ का विध्वंस देखकर उसकी रक्षा की।

जब भगवान शिव को यह सब समाचार मिला तो उन्होंने क्रोधित होकर वीरभद्र को भेजा। उन्होंने वहां जाकर यज्ञ का विध्वंस कर दिया और सभी देवताओं को उचित दंड दिया। दक्ष का जगत्मसिद्ध वही आंदोलन है जो शिव के विरुद्ध है। इस इतिहास को पूरी दुनिया जानती है इसलिए मैंने इसका संक्षेप में वर्णन किया है.

मरते समय सती ने भगवान श्रीहरि से यह वरदान मांगा कि उन्हें हर जन्म में भगवान शिव के चरणों में भक्ति प्राप्त हो। इस कारण उन्होंने हिमाचल के घर जाकर पार्वती के शरीर से जन्म लिया। जब से उमाजी का जन्म हिमाचल में हुआ, सारी उपलब्धियाँ और सम्पत्ति वहीं फैल गई। ऋषियों ने सर्वत्र सुन्दर आश्रम बनाये और हिमाचल ने उन्हें उपयुक्त स्थान दिये।

उस सुन्दर पर्वत पर अनेक प्रकार के नये-नये वृक्ष फूलों और फलों से परिपूर्ण हो गये तथा अनेक प्रकार के रत्नों की खानें वहाँ प्रकट हो गईं। नदियों में पवित्र जल बहता है और पशु-पक्षी सभी प्रसन्न रहते हैं। सभी जीवित प्राणी वहीं हैं. उन्होंने अपनी स्वाभाविक नफरत छोड़ दी और पहाड़ पर सभी लोग एक-दूसरे से प्यार करने लगे। पार्वती जी के आने से पर्वत उतना ही सुन्दर हो रहा है जितना राम की भक्ति पाकर भक्त सुन्दर हो जाता है। उस (पर्वत राजा) के घर में प्रतिदिन नये-नये मंगल उत्सव होते रहते हैं, जिनकी महिमा ब्रह्मादि लोग गाते हैं।

जब नारदजी ने यह सब समाचार सुना तो वे जिज्ञासावश हिमाचल के घर आये। पर्वतराज ने उनका बहुत आदर-सत्कार किया और उनके चरण धोकर उन्हें अच्छा आसन दिया। तब उसने अपनी पत्नी सहित ऋषि के चरणों में सिर झुकाया और उनके चरणों का जल पूरे घर में छिड़का। हिमाचल ने अपने सौभाग्य की प्रशंसा की और अपनी पुत्री को बुलाकर ऋषि के चरणों में रख दिया।

[और कहा--] हे ऋषि! आप सर्वज्ञ एवं सर्वज्ञ हैं, आपकी पहुंच सर्वत्र है। इसलिए आप मन ही मन सोच-विचारकर लड़की के गुण-दोष बताएं। नारद मुनि हँसे और

रहस्य से भरी हुई मृदु वाणी में बोले- आपकी पुत्री सभी गुणों की खान है। वह स्वभाव से सुंदर, विनम्र और बुद्धिमान है। इनके नाम उमा, अम्बिका और भवानी हैं। वह कन्या सर्वगुण सम्पन्न है, वह सदैव अपने पति की प्रिय रहेगी। इसका सुहाग सदा अटल रहेगा और इससे इसके माता-पिता को यश मिलेगा।

सारे संसार में इसकी पूजा होगी और इसकी सेवा करने से कोई वस्तु दुर्लभ नहीं होगी। इसका नाम स्मरण करके संसार की स्त्रियाँ पतिव्रता की तलवार की धार पर चढ़ जायेंगी। हे पर्वतराज! आपकी बेटी साफ़ सुथरी है. अब इसके जो दो-चार अवगुण हैं, वे सुनो। निकम्मा, सम्मानहीन, माता-पिताहीन, उदासीन, निःसंदेह (लापरवाह)।

उसे ऐसा पति मिलेगा जो योगी हो, जटाधारी हो, कामवासना से मुक्त हो, नंगा और बुरे वस्त्र धारण करने वाला हो। ऐसी ही एक रेखा उनके हाथ में भी होती है। नारद मुनि के वचन सुनकर और उसे अपने हृदय में सत्य जानकर पति-पत्नी (हिमवान और मैना) को दुःख हुआ और पार्वतीजी प्रसन्न हुईं। यह रहस्य नारदजी भी नहीं जानते थे, क्योंकि सबकी बाह्य स्थिति एक जैसी होते हुए भी आंतरिक समझ अलग-अलग थी।

सारी सखियाँ, पार्वती, पर्वतराज हिमवान् और मैना, सबके शरीर प्रसन्न थे और सबकी आँखों में जल भरा हुआ था। देवर्षिक की बातें असत्य नहीं हो सकतीं, [यह सोचकर] पार्वती ने उन बातों को हृदय में ले लिया। उन्हें भगवान शिव के चरणकमलों के प्रति प्रेम की अनुभूति हुई, लेकिन उनके मन में संदेह था कि उनका अनुसरण करना कठिन है। मौका सही न जानकर उमा ने अपने प्यार को छुपाया और फिर अपनी सहेली की गोद में जाकर बैठ गयी.

देवर्षिकी की बातें झूठी न हों, यह सोचकर हिमवान, मैना तथा उसकी सभी चतुर सखियाँ चिंता करने लगीं। तब पर्वतराज ने हृदय में धैर्य रखकर कहा- हे प्रभु! बताओ अब क्या उपाय करना चाहिए? मुनिश्वर ने कहा--हे हिमवान! सुनो, विधाता ने जो कुछ माथे पर लिख दिया है, उसे कोई देवता, दानव, मनुष्य, नाग या ऋषि नहीं मिटा सकता।

फिर भी मैं तुम्हें एक उपाय बताऊंगा. भगवान मदद करें तो यह पूरा हो सकता है. तुम्हें निःसंदेह वही वर मिलेगा, जिसका वर्णन मैंने तुम्हारे समक्ष किया है। परंतु मैंने जो भी दोष बताये हैं, मेरी राय में वे सभी भगवान शिव में हैं। यदि आपका विवाह भगवान शिव से हो जायेगा तो सभी लोग आपके दोषों को भी आपके गुणों के समान ही मानेंगे। जैसे भगवान विष्णु शेषनाग की शय्या पर

शयन करते हैं, फिर भी पंडित लोग उन्हें दोष नहीं देते। सूर्य और अग्निदेव सभी अच्छे और बुरे तत्वों का उपभोग करते हैं, लेकिन कोई उन्हें बुरा नहीं कहता।

गंगा में शुभ-अशुभ सभी जल प्रवाहित होते हैं, परंतु उन्हें कोई अपवित्र नहीं कहता। सूर्य, अग्नि और गंगाजी की तरह समर्थकों को ग्लानि नहीं होती. यदि मूर्ख लोग ज्ञान के अहंकार में इस प्रकार प्रतिस्पर्धा करते हैं, तो वे पूरे कल्प के लिए नरक में गिरते हैं। ख़ैर, कहीं न कहीं कोई जीव ईश्वर जैसा (पूर्णतया स्वतंत्र) भी हो सकता है। साधु-संत गंगाजल से बनी शराब के बारे में जानने के बाद भी इसे कभी नहीं पीते। परन्तु भगवान और जीव में वैसा ही अंतर है, जैसे गंगा में मिल कर जल पवित्र हो जाता है।

भगवान शिव सहज ही समर्थ हैं क्योंकि वे भगवान हैं। अत: इस विवाह में हर प्रकार का कल्याण है। परंतु महादेवजी की पूजा करना अत्यंत कठिन है, फिर भी तपस्या करने से वे शीघ्र ही संतुष्ट हो जाते हैं। यदि तुम्हारी कन्या तपस्या करेगी तो त्रिपुरारी महादेवजी वचन का नाश कर सकते हैं। वैसे तो संसार में अनेक वर हैं, परंतु भगवान शिव के अतिरिक्त उनके लिए कोई दूसरा वर नहीं है।

भगवान शिव आशीर्वाद देने वाले, समर्पण करने वालों के दुखों का नाश करने वाले, कृपा के सागर और अपने सेवकों के दिलों को प्रसन्न करने वाले हैं। भगवान शिव की पूजा के बिना करोड़ों योग और जप करने से भी वांछित फल नहीं मिलता है। ऐसा कहकर भगवान का स्मरण करते हुए नारदजी ने पार्वती को आशीर्वाद दिया। [और कहा कि--] हे पर्वतराज! तुम्हें अपना संदेह त्याग देना चाहिए, अब यही तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा।

इतना कहकर नारद मुनि ब्रह्मलोक चले गये। अब आगे जो किरदार हुआ वो सुनिए. मैंने अपने पति को अकेला पाकर कहा- हे प्रभु! मुझे मुनि की बात का मतलब समझ नहीं आया. यदि हमारी बेटी के लिए घर, वर और परिवार उपयुक्त हो तो विवाह कर लेना। अन्यथा, चाहे कन्या कुँवारी ही क्यों न रह जाय (मैं उसका विवाह किसी अयोग्य वर से नहीं करना चाहता): क्योंकि हे प्रभु! पार्वती मुझे प्राणों के समान प्रिय हैं।

इतना कहकर मैना अपने पति के चरणों में सिर रखकर गिर पड़ी। तब हिमवान ने प्रेमपूर्वक कहा-चाहे चंद्रमा पर भी अग्नि दिखाई दे, नारदजी की बात झूठी नहीं हो सकती. हे प्रिय! सब विचार त्याग कर श्री भगवान का स्मरण करो। कल्याण वही करेंगे जिन्होंने पार्वती को बनाया। अब यदि तुम्हें उस कन्या से प्रेम है तो

जाकर उसे सिखाओ कि वह ऐसी तपस्या करे कि उसे भगवान शिव मिल जाएं। यह दुःख अन्य किसी उपाय से दूर नहीं होगा।

नारदजी के वचन रहस्य और सकारात्मकता से भरे हैं और शिवजी सभी सुंदर गुणों के भंडार हैं। यह सोचकर तू [झूठा] संदेह त्याग दे। भगवान शिव हर प्रकार से निष्कलंक हैं। अपने पति की बात सुनकर मैना प्रसन्न हो गयी और तुरंत पार्वती के पास गयी। पार्वती को देखकर उनकी आँखों में आँसू भर आये। उसे प्यार से अपनी गोद में बिठाया.

फिर वह बार-बार उससे लिपटने लगी. मैनाका का गला प्रेम से भर आया, कुछ कहते नहीं बना। जगज्जननी भवानीजी को सर्वज्ञ माना जाता था। [माँ के मन की स्थिति जानकर] उसने माँ को सांत्वना देने वाले मृदु स्वर में कहा- माँ! सुनो, मैं तुम्हें बताता हूं; मैंने ऐसी विपत्ति देखी है कि एक सुन्दर और तेजस्वी ब्राह्मणी ने मुझे यह उपदेश दिया -

हे पार्वती! नारदजी ने जो कहा है उसे सत्य मानकर जाकर तपस्या करो। फिर ये बात आपके माता-पिता को भी पसंद आयी. तपस्या सुख प्रदान करती है तथा दुःख और दोषों का नाश करती है। तप के बल से ही ब्रह्मा जगत् की रचना करते हैं, तप के बल से ही विष्णु संपूर्ण जगत का पालन करते हैं, तप के बल से ही शंभु रुद्र रूप में संसार का संहार करते हैं और इसी तप के बल से ही शंभु संसार का संहार करते हैं। तपस्या के फलस्वरूप शेषजी पृथ्वी का भार धारण करते हैं।

हे भवानी! सारी सृष्टि तप पर आधारित है। यह जानकर जाकर तपस्या करो। यह सुनकर माता को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने हिमवान को बुलाया और स्वप्न के बारे में बताया। अपने माता-पिता को अनेक प्रकार से समझाने के बाद पार्वती जी बड़ी प्रसन्नता के साथ तपस्या के लिए निकल गईं। प्रिय परिजन, पिता और माता सभी व्याकुल हो गये। किसी के मुंह से कुछ नहीं निकलता.

वेदशिरा मुनि ने आकर सबको समझाया। पार्वतीजी की महिमा सुनकर सभी संतुष्ट हो गये। स्वामी के चरणों में प्रतिदिन एक नया प्रेम जागने लगा और मैं तपस्या में इतना लीन हो गया कि शरीर की सारी सुध-बुध ही भूल गई। एक हजार साल तक उसने जड़ें और फल खाए, फिर अगले सौ साल सब्जियां खाकर बिताए। उसने कुछ दिनों तक पानी और हवा का सेवन किया और फिर कुछ दिनों तक कठोर उपवास किया। तीन हजार वर्षों तक वह उन पत्तों को खाती रही जो सूखकर धरती पर गिर जाते थे।

फिर सूखे पत्ते भी बचे, इसलिए नाम पड़ा पार्वती। 'अपर्णा' हुई. तपस्या के कारण उमा के शरीर को क्षीण होते देख आकाशवाणी हुई - हे पर्वतराज कुमारी! सुनो, तुम्हारा मनोरथ सफल हो गया। अब आप सभी असहनीय कष्टों (कठिन तपस्या) को त्याग दें। अब तुम्हें शिवजी मिलेंगे. हे भवानी! बहुत से धैर्यवान, बुद्धिमान और विद्वान लोग हुए हैं, लेकिन किसी ने भी इतनी (कठोर) तपस्या नहीं की है। अब इस महान् ब्रह्मा के वचनों को सदैव सत्य और सदैव पवित्र समझकर अपने हृदय में धारण करो।

जब तुम्हारे पिता तुम्हें बुलाने आएं तो तुम अपनी जिद छोड़कर घर चले जाना और जब सप्तर्षि मिल जाएं तो उनकी सलाह को सही समझना। आकाशवाणी सुनकर उसका शरीर खुशी से रोमांचित हो गया। याज्ञवल्क्यजी ने भारद्वाजजी से कहा कि- मैंने पार्वती का सुन्दर चरित्र सुनाया है, अब शिवजी का मनोहर चरित्र सुनो। जब से सती ने सती के पास जाकर अपना शरीर छोड़ा, तब से शिवजी के मन में वैराग्य व्याप्त हो गया। वह सदैव श्रीरघुनाथजी का नाम जपने लगा और सर्वत्र श्री रामचन्द्रजी के गुणों की कथाएँ सुनने लगा।

चिदानंद से रहित, सुख, भ्रम, नशा और इच्छा के निवास, शिव भगवान श्रीहरि (श्री रामचंद्रजी) को अपने हृदय में लेकर, जो सभी लोकों को आनंद देते हैं, पृथ्वी पर (भगवान के ध्यान में प्रसन्न) भटकने लगे। वे कभी ऋषियों को ज्ञान का उपदेश देते और कभी श्री रामचन्द्रजी के गुणों का वर्णन करते। यद्यपि बुद्धिमान शिव निःस्वार्थ हैं, तथापि वे अपनी भक्त (सती) के वियोग से दुःखी हैं।

इस प्रकार बहुत समय बीत गया। श्री रामचन्द्रजी के चरणों में नित नये प्रेम की अनुभूति हो रही है। जब श्री रामचन्द्र जी ने उनके हृदय में कठोर नियम, [अनन्य] प्रेम और भक्ति की दृढ़ता देखी, तब श्री रामचन्द्र जी ने शिव जी को अनेक प्रकार से समझाया और पार्वती जी के जन्म का वृत्तान्त सुनाया। श्री रामचन्द्रजी की कृपा से उन्होंने पार्वतीजी के परम पवित्र कृत्य का विस्तार से वर्णन किया।

[तब उन्होंने भगवान शिव से कहा--] हे भगवान शिव! यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो अब मेरी विनती सुनो। मुझे यह वचन दो कि तुम जाकर पार्वती से विवाह करोगे। शिवजी ने कहा-यद्यपि यह ठीक नहीं है, परंतु स्वामी की बात को ख़ारिज भी नहीं किया जा सकता। हे नाथ! आपकी आज्ञा को सर्वोपरि रखना और उसका पालन करना ही मेरा परम कर्तव्य है।

माता, पिता, गुरु और गुरु की बातों को शुभ न समझकर स्वीकार करना चाहिए। फिर आप सब प्रकार से मेरे परम हितैषी हैं। हे नाथ! आपकी आज्ञा मेरे सिर-माथे पर है। शिवजी के भक्ति, ज्ञान और धर्म से परिपूर्ण वचन सुनकर भगवान रामचन्द्रजी संतुष्ट हो गये। भगवान ने कहा - हे हर! आपका वादा पूरा हो गया है. अब हमने जो कहा है उसे अपने हृदय में रखो। इतना कहकर श्री रामचन्द्रजी अन्तर्धान हो गये। भगवान शिव ने उनकी उस मूर्ति को अपने हृदय में रख लिया। उसी समय सप्तऋषि भगवान शिव के पास आये। प्रभु महादेवजी ने उनसे बड़े ही सुखद वचन कहे-

तुम लोग पार्वती के पास जाओ और उनके प्रेम की परीक्षा करो और हिमाचलवासियों से कहो कि वे पार्वती को लाने के लिए भेजें और पार्वती को घर भेजकर उसका संदेह दूर करें। ऋषियों ने वहां जाकर देखा तो पार्वती मानो मूर्ति के रूप में तपस्या कर रही हों। ऋषि ने कहा--हे शैलकुमारी! सुनो, तुम इतनी कठिन तपस्या क्यों कर रहे हो?

आप किसकी पूजा करते हैं और क्या चाहते हैं? आप हमें अपना सच्चा रहस्य क्यों नहीं बताते? पार्वती ने कहा- मुझे बोलते समय बहुत संकोच होता है. आप लोग मेरी मूर्खता पर हंसेंगे. मन जिद्दी हो गया है, उपदेश नहीं सुनता और पानी पर दीवार बनाना चाहता है। नारदजी की बात सत्य जानकर मैं बिना पंखों के उड़ना चाहता हूँ।

है मुनियो. आप मेरी अज्ञानता देखिए कि मैं सदैव शिवजी को ही अपना पति बनाना चाहती हूँ। पार्वतीजी की बात सुनकर ऋषि हँसे और बोले- तुम्हारा शरीर पर्वत से ही उत्पन्न हुआ है! अच्छा यह बताओ कि नारद का उपदेश सुनकर आज तक किसका घर बसा है? उसकी बातों पर विश्वास करके तुम ऐसा पति चाहती हो जो स्वभाव से उदासीन, गुणहीन, बेशर्म, खराब कपड़े पहनने वाला, पुरुषों की खोपड़ी की माला पहनने वाला, परिवारहीन, घर रहित, नंगा और शरीर पर सांप लपेटे हुए हो।

बताओ, ऐसा वरदान पाकर तुम्हें क्या सुख मिलेगा? उस ठग (नारद) के बहकावे में आकर तुमने बहुत सारी गलतियाँ कीं। पहले तो पंचों की सलाह पर शिव ने सती से विवाह किया, लेकिन फिर उन्हें त्याग दिया और उनकी हत्या करवा दी। अब शिव को कोई चिंता नहीं है, वे भीख मांगते हैं, खाते हैं और आनंद से सोते हैं। ऐसे स्वभाव के साथ क्या महिलाएं कभी अकेले रहने वाले लोगों के घरों में जीवित रह सकती हैं?

अब भी हमारी बात मानो, हमने तुम्हारे लिए अच्छा पति सोच लिया है। वह अत्यंत सुंदर, पवित्र, सुखद और सौम्य है, जिसकी कीर्ति और लीला वेद गाते हैं। वह दोषों से रहित है, सभी गुणों से युक्त है, लक्ष्मी का स्वामी है और वैकुंठपुरी का निवासी है। हम ऐसे दूल्हे लाएंगे और आपसे मिलेंगे. यह सुनकर पार्वतीजी हंस पड़ीं और बोलीं-

तुमने सत्य कहा है कि मेरा यह शरीर पर्वत से उत्पन्न हुआ है। इसलिए शरीर चला जाए तो भी जिद नहीं जाएगी। सोना भी पत्थर से उत्पन्न होता है इसलिए जलने पर भी वह अपना स्वभाव (सुनहरा रंग) नहीं छोड़ता। अत: मैं नारदजी की बात नहीं छोड़ूंगा, चाहे घर बस जाए या उजड़ जाए, मुझे इससे डर नहीं लगता। जिसे अपने शब्दों पर विश्वास नहीं है, उसके लिए सुख और सिद्धि स्वप्न में भी आसान नहीं है।

अर्थात महादेवजी विकारों के धाम हैं और विष्णु सभी गुणों के धाम हैं, लेकिन जिसका मन जो कुछ भी है उसमें ही उलझा हुआ है, उसे उससे कोई लेना-देना नहीं है। हे मुनीश्वरो! यदि मैं आपसे पहले मिला होता तो मैं आपका उपदेश पूरे मन से सुनता। लेकिन अब मैंने भगवान शिव के लिए अपना जन्म खो दिया है।' फिर गुण-दोष पर विचार कौन करेगा?

अगर आपके दिल में बहुत जिद है और आप शादी की बात करने से खुद को रोक नहीं पाते हैं तो दुनिया में कई दूल्हे-दुल्हन मौजूद हैं। जो लोग खेलते हैं वे आलसी नहीं हैं और उन्हें कहीं जाकर खेलना चाहिए।' मैं लाखों जन्मों तक इस बात पर अड़ी रहूंगी कि या तो मैं भगवान शिव से विवाह करूंगी या फिर कुंवारी ही रहूंगी. यदि स्वयं भगवान शिव भी मुझसे ऐसा करने को कहें तो भी मैं नारदजी का उपदेश नहीं छोड़ूँगा।

देवी पार्वतीजी ने फिर कहा कि मैं आपके चरणों में गिरती हूं। तुम घर जाओ, बहुत देर हो गई है. पार्वतीजी का शिवजी के प्रति ऐसा प्रेम देखकर मुनिवर ने कहा- हे जगतजननी, आपकी जय हो. जय हो ! ऋषियों ने जाकर हिमवान को पार्वतीजी के पास भेजा और उन्होंने उनसे उसे घर ले आने का अनुरोध किया; तब सप्तर्षि भगवान शिव के पास गये और उन्हें पार्वती की पूरी कहानी बतायी।

पार्वती के प्रेम के बारे में सुनते ही भगवान शिव अत्यंत प्रसन्न हो गये। सप्तर्षि प्रसन्न होकर अपने घर (ब्रह्मलोक) चले गये। तब सुजान शिवजी ने अपना मन स्थिर किया और श्रीरघुनाथजी का ध्यान करने लगे। उसी समय तारक नाम का राक्षस प्रकट हुआ, जिसकी भुजाएँ अत्यंत बलशाली, भयंकर और तीखी थीं।

उसने समस्त लोकों और जगतपालकों को जीत लिया, समस्त देवता सुख-संपत्ति से वंचित हो गये।

वह अमर था, इसलिए उसे कोई जीत नहीं सका। देवताओं ने उसके साथ कई युद्ध लड़े और हार गये। तब वह ब्रह्मा जी के पास गये और पुकारा। ब्रह्माजी ने सभी देवताओं को दुःखी देखा। ब्रह्माजी ने सबको समझाया और कहा- यह राक्षस तभी मरेगा जब शिवजी के वीर्य से पुत्र उत्पन्न होगा, वह युद्ध जीतेगा।

मेरी बात सुनो और समाधान ढूंढो. भगवान मदद करेंगे और काम पूरा हो जायेगा. दक्ष के यज्ञ में अपने शरीर का त्याग करने वाली सतीजी ने अब हिमाचल के घर में जन्म लिया है। उसने शिवजी को अपना पति बनाने के लिए तपस्या की है, यहां शिवजी सब कुछ छोड़कर समाधि में बैठे हैं। यद्यपि यह बड़ी उलझन की बात है; फिर भी मेरी एक बात सुनो.

तुम जाओ और कामदेवकों को भगवान शिव के पास भेजो, ताकि वे भगवान शिव के मन में क्रोध उत्पन्न करें (उनकी समाधि भंग करें)। तब हम जाकर भगवान शिव के चरणों में सिर रखेंगे और बलपूर्वक (उन्हें समझाकर) विवाह करा देंगे। इस प्रकार चाहे देवताओं का ही हित हो (अन्य कोई उपाय नहीं है) तो भी सबने कहा-यह उपदेश तो बहुत अच्छा है। तब देवताओं ने बड़े प्रेम से स्तुति की, तब कामदेव प्रकट हुए, उनके हाथ में विचित्र (पांच) बाण थे और उनके हाथ में मछली का चिन्ह अंकित था।

देवताओं ने अपनी सारी परेशानी कामदेव को बताई। यह सुनकर कामदेव ने मन ही मन सोचा और हंसते हुए देवताओं से कहा कि वह भगवान शिव का विरोध करने में कुशल नहीं हैं। हालाँकि, मैं आपका काम करूँगा, क्योंकि वेद दूसरों की मदद करना ही परम धर्म कहते हैं। संत सदैव उस व्यक्ति की प्रशंसा करते हैं जो दूसरों के हित के लिए अपने शरीर का त्याग करता है।

यह कहकर और सबको प्रणाम करके कामदेव ने अपना पुष्प धनुष हाथ में ले लिया।
[वसंतादि] वह चलने लगा। चलते समय कामदेव ने मन ही मन सोचा कि यदि मैंने भगवान शिव का विरोध किया तो मेरी मृत्यु निश्चित है। ब्रह्मचर्य, नियम, नाना प्रकार के संयम, धैर्य, धर्म, ज्ञान-विज्ञान, सदाचार, जप, योग, त्याग आदि विवेक की सारी सेना भयभीत होकर भाग गयी।

विवेक अपने सहायकों सहित भाग गया, उसके योद्धाओं ने युद्धभूमि से मुँह मोड़ लिया। उस समय वे सभी सद्यरन्था रूप धारण करके पर्वत की कन्दराओं

में छिप गये (अर्थात् ज्ञान, त्याग, संयम, नियम, सदाचार आदि तो शास्त्रों में ही लिखे रह गये, उनका आचरण छूट गया)। सारे संसार में हलचल मच गई [और सब कहने लगे--] हे विधाता! अब क्या होगा, हमारी रक्षा कौन करेगा? वह कौन है जिसके लिए रति के पति कामदेव ने क्रोधित होकर धनुष बाण उठाया है?

संसार के सभी चल-अचल प्राणी अर्थात् स्त्री-पुरुष अपनी-अपनी मर्यादा छोड़कर काम-वासना पर आश्रित हो गये। हर किसी के दिल में काम की चाह थी. लताओं को देखकर वृक्षों की शाखाएँ झुकने लगीं। नदियाँ उफनकर समुद्र की ओर बहने लगीं और तालाब भी आपस में मिलने लगे।

जब जड़ (स्तन, नदी आदि) की यह स्थिति कही जाती है, तो चेतन प्राणियों के कर्मों को कौन कह सकता है? आकाश, जल और थल में विचरण करने वाले सभी पशु-पक्षी अपने मिलन का समय भूल गये और वासना पर आश्रित हो गये। कामवासना से सभी बेचैन हो उठे. चकवा-चकवी ऐसा न करें रात देखो या दिन. देव, दानव, मनुष्य, किन्नर, साँप, भूत, पिशाच, भूत, बेताल--

यह सोचकर कि वे सदैव काम-सेक्स के गुलाम हैं, मैंने उनकी स्थिति का वर्णन नहीं किया। यहां तक कि सिद्ध, विरक्त, महर्षि और महान योगी भी काम के प्रभाव से योग से मुक्त हो गए या स्त्रियों से अलग हो गए। जब योगी और तपस्वी भी काम-वासना के वशीभूत हो गये तो गरीबों की बात कौन कह सकता है? जो लोग उन्हें ब्रह्मा के रूप में देखते थे, वे अब उन्हें एक महिला के रूप में देखने लगे। महिलाएं पूरी दुनिया को पुरुष के रूप में देखने लगीं और पुरुष इसे स्त्री के रूप में देखने लगे। दो घंटे तक कामदेव द्वारा रचाया गया यह तमाशा पूरे ब्रह्मांड में चलता रहा।

किसी के हृदय में धैर्य नहीं था, कामदेव ने सबका हृदय हर लिया। उस समय केवल वे ही जीवित बचे जिनकी श्री रघुनाथजी ने रक्षा की थी। तत्काल सभी प्राणी उसी प्रकार प्रसन्न हो गये जैसे नशे में धुत्त लोग नशा उतर जाने पर प्रसन्न हो जाते हैं। दुर्धर्ष (जिसे हराना अत्यंत कठिन है) और दुर्गम (जिसे हराना कठिन है) भगवान (संपूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और त्याग जैसे छह दिव्य गुणों से युक्त) रुद्र (भयानक) कामदेव भगवान शिव को देखकर भयभीत हो गए .

वापस लौटना शर्मनाक लगता है और कुछ भी नहीं किया जाता। आख़िरकार मन में मरने का निश्चय करके उसने एक उपाय निकाला। तुरन्त सुन्दर ऋतुराज वसंत प्रकट हो गया। नये-नये पुष्पित वृक्षों की पंक्तियाँ शोभायमान हो उठीं। सभी दिशाओं के वन, उद्यान, तालाब और क्षेत्र अत्यंत सुन्दर हो गये। ऐसा लग

रहा था मानों हर तरफ प्रेम उमड़ रहा हो, जिसे देखकर मुर्दे दिलों में भी कामदेव जाग उठे।

मरे मन में भी जागने लगे कामदेव, वनों को सौन्दर्य नहीं कहा जा सकता। काम रूपी अग्नि की सच्ची मित्र शीतल, मंद और सुगन्धित वायु चलने लगी। झीलों में बहुत से कमल खिल गये, जिन पर सुंदर भृंगों के समूह गुंजन करने लगे। राजहंस, कोयल और तोते मधुर बोलियाँ बोलने लगे और अप्सराएँ गाने और नाचने लगीं। करोड़ों प्रकार की कलाओं (उपायों) का प्रयोग करके कामदेव अपनी सेना सहित परास्त हो गये, परन्तु भगवान शिव की अटल समाधि नहीं डिगी। तब कामदेव क्रोधित हो गये।

पुष्पा- उसने अपने [पाँच] बाण उस पर साधे और बड़े क्रोध से लक्ष्य पर निशाना साधकर उन्हें अपने कानों के पास रख लिया। कामदेव ने पांच तीखे बाण चलाए, जो भगवान शिव के हृदय में लगे। तभी उसकी समाधि टूटी और वह जाग गया। भगवान (शिवजी) को बहुत क्रोध आया. उसने अपनी आँखें खोलीं और हर जगह देखा।

जब उन्होंने आम के पत्तों में छिपे कामदेव को देखा तो उन्हें बहुत क्रोध आया जिससे तीनों लोक कांपने लगे। तब भगवान शिव ने अपनी तीसरी आंख खोली और देखते ही कामदेव जलकर भस्म हो गये। संसार में बड़ा हाहाकार मच गया। देवता भयभीत थे, दानव प्रसन्न थे। कामुक लोग कामसुख को याद करके चिंता करने लगे और साधक योगी लोग लापरवाह हो गये।

कामदेव की पत्नी रति भगवान शिव के सामने रोने और प्रार्थना करने लगी और अपने पति के जीवन की भीख मांगने लगी। जब पृथ्वी का भारी बोझ उठाने के लिए श्रीकृष्ण यदुवंश में अवतार लेंगे, तब तुम्हारे पति उनके पुत्र (प्रद्युप्न) के रूप में जन्म लेंगे। मेरा ये वादा पूरा होगा या नहीं. भगवान शिव की बात सुनकर रति वहाँ से चली गयी। अब मैं दूसरी कहानी (विस्तार से) बताता हूं. जब ब्रह्मादि देवताओं ने यह सब समाचार सुना तो वे वैकुण्ठ को चले गये।

तब वहां से विष्णु और ब्रह्मा सहित सभी देवता उस स्थान पर गए, जहां भगवान शिव कृपा के धाम थे। उन सभी ने अलग-अलग भगवान शिव की स्तुति की, तब शशिभूषण भगवान शिव प्रसन्न हो गये। कृपा के सागर भगवान शिव ने कहा- हे देवताओं! बताओ, तुम क्यों आये हो? ब्रह्माजी ने कहा--हे भगवन्! तथापि, हे प्रभु, आप ही अन्तर्यामी हैं! मैं आपसे श्रद्धापूर्वक निवेदन करता हूं.

हे शंकर! सभी देवताओं के मन में इतना बड़ा उत्साह हो गया कि हे भगवन्! वे आपकी शादी अपनी आंखों से देखना चाहते हैं. हे कामदेव की वासना को कुचलने वाले! आप कुछ ऐसा करें कि सभी लोग इस उत्सव को खुली आंखों से देखें. हे कृपा के सागर! तुमने कामदेव को भस्म करके प्रेमियों को जो उपहार दिया, वह बहुत अच्छी बात है।

हे नाथ. महान गुरुओं का यह स्वाभाविक स्वभाव है कि वे पहले दंड देते हैं और फिर दया दिखाते हैं। पार्वती ने घोर तपस्या की है, अब उसे स्वीकार करें। ब्रह्माजी की प्रार्थना सुनकर और प्रभु श्री रामचन्द्रजी के वचनों का स्मरण करके भगवान शिव ने प्रसन्न होकर कहा - 'ऐसा ही हो।' तब देवताओं ने नगाड़े बजाए और पुष्पवर्षा की तथा जय जयकार किया। वे 'देवों के देव की जय' कहने लगे।

उचित अवसर जानकर सप्तर्षि आये और भगवान ब्रह्मा ने उन्हें तुरंत हिमाचल के घर भेज दिया। वह सबसे पहले वहाँ गया जहाँ पार्वतीजी थीं और उनसे कपटपूर्ण, मीठे वचन बोले- तुमने नारदजी के कहने के कारण उस समय हमारी बात नहीं मानी। अब तो तुम्हारी प्रतिज्ञा झूठी हो गयी, क्योंकि महादेवजी ने काम को ही नष्ट कर दिया।

यह सुनकर पार्वतीजी मुस्कुराईं और बोलीं- हे मुनिवरों! आप ठीक कह रहे हैं। आपकी राय में अब भगवान शिव ने कामदेव को भस्म कर दिया है, अब तक वे विकारग्रस्त (कामुक) बने हुए थे। परन्तु हमारी समझ के अनुसार शिवजी सदैव योगी, अजन्मा, अमर, वासनारहित और भोगरहित हैं और यदि मैंने शिवजी को ऐसा माना है और मन, वचन और कर्म से प्रेमपूर्वक उनकी सेवा की है, तो मेरा व्रत सत्य है।

अतः हे मुनीश्वर! सुनो, वह दयालु प्रभु मेरी प्रतिज्ञा पूरी करेगा। जब आपने कहा कि भगवान शिव ने कामदेव को जलाकर भस्म कर दिया, तो यह आपका बहुत बड़ा अविवेक है। हे पिता! अग्नि का यह सहज स्वभाव है कि पाला उसके निकट कभी नहीं जा सकता और यदि जायेगा तो अवश्य नष्ट हो जायेगा। यही न्याय महादेवजी और कामदेव के संबंध में भी समझना चाहिए।

पार्वती की बातें सुनकर और उनका प्रेम तथा विश्वास देखकर ऋषि मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए। उसने भवानी को सिर झुकाया और चल दिया और हिमाचल पहुँच गया। उन्होंने पर्वतराज हिमाचल को सारा हाल सुनाया। कामदेव के भस्म हो जाने की बात सुनकर हिमाचल को बहुत दुःख हुआ। तब ऋषियों ने रतिका के वरदान के बारे में बात की, जिसे सुनकर हिमवान को बहुत खुशी हुई।

अपने मन में भगवान शिव के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए हिमाचल ने आदरपूर्वक श्रेष्ठ ऋषियों को बुलाकर उनसे शुभ दिन, शुभ नक्षत्र तथा शुभ घड़ी का शोध करवाया तथा वैदिक विधि के अनुसार विवाह निश्चित कर लिखवाया। तब हिमाचल ने वह कुंडली सप्तऋषियों को दी और उनके चरण पकड़कर विनती की। उन्होंने जाकर वह लगनपत्रिका ब्रह्माजी को दे दी। इसे पढ़ते समय उनके हृदय में कोई प्रेम नहीं था।

सभी देवता अपने-अपने भाँति-भाँति के वाहन और विमान सजाने लगे, शुभ शकुन होने लगे और अप्सराएँ गाने लगीं। भगवान शिव के अनुयायी भगवान शिव की पूजा करने लगे। बालों का मुकुट बनाकर उस पर साँपों के मोर पंख सजाये गये। भगवान शिव ने साँप की बालियाँ और चूड़ियाँ पहनीं, अपने शरीर को विभूति से सजाया और खुद को कपड़ों के बजाय बाघंबर में लपेट लिया।

भगवान शिव के सुंदर सिर पर चंद्रमा, सिर पर गंगा, तीन आंखें, सांपों का जनेऊ, गले में विष और छाती पर नरमुंडों की माला थी। इस प्रकार उनका स्वरूप अशुभ होते हुए भी वे कल्याण के धाम और दयालु हैं। वह एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे हाथ में डमरू से सुशोभित हैं। भगवान शिव बैल पर सवार थे। बाजे बज रहे हैं. भगवान शिव को देखकर देवियाँ मुस्कुरा रही हैं और कहती हैं कि इस वर के योग्य वर संसार में कहीं नहीं मिलेगा।

विष्णु और ब्रह्मा आदि देवताओं के समूह अपने-अपने वाहनों (सवारियों) पर सवार होकर बारात में आने लगे। देवताओं का समाज सब प्रकार से अद्वितीय (अत्यंत सुंदर) था, परंतु बारात दूल्हे के योग्य नहीं थी। उन्होंने दिक्पालों को बुलाकर हँसते हुए कहा- सब लोग अपने-अपने समूह सहित अलग-अलग चलो।

अरे भाई हमारी ये बारात शादी के लायक नहीं है. क्या आप किसी विदेशी शहर में जाकर सबको हंसाएंगे? भगवान विष्णु की बात सुनकर देवता मुस्कुराये और अपनी-अपनी सेना सहित अलग हो गये। महादेवजी (यह देखकर) मन ही मन मुस्कुराते हैं कि भगवान विष्णु के व्यंग्यपूर्ण वचन दूर नहीं जाते! अपने प्रिय (भगवान विष्णु) के इन अत्यंत प्रिय वचनों को सुनकर भगवान शिव ने भी भंगिका को भेजकर अपने सभी गणों को बुला लिया।

भगवान शिव का आदेश सुनते ही सभी लोग आये और भगवान शिव के चरण कमलों में सिर झुकाया। अपने साथियों को नाना प्रकार के वाहनों तथा नाना प्रकार की वेशभूषा में देखकर भगवान शिव हँसे। कुछ बिना चेहरे के हैं, कुछ के कई चेहरे हैं, कुछ बिना हाथ-पैर के हैं और कुछ के कई हाथ-पैर हैं। किसी के पास

कई आंखें होती हैं तो किसी के पास एक भी आंख नहीं होती। कुछ बहुत मोटे होते हैं और कुछ बहुत पतले।

कोई बहुत पतला है, कोई बहुत मोटा है, कोई पवित्र और कोई अशुद्ध वेष धारण किये हुए है। वे भयंकर आभूषण पहने हुए हैं, हाथों में खोपड़ियाँ लिये हुए हैं और उन सबके शरीर में ताज़ा खून लगा हुआ है। उनके मुख गधे, कुत्ते, सूअर और सियार जैसे हैं। गणों के असंख्य वेषों को कौन गिन सकता है? भूत-प्रेत, पिशाच और योगिनियों के समूह अनेक प्रकार के होते हैं। उनका वर्णन करना असंभव है.

भूत नाचते और गाते हैं, वे सभी बहुत प्रसन्न हैं। वे देखने में बहुत अनाड़ी लगते हैं और बहुत ही अजीब ढंग से बोलते हैं। अब बारात भी दूल्हे जैसी हो गई है. सड़क पर यात्रा करते समय तरह-तरह के तमाशे होते रहते हैं। यहां हिमाचल ने एक ऐसा विचित्र मंडप बनाया जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

हिमाचल ने विश्व के सभी छोटे-बड़े पर्वतों को, जो वर्णन से परे हैं तथा सभी वनों, समुद्रों, नदियों तथा तालाबों को आमंत्रित किया है। सबने अपनी इच्छानुसार रूप धारण किया और सुन्दर शरीर वाली सुन्दर स्त्रियों और समाजों के साथ हिमाचल के घर गये। सब प्रेम से मंगल गीत गाते हैं।

हिमाचल ने पहले ही कई घरों को सजा लिया था. सभी लोग अपनी क्षमता के अनुसार उन स्थानों पर उतर गये। नगर के सुन्दर सौन्दर्य को देखकर ब्रह्मा की सृष्टि की चतुराई भी तुच्छ प्रतीत होती है। नगर की शोभा देखकर ब्रह्मा की कुशलता सचमुच तुच्छ जान पड़ती है। वन, उद्यान, कुएँ, तालाब और नदियाँ सभी सुन्दर हैं; उनका वर्णन कौन कर सकता है? घर-घर में अनेक मंगल तोरण सजाये जा रहे हैं। वहां सुंदर और बुद्धिमान स्त्री-पुरुषों की छवि देखकर ऋषि-मुनि भी मोहित हो जाते हैं।

क्या उस नगर का वर्णन किया जा सकता है जहाँ जगदम्बा अवतरित हुई थीं? यह सुनकर कि दुल्हन नगर में आ रही है, नगर में बहुत उत्साह फैल गया, जिससे नगर की शोभा बढ़ गई। स्वागत करने वाले लोग सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहनकर, भाँति-भाँति के घुड़सवारों को सजाकर आदरपूर्वक बारात की अगवानी करने चले। देवताओं का साथ देखकर सभी प्रसन्न हुए और भगवान विष्णु को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। लेकिन जब उन्होंने भगवान शिव के समूह को देखा तो उनके सभी वाहन (सवार, हाथी, घोड़े, रथ के घंटे आदि) डर के मारे भाग गए।

कुछ वृद्ध और समझदार लोग धैर्य रखकर वहीं खड़े रहे। सभी लड़के अपनी जान बचाने के लिए भागे। घर पहुंचकर जब माता-पिता पूछते हैं तो वे डर से

कांप जाते हैं और कहते हैं- क्या कहें, कुछ कहा नहीं जा सकता। ये बारात है या यमराज की सेना? दूल्हा पागल है और बैल पर सवार है. सर्प, कपाल और भस्म उसके आभूषण हैं।

दूल्हे का शरीर राख से ढका हुआ है, उसके पास साँप और खोपड़ी के आभूषण हैं; वह नग्न, उलझा हुआ और भयंकर है। उनके साथ भयानक मुख वाले भूत, पिशाच, योगिनियां और राक्षस भी हैं। जो बारात देखकर जीवित बचेगा, उसमें सचमुच बड़े पुण्य हैं और वही पार्वती का विवाह देखेगा। लड़के हर घर में यही बात कहते थे।

सभी बालकों के माता-पिता यह सोचकर मुस्कुरा देते हैं कि वे महेश्वर (शिवजी) के समाज के हैं। उन्होंने बालकों को अनेक प्रकार से समझाया कि वे निडर रहें, डरने की कोई बात नहीं है। मेहमान बारात लेकर आये और सबको एक सुन्दर हवेली में ठहराया। मैना (पार्वतीजी की माँ) ने मंगल आरती सजायी और उसके साथ की स्त्रियाँ सुन्दर मंगल गीत गाने लगीं।

सुन्दर हाथों में सोने का थाल शोभायमान है, अत: मैं हर्षक के साथ भगवान शिव के विषय में जानने के लिये गया। जब महादेवजी को भयानक वेष में देखा तो स्त्रियों के हृदय में बड़ा भय उत्पन्न हो गया। वह अत्यंत भयभीत होकर भागकर घर में घुस गई और भगवान शिव वहां चले गए जहां जनवासा था। मेरे हृदय में बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने पार्वतीजी को अपने पास बुलाया।

और बड़े स्नेह से उसकी गोद में बैठकर अपनी नीली कमल के समान आँखों में आँसू भरकर बोली- जिस मूर्ख ने तुम्हें इतना सुन्दर रूप दिया, उसने तुम्हारे दूल्हे को कैसे दीवाना बना दिया? जिसने तुम्हें खूबसूरती दी, उसने तुम्हें दीवाना दूल्हा कैसे बना दिया? जो फल आम के पेड़ पर न लगकर बबूल के पेड़ पर जबरदस्ती लग रहा है. मैं तुम्हारे साथ पहाड़ से गिर जाऊँगा, जल जाऊँगा या समुद्र में कूद जाऊँगा। भले ही घर नष्ट हो जाये और बदनामी सारे संसार में फैल जाये; मैं तुमसे शादी नहीं करूंगी इस पागल से.

हिमाचल की स्त्री (मैना) को दुःखी देखकर सभी स्त्रियाँ व्याकुल हो गयीं। मैना अपनी पुत्री के प्रेम को याद कर विलाप करती, रोती और कहती-मैंने नारद का क्या बिगाड़ा था, जिन्होंने मेरा घर उजाड़ दिया और जिन्होंने पार्वती को ऐसी सलाह दी कि उन्होंने पागल वर के लिए तपस्या की।

सचमुच, उसे किसी से कोई मोह या माया नहीं है; न उसके पास धन है, न घर, न पत्नी; वे सबसे अधिक उदासीन हैं. इस वजह से वे किसी और का घर उजाड़ने जा

रहे हैं. उन्हें न तो शर्म है और न ही किसी का डर. भला, बांझ स्त्री प्रसव पीड़ा क्या जानेगी? अपनी माता को व्यथित देखकर पार्वतीजी बुद्धिमान एवं सौम्य वाणी में बोलीं- हे माता! सृष्टिकर्ता जो कुछ बनाता है वह नष्ट नहीं होता; ऐसा मत सोचो!

चूँकि मेरी किस्मत में पागल पति ही लिखा है तो फिर किसी को दोष क्यों दिया जाए? हे माँ! क्या विधाता के चिह्न आपसे मिट सकते हैं? अनावश्यक कलंक का टीका न लें। हे माँ! कलंक मत लो, रोना बंद करो, यह दुःखी होने का अवसर नहीं है। मेरे भाग्य में जो भी दुःख और सुख लिखा है, मैं जहाँ भी जाऊँगा, उसे पा लूँगा! पार्वतीजी के ऐसे विनम्र और नम्र वचन सुनकर वे सभी स्त्रियाँ सोचने लगीं और नाना प्रकार से विधाता को दोष देने लगीं और आँखों से आँसू बहाने लगीं।

जैसे ही हिमाचल ने यह समाचार सुना तो वह नारदजी और सप्तऋषियों को साथ लेकर अपने घर चला गया। तब नारदजी ने सभी को अपने पूर्व जन्म की कथा सुनाकर समझाया [और कहा] हे मैना! आप मेरी बात ईमानदारी से सुनें, आपकी यह कन्या साक्षात् जगज्जननी भवानी है।

यह एक अजन्मा, शाश्वत एवं अविनाशी शक्ति है। भगवान शिव सदैव अर्धांद्रा में रहते हैं। वह संसार की रचयिता, पालनकर्ता और संहारकर्ता है; और वह अपनी इच्छा से ही लीला का शरीर धारण करती है। पहले वह दक्ष्के के घर उत्पन्न हुई थी, तब उसका नाम सती था, उसका शरीर अत्यंत सुन्दर था। वहां सती का विवाह भी शंकरजी से हुआ। यह कहानी पूरी दुनिया में मशहूर है.

एक बार उन्होंने रघुकुल के कमल के सूर्य श्री रामचन्द्रजी को शिवजी के साथ आते देखा, तब वे मोहित हो गये और शिवजी की बात न मानकर मोहवश सीताजी का रूप धारण कर लिया।

तब नारद के वचन सुनकर सबका दुःख दूर हो गया और क्षण भर में ही यह समाचार सारे नगर में घर-घर फैल गया। तब मैना और हिमवान आनन्द में मग्न हो गये और बार-बार पार्वती के चरणों की वन्दना करने लगे। नगर के सभी लोग, स्त्री, पुरुष, बच्चे, जवान और बूढ़े बहुत प्रसन्न थे। नगर में मंगल गीत गाए जाने लगे और सबने भाँति-भाँति से सोने के कलश सजाए। पाकशास्त्र में परंपरा के अनुसार विभिन्न रसोईघर बनाये जाते थे। ,

जिस घर में स्वयं माता भवानी रहती हों उस घर के खाद्य पदार्थों का वर्णन कैसे किया जा सकता है? हिमाचल ने सभी बारातियों - विष्णु, ब्रह्मा तथा सभी जाति के देवताओं को आदरपूर्वक बुलाया। भोजन करने वालों की बहुत-सी पंक्तियाँ

बैठी थीं। चतुर रसोइये परोसने लगे। देवताओं को भोजन करते देख स्त्रियों के समूह उन्हें धीमी आवाज में गालियाँ देने लगे।

स्त्रियाँ मधुर स्वर में गालियाँ देने लगीं। देवताओं को हास्य सुनकर बहुत आनंद आता है, इसीलिए वे भोजन करने में बहुत देर लगा रहे हैं। भोजन के समय जो आनंद बढ़ता है उसे करोड़ों मुखों से भी व्यक्त नहीं किया जा सकता। [भोजन के बाद सबके हाथ-मुँह धुलवाये गये और पान दिये गये। फिर सब लोग जहाँ ठहरे थे वहीं चले गये। तब ऋषियों ने लौटकर हिमवान को लगन (लग्न पत्रिका) सुनाई और विवाह का समय देखकर देवताओं को बुला भेजा।

सभी देवताओं को सम्मानपूर्वक बुलाया गया और सभी को उचित स्थान दिया गया। वैदिक रीति के अनुसार वेदी सजायी गयी और स्त्रियाँ सुन्दर मंगल गीत गाने लगीं। बेदिकापार एक अत्यंत सुन्दर दिव्य सिंहासन था, जिसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता; क्योंकि उन्हें स्वयं ब्रह्माजीक बनाया गया था। ब्राह्मणों को सिर नवाकर और हृदय में अपने स्वामी श्रीरघुनाथजी का स्मरण करके भगवान शिव उस सिंहासन पर बैठ गये।

तब मुनियों ने पार्वतीजी को बुलाया। सखियाँ उन्हें शृंगार करके ले आईं। पार्वतीजी का रूप देखकर सभी देवता मोहित हो गये। संसार में ऐसा कोई कवि नहीं जो उस सौन्दर्य का वर्णन कर सके। पार्वती को देवी जगदम्बा और शिव की पत्नी मानकर देवताओं ने मन ही मन उन्हें प्रणाम किया। सौंदर्य की पराकाष्ठा हैं भवानीजी. लाखों चेहरे भी उस पर नहीं जंचते.

देवी पार्वती की महान सुंदरता का वर्णन करोड़ों मुखों से भी नहीं किया जा सकता। वेद, शेषजी और सरस्वतीजी भी यह कहते हुए झिझकते हैं, फिर मंदबुद्धि तुलसी किस श्रेणी में हैं? सौंदर्य और वैभव की खान माता भवानी मंडप के मध्य में गईं, जहां भगवान शिव थे। संकोच के कारण वह अपने पति (शिवजी) के चरणकमलों का दर्शन तो नहीं कर सकी, परंतु उसका प्रिय भौंरा वहीं [रस पी रहा था]।

ऋषियों की अनुमति से भगवान शिव और देवी पार्वती ने भगवान गणेश की पूजा की। देवताओं को अनादि मानकर यह सुनकर किसी को भी संदेह नहीं होना चाहिए [गणेशजी तो शिव-पार्वती की संतान हैं, विवाह से पूर्व वे कहां से आए] वेदों में विवाह के जो-जो संस्कार बताए गए हैं, वे सभी महर्षियों को प्राप्त हुए अनुष्ठान किया गया. पर्वतराज हिमाचल ने कुश हाथ में ले लिया और कन्या का हाथ पकड़कर उसे भवानी (शिव की पत्नी) मानकर भगवान शिव की शरण में आ गये।

जब महेश्वर (शिवजी) ने पार्वती से विवाह किया तो इन्द्रादि सहित सभी देवता मन में बहुत प्रसन्न हुए। महर्षिगण वेद मन्त्रों का पाठ करने लगे और देवता भगवान शिव की स्तुति करने लगे। अनेक प्रकार के वाद्ययंत्र बजने लगे। आकाश से नाना प्रकार के पुष्पों की वर्षा होने लगी। शिव और पार्वती का विवाह हुआ। संपूर्ण ब्रह्माण्ड आनंद से भर गया।

दासियाँ, दास, रथ, घोड़े, हाथी, गायें, जवाहरात, अनाज और सोने के बर्तन आदि अनेक प्रकार की वस्तुएँ गाड़ियों में लादकर दहेज में दी गईं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। अनेक प्रकार का दहेज देने के बाद हिमाचल ने फिर हाथ जोड़कर कहा- हे शंकर! आप परिपूर्ण हैं, मैं आपको क्या दे सकता हूँ? [इतना कहकर] वह भगवान शिव के चरणकमलों को पकड़कर रह गया। तब वस्त्रराज भगवान शिव ने अपने ससुर को हर तरह से संतुष्ट किया। तब प्रेम से भरे हृदय से मैनाजी ने भगवान शिव के चरणकमलों को पकड़कर कहा-

हे नाथ! यह उमा मुझे प्राणों के समान प्रिय है। तुम उसे बनाओगे टहलना आपके घर आ जाओ और उसके सारे अपराध क्षमा करते रहो। अब आप प्रसन्न होकर मुझे यह वर दीजिये। शिवजी ने अपनी सास को अनेक प्रकार से समझाया. फिर उसने भगवान शिव के चरणों में सिर झुकाया और घर चली गई। तब माता ने पार्वती को बुलाकर अपनी गोद में बिठाया और यह सुन्दर शिक्षा दी -

यह पार्वती है. तुम सदैव भगवान शिव के चरणों की पूजा करो, यही स्त्रियों का धर्म है। उनके लिए पति ही परमेश्वर है और कोई परमेश्वर नहीं है. ऐसी बातें कहते-कहते उनकी आँखों में आँसू भर आये और उन्होंने लड़की को अपने सीने से लगा लिया। बार-बार मिलती है मैना और [पार्वती की | वह उसके पैर पकड़ कर गिर जाती है. यह एक महान प्रेम है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। सभी स्त्रियों से मिलने के बाद भवानी ने फिर अपनी माँ को गले लगा लिया।

पार्वतीजी पुनः देवी माँ से मिलने गईं, सभी ने उन्हें योग्य आशीर्वाद दिया। पार्वतीजी बार-बार अपनी माँ की ओर देखती रहीं। तब उसकी सहेलियाँ उसे भगवान शिव के पास ले गईं। महादेवजी ने सभी याचकों को संतुष्ट किया और पार्वती के साथ अपने घर (केलास) चले गये। सभी देवता प्रसन्न होकर फलों की वर्षा करने लगे और आकाश में सुन्दर नगाड़े बजने लगे। तब हिमवान बड़े प्रेम से भगवान शिव के पास पहुंचने के लिए चल पड़े। वृषकेतु (शिवजी) ने उन्हें अनेक प्रकार से संतुष्ट करके विदा किया।

पर्वतराज हिमाचल तुरंत घर आये और उन्होंने सभी पर्वतों और सरोवरों को बुलाया। हिमवान ने सभी को आदर, दान, नम्रता और बड़े आदर के साथ विदा किया। जब भगवान शिव केलास पर्वत पर पहुंचे तो सभी देवता अपने-अपने लोक में चले गए। [तुलसीदासजी कहते हैं कि] पार्वतीजी और शिवजी जगत के माता-पिता हैं।

शिव और पारबती नाना प्रकार के सुख भोगते हुए अपने बन्धु-बान्धवों के साथ केले के वृक्ष पर रहने लगे। वह रोज नया बिहार करते थे. इस प्रकार बहुत समय बीत गया। फिर उनके छह मुख वाले पुत्र (स्वामी कार्तिक) का जन्म हुआ, जिसने बड़े होने पर युद्ध में तारकासुर का वध कर दिया। स्वामीकार्तिक के जन्म की कथा वेदों, शास्त्रों और पुराणों में प्रसिद्ध है और इसे सारा संसार जानता है।

षडानन (स्वामीकार्तिक) के जन्म, कर्म, महिमा और महान पुरुषार्थ को सारा संसार जानता है। इसलिये मैंने वृषकेतु (शिवजी) के पुत्र का चरित्र संक्षेप में ही बताया है। जो नर-नारी शिव-पार्वती के विवाह की इस कथा को कहते और गाते हैं, उन्हें कल्याणकारी कार्यों और विवाह आदि में सदैव सुख मिलता है। गिरिजापति महादेवजी का चरित्र समुद्र (अथाह) के समान है, जिसे वेद भी पार नहीं कर सकते। फिर अत्यंत मंदबुद्धि और असंस्कृत व्यक्ति तुलसीदास उसका वर्णन कैसे कर सकते हैं?

भगवान शिव के सुन्दर एवं मनोहर चरित्र को सुनकर मुनि भारद्वाजजी को बहुत प्रसन्नता हुई। उनकी कहानी सुनने की इच्छा बहुत बढ़ गई. आँखें भर आईं और रोमावली उठ खड़ी हुई। जिन्हें भगवान शिव के चरणकमलों में प्रेम नहीं है, उन्हें श्री रामचन्द्रजी अपने स्वरूप में भी प्रिय नहीं लगते। विश्वनाथ श्री शिवजी के चरणों में निष्कपट (शुद्ध) प्रेम होना ही रामभक्त का लक्षण है।

भगवान शिव के समान रघुनाथजी का व्रत कौन करता है? जिन्होंने बिना किसी पाप के सती जैसी स्त्री का परित्याग कर दिया और श्रीरघुनाथजी की पूजा का व्रत ले लिया, उसे भगवान शिव का चरित्र कहकर मैं आपका रहस्य पहले ही समझ चुका हूं। आप श्री रामचन्द्रजी के पवित्र सेवक हैं और आपने स्वयं को सभी दोषों से मुक्त दिखाया है। अरे भइया! श्री रामचन्द्रजी को भगवान शिव के समान दूसरा कौन प्रिय है?

मुझे आपके गुण और शील का ज्ञान हो गया। अब मैं तुमसे श्रीरघुनाथजी की लीला कहता हूँ, सुनो। हे ऋषि! सुनो, आज तुमसे मिलकर जो खुशी हुई, उसे बयान नहीं किया जा सकता। हे मुनीश्वर! राम का चरित्र अपार है. शेषजी भी उन्हें 100 करोड़ नहीं कह सकते. हालाँकि, जैसा कि मैंने सुना है, मैं वाणी के

स्वामी (प्रेरक) और भगवान श्रीगमचाचार्यजी, जिनके हाथ में धनुष है, का स्मरण करके यह बात कहता हूँ।

सरस्वतीजी कठपुतली के समान हैं और अन्तर्यामी स्वामी श्री रामचन्द्रजी कठपुतली को धागा पकड़कर नचाने वाले गुरु हैं। यह जानकर कि वह उनका भक्त है, जिस कवि को आशीर्वाद देते हैं, उसके हृदय के आँगन में सरस्वती नृत्य करा देते हैं। मैं उन्हीं कपालू श्रीरघुनाथजी को प्रणाम करता हूँ और उनके निर्मल गुणों की कथा कहता हूँ।

उस पर्वत पर सिद्ध, तपस्वी, योगी, देवता, किन्नर और मुनियों के समूह रहते हैं। वे सभी महात्मा हैं और आनंदकंद श्री महादेवजी की सेवा करते हैं। जो भगवान विष्णु और महादेवजी से द्वेष रखते हैं तथा जिन्हें धर्म में प्रेम नहीं है, वे स्वप्न में भी वहाँ नहीं जा सकते। उस पर्वत पर एक विशाल बरगद का पेड़ है, जो सभी ऋतुओं (छह ऋतुओं) में सदैव नया और सुंदर रहता है।

वहां तीनों प्रकार की प्रकाश (शीतल, मंद और सुगंधित) वायु बहती रहती है और उसकी छाया अत्यंत शीतल रहती है। वह भगवान शिव का विश्राम वक्षस्थल है, जिसका गुणगान वेदों में किया गया है। एक बार भगवान श्री शिवजी उस वृक्ष के नीचे गये और उसे देखकर उनके हृदय में बड़ी प्रसन्नता हुई। दयालु भगवान शिव अपने हाथों से बाघाम्बर फैलाकर सहज ही (बिना किसी विशेष प्रयोजन के) वहीं विराजमान हो गये। उनका सुन्दर शरीर कुन्द के फूल, चन्द्रमा और शंख के समान था। उसकी भुजाएँ लंबी थीं और उसने साधु (वल्कल) के समान वस्त्र पहने हुए थे।

उनके पैर (पूरी तरह से खिले हुए) लाल कमल के समान थे, उनके नाखूनों की रोशनी भक्तों के दिलों को मोहित कर रही थी। साँप और राख उनके आभूषण थे और त्रिपुरासार के संहारक भगवान शिव का चेहरा शरद (पूर्णिमा) के चंद्रमा की सुंदरता को भी छीनने (फीका) करने में सक्षम था। कामदेव के शत्रु शिवजी वहाँ बैठे हुए ऐसे शोभा पा रहे थे मानो स्वयं शांतरस उनके शरीर में विराजमान हों। अच्छा मौका देखकर शिव की पत्नी माता पार्वती उनके पास गईं।

भगवान शिव ने उन्हें अपनी प्रिय पत्नी जानकर उनका बहुत आदर-सत्कार किया और उन्हें अपने बायीं ओर स्थान दिया। पार्वतीजी प्रसन्न होकर शिवजी के पास बैठ गईं। उसे अपने पिछले जन्म की कहानी याद आ गयी. यह समझकर कि स्वामी का उन पर पहले से भी अधिक प्रेम है, पार्वतीजी हँसीं और प्रेमपूर्ण बातें बोलीं। [याज्ञवल्क्यजी कहते हैं कि] पार्वतीजी वही कथा पूछना चाहती हैं जो सभी लोगों के लिए हितकारी हो।

[पार्वतीजी ने कहा--]हे जगत्पति! हे मेरे परमदेव! हे त्रिपुरासुर के संहारक! आपकी महिमा तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। चर, अचर, नाग, मनुष्य और देवता सभी आपके चरणकमलों की सेवा करते हैं। हे प्रभो! आप समर्थ, सर्वज्ञ एवं मंगलकारी हैं। वह सभी कलाओं और गुणों का भंडार है और योग, ज्ञान और वैराग्य का भंडार है। आपका नाम शरणागतों के लिये कल्पवृक्ष है।

यह ख़ुशी की राशि है! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं और सचमुच मुझे अपना दास [या अपना सच्चा दास] मानते हैं, तो हे प्रभु! आप मुझे श्रीरघुनाथजी की विभिन्न कथाएँ सुनाकर मेरा अज्ञान दूर करें। जिसका घर कल्पवक्ष से नीचे है वह दरिद्रता से उत्पन्न दुःख क्यों सहन करेगा? हे शशिभूषण! हे नाथ! तुम अपने हृदय में यह विचार करके मेरे मन से भारी भ्रम दूर कर दो।

हे प्रभो! जो ऋषिगण परम तत्त्व (ब्रह्म) के ज्ञाता और वक्ता हैं, वे श्री रामचन्द्रजी को सनातन ब्रह्म कहते हैं; और शेष, सरस्वती, वेद और पुराण सभी श्री रघुनाथजी की स्तुति गाते हैं। और हे कामदेव के शत्रु! तुम भी दिन-रात आदरपूर्वक राम-राम जपते हो। क्या ये राम अयोध्या के राजा के पुत्र हैं? या फिर कोई और राम है जो अजन्मा, निराकार और अदृश्य है?

यदि वह राजपुत्र है तो ब्राह्मण क्यों है? [और यदि ब्रह्म है तो | पत्नी के वियोग में वह कैसे पागल हो गया? एक ओर उनके ऐसे चरित्र देखकर और दूसरी ओर उनकी महिमा सुनकर मेरा मन अत्यंत चकित हो रहा है। यदि कोई अन्य, इच्छा रहित, सर्वव्यापी, सक्षम ब्रह्म है, तो हे भगवान! आइए मैं उसे यह समझाता हूं। आप मुझे निरपराध समझकर मन में क्रोध न करें। अब भी मेरे मन में कुछ शंकाएं हैं. प्लीज प्लीज, मेरी हाथ जोड़कर विनती है. हे प्रभो ! आपने उस समय मुझे बहुत प्रकार से समझाया था (फिर भी मेरा संदेह दूर नहीं हुआ था), हे प्रभु! ये सोच कर मुझ पर गुस्सा मत करो.

अब मुझे पहले जैसा लगाव नहीं रहा, अब मुझे रामकथा सुनने का शौक है। हे देवों के देव, जो आभूषण के रूप में शेषनाग धारण करते हैं! आप श्री रामचन्द्रजी के गुणों की पवित्र कथा सुनाइये। मैं पृथ्वी पर सिर झुकाकर आपके चरणों की वन्दना करता हूँ और हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ। आपको वेदों के सिद्धांतों को निचोड़कर श्री रघुनाथजी की निर्मल महिमा का वर्णन करना चाहिए।

हालाँकि, एक महिला होने के नाते मैं उनकी बात सुनने के अधिकार में नहीं हूँ, फिर भी मैं मन, वचन और विचार से उनकी बात सुनने में सक्षम हूँ। मैं कर्तव्य से आपका सेवक हूं। संतों को जहां भी कोई विशेषज्ञ मिल जाता है, वे उससे गूढ़

बातें भी नहीं छिपाते। हे देवों के देव! मैं बड़ी नम्रता से प्रार्थना करता हूं कि आप मुझ पर कृपा करें और मुझे श्री रघुनाथजी की कथा सुनायें। सबसे पहले उस कारण पर विचार करें जिसके कारण निर्गुण ब्रह्म सगुण का रूप धारण करता है।

तब हे प्रभु! श्री रामचन्द्रजी के अवतार (जन्म) की कथा तथा उनके उदार बचपन के चरित्र को कहिये। फिर श्री जानकीजी से उनका विवाह कैसे हुआ इसकी कथा सुनाइये और फिर बताइये कि उनके राज्य छोड़ने के लिये नाथ क्यों उत्तरदायी हैं? फिर वन में रहकर उन्होंने जो महान कार्य किये तथा जिस प्रकार उन्होंने रावण का वध किया, उसके विषय में बताइये। हे सुख के स्वामी! फिर आप वे सारी लीलाएँ बताइये जो उन्होंने सिंहासन पर बैठकर की थीं।

हे कृपा के धाम! फिर श्री रामचन्द्र जी ने जो अद्भुत चरित्र किया, वह बताइये- वे रघुकुल और शिरोमणि प्रजा सहित किस प्रकार अपने धाम को गये? हे प्रभो! फिर आप उस तत्त्व को समझाइये, जिसके अनुभव में मुनिगण सदैव मग्न रहते हैं; और फिर भक्ति, ज्ञान, विज्ञान और वैराग्य आदि विभागों सहित उसका वर्णन करो।

(इसके अलावा श्री रामचन्द्रजी के और भी कई रहस्यों (छिपे हुए भाव या चरित्र) के बारे में मुझे बताओ। हे प्रभु, आपका ज्ञान अत्यंत शुद्ध है। हे भगवन्। भले ही मैंने इसके बारे में नहीं पूछा हो, फिर भी आप दयालु हैं। छुपिए मत) यह भी ध्यान रखें कि वेदों ने आपको तीनों लोकों का गुरु कहा है, यह सरल और सुंदर प्रश्न सुनकर भगवान शिव बहुत प्रसन्न हुए।

भगवान शिव दो घंटे तक ध्यान के आनंद में डूबे रहे; फिर उन्होंने माला निकाली और फिर प्रसन्न होकर श्रीरघुनाथजी के चरित्र का वर्णन करने लगे। जिसे जाने बिना झूठ भी सच लगने लगता है, जैसे सांप बिना जाने रस्सी में उलझ जाता है; और जिसके मरने पर संसार उसी प्रकार लुप्त हो जाता है, जैसे जागने पर स्वप्न का भ्रम नष्ट हो जाता है।

मैं उन्हीं श्री रामचन्द्रजी के बालरूप की पूजा करता हूँ, जिनका नाम जपने से मनुष्य को सभी सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं। जो मंगल के निवास, अमंगल का नाश करने वाले तथा श्री दशरथजी के आँगन में क्रीड़ा करने वाले बालस्वरूप श्री रामचन्द्रजी मुझ पर कृपा करें। त्रिपुरासुर का वध करने वाले शिवजी श्री रामचन्द्रजी को प्रणाम करके प्रसन्न होकर अमृत के समान वाणी में बोले- हे गिरिराजकुमारी पार्वती! तुम धन्य हो ! धन्य हो !। आपके समान कोई दानी नहीं है।

आपने जो पूछा है वह श्रीरघुनाथजी की कथा का प्रसंग है, वह कथा सब लोकों के लिये जगत् को पवित्र करने वाली गंगाजी के समान है। आपने विश्व कल्याण के लिए ही प्रश्न पूछा है। आप ही श्रीरघुनाथजी के चरणों में प्रेम रखने वाले हैं। हे पार्वती मेरी राय में श्री रामजी की कृपा से तुम्हारे मन में अपने प्रति भी कोई दुःख, मोह, संदेह या भ्रम नहीं है।

फिर भी आपने वही (पुरानी) इच्छा व्यक्त की कि इस घटना को कहने और सुनने से सभी को लाभ होगा। जिन्होंने अपने कानों से भगवान की कथा नहीं सुनी, उनके कान के छिद्र साँप के बिल के समान हैं। जिन लोगों ने संतों को अपनी आंखों से नहीं देखा, उनकी वे आंखें मोर के पंखों पर दिखने वाली नकली आंखों में गिनी जाती हैं। वे सिर करेले के समान हैं, जो श्रीहरि और गुरु के चरणों में नहीं झुकते।

जिन लोगों ने भगवान की भक्ति को अपने हृदय में स्थान नहीं दिया, वे प्राणी जीवित रहते हुए भी मृत व्यक्ति के समान हैं। जो जीभ श्री रामचन्द्रजी के गुण नहीं गाती, वह मेंढक की जीभ के समान है। वह हृदय वज्र के समान कठोर और क्रूर है, जो भगवान का चरित्र सुनकर प्रसन्न नहीं होता। हे पार्वती! श्री रामचन्द्रजी की लीला सुनो, यह देवताओं के लिए कल्याणकारी है और राक्षसों को विशेष रूप से मोहित करने वाली है।

यह जानकर कि कामधेनु की तरह सेवा करने से सभी सुख मिलते हैं, और अच्छे पुरुषों का समाज सभी देवताओं का लोक है, श्री रामचड्ढा जी की कथा कौन नहीं सुनेगा। वेदों में श्री रामचन्द्रजी के असंख्य सुन्दर नाम, गुण, चरित्र, जन्म और कर्म बताये गये हैं। जिस प्रकार भगवान श्री रामचन्द्रजी अनन्त हैं, उसी प्रकार उनकी कथा, कीर्ति और गुण भी अनन्त हैं।

फिर भी मैं आपके महान प्रेम को देखकर जो कुछ मैंने सुना है और अपनी बुद्धि के अनुसार कहूँगा। हे पार्वती! आपका प्रश्न स्वाभाविक रूप से सुंदर, सुखदायक और समझदार है और मुझे यह बहुत पसंद है। परन्तु हे पार्वती! एक बात मुझे अच्छी नहीं लगी, भले ही तुमने आकर्षण के वशीभूत होकर यह बात कही हो। आपने जो कहा वह यह कि राम कोई और हैं, जिनका वेद गाते हैं और ऋषि-मुनि उनका ध्यान करते हैं -

ऐसे नीच लोग ही, जो छद्मवेशी राक्षसों से ग्रस्त हैं, पाखंडी हैं, भगवान के चरणों से विमुख हैं तथा जिन्हें सच और झूठ का ज्ञान नहीं है, ही इस प्रकार बोलते और सुनते हैं। जो अज्ञानी, मूर्ख, अंधे और भाग्यहीन हैं तथा जिनके मन का दर्पण

विषयों के कोहरे से ढका हुआ है; जो व्यभिचारी, धोखेबाज और अत्यन्त कुटिल हैं तथा जिन्होंने कभी स्वप्न में भी सन्त समाज को नहीं देखा;

और वेदों के विरुद्ध ऐसी बातें वही कहते हैं जो अपना लाभ-हानि नहीं समझते। जिनके हृदय का दर्पण मलिन है और जिनकी आँखें हीन हैं, वे बेचारे श्री रामचन्द्रजी का रूप कैसे देख सकेंगे॥ जिनको निर्गुण और सगुण का विवेक नहीं है, जो बहुत सी मनगढ़ंत बातें करते हैं, जो श्रीहरिकी माया के प्रभाव से व्यर्थ ही संसार में (जन्म-मृत्यु के चक्र में) घूमते रहते हैं, उनके लिए कुछ भी कहना असंभव नहीं है।

जो लोग वायुक रोग (क्षीणता, पागलपन आदि) से पीड़ित हैं, जिन पर भूत-प्रेत का साया है और जो नशे में हैं, ऐसे लोग सोच-विचारकर नहीं बोलते हैं। जिसने बड़े प्रभाव वाली शराब पी रखी हो उसकी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। अपने हृदय में ऐसा विचार करके संदेह छोड़कर श्री रामचन्द्रजी के चरणों में भजन करो। हे पार्वती मेरे वचनों को सुनो जैसे सूर्य की किरणें भ्रम के अंधकार को नष्ट कर देती हैं।

सगुण और निर्गुण में कोई अंतर नहीं है - ऋषि, पुराण, पंडित और वेद सभी यही कहते हैं। जो निर्गण, अरूप (निराकार), अलख (अव्यक्त) और अजन्मा है, वह भक्तों के प्रेम से सगुण हो जाता है। निर्गुण सगुण के समान कैसे है? जैसे पानी और ओलों में कोई अंतर नहीं है। (दोनों जल हैं, इसी प्रकार निर्गुण और सगुण भी एक ही हैं।) जिसका नाम सूर्य है, उसके लिए मोह रूपी अंधकार को दूर करने की बात कैसे कही जा सकती है।

श्री रामचन्द्रजी सच्चिदानन्दस्वरूप सूर्य हैं। मोह रूपी रात्रि का लेशमात्र भी नहीं है। स्वभावतः प्रकाश रूप में भगवान हैं और (छह आश्चर्यों सहित) ज्ञान रूप में सुबह नहीं है (यदि अज्ञान रूप में रात्रि है तो) तब ज्ञान रूपी प्रातःकाल होता है; ये जीव के धर्म हैं, सारा संसार जानता है कि श्री रामचन्द्र सर्वव्यापक ब्रह्म, परमानन्द, परमेश्वर और पुराण पुरुष हैं।

जो [पुराण] पुरुष प्रसिद्ध है, प्रकाश का भण्डार है, सभी रूपों में प्रकट है, सभी प्राणियों, माया और संसार का स्वामी है, वह, रघुकुलमणि श्री रामचन्द्रजी, मेरे स्वामी हैं - ऐसा कहकर भगवान शिव ने प्रणाम किया उसका सिर उसके पास. अज्ञानी लोग उनकी माया को नहीं समझते और इसके लिए मूर्ख भगवान श्री रामचन्द्रजी को दोष देते हैं, जैसे आकाश में बादलों का पर्दा देखकर दुर्बुद्धि (अज्ञानी) लोग कहते हैं कि बादलों ने सूर्य को ढक लिया है।

जो व्यक्ति आंख में उंगली डालकर देखता है, उसे दो चांद नजर आते हैं। हे पार्वती! ऐसे मोह से श्री रामचन्द्रजी का चिन्तन करना आकाश में अन्धकार, धुआँ और धूल देखने के समान है। जैसे आकाश पवित्र और निष्कलंक है, उसे कोई न तो दूषित कर सकता है और न ही छू सकता है, उसी प्रकार भगवान श्री रामचन्द्रजी भी सदैव पवित्र और निष्कलंक हैं।

विषय, इन्द्रियाँ, इन्द्रियों का देवता और आत्मा--ये सब एक की सहायता से एक ही चेतना हैं। (अर्थात विषयों का प्रकाश इंद्रियों से होता है, इंद्रियों का प्रकाश इंद्रियों के देवताओं से होता है और देवताओं का प्रकाश चेतन आत्मा से होता है।) यह संसार प्रकाशमय है और श्री रामचन्द्रजी इसके प्रकाशक हैं। वह माया के स्वामी और ज्ञान तथा गुणों के धाम हैं। जिसकी शक्ति से, मोह के सहारे जड़ माया भी सत्य प्रतीत होती है।

जैसे सीप में चाँदी दिखाई देती है और सूर्य की किरणों में पानी दिखाई देता है। यद्यपि यह मान्यता तीनों कालों में मिथ्या है तथापि इस भ्रम को कोई दूर नहीं कर सकता। उसी प्रकार यह संसार ईश्वर पर आश्रित रहता है। यद्यपि यह असत्य है, फिर भी यह पीड़ा का कारण बनता है; जैसे स्वप्न में किसी का सिर काट दिया जाए तो जाग्रत हुए बिना वह दुःख दूर नहीं होता।

यह पार्वती है! जिनकी कृपा से इस प्रकार का भ्रम दूर हो जाता है, वे दयालु श्री रघुनाथजी हैं। जिसका आदि और अंत कोई नहीं जान सका। वेदों ने अपनी बुद्धि से अनुमान करके यह श्लोक गाया है (जैसा कि नीचे लिखा है) - ब्रह्म (ब्रह्म) बिना पैरों के चलता है, बिना कानों के सुनता है, बिना हाथों के विभिन्न प्रकार के काम करता है, बिना मुंह (जिहा) के सभी काम करता है। छह) सुखों का आनंद लेता है और बिना शब्दों के भी बहुत सक्षम वक्ता होता है।

शरीर (त्वचा) नाक के बिना ही सभी गंधों को छूती है, आंखों के बिना देखती है और जो उसके बिना है उसे ग्रहण (सूंघ) लेती है। उस ब्रह्म का कार्य सब प्रकार से इतना अलौकिक महिमा वाला नहीं कहा जा सकता। वेद और पंडित इस प्रकार जिनका वर्णन करते हैं और ऋषिगण जिनका ध्यान करते हैं, वे दशरथनन्दन, भक्तों के हितकारी, अयोध्या के स्वामी भगवान श्री रामचड्ढाजी हैं।

हे पार्वती! जिनके नाम के प्रभाव से मैं काशी में किसी मरते हुए प्राणी को देखकर राम मंत्र का जाप करके उसे दुःख मुक्त कर देता हूँ, वे मेरे भगवान रघुश्रेष्ठ श्री रामचन्द्रजी हैं, जो जड़-चेतन के स्वामी और ज्ञानी हैं। हर किसी के दिल के अंदरूनी हिस्से. जिनका नाम मजबूरी में भी (बिना इच्छा के) लेने से मनुष्य के जन्म-जन्मान्तर के पाप जल जाते हैं। फिर जो मनुष्य आदरपूर्वक उनका

स्मरण करते हैं, वे संसार सागर को गाय के खुर से बने हुए गड्ढे के समान (अर्थात् बिना परिश्रम के) पार कर जाते हैं।

हे पार्वती! वे भगवान श्री रामचन्द्रजी हैं। उनमें भ्रम है, आपका ऐसा कहना बहुत अनुचित है. इस प्रकार का संदेह मन में लाते ही व्यक्ति के ज्ञान, वैराग्य आदि सभी गुण नष्ट हो जाते हैं। शिवजी के मोहभंग भरे वचन सुनकर पार्वीजी की सारी बुरी योजनाएँ मिट गईं। उसे श्रीरघुनाथजी के चरणों में प्रेम और विश्वास उत्पन्न हो गया और वह कठिन असंभावनाओं (जिसका घटित होना संभव न हो) की कल्पना करता रहा।

स्वामी (शिवजी) के चरण कमलों को बार-बार पकड़कर और अपने कमल रूपी हाथों को जोड़कर पार्वती जी प्रेम के रस में मग्न होकर सुंदर वचन बोलती थीं। चंद्रमा की किरणों के समान शीतल आपकी वाणी सुनकर शरद् ऋतु के सूर्य का घोर ताप (अंधकार) मेरा अज्ञान नष्ट हो गया। वह दयालु है! आपने मेरे सारे संदेह दूर कर दिये, अब मुझे श्री रामचन्द्रजी का सच्चा स्वरूप समझ में आ गया है।

हे नाथ! आपकी कृपा से मेरा दुःख दूर हो गया और आपके चरणों की कृपा से मैं सुखी हो गया। यद्यपि मैं स्त्री होकर भी स्वभाव से मूर्ख और अज्ञानी हूं, तथापि अब भी आप मुझे अपना दास समझते हैं - हे प्रभु। यदि तुम मुझसे प्रसन्न हो तो वही कहो जो मैंने तुमसे पहले पूछा था। यह सत्य है कि श्री रामचन्द्रजी ब्रह्म हैं, चिन्मय हैं (ज्ञानस्वरूप हैं), अविनाशी हैं, सबसे मुक्त हैं और सबके हृदय रूपी नगर में निवास करते हैं।

फिर नाथ हैं! उन्होंने किस कारण से मानव शरीर धारण किया? हे धर्म की ध्वजा धारण करने वाले प्रभु! यह मुझे समझाओ. पार्वती के अत्यंत विनम्र वचन सुनकर और श्री रामचन्द्रजी की कथा में उनका पवित्र प्रेम देखकर कामदेव के शत्रु, स्वभाव से ही हितैषी, दयालु शिवजी मन में बहुत प्रसन्न हुए और अनेक प्रकार से पार्वती की स्तुति की और फिर बोले--

हे पार्वती! निर्मल रामचरितमानस की वह मंगलमय कथा सुनो जिसे काकभुशुण्डि ने विस्तार से कहा था और जिसे पक्षीराज गरुड़जी ने सुना था। वो बेहतरीन बातचीत कैसे हुई, ये मैं आगे बताऊंगा. अब श्री रामचन्द्रजी के अवतार का परम सुन्दर और पवित्र (पापनाशक) चरित्र सुनो।

श्रीहरि के गुण, नाम, कथा और रूप सभी अपार, असंख्य और असीमित हैं। फिर भी हे पार्वती! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार कहता हूं, तुम आदरपूर्वक सुनो हे

पार्वती! सुनो, वेदों और शास्त्रों ने श्रीहरि के सुन्दर, विस्तृत और पवित्र चरित्रों की स्तुति गाई है। हरिका अवतार जिस कारण से होता है वह 'सिर्फ इतना' नहीं कहा जा सकता (कई कारण हो सकते हैं और कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जिन्हें कोई नहीं जान सकता)।

हे बुद्धिमान! सुनो, हमारा अभिप्राय यह है कि श्री रामचन्द्रजी के तर्क का खण्डन बुद्धि, मन और वाणी से नहीं हो सकता। तथापि संत, मुनि, वेद और पुराण अपनी बुद्धि के अनुसार जो कुछ कहते हैं और जो कुछ मैं समझता हूँ, हे सुमुखी! मैं तुम्हें वही कारण बताऊंगा. जब-जब धर्म का ह्रास होता है, तब-तब नीच और अहंकारी राक्षस बढ़ते हैं।

और वे ऐसा अन्याय करते हैं जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता और ब्राह्मणों, गायों, देवताओं और पृथ्वी को कष्ट होता है, तब धन्य भगवान एक दिव्य शरीर का रूप धारण करते हैं और सज्जनों के दर्द को दूर करते हैं। वह राक्षसों को मारता है और देवताओं की स्थापना करता है, अपने [श्वास रूप] में वेदों की गरिमा की रक्षा करता है और दुनिया में अपनी पवित्र प्रसिद्धि फैलाता है। श्री रामचन्द्रजी के अवतार का यही कारण है।

उस स्तुति को बार-बार गाने से भक्त भवसागर में डूब जाते हैं। भगवान कृपासागर ने भक्तों के कल्याण के लिए यह शरीर धारण किया है। श्री रामचन्द्रजी के जन्म के अनेक कारण हैं, जो एक-दूसरे से अधिक विचित्र हैं। भवानी एक सुंदर और बुद्धिमान व्यक्ति है! मैं उनके दोनों जन्मों का विस्तारपूर्वक वर्णन करूंगा, तुम ध्यानपूर्वक सुनो। श्रीहरिकि जय और विजय दो शुद्ध द्वारपाल हैं, जिन्हें सभी जानते हैं।

उन दोनों भाइयों को ब्राह्मण (सनकादि) के श्राप से राक्षसों का तामसिक शरीर प्राप्त हुआ। एक का नाम हिरण्यकशिपु और दूसरे का हिरण्याक्ष था। देवताओं के राजा इंद्र का अभिमान दूर करने के कारण वे पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हो गए। वह युद्ध जीतने वाला एक प्रसिद्ध नायक था। इनमें से एक (हिरण्यक्ष) को भगवान ने सूअर का शरीर धारण करके मार डाला; फिर उसने नरसिम्हा के रूप में एक और (हिरण्यकश्यप) का वध किया और अपने भक्त प्रह्लाद की सुंदर प्रसिद्धि फैलाई।

ब्राह्मण के वचन (श्राप) का प्रमाण तीन जन्मों तक था। अत: उनके कल्याण हेतु एक बार फिर भक्त-प्रेमी भगवान अवतरित हुए। वहीं (उस अवतार में) उनके माता-पिता कश्यप और अदिति थे, जो दशरथ और कोसल्या के नाम से प्रसिद्ध थे। एक कल्प में उन्होंने इस प्रकार अवतरित होकर संसार में पवित्र कार्य किये।

एक कल्प में जलंधर दैत्य से युद्ध में पराजय से समस्त देवताओं को दुःखी देखकर भगवान शिव ने उससे भयंकर युद्ध किया; लेकिन राक्षस को मारने के बाद वह महान योद्धा नहीं मरा।

उस राक्षस राजा की पत्नी अत्यंत सती (अपने पति के प्रति अत्यधिक समर्पित) थी। यहां तक कि भगवान शिव, जिन्होंने अपनी ताकत के कारण त्रिपुरासुर को [एक अजेय शत्रु की तरह] नष्ट कर दिया था, भी उस राक्षस को नहीं हरा सके। भगवान ने छल से उस स्त्री का व्रत भंग करके देवताओं का काम किया। जब स्त्री को यह पता चला तो वह क्रोधित हो गई और उसने भगवान को श्राप दिया। लीलाओं के भण्डार दयालु हरि ने उस स्त्री के शाप को मान्य (स्वीकार) कर लिया। वही जलंधर उस कल्प में रावण हुआ, जिसे श्री रामचन्द्रजी ने युद्ध में मारकर परमपद दिया।

यही एक जन्म का कारण था, जिसके फलस्वरूप श्री रामचन्द्रजी ने मनुष्य रूप धारण किया। हे भारद्वाज मुनि! सुनो, कवियों ने भगवान के प्रत्येक अवतार की कथा का भिन्न-भिन्न प्रकार से वर्णन किया है। एक बार नारदजी ने उन्हें शाप दे दिया था, अत: वे एक कल्प में अवतरित हुए। यह सुनकर पार्वतीजी को बड़ा आश्चर्य हुआ [और बोलीं] नारदजी तो विष्णुभक्त और ज्ञानी हैं। ऋषि ने किस कारण से भगवान को श्राप दिया? भगवान लक्ष्मीपति ने उनके प्रति क्या अपराध किया था? हे मुरारी (शंकरजी)! मुझे यह कहानी बताओ. नारद मुनि के मन में मोह होना बहुत ही आश्चर्य की बात है.

महादेवजी हँसे और बोले- कोई बुद्धिमान या मूर्ख नहीं होता। श्रीरघुनाथजी जब किसी के साथ जैसा व्यवहार करते हैं, वह उसी क्षण वैसा ही हो जाता है। याजवल्क्यजी कहते हैं--हे भरद्वाज! मैं श्री रामचन्द्रजी के गुणों की कथा कहता हूँ, आप आदरपूर्वक सुनें। तुलसीदासजी कहते हैं- मान और अभिमान छोड़कर आवागमन का नाश करने वाले रघुनाथजी को भजो।

हिमालय पर्वत पर एक बड़ी पवित्र गुफा थी। उसके समीप सुन्दर गंगाजी बह रही थीं। उस परम पवित्र एवं सुन्दर आश्रम को देखकर नारदजी को बड़ा सुख हुआ। नारद मुनिकी [यह तपोमयी] की स्थिति देखकर देवराज इंद्र भयभीत हो गये। उन्होंने कामदेव को बुलाया और उनका सत्कार किया [और कहा] मेरे [हित के लिए] आप अपने सहायकों के साथ [नारद की समाधि तोड़ने के लिए] जाओ। यह सुनकर मीनध्वज कामदेव मन ही मन प्रसन्न होकर चले गए।

इन्द्र के मन में भय था कि देवर्षि नारद मेरी नगरी (अमरावती) में निवास (राज्य) चाहते हैं। संसार में जो लोग कामी और लालची हैं, वे कुटिल कौवे की

तरह सबसे डरते हैं। जैसे एक मूर्ख कुत्ता शेर को देखकर सूखी हड्डी लेकर भाग गया और उस मूर्ख ने सोचा कि कहीं शेर उस हड्डी को छीन न ले, उसी प्रकार नारदजी उसका राज्य छीन लेंगे, यह सोचकर इंद्र को कोई लज्जा नहीं आई।

जब कामदेव उस आश्रम में गये तो उन्होंने अपनी माया से वहां वसंत ऋतु उत्पन्न कर दी। नाना प्रकार के स्तनों पर रंग-बिरंगे फूल खिल गए, उन पर अंगारे पकने लगे और भौंरे गुंजन करने लगे। कामाग्नि को प्रज्वलित करने वाली तीन प्रकार की (शीतल, मंद और सुगंधित) सुखद हवाएं चलने लगीं। रंभा और अन्य युवतियाँ, जो सभी सेक्स की कला में विशेषज्ञ थीं।

वह हाथ में गेंद लेकर तरह-तरह के ताने गाने लगी और तरह-तरह के खेल खेलने लगी। कामदेव इन सहायकों को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और फिर उन्होंने तरह-तरह की मायाएँ रचीं। परंतु कामदेव की कोई भी कला मुनि पर प्रभाव नहीं डाल सकी। तब पापी कामदेव को अपने विनाश का भय सताने लगा। यद्यपि भगवान लक्ष्मीपति एक महान रक्षक हैं, कोई भी उनकी सीमाओं को दबा नहीं सकता है।

तब कामदेव अपने सहायकों सहित अत्यंत भयभीत होकर और मन में हार मानकर अत्यंत दयनीय वचन कहते हुए ऋषि के चरणों में गिर पड़े। नारदजी के मन में कोई क्रोध नहीं था। उन्होंने प्रेमपूर्ण वचन कहकर कामदेव को संतुष्ट किया। फिर ऋषि के चरणों में सिर झुकाकर और उनकी अनुमति लेकर कामदेव अपने सहायकों सहित लौट आये।

देवराज इंद्र की सभा में जाकर उन्होंने साधु की बुद्धि और उनके कार्यों के बारे में बताया, जिसे सुनकर सभी आश्चर्यचकित रह गए और उन्होंने साधु की प्रशंसा की और श्रीहरि को सिर झुकाया। तब नारदजी भगवान शिव के पास गये। उसे इस बात का अभिमान हो गया कि उसने कामदेव को जीत लिया है। उन्होंने शिवजी को कामदेव का चरित्र सुनाया और महादेवजी ने उन्हें (नारदजी को) बहुत प्रिय माना और उन्हें शिक्षा दी [इस प्रकार] -

हे ऋषि! हे श्रीहरिका, मैं आपसे बार-बार प्रार्थना करता हूं कि जिस तरह आपने मुझे यह कहानी सुनाई है, उस तरह कभी भी इस कहानी को न सुनाएं। चर्चा चलती भी रहे तो छुपी रहनी चाहिए. अब तमाशा सुनो. हरिकी की इच्छाशक्ति बहुत मजबूत है.

श्री रामचन्द्रजी जो करना चाहते हैं वह होता है, कोई भी ऐसा नहीं है जो उनके विरुद्ध ऐसा कर सके। भगवान शिव के शब्द नारद को प्रसन्न नहीं हुए, इसलिए

वे ब्रह्मलोक के लिए प्रस्थान कर गए। एक बार, मुनिनाथ नारदजी, जो गायन कला में कुशल थे, अपने हाथ में एक सुंदर वीणा लेकर, हरि के गुणों का गान करते हुए, वहाँ गए, जहाँ वेदों के प्रमुख, मूर्तिमान वेदांत तत्वदर्शी, निवास करते हैं।

भगवान रामनिवास बड़े हर्ष के साथ उठकर उनसे मिले और ऋषि (नारदजी) के साथ आसन पर बैठ गये। चराचर भगवान हँसे और बोले - हे ऋषि! आज आपने कई लोगों पर दया की है. यद्यपि श्री शिवजी ने पहले ही बता दिया था, फिर भी नारदजी ने कामदेव का सारा चरित्र भगवान को सुना दिया। श्रीरघुनाथजी की माया बड़ी प्रबल है। इस संसार में ऐसा कौन पैदा हुआ है जिसे वह मोहित न कर ले?

भगवान सूखे मुख से कोमल वचन बोले- हे मुनिराज! आपके स्मरण से दूसरों का मोह, काम और अहंकार नष्ट हो जाता है [फिर आपके विषय में कहने को क्या है? हे ऋषि! सुनो, राग तो उसी के मन में होता है जिसके हृदय में ज्ञान और वैराग्य नहीं होता। आप ब्रह्मचर्य में तत्पर एवं धैर्यशील हैं। खैर, कामदेव आपको भी परेशान कर रहे होंगे।

नारदजी ने अभिमान से कहा- प्रभु! यह सब आपकी कृपा है. दयालु भगवान के मन में विचार करने पर मैंने देखा कि उनके मन में अहंकार के भारी वृक्ष का अंकुर उग आया है। मैं उसे तुरंत उखाड़ फेंकूंगा, क्योंकि नौकरों की भलाई करना हमारा व्रत है।' मैं निश्चित रूप से ऐसे कदम उठाऊंगा जिससे मुनिका और मेरे खेल को फायदा होगा।

तब नारदजी ने भगवान के चरणों में सिर झुकाया और चल दिये। उसके हृदय में अभिमान और भी बढ़ गया। तब भगवान लक्ष्मीपति ने अपनी माया को प्रेरित किया। अब सुनिए उनकी मेहनत. उसने (हरिमय) रास्ते में सो योजन (चार सो कोस) का एक नगर बसाया। उस शहर की भौतिक संरचना भगवान विष्णु के निवास स्थान लक्ष्मीनी के शहर (वैकुंठ) से भी अधिक सुंदर थी।

उस नगर में ऐसे सुन्दर स्त्री-पुरुष रहते थे मानो अनेक कामदेव तथा रति मनुष्य रूप में हों। उस नगर में शीलनिधि नाम का एक राजा रहता था, जिसके पास असंख्य घोड़े, हाथी और सेना समूह थे। उनका वैभव और विलासिता सैकड़ों इंद्रों के समान थी। यह सौंदर्य, शक्ति, शक्ति और नैतिकता का घर था। उनकी विश्वमोहिनी नाम की एक पुत्री थी, जिसकी सुंदरता पर लक्ष्मीजी भी मोहित हो जाती थीं।

वह समस्त गुणों की खान भगवान की माया थी। इसकी सुंदरता का वर्णन कैसे किया जा सकता है? वह राजकुमारी स्वयंवर करना चाहती थी, जिसके कारण असंख्य राजा वहां आये हुए थे। खिलवाड़ी ऋषि नारदजी उस नगर में गए और नगरवासियों का हाल पूछा। सारा समाचार सुनकर वे राजा के महल में आये। पूजा करने के बाद राजा ने साधु को आसन पर बैठाया।

तब राजा ने राजकुमारी को लाकर नारदजी को दिखाया [और पूछा-] हे भगवन्! अपने हृदय में विचार करके इसके सब हित-अहित बताइये। उसकी सुंदरता देखकर ऋषि अपना वैराग्य भूल गए और बहुत देर तक उसे देखते रहे। उसके लक्षण देखकर ऋषि अपने आप को भूल गये और मन ही मन प्रसन्न हुए, परन्तु उन लक्षणों को खुलकर प्रकट नहीं किया।

लक्षणों पर विचार करते हुए वह मन में कहने लगा कि जो इससे विवाह करेगा वह अमर हो जाएगा और युद्धभूमि में उसे कोई नहीं हरा सकेगा। यह शीलानिधिकन्या जिसके साथ विवाह करेगी, सभी चर-अचर प्राणी उसकी सेवा करेंगे। ऋषि ने सभी लक्षणों पर विचार करके उसे अपने हृदय में रख लिया और स्वयं कुछ बनाकर राजा को सुनाया। नारदजी राजा को कन्या की कुशल कामना बताकर चले गये। लेकिन उसके मन में एक चिंता थी कि---

अब मुझे जाकर खूब सोच-विचार करना चाहिए और ऐसा उपाय करना चाहिए कि यह लड़की मुझे ही चुने। इस समय तपस्या से कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। हे विधाता! मुझे यह लड़की कैसे मिलेगी? इस समय मुझे एक विशाल रूप और विशाल (सुन्दर) रूप की आवश्यकता है, जिसे देखकर राजकुमारी मुझ पर प्रसन्न हो जाये और फिर मेरे गले में जयमाला डाल दे। उस समय नारदजी ने भगवान से अनेक प्रकार से प्रार्थना की। तभी दयालु भगवान वहां प्रकट हुए। स्वामी को देखकर नारदजी की आंखें नम हो गईं और मन में बहुत प्रसन्न हुए कि अब काम बन जाएगा।

नारदजी को बहुत नम्रता महसूस हुई और उन्होंने पूरी कहानी सुनाई [और प्रार्थना की] कृपया मेरी मदद करें। हे प्रभो ! आप मुझे अपना रूप दे दीजिए और मैं उसे (राजकुमारी को) किसी भी प्रकार प्राप्त नहीं कर सकता। मेरे नाथ ! जो कुछ भी मेरे हित में हो, तुम वह शीघ्र करो। मैं आपका गुलाम हूँ। अपनी माया की अपार शक्ति देखकर दयालु भगवान मन ही मन हँसे और बोले -

हे नारदजी! सुनो, हम वही करेंगे जो तुम्हारे हित में होगा, और कुछ नहीं। हमारी बातें झूठी नहीं हैं. हे योगी मुनि! -सुनो, अगर कोई बीमारी से पीड़ित मरीज दवा मांगता है तो डॉक्टर उसे दवा नहीं देता है। इसी प्रकार मैंने भी तुम्हारा हित करने

का निश्चय किया है। इतना कहकर भगवान अन्तर्धान हो गये। ऋषिगण, जो भगवान की माया के प्रभाव में थे, इतने मूर्ख हो गए कि वे भगवान की अनिर्वचनीय (स्पष्ट) वाणी को भी नहीं समझ सके। ऋषिराज नारदजी तुरंत उस स्थान पर गये जहाँ स्वयंवर की भूमि बनायी गयी थी।

राजा लोग समाज सहित पूर्णतः सुसज्जित होकर अपने-अपने आसन पर बैठे हुए थे। ऋषि (नारद) मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे कि मेरा रूप अत्यंत सुंदर है, वह लड़की भूलकर भी मेरे अलावा किसी अन्य से विवाह नहीं करेगी। ऋषि के कल्याण के लिए भगवान ने अपनी कृपा से उन्हें इतना कुरूप बना दिया कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता, लेकिन इस चरित्र को कोई नहीं जान सका। सभी ने उन्हें नारद समझकर नमस्कार किया।

वहां भगवान शिव के दो सदस्य भी थे. वह सारे रहस्य जानता था और ब्राह्मण के भेष में सारी गतिविधियों पर नजर रखता था। वह भी बड़ा मौजी था. जिस समाज (पंक्ति) में नारदजी बड़े अभिमान से बैठे थे, वहीं भगवान शिव के ये दोनों सदस्य भी बैठे थे। चूँकि वह ब्राह्मण का भेष धारण किये हुए था इसलिए उसकी चाल कोई नहीं जान सका।

वह नारदजी से व्यंग्यात्मक शब्द कहता था- भगवान ने इसे अच्छा 'सौन्दर्य' दिया है। उनकी सुंदरता देखकर राजकुमारी रोमांचित हो जाएगी और यह जानकर कि वह 'हरि' (बंदर) है, वह उनसे विशेष प्रेम करेगी। नारद मुनि मोहग्रस्त हो रहे थे क्योंकि उनका मन किसी और के हाथ में (माया के प्रभाव में) था। भगवान शिव के अनुयायी बहुत प्रसन्न होकर हँस रहे थे। हालाँकि ऋषि उसकी अजीब बातें सुन रहे थे, लेकिन वह उन्हें समझ नहीं सके क्योंकि उनके दिमाग में भ्रम के बादल छाए हुए थे। उन्होंने उनकी बातों को प्रशंसा के तौर पर लिया.

इस विशेष चरित्र के बारे में कोई और नहीं जानता था, केवल राजकुमारी [नारदजिका] ने ही वह रूप देखा था। उसका वानर जैसा मुख और भयंकर शरीर देखते ही कन्या के मन में क्रोध उत्पन्न हो गया। फिर राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ ऐसे चली मानो वह कोई राजसी राजकुमारी हो। वह अपने कमल के समान हाथों में माला लेकर सभी राजाओं की ओर देखती हुई घूमने लगी।

उन्होंने भूलकर भी उस ओर नहीं देखा जिधर नारदजी अहंकार में डूबे बैठे थे। नारद मुनि बार-बार उछलते और संघर्ष करते हैं। उनकी हालत देखकर भगवान शिव के गण मुस्कुराने लगते हैं। भगवान कपालू भी राजा का शरीर धारण कर

वहां पहुंच गये। राजकुमारी ने खुशी-खुशी उसके गले में माला डाल दी। भगवान लक्ष्मीनिवास वधू को ले गये। पूरा राजपरिवार निराश हो गया।

मोह के कारण साधु की बुद्धि नष्ट हो गई थी, इस कारण वह (राजकुमारी को देखकर) बहुत परेशान हो गया। मानो मणि गाँठ से निकल कर गिर पड़ी हो। तब भगवान शिव के साथी मुस्कुराए और बोले, "जाओ और दर्पण में अपना चेहरा देखो।" यह कहकर वे दोनों बहुत डर गये और भाग गये। ऋषि ने पानी में देखा और अपना चेहरा देखा। उसका रूप देखकर उसका क्रोध बहुत बढ़ गया। उन्होंने भगवान शिव के उन गणों को अत्यंत कठोर श्राप दिया---

तुम दोनों पाखण्डी, पापी और राक्षस बन जाओ। तुमने हमें हँसाया, उसका फल चखाओ। अब दोबारा किसी मूर्ख पर मत हंसना. जब ऋषि ने फिर से पानी में देखा, तो उन्हें अपना (वास्तविक) रूप प्राप्त हो गया; फिर भी वह संतुष्ट नहीं हुआ. उसके होंठ कांप रहे थे और हृदय क्रोध से भरा हुआ था। वह तुरन्त भगवान कमलापति के पास गये।

वह मन में सोचता था-या तो जाऊँ। मैं शाप दे दूँगा या अपने प्राण त्याग दूँगा। उसने मुझे जग हंसाया. दैत्यों के शत्रु भगवान श्री हरि उनसे बीच में ही मिले। उनके साथ लक्ष्मीजी और वही राजकुमारी थीं. देवाधिदेव भगवान् ने मधुर वाणी में कहा- हे ऋषि! मैं व्याकुल होकर कहाँ जाऊँ? ये बातें सुनकर नारद बहुत क्रोधित हुए; माया के वश में होने के कारण मन में कोई जागरूकता नहीं रहती।

, ऋषि ने कहा--] तुम दूसरों का धन नहीं देख सकते, तुममें ईर्ष्या और छल बहुत है। समुद्र मंथन के समय तुमने भगवान शिव को उन्मत्त कर दिया और देवताओं को प्रेरित कर विषपान करा दिया। राक्षसों को शराब और भगवान शिव को विष पिलाकर तुमने स्वयं लक्ष्मी और सुंदर [कोस्तुभ] मणि को छीन लिया। तुम बहुत धोखेबाज और नीच हो. तुम सदैव कपटपूर्ण व्यवहार करते हो।

आप बेहद स्वतंत्र हैं, आपसे ऊपर कोई नहीं है, आपका जो भी मन करता है आप सहजता से करते हैं। आप अच्छी चीज़ों को बुरी चीज़ों में और बुरी चीज़ों को अच्छी चीज़ों में बदल देते हैं। हर्ष और विषाद हृदय में कुछ नहीं लाते। तू सब को धोखा देकर बड़ा निडर हो गया है; इससे (धोखा देने की क्रिया में) मन में सदैव उत्साह बना रहता है। अच्छे और बुरे कर्मों में बाधा नहीं आती। तुम्हें अब तक किसी ने ठीक नहीं किया था.

इस बार तुमने एक अच्छे घर को बर्बाद कर दिया है (तुमने मेरे जैसे महान व्यक्ति के साथ इश्कबाजी की है)। अत: तुम्हें अपने कर्मों का फल अवश्य

मिलेगा। जिस शरीर से तुमने मेरे साथ छल किया है उसी शरीर को तुम भी धारण कर लो, यही मेरा श्राप है। आपने हमें बंदरों जैसा बना दिया था, इसमें बंदर ही आपकी मदद करेंगे। जिन स्त्रियों से मैं प्रेम करता था, उनसे मुझे अलग करके तुमने मेरा बहुत बड़ा अपमान किया है, इससे तुम्हें उन स्त्रियों से वियोग में बहुत दुख होगा।

श्राप को सिर पर उठाकर हृदय में हर्ष भरकर भगवान ने नारदजी से बहुत विनती की और उनकी कृपा से भगवान ने अपनी माया की शक्ति वापस ले ली। जब भगवान ने अपनी माया हटाई तो न तो वहां लक्ष्मी रहीं और न ही राजकुमारी। तब ऋषि अत्यंत भयभीत हो गये और श्रीहरि के चरण पकड़कर बोले- हे शरणागत के दुखों को हरने वाले! कृपया मेरी रक्षा करें.

वह दयालु है! मेरा श्राप झूठा हो. तब गरीबों पर दया करने वाले भगवान ने कहा कि यह सब मेरी इच्छा से हुआ है। साधु ने कहा--मैंने तुमसे बहुत-सी झूठी बातें कही हैं। मेरे पाप कैसे मिटेंगे? भगवान ने कहा--जाओ और शंकरजी का शतनाम जप करो, इससे हृदय को तुरंत शांति मिलेगी। भगवान शिव के समान मेरा कोई प्रिय नहीं है, इस शाप को भूलकर भी मेरा त्याग न करें।

हे ऋषि! जिस पर मुरारी (शिवजी) की कृपा नहीं होती, उसे मेरी भक्ति प्राप्त नहीं होती। अपने दिल में यह दृढ़ संकल्प लेकर जाओ और दुनिया में घूमो। अब मेरी माया तुम्हारे पास न आयेगी। साधु को अनेक प्रकार से समझाने पर भगवान को ज्ञान हो गया और नारदजी श्री रामचन्द्रजी के गुण गाते हुए सत्यलोक (ब्रह्मलोक) को चले गये।

जब शिव के अनुचरों ने साधु को बिना किसी आसक्ति के और हृदय में अत्यंत प्रसन्नता के साथ जाते हुए देखा, तो वे अत्यंत भयभीत होकर नारदजी के पास आये और उनके चरण पकड़कर नम्र वचन बोले- हे ऋषि! हम ब्राह्मण नहीं हैं, हम भगवान शिव के सदस्य हैं। हमने बहुत बड़ा अपराध किया, जिसका फल हमें मिला। हे क्रपालु! अब आप कृपा करके यह शाप हटा दीजिये। गरीबों पर दया करने वाले नारदजी ने कहा-

तुम दोनों जाकर राक्षस बन जाओ; आपको अपार धन, वैभव और शक्ति प्राप्त हो। कब तुम जीत जाओगे तब भगवान विष्णु अपनी भुजाओं के बल से सम्पूर्ण जगत् को धारण करके मनुष्य का शरीर धारण करेंगे। युद्ध में श्री हरि के हाथों तुम्हारी मृत्यु होगी, जिससे तुम मुक्त हो जाओगे और संसार में दोबारा जन्म नहीं पाओगे। उन दोनों ने ऋषि के चरणों में सिर झुकाया और कुछ समय बाद वे राक्षस बन गए।

जो भगवान देवताओं को प्रसन्न करते हैं, सज्जनों को सुख देते हैं और पृथ्वी का भार हर लेते हैं, उन्होंने इसी कारण से एक कल्प में मनुष्य का अवतार लिया। इस प्रकार ईश्वर के अनेक सुन्दर, सुखद एवं अलौकिक जन्म व कर्म हैं। हर कल्प में जब-जब भगवान अवतार लेते हैं और तरह-तरह की सुंदर लीलाएं करते हैं।

ऋषियों ने बार-बार परम पवित्र काव्य का पाठ किया है, उसकी कथाएँ गाई हैं और अनेक प्रकार की अनोखी घटनाओं का वर्णन किया है, जिन्हें सुनकर बुद्धिमान लोगों को आश्चर्य नहीं होता। श्रीहरि अनन्त हैं (उनसे बढ़कर कोई नहीं) और उनकी कथा भी अनन्त है; इसे सभी संत अनेक प्रकार से सुनते और कहते हैं। श्री रामचन्द्रजी के सुन्दर चरित्र करोड़ों कल्पों में भी नहीं गाये जा सकते।

[शिवजी कहते हैं] हे पार्वती! यह प्रसंग मैंने यह दिखाने के लिये सुनाया कि ऋषि-मुनि भी भगवान की माया से मोहित हो जाते हैं। भगवान कौतुकी (लीलामय) हैं और भक्त का कल्याण करने वाले हैं। उनकी सेवा करना बहुत आसान है और वे सभी दुखों का नाश करने वाले हैं। देवताओं, मनुष्यों और ऋषियों में से कोई भी ऐसा नहीं है जो भगवान की महान और शक्तिशाली माया से मोहित न हो। ऐसा मन में विचार करके उस महान माया के स्वामी (प्रेरक) श्री भगवान की पूजा करनी चाहिए।

गिरिराजकुमारी! अब भगवान के अवतार का दूसरा कारण सुनो - मैं उसकी विचित्र कथा विस्तार से बताऊंगा - वह कारण जिसके कारण अजन्मा, निर्गुण और निराकार (अव्यक्त सच्चिदानंदघन) ब्रह्मा अयोध्यापुरी के राजा बने। भगवान श्री रामचन्द्रजी जिन्हें तुमने साधु वेश में भाई लक्ष्मणजी के साथ वन में घूमते देखा था और हे भवानी! सती के शरीर में उन लोगों के चरित्र को देखकर तुम इतने दीवाने हो गये कि अब भी तुम्हारी उस दीवानगी की छाया नहीं मिटती, जो मोह-माया का रोग दूर करते हैं, उनके चरित्र सुनो। उस अवतार में भगवान ने जो-जो लीला की, वह सब मैं अपनी बुद्धि के अनुसार तुम्हें बताऊंगा।

[याज्ञवल्क्य ने कहा--] हे भरद्वाज! शंकरजी की बात सुनकर पार्वतीजी प्रेमपूर्वक मुस्कुरायीं। तब वृषकेतु शिवजी उस कारण का वर्णन करने लगे जिसके कारण भगवान का वह अवतार हुआ था। हे मुनिधर भारद्वाज! मैं तुमसे वह सब कह

रहा हूं, ध्यानपूर्वक सुनो। श्री रामचन्द्रजी की कथा अत्यन्त सुन्दर है जो कलियुग के पापों को हरने वाली और कल्याण करने वाली है।

स्वायंभुव मनु और [उनकी पत्नी] शतरूपा, जिनसे मनुष्यों की यह अनोखी रचना हुई, दोनों पति-पत्नी का धर्म और आचरण बहुत अच्छा था। जिनकी गरिमा का गुणगान आज भी वेद गाते हैं। राजा उत्तानपाद इनके पुत्र थे जिनके पुत्र प्रसिद्ध हरिभक्त ध्रुवजी थे। उनके (मनुजी) छोटे पुत्र का नाम प्रियव्रत था, जिसकी प्रशंसा वेदों और पुराणों में की गई है।

फिर देवहूति उनकी बेटी थीं, जो कर्दम मुनि की प्रिय पत्नी बनीं और जिन्होंने गरीबों पर दया करने वाले शक्तिशाली और दयालु भगवान कपिल आदिनदेव को जन्म दिया। भगवान जितार (कपिल) ने, जो तत्वों का विचार करने में अत्यंत निपुण थे, सांख्य शक्र का प्रकट रूप में वर्णन किया। उन्होंने (स्वायंभुव) मनुजी ने बहुत समय तक राज्य किया और हर प्रकार से भगवान की आज्ञा रूपी शास्त्रों की मर्यादा का पालन किया।

घर में रहते-रहते बुढ़ापा आ जाता है, परन्तु वस्तुओं से वैराग्य नहीं होता; [यह सोचकर] उन्हें बहुत दुख हुआ कि श्री हरिकी भक्ति बिना जन्म के ही चली गई। तब मनुजी ने बलपूर्वक अपने पुत्र को राज्य दे दिया और स्वयं पत्नी सहित वन में चले गये। नैमिषारण्य अत्यंत पवित्र और साधकों को सिद्धि प्रदान करने वाले तीर्थ स्थलों में प्रसिद्ध है।

वहाँ ऋषि-मुनियों और सिद्धों के समूह निवास करते हैं। राजा मनु मन में प्रसन्नता लिये वहाँ गये। मार्ग में जाते हुए वे धैर्यवान और बुद्धिमान राजा-रानी ऐसे सुशोभित हो रहे थे मानो ज्ञान और भक्ति उनके शरीर में अवतरित हो रहे हों। चलते-चलते वे गोमती के तट पर पहुँचे। बहुत प्रसन्न होकर उसने साफ पानी में स्नान किया। उन्हें एक धार्मिक ऋषि जानकर, सिद्ध और बुद्धिमान ऋषि उनसे मिलने आये।

जहाँ-जहाँ सुन्दर तीर्थ थे, ऋषि-मुनियों ने आदरपूर्वक उनकी सभी तीर्थयात्राएँ करायीं। उनका शरीर दुर्बल हो गया था, वे साधुओं (वल्कल) के वस्त्र धारण करते थे और प्रतिदिन साधुओं की संगति में पुराण सुनते थे। और द्वादशाक्षर मन्त्र (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) का प्रेमपूर्वक जाप करते थे। राजा और रानी भगवान वासुदेव के चरणकमलों में बहुत लीन थे।

वह शाक, फल और कन्दमूल खाता था और सच्चिदानन्द ब्रह्म का स्मरण करता था। तब वह श्रीहरि की तपस्या करने लगा और फलों का त्याग कर केवल

जल पर ही रहने लगा। हृदय में निरंतर इच्छा रहती है कि हम अपनी आंखों से उस परमेश्वर को देख सकें जो निराकार, अखंड, अनंत और अनादि है और जिसके बारे में आध्यात्मिक लोग (ब्रह्मज्ञानी, तत्ववेता) लोग सोचते हैं।

जिसका वर्णन वेद 'नेति-नेति' (यह भी नहीं, यह भी नहीं) कहकर करते हैं। जो आनंदस्वरूप, उपाधिरहित और अद्‌वितीय हैं तथा जिनके अंशों से अनेक भगवान शिव, ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु प्रकट होते हैं। ऐसे [महान] भगवान भी सेवक के वश में होते हैं और भक्तों के लिए [दिव्य] लीला मूर्ति धारण करते हैं। यदि वेदों में यह कथन सत्य है तो हमारी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी।

जलका को भोजन करते हुए [तपस्या करते हुए] छह हजार वर्ष बीत गए। फिर सात हजार. वर्षों तक वे वायु के आधार पर जीवित रहे। दस हजार वर्ष तक उन्होंने वायु का आधार भी छोड़ दिया। दोनों एक पैर पर खड़े थे. उनकी अपार तपस्या को देखकर ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी कई बार मनुजी के पास आये। उसने उसे अनेक प्रकार से प्रलोभित किया और कोई वरदान माँगने को कहा। लेकिन यह परम धन्य रानी किसी के द्‌वारा भी अपनी तपस्या से विचलित नहीं हुई। भले ही उनका शरीर कंकाल मात्र रह गया था, लेकिन उनके दिल में कोई दर्द नहीं था।

सर्वज्ञ भगवान अनन्य भक्ति वाले तपस्वी राजाओं और रानियों को 'अपने दास' मानते थे। तब अनुग्रह और गंभीरता के अमृत से भरी हुई यह दिव्य वाणी बोली, 'वर मांगो।'   मुर्दों को भी जीवन देने वाली यह सुन्दर वाणी जब कानों के छिद्रों से हृदय में उतरी, तो राजा और रानी के शरीर ऐसे सुन्दर और स्वस्थ हो गये, मानो वे घर से लौटे हों।

कानों में अमृत के समान लगने वाले वचन सुनते ही उसका शरीर पुलकित और प्रसन्न हो गया। तब मनुजी ने सिर झुकाकर कहा, हृदय में प्रेम समाया नहीं - हे प्रभु! सुनो, तुम सेवकों के लिए कल्पवृक्ष और कामधेनु हो। ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी भी आपके चरणों की पूजा करते हैं। आप भक्तों और सेवकों के लिए सुलभ हैं और सभी सुखों के दाता हैं। आप शरणागत के रक्षक तथा जड़ और चेतन के स्वामी हैं।

वह अनाथों का कल्याण करने वाला है! यदि तुम्हें हम पर स्नेह है तो प्रसन्न होकर हमें यह वरदान दो कि तुम्हारा वह रूप भगवान शिव के मन में विराजमान हो और जिसके लिए ऋषि-मुनि प्रयत्नशील रहते हैं। काकभुशुण्डिका के मन रूपी मानसरोवर में विचरण करने वाला हंस कौन है, वेद सगुण और निर्गुण कहकर

जिसकी स्तुति करते हैं, हे भगवान जो शरणागत के दुःख दूर करते हैं; कृपया हमें आशीर्वाद दें कि हम उस रूप को खुली आँखों से देख सकें।

राजा और रानी के मृदु, विनम्र और प्रेमपूर्ण वचन भगवान को बहुत प्रिय थे। भक्तवत्सल, कृपानिधान, सम्पूर्ण जगत् के निवास स्थान (अथवा सम्पूर्ण जगत् में सर्वव्यापक), सर्वशक्तिमान भगवान् प्रकट हुए। भगवान के नीलकमल, नीलमणि और नीले (पानीदार) बादल के समान [कोमल, हल्के और सुस्वादु] श्यामवर्ण [चिन्मय] शरीर की सुंदरता को देखकर करोड़ों कामदेव भी लज्जित हो जाते हैं।

उनका चेहरा शरद पूर्णिमा के चंद्रमा के समान छवि की सीमा जैसा था। गाल और ठुड्डी अत्यंत सुन्दर थे, गर्दन त्रिभुज के समान थी (तीन रेखाएँ उठती-गिरती हुई)। था। लाल होंठ, दाँत और नाक बहुत सुन्दर थे। माना जाता था कि हँसने से चंद्रमा की किरणें ख़राब हो जाती हैं। वह बहुत प्यारी लग रही थी. टेढ़ी भौहें कामदेव के धनुष की शोभा बिगाड़ने वाली थीं। माथे पर उज्ज्वल तिलक था.

कानों में मकराकृत (मछली के आकार के) कुण्डल और सिर पर मुकुट था। घुँघराले काले बाल भौंरों के झुण्ड के समान घने थे। हृदय श्रीवत्स, सुन्दर माला, सोने और रत्नों से जड़ित हार से सुशोभित था। उसकी सिंह जैसी गर्दन और सुन्दर जनेऊ था। उसकी भुजाओं के आभूषण भी सुन्दर थे। उनकी सुंदर भुजाएँ हाथी की सूंड के समान थीं। उनकी कमर में तरकश और हाथ में धनुष-बाण उनकी शोभा बढ़ा रहे थे।

सुनहरे रंग वाला पीला अम्बर बिजली की मार से लज्जित हो गया। पेट पर तीन सुंदर रेखाएं (त्रिबली) थीं। नाभि इतनी सुन्दर थी, मानो उसने यमुनाजी के भैवरों की छवि छीन ली हो। भगवान के उन चरणकमलों का, जिनमें ऋषियों के भौंरे निवास करते हैं, वर्णन भी नहीं किया जा सकता। भगवान के वामांग में सर्वदा मंगलकारी राशि, जगत की मूल कारण आदिशक्ति श्री जानकी सुशोभित हैं।

जिनके अंशों से असंख्य गुणों की खानें लक्ष्मी, पार्वती और ब्रह्माणी (त्रिदेव की शक्तियाँ) उत्पन्न होती हैं और जिनकी भौंह से संसार की रचना होती है, वह भगवान की रूप-शक्ति हैं; श्री सीताजी श्री रामचन्द्रजी के बाईं ओर स्थित हैं। सौन्दर्य के सागर श्रीहरि के रूप को देखकर मनु और शतरूपा पलकें मूंदकर स्तब्ध रह गये। वे उस अनोखे रूप को आदर की दृष्टि से देख रहे थे और उन्हें आश्चर्य भी नहीं हुआ।

आनन्द के वशीभूत होकर वह अपने शरीर को भी भूल गया। वह नंगे हाथों से भगवान के चरण पकड़ कर लकड़ी की भाँति (सीधे) भूमि पर गिर पड़ा। दयालु भगवान राशि ने अपने कमल के फूलों से उनके सिर को छुआ और तुरंत उन्हें ऊपर उठा लिया। तब कृपालु भगवान ने कहा- मुझे अत्यंत प्रसन्न जानकर और महान दानी समझकर जो वर तुम्हारे हृदय को प्रसन्न हो, वह माँग लो।

भगवान के वचन सुनकर राजा ने दोनों हाथ जोड़कर धैर्य रखा और कोमल स्वर में कहा- हे प्रभु! आपके चरणकमलों के दर्शन से अब हमारी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हो गयी हैं। फिर भी मन में बड़ी लालसा है. इसका पूरा होना आसान भी है और बेहद कठिन भी, इसलिए ऐसा नहीं कहा जा सकता। हे प्रभो! इसे पूरा करना आपके लिए बहुत आसान है, लेकिन. मेरी गरीबी के कारण मुझे यह बहुत कठिन लगता है।

जैसे कोई निर्धन व्यक्ति कल्पवृक्ष पाकर भी अधिक धन माँगने में झिझकता है; क्योंकि वह। मैं इसका प्रभाव नहीं जानता, फिर भी मेरे हृदय में संदेह है। हे प्रभो! आप अन्तर्यामी हैं, इसलिये जानते हैं। मेरी वह इच्छा पूरी करो. , भगवान ने कहा - हे राजन ! अपनी झिझक छोड़ो और मुझसे पूछो. मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैं तुम्हें न दे सकूँ।

राजा ने कहा-हे दानवीरों के सरदार! हे धन्य! हे नाथ! मैं अपनी सच्ची भावना व्यक्त करता हूँ कि मुझे आपके जैसा पुत्र चाहिए। भगवान से छुपने का क्या मतलब है? राजा का प्रेम देखकर और उसके अनमोल वचन सुनकर दयालु भगवान ने कहा- ऐसा ही हो। हे राजन्! मुझे कहां जाना चाहिए और मेरे जैसा कोई और ढूंढना चाहिए? अत: मैं स्वयं आकर आपका पुत्र बनूँगा।

शतरूपा जी को हाथ जोड़े देखकर भगवान ने कहा- हे देवी. तुम्हारी जो इच्छा हो, वह मांग लो. [शतरूपा ने कहा--] हे प्रभु! चतुर राजा ने जो वरदान माँगा, हे दयालु! मुझे वह बहुत पसंद आया. परन्तु हे प्रभु! यद्यपि हे भक्तों का कल्याण करने वाले आप बड़े अभिमानी हो रहे हैं! तुम्हें भी वह धृष्टता पसंद है. आप ब्रह्मा, ब्रह्मा आदि के पिता (सृष्टिकर्ता), जगत के स्वामी और सबके हृदयों के ज्ञाता हैं।

यह समझ लेने पर मन में संदेह होता है, फिर भी प्रभु ने जो कहा वही प्रमाण (सत्य) है। मैं तो बस यही पूछता हूं- हे प्रभु! आपके निकटजन ही (अलौकिक, अखण्ड) सुख प्राप्त करने वाले तथा परमपद को प्राप्त करने वाले होते हैं। हे प्रभो! वही सुख, वही गति, वही भक्ति, वही तुम्हारे चरणों में प्रेम, वही ज्ञान और वही। कृपया हमें जीवनशैली प्रदान करें।

रानी की कोमल, रहस्यमय और सुन्दर वाक्य रचना सुनकर कृपा के सागर भगवान् ने कोमल वचन बोले-तुम्हारे हृदय में जो कुछ अभिलाषा हो, वह मैंने तुम्हें दे दी है, इसमें कोई संदेह मत समझना। हे माँ! मेरी कृपा से तुम्हारा अलौकिक ज्ञान कभी नष्ट नहीं होगा। तब मनु ने भगवान के चरणों की वन्दना की और पुनः कहा- हे प्रभु, मेरी एक प्रार्थना और है।

मुझे आपके चरणों में वही प्रेम हो जो एक पिता को अपने पुत्र पर होता है, भले ही कोई मुझे महामूर्ख कहे। जैसे साँप मोती के बिना नहीं रह सकता और मछली पानी के बिना नहीं रह सकती, उसी प्रकार मेरा जीवन आपके वश में हो (आपके बिना नहीं रह सकता)। ऐसा वरदान मांगने के बाद राजा भगवान के चरण पकड़कर रह गए। तब दया से भरकर भगवान ने कहा, "ऐसा ही होने दो।" अब तुम मेरी आज्ञा का पालन करो और देवराज इन्द्र की राजधानी (अमरावती) में जाकर निवास करो।

हे पिता! वहाँ [स्वर्ग में] अनेक सुख भोगकर कुछ समय बीतने पर तुम अवध के राजा होगे। तब मैं तुम्हारा पुत्र बनूँगा। मैं तुम्हारी इच्छानुसार मनुष्य रूप धारण करके तुम्हारे घर उपस्थित होऊंगा। हे पिता! मैं अपने अंगों से शरीर धारण करके भक्तों को सुख देने वाला चरित्र करूँगा। वे (पात्र) बड़े भाग्यशाली लोग स्नेह और अभिमान त्यागकर आदरपूर्वक सुनेंगे और भवसागर से तर जायेंगे॥ यह आदिशक्ति, मेरी [स्वरूपभूत] माया, जिसने संसार की रचना की है, वह भी अवतार लेगी।

इस प्रकार मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूंगा. मेरी प्रतिज्ञा सच्ची है, सच्ची है, सच्ची है। ऐसा बार-बार कहकर भगवान श्रीकृष्ण अन्तर्धान हो गये। वे स्त्री-पुरुष (राजा-रानियाँ) भक्तों पर दयालु भगवान को हृदय में रखकर कुछ समय तक उस आश्रम में रहे। फिर समय पाकर उन्होंने आसानी से (बिना किसी कष्ट के) अपना शरीर त्याग दिया और अमरावती (इंद्रकारी पुरी) चले गए और वहीं रहने लगे।

[याज्ञवल्क्यजी कहते हैं---] हे भारद्वाज! यह अत्यंत पवित्र इतिहास भगवान शिव ने पार्वती को सुनाया था। अब श्री राम के अवतार लेने का दूसरा कारण सुनो। हे ऋषि! वह पवित्र एवं प्राचीन कथा सुनो, जो भगवान शिव ने पार्वती से कही थी। कैकय देश विश्व में प्रसिद्ध है। वहाँ सत्यकेतु नाम का एक राजा रहता था (शासन करता था)। वह धर्म के वाहक, सदाचार की खान, तेजस्वी, प्रतापी, सौम्य और बलवान थे। उनके दो वीर पुत्र थे, जो सभी गुणों के भंडार थे और बहुत साहसी थे।

सबसे बड़े पुत्र जिसे राज्य विरासत में मिला उसका नाम प्रतापभानु था। दूसरे पुत्र का नाम अरिमर्दन था, जिसकी भुजाओं में अपार बल था और जो युद्ध में पर्वत के समान दृढ़ रहता था। भाइयों के बीच बहुत सद्भाव था और सभी प्रकार के दोषों और छल-कपटों से मुक्त सच्चा प्यार था। राजा ने बड़े बेटे को राज्य दे दिया और वह भगवान की आराधना करने वन में चला गया।

जब प्रतापभानु राजा बना तो उसकी चीख पूरे देश में फैल गयी। वह वेदों में वर्णित विधि के अनुसार सर्वोत्तम ढंग से प्रजा का पालन-पोषण करने लगा। उसके राज्य में पाप का नामोनिशान नहीं रह गया। राजा के पास धर्मरुचि नाम का एक मंत्री था जो शुक्राचार्य के समान ही हितैषी और बुद्धिमान था। , इस प्रकार बुद्धिमान मन्त्री तथा बलवान एवं वीर भाई के साथ-साथ राजा स्वयं भी बड़ा प्रतापी एवं साहसी था।

उनके साथ विशाल चतुर्गिनी सेना भी थी, जिसमें असंख्य योद्धा थे और सभी युद्ध में लड़ते-लड़ते मरने वाले थे। राजा अपनी सेना को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और जोर-जोर से ढोल बजने लगे। राजा ने दिग्विजय के लिए सेना की व्यवस्था करने के बाद एक शुभ दिन (मुहूर्त) पर प्रस्थान किया। जगह-जगह अनेक लड़ाइयाँ हुईं। उसने सभी राजाओं को बलपूर्वक जीत लिया।

उसने अपनी भुजाओं के बल से सातों द्वीपों को अपने अधीन कर लिया और राजाओं को दण्ड देकर छोड़ दिया। उस समय सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रतापभानु एकमात्र (चक्रवर्ती) राजा थे। राजा ने अपनी भुजाओं के बल से समस्त संसार को अपने अधीन कर अपने नगर में प्रवेश किया। राजा अपने समय के अनुसार धन, धर्म और काम आदि का सुख भोगता था। राजा प्रतापभानु की शक्ति से भूमि सुन्दर कामधेनु (इच्छित वस्तु देने वाली) बन गयी। उसके राज्य में प्रजा सभी प्रकार के दुःखों से मुक्त होकर सुखी थी और सभी स्त्री-पुरुष सुन्दर तथा धार्मिक थे।

धर्म मंत्री को श्री हरि के चरणों में प्रेम हो गया. वह उसे सदैव राजा के हित के लिए नीति सिखाता था। राजा सदैव गुरुओं, देवताओं, संतों, पितरों तथा ब्राह्मणों की सेवा करता था। राजा वेदों में वर्णित राजाओं के सभी धर्मों का सदैव आदर और प्रसन्नता से पालन करता था। वह प्रतिदिन अनेक प्रकार का दान देता था और उत्तम शास्त्रों, वेदों और पुराणों का श्रवण करता था। उसने अनेक कुएँ, बावड़ियाँ, तालाब, पुष्प वाटिकाएँ, सुन्दर उद्यान, ब्राह्मणों के लिए मकान तथा सुन्दर विचित्र देवताओं के मन्दिर तथा सभी तीर्थस्थान बनवाये।

राजा ने वेदों और पुराणों में वर्णित सभी प्रकार के यज्ञों को प्रेमपूर्वक एक-एक करके हजारों बार किया। राजा के मन में किसी भी फल की इच्छा नहीं थी। राजा बहुत बुद्धिमान और ज्ञानी था। उस ज्ञानी राजा ने कर्म, मन और वाणी से जो भी धर्म किया, वह सब भगवान वासुदेव को अर्पण करके किया।

एक बार वह राजा शिकार की सारी सामग्री से सुसज्जित, अच्छे घोड़े पर सवार होकर विषध्याचल के घने जंगल में गया और वहाँ उसने बहुत से उत्तम मृगों को मार डाला। राजा ने जंगल में एक सुअर को घूमते हुए देखा। [वह अपने दांतों के कारण ऐसा दिखता था; ऐसा प्रतीत होता है मानो राहु चन्द्रमाओं को पकड़कर (हमारे मुँह को पकड़कर) जंगल में छिप गया है। चंद्रमा के आकार के कारण वह उसके मुंह में नहीं समाता और मानो क्रोध के कारण वह उसे उगलता भी नहीं।

ऐसा कहा जाता था कि यह सुअर के भयानक दांतों की खूबसूरती थी। [इधर उनका शरीर भी बहुत बड़ा और मोटा था. घोड़े की आवाज सुनकर वह कान खड़े करके सतर्क दिख रहा था। उन सूअरों को ऊँचे शिखर के समान बड़ा देखकर राजा ने घोड़े पर लगाम लगाई और तेजी से दौड़कर सूअर को चुनौती दी कि अब मैं नहीं बच सकता।

राजा बिल्कुल अकेला था और जंगल में बहुत परेशानी थी, फिर भी राजा ने जानवर को नहीं छोड़ा। कड़ी मेहनत से थक गए और भूख-प्यास से व्याकुल राजा अपने घोड़े सहित नदियों और तालाबों की खोज में पानी के बिना व्याकुल हो गए। वन में घूमते समय उन्हें एक आश्रम दिखाई दिया; वहाँ मुनिक वेश में एक राजा रहता था, जिसका देश राजा प्रतापभानु ने छीन लिया था और जो सेना छोड़कर युद्ध से भाग गया था।

प्रतापभानुका के समय (अच्छे दिन) को जानकर और उसके बुरे समय (बुरे दिन) की आशंका से उसे बहुत ग्लानि महसूस हुई। इस कारण वह न तो घर गया और न ही राजा प्रतापभानु से मिला और सुलह कर ली क्योंकि वह अहंकारी था। वह राजा एक दरिद्र मनुष्य की भाँति अपने हृदय के क्रोध को मारकर एक तपस्वी के वेश में वन में रहता था। राजा (प्रताप भानु) उसके पास गये। उसने तुरन्त पहचान लिया कि यह प्रतापभानु है।

राजा-प्यास के कारण [भ्रम में] मैं उसे पहचान न सका। उनकी सुन्दर पोशाक देखकर राजा ने उन्हें कोई महान ऋषि समझा और घोड़े से उतरकर उन्हें प्रणाम किया। परन्तु राजा ने बहुत चतुर होने के कारण उसे अपना नाम नहीं बताया। उसने राजा को प्यासा देखकर झील दिखाई। राजा ने प्रसन्न होकर घोड़े सहित उसमें स्नान और जलपान किया।

राजा की थकान दूर हो गई और राजा प्रसन्न हो गया। तब तपस्वी उन्हें अपने आश्रम में ले गया और सूर्यास्त का समय जानकर राजा को बैठने के लिए आसन दिया। तब तपस्वी ने कोमल स्वर में कहा- तुम कौन हो? तुम सुन्दर युवक होकर भी प्राणों की परवाह न करके वन में अकेले क्यों घूम रहे हो? आपके चक्रवर्ती राजा के समान लक्षण देखकर मुझे बड़ी दया आ रही है।

राजा ने कहा- हे मुनीश्वर! सुनो, प्रतापभानु नाम का एक राजा है, उसके मंत्री से मिलने की कोशिश में मैं रास्ता भूल गया हूँ। बड़े भाग्य से यहाँ आकर मुझे आपके चरणों में स्थान मिला। हमारा आपसे मिलना दुर्लभ था, इससे पता चलता है कि कुछ अच्छा होने वाला है. ऋषि ने कहा--तुम्हारा नगर यहाँ से सत्तर योजन दूर है। यहीं रुक जाओ, सुबह तक चलते रहो, अंधेरी रात है, घना जंगल है, रास्ता साफ नहीं है, यह सोचकर तुम आज यहीं रुक जाओ।

हे नाथ! बहुत अच्छा, इतना कहकर और उसकी बात मानकर राजा ने घोड़े को एक पेड़ से बाँध दिया और बैठ गया। राजा ने अनेक प्रकार से उसकी स्तुति की और उसके चरणों की वन्दना करके उसके भाग्य की सराहना की और फिर सुन्दर एवं कोमल वाणी से कहा- हे भगवन्! मैं आपको अपना पिता मानकर गौरवान्वित महसूस करता हूं. हे मुनीश्वर! आप मुझे अपना पुत्र और सेवक समझकर अपना नाम (धाम) विस्तारपूर्वक बताइये।

राजा ने उसे नहीं पहचाना, लेकिन उसने राजा को पहचान लिया। राजा का हृदय पवित्र था और वह छल करने में चतुर था। एक तो शत्रु, फिर क्षत्रिय जाति, फिर राजा। वह छल और बल से अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहता था। वह शत्रु अपने राज्य के सुख को समझकर (याद करके) दुःखी हुआ॥ उसकी छाती [अन्दर] कुम्हार के ओवन की आग की तरह जल रही थी। राजा की सरल बातें सुनकर और उसकी घृणा को याद करके उसके हृदय में प्रसन्नता हुई।

वह छल में डूबकर बड़ी युक्ति से मन्द स्वर में बोला-अब हमारा नाम भिखारी है, क्योंकि हम गरीब और बेघर हैं। राजा ने कहा, "जो लोग आपकी तरह विज्ञान में पारंगत हैं और घमंड से बिल्कुल रहित हैं, वे हमेशा अपना असली रूप छिपाते हैं।" क्योंकि बुरे इरादों के बिना जीने में ही सभी प्रकार का कल्याण निहित है। प्रकट क्रोध में अभिमान और अभिमान से पतन की संभावना रहती है।

इसीलिए संत और वेद पुकारते हैं कि परम अकिंधन (अहंकार, स्नेह और सम्मान से सर्वथा रहित) ही भगवान को प्रिय है। आप जैसे गरीबों, भिखारियों और बेघर लोगों को देखकर ब्रह्मा और भगवान शिव को भी संदेह हो जाता है कि

ये असली साधु हैं या भिखारी। आप जो भी हों (अर्थात् जो भी हों), मैं आपके चरणों में प्रणाम करता हूँ। अरे। मालिक ! अब कृपया मुझ पर दया करें। मेरे प्रति राजा का स्वाभाविक प्रेम और मुझ पर उसका अत्यधिक विश्वास देखकर--

सब प्रकार से राजाओं को वश में करके उसने (कपटी तपस्वी ने) बड़ा स्नेह दिखाकर कहा-हे राजन! सुनो, मैं तुम से सच कहता हूं, मुझे यहां रहते हुए बहुत दिन हो गए। अब तक न तो कोई मुझसे मिला है, न मैं खुद को किसी पर थोपता हूं; क्योंकि इस संसार में लोगों की इच्छा अग्नि के समान है जो तपस्या रूपी वन को नष्ट कर देती है। आप पवित्र हैं और सुन्दर बुद्धि वाले हैं, इस कारण मैं आपका बहुत प्रिय हूँ और आप भी मुझ पर प्रेम करते हैं और मुझ पर विश्वास करते हैं। हे पिता! अब अगर मैं तुमसे कुछ भी छिपाऊंगा तो मुझे बहुत ग्लानि होगी.

जैसे ही तपस्वी ने उदासीनता की बात कही, राजा को आत्मविश्वास मिलने लगा। जब उस बगुला-ध्यानी (कपटशील) साधु ने राजा को कर्म, मन और वचन से अपने वश में कर लिया, तब उसने कहा- हे भाई! हमारा नाम एकटनु है. यह सुनकर राजा ने फिर सिर झुकाकर कहा- कृपया मुझे अपना परम भक्त सेवक समझकर अपने नाम का अर्थ समझाइये।

[कपटी ऋषि ने कहा--] जब सबसे पहले सृष्टि की रचना हुई, तभी मेरा जन्म हुआ। तब से मैंने दूसरा शरीर धारण नहीं किया। इसीलिए मेरा नाम एकतनु है। अरे बेटा! मन में आश्चर्य मत करो, तप से कुछ भी दुर्लभ नहीं है, ब्रह्मा तप के द्वारा ही संसार की रचना करते हैं। तपही की शक्ति से, विष्णु दुनिया के रक्षक बन गए हैं। रूद्र उग्रता की शक्ति से संहार करते हैं। संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं जो तपस्या से प्राप्त न हो सके। यह सुनकर राजा को बहुत ख़ुशी हुई। फिर वह (तपस्वी) पुरानी कहानियाँ सुनाने लगा।

वे कर्म, धर्म और नाना प्रकार के इतिहास की चर्चा करके त्याग और ज्ञान का वर्णन करने लगे। उन्होंने सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और विनाश की अद्भुत कथाएँ विस्तार से बतायीं। यह सुनकर राजा उस तपस्वी से प्रभावित हो गया और फिर उसे अपना नाम बताने लगा। तपस्वी ने कहा-हे राजन! मैं तुम्हें जानता हूं। मुझे अच्छा लगा कि तुमने धोखा दिया.

हे राजन! सुनो, ऐसी नीति है कि राजा सर्वत्र अपना नाम नहीं कहते। तुम्हारा भी वैसा ही है. तुम्हारी चतुराई को देखते हुए मुझे तुमसे बहुत प्यार हो गया है. राजन ! आपका नाम प्रतापभानु है, महाराज सत्यकेतु आपके पिता थे। हे राजन!

गुरु की कृपा से मैं कालनेमि हूं, परंतु मैं इसे अपनी हानि समझकर ऐसा नहीं कहता।

है तात - यह बात मैं आपकी स्वाभाविक सरलता, सरलता), प्रेम, विश्वास और नीति में निपुणता देखकर कहता हूं। तुम्हारे प्रति बड़ा स्नेह उत्पन्न हो गया है; इसीलिए जब आप पूछते हैं तो मैं अपनी कहानी सुनाता हूं। अब मैं खुश हूं, इसमें संदेह मत करो. हे राजा! जो चाहो मांग लो. मेरा शरीर बुढ़ापे, मृत्यु और दुःख से मुक्त हो; मुझे युद्ध में कोई नहीं हरा सकता और मेरा पृथ्वी पर प्रत्येक कल्प तक निर्बाध राज्य हो।

तपस्वी ने कहा--हे राजन्! ऐसा ही हो, परंतु एक बात कठिन है, वह भी सुनो। हे पृथ्वी के स्वामी! केवल ब्राह्मण कुल को छोड़कर, मृत्यु भी आपके चरणों में सिर झुकायेगी। ब्राह्मण अपनी तपस्या के कारण सदैव बलवान रहते हैं। उसके क्रोध से उसकी रक्षा करने वाला कोई नहीं है। हे नरपति! यदि तुम ब्राह्मणों को अपने वश में कर लोगे तो ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी तुम्हारे अधीन हो जायेंगे।

ब्राह्मण कुल की कोई ताकत नहीं हो सकती, मैं दोनों भुजाएं उठाकर सत्य कहता हूं। हे राजा! सुनो, ब्राह्मणों के शाप के बिना तुम्हारा किसी भी काल में विनाश नहीं होगा। उनकी बातें सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुए और बोले- हे प्रभु! मैं अब नष्ट नहीं होऊंगा. हे धन्य प्रभु! आपकी कृपा से मैं सदैव स्वस्थ रहूँगा।

'एवमस्तु' (ऐसा ही रहने दो) कहकर धूर्त कपटी साधु ने फिर कहा-![परन्तु] तुम किसी को मत बताना [मेरे तुमसे मिलने और तुम्हारा रास्ता भूल जाने की बात] तुम बताओगे तो इसमें हमारा दोष नहीं है। जय प्रतापभानु! सुनो, इसे प्रकट करने से अथवा ब्राह्मणों के शाप से तथा किसी भी उपाय से तुम नष्ट हो जाओगे, चाहे तुम्हारे मन में ब्रह्मा और शंकर भी क्रोधित हों, फिर भी तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी।

राजा ने साधु के पैर पकड़ लिये और कहा- हे गुरु! सच तो है। ब्राह्मण और गुरु के कोप से बोलो कौन रक्षा कर सकता है? यदि ब्रह्मा भी क्रोधित हो जाएं तो गुरु उन्हें बचा लेते हैं; परन्तु यदि मैं गुरु का विरोध करूँ तो संसार में मुझे बचाने वाला कोई नहीं है। यदि मैं आपकी आज्ञा का पालन न करूँ तो मैं नष्ट हो जाऊँ। मैं चिंतित नहीं हूँ। मेरा हृदय हे प्रभु! , डर एक ही है कि ब्राह्मणों का श्राप बहुत भयानक होता है.

तपस्वी ने कहा--हे राजन्! सुनो दुनिया में उपाय बहुत हैं; लेकिन वे कठिन हैं और वे सफल हैं या नहीं (उनकी सफलता निश्चित नहीं है); लेकिन इसमें भी एक

मुश्किल है. लेकिन अगर मुझे पता न हो तो आपका काम ख़राब हो जाता है. आज ये बड़ी दुविधा खड़ी हो गई है. यह सुनकर राजा ने कोमल स्वर में कहा, हे प्रभु! वेदों में ऐसी नीति बताई गई है कि-

बड़ों को छोटों से प्यार होता है. पहाड़ हमेशा अपनी चोटियों पर घास रखते हैं। गहरा सागर अपने सिर पर पंख धारण करता है, और पृथ्वी सदैव अपने सिर पर धूल धारण करती है।

यह कहकर राजा ने ऋषि के पैर पकड़ लिए। [और कहा--] हे भगवान! कृपया कृपया। आप एक संत हैं. विनम्र और दयालु हैं. अतः हे भगवन्! तुम्हें मेरे लिए इतना दर्द सहना होगा. राजा को अपने वश में जानकर छल में निपुण तपस्वी ने कहा-हे राजन! सुनो, मैं तुमसे सत्य कहता हूं, इस संसार में मेरे लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

मैं तुम्हारा काम अवश्य करूँगा; [क्योंकि] तुम मन, वाणी और शरीर से मेरे भक्त हो। लेकिन योग, युक्ति, तप और मंत्र का प्रभाव तभी फलदायी होता है जब इन्हें गुप्त रूप से किया जाए। हे नरपति! यदि मैं रसोई बनाऊं और तुम उसे परोसो और मुझे कोई न पहचाने, तो वह परदेशी जो कुछ खाएगा, वह तुम्हारे आधीन हो जाएगा।

इतना ही नहीं, जो कोई उनके (खाने वालों के) घर पर भी भोजन करता है, हे राजन! सुनना; वह भी आपके अधीन हो जायेगा. हे राजा! जाकर ऐसा ही करें और वर्ष भर अन्न उपलब्ध कराने का संकल्प लें। प्रतिदिन एक लाख नये ब्राह्मणों को परिवार सहित निमंत्रित करें। सदलप की अवधि अर्थात् एक वर्ष तक मैं प्रतिदिन तुम्हारे लिये भोजन तैयार किया करूँगा।

हे राजन! इस प्रकार थोड़े ही प्रयत्न से सारे ब्राह्मण आपके वश में हो जायेंगे। यदि ब्राह्मण हवन, यज्ञ और सेवा-पूजा करें तो उसके सम्पर्क से देवता भी आसानी से वश में हो जायेंगे। एक और पहचान बता दूँ कि मैं इस रूप में कभी नहीं आऊँगा। हे राजन्! मैं माया से तुम्हारे पुरोहित को नष्ट कर दूँगा। मैं तपस्या के बल से इसे अपने समान बना लूंगा और एक वर्ष तक अपने यहां रखूंगा। और हे राजा! सुनो, मैं तुम्हारा स्वरूप बनाऊंगा और सब प्रकार से तुम्हारा काम पूरा करूंगा।

राजन! बहुत रात हो गई है, अब सो जाओ. आज से तीसरे दिन मैं तुमसे मिलूंगा और सोते समय तुम्हें अपने घोड़े के साथ घर ले जाऊंगा। [उसी समय] राक्षस कालकेतु वहां आया, जिसने खुद को सुअर के रूप में प्रच्छन्न किया और राजाओं

को गुमराह किया। वह तपस्वी राजा का बहुत बड़ा मित्र था और बहुत छल-कपट जानता था। उसके सौ पुत्र और दस भाई थे, जो अत्यंत दुष्ट, किसी से भी न जीतने वाले और देवताओं को कष्ट देने वाले थे।

ब्राह्मणों, साधु-संतों और देवताओं को दुखी देखकर राजा ने पहले ही उन सभी को युद्ध में मार डाला था। अपनी पुरानी शत्रुता को याद करके वह दुष्ट मनुष्य तपस्वी राजा से मिला और उसने शत्रु को नष्ट करने के लिए षड़यंत्र रचा और एक उपाय निकाला। भावी राजा (प्रतापभानु) को कुछ समझ नहीं आ रहा था।

तेजस्वी का दुश्मन भी अगर अकेला हो तो उसे छोटा नहीं समझना चाहिए. राहु, जिसका निशान शेष रह गया था, आज तक सूर्य और चंद्रमा को परेशान कर रहा है। तपस्वी राजा अपने मित्र को देखकर प्रसन्न हुए और उनसे मिलकर प्रसन्न हुए। उसने अपने मित्र को सारी कहानी बताई तो राक्षस प्रसन्न होकर बोला। हे राजा! सुनो, जब तुमने मेरी आज्ञा के अनुसार [इतना] काम कर लिया, तो अब मैंने शत्रु को वश में कर लिया है (समझो)। अब आप चिंता करना बंद कर सकते हैं और सो सकते हैं। विधाता ने बिना औषधि के ही रोग ठीक कर दिया।

शत्रु को कुल सहित उखाड़कर चौथे दिन (आज से) मैं इसी प्रकार आकर तुमसे मिलूंगा। तपस्वी राजाओं को बहुत सान्त्वना देकर वह मायावी और अत्यंत क्रोधित रक्षम चला गया। वह क्षण भर में राजा प्रतापभानु को घोड़े सहित घर ले आया। राजा को रानी के पास सुला दिया गया और घोड़े को अस्तबल में अच्छे से बाँध दिया गया।

फिर वह राजा के पुरोहित को हर ले गया और माया से उसका मन भ्रमित करके पर्वत की कन्दराओं में ले आया। उसने खुद को एक पुजारी के रूप में प्रच्छन्न किया और उसके सुंदर बिस्तर पर लेट गया। राजा सुबह होने से पहले उठा और अपना घर देखकर आश्चर्यचकित रह गया। मन में साधु की महिमा का विचार करके वह धीरे से उठा, रानी को पता न चल सके। फिर वह उसी घोड़े पर सवार होकर जंगल की ओर चला गया। नगर के किसी भी स्त्री-पुरुष को पता नहीं था।

समय का ज्ञान होने पर पुजारी के दिन एक युग के समान बीत गये। उसकी बुद्धि कपटी साधु के चरणों में ही लगी रही। तय कार्यक्रम के अनुसार, उसका बनाया हुआ राक्षस आया और उसने राजा के साथ हुए गुप्त परामर्श के सभी विचार उसे समझाये। संकेत के अनुसार गुरु को पहचानकर राजा प्रसन्न हुए। अपने परिश्रम के कारण उसे पता नहीं चला (चाहे वह तापस मुनि थे या राक्षस कालकेतु)। उन्होंने तुरंत एक लाख अच्छे ब्राह्मणों को परिवार सहित आमंत्रित किया।

पुजारी ने वेदों में वर्णित छह रस और चार प्रकार के भोजन तैयार किए। उसने एक मायावी रसोई बनाई और इतने सारे व्यंजन बनाए कि कोई गिन नहीं सकता. उसने अनेक प्रकार के पशुओं का मांस पकाया और उसमें ब्राह्मणों का मांस मिला दिया। उन्होंने सभी ब्राह्मणों को भोजन के लिए बुलाया और उनके पैर धोकर आदरपूर्वक बैठाया। जैसे ही राजा सेवा करने लगा, उसी समय (कालकेतुकृत) आकाशवाणी हुई- हे ब्राह्मणों! उठो और अपने घर जाओ; ये खाना मत खाओ. इस [भोजन] में बहुत हानि है।

रसोई में ब्राह्मणों का मांस पकाया जाता है. [सभी ब्राह्मण] विश्वास करने के बाद सभी ब्राह्मण उठ खड़े हुए। राजा व्याकुल हो गये। [परंतु | उसकी बुद्धि माया में खो गयी थी। उनके मुख से आशाजनक एक बात निकली। जब वह नहीं निकला तो ब्राह्मण गुस्से से बोला - उसने कुछ भी नहीं सोचा - हे मूर्ख राजा! आप। जाओ और अपने परिवार सहित राक्षस बन जाओ। हे नीच क्षत्रिय! तुम ब्राह्मणों को परिवार सहित बुलाकर नष्ट करना चाहते थे, भगवान ने हमारे धर्म की रक्षा की। अब तुम अपने परिवार सहित नष्ट हो जाओगे।

तू एक वर्ष के अन्दर ही नष्ट हो जायेगा, तेरे कुल में पानी पिलाने वाला कोई नहीं रहेगा। शाप सुनकर राजा भय से अत्यंत व्याकुल हो गये। तभी आकाशवाणी हुई- हे ब्राह्मणों! तुमने सोच-विचारकर शाप नहीं दिया। राजा ने कोई अपराध नहीं किया। आकाशवाणी सुनकर सभी ब्राह्मण आश्चर्यचकित हो गये। तब राजा वहाँ गया जहाँ भोजन बनाया गया था।

राजा ने देखा तो वहां न तो भोजन था और न ही रसोइया ब्राह्मण था। तब राजा मन में अत्यंत चिंता लेकर लौट आया। उसने ब्राह्मणों को सारा वृत्तांत सुनाया और वह अत्यंत भयभीत तथा व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। हे राजन! भले ही गलती आपकी न हो, वादा ख़त्म नहीं होता. ब्राह्मणों का श्राप अत्यंत भयानक है, इसे किसी भी प्रकार टाला नहीं जा सकता.

उन्होंने आक्रमण किया और नगर को घेर लिया। आये दिन तरह-तरह की लड़ाई-झगड़े होने लगे। प्रतापभानु के सभी योद्धा शूरवीरों का काम करते हुए युद्ध में मारे गये। सत्यकेतु के परिवार में कोई नहीं बचा था। ब्राह्मणों का श्राप झूठा कैसे हो सकता है? शत्रुओं को परास्त करके और नगरों को पुनः आबाद करके सभी राजा विजय और प्रसिद्धि प्राप्त करके अपने-अपने नगरों को लौट गये।

[याज्ञवल्क्यजी कहते हैं--] हे भरद्वाज! सुनो, जब विधाता किसी के विरुद्ध होता है, तब उसके लिए धूल सुमेरु पर्वत के समान (भारी और कुचलने वाली), पिता यम के समान (कालरूप) और रस्सी सर्प के समान (काटने वाली) हो जाती है। हे ऋषि! सुनो, कुछ समय बाद वही राजा और उसका परिवार रावण नामक राक्षस बन गया। उसके दस सिर और बीस भुजाएँ थीं और वह अत्यंत भयंकर योद्धा था।

राजा का अरिमर्दन नाम का छोटा भाई बालक धाम कुम्भकर्ण बना। उसका मंत्री, जिसका नाम धर्मरुचि था, रावण का छोटा सौतेला भाई था। उनका नाम विभीषण था, जिसे सारी दुनिया जानती है। वह विष्णु का भक्त तथा ज्ञान-विज्ञान का भण्डार था और राजा के सभी पुत्र तथा सेवक भयंकर राक्षस हो गये।

वे सभी अनेक जाति के, मनमाने रूप धारण करने वाले, दुष्ट, कुटिल, भयानक, विवेकहीन, क्रूर, हिंसक, पापी और संसार को दुःख देने वाले थे; उनका वर्णन नहीं किया जा सकता. यद्यपि इनका जन्म पुलस्त्य ऋषि के पवित्र, पवित्र एवं अद्वितीय कुल में हुआ था तथापि ब्राह्मणों के शाप से ये सभी पापी हो गये। तीनों भाइयों ने अनेक प्रकार की अत्यंत कठिन तपस्याएँ कीं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। उनकी उग्र तपस्या को देखकर ब्रह्माजी उनके पास गये और बोले- हे पिताजी! मैं प्रसन्न हूं, वर मांगो.

रावण ने उनके चरण पकड़कर नम्रतापूर्वक कहा- हे जगदीश्वर! सुनो, वानर और मनुष्य को छोड़कर हम किसी अन्य के कारण न मरें (यह वर दो)। शिवजी कहते हैं कि- मैंने और ब्रह्मा ने मिलकर उसे वरदान दिया कि ऐसा ही हो, तुमने बहुत तपस्या की है। तब ब्रह्माजी कुम्भकर्ण के पास गये। उसे देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। यदि यह दुष्ट व्यक्ति प्रतिदिन भोजन करेगा तो सारा संसार उजाड़ हो जायेगा। [ऐसा सोचते हुए] ब्रह्माजी ने सरस्वती को प्रेरित किया और उनका मन बदल दिया। जिसके चलते उन्होंने छह महीने की नींद मांगी.

तब ब्रह्माजी विभीषण के पास गये और बोले- हे पुत्र! वर मांगो. उन्होंने भगवान के चरण कमलों में शुद्ध (निस्वार्थ और अनन्य) प्रेम मांगा। उन्हें वरदान देने के बाद, भगवान ब्रह्मा चले गए और वे (तीनों भाई) खुशी-खुशी घर लौट आए। मय दानव की मंदोदरी नामक कन्या अत्यंत रूपवती और नारियों में शिरोमणि थी। मेने उसे ले आये और रावण को चूम लिया। उसे एहसास हुआ कि यह राक्षसों का राजा होगा। अच्छी पत्नी पाकर रावण खुश हुआ और फिर उसने जाकर दोनों भाइयों का विवाह करा दिया।

समुद्र के मध्य त्रिकुटा नामक पर्वत पर ब्रह्मा द्वारा निर्मित एक विशाल किला था। [महान मायावी और कुशल कारीगर] माया दानव ने उसे फिर से दंडित किया। वहाँ रत्नजड़ित सोने के अनगिनत महल थे। जैसे भोगावती पुरी वह स्थान है जहां नागकुल [पाताल में] रहता है और जहां इंद्र [स्वर्ग में] रहते हैं। अमरावती पुरी है, वह किला उससे भी अधिक सुन्दर और भव्य था। उसका नाम लंका विश्व में विख्यात हुआ।

यह चारों ओर से समुद्र की बहुत गहरी खाई से घिरा हुआ है। उस किले में रत्नों से जड़ी सोने की मजबूत दीवार है, जिसकी कारीगरी का वर्णन नहीं किया जा सकता। भगवान की प्रेरणा से कल्प में राक्षसों का राजा (रावण) वही वीर, प्रतापी और अतुलनीय बलशाली पुरुष अपनी सेना सहित उस नगर में रहता है। पहले वहाँ बड़े-बड़े योद्धा राक्षस रहते थे। युद्ध में देवताओं ने उन सभी को मार डाला। अब भगवान की प्रेरणा से एक करोड़ रक्षक कुबेर (यक्ष लोग) वहाँ रहते हैं -

जब रावण को यह समाचार मिला तो उसने एक सेना संगठित की और किले को घेर लिया। उस महान योद्धा और उसकी विशाल सेना को देखकर यक्ष अपने प्राण लेकर भाग गये। फिर रावण ने घूम-घूमकर सारे नगर को देखा। उनकी [स्थान संबंधी] चिंताएँ दूर हो गईं और उन्हें बहुत ख़ुशी महसूस हुई। वह पुरी प्राकृतिक रूप से सुन्दर और सुन्दर है
रावण ने इसे [बाहरी लोगों के लिए] दुर्गम बनाकर वहां अपनी राजधानी स्थापित की।

रावण ने सभी राक्षसों को उनकी क्षमता के अनुसार मकान बांटकर खुश कर दिया। एक बार वह कुबेर पर झपटा और उससे पुष्पकविमान वापस ले आया। फिर उन्होंने जाकर (एक बार) कैलाश पर्वत को खिलवाडी में उठा लिया और मानो अपनी भुजाओं के बल को तौलकर बहुत प्रसन्न होकर वहां से चले गये। उसका कुंभकर्ण जैसा अतुलनीय बलशाली भाई था, जिसका योद्धा के रूप में कोई मुकाबला दुनिया में कभी नहीं हुआ। वह शराब पीकर छह महीने तक सोते रहते थे। उनके जागते ही तीनों लोकों में हाहाकार मच गया।

यदि वह प्रतिदिन भोजन करता तो सारा संसार शीघ्र ही खाली हो जाता। रणधीर ऐसे थे कि बयान नहीं किया जा सकता. [लंका में] उसके पास ऐसे असंख्य शक्तिशाली योद्धा थे। मेघनाद रावण का बड़ा पुत्र था, जिसे संसार के योद्धाओं में प्रथम स्थान प्राप्त था। युद्ध में कोई भी उसका सामना नहीं कर सकता था। उसके भय से स्वर्ग में प्रतिदिन भगदड़ मचती थी।

[इनके अलावा] दुर्मुख, अकपन, वज्रदंत, धूमकेतु और अतिकाय आदि कई ऐसे योद्धा थे, जो अकेले ही पूरी दुनिया को जीत सकते थे। सभी राक्षस मनमाना रूप बना सकते थे और [राक्षसी] माया को जानते थे। उनमें दया या धर्म की भावना भी नहीं थी। एक बार रावण ने दरबार में बैठे हुए अपने अनगिनत परिवारों को देखा -

उनके अनेक पुत्र, पौत्र, सम्बन्धी तथा सेवक थे। राक्षसों की [सभी] जातियों को कौन गिन सकता है? स्वभाव से अहंकारी रावण ने अपनी सेना को देखकर क्रोध और अहंकार से लथपथ स्वर में कहा- समस्त राक्षसों! सुनो, देवता हमारे शत्रु हैं। वे आगे आकर नहीं लड़ते. वे बलवान शत्रुओं को देखकर भाग जाते हैं। उसकी मौत का एक ही रास्ता हो सकता है, मैं समझाता हूं. अब उसकी बात सुनो. [शक्ति बढ़ाने वाले] ब्राह्मणों, तुम जाकर भोजन, यज्ञ, हवन और श्राद्ध में विघ्न डालते हो।

भूख के कारण कमजोर और शक्तिहीन देवता आसानी से हमारे पास आ जायेंगे। तब मैं या तो उन्हें मार डालूँगा या उन्हें पूर्णतः अपने वश में करके छोड़ दूँगा। तब उन्होंने मेघनाद को बुलाया और उसे अपनी शक्ति तथा देवताओं के प्रति द्वेष उत्पन्न करने की शिक्षा दी। तब उन्होंने कहा--हे पुत्र! वे देवता जो युद्ध में वीर और बलवान हैं और जिन्हें युद्ध करने में गर्व है।

उन्हें युद्ध में जीतकर बाँध लो। पुत्र ने उठकर अपने पिता की आज्ञा का पालन किया। इसी प्रकार उसने सबको आदेश दिया और वह भी हाथ में गदा लेकर चल दिया। रावण की हलचल से पृथ्वी हिलने लगी और उसकी गर्जना से देवी-देवताओं के गर्भ गिरने लगे। रबाना को क्रोध में आते हुए सुनकर देवताओं ने सुमेरु पर्वत की गुफाओं में शरण ली।

युद्ध के नशे में वह अपने बराबर के योद्धा की तलाश में दुनिया भर में घूमता रहा, लेकिन उसे वैसा योद्धा कहीं नहीं मिला। सूर्य, चंद्रमा, वायु, वरुण, कुबेर, अग्नि, काल और यम आदि सभी अधिकारी हैं। किन्नर, सिद्ध, मनुष्य, देवता और नाग, सभी को उसने भगा दिया (किसी को भी चैन से नहीं बैठने दिया)। ब्रह्माजी की सृष्टि में जहाँ तक भौतिक शरीर वाले स्त्री-पुरुष थे, सभी रावण के अधीन हो गये। डर के मारे सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करते थे और प्रतिदिन आकर उनके चरणों में सिर झुकाते थे।

उसने अपनी भुजाओं के बल पर संपूर्ण ब्रह्मांड को नियंत्रित किया और किसी को भी स्वतंत्र नहीं रहने दिया। [इस प्रकार] मांडलिक राजाओं का युवराज (सार्वभौमिक सम्राट) रावण अपनी इच्छानुसार शासन करने लगा। उसने अपनी

भुजाओं के बल से देवताओं, यक्षों, गंधर्वों, मनुष्यों, किन्नरों और नागों की कन्याओं तथा अन्य कई सुंदर और उत्कृष्ट स्त्रियों को जीत लिया और उनसे विवाह कर लिया।

उसने मेघनाद से जो कुछ भी कहा, मानो वह (मेघनादने) पहले ही कर चुका हो। अर्थात् रावण की आज्ञा मानने में तनिक भी देरी नहीं होती थी। रावण ने पहले ही मेघनाद से जिनको आज्ञा दे रखी थी, उनके द्वारा किये गये दुष्कर्मों को सुनो। राक्षसों के सभी समूह देखने में अत्यंत डरावने, पापी और देवताओं को कष्ट पहुँचाने वाले थे। राक्षसों के वे समूह उपद्रव मचाते थे और माया से अनेक रूप धारण कर लेते थे।

धर्म की जड़ें कटते ही वे सभी वेद विरुद्ध कार्य करने लगे। जहाँ भी उन्हें गायें और ब्राह्मण मिलते थे, वे उस नगर, गाँव और बस्ती में आग लगा देते थे। उनके डर से कहीं भी शुभ कार्य (ब्राह्मण भोजन, यज्ञ, श्राद्ध आदि) नहीं किये जाते थे। देवताओं, ब्राह्मणों तथा गुरुओं पर कोई विश्वास नहीं करता था। वहां न हरि की भक्ति थी, न यज्ञ, तप और ज्ञान। स्वप्नम् में भी वेद-पुराण नहीं सुने जाते थे।

यदि रावण कहीं से जप, योग, वैराग्य, तप और यज्ञ में देवताओं के सम्मिलित होने की बात सुनता तो स्वयं उठकर भाग जाता। कुछ भी नहीं बचेगा, वह सबको पकड़ लेगा और नष्ट कर देगा। संसार में ऐसे भ्रष्ट आचरण फैल गये थे कि धर्म का नामोनिशान तक नहीं था; जिसने भी वेद-पुराण सुनाए, उसे अनेक प्रकार से प्रताड़ित किया गया और देश से बाहर निकाल दिया गया।

राक्षस लोग जो अत्याचार करते थे उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। थे केवल हिंसा पर. उनके पापों की सीमा क्या है! लोग अपने माता-पिता और देवताओं पर विश्वास नहीं करते थे और उनकी सेवा करने के बजाय उनसे अपनी सेवा करवाते थे। श्री शिवजी कहते हैं---हे भवानी! जिनका ऐसा आचरण है वे उन सभी प्राणियों को राक्षस ही समझते हैं। इस प्रकार (लोगों की) धर्म के प्रति अत्यधिक ग्लानि (अरुचि, अविश्वास) देखकर पृथ्वी अत्यंत भयभीत और व्याकुल हो गयी।

पृथ्वी सोचने लगी कि मुझे पर्वतों, नदियों और समुद्रों का बोझ उतना भारी नहीं लगता, जितना मुझे देशद्रोही (दूसरों को हानि पहुंचाने वाला) लगता है। पृथ्वी सभी धर्मों को विरोध करते देख रही है, लेकिन वह रावण से डरती है और कुछ नहीं कह पाती है. अन्त में पृथ्वी मन में विचार करके गोक का रूप धारण करके

उस स्थान पर गयी, जहाँ सभी देवता और ऋषि छिपे हुए थे। पृथ्वी ने रोते हुए उन्हें अपना दुख बताया, लेकिन कुछ भी मदद नहीं मिली।

तब देवता, ऋषि-मुनि तथा गंधर्व मिलकर ब्रह्माजी के लोक (सत्यलोक) में गये। भय और शोक से व्याकुल बेचारी पृथ्वी भी गाय के रूप में उनके साथ थी। ब्रह्माजी सब कुछ जानते थे। उसने मन में सोचा कि इस पर उसका कोई वश नहीं है। [तब उन्होंने पृथ्वी से कहा कि--] तू जिसका दास है, वही अविनाशी हमारा और तेरा दोनों का सहायक है।

ब्रह्माजी ने कहा--हे पृथ्वी! मन में धैर्य रखें और श्रीहरि के चरणों का स्मरण करें। प्रभु अपने सेवकों के कष्टों को जानते हैं, वे आपके कठिन कष्टों को नष्ट कर देंगे। सभी देवता बैठ गए और विचार करने लगे कि भगवान को कहाँ खोजा जाए ताकि वे उनकी प्रार्थना कर सकें। कोई कहता था कि वेकुण्ठपुरी चलो और कोई कहता था कि वही भगवान क्षीरसमुद्र में विराजमान हैं।

हृदय में जैसी भी भक्ति और प्रेम होता है, भगवान वहां (उसके लिए) सदैव उसी प्रकार प्रकट होते हैं।' हे पार्वती! मैं भी उस सोसायटी में था. अवसर पाकर मैंने एक बात कही- मैं जानता हूं कि ईश्वर सर्वत्र समान रूप से व्याप्त है, वह प्रेम से ही प्रकट होता है। देश, काल, दिशा, बहुदिशा में बताओ ऐसा कौन सा स्थान है जहां भगवान नहीं हैं?

वे चराचरमय (चाराचर में व्याप्त) होते हुए भी सर्वरहित और निर्लिप्त हैं (उन्हें कहीं भी आसक्ति नहीं है); वे आग की तरह प्रेम से प्रकट होते हैं। (अग्नि अव्यक्त रूप में सर्वत्र विद्यमान है, परंतु जहां उसके लिए अरणिमंथन आदि साधनों का प्रयोग किया जाता है, वहां वह प्रकट हो जाता है। इसी प्रकार संसार में विद्यमान भगवान भी प्रेम से प्रकट हो जाते हैं।) सभी को मेरी बात अच्छी लगी। ब्रह्माजी ने उन्हें 'साधु-साधु' कहकर अभिमान किया।

हे देवों के देव, जो अपने सेवकों को सुख देते हैं, जो अपनी शरण में आने वालों की रक्षा करते हैं! आपकी जय हो ! जय हो ! हे गौओं और ब्राह्मणों का हित करने वाले, राक्षसों का नाश करने वाले, समुद्र की पुत्री (श्री लक्ष्मीजी) के प्रिय स्वामी! आपकी जय हो ! हे भगवान और पृथ्वी के रक्षक! तेरी लीला अद्भुत है, इसका रहस्य कोई नहीं जानता। जो स्वभाव से दयालु और विनम्र हैं, उन्हें ही हम पर दया करनी चाहिए।

वह अविनाशी, सबके हृदय में निवास करने वाला (अंतर्यामी), परम आनंद का सर्वव्यापी स्वरूप, अज्ञेय, इंद्रियों से परे, शुद्ध चरित्र, भ्रम से मुक्त, मुकुंद (मोक्ष

का दाता) है! आपकी जय हो ! जय हो ! जो सच्चिदानंद इस लोक और परलोक के समस्त सुखों से विरक्त हैं और जो आसक्ति से सर्वथा मुक्त हैं (ज्ञानी हैं) और जिनके भक्तों (प्रेमियों) का वे दिन-रात ध्यान करते हैं और जिनके गुणों का समूह गाते हैं।

पापों का नाश करने वाले उस भगवान का स्मरण करें, जिसने अकेले ही बिना किसी साथी या सहायक के या स्वयं को त्रिगुण रूप - ब्रह्मा, विष्णु और शिव - बनाकर या बिना किसी उपादान कारण के अर्थात अभिन्न बनकर तीनों प्रकार की सृष्टि रची। सृष्टि का अविभाज्य कारण स्वयं। . हम न भक्ति जानते हैं, न पूजा। जो संसार (जन्म और मृत्यु) के भय को नष्ट कर देता है, संतों के मन को आनंद देता है और अनेक विपत्तियों को नष्ट कर देता है। हम सभी, देवताओं के समूह ने, अपने कपटपूर्ण विचारों, शब्दों और कार्यों को त्याग दिया है और खुद को उसके (भगवान) को समर्पित कर दिया है।

जिन्हें सरस्वती, वेद, शेषजी और सभी ऋषि नहीं जानते, जो गरीबों के प्रिय हैं, वेद पुकारकर कहते हैं, भगवान श्रीकृष्ण हम पर दया करें। हे संसार सागर का मंथन करने वाले, हर प्रकार से सुंदर, गुणों के धाम और सुख नक्षत्र के स्वामी! ऋषि, सिद्ध और सभी देवता भय से अत्यंत व्याकुल होकर आपके चरणकमलों में नमस्कार करते हैं।

देवताओं और पृथ्वी को भयभीत देखकर तथा उनके स्नेह भरे वचन सुनकर आकाश से दुःख और संदेह को दूर करने वाली गंभीर वाणी निकली- हे ऋषि, गुरु और देवताओं के स्वामी! डरना मत। तुम्हारे लिये मैं मनुष्य का रूप धारण करूँगा और उदार (पवित्र) सूर्यवंश में अंशों सहित मनुष्य के रूप में अवतार लूँगा। कश्यप और अदिति ने घोर तपस्या की थी। मैं उसे पहले ही वर दे चुका हूं. वे स्वयं श्रीअयोध्यापुरी में दशरथ और कोसल्या के रूप में मनुष्यों के राजा के रूप में प्रकट हुए हैं।

मैं उनके घर जाकर रघुकुल के चार श्रेष्ठ भाइयों के रूप में अवतार लूंगा। मैं नारद के सभी वचनों को सत्य सिद्ध करूँगा और अपनी परम शक्ति के साथ अवतार लूँगा। मैं पृथ्वी का सारा भार छीन लूँगा। हे देववृंद! तुम निडर हो जाओ. आकाश में ब्रह्मा (भगवान) की आवाज सुनकर देवता तुरंत लौट आए। उसका हृदय शीतल हो गया। ब्रह्माजिन ने पृथ्वी को समझाया। वह भी निडर हो गईं और उनमें आत्मविश्वास आ गया।

देवताओं को पृथ्वी पर जाकर वानरों का शरीर धारण करके भगवान के चरणों की सेवा करने की शिक्षा देकर ब्रह्माजी अपने लोक में चले गये। सभी देवता

अपने-अपने लोक चले गये। पृथ्वी सहित सभी को शांति मिली। ब्रह्माजी ने जो भी आदेश दिया, उससे देवता बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने वैसा ही करने में देर नहीं की।

पृथ्वी पर उन्होंने वानर का रूप धारण किया। उसमें अपार शक्ति और ऐश्वर्य था। सभी शूरवीर थे; पर्वत, वृक्ष और नाखून उसके हथियार थे। वे भगवान के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे, जो धैर्यवान मन के थे और वानर के रूप में थे। उन्होंने (वानरों ने) अपनी सुंदर सेनाएँ बनाईं और पहाड़ों और जंगलों में हर जगह फैल गईं। मैंने ये सभी सुंदर पात्र कहे। अब बीच में रह गए किरदार की बात सुनिए.

अवधपुरी में रघुकुलशिरोमणि दशरथ नाम के एक राजा थे, जिनका नाम वेदों में प्रसिद्ध है। वह धार्मिक, गुणों का भंडार और ज्ञानी व्यक्ति था। उसके हृदय में शर्क-धनुषधारी भगवान के प्रति भक्ति थी और उसकी बुद्धि भी उसी में लगी हुई थी। कौशल्या आदि उनकी प्रिय रानियाँ पवित्र आचरण वाली थीं। वह अपने पति के अनुसार [बुजुर्ग] विनम्र और [व्यवहार करने वाली] थी।

एक बार राजा को बहुत ग्लानि हुई कि उसके कोई पुत्र नहीं है। राजा तुरंत गुरु के घर गया और उनके चरणों में प्रणाम करके राजा ने अपने सारे दुःख-सुख गुरु को सुनाये। गुरु वशिष्ठजी ने उन्हें अनेक प्रकार से समझाया और कहा- धैर्य रखो, तुम्हारे चार पुत्र होंगे, जो तीनों लोकों में विख्यात होंगे और भक्तों के भय को दूर करेंगे।

वसिष्ठजी ने ऋषि श्रद्धा को बुलाया और उनके साथ शुभ पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवाया। ऋषि ने भक्तिपूर्वक प्रार्थना की तो अग्निदेव हाथ में चरु (हविष्यान्न खीर) लेकर प्रकट हो गये। और उन्होंने दशरथ से कहा-वशिष्ठ ने मन में जो कुछ सोचा था, आपका वह सब कार्य सिद्ध हो गया। हे राजा! [अब] तुम जाओ और इस हविष्यान्न को उसकी सुविधा के अनुसार किसी को भी बांट दो।

इसके बाद सारी सभा को समझाकर अग्निदेव अन्तर्धान हो गये। राजा परमानन्द में मग्न हो गये, उनके हृदय में कोई आनन्द नहीं था। उसी क्षण राजा ने अपनी प्रिय पत्नियों को बुलाया। कौशल्या और सभी रानियाँ वहाँ आईं। राजा ने प्रसाद का आधा भाग कौशल्या को दे दिया, [और शेष आधे को दो भागों में बाँट दिया]। इस प्रकार सभी स्त्रियाँ गर्भवती हो गईं। वह मन ही मन बहुत खुश हुई. वह महान हो गया ख़ुशी. जिस दिन से श्री हरि गर्भ में आये [लीला से], सभी लोकों में सुख और धन फैल गया।

महल में सभी रानियाँ सुन्दरता, शील और वैभव से सुसज्जित थीं। इस प्रकार कुछ समय सुखपूर्वक व्यतीत हुआ और वह अवसर आया कि भगवान को प्रकट होना पड़ा। योग, लग्न, ग्रह, वर्ष और तिथि सभी अनुकूल हो गये। जड़-चेतन सब कुछ आनंद से भर गया। [क्योंकि] श्री राम का जन्म सुख का मूल है। चैत्रक का पवित्र महीना था, नवमी तिथि थी। वह शुक्लपक्ष और भगवान का पसंदीदा अभिजीत मुहूर्त था। दोपहर का समय था। न तो बहुत ठंड थी और न ही धूप (गर्मी) थी। वह पवित्र समय समस्त लोकों को शांति प्रदान करने वाला था।

शीतल, मन्द और सुगन्धित वायु चल रही थी। देवता प्रसन्न थे और संतों के हृदय में बड़ा उत्साह था। जंगल खिले हुए थे, पर्वत श्रृंखलाएँ रत्नों से चमक रही थीं और सभी नदियाँ अमृत से बहती थीं। जब ब्रह्माजी को उस अवसर (भगवान के प्रकट होने) के बारे में पता चला, तो सभी देवता [उनके सहित] पूरी तरह से सजाए गए विमान के साथ गए। निर्मल आकाश देवताओं के समूहों से भर गया। गंधर्वों का समूह स्तुतिगान करने लगा। और सुन्दर अंगूठियाँ सजाकर पुष्पवर्षा करने लगे। आसमान में ढोल की आवाज. काम में लगा हुआ। नाग, ऋषि और देवता अनेक प्रकार से उनकी स्तुति करने लगे और उनकी सेवाएँ (उपहार) देने लगे।

देवताओं के समूह ने प्रार्थना की और अपने-अपने लोक में पहुँच गये। समस्त लोकों को शांति देने वाले भगवान जगदधर प्रकट हुए। दीनों पर दया करने वाले और कौशल्याजी के हितैषी दयालु भगवान प्रकट हुए। ऋषि-मुनियों के मन को हरने वाले उनके अद्भुत स्वरूप का स्मरण कर माता हर्ष से भर उठीं। आँखों को सुख देने वाली मेघ के समान काली देह थी; चारों भुजाएँ उनके (विशेष) हथियार थीं; [दिव्य] आभूषण और माला पहने हुए था; बड़ी-बड़ी आँखें थीं। इस प्रकार राक्षस, समुद्र तथा खर राक्षस का वध करने वाले भगवान प्रकट हुए।

माता हाथ जोड़कर कहने लगीं- हे अनंत! मैं आपकी स्तुति कैसे कर सकता हूँ? वेद. और पुराण आपको बताते हैं कि आप माया, गुण और ज्ञान से परे हैं और असीमित हैं। भगवान सीतापति, जो भक्तों से प्रेम करते हैं और शास्त्रों और संतों द्वारा सुख के सागर और सभी गुणों के निवास के रूप में स्तुति की जाती है, मेरे कल्याण के लिए प्रकट हुए हैं।

वेद कहते हैं कि आपका प्रत्येक छिद्र माया द्वारा निर्मित अनेक ब्रह्माण्डों के समूहों से भरा हुआ है। तुम मेरे गर्भ में ही रह गये- इस हंसी को सुनकर बुद्धिमान पुरुषों की भी बुद्धि स्थिर नहीं रहती (विचलित हो जाती है)। जब माँ को ज्ञान हुआ तो भगवान मुस्कुराये। वह कई तरह के किरदार करना चाहते हैं. इसलिए, उन्होंने माताओं को एक सुंदर कहानी (पूर्व जन्म की) सुनाकर

समझाया, ताकि वे अपने बेटे (वात्सल्य) का प्यार प्राप्त कर सकें और भगवान के प्रति संतान बन सकें।

माँ का मन बदल गया, फिर बोली- हे पिताजी! यह रूप छोड़ो और प्रेमहीन नृत्य करो, [मेरे लिए] यह सुख अत्यंत अनोखा होगा। [माता] ये वचन सुनकर देवताओं के स्वामी भगवान सुजान ने बालक [रूप |] को जन्म दिया इसके बाद वह रोने लगे. [तुलसीदासजी कहते हैं--] जो लोग इस चरित्र को गाते हैं, वे श्रीहरिका पद प्राप्त करते हैं और [फिर] संसार के गड्ढे में नहीं गिरते।

न तो माया और न ही उसके गुण (सत, रज, तम) [बाहरी और आंतरिक] इंद्रियों से परे हैं। उसका [दिव्य] शरीर उसकी अपनी इच्छा से निर्मित हुआ है। किसी कर्म बंधन से बंध कर नहीं, बल्कि त्रिगुणात्मक भौतिक पदार्थ से बंध कर। बालक के रोने की मधुर आवाज सुनकर सभी रानियाँ दौड़कर आ गईं। दासियाँ हर्ष से सर्वत्र दौड़ने लगीं। सभी ग्रामवासी आनंद में मग्न हो गये।

पुत्र के जन्म की बात सुनकर राजा दशरथजी ब्रह्मानन्द में लीन हो गये। मैंने इसे मन में महसूस किया, मेरा शरीर रोमांचित हो गया। [खुशी से अधीर हो गया। बुद्धि को धैर्य देकर [और प्रेम में शिथिल शरीरों की देखभाल करके] वे ऊपर उठना चाहते हैं। जिनके नाम से कल्याण होता है, वही प्रभु मेरे घर आये हैं। [यह सोचकर राजा का मन अत्यंत आनंद से भर गया। उन्होंने संगीतकारों को बुलाया और उनसे वाद्ययंत्र बजाने को कहा।

गुरु वसिष्ठजी को बुलाया गया। वह ब्राह्मणों के साथ राजद्वार पर आये। उन्होंने जाकर उस नवजात शिशु को देखा, जो स्वरूप की राशि है और जिसके गुणों को बोलने से समाप्त नहीं किया जा सकता। तब राजा ने नांदीमुख श्राद्ध किया और सभी अनुष्ठान और अनुष्ठान किए और ब्राह्मणों को सोना, गाय, कपड़े और रत्न दान किए। महिलाएं समूह में एक साथ चलीं। जैसे ही उसने अपना प्राकृतिक श्रृंगार किया, वह उठकर भाग गई। वह स्वर्ण कलशों को मदनाल द्रव्य से भरती है और गाती हुई महल में प्रवेश करती है।

आरती करने के बाद वह झुकती है और बार-बार बच्चे के चरणों में गिरती है। मगध, सूत, वन्दिजन और गायक रघुकुल के स्वामी के पवित्र गुणों का गान करते हैं। राजा ने सभी को उदारतापूर्वक दान दिया। जिसने पाया उसने भी इसे नहीं रखा (खराब कर दिया)। [नगर की] सभी सड़कों के बीच में कस्तूरी, चंदन और केसर की बहुत सारी कीचड़ थी।

घर-घर में मंगल संगीत बजने लगा, क्योंकि सौन्दर्य के स्रोत भगवान प्रकट हो गये हैं। नगर के नर-नारियों की भीड़ सर्वत्र आनन्द कर रही है। कैकेयी और सुमित्रा- इन दोनों ने भी सुन्दर पुत्रों को जन्म दिया। उस सुख, धन, समय और समाज का वर्णन नागों के राजा सरस्वती तथा शेषजी भी नहीं कर सकते। अवधपुरी इस प्रकार शोभायमान हो रही है, मानो रात्रि प्रभु से मिलने आ गयी हो और मानो सूर्य को देखकर मन में सिकुड़ रही हो, परन्तु फिर भी मन में विचार करने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो वह हो गयी हो। शाम।

धूप का प्रचुर धुआं शाम के अंधेरे के समान है और जो सुगंध उड़ रही है वह उसकी सुगंध है। महलों में रत्नों के समूह ऐसे हैं मानो तारे हों। राजमहल का कलश मानो सर्वोत्तम चन्द्रमा हो। राजमहल में अत्यंत धीमी आवाज में बजने वाली ध्वनि ऐसी लगती है मानों समय के अनुरूप पक्षियों की चहचहाहट हो। इस मूर्ख को देखकर सूरज भी अपनी चाल भूल गया। एक महीना बीत गया और उसे पता ही नहीं चला (यानी एक महीना वहीं गुजर गया)।

एक महीना बीत गया. यह रहस्य कोई नहीं जानता। सूर्य अपने रथ सहित वहीं रुक गये, फिर रात्रि कैसी होगी। यह रहस्य कोई नहीं जानता था। सूर्यदेव [प्रभु श्री राम के गुण गाते हुए चले। इस उत्सव को देखकर देवता, ऋषि-मुनि तथा नाग अपने-अपने सौभाग्य को सराहते हुए अपने-अपने घर चले गये।

हे पार्वती! आपकी बुद्धि [श्री रामजी के चरणों में]। वह बड़ा दृढ़ निश्चयी है, इसलिये मैं तुम्हें अपना एक और रहस्य भी बताता हूँ, सुनो। काकभुशुण्डि और मैं दोनों वहाँ एक साथ थे परन्तु मनुष्य रूप में होने के कारण हमें कोई नहीं जान सका।

प्रेम के परम आनंद और सुख से परिपूर्ण होकर हम दोनों अपने तन-मन की सुध-बुध भूलकर प्रसन्न मन से गलियों में घूमा करते थे। परन्तु इस शुभ चरित्र को वही जान सकता है जिस पर श्री रामजी की कृपा हो। इस अवसर पर जो कोई भी आता और जो कुछ उसे पसंद आता, राजा उसे दे देता। राजा ने हाथी, रथ, घोड़े, सोना, गायें, हीरे और विभिन्न प्रकार के वस्त्र दिये।

ऋषि की पूजा करने के बाद राजा ने कहा- हे ऋषि, आपके मन में जो विचार हैं उनका नाम बताएं। ऋषि ने कहा--हे राजन्! उनके अनेक अनोखे नाम हैं, फिर भी मैं अपनी बुद्धि के अनुसार उन्हें कहूंगा। ये आनंद के सागर और सुख की मात्रा हैं, जिनके एक कण (आनंद सिंधु) से तीनों लोक आनंदित होते हैं, उनका (आपके ज्येष्ठ पुत्र) का नाम राम है, जो सुख के धाम और दाता हैं सारी दुनिया में शांति.

संसार का पालन-पोषण करने वाले (आपके दूसरे पुत्र) का नाम 'भरत' होगा। जिनके स्मरण मात्र से शत्रु का नाश हो जाता है, वेदों में उनका नाम शत्रुघ्न के नाम से प्रसिद्ध है। गुरु वशिष्ठजी ने उनका नाम 'लक्ष्मण' रखा, जो शुभ लक्षणों के निवास, श्री राम के प्रिय और संपूर्ण जगत के आधार हैं।

गुरु जी ने दिल में सोच कर ये नाम रखे [और कहा-- | ये है राजन! आपके चारों पुत्र वेदों के तत्व (साक्षात् परत्पापा भगवान) हैं। ऋषियों का धन, भक्तों का सब कुछ और भगवान शिव का जीवन, उन्होंने बाललीला के आनंद में [इस समय, आपके प्रेम के बीच में] सुख पाया है। लक्ष्मणजी बचपन से ही श्री रामचन्द्र को अपना परम हितैषी मानकर उनके चरणों में बड़ा प्रेम दिखाते थे। भरत और शत्रुघ्न दोनों भाइयों में स्वामी और सेवक के बीच जैसा प्रेम होता है वैसा ही प्रेम हो गया।

उसके हृदय में अनुग्रह का चंद्रमा चमकता है। उनकी आत्मा-विनाशक हंसी उसी (दया के चंद्रमा) की किरणों को दर्शाती है। कभी मुझे गोद में लेकर तो कभी पालने में लिटा कर, माँ 'प्यारे बेटे!' वह दुलार करते हुए कहती है: सर्वव्यापक, अज्ञानी, अमर और अजन्मा ब्रह्मा प्रेम और भक्ति के कारण कोसल्याजी की गोद में [खेल रहा है]।

उनके नीले कमल और काले (जल से भरे) बादल के समान काले शरीर में करोड़ों कामदेवों की शोभा है। लाल-लाल कमल के चरणों के नखों की [सफ़ेद] रोशनी ऐसी प्रतीत होती है मानो [लाल] कमल के पत्तों पर मोती बसे हों। , चरणों में वर, ध्वजा और आदर्श के चिहन सुशोभित होते हैं। नूपुर (पैंजनी) की ध्वनि सुनकर पत्नियाँ भी मंत्रमुग्ध हो जाती हैं। कमर और पेट पर तीन रेखाएं (त्रिवली) होती हैं। , जिन लोगों ने इसे देखा है वे ही परमाणु ऊर्जा की गंभीरता को जानते हैं।

कंठ शंख के समान (लहराता हुआ, तीन रेखाओं से सुशोभित) और ठुड्डी अत्यंत सुंदर है। उनके मुख पर असंख्य कामदेवों की आँखें चमक रही हैं। दो सुन्दर दांत हैं. लाल होंठ हों. नाक और तिलक की शोभा का वर्णन कौन कर सकता है? उसके सुंदर कान और बहुत सुंदर गाल हैं। मीठी बोली बड़ी प्यारी लगती है. मेरे जन्म से ही चिकने और घुंघराले बाल हैं, जिन्हें मेरी मां ने कई तरह से संवारा है।

शरीर पर पीली झंगुली पहनी हुई है। मुझे यह बहुत प्यारा लगता है कि वे अपने घुटनों और हाथों के बल चलते हैं। वेद और शेषजी भी उनके रूप का वर्णन नहीं कर सकते। उसे तो वही जानता है. किसने कभी स्वयं को देखा है? जो सुख का स्वरूप है, आसक्ति से परे और ज्ञान, वाणी और इंद्रियों से परे है; भगवान दशरथ और कौशल्या के असीम प्रेम के प्रभाव में, वे पवित्र नृत्य करते हैं।

इस प्रकार [संपूर्ण | जगत के माता-पिता श्री रामजी अवधपुरवासियों को सुख देते हैं। जिन्होंने श्री रामचन्द्रजी के चरणों में प्रेम जोड़ा है, हे भवानी! उनकी स्पष्ट प्रतिक्रिया यह है कि उनके प्रति प्रेम के कारण, भगवान लीला करके उन्हें आनंद दे रहे हैं। श्रीरघुनाथजी से दूर रहकर मनुष्य लाख उपाय कर सकता है, परंतु उसे सांसारिक बोझ से कौन बचा सकता है। माया, जिसने सभी प्राणियों को अपने वश में कर लिया है, वह भी ईश्वर से डरती है।

भगवान उस माया को भौंहों के इशारे पर नचाते हैं। ऐसे भगवान को छोड़ो और कहो, (और किसकी) पूजा करनी चाहिए। मन, वचन और कर्म से चतुराई रहित होकर भजन करते ही श्री रघुनाथजी तुम पर कृपा करेंगे। इस प्रकार भगवान श्री रामचन्द्रजी ने बालक्रीड़ा द्वारा समस्त नगरवासियों को सुख दिया। कोसल्याजी कभी उसे गोद में झुलातीं तो कभी पालने में बिठाकर झुलातीं।

प्रेम में डूबे कोसल्याजी को रात-दिन का पता ही नहीं चलता था। स्नेहमयी माँ अपने बेटे के बचपन के गुण गाती रहती थी। एक बार माता ने श्री रामचन्द्रजी को नहलाया, श्रृंगार किया और पालने में बिठाया। फिर उसने अपने कुल के इष्टदेव की पूजा करने के लिए स्नान किया।

पूजा करने के बाद प्रसाद चढ़ाया गया और खय्याम वहां गए जहां रसोई बनाई गई थी। फिर माँ वहाँ. वह (पूजा स्थल पर) लौट आई और वहां आने पर उसने देखा कि नेबेद्या अपने बेटे को इष्टदेव भगवान को अर्पित करने के बाद खाना खा रहा है। वह सोचने लगी कि इधर उसने दो बच्चों को देखा। क्या यह मेरे मन का भ्रम है या कोई और विशेष कारण है? अपनी माता को घबराया हुआ देखकर प्रभु श्रीरामचन्द्रजी मधुर मुस्कान के साथ हँसे।

तब उन्होंने माता को अपना अद्भुत, अखण्ड स्वरूप दिखाया, जिसके रोम-रोम में करोड़ों ब्रह्माण्ड विद्यमान हैं। असंख्य सूर्य, चंद्रमा, शिव, ब्रह्मा, अनेक पर्वत, नदियाँ, समुद्र, पृथ्वी, वन, काल, कर्म, गुण, ज्ञान और भावनाएँ देखीं। और वो चीज़ें भी देखीं जिनके बारे में कभी सुना भी नहीं था. मैंने माया को, जो हर तरह से शक्तिशाली है, हाथ जोड़े हुए बहुत डरी हुई (भगवान के सामने) खड़ी देखी। उस जीव को देखा जिसे माया नचाती है और [फिर] उस भक्ति को देखा जो जीव को [माया से] मुक्त कर देती है।

माँ का शरीर रोमांचित हो गया, मुँह से कोई शब्द नहीं निकला। फिर उन्होंने आंखें बंद कर लीं और श्री रामचन्द्रजी के चरणों में सिर झुका दिया। माता को आश्चर्यचकित देखकर उनके कट्टर शत्रु श्री रामजी ने फिर से बालक का रूप

धारण कर लिया। [माँ] प्रशंसा भी नहीं की गई। उसे डर था कि मैंने ब्रह्मांड के पिता को अपने बेटे के रूप में जान लिया है। श्री हरि माता ने बहुत स्पष्ट रूप से समझाया [और कहा--] हे माँ! सुनना; यह बात कहीं और नहीं कही जा सकती.

कौशल्याजी बार-बार हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हैं कि हे प्रभु! क्या मैं फिर कभी आपके भ्रम से उबर नहीं पाऊँगा। प्रभु ने अनेक प्रकार से कार्य किये और अपने सेवकों को अत्यधिक आनंद दिया। कुछ समय बाद चारों भाई बड़े हुए और अपने परिवार में खुशियाँ लेकर आये। तब गुरुजी गए और चूड़ाकर्म संस्कार किया। ब्राह्मणों को फिर बहुत सारी दक्षिणा मिली। चार खूबसूरत राजकुमार बहुत ही आकर्षक और विशाल किरदार निभाते हैं।

जो मन, वचन और कर्म से अदृश्य हैं, वे ही भगवान दशरथ के आंगन में विचरण करते हैं। जब राजा भोजन के लिए बुलाता है तो वह अपने बचपन के मित्रों का साथ छोड़कर नहीं आता। कोसल्याजी बुलाने जाते हैं तो प्रभु भाग जाते हैं। जिसका वर्णन वेदों ने 'नेति' (इतना ही नहीं) के रूप में किया है और भगवान शिव ने जिसका अंत नहीं पाया है, माता उन्हें पकड़ने के लिए हठपूर्वक दौड़ती हैं।

वह अपने शरीर को धूल से सना हुआ आया और राजा ने हँसते हुए उसे अपनी गोद में बैठा लिया। जप करो, परन्तु मन अशान्त है। मौका पाकर वे मुंह में दही-चावल लेकर चिल्लाते हुए इधर-उधर भागने लगे। सरस्वती, शेषजी, शिवजी और वेदों ने श्री रामचन्द्रजी के अत्यंत सरल (निर्दोष) और सुन्दर (मनभावन) बचपन के नृत्य गाए हैं॥ जिन मनुष्यों का मन इन लीलाओं में नहीं लगा, विधाता ने उन्हें सर्वथा अभागा बना दिया।

जैसे ही सभी भाई कुंवारे हुए, उनके गुरु, पिता और माता ने उनके लिए पवित्र अनुष्ठान किया। श्रीरघुनाथजी [अपने भाइयों सहित] गुरु के घर अध्ययन करने गये और थोड़े ही समय में उन्होंने सारा ज्ञान प्राप्त कर लिया। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि जिस भगवान के पास स्वाभाविक श्वास है, वह चारों वेद पढ़े। चारों भाई ज्ञान, नम्रता, सदाचार और शील में पारंगत हैं और राजाओं जैसा खेल खेलते हैं।

हाथों में तीर-धनुष बहुत सुंदर लगते हैं। रूप को देखते ही जीव (चेतन और निर्जीव) मोहित हो जाते हैं। जिस गली में वे भाई खेलते हैं, वहां के सभी स्त्री-पुरुष उन्हें देखकर स्नेह से निश्चिंत हो जाते हैं या जड़वत रह जाते हैं। कोसलपुरवासी स्त्री-पुरुष, बूढ़े और बच्चे सभी दयालु श्री रामचच्चजी को अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय मानते हैं।

श्री रामचन्द्र जी अपने भाइयों और इष्ट मित्रों को बुलाकर उन्हें अपने साथ ले लेते हैं और प्रतिदिन शिकार खेलने वन में जाते हैं। वे अपने मन में पवित्र मानकर हिरण को मारते हैं और प्रतिदिन गज (दशरथजी) को दिखाने के लिए लाते हैं। श्री रामजी के बाण से जो हिरण मारे गये, वे शरीर छोड़कर स्वर्ग चले गये। श्री रामचन्द्रजी अपने छोटे भाइयों और मित्रों के साथ भोजन करते हैं और माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं।

जैसे श्री रामचन्द्रजी की कृपा से नगर के लोग सुखी होते हैं, वैसी ही (लीला) होती है। वे वेद-पुराणों को एकाग्रचित्त होकर सुनते हैं और फिर स्वयं भी सुनते हैं। भाइयों को समझाकर कहो। श्रीरघुनाथजी प्रातःकाल उठकर अपने माता-पिता और गुरु को सिर झुकाकर प्रणाम करते हैं और आज्ञा लेकर नगर का कार्य करते हैं। उनके चरित्र को देखकर राजा बहुत प्रसन्न होते हैं।

जो सर्वव्यापी है, बुद्धि से रहित है, इच्छा रहित है, अजन्मा है और गुणों से रहित है; और भगवान, जिनका न कोई नाम है, न कोई रूप, भक्तों के लिए नाना प्रकार के अनोखे (अलौकिक) चरित्र रचते हैं। ये सब किरदार ने गाकर कहा. अब आगे की कहानी ध्यान से सुनो.

मुनि विश्वामित्रजी बाण को एक पवित्र आश्रम समझकर निवास करते थे। जहां वे ऋषि-मुनि जप, यज्ञ और योग तो करते थे, लेकिन मारीच और सुबाहु से बहुत डरते थे। यज्ञ को देखते ही राक्षस दौड़कर उत्पात मचा देते थे, जिससे ऋषि को बहुत कष्ट होता था। गढ़सी के पुत्र विश्वामित्र को चिंता थी कि ये पापी राक्षस तब तक नहीं मरेंगे जब तक भगवान इन्हें नहीं मार देंगे। तब महर्षि ने मन में विचार किया कि पृथ्वी का भार हरने के लिये भगवान ने अवतार लिया है।

इसी बहाने जाकर उनके चरणों के दर्शन कर लूँ और उनसे दोनों भाइयों को लाने की विनती करूँ। अहा! मैं ज्ञान, वैराग्य और समस्त गुणों के धाम भगवान को पूर्ण नेत्रों से देखूंगा। अनेक प्रकार से शुभकामनाएँ देने के बाद उसे जाते देर न लगी। सरयूजी के जल में स्नान करके वे राजा के द्वार पर पहुँचे। जब राजा ने मुनिका के आने का समाचार सुना तो वह ब्राह्मणों के समूह के साथ उससे मिलने गया और उसे प्रणाम कर उसे लाकर अपने आसन पर बैठाया।

उसने चरण धोकर बहुत पूजा की और कहा- आज मेरे समान सौभाग्यशाली कोई नहीं है। फिर नाना प्रकार के भोजन परोसे गये, जिससे महर्षि मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए। तब राजा ने चारों पुत्रों को ऋषि के चरणों में रख दिया (उन्हें प्रणाम कराया)। श्री रामचन्द्रजी को देखकर मुनि को अपने शरीर की सुधि ही भूल गयी।

जैसे ही उन्होंने श्री रामजी के मुख का सौन्दर्य देखा, वे उसमें लीन हो गये, मानो चकोर पूर्ण चन्द्रमा देखकर मोहित हो गया हो।

तब राजा ने मन ही मन प्रसन्न होकर ये वचन कहे-हे मुनिवर! आपने कभी ऐसी कृपा नहीं की। आज आपने मुझे शुभकामनाएँ क्यों दीं? कहो, मैं इसे पूरा करने में देर नहीं करूँगा। श्रीरघुनाथजी को छोटे भाई सहित मुझे दे दीजिये। राक्षसों के मारे जाने पर मैं सनाथ (सुरक्षित) हो जाऊँगा। हे राजन! मोह और अज्ञान को छोड़कर प्रसन्न मन से उन्हें दान दो। हे प्रभो! इससे तुम्हें धर्म और समृद्धि प्राप्त होगी तथा परम कल्याण होगा।

यह अत्यंत अप्रिय वाणी सुनकर राजा का हृदय कांप उठा और उसके चेहरे की चमक फीकी पड़ गयी। [उन्होंने कहा--] हे ब्राह्मण! चौथे जन्म में मुझे चार पुत्र प्राप्त हुए, यह तुमने सोचा और कहा नहीं। हे मुनि! तुम पृथ्वी, गौ, धन और खजाना मांगो, मैं आज बड़े हर्ष से अपना सब कुछ दे दूंगा। शरीर और आत्मा से अधिक कीमती कुछ भी नहीं है, मैं इसे एक क्षण भी दूंगा।

मेरे सब पुत्र मुझे प्राणों के समान प्रिय हैं; हे प्रभु उनमें भी! रामको को [किसी भी तरह से]। उन्हें देना संभव नहीं है. कहाँ वह अत्यंत डरावना और क्रूर राक्षस और कहाँ मेरा अत्यंत अल्पायु का सुन्दर पुत्र। राजा के प्रेम से सराबोर वचन सुनकर मुनि विश्वामित्र के हृदय में अत्यंत हर्ष हुआ। राजा को अनेक प्रकार से समझाया, जिससे उसका संदेह नष्ट हो गया।

[फिर बोले--] हे प्रभु! ये दोनों बेटे मेरी जिंदगी हैं. हे ऋषि! [अब] आप ही उनके पिता हैं, कोई और नहीं। राजा ने उन्हें अनेक प्रकार से आशीर्वाद दिया और उनके पुत्रों को ऋषि को सौंप दिया। फिर वह प्रभु माता के महल में गया और उनके चरणों में सिर झुकाया। दोनों भाई (राम और लक्ष्मण), जो मनुष्यों में सिंह थे, मुनिका के डर पर विजय पाने के लिए प्रसन्न होकर चले गए। वह कृपा, धैर्य के सागर और संपूर्ण ब्रह्मांड का कारण भी है।

भगवान की आंखें लाल हैं, चौड़ी छाती और विशाल भुजाएं हैं, शरीर नीले कमल के समान काला है और चौड़ी छाती है, वे पीले वस्त्र पहनते हैं और उनकी कमर के चारों ओर एक सुंदर बेल्ट है। दोनों हाथों में [क्रमशः] सुन्दर धनुष-बाण है। श्याम और गौर वर्ण के दोनों भाई अत्यंत सुन्दर हैं। विश्वामित्रजी को अपार धन की प्राप्ति हुई। [वह सोचने लगा--] मुझे पता चला कि भगवान ब्रह्मण्यदेव (ब्राह्मणों के भक्त) हैं। भगवान ने मेरे लिए अपने पिता को भी छोड़ दिया।

रास्ते में जाते समय ऋषि को ताड़का दिखाई दी। शब्द सुनते ही वह गुस्से में दौड़ पड़ी। श्री रामजी ने एक ही बांस से उसके प्राण ले लिये और उसे दीन समझकर निजपद (अपना दिव्य रूप) दे दिया। तब ऋषि विश्वामित्र ने अपने मन में भगवान को ज्ञान का भंडार माना [लीला पूरी करने के लिए]। ऐसा ज्ञान दिया कि भूख-प्यास नहीं लगती और शरीर में अपार शक्ति और रोशनी आ जाती है।

ऋषि अपने सभी हथियार समर्पित करके भगवान श्री राम को अपने आश्रम में ले आये; और उन्होंने इसे अपने लिए अत्यंत लाभकारी समझकर भक्तिपूर्वक कंद, मूल और फल उन्हें परोसे। प्रातःकाल ऋषि श्रीरघुनाथजी ने कहा- तुम जाकर निर्भय होकर यज्ञ करो। यह सुनकर सभी ऋषि-मुनि हवन करने लगे। आप (श्रीरामजी) यज्ञ के पहरे पर रहे। यह समाचार सुनकर ऋषियों का शत्रु क्रोधित राक्षस मारीच अपने सहायकों सहित दौड़ा। श्री रामजी ने उस पर एक निष्फल बाण मारा, जिससे वह सौ योजन विस्तृत समुद्र के पार जा गिरा।

तब सुबाहुकोण ने अग्निबाण चलाया। यहां छोटे भाई लक्ष्मणजी ने राक्षसों की सेना को नष्ट कर दिया था। इस प्रकार श्री रामजी ने राक्षसों का वध किया और ब्राह्मणों को निर्भय कर दिया। तब सभी देवता और ऋषि-मुनि स्तुति करने लगे। श्री रबुनाथजी कुछ दिन और वहाँ रहे और ब्राह्मणों पर दया की। भक्तिवश ब्राह्मणों ने उन्हें गाँव वालों की कहानियाँ सुनायीं।

मरगाम में एक आश्रम दिखा. वहां कोई जानवर, पक्षी या कोई जीवित प्राणी नहीं था। भगवान ने उस पत्थर को चट्टान के रूप में देखकर पूछा, तब ऋषि ने सारी कथा विस्तार से बतायी। पत्थर के शरीर से शापित गौतम मुनि की पत्नी अहल्या धैर्यपूर्वक आपके चरण कमलों की धूल माँग रही है। हे रघुवीर! कृपया इस पर दया करें.

श्री रामजी के पवित्र एवं दुःखनाशक चरणों का स्पर्श होते ही तपस्या की प्रतिमूर्ति अहिल्या साक्षात् प्रकट हो गईं। भक्तों को सुख देने वाले श्री रधुनाथजी को देखकर वह हाथ जोड़कर सामने खड़ी हो गयी। अत्यधिक प्रेम के कारण वह अधीर हो गयी। उसका शरीर रोमांचित हो गया; वह बोल नहीं पा रही थी. वह परम धन्य अहल्या भगवान के चरणों से लिपट गयी और उसकी दोनों आँखों से जल की धारा (प्रेम और आनंद के आँसू) बहने लगी।

तब उसने मन में धैर्य रखकर भगवान को पहचान लिया और श्री रघुनाथजी की कृपा से भक्ति प्राप्त कर ली। तब वह अत्यन्त पवित्र वाणी से स्तुति करने लगा - हे ज्ञान से जानने योग्य श्रीरघुनाथजी। आपकी जय हो ! मैं [स्वाभाविक रूप से] एक अशुद्ध महिला हूं; और हे भगवान! आप संसार को पवित्र करने वाले, भक्तों

को सुख देने वाले और रावण के शत्रु हैं। हे कमल पुष्प! हे भगवान, जो हमें इस संसार (जन्म और मृत्यु) के भय से मुक्त करते हैं। मैं आपकी शरण में आया हूं, मेरी रक्षा करें, मेरी रक्षा करें।

जिस ऋषि ने मुझे शाप दिया, उसने बहुत अच्छा काम किया। मैं उनकी अपार कृपा मानता हूं, जिसके कारण मैंने अपनी आंखों से श्री हरि (आप) को देखा, जिन्होंने मुझे संसार से मुक्त कर दिया। शंकरजी इसे (आपके दर्शन को) सबसे बड़ा लाभ मानते हैं। हे प्रभो ! मैं बौद्धिक रूप से बहुत मासूम हूं, मेरी एक विनती है. हे नाथ! मैं कोई दूसरा वर नहीं मांगती, मुझे तो यही चाहिए। मेरे मन की भांग सदैव आपके चरण कमलों के प्रेम का रस पीती रहे।

जिन चरणों से परम पवित्र गंगा प्रकट हुई, जिन्हें भगवान शिव ने मेरे सिर पर रखा और जिन चरण कमलों की ब्रह्माजी पूजा करते हैं, दयालु हरि (आप) ने उन्हें मेरे सिर पर रखा। मैं बार-बार भगवान के चरणों में गिरकर उनकी स्तुति करता था, जो मेरे हृदय को बहुत अच्छा लगता था। उस वर को पाकर गौतम की पत्नी अहल्या हर्ष से भरकर अपने पति के लोक में चली गयी।

भगवान श्रीरामचन्द्रजी कितने विनम्र व्यक्ति हैं और अकारण ही हम पर कृपा करते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं, हे मूर्ख! सारे छल-कपट को त्यागकर केवल उसी की पूजा करो। श्री रामजी और लक्ष्मणजी ऋषि के साथ चले। खाड़ी। वहाँ गये, जहाँ जगत् को पवित्र करने वाली गंगाजी थीं। महाराज गाधि के पुत्र विश्वामित्रजी ने देवनदी गंगाजी के पृथ्वी पर आने की सारी कथा सुनायी।

फिर वे मुनिवन्द के साथ प्रसन्नतापूर्वक चले और शीघ्र ही जनकपुर के निकट पहुँच गये। जब श्री रामजी ने जनकपुर की शोभा देखी तो वे अपने छोटे भाई लक्ष्मण सहित बहुत प्रसन्न हुए। वहाँ अनेक गुफाएँ, कुएँ, नदियाँ और तालाब हैं, जिनमें अमृत के समान जल और रत्नों की सीढ़ियाँ हैं। अमृत से मतवाले भौंरे सुन्दर गुंजन कर रहे हैं। रंग-बिरंगे [अनेक] पक्षी मधुर ध्वनि निकाल रहे हैं। रंग-बिरंगे कमल खिले हुए हैं। शीतल, मन्द, सुगन्धित वायु चल रही है जो सदैव (सभी ऋतुओं में) सुख देने वाली है।

शहर के चारों ओर फूलों के बगीचे, बगीचे और जंगल, जो कई पक्षियों का घर हैं, खिले हुए, फलदार और सुंदर पत्तियों से लदे हुए हैं। शहर की खूबसूरती का वर्णन करना नामुमकिन है। मन जहां भी जाता है, आकर्षित हो जाता है। वहाँ एक सुन्दर बाज़ार है, रत्नों से बनी हुई विचित्र छज्जे हैं, मानो ब्रह्मा ने उन्हें अपने हाथों से बनाया हो।

कुबैर जैसे बड़े-बड़े धनवान व्यापारी अनेक प्रकार के सामान लेकर दुकानों में बैठे हैं। खूबसूरत चौराहे और सुहानी सड़कें हमेशा खुशबू से भरी रहती हैं। सभी के घर कीचड़युक्त हैं और उन पर चित्र खुदे हुए हैं, जिन्हें देखकर लगता है कि इन्हें कामदेव के रूप में किसी चित्रकार ने चित्रित किया है। नगर के [सभी] स्त्री-पुरुष सुन्दर, धर्मात्मा, साधु स्वभाव वाले, धार्मिक, ज्ञानी और सदाचारी हैं।

जहाँ जनकजी का अत्यंत अनोखा (सुन्दर) निवास (महल) हो, वहाँ के विलास (महल) को देखकर देवता भी थक (स्तब्ध) हो जाते हैं (मनुष्यों की तो बात ही क्या है)! , कोट (राजमहल की छत) को देखकर मन चकित हो जाता है, ऐसा प्रतीत होता है मानो उसने समस्त लोकों के वैभव को अवरुद्ध (घेर) लिया हो। चमकीले महलों में रत्नों से जड़े हुए अनेक प्रकार के सुंदर बने सोने के जरीदार पर्दे होते हैं। जिस सुन्दर महल में सीताजी निवास करती हैं, उसकी शोभा का वर्णन कैसे किया जा सकता है?

राजमहल के सभी दरवाजे (द्वार) सुन्दर हैं, जिनमें वज्र जैसे (मजबूत या हीरों से चमकने वाले) दरवाजे हैं। वहाँ [अधीनस्थ] राजाओं, कलाबाजों, मगधों और भाटों की भीड़ है। घोड़ों और हाथियों के लिए बहुत बड़े अस्तबल और अस्तबल। (फीलखाने) बनाये जाते हैं जो सदैव घोड़ों, हाथियों और रथों से भरे रहते हैं। अनेक योद्धा, मंत्री और सेनापति हैं। इन सभी के घर भी महलों की तरह हैं। कई राजा नगर के बाहर तालाबों और नदियों के पास डेरा डाले हुए हैं।

[वहाँ| आमों का एक अनोखा बगीचा, जहाँ सभी प्रकार के आम होते थे और जो हर प्रकार से सुखदायक था, देखकर विश्वामित्रजी बोले- हे सुन्दर रघुवीर! मेरा मन कहता है कि यहीं रुक जाऊं. प्रभु श्रीरामचन्द्रजी अपनी कृपा के धाम प्रसन्न करें, बहुत अच्छे स्वामी! इतना कहकर ऋषियों का समूह एक साथ वहीं रुक गया। फिर उन्होंने अपने शुद्ध हृदय वाले (ईमानदार, समर्पित) मंत्रियों, कई योद्धाओं, सर्वश्रेष्ठ ब्राहमणों, गुरु (शतानंदजी) और अपनी जाति के सर्वश्रेष्ठ लोगों को अपने साथ लिया और इस तरह राजा खुशी-खुशी ऋषियों के गुरु विश्वामित्रजी से मिलने गए।

राजा ने ऋषि के चरणों में सिर झुकाया। ऋषियों के गुरु विश्वामित्र ने प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद दिया। फिर उसने समस्त ब्राहमण समूह को आदरपूर्वक प्रणाम किया और राजा अपना महान भाग्य जानकर प्रसन्न हुआ।

विश्वामित्र जी ने बार-बार कुशल प्रश्न पूछकर राजा को बैठाया। उसी समय दोनों भाई आ गये, जो फुलवाड़ी देखने गये थे। जवान उम्र के जवान लड़के, सांवले और गोरे रंग के और आंखों को अच्छे लगने वाले। वे पूरी दुनिया का दिमाग

चुराने वाले हैं। जब रघुनाथजी आये तो सभी खड़े हो गये (उनके सौंदर्य और तेज से प्रभावित होकर)। विश्वामित्रजी ने उन्हें अपने पास बैठाया।

दोनों भाइयों को देखकर सभी प्रसन्न हुए। सबकी आँखों में आँसू भर आये (आनन्द और प्रेम के आँसू उमड़ आये) और शरीर पुलकित हो गये। रामजी की मधुर और मनमोहक मूर्तियाँ देखकर विदेह (जनक) विशेष रूप से विदेह (शरीर की चिंता से रहित) हो गये। राजा जनक ने हृदय में प्रेम में डूबकर अपनी बुद्धि का आश्रय लेकर धैर्य दिखाया और मुनरी के चरणों में सिर झुकाकर बड़े प्रेमपूर्ण स्वर में कहा-

हे नाथ! बताओ, ये दोनों सुन्दर बालक समाज के आभूषण हैं या किसी वंश के बालक? अथवा जिस ब्रह्म को वेदों ने नेति कहकर गाया है, वह युगल रूप में नहीं आया है। मेरा मन, जो स्वभाव से ही त्याग से बना है, उसी प्रकार [उन्हें देखकर] मोहित हो रहा है, जैसे चंद्रमा चंद्रमा पर मोहित हो जाता है। हे भगवान! इसलिए मैं आपसे ईमानदारी से पूछता हूं. हे नाथ! बताओ, छुपाओ मत.

उन्हें देखते ही मेरे मन ने अपार प्रेम के वशीभूत होकर ब्रह्मसुख को बलपूर्वक त्याग दिया। ऋषि हँसे और बोले, हे राजन! ठीक कहा तुमने। आपकी बात झूठी नहीं हो सकती. संसार में जितने भी प्राणी हैं, वह सभी को प्रिय है। मुनि की (रहस्यमयी) वाणी सुनकर श्री रामजी मन ही मन मुस्कुराते हैं (हँसते हुए मानो संकेत कर रहे हों कि भेद खुलना नहीं चाहिए)। [तब ऋषि ने कहा--] ये रघुकुलमणि महाराज दशरथ के पुत्र हैं। राजा ने मेरी भलाई के लिये उन्हें मेरे साथ भेजा है।

राम और लक्ष्मण ये दोनों भाई रूप, शील और बल के धाम हैं। सारा जगत इस बात का साक्षी है कि उन्होंने राक्षसों को युद्ध में परास्त करके मेरे यज्ञ की रक्षा की है।
राजा ने कहा, हे ऋषि! आपके चरणों का दर्शन कर मैं अपना पुण्य प्रभाव व्यक्त नहीं कर सकता। सांवले और गोरे रंग के ये खूबसूरत भाई भी आनंद को आनंद देते हैं. उनका परस्पर प्रेम अत्यंत पवित्र और सुखद है, हृदय को बहुत अच्छा लगता है, परंतु उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। विदेह (जनकजी) प्रसन्न होकर कहते हैं- हे प्रभु! सुनो, ब्रह्म और जीव की भाँति उनमें स्वाभाविक प्रेम है।

राजा बार-बार भगवान की ओर देखता है (नजर वहां से हटना ही नहीं चाहती)। प्रेम से शरीर पुलकित हो जाता है और हृदय में बड़ा उत्साह होता है। [तब] ऋषि की स्तुति करके और उनके चरणों में सिर झुकाकर राजा उन्हें नगर में ले गया।

राजा ने उन्हें ले जाकर एक सुन्दर महल में ठहराया, जो हर समय (सभी ऋतुओं में) सुखद रहता था। उसके बाद सब प्रकार की पूजा और सेवा करके राजा विदा लेकर अपने घर चला गया।

ऋषि-मुनियों के साथ भोजन और विश्राम करने के बाद रघुवंश के शिरोमणि प्रभु श्री रामचन्द्रजी भाई लक्ष्मण के साथ बैठ गये। उस समय दिन का केवल एक चौथाई भाग ही शेष रह गया था। लक्ष्मणजी के मन में जनकपुर जाकर देखने की विशेष इच्छा है। परन्तु प्रभु श्री रामचन्द्रजी का भय हो तो ऋषि भी झिझकते हैं। इसलिये दिखावे में कुछ नहीं कहा जाता; मन ही मन मुस्कुराना.

[अंतर्यामी] जब श्री रामचन्द्रजी को अपने छोटे भाई के मन का हाल मालूम हुआ तो उनका हृदय भक्ति से उमड़ उठा। गुरु की आज्ञा पाकर वे बड़ी नम्रता और मुस्कान के साथ बोले- हे नाथ! लक्ष्मण नगर देखना चाहते हैं, परन्तु प्रभु; भय और संकोच के कारण स्पष्ट नहीं कहता। यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं उसे नगर दिखाकर तुरंत वापस ले आऊँगा।

यह सुनकर मुनीश्वर विश्वामित्रजी ने प्रेमपूर्वक वचन कहे- हे राम! आप पॉलिसी की सुरक्षा कैसे नहीं कर सकते; हे पिता! आप धर्म के नियमों का पालन करते हैं और प्रेम के प्रभाव से अपने सेवकों को सुख देते हैं। सुख समाप्त होने पर दोनों भाई नगर देखने जाते हैं। अपना सुन्दर मुख दिखाकर समस्त नगरवासियों की आँखों को प्रसन्न करो।

सभी लोगों की आँखों को सुख देने वाले मुनि के चरणकमलों की पूजा करके दोनों भाई आगे बढ़े। उसकी खूबसूरती का जलवा देख बच्चों का झुंड उसके साथ हो लिया। उसकी आँखें और मन उसकी मधुरता पर मोहित हो गये। दोनों भाइयों ने पीले रंग के कपड़े पहने हुए हैं और पीले दुपट्टे के साथ कमर पर तरकश बांधा हुआ है. उनके हाथों में सुन्दर धनुष-बाण सुशोभित हैं। [सांवले और गोरे रंग वालों के शरीर पर (अर्थात् जिस पर चंदन अधिक प्रभावशाली होता है) उसी रंग का सुंदर चंदन लेप होता है। यह सांवले और गोरे रंग की खूबसूरत जोड़ी है।

शेर की तरह मजबूत गर्दन (गर्दन का पिछला हिस्सा) है; विशाल भुजाएँ हैं। [विस्तृत] वक्षस्थल पर अत्यंत सुंदर गजमुक्तकी माला है। सुन्दर लाल कमल के समान नेत्र हैं। जो तीनों तापों से मुक्ति दिलाता है उसका मुख चंद्रमा के समान है। कानों में सोने की बालियां बेहद आकर्षक लगती हैं और ऐसा लगता है मानों देखते ही देखने वाले का मन चुरा ले। उनकी दृष्टि अत्यंत मनमोहक है और उनकी भौहें तिरछी और सुंदर हैं। माथे पर तिलक की रेखाएँ ऐसी सुन्दर हैं मानो मूर्ति की सुन्दरता पर मोहर लगा दी गई हो।

सिर पर सुंदर चौकोर टोपियां [दी गई], काले और घुंघराले बाल हैं। दोनों भाई सिर से पाँव तक सुन्दर हैं और सारी सुन्दरता वैसी ही है जैसी होनी चाहिए। जब गांव वालों को खबर मिली कि दोनों राजकुमार शहर देखने आए हैं तो वे सब अपना घर-बार और सारा काम-काज छोड़कर ऐसे भागे, मानो गरीबों का खजाना लूटने के लिए दौड़ रहे हों।

वे दोनों स्वाभाविक रूप से सुन्दर भाइयों को देखकर नेत्रों का फल पाकर प्रसन्न हो रहे हैं। युवतियाँ घर के झरोखों से प्रेमपूर्वक श्री रामचन्द्रजी के स्वरूप को देख रही हैं। वे आपस में बड़े प्रेम से बोल रहे हैं- हे मित्र! उन्होंने लाखों कामदेवों की छवियों को जीत लिया है। देवताओं, मनुष्यों, दानवों, नागों और ऋषियों में भी ऐसा सौन्दर्य सुनने को नहीं मिलता।

भगवान विष्णु की चार भुजाएं हैं, ब्रह्माजी के चार मुख हैं, शिवजी का रूप भयानक है और उनके पांच मुख हैं। हाय दोस्त! ऐसा कोई अन्य देवता नहीं है जिसके साथ इस चित्र की तुलना की जा सके। यही उनकी किशोरावस्था है, यही सौन्दर्य का घर, सांवला और गोरा रंग और सुख का निवास है। उनके कण-कण पर करोड़ों-अरबों कामदेव झोंक दिये जायें।

हाय दोस्त। यदि आप ऐसा कहें तो कोई भी प्राणी ऐसा होगा जो इस रूप को देखकर मोहित न हो (अर्थात यह रूप जड़-चेतन सभी को मोहित करने वाला है)। तब दूसरे मित्र ने प्रेम से कोमल स्वर में कहा- हे बुद्धिमान! मैंने जो सुना, उसे सुनो। ये दोनों राजकुमार महाराज दशरथजी के पुत्र हैं। वे शिशु राजहंस की एक सुंदर जोड़ी हैं। ये ऋषि विश्वामित्र के यज्ञ के रक्षक हैं, इन्होंने युद्ध भूमि में राक्षसों का संहार किया है।

जिनका शरीर काला और कमल के समान सुंदर नेत्र हैं, जो मारीच और सुबाहुक की मदिरा का नाश करने वाले तथा सुख की खान हैं और जिनके हाथ में धनुष-बाण है, वे कोसल्याजी के पुत्र हैं, उनका नाम है राम है. जिसका रंग गोरा है और किशोर अवस्था है तथा जो सुन्दर वेष धारण करके हाथ में धनुष-बाण लिये हुए श्री रामजी के पीछे-पीछे चल रहा है, वह उनका छोटा भाई है; उसका नाम लक्ष्मण है. हाय दोस्त! सुनो, उनकी माता सुमित्रा हैं।

दूसरी सखी श्री रामचन्द्रजी की छवि देखकर कहने लगी- यह वर तो जानकी के योग्य है। हाय दोस्त! यदि राजा उन्हें देख लेगा तो वह हठपूर्वक अपना वचन त्याग देगा और उनसे विवाह कर लेगा। किसी ने कहा--राजा ने उसे पहचान लिया है और साधु के साथ उसका भी आदर सत्कार किया है। लेकिन हे मित्र!

राजा अपनी प्रतिज्ञा नहीं छोड़ते। वादे के वशीभूत होकर वह हठपूर्वक अनिर्णय पर उतर आता है और अपने वादे पर कायम रहने की मूर्खता नहीं छोड़ता।

कोई कहता है-यदि विधाता अच्छा है और सुना है कि वह सबको उचित फल देता है, तो जानकीजी को यह वरदान मिल जायेगा। हाय दोस्त! इसके बारे में कोई संदेह नहीं है। यदि ईश्वर की कृपा से ऐसा संयोग बन जाये तो हम सभी धन्य हो जायेंगे। हाय दोस्त! यही कारण है कि मैं बहुत उत्सुक हूं कि वह किसी दिन यहां आएंगे।

नहीं तो शादी नहीं होगी ऐ दोस्त! सुनो, हमारे लिए उन्हें देखना दुर्लभ है। यह संयोग तभी हो सकता है जब हमारे पिछले जन्म में बहुत सारे पुण्य हों। दूसरे ने कहा--अरे मित्र! आपने बहुत अच्छा कहा. यह विवाह सबके परम हित में है। किसी ने कहा- शंकरजी का धनुष कठोर है और यह काला राजकुमार कोमल शरीर वाला बालक है।

वह बुद्धिमान है! सब कुछ भ्रम है. यह सुनकर दूसरा मित्र धीमी आवाज में कहने लगा- अरे मित्र. इनके बारे में कुछ लोगों का कहना है कि ये दिखने में भले ही छोटे हों, लेकिन इनका असर बहुत बड़ा होता है। जो लोग चरण कमलों की धूल छूकर निर्दोष हो गये, जिन्होंने घोर पाप किया था, क्या वे भगवान शिव का धनुष तोड़े बिना रहेंगे? इस मान्यता को भूलकर भी नहीं छोड़ना चाहिए।

जिस ब्राह्मण ने (बड़ी चतुराई से) सीता का श्रृंगार किया है, उसने काला वर भी सोच-समझकर बनाया है। उनकी यह बात सुनकर सब लोग प्रसन्न हो गये और कोमल स्वर से कहने लगे- ऐसा ही होगा। सुन्दर मुख और सुन्दर आँखों वाले मित्रों के समूह-समूह मन में हर्ष भरकर पुष्पवर्षा कर रहे हैं। दोनों भाई जहां भी जाते हैं, वहां बहुत खुशी होती है।

दोनों भाई नगर के पूर्व की ओर चले; जहां धनुषयज्ञ के लिए मंच बनाया गया था. वहाँ एक बहुत लम्बा-चौड़ा सुन्दर साँचे में ढाला हुआ पक्का आँगन था, जिस पर एक सुन्दर एवं स्वच्छ वेदी सुशोभित थी। चारों ओर बड़े-बड़े सुनहरे मंच बनाये गये, जिन पर राजा बैठते थे। उनके पीछे ही पास में अन्य मचानों का सुन्दर गोलाकार घेरा था।

वह कुछ-कुछ ऊँचा और हर प्रकार से सुन्दर था, जहाँ नगर के लोग जाकर बैठते थे। इनके पास ही कई रंगों के विशाल और खूबसूरत सफेद घर बने हुए हैं। जहाँ सभी स्त्रियाँ अपने-अपने कुल के अनुसार अपनी-अपनी उपयुक्तता के अनुसार

(जहाँ बैठना उचित हो) बैठकर पहरा देंगी। नगर के बालक आदरपूर्वक कोमल वचन कहकर भगवान श्री रामचन्द्रजी को यज्ञशाला का निर्माण दिखा रहे हैं।

इसी बहाने सभी बालक प्रेम के वशीभूत होकर श्री रामजी के सुन्दर अंगों का स्पर्श कर रहे हैं और दोनों भाइयों को देखकर मन में अत्यंत प्रसन्न हो रहे हैं। श्री रामचन्द्र जी ने सभी बालकों को प्रेम के वशीभूत जानकर यज्ञभूमि के स्थानों की प्रेमपूर्वक प्रशंसा की। इससे बच्चों का उत्साह, खुशी और प्यार और भी बढ़ गया, जिससे वे सभी अपनी-अपनी रुचि के अनुसार उन्हें बुलाने लगे और जब सभी ने बुलाया तो दोनों भाई प्रेम से उनके पास गए।

श्रीराम अपने छोटे भाई लक्ष्मण को कोमल, मधुर और मनमोहक वचन बोलकर यज्ञभूमि का निर्माण दिखाते हैं। जिनकी आज्ञा पाकर माया प्रेम निमेष (पलक गिरने की चौथी बेला) में ब्राह्मण वृक्षों के समूह बनाती है। अपनी भक्ति के कारण दीन-दुखियों पर दया करने वाले श्री रामजी आश्चर्य से धनुष यज्ञशाला की ओर देख रहे हैं। इस प्रकार सभी विचित्र कृतियों को देखने के बाद वह गुरु के पास गये। उनके मन में यह जानकर डर रहता है कि अब देर हो चुकी है.

जिसके डर से डरपोक भी भयभीत हो जाते हैं, यह प्रभु भजन का ही प्रभाव है जिसके कारण बड़े-बड़े भगवान भी डरने का कार्य करते हैं; दिखा रहे हैं. उन्होंने कोमल, मधुर और सुन्दर वचन कहकर बालकों को बलपूर्वक विदा किया। फिर डरो. प्रेम, नम्रता और बड़े संकोच के साथ दोनों भाइयों ने गुरु के चरणकमलों पर सिर झुकाया और आज्ञा पाकर बैठ गये। रात्रि होते ही (शाम को) मुनि ने आज्ञा दी, तब सबने संध्यावंदन किया। फिर प्राचीन कहानियाँ और इतिहास सुनाते-सुनाते उस सुन्दर रात के दो घंटे बीत गये। तब महर्षि जाकर सो गये। जिनके दर्शन और स्पर्श के लिए त्यागी पुरुष भी नाना प्रकार के जप और योग करते हैं, दोनों भाई उनके चरण दबाने लगे।

ऐसा प्रतीत होता है मानों वे दोनों भाई प्रेम से रहते हुए प्रेमपूर्वक गुरुजी के चरण दबा रहे हों। मुनि ने बार-बार आज्ञा दी, तब श्रीरघुनाथजी जाकर सोये। सभी शौच क्रियाओं के बाद वह गया और स्नान किया। फिर, दैनिक अनुष्ठान [संध्या-अग्निहोत्रादि] पूरा करने के बाद, उन्होंने ऋषि को अपना सिर झुकाया। पूजा का समय जानकर और गुरु की आज्ञा पाकर दोनों भाई फूल लेने गये।

उन्होंने जाकर राजा का सुन्दर उद्यान देखा, जहाँ वसंत ऋतु मनमोहक थी। ऐसे कई पेड़ हैं जो मन को मोह लेते हैं। मंडप रंग-बिरंगी एवं सुन्दर लताओं से आच्छादित हैं। नये पत्तों, फलों और फूलों से युक्त सुन्दर वृक्ष अपनी सम्पत्ति से

कल्पवक्षों को भी लज्जित कर रहे हैं। तोता, कोयल, तोते आदि पक्षी मीठी-मीठी बातें कर रहे हैं और मोर सुन्दर नृत्य कर रहे हैं।

उद्यान के मध्य में एक सुन्दर झील है, जिसमें रत्नों से बनी सीढ़ियाँ विचित्र ढंग से बनी हुई हैं। इसका पानी साफ है, जिसमें कई रंगों के कमल खिल रहे हैं, जलपक्षी चहचहा रहे हैं और हमिंगबर्ड गुनगुना रहे हैं। उद्यान और सरोवर को देखकर भगवान श्री राम भाई लक्ष्मण सहित प्रसन्न हो गये। जगत को सुख देने वाले श्री रामचन्द्रजी को सुख देने वाला यह उद्यान [सचमुच] अत्यंत रमणीय है।

इधर-उधर देखने और बागवानों से पूछने के बाद वह प्रसन्न मन से पत्ते और फूल तोड़ने लगा। उसी समय सीताजी वहां आ गईं। माँ ने उसे गिरिजा (पार्वती) की पूजा करने के लिए भेजा था। सभी सुंदर और बुद्धिमान दोस्त हैं, जो सुंदर आवाज में गाने गा रहे हैं. सरोवर के निकट गिरिजा का मन्दिर सुन्दर है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता; जिसे देखकर मन मोहित हो जाता है.

सीताजी सखियों के साथ सरोवर में स्नान करके प्रसन्न मन से गिरिजाजी के मंदिर में गईं। वे। पूजा ने बड़े प्रेम से अपने योग्य सुन्दर वर माँगा। एक सखी सीताजी को छोड़कर फुलवाड़ी देखने चली गई थी। उसने जाकर दोनों भाइयों को देखा और प्रेम से विह्वल होकर सीताजी के पास आयी। उसकी सहेलियों ने देखा कि उसका शरीर रोमांचित हो गया है और उसकी आँखों में आँसू भर आये हैं। सभी लोग धीमी आवाज में पूछने लगे कि अपनी खुशी का कारण बताओ।

उसने कहा--] दो राजकुमार बाग देखने आए हैं। वे किशोर हैं और हर तरह से खूबसूरत हैं। वे गहरे रंग के और गोरी त्वचा वाले हैं; मैं उसकी सुंदरता का वर्णन कैसे कर सकता हूँ? नेत्रों के बिना वाणी होती है और नेत्रों के बिना वाणी नहीं होती। यह सुनकर और सीताजी के हृदय की महान उत्कंठा जानकर सभी बुद्धिमान सखियाँ प्रसन्न हुईं। तभी एक दोस्त कहने लगा- अरे यार. यह वही राजकुमार है जिसने सुना है कि कल वह विश्वामित्र मुनि के साथ आया है।

और जिन्होंने नगर के स्त्री-पुरुषों को अपने सौंदर्य से मोहित करके अपने वश में कर लिया है। हर तरफ हर कोई उनकी छवि का बखान कर रहा है. उन्हें देखने अवश्य जाना चाहिए, वे देखने लायक हैं। सीताजी को उनकी बातें बहुत प्रिय लगीं और उन्हें देखकर उनकी आँखें फैल गईं। सीताजी उस प्रिय सखी को सामने लेकर चल दीं। पुराने प्यार को कोई नहीं भूल सकता.

नारदजी के वचन याद करके सीताजी के हृदय में पवित्र प्रेम उत्पन्न हो गया। वह चकित होकर इधर-उधर इस प्रकार देख रही है मानो भयभीत हिरणी इधर-उधर

देख रही हो। चूड़ियों (हाथ के कंगन), करधनी और पायल की आवाज सुनकर श्री रामचन्द्रजी मन में सोचते हैं और लक्ष्मण से कहते हैं- यह ध्वनि ऐसी आ रही है मानो कामदेव ने विश्वविजय का संकल्प करके डंक मार दिया हो।

इतना कहकर श्री राम पीछे मुड़े और उस ओर देखने लगे। श्री सीताजी के मुख रूपी चंद्रमा को देखने के लिए उनकी आंखें चौकोर हो गईं। सुन्दर आँखें स्थिर (टकटकी लगाए) हो गईं। ऐसा प्रतीत होता है मानो सबकी पलकों में निवास करने वाले निमि (जनकजी के पूर्वज) ने कन्या और जामाता के मिलन को इस दृष्टि से देखना उचित नहीं समझा; पलकों को सिकोड़कर पलकों में ही रहने दिया गया, जिससे पलकों का गिरना बंद हो गया।

सीताजी का सौन्दर्य देखकर श्री राम को बड़ी प्रसन्नता हुई। वे मन ही मन तो इसकी सराहना करते हैं, परन्तु मुँह से शब्द नहीं निकलते। वह सौन्दर्य इतना अनोखा है मानो ब्रह्मा ने अपनी सारी कलाएँ मूर्ति के रूप में संसार को दिखा दी हों।

वह (सीताजी की सुन्दरता) सुन्दरों को भी सुन्दर बना देती है। [वह ऐसी लग रही है मानो सौंदर्य के घर में दीपक जल रहा हो। सौंदर्य के घर में अब तक अँधेरा था, ऐसा प्रतीत होता है मानो वह घर सीताजी के सौंदर्य के दीपकों से प्रकाशित हो गया हो, पहले से भी अधिक सुन्दर हो गया हो। कवियों ने सारी उपमाएँ मिथ्या रखी हैं। जननन्दिनी श्रीसीताजी की तुलना किससे करूँ?

इस प्रकार हृदय में सीताजी के सौन्दर्य का वर्णन करके तथा अपनी स्थिति पर विचार करके भगवान श्री रामचन्द्रजी ने शुद्ध मन से अपने छोटे भाई लक्ष्मण से उचित वचन बोले- हे तात! यह वही जनकजी की पुत्री है जिसके लिए धनुषयज्ञ किया जा रहा है। सखियाँ इसे गोरी पूजा के लिए लाई हैं। वह फूलों के बगीचे में रोशनी बिखेरता हुआ घूम रहा है।

उसका अलौकिक सौन्दर्य देखकर मेरा स्वभाव से पवित्र मन क्रोधित हो गया है। वह सब (या उसके सभी कारण) विधाता को ज्ञात होना चाहिए। लेकिन अरे भाई! सुनो, मेरा शुभ (दाहिना) अंग फड़क रहा है। संसार में ऐसे महापुरुष बहुत कम होते हैं जिनकी बुद्धि और दृष्टि को स्त्रियाँ आकर्षित नहीं कर पातीं और भिखारी भी जिन्हें आकर्षित नहीं कर पाते (खाली हाथ नहीं लौटते)।

इस प्रकार श्री रामजी अपने छोटे भाई से बातें कर रहे हैं, परन्तु उनका मन सीताजी के रूप से आकर्षित होकर भौंरे की भाँति उनके मुख कमल रूपी मकरानन्द-रस का पान कर रहा है। सीताजी आश्चर्य से इधर-उधर देख रही हैं।

मन ही मन चिंता हो रही है कि राजकुमार कहां चला गया। सीताजी जिधर भी दृष्टि डालती हैं, ऐसा प्रतीत होता है मानो श्वेत कमलों की पंक्तियाँ बरस रही हों।

तभी सखियों ने लबादे के पीछे सुन्दर श्याम और गौर कुमार को दिखाया। उसकी सुंदरता देख कर आँखें मोहित हो गईं; वह ऐसे खुश हुआ मानो उसने अपना खजाना पहचान लिया हो। श्रीरघुनाथजी की छवि देखकर आँखें थक गईं। पलकें गिरना भी बंद हो गईं. अत्यधिक प्रेम और स्नेह के कारण शरीर बेचैन (अनियंत्रित) हो गया। ऐसा प्रतीत होता है मानो चकोरी मूर्च्छित होकर शरद् ऋतु के चन्द्रमाओं को देख रही हो।

चतुर्शिरोमणि जानकीजी ने श्री रामजी को अपने नेत्रों से हृदय में लाकर अपनी पलकें बंद कर लीं (अर्थात् नेत्र बंद कर उनका ध्यान करने लगीं)। जब सखियों ने प्रेमवश सीताजी को जान लिया, तब उनके मन में भय हुआ; कुछ बोल न सका।

उसी समय लतामंडप (गूंज) से दोनों भाई प्रकट हुए। मानो बादलों का पर्दा हटाकर दो स्पष्ट चाँद निकल आये हों।

दोनों हैंडसम भाई खूबसूरती की हद हैं. इनके शरीर की आभा नीले और पीले कमल के समान है। मस्तक पर सुन्दर मोर पंख सुशोभित हैं। इनके बीच फूलों की कलियों के गुच्छे हैं। माथे पर तिलक और पसीने की बूँदें शोभायमान हैं। कानों में सुन्दर आभूषणों की छवि दिखाई देती है। टेढ़ी भौहें और घुंघराले बाल हैं। उसके नये लाल कमल के समान बहुमूल्य (लाल) नेत्र हैं।

ठोड़ी, नाक और गाल बहुत सुंदर हैं, और मुस्कान की सुंदरता मन के लायक है। मुखी की छवि मुझसे दूर नहीं होती, जिसे देखकर अनेक कामदेव लज्जित होते हैं। छाती पर मोतियों की माला है। उसका गला शबूका की तरह सुंदर है। कामदेव की भुजाएं हाथी के बच्चे की सूंड की तरह (उतार-चढ़ाव वाली और मुलायम) हैं, जो ताकत की सीमा है। जिसके बायें हाथ में पुष्प सहित दोना है, हे मित्र! वह साँवली कुँवारी बड़ी प्यारी है।

एक चतुर सखी ने धैर्य रखा और सीताजी का हाथ पकड़कर कहा- गिरिजाजी की ओर ध्यान करो, इस समय राजकुमार को क्यों नहीं देखतीं। तब सीताजी ने झिझक कर आँखें खोलीं और देखा कि रघुवंश के दोनों सिंह सामने खड़े हैं। श्री रामजी की शोभा देखकर और फिर अपने पिता के व्रत को याद करके उनके मन में अत्यंत क्रोध आया।

जब सहेलियों ने सीताजी को प्रेम के वशीभूत देखा तो वे सब डर गईं और बोलीं- बहुत देर हो गई है [अब हमें चलना चाहिए]। यह कहकर वह कल इसी समय फिर आएगी, एक सहेली मन ही मन हँसी। सखी की ये रहस्यमय बातें सुनकर सीताजी को बड़ा आश्चर्य हुआ। देर हो रही थी, उसे अपनी माँ का डर लग रहा था। उसने बड़े धैर्य से श्री रामचन्द्रजी को हृदय में लाया और उनका ध्यान करके अपने को पिता के अधीन समझकर लौट आयी।

सीताजी बार-बार पक्षियों, पक्षियों और वृक्षों को देखने के बहाने घूमती हैं और श्री रामजी की छवि देखकर उनके प्रति उनका प्रेम कम नहीं बढ़ रहा है। यानी इसमें काफी बढ़ोतरी हो जाती है. वह शिवजी के धनुष को कठिन जान कर हृदय में श्री रामजी की श्यामल मूर्ति लेकर विलाप करती हुई चली गयी। (शिवजी के धनुष की कठोरता को याद करके उन्हें चिंता हो रही थी कि ये युवा रघुनाथजी इसे कैसे तोड़ेंगे, अपने पिता की प्रतिज्ञा की याद से उनके हृदय में क्रोध पैदा हो गया।

इसलिये वह मन ही मन विलाप करने लगी। प्यार में ऐश्वर्या को भूलने की वजह से हुआ ऐसा; फिर जैसे ही उसे ईश्वर की शक्ति का स्मरण आया, वह प्रसन्न हो गयी और उस अँधेरी छवि को हृदय में धारण करके चल दी। जब प्रभु श्रीरामजी को पता चला कि सुख, स्नेह, सौंदर्य और गुणों की खान श्रीजानकीजी के पास जा रही है। फिर मैंने अपने परम प्रेम को मुलायम स्याही में बदल दिया और उसका रूप अपने मन की खूबसूरत दीवार पर चित्रित कर दिया। सीताजी फिर भवानीजी के मन्दिर में गईं और उनके चरण वन्दना करके हाथ जोड़कर बोलीं-

सर्वोत्तम पर्वतों के राजा हिमाचल की पुत्री पार्वती! तेरी जय हो, तेरी जय हो; हे चकोरी, महादेवजी का मुख देखने वाली चंद्रमुखी! आपकी जय हो; हे हाथी के मुख वाले गणेशजी और छह मुख वाले स्वामीकार्तिकजी की माता! हे जगज्जननी! हे बिजली के समान तेजस्वी शरीर वाले, आपकी जय हो।

तुम्हारा न आदि है, न मध्य, न अन्त। आपके अपार प्रभाव को वेद भी नहीं जानते। आप ही संसार की रचना, पालन और संहार करने वाले हैं। वह दुनिया को मोहित करती है और स्वतंत्र रूप से घूमती है। हे माता, आपकी गणना उन श्रेष्ठ स्त्रियों में होती है जो अपने पति को ही परमेश्वर मानती हैं। हजारों सरस्वती और शेषजी भी आपकी अपार महिमा का वर्णन नहीं कर सकते।

वह भक्तों को मनचाहा वरदान देने वाली हैं। वह त्रिपुर के शत्रु शिव की प्रिय पत्नी हैं। आपकी सेवा और साधुता के चारों फल उपलब्ध हो जाते हैं। हे देवी! आपके चरणकमलों की पूजा करने से देवता और मनुष्य सभी प्रसन्न होते हैं। गिरिजाजी सीताजी की नम्रता और प्रेम के वश में हो गईं। माला उसके गले से

सरक गई और मूर्ति मुस्कुरा दी। सीताजी ने आदरपूर्वक प्रसाद की माला सिर पर धारण की। गौरीजी का हृदय हर्ष से भर गया और बोलीं-

हे सीता! हमारा सच्चा आशीर्वाद सुनो, तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। नारदजी के वचन सदैव शुद्ध (संदेह, भ्रम आदि दोषों से रहित) और सत्य होते हैं। तुम्हें वही वर मिलेगा जिस पर तुम्हारा हृदय आ गया है। तुम्हें स्वभाव से ही सुन्दर वर (श्री रामचन्द्रजी) मिलेंगे, जिनमें तुम्हारा मन अनुरक्त हो गया है। वह दया का खजाना और सर्वज्ञ है, तुम्हारी दया और प्रेम को जानता है। इस प्रकार श्री गौरीजी का आशीर्वाद सुनकर जानकीजी सहित सभी सखियाँ हृदय में हर्ष से भर गईं। तुलसीदासजी कहते हैं---भवानीजी की बारंबार पूजा करके सीताजी प्रसन्न मन से महल में लौट आईं।

गौरी को मित्रवत पाकर सीताजी के हृदय में जो हर्ष हुआ, उसे व्यक्त नहीं किया जा सकता। सुन्दर मंगल के कारण उनके शरीर का बायाँ भाग फड़कने लगा। सीताजी की सुंदरता की मन ही मन सराहना करते हुए दोनों भाई गुरुजी के पास गए। श्रीरामचन्द्रजी ने विश्वामित्रजी को सारी बात बतायी। क्योंकि उसके इरादे सरल होते हैं, छल उसे छू भी नहीं पाता।

फूल प्राप्त करने के बाद ऋषि ने पूजा की। तब उन्होंने दोनों भाइयों को आशीर्वाद दिया कि उनकी मनोकामना सफल हो। यह सुनकर श्री राम और लक्ष्मण प्रसन्न हो गये। महान वैज्ञानिक ऋषि विश्वामित्र जी भोजन करने के बाद कुछ प्राचीन कहानियाँ सुनाने लगे। [इस बीच] दिन बीत गया और गुरु की आज्ञा पाकर दोनों भाई संध्या करने के लिए चले गये। दूसरी ओर] पूर्व में एक सुंदर चाँद उग आया। श्री रामचन्द्रजी को सीता के मुख के समान यह देखकर प्रसन्नता हुई। तब मैंने मन में सोचा कि यह चन्द्रमा सीताजी के मुख के समान नहीं है।

इसकी उत्पत्ति खारे समुद्र में हुई है, फिर उसी समुद्र से उत्पन्न होने के कारण विष इसका भाई है; दिन के समय यह नीरस (दिखाईहीन, नीरस) रहता है और काले धब्बों से भरा रहता है। बेचारा चन्द्रमा सीताजी के मुख के बराबर कैसे हो सकता है? फिर यह बढ़ता-घटता रहता है तथा अविवाहित स्त्रियों के लिए कष्टदायक होता है; इसकी युति में आने पर राहु इससे प्रभावित होता है। चकवेको वह है जो चकवे के अलग होने का शोक मनाती है और कमलाका वबेरी है (जो उसे मुरझा देती है)। हे चंद्रमा! आपमें बहुत से अवगुण हैं, जो सीताजी में नहीं हैं।

साधु के चरणकमलों को प्रणाम करके आज्ञा पाकर उन्होंने विश्राम किया; रात्रि बीत जाने पर श्रीरघुनाथजी उठे और अपने भाइयों को देखकर बोले- हे पिता!

देखो, कमल, चक्रवाक तथा सम्पूर्ण जगत् को सुख देने वाले अरुणोदय प्रकट हो गये हैं। लक्ष्मणजी ने दोनों हाथ जोड़कर भगवान के प्रभाव का संकेत करते हुए धीमी आवाज में कहा---

सूर्य के उगने के कारण कुमुद के फूल सिकुड़ गए और तारों की रोशनी फीकी पड़ गई, जैसे तुम्हारे आने की बात सुन कर सब राजा शक्तिहीन हो गए हैं। राजा रूपी सभी तारे प्रकाश (मंद प्रकाश) प्रदान करते हैं, परंतु वे धनुष रूपी महान अंधकार को दूर नहीं कर सकते। रात्रि समाप्त होने पर कमल, मधुमक्खियाँ, भौंरे तथा नाना प्रकार के पक्षी प्रसन्न हो गये।

इसी प्रकार हे प्रभु! धनुष टूटने पर आपके सभी भक्त प्रसन्न होंगे। सूरज उगा, अँधेरा व्यर्थ ही नष्ट हो गया। तारे छिप गए, जग रोशन हो गया। हे रघुनाथजी! सूर्य ने अपने उदय के बहाने सभी राजाओं को भगवान (आपकी) महिमा दिखाई है। धनुष तोड़ने की यह विधि आपकी भुजाओं के बल की महिमा प्रकट करने के लिये ही प्रकट हुई है।

भाई की बात सुनकर भगवान मुस्कुराये। तब श्री रामजी, जो स्वभाव से पवित्र थे, शौचादि से निवृत्त होकर स्नान किया और नित्य कर्म करके गुरुजी के पास आये। आकर उसने गुरूजी के सुन्दर कमल चरणों में सिर झुकाया। तब जनकजी ने शतानन्दजी को बुलाया और तुरंत विश्वामित्र मुनि के पास भेज दिया। उन्होंने आकर जनकजी का निवेदन सुनाया। विश्वामित्रजी ने प्रसन्न होकर दोनों भाइयों को बुलाया।

शतानन्दजी के चरण वंदन करके प्रभु श्री रामचन्द्रजी गुरुजी के पास बैठ गये। तब ऋषि ने कहा- हे पिता! चलो जनकजी ने बुलाया है. आइये, चलकर सीताजी का स्वयंवर देखें। देखो परमेश्वर किसकी महिमा करता है। लक्ष्मणजी बोले- हे नाथ! जिस पर आप कृपा करेंगे वही प्रशंसा का पात्र होगा और धनुष तोड़ने का श्रेय भी उसे ही मिलेगा।

इस उत्तम वाणी को सुनकर सभी ऋषि प्रसन्न हुए। सभी ने इसे सुखी एवं धन्य माना। तब दयालु श्री रामचन्द्रजी ऋषियों के समूह सहित धनुष यज्ञशाला देखने गये। जब सारे नगरवासियों ने यह समाचार सुना कि दोनों भाई रंगशाला में आये हैं, तो बच्चे, जवान, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सभी अपना घर-बार भूलकर चले गये। उन सेवकों ने मधुर और नम्र वचन बोलकर अच्छे, मध्यम, नीच और अधम (सभी वर्गों के) स्त्री-पुरुषों को अपने-अपने स्थान पर बैठाया।

उसी समय राजकुमार (राम और लक्ष्मण) वहां आये। वे इतने सुंदर हैं, मानो उनकी सुंदरता ही उनके शरीर पर चमक रही हो। उसका सुंदर सांवला और गोरा शरीर है. वह गुणों का सागर, बुद्धिमान और एक उत्कृष्ट योद्धा है। राजाओं के समाज में वे ऐसे शोभायमान हो रहे हैं, मानो तारों के बीच में दो पूर्ण चन्द्रमा हों। उन्हें अपनी भावना के अनुरूप ही भगवान की मूर्ति के दर्शन हुए।

बड़े-बड़े रणधीर [राजा] श्री रामचन्द्रजी के रूप को ऐसे देख रहे हैं मानो वे स्वयं वीर शरीर धारण किये हुए हों। भगवान को देखकर कुटिल राजा भयभीत हो गया, मानो वह कोई भयानक मूर्ति हो। वहाँ जो राक्षस छलपूर्वक राजाओं के भेष में बैठे थे, उन्होंने भगवान को ऐसे देखा मानो वे काल हों। नगर के निवासी दोनों भाइयों को मनुष्यों के आभूषण तथा नेत्रों को सुख देने वाले समझते थे।

स्त्रियाँ अपनी-अपनी रुचि के अनुसार मन ही मन प्रसन्न होकर उन्हें देख रही हैं। मानो श्रृंगार रस ही अद्वितीय मूर्ति से आपका श्रृंगार कर रहा हो। रहा। भगवान ने विद्वानों को एक विशाल रूप में दर्शन दिए, जिनके कई मुख, हाथ, पैर, आंखें और सिर थे। जनकजी के अपने सगे-संबंधी कैसे प्रभु को प्रिय देखते हैं, जैसे सगे-संबंधी उन्हें प्रिय देखते हैं।

जनक सहित रानियाँ उन्हें अपने बालक के समान देख रही हैं, उनके प्रेम का वर्णन नहीं किया जा सकता। योगियों ने उन्हें शांत, शुद्ध, सम और स्वयं-प्रकाशमान परम तत्व के रूप में देखा। हरि के भक्त दोनों भाइयों को अपने पसंदीदा देवताओं के रूप में देखते थे जो सभी सुख देते हैं। सीताजी जिस प्रेम और प्रसन्नता से श्री रामचन्द्रजी को देख रही हैं, वह शब्दों से परे है।

वह इसे (स्नेह और खुशी) दिल में अनुभव कर रही है, लेकिन वह भी इसे व्यक्त नहीं कर सकती. फिर कोई कवि इसे ऐसा कैसे कह सकता है? इस प्रकार जिसकी जैसी भावना हुई, उसने कोसलधीश श्री रामचन्द्रजी को वैसे ही देखा। सुन्दर वर्ण और गौर शरीर वाला तथा संसार को मोहित करने वाला कोसलधीश का पुत्र राजसमाज में विख्यात हो रहा है।

दोनों मूर्तियाँ अपने स्वभाव से (बिना किसी मेकअप के) मनमोहक हैं। करोड़ों कामदेवों की तुलना भी उनके लिए महत्वहीन है। उनके सुन्दर मुख शरद पूर्णिमा की पूर्णिमा का भी अपमान करने वाले हैं तथा उनके कमल के समान नेत्र मन को अत्यंत प्रसन्न करने वाले हैं। चंचल (झूलती) कुण्डलियाँ हैं। ठुड्डी और होंठ सुन्दर तथा वाणी मधुर होती है।

हँसी चन्द्रमा की किरणों का तिरस्कार करती है। भौहें धनुषाकार तथा नाक सुन्दर है। ऊँचे और चौड़े माथे पर तिलक दिख रहा है (दीप्तिमान हो रहा है)। काले घुंघराले बालों को देखकर भौंरों की पंक्ति भी लज्जित हो जाती है। सिरों पर पीली चौकोर टोपियाँ सजाई जाती हैं, जिनके बीच में फूलों की कलियाँ बनाई जाती हैं (कढ़ाई की जाती हैं)। शाहलू जैसी सुंदर (गोल) गर्दन पर तीन सुंदर रेखाएं हैं, जो तीनों लोकों की सुंदरता की सीमा का संकेत देती प्रतीत होती हैं।

गजमुक्ताओं के सुन्दर कुण्डल और तुलसी की मालाएँ हृदयों को सुशोभित करती हैं। उसके कंधे बेलों के कंधों के समान ऊंचे और मजबूत हैं, उसकी पीठ (खड़े होने की महिमा) शेर की तरह है और उसकी भुजाएं विशाल और ताकत का भंडार हैं। कमर में तरकश और पीताम्बर बाँधा जाता है। दाहिने हाथों में बाण और बायें सुन्दर कन्धे पर धनुष तथा पीला यज्ञोपवीत है। नाखूनों से लेकर बालों तक, शरीर के सभी अंग खूबसूरत हैं, उन पर गजब की खूबसूरती झलकती है।

उसे देख कर सभी लोग खुश हो गये. आँखें स्थिर हैं (पलकें झपकती हैं) और तारे (पुतलियाँ) भी नहीं हिलतीं। जनकजी दोनों भाइयों को देखकर प्रसन्न हुए। फिर उसने जाकर ऋषि के चरण कमल पकड़ लिए। उनसे अनुरोध करके उन्होंने अपनी कहानी बताई और साधु को पूरी रंगशाला (यज्ञशाला) दिखाई। [भिक्षु के साथ] दोनों महान राजकुमार जहां भी जाते हैं, हर कोई उन्हें आश्चर्य से देखने लगता है।

सबने रामजी को अपनी ओर मुख करके देखा; लेकिन इसके बारे में कोई खास रहस्य कोई नहीं जान सका। ऋषि ने राजा से कहा - मंच की रचना बहुत सुन्दर है [विश्वामित्र जैसे निष्कपट, विरक्त और ज्ञानी ऋषि के मुख से रचना की प्रशंसा सुनकर राजा प्रसन्न हुए और उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई। बाकी सभी में से एक व्यक्ति अधिक सुंदर, उज्जवल और बड़ा था। राजा ने स्वयं दोनों भाइयों और ऋषि को उस पर बैठाया।

भगवान को देखकर सभी राजा उसी प्रकार हृदयहीन हो गये (निराश और उत्साहहीन हो गये) जैसे पूर्णिमा के चंद्रमा के निकलने पर तारे प्रकाशहीन हो जाते हैं। उनका तेज देखकर सभी को विश्वास हो गया कि धनुष तो रामचन्द्रजी ही तोड़ेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है।

इधर उनके रूप को देखकर सभी के मन में यह निश्चय हो गया कि शिवजी के विशाल धनुष, जो संभवतः टूट नहीं सकते थे, को तोड़े बिना भी सीताजी श्री रामचन्द्रजी को यश प्रदान कर सकेंगी, अर्थात् हम दोनों प्रकार से पराजित होंगे

और जीत तो रामचन्द्रजी के हाथ ही रहेगी। अरे भइया। ऐसा विचार कर अपनी कीर्ति, कीर्ति, बल और तेज को नष्ट किये बिना अपने-अपने घर चले जाओ।

यह सुनकर अन्य राजा, जो अविवेक के कारण अंधे हो रहे थे और अहंकारी थे, खूब हँसे। [उन्होंने कहा--] धनुष तोड़ने के बाद भी विवाह करना कठिन है (अर्थात हम जानकी को आसानी से नहीं जाने देंगे), फिर इसे तोड़े बिना राजकुमारी से कौन विवाह कर सकता है। चाहे वह मृत्यु ही क्यों न हो, हम सीता के लिये कम से कम एक बार युद्ध में उस पर विजय प्राप्त करेंगे। यह घमंड भरी बात सुनकर दूसरा राजा, जो धार्मिक व्यक्ति, हरिभक्त और बुद्धिमान व्यक्ति था, मुस्कुराया।

[उन्होंने कहा--] राजाओं का अभिमान दूर करके (जिस धनुष को कोई नहीं तोड़ सकता, उसे तोड़कर) श्री रामचन्द्र जी सीता जी से विवाह करेंगे। जहां तक युद्ध की बात है तो महाराज दशरथ के पुत्रों और अन्य के बीच युद्ध में कौन जीत सकता है? व्यर्थ मत मरो. क्या मनके के लड्डू भी भूख मिटा सकते हैं? हमारा परम पवित्र (ईमानदार) उपदेश सुनकर तुम सीताजी को अपनी आत्मा में जगत् की साक्षात् माता मानो (उन्हें पत्नी रूप में पाने की आशा और अभिलाषा त्याग दो)।

और श्रीरघुनाथजी को जगत् का पिता (भगवान्) समझकर उनकी छवि को नेत्र बन्द करके देखो [ऐसा अवसर तुम्हें बार-बार नहीं मिलेगा]। सुन्दर, सुख देने वाले और सर्वगुण संपन्न ये दोनों भाई भगवान शिव के हृदय में निवास करने वाले हैं (जिन्हें स्वयं भगवान शिव सदैव अपने हृदय में छिपाए रखते हैं, वे आपकी आंखों के सामने आ गए हैं)।

तुम निकट आये हुए अमृत के सागर को छोड़कर जगत जननी जानकी को पत्नी रूप में पाने की इच्छा रूपी मिथ्या मृगतृष्णा को देखकर क्यों मर जाते हो? फिर [भाई]. जिसका मन हो, जाकर करे. श्री रामचन्द्रजी के दर्शन करके हमने आज जन्म लेने का फल प्राप्त कर लिया (जीवन और जन्म सफल कर लिया)।

ऐसा कहकर वह भला राजा प्रेम में मग्न हो गया और श्री रामजी के अनुपम रूप का दर्शन करने लगा। मनुष्यों की बात तो छोड़ ही दीजिये, देवता भी आकाश से विमानों पर चढ़कर सुन्दर गीत गाते और फूल बरसाते हुए दिखाई देते हैं। तब उचित अवसर जानकर जनक जी ने सीता जी को बुलाया। सभी चतुर और सुन्दर सहेलियों ने उसे आदर सहित ग्रहण किया।

रूप और गुणों की खान जगज्जननी जानकीजी की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। उनके लिए कविता के सभी रूपक मुझे महत्वहीन लगते हैं; क्योंकि उन्हें सांसारिक स्त्रियों से प्रेम होता है (अर्थात वे सांसारिक स्त्रियों की अज्ञानता से ग्रस्त होते हैं)। , सभी काव्यात्मक उपमाएँ त्रिगुणात्मक, भौतिक जगत से ली गई हैं, उन्हें भगवान की निर्माण शक्ति श्री जानकीजी की अप्राकृतिक, चेतन अग्नि के लिए उपयोग करना, उनका अपमान करना और स्वयं को हास्यास्पद बनाना है।

सीताजी के वर्णन में वैसी ही उपमाएँ देने से किसे बुरा कवि कहा जा सकता है, अर्थात् सीताजी के लिए उन उपमाओं का प्रयोग करना सुकवि का पद खोना और अपयश मोल लेना है, कोई भी सुकवि ऐसी मूर्खतापूर्ण और अनुचित बात नहीं करेगा। यदि सीताजी की तुलना किसी स्त्री से की जाए तो संसार में ऐसी कोई सुन्दर कन्या नहीं है जिसकी तुलना उनसे की जा सके।

पृथ्वी पर स्त्रियों की तो बात ही छोड़ दीजिए, यदि हम देवताओं की स्त्रियों को भी देखें तो वे हमसे कहीं अधिक दिव्य और सुन्दर हैं, और उनमें से सरस्वती तो अत्यंत वाक्मय हैं। पार्वती, अर्ध-नारीश्वर के रूप में, उनका केवल आधा शरीर एक महिला का है, शेष आधा भगवान शिव का है। कामदेव की पत्नी रति अपने पतियों को बिना शरीर के जानकर बहुत दुखी रहती है और जानकीजी को लक्ष्मी कैसे कहा जा सकता है जो विष और शराब के सागर से उत्पन्न होने के कारण उनके प्रिय भाई हैं।

ऊपर उल्लिखित देवी लक्ष्मी खारे सागर से प्रकट हुई थीं, जिसके मंथन के लिए भगवान ने अत्यंत खुरदरी पीठ वाले कछुए का रूप धारण किया था, रस्सियाँ महान विषकर्ता वासुकी नाग ने बनाई थीं, मंथन का कार्य अत्यंत कठिन था मंदराचल पर्वत और सभी देवताओं और दानवों ने मिलकर उसका मंथन किया। ये सभी कुरूप और स्वाभाविक रूप से कठोर उपकरण लक्ष्मी को प्रकट करने के लिए बनाए गए थे, जो अत्यंत सुंदर और अतुलनीय रूप से सुंदर कही जाती हैं।

ऐसे यंत्रों से प्रकट हुई लक्ष्मी श्री जानकीजी की समानता कैसे प्राप्त कर सकती हैं? हाँ, इसके विपरीत, यदि छवि रूप में अमृत का समुद्र है, परम रूप रूप में कछुआ है, सौंदर्य रूप में रस्सी है, शृंगार [वासना] से सुशोभित पर्वत है और स्वयं कामदेव हैं अपने ही कमल पुष्प से [उस समुद्र के जल को] मथता है, तब ऐसी वस्तुओं के संयोग से, जब सौन्दर्य और सुख की उत्पत्ति करने वाली लक्ष्मी उत्पन्न होती है, तब भी कवि उसे [बड़े संकोच से] झिझकते हुए कहते हैं। सीताजी.

कामदेव जिस सौन्दर्य सागर का मंथन करेंगे वह नैसर्गिक, सांसारिक सौन्दर्य भी होगा; क्योंकि कामदेव स्वयं त्रिगुणात्मक प्रकृति के विकार हैं। अत: उस सौन्दर्य के मंथन से प्रकट हुई लक्ष्मी उपर्युक्त लक्ष्मी से भी अधिक सुन्दर और दिव्य होगी, परन्तु फिर भी स्वाभाविक होगी, अत: जानकीजी की तुलना उनसे करना भी कवि के लिए बड़ी झिझक की बात होगी। जिस सौन्दर्य से जानकीजी की दिव्य परम दिव्य मूर्ति बनी है, वह सौन्दर्य ऊपर वर्णित सौन्दर्य से भिन्न अप्राकृतिक है - वस्तुतः यह भी लक्ष्मीजी का ही अप्राकृतिक स्वरूप है।

वह कामदेव के दिमाग में नहीं आ सकती और वह जानकी का रूप है, इसलिए उससे अलग नहीं है, और उसकी तुलना एक अलग चीज से की जाती है। इसके अलावा जानकीजी स्वयं अपनी महिमा में प्रकट हुई हैं, उन्हें प्रकट करने के लिए किसी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं है। अर्थात् शक्ति शक्तिमान् से अभिन्न है, एक अद्वैत तत्त्व है, अत: अतुलनीय है, इस गहन दार्शनिक सिद्धांत को भक्त शिरोमणि कवि ने इस अभूतोपमाल्दार के माध्यम से बहुत सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है।

बुद्धिमान सखियाँ सीताजी को साथ ले गईं और सुन्दर स्वर में गीत गाने लगीं। सीताजी के सुन्दर शरीर पर सुन्दर साड़ी सुशोभित है। जगज्जननी की महान छवि अतुलनीय है। सभी आभूषण अपनी जगह पर हैं, जिन्हें दोस्तों ने अच्छे से सजाया और पहनाया है. जब सीताजी ने मंच पर कदम रखा, तो सभी पुरुष और महिलाएं उनका [दिव्य] रूप देखकर मंत्रमुग्ध हो गए।

देवताओं ने आनन्द मनाया, ढोल बजाये, फूल बरसाये और अप्सराएँ गाने लगीं। सीताजी के कमल पुष्प की माला सुशोभित है। सभी राजा आश्चर्यचकित होकर अचानक उसकी ओर देखने लगे। सीताजी आश्चर्य से श्री रामजी की ओर देखने लगीं, तब सभी राजा मोहित हो गये। जब सीताजी ने दोनों भाइयों को मुनि के पास [बैठा हुआ] देखा तो उनकी दृष्टि अपने खजाने की ओर आकर्षित हो गयी और उधर (श्री रामजी की ओर) चली गयी।

परंतु गुरुजनों की लज्जा और विशाल समाज को देखकर सीताजी लज्जित हुईं। उन्होंने श्री रामचन्द्र जी को हृदय में ला लिया और अपनी सखियों की ओर देखने लगीं। श्री रामचन्द्रजी का रूप और सीताजी की छवि देखकर स्त्री-पुरुषों की पलकें झपकना बंद हो गईं (सभी एकटक उनकी ओर देखने लगे)। मन में तो सब सोचते हैं, लेकिन कहने से कतराते हैं। अपने मन में वे सृष्टिकर्ता से प्रार्थना करते हैं। ताकि राजा बिना सोचे-समझे अपनी प्रतिज्ञा छोड़कर सीताजी का विवाह रामजी से कर दें।

दुनिया उनके बारे में अच्छी बातें ही कहेगी क्योंकि ये हर किसी को पसंद है.' ज़िद्दी होने से आख़िर में आपका दिल भी जलेगा. सभी लोग इसी इच्छा में डूबे हुए हैं कि यह साँवला रंग वाला व्यक्ति ही जानकीजी के लिए उपयुक्त वर है। तब राजा जनक ने वंदिजनों को बुलाया। वे विरुदावली (वंश की महिमा) गाते हुए आये। राजा ने कहा--जाओ और सबको मेरी प्रतिज्ञा के बारे में बताओ। भाट चले, उनके हृदय में हर्ष कम न था।

भाटों ने उत्तम वचन कहे - हे पृथ्वी का पालन करने वाले समस्त राजाओं! सुनना। हम अपनी भुजाएँ उठाकर जनकजी से एक बड़ी प्रतिज्ञा करते हैं- राजाओं की भुजाओं का बल चन्द्रमा है, शिवजी का धनुष राहु है, वह भारी और कठोर है, यह बात सभी जानते हैं। महान योद्धा रावण और बाणासुर ने इस धनुष को देखा और चुपचाप चले गए (इसे उठाना तो दूर, उन्हें छूने की भी हिम्मत नहीं हुई)।

आज इस राजसमाज में जो कोई भी तीनों लोकों की विजय के साथ-साथ भगवान शिव के कठोर धनुष को तोड़ देगा, जानकी जी बिना सोचे-समझे उसी को चुन लेंगी। प्रतिज्ञा सुनकर सभी राजा उत्साहित हो गये। जिनको अपनी वीरता पर बड़ा अभिमान था। अकुला कमर कस कर उठा और अपने देवताओं को सिर झुकाकर चल दिया।

वे शिवजी के धनुष को बड़ी तीव्रता से देखते हैं और फिर टकटकी लगाकर उसे पकड़ लेते हैं, लाख तरह से बल लगाते हैं, लेकिन वह उठता नहीं है। जिन राजाओं के मन में विवेक होता है वे राजा धनुष के पास भी नहीं जाते। वे मूर्ख राजा झिझकते हुए धनुष को पकड़ लेते हैं, परन्तु जब वह नहीं उठता तो लज्जित होकर चले जाते हैं, मानो वीर भुजाओं के बल से धनुष और भी भारी होता जा रहा हो।

तब दस हजार राजा एक साथ धनुष उठाने लगे, फिर भी वह उनसे बच न सका। जिस प्रकार सात्विक मन कभी कामी मनुष्य की बातों से विचलित नहीं होता, उसी प्रकार भगवान शिव का वह धनुष कैसे नहीं डगमगाया? सभी राजा उपहास के पात्र बन गये। जिस प्रकार त्याग रहित साधु उपहास का पात्र बन जाता है। प्रसिद्धि, विजय, महान वीरता - ये सब कुछ उसने धनुष के हाथों खो दिया।

राजा दुखी हो गये और अपने-अपने समाज में लौट गये। राजाओं को असफल होते देखकर जनक अकुला उठे और क्रोध में डूबे हुए वचन बोले। परंतु ऐसा लगता है मानो ब्रह्मा ने किसी को बनाया ही नहीं जो धनुष तोड़कर सुंदर कन्या, महान विजय और अत्यंत सुंदर यश प्राप्त करे। मुझे बताओ, यह लाभ किसे

पसंद नहीं है? परंतु किसी ने भी शंकरजी को धनुष नहीं चढ़ाया। अरे भाई! चढ़ाने या तोड़ने की बात तो छोड़िए, एक इंच जमीन भी कोई मुक्त नहीं करा सका।

अब वीरता पर गर्व करने वाले किसी को गुस्सा नहीं आना चाहिए. मुझे एहसास हुआ कि पृथ्वी वीरों से खाली है। अब आशा छोड़ दो और अपने घर जाओ; ब्रह्मा ने सीता के विवाह के बारे में नहीं लिखा। यदि मैं अपना व्रत छोड़ दूं, तो मेरा पुण्य चला जाता है; इसलिए मैं क्या करूं लड़की कुंवारी ही रह जाए. यदि मुझे मालूम होता कि पृथ्वी वीरों से शून्य है तो मैं यह प्रतिज्ञा करके उपहास का पात्र न बनता।

जनक की बात सुनकर सभी स्त्री-पुरुष जानकी की ओर देखने लगे और दुःखी हो गये, परन्तु लक्ष्मणजी की तमतमा गयी, भौंहें सिकुड़ गयीं, होंठ काँपने लगे और आँखें क्रोध से लाल हो गयीं। श्री रघुवीरजी के डर से वे कुछ नहीं कह सके, लेकिन जनक की बातें उन्हें तीर की तरह लगीं। [जब उससे सहन न हुआ] तो उसने श्री रामचन्द्रजी के चरणकमलों में सिर झुकाया और सत्य वचन बोले---

जहाँ भी रघुवंशियों में से कोई भी उपस्थित होता है, उस समाज में कोई भी ऐसे अनुचित शब्द नहीं बोलता जैसा कि जनक जी ने रघुकुल शिरोमणि श्री रामजी की उपस्थिति को जानकर भी कहा है। हे कमलरूपी सूर्य कुल के सूर्य! सुनो, मैं यह स्वाभाविक रूप से कहता हूं, किसी अहंकार से नहीं, यदि मुझे आपकी अनुमति मिल जाए, तो मैं ब्रह्मांड को गेंद की तरह उठा लूंगा।

और कच्चे घड़े की तरह तोड़ डालो. मैं सुमेरु पर्वत को मूली की तरह तोड़ सकता हूँ, हे प्रभु! आपकी महिमा की तुलना में इस बेचारे पुराने धनुष की क्या कीमत है? यह जानकर हे प्रभु! अगर इजाज़त हो तो मैं कुछ खेल खेलूंगा, वो भी देख लेना. मैं कमल की डंडी की भाँति धनुष पर चढ़ूँगा और उसे लेकर योजन तक चलूँगा।

हे नाथ! आपके प्रताप से मैं धनुष को कुकुरमुत्ते (बरसाती छत्ता) की भाँति तोड़ सकता हूँ। यदि ऐसा नहीं है. यदि मैं ऐसा करता हूं, तो मैं भगवान के चरणों की शपथ लेता हूं कि मैं फिर कभी धनुष या तरकश नहीं उठाऊंगा। जैसे ही लक्ष्मणजी ने क्रोध भरे शब्द कहे, पृथ्वी हिल गई और दिशाओं के हाथी कांपने लगे। सारी प्रजा और सारे राजा भयभीत हो गये। सीताजी के हृदय में हर्ष हुआ और जनकजी घबरा गये।

गुरु विश्वामित्रजी, श्रीरघुनाथजी तथा सभी ऋषि मन में प्रसन्न हुए और बार-बार उत्साहित होने लगे। श्री रामचरजी ने इशारे से लक्ष्मण को मना किया और प्रेम

से अपने पास बैठाया। गुरु के वचन सुनकर श्रीराम ने उनके चरणों में सिर झुका दिया। उसके हृदय में न तो खुशी थी और न ही उदासी; और वह स्वाभाविक रूप से उठ खड़ा हुआ, और अपने अहंकार से युवा सिंह को भी लज्जित कर दिया।

जैसे ही दोपहर के समय बाल रूपी रघुनाथजी सूर्य उदय हुए, सभी संत रूपी कमल खिल गये और नेत्र रूपी प्रभात प्रसन्न हो गये। राजाओं की आशा की रात्रि नष्ट हो गई। उसके शब्द रूपी तारों का समूह चमकना बंद हो गया। वह मौन हो गया। घमंडी राजा-जैसे लिली सिकुड़ गईं और धोखेबाज राजा-जैसे उल्लू छिप गए।

ऋषि और देवता चकवे शोक मुक्त हो गये। वे फूल बरसाकर अपनी सेवा का इजहार कर रहे हैं. प्रेम से गुरु के चरणों की वन्दना करके श्री रामचन्द्रजी ने ऋषियों से अनुमति मांगी। सम्पूर्ण जगत के स्वामी श्री रामजी सुन्दर और मदमस्त हाथी की चाल से स्वाभाविक गति करते थे। श्री रामचन्द्रजी के चलते ही नगर के सभी स्त्री-पुरुष प्रसन्न हो गये और उनके शरीर में रोमांस भर गया।

उन्होंने अपने पूर्वजों तथा देवताओं की पूजा की तथा उनके गुणों का स्मरण किया। यदि हमारे सद्गुणों का कोई प्रभाव पड़ता है तो हे गणेश गोसाईं! रामचन्द्रजी भगवान शिव के धनुष को कमल की नाल के समान तोड़ दें। श्री रामचन्द्र जी को प्रेम से देखकर और सखियों के पास बुलाकर सीता जी ने प्रेम से (शोक के समान) ये वचन कहे -

हाय दोस्त! हमारे ये तथाकथित शुभचिंतक भी शो के दर्शक हैं. उनके गुरु विश्वामित्रजी को कोई नहीं समझाता कि वे (रामजी) बालक हैं, ऐसी जिद उनके लिए अच्छी है। नहीं, जिस धनुष को रावण जैसे विश्वविजयी वीर और उसके बाण हिला भी नहीं सकते थे, उस धनुष को तोड़ने के लिए ऋषि विश्वामित्र की रामजी को अनुमति देना और रामजी द्वारा उसे तोड़ने की चाल रानी को जिद्दी लगी, इसलिए वह कहने लगी कि कोई समझाता भी नहीं। गुरु विश्वामित्रजी को.

जिस धनुष को रावण और बाणासुर नहीं छू पाते थे और जिस धनुष को सभी राजा घमंड के कारण हार जाते थे, वही धनुष इस युवा राजकुमार के हाथ में दे रहा है। क्या हंसते हुए बच्चे भी कहीं मंदराचल पर्वत उठा सकते हैं? और चाहे कोई समझाए या न समझाए, राजा बहुत बुद्धिमान और ज्ञानी है, उसे गुरु को समझाने की कोशिश करनी चाहिए थी, लेकिन लगता है कि राजा की भी सारी बुद्धि खत्म हो गई है।

हाय दोस्त! रानी यह कहकर चुप हो गयी कि विधाता की गति का पता नहीं चलता। तब एक चतुर (रामजी के महत्त्व को जानने वाली) सखी ने कोमल स्वर में कहा- हे रानी! यदि कोई तेजस्वी व्यक्ति दिखने में छोटा भी हो तो भी उसे छोटा नहीं समझना चाहिए। जिस मंत्र के वश में ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा सभी देवता हों वह अत्यंत संक्षिप्त होता है। एक छोटी सी लगाम महान शराबी गजराज को नियंत्रित करती है।

कामदेव ने फूलों से बने धनुष और बाण से सभी लोकों को अपने वश में कर लिया है। हे देवी! यह जानकर अपना संदेह त्याग दो। हे रानी! सुनो, रामचन्द्रजी धनुष अवश्य तोड़ेंगे। सखी की बातें सुनकर रानी को (श्री रामजी की शक्ति का) विश्वास हो गया। उनका क्रोध नष्ट हो गया और श्री रामजी के प्रति उनका प्रेम अत्यंत बढ़ गया। उस समय सीताजी श्री रामचन्द्रजी को देखकर भयभीत मन से विभिन्न देवताओं की प्रार्थना कर रही थीं।

वह व्याकुल होकर मन में प्रसन्न हो रही है- हे महेश भवानी! मुझ पर प्रसन्न हो जाओ, मैंने तुम्हारी जो सेवा की है उसे सफल करो और मुझ पर प्रेम करके धनुष का भारीपन दूर कर दो। हे गणों के नेता, भगवान गणेश, आशीर्वाद के दाता! मैंने आज के लिए आपकी सेवा की। मेरी बार-बार विनती सुनकर धनुष का भारीपन बहुत हद तक कम कर दीजिये।

सीताजी धैर्यपूर्वक श्रीरघुनाथजी की ओर देखकर देवताओं को मना रही हैं। उसकी आँखें प्रेम के आँसुओं से और शरीर उत्साह से भर गया। भरी आँखों से श्री रामजी की सुन्दरता को देखकर और फिर अपने पिता के वचन को याद करके सीताजी के मन में क्रोध आ गया। वह मन में कहने लगी-ओह! पापा बहुत जिद्दी हैं और नफा-नुकसान नहीं समझते.

मंत्री डरे हुए हैं; इसलिये उन्हें कोई पढ़ाता भी नहीं, विद्वानों की सभा में यह बात अत्यन्त अनुचित हो रही है। कहाँ तो अपने भार से भी अधिक कठोर धनुष है और कहाँ यह कोमल शरीर वाला किशोर श्यामसुन्दर है। वह निर्माता है! मैं अपने दिल में और सिर में फूल लेकर कैसे धैर्यवान रह सकता हूँ? हीरा कहीं छेदा हुआ है. सारी सभा की बुद्धि भोली हो गई है, अत: हे शिव धनुष! अब मेरे पास केवल तुम पर ही भरोसा है।

आप लोगों पर अपनी जड़ता डालकर श्रीरघुनाथजी के कोमल शरीर को देखकर हल्के हो जाते हैं। इस प्रकार सीताजी मन ही मन बहुत दुःखी हो रही हैं। निमेष का एक प्रेम (अंश) भी कितने युगों की तरह बीत रहा है। भगवान श्रीरामचन्द्रजी

को देखकर और फिर पृथ्वी की ओर देखकर सीताजी की चंचल आँखें ऐसी चमक रही थीं, मानो चन्द्रमा के घेरे में कामदेव की दो मछलियाँ खेल रही हों।

सीताजी की वाणी रूपी माया को उनके मुख रूपी कमल ने रोक दिया है। रात को लज्जा के रूप में देखकर वह प्रकट नहीं हो पाती। आंखों में पानी आंख के कोने में ही रहता है। जैसे बहुत भारी कंजूस का सोना एक कोने में दबा रहता है।

उसकी बढ़ी हुई व्याकुलता को जानकर सीताजी झिझकने लगीं और धैर्य रखकर उनके हृदय में यह विश्वास हो गया कि तन, मन और वचन से मेरा व्रत सत्य है और मेरा मन सचमुच श्री रघुनाथजी के चरणकमलों में लगा हुआ है। तब सबके हृदय में निवास करने वाले भगवान मुझे अवश्य ही रघुश्रेष्ठ श्री रामचन्द्रजी की दासी बनायेंगे। जिसे सच्चा प्यार होता है उसे वह जरूर मिलता है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

प्रभु की ओर देखते हुए सीता जी ने अपने शरीर से प्रेम करने का निश्चय किया (अर्थात् यह निर्णय लिया कि यह शरीर उनका रहेगा या रहेगा ही नहीं)। श्री राम जी की कृपा से सब पता चल गया। सीताजी को देखकर उन्होंने धनुष की ओर उसी प्रकार देखा, जैसे गरुड़जी छोटे सर्प की ओर देखते हैं। इधर जब लक्ष्मण जी ने देखा कि रघुकुलमणि श्री रामचन्द्र जी शिव के धनुष की ओर देख रहे हैं, तो वे रोमांचित हो गये और ब्रह्माण्ड को पैरों से दबाकर ये शब्द बोले-

हे दिग्गजों! हे कछुए! हे शेष! हे वराह! धैर्य रखो और पृथ्वी को पकड़ो ताकि वह हिले नहीं। श्री रामचन्द्रजी शिवजी का धनुष तोड़ना चाहते हैं। मेरी आज्ञा सुनकर सब लोग सावधान हो जाना। जब श्री रामचन्द्रजी धनुष के पास आये तो सभी स्त्री-पुरुषों ने देवताओं और उनके गुणों की प्रशंसा की। सबका संदेह और अज्ञान, नीच राजाओं का अभिमान,

परशुरामजी के अभिमान की गंभीरता, देवताओं और महर्षियों की कायरता (भय), सीताजी के विचार, जनक का पश्चाताप और रानियों का घोर दुःख, इन सभी को भगवान शिव के धनुष के रूप में बड़ा जहाज मिला , एक सोसायटी बनाई और उसमें शामिल हो गए। वे श्री रामचन्द्रजी की भुजाओं के बल रूपी विशाल समुद्र को पार करना चाहते हैं, परन्तु कोई नाविक नहीं है।

श्रीरामजी ने सभी लोगों की ओर देखा और चित्र में लिखे अनुसार देखा, फिर श्रीगमजी ने सीताजी की ओर देखा तो उन्हें विशेष रूप से व्यथित पाया। यदि सारी फसलें सूख जाएँ तो वर्षा का क्या लाभ? समय बीत जाने पर पछताने से

क्या लाभ? यह समझकर श्री रामजी ने जानकीजी की ओर देखा और उनके प्रति अपने विशेष प्रेम का वृत्तान्त लिखकर रोमांचित हो गये।

उसने मन ही मन गुरु को प्रणाम किया और झट से धनुष उठा लिया। जब वह [हाथ में | फिर वह धनुष बिजली की भाँति चमका और फिर आकाश में वृत्त-सदृश बन गया। किसी ने उसे बलपूर्वक धनुष उठाते और खींचते नहीं देखा (अर्थात् ये तीनों कार्य इतनी शीघ्रता से किये गये कि किसी को पता ही नहीं चला कि धनुष कब उठा, कब चढ़ा और कब खींचा गया); सब लोग। देखा कि श्रीरामजी धनुष ताने हुए खड़े हैं। उसी क्षण श्रीराम ने धनुष को बीच से ही तोड़ दिया। भयानक कठोर ध्वनि से [सभी] लोग भयभीत हो गये।

[सभी] लोक उग्र, कठोर शब्दों से भर गए, सूर्य के घोड़े पथ से हटने लगे। दैत्य चिल्लाने लगे, पृथ्वी हिलने लगी, शेष, वराह और कछुआ भयभीत हो गये। देवता, दानव और ऋषि-मुनि सभी अपने-अपने कानों पर हाथ रखकर चिंतित होकर सोचने लगे। तुलसीदासजी कहते हैं; [जब सबको विश्वास हो गया कि] श्री राम ने धनुष तोड़ दिया है, तब सब लोग 'श्री रामचन्द्रजी की जय' बोलने लगे।

शिवजी का धनुष जहाज है और श्री रामचन्द्रजी की भुजाओं का बल समुद्र है। [धनुष टूटने से सारा समाज, जो पहले भ्रमवश इस जहाज पर चढ़ गया था, डूब गया, जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है। भगवान ने धनुष के दोनों टुकड़े पृथ्वी पर रख दिये। यह देखकर सभी खुश हो गये. विश्वामित्र के पवित्र महासागर में, जो प्रेम के सुंदर और अनंत जल से भरा हुआ है।

रामरूपी पूर्णिमा के चंद्रमा को देखकर पुलकावलीरूपी भारी लहरें बढ़ने लगीं। आकाश में जोर-जोर से ढोल बजने लगे और देवी-देवता नाचने-गाने लगे। ब्रह्मा आदि देवता, सिद्ध और मुनि भगवान की स्तुति कर रहे हैं और आशीर्वाद दे रहे हैं। वे रंग-बिरंगे फूलों और मालाओं की वर्षा कर रहे हैं। किन्नर रसीले गीत गा रहे हैं. ब्रह्माण्ड में जय-जयकार की ध्वनि फैल गई, जिसमें धनुष टूटने की आवाज भी नहीं दिखाई दे रही थी। सर्वत्र नर-नारी हर्ष के साथ कह रहे हैं कि श्री रामचन्द्रजी ने भगवान शिव का भारी धनुष तोड़ दिया है।

बुद्धिमान लोग, भाट, मगध और सूत लोग विरुदावली (कीर्ति) की प्रशंसा कर रहे हैं। हर कोई घोड़े, हाथी, धन, रत्न और वस्त्र अर्पित कर रहा है। झाँझ, मृदंग, शहनाई, भेरी, ढोल और मधुर नगाड़े आदि अनेक प्रकार के सुन्दर वाद्य बज रहे हैं। हर जगह लड़कियाँ मद्राल गीत गा रही हैं। रानी अपनी सहेलियों सहित बहुत प्रसन्न हुई. मानो सूखते धान पर पानी गिर गया हो. जनकजी को विचारों के

त्याग से सुख की प्राप्ति | मानो तैरते-तैरते थके हुए आदमी को थाह मिल गई हो।

धनुष टूटने पर राजा दिन के दीपक की शोभा के समान फीके हो गये। सीताजी के सुख का वर्णन कैसे किया जाय; मानो चटकी स्वातिका को पानी मिल गया हो। लक्ष्मणजी भृरामजी को कैसे देख रहे हैं, मानो चकोर का बालक चंद्रमा को देख रहा हो। तब शतानन्दजी ने अनुमति दे दी और सीताजी श्री रामजी के पास चली गईं।

सखियों के बीच सीताजी कितनी सुन्दर लग रही हैं; मानो अनेक छवियों के बीच एक महान छवि हो. करकमल में एक सुन्दर माला है, जिसमें विश्वविजय का गौरव झलकता है। सीताजी के शरीर में संकोच है, परन्तु मन में अपार उत्साह है। उनके इस राज़दार प्यार को कोई नहीं समझ पाता है. निकट जाकर श्री रामजी का सौंदर्य देखा तो राजकुमारी सीताजी ऐसी रह गईं, मानो चित्र में हों।

यह हालत देखकर चतुर लड़की ने समझाते हुए कहा-सुहावनी माला पहनाओ। यह सुनकर सीताजी ने दोनों हाथों से माला उठा ली, परंतु प्रेम की विवशता के कारण उन्होंने उसे पहना नहीं। [उस समय उनके हाथ ऐसे सुशोभित हो रहे थे मानो डण्ठल वाले दो कमल भयभीत होकर चन्द्रमा को माला अर्पित कर रहे हों। इस तस्वीर को देखकर दोस्त गाना गाने लगे. तब सीता जी ने श्री राम जी के गले में वरमाला डाल दी।

श्रीरघुनाथजी के हृदय पर माला देखकर देवता पुष्पवर्षा करने लगे॥ सभी राजा ऐसे सिकुड़ गये जैसे सूर्य को देखकर कुमुदिनी का समूह सिकुड़ गया हो। नगर और आकाश में संगीत बजने लगा। दुष्ट लोग दुःखी हो गये और अच्छे लोग सुखी हो गये। देवता, किन्नर, मनुष्य, नाग और भिक्षुगण जय-जयकार कर रहे हैं और आशीर्वाद दे रहे हैं।

देवताओं की स्त्रियाँ नाचती और गाती हैं। मेरे हाथों से बार-बार फूलों की डंडियाँ गिर रही हैं। सर्वत्र ब्राह्मण वेदों का पाठ कर रहे हैं और भाट लोग विरुदावली (कुलकीर्ति) का पाठ कर रहे हैं। श्री रामचड्ढाजी ने धनुष तोड़ दिया, यह यश पृथ्वी, पाताल और खड़ग तीनों लोकों में फैल गया। और सीताजी को चुना. नगर के स्त्री-पुरुष आरती कर रहे हैं और अपना धन (प्रतिष्ठा) (अपनी सामर्थ्य से कहीं अधिक) अर्पित कर रहे हैं।

श्रीसीता और रामजी की जोड़ी ऐसी सुन्दर लग रही है मानो सौन्दर्य और सौन्दर्य एक साथ मिल गये हों। मित्र कह रहे हैं--साइट! प्रभु के चरण छुओ; परन्तु

सीताजी बहुत डर गयीं और उनके चरण नहीं छुये। गौतमजी की पत्नी अहल्या के व्यवहार को याद करके सीताजी श्री रामजी के चरणों को अपने हाथों से नहीं छू रही हैं। सीताजी का अलौकिक प्रेम जानकर रघुकुलमणि श्री रामचन्द्रजी मन में हँसे।

उस समय कुछ राजा सीताजी को देखकर ललचा गये। वे दुष्ट, शरारती और मूर्ख लोग मन में बहुत क्रोधित थे। वे अभागे उठे, कवच पहने और जहाँ-तहाँ नाचने लगे। कहते हैं, सीता को छीन लो और दोनों राजकुमारों को पकड़कर बाँध दो। केवल धनुष तोड़ने से इच्छा पूरी नहीं होगी, हमारे रहते राजकुमारी से कौन विवाह कर सकता है?

अरे! धनुष के साथ ही आपका बल, ऐश्वर्य, शौर्य, कीर्ति और प्रतिष्ठा सब नष्ट हो गये हैं। वह तो बहादुरी थी, अब यह तुम्हें कहाँ से मिली? तुम्हारी बुद्धि इतनी ख़राब है, तभी तो विधाता ने तुम्हारे मुँह में कालिख पोत दी है। ईर्ष्या, अहंकार और क्रोध को छोड़कर श्री रामजी की छवि को भरी आँखों से देखो। लक्ष्मण के क्रोध को प्रचण्ड अग्नि समझकर उसमें पतंगा मत बनो। जैसे कौआ गरुड़ का भाग चाहता है, खरगोश सिंह का भाग चाहता है, जो बिना कारण क्रोध करता है वह अपना कल्याण चाहता है, जो भगवान शिव का विरोध करता है वह सभी प्रकार की संपत्ति चाहता है।

यदि कोई लोभी या लालची व्यक्ति सुंदर प्रसिद्धि चाहता है, तो एक कामी व्यक्ति क्या हासिल कर सकता है? और जिस प्रकार श्रीहरि के चरणों से विमुख हुआ मनुष्य परम मोक्ष चाहता है, उसी प्रकार हे राजाओं! सीता के प्रति तुम्हारा लोभ भी उतना ही व्यर्थ है। शोर सुनकर सीताजी को संदेह हुआ। फिर सखियाँ उन्हें वहाँ ले गईं जहाँ रानी (सीताजी की माँ) थीं। श्री रामचन्द्रजी मन में सीताजी के प्रति प्रेम प्रकट करते हुए सहज चाल से गुरुजी की ओर चले।

दुष्ट राजाओं के बुरे वचन सुनकर रानियों सहित सीताजी इस विचार के वश में हो जाती हैं कि न जाने विधाता अब क्या करने जा रहे हैं। राजाओं की बातें सुनकर लक्ष्मणजी ने इधर-उधर देखा; परन्तु श्रीरामचन्द्रजी के भय से कुछ कह नहीं सकते। उनकी आंखें लाल हो गईं और भौंहें झुक गईं और वे क्रोध से राजाओं की ओर देखने लगे; ऐसा लग रहा था मानों शेर का बच्चा मतवाले हाथियों के समूह को देखकर उत्तेजित हो गया हो।

हंगामा देखकर जनकपुर की स्त्रियाँ व्याकुल हो गईं और मिलकर राजाओं को गालियाँ देने लगीं। भगवान शिव के धनुष के टूटने की बात सुनकर भृगुकुल में कमल का रूप धारण करके सूर्य परशुराम आये। उन्हें देखकर सभी राजा

भयभीत हो गये, मानो बाज के झपट्टा मारने से बटेर छिप गये हों। गोरे शरीर पर विभूति (राख) शोभा दे रही है और विशाल मस्तक पर त्रिपुण्ड विशेष शोभा दे रहा है।

सिर पर उलझे हुए बाल हैं, सुन्दर मुख चन्द्रा के क्रोध से कुछ लाल हो गया है। भौहें झुकी हुई हैं और आँखें क्रोध से लाल हैं। यूं ही देखने पर भी ऐसा लगता है जैसे आप गुस्से में हैं. बेल के समान (ऊँचे और मजबूत) कंधे होते हैं; छाती और भुजाएँ विशाल हैं। उन्होंने सुन्दर यज्ञोपवीत माला, माला तथा मृगचर्म धारण कर रखा है। उनकी कमर पर ऋषि का वस्त्र (वल्कल) और दो तरकश बंधे हुए हैं। उनके हाथ में धनुष-बाण और सुंदर कंधे पर कुल्हाड़ी है।

परशुरामजी का भयानक रूप देखकर सभी राजा भयभीत होकर उठ खड़े हुए और पिता सहित सभी लोग उनका नाम लेकर साष्टांग प्रणाम करने लगे। परशुरामजी सोचते हैं कि मैं अपना हित समझकर भी जिस किसी की ओर सहज दृष्टि से देख लेता हूँ, उसे ऐसा लगता है मानो उसका जीवन समाप्त हो गया। तभी जनकजी आये और सिर झुकाकर सीताजी को बुलाया और प्रणाम किया।

परशुरामजी ने सीताजी को आशीर्वाद दिया। मित्र प्रसन्न हो गये और (अब वहाँ रुकना उचित न समझा) उन बुद्धिमान मित्रों ने उन्हें अपने समूह में ले लिया। तभी विश्वामित्र जी आये और दोनों भाइयों से मिले और उन्हें अपने चरण कमलों में गिरा दिया। [विश्वामित्रजी ने कहा--] ये राम और लक्ष्मण राजा दशरथ के पुत्र हैं। उनकी सुन्दर जोड़ी को देखकर परशुरामजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। कामदेव को नशे से मुक्त करने वाले श्री रामचन्द्रजी के विराट रूप को देखकर उनकी आँखें थक (स्तब्ध) हो रही थीं।

तब जनकजी ने सब कुछ देखकर और सब कुछ जानकर भी, मानो कोई अजनबी हो, पूछा, "बताओ, यह विशाल भीड़ कैसी है?" उसके शरीर में क्रोध भर गया। राजा जनक ने सारा समाचार सुनाया जिससे सब राजा आये थे। जनक की बात सुनकर परशुराम जी ने मुड़कर दूसरी ओर देखा तो उन्हें धनुष के टुकड़े पृथ्वी पर पड़े हुए दिखाई दिये।

वह अत्यन्त क्रोध में भरकर कठोर वचन बोला-हे मूर्ख पिता! बताओ धनुष किसने तोड़ा? उसे जल्दी दिखाओ, नहीं तो मूर्ख! जहाँ तक तेरा राज्य है, आज मैं उसकी पृथ्वी उलट दूँगा। राजाओं को अत्यंत भय लगा, जिसके कारण उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। यह देखकर कुटिल राजा मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ। देवता, ऋषि, नाग और नगर के नर-नारी सभी सोचने लगे, सबके हृदय में बड़ा भय हो गया है।

सीताजी की माता मन में पछता रही हैं कि हाय! विधाता ने अब बनी-बनाई चीज़ को ख़राब कर दिया है. परशुरामजी का स्वभाव सुनकर सीताजी को आधा क्षण भी कल्प के समान प्रतीत हुआ। तब श्री रामचन्द्रजी ने सब लोगों को भयभीत देखकर और सीताजी को भयभीत देखकर कहा- उनके हृदय में न हर्ष था, न दुःख था- हे प्रभु! वह अवश्य ही आपके सेवकों में से कोई होगा जो भगवान शिव के धनुष को तोड़ सके। क्या आदेश है, तुम मुझे बताते क्यों नहीं? यह सुनकर क्रोधित ऋषि ने गुस्से से कहा -

नौकर वह है जो नौकर का काम करता है। दुश्मन के लिए काम करके लड़ना चाहिए. हे राम सुनो, जिसने भगवान शिव का धनुष तोड़ा है वह सहस्त्रबाहु के समान मेरा शत्रु है। हे गोसाईं! बचपन में हमने बहुत धनुष तोड़े थे। लेकिन तुम्हें कभी इस तरह गुस्सा नहीं आया. इस धनुष से इतना प्रेम क्यों है? यह सुनकर भृगुवंश के ध्वजवाहक परशुरामजी क्रोधित होकर बोले।

हे राजपुत्र! काल के वश में होने के कारण तुम्हें बोलने में कोई अक्ल नहीं रहती। क्या दुनिया भर में मशहूर भगवान शिव का यह धनुष भी वैसा ही है? लक्ष्मणजी हंसकर बोले- हे भगवन्! सुनो, हमारे हृदय में सभी धनुष एक समान हैं। पुराना धनुष तोड़ने से क्या लाभ या हानि? श्रीरामचन्द्र जी ने इसे नवीन के धोखे के रूप में देखा था।

फिर वह छूते ही टूट गया, इसमें रघुनाथजी का भी कोई दोष नहीं है। मुनि! आप अकारण क्रोध क्यों करते हैं? परशुरामजी ने अपने फरसे की ओर देखकर कहा- दुष्ट! तुमने मेरे स्वभाव की बात नहीं मानी। मैं तुम्हें यह जानकर नहीं मारता कि तुम बच्चे हो। अरे मूर्ख ! क्या आप मुझे केवल एक शुद्ध ऋषि के रूप में ही जानते हैं? मैं ब्रह्मचारी हूं और बहुत क्रोधी हूं. मैं क्षत्रिय कुल के शत्रु के रूप में संसार भर में प्रसिद्ध हूँ।

मैंने अपनी भुजाओं के बल से पृथ्वी को राजाओं से रहित कर अनेक बार ब्राह्मणों को दे दिया। हे राजकुमार! त्रिभुजों को काटने वाले मेरे इस फरसे को देखो! हे राजा के बच्चे! अपने माता-पिता के बारे में सोचकर उन पर नियंत्रण न रखें। मेरी कुल्हाड़ी बहुत भयानक है. जी हाँ, यह गर्भ में पल रहे बच्चों को भी नष्ट करने वाला है.

लक्ष्मणजी हँसे और कोमल स्वर में बोले- अरे, मुनिधेश्वर तो अपने को बड़ा योद्धा समझते हैं। वे मुझे बार-बार कुल्हाड़ी दिखाते हैं। पहाड़ों को उड़ा देना चाहते हैं. यहाँ कोई कद्दू का बीज (छोटा कच्चा फल) नहीं है, जो तर्जनी (अगली

उंगली) देखते ही मर जाये। फरसा और धनुष-बाण देखकर मैंने गर्व से कुछ कहा।

मैं भगुवंशी हूं, यह समझकर और यज्ञोपवीत देखकर आप जो कुछ कहते हैं, मैं क्रोध न करके उसे सहन कर लेता हूं। देवता, ब्राह्मण, भगवत्भक्त और गौ-इनके विरुद्ध हमारे कुल में वीरता नहीं दिखाई जाती। क्योंकि उन्हें मारना पाप है और उनसे हारने पर अपमान होता है। इसलिए यदि आप मारें भी तो वह आपके पैरों पर गिरना चाहिए। आपका एक-एक शब्द लाखों वज्रों के समान है। तुम व्यर्थ ही धनुष, बाण और फरसा धारण करते हो।

यदि मैंने इन्हें (धनुष, बाण और कुल्हाड़ी) देखकर कोई अनुचित बात कही हो तो उसे धैर्य रखना चाहिए.. महामुनि. क्षमा कीजिये। यह सुनकर भृगुवंशमणि परशुरामजी क्रोध से गंभीर स्वर में बोले- विश्वामित्र! सुनो, यह बालक बड़ा मूर्ख और कुटिल है, दुष्टों के वश में होने के कारण अपने कुल के लिये घातक बन रहा है। यह सूर्य की किरण के रूप में पूर्ण चंद्रमा का कलंक है। वह पूर्णतः अहंकारी, मूर्ख और निडर है। एक क्षण में वह कालका द्वारा निगल लिया जायेगा। मैं उसे बुला कर बताता हूं तो मेरा कोई कसूर नहीं है. यदि तुम इसे बचाना चाहते हो तो अपना ऐश्वर्य, बल और क्रोध दिखाकर इसे हतोत्साहित करो।

लक्ष्मणजी ने कहा--हे ऋषि! आपके अलावा आपकी ख़ुशी का वर्णन कौन कर सकता है? आपने कई बार अपने कार्यों का अनेक प्रकार से अपने शब्दों में वर्णन किया है। अगर इसके बाद भी आप संतुष्ट नहीं हैं तो कुछ कहें. अपने क्रोध को रोककर असहनीय दुःख न सहें। आप वीरता व्रत का पालन करने वाले, धैर्यवान और क्रोध से रहित हैं। गाली देना अशोभनीय है.

वीर पुरुष युद्ध में कर्म (बहादुरी के कार्य) करते हैं, ऐसा कहकर वे अपने को प्रकट नहीं करते। युद्ध में शत्रु को उपस्थित पाकर कायर ही अपनी महानता का दंभ भरते हैं। ऐसा लगता है जैसे तुम घड़ी पर भौंक रहे हो और बार-बार उसे मेरे लिए बुला रहे हो। लक्ष्मणजी के कठोर वचन सुनते ही परशुरामजी ने अपने भयानक फरसे को ठीक किया और उसे अपने हाथ में ले लिया।

[और कहा--] अब लोगों को मुझे दोष नहीं देना चाहिए. यह कटुभाषी बालक मार डालने योग्य है। मैंने उसे बच्चा समझकर बहुत बचाया, लेकिन अब तो वह सचमुच मरने ही वाला है। विश्वामित्रजी ने कहा-अपराध क्षमा करें। संत बच्चों के दोष और गुण नहीं गिनते। ,परशुरामजी ने कहा--] तेज धार वाला फरसा, मैं निर्दयी और क्रोधी हूं, और यह गद्दार और अपराधी मेरे सामने है।

जवाब दे रहा है. इतना सब होते हुए भी मैं उसे मारे बिना ही जा रहा हूँ, अत: हे विश्वामित्र! केवल आपकी दया (प्रेम) के कारण। अन्यथा इस कठोर कुल्हाड़ी से काटकर वह बहुत ही कम प्रयास में गुरु का ऋण चुका पाता। विश्वामित्र जी मन में हँसे और बोले - मुनि हर को ही हरा समझ रहे हैं (अर्थात सर्वत्र विजयी होने के कारण श्रीगम और लक्ष्मण को भी साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं)। लेकिन यह लोहे का खांड (केवल स्टील का बना हुआ) है, न कि चीनी वाला खांड (जो मुंह में लेते ही पिघल जाता है)। क्षमा करें, ऋषि अभी भी अज्ञानी बने हुए हैं; उनके प्रभाव को नहीं समझ पा रहे हैं.

लक्ष्मणजी ने कहा--हे ऋषि! आपके सिद्धांतों को कौन नहीं जानता? वह पूरी दुनिया में मशहूर हैं. आपने पहले ही अपने माता-पिता का अच्छा ऋण ले लिया है, अब आपके ऊपर गुरु का ऋण है जिसे आपको चुकाना है। बहुत सोच विचार किया गया है. ऐसा लगता है मानों हमारे दिमाग में शराब पी गई हो। बहुत दिन बीत गये, इस कारण रुचि बहुत बढ़ गयी होगी। अभी किसी हिसाब-किताब करने वाले को बुलाओ तो मैं तुरंत थैली खोलकर तुम्हें दे दूँगा।

तुम्हें रणधीर कभी नहीं मिला, एक मजबूत योद्धा। हे ब्राह्मण देवता! आप घर में बड़े हैं. यह सुनकर सभी चिल्लाने लगे, "यह अनुचित है, यह अनुचित है।" तब श्रीरघुनाथजी ने इशारे से लक्ष्मणजी को रोका। लक्ष्मणजी के आहुति के समान उत्तर से, परशुरामजी की क्रोधाग्नि को बढ़ते देख रघुकुल के सूर्य श्री रामचन्द्र ने जल के समान (शांत करते हुए) वचन बोले---

हे नाथ! बच्चे पर दया करो. इस मासूम और प्यारे बच्चे पर गुस्सा मत करो। यदि इस प्रभु (तुम्हारा) को कोई प्रभाव मालूम होता, तो क्या वह बिना सोचे-समझे तुम्हारी तुलना करता? बच्चे थोड़ी फुर्ती भी करते हैं तो शिक्षक, पिता और माता खुशी से झूम उठते हैं। इसलिए आप इसे छोटा बच्चा और सेवक समझकर आशीर्वाद दीजिये. आप बुद्धिमान, सज्जन, धैर्यवान और ज्ञानी ऋषि हैं।

श्री रामचन्द्र जी के वचन सुनकर उन्हें कुछ ठंडक महसूस हुई। इतने में लक्ष्मणजी कुछ बोले और फिर मुस्कुराये। उन्हें हँसते देख परशुरामजी का क्रोध उनके नखों से लेकर सिर तक (पूरे शरीर पर) फैल गया। उन्होंने कहा--हे राम! तुम्हारा भाई बड़ा पापी है. वह शरीर से गोरा है लेकिन मन से बहुत काला है। यह विचित्र मुख वाला है, दूधिया मुख वाला नहीं। वह स्वभाव से कुटिल है, नियमों का पालन नहीं करता (तुम्हारी तरह विनम्र नहीं)। यह दुष्ट मुझे अपने बराबर का नहीं समझता।

लक्ष्मणजी हंसकर बोले, हे ऋषि! सुनो, क्रोध पाप की जड़ है, जिसके कारण लोग गलत काम करते हैं और दुनिया के खिलाफ काम करते हैं (सभी को नुकसान पहुंचाते हैं)। हे मुनिराज! मैं आपका गुलाम हूँ। अब क्रोध त्यागो और दयालु बनो। क्रोध से टूटा हुआ धनुष ठीक नहीं होगा। खड़े-खड़े आपके पैर दर्द कर रहे होंगे, बैठ जाएं।

यदि धनुष बहुत प्रिय हो तो कोई उपाय करना चाहिए और किसी कुशल कारीगर को बुलाकर उसे जुड़वाना चाहिए। लक्ष्मण जी के बोलने से जनक जी घबरा जाते हैं और कहते हैं- बस चुप रहो, अनुचित बोलना अच्छा नहीं है। जनकपुर के सत्तारी लोग कांप रहे हैं (और मन में कह रहे हैं) कि छोटा कुमार बड़ा झूठा है. लक्ष्मणजी के निर्भय वचन सुनकर परशुरामजी का शरीर क्रोध से जलने लगा है और उनका बल नष्ट हो रहा है, उनकी शक्ति क्षीण होती जा रही है।

तब परशुरामजी ने श्री रामचन्द्रजी पर कृपा करके कहा- मैं इसे आपका छोटा भाई समझकर बचा रहा हूँ। यह मोतियों और शरीर का मेला कैसा सुन्दर है, विष रस से भरे हुए सोने के घड़े के समान! यह सुनकर लक्ष्मणजी फिर हंस पड़े। तब श्री रामचन्द्र जी ने उनकी ओर तिरछी दृष्टि से देखा, जिससे लक्ष्मण जी सकपका गये, उलटा कहना बन्द कर दिया और गुरु जी के पास चले गये।

श्री रामचन्द्रजी दोनों हाथ जोड़कर अत्यंत नम्रता के साथ कोमल एवं शीतल वाणी में बोले- हे प्रभु! सुनो, तुम स्वभाव से मधुर हो। आपको बच्चे की बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए (उसे सुनाएं या नजरअंदाज करें), बंदर और बच्चे का स्वभाव एक जैसा होता है। संत कभी उनको दोष नहीं देते। फिर उन्होंने (लक्ष्मण ने) तो कोई काम भी नहीं बिगाड़ा, भगवन्! मैं तुम्हारा अपराधी हूं.

अतः हे भगवन्! तुम्हें जो भी दया, क्रोध, मारण या बंधन करना हो, वह मुझ पर दास की भाँति (अर्थात् मुझे दासी समझकर) करो। जिस प्रकार आपका क्रोध शीघ्र ही दूर हो जाता है, हे ऋषि! बताओ, मैं भी यही उपाय करूँ। मुनि ने कहा--हे राम! गुस्से से कैसे छुटकारा पाएं? अब भी तुम्हारा छोटा भाई तुम्हें टेढ़ी नजर से देख रहा है. यदि मैंने उसकी गर्दन पर कुल्हाड़ी नहीं चलायी तो क्रोधवश क्या किया?

मैं इस शत्रु राजा के पुत्र को जीवित देख रहा हूं, जो उसी कुल्हाड़ी को चला रहा है जिससे मेरी कठोर कुल्हाड़ी सुनकर राजाओं की स्त्रियां अपनी गर्भावस्था खो देती हैं। हाथ नहीं हिलता, क्रोध से छाती जलती है। [नमस्ते !] राजाओं की यह घातक कुल्हाड़ी भी कुंद पड़ गयी। विधाता मेरे विरुद्ध हो गये, इससे मेरा स्वभाव बदल गया, अन्यथा मेरे हृदय में कभी कृपा क्यों होती?

यह सुनकर लक्ष्मणजी ने सिर झुकाकर कहा- आपकी कृपा रूपी वायु भी आपके आराध्य के अनुकूल है, आप जो शब्द बोलते हैं, वह ऐसे हैं जैसे फूल गिर रहे हों। हे ऋषि! यदि दया के कारण आपका शरीर जल जाता है, तो क्रोध की स्थिति में भगवान आपके शरीर की रक्षा भी करेंगे। [परशुरामजी ने कहा--हे जनक! देखो, यह मूर्ख बालक हठ करके यमपुरी में रहना चाहता है।

तुम इसे शीघ्र ही अपनी आँखों से छिपा क्यों नहीं लेते? ये शाही बेटा दिखता तो छोटा है, लेकिन है बड़ा. मिथ्या लक्ष्मण जी हँसे और मन में बोले- आँखें बन्द करो तो कहीं कोई नहीं है। तब परशुरामजी के हृदय में अत्यंत क्रोध भर गया और उन्होंने श्री रामजी से कहा---हे शठ! आप भगवान शिव का धनुष तोड़ दीजिये और इसके बदले हमें ज्ञान दीजिये. तुम्हारा यह भाई तुम्हारी सहमति से कटु वचन बोलता है और तुम हाथ जोड़कर विनती करती हो। या तो युद्ध में मुझे संतुष्ट करो, अन्यथा राम कहलाना बंद करो।

हे शिव द्रोही! छल छोड़ो और मुझसे युद्ध करो, नहीं तो मैं तुम्हारे भाई सहित तुम्हें भी मार डालूँगा। इस प्रकार पशुरामजी ने अपना फरसा उठाया और श्रीरामचन्द्रजी सिर झुकाये मन-ही-मन मुस्कुरा रहे थे। श्रीरामचन्द्रजी ने कहा -- हे मुनीश्वर ! क्रोध छोड़ो. तुम्हारे हाथ में कुल्हाड़ी है और मेरा सिर सामने है. जैसे ही आपका क्रोध दूर हो जायेगा, हे प्रभु! इसी तरह करें। मुझे अपना अनुयायी (गुलाम) समझो।

मालिक और नौकर के बीच यह कैसा युद्ध है? हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! क्रोध त्यागें. आपका वीर वेश देखकर बालक ने कुछ कहा; असल में उनका भी कोई दोष नहीं है. आपको कुल्हाड़ी, तीर और धनुष धारण किये हुए देखकर और आपको वीर समझकर बालक क्रोधित हो उठा। वह आपका नाम जानता था, लेकिन वह आपको नहीं पहचानता था। उन्होंने अपने वंश (रघुवंश) की प्रकृति के अनुसार उत्तर दिया।

अगर तुम संन्यासी की तरह आये होते, तो हे प्रभु! आपके चरणों की धूलि बालक अपने मस्तक पर लगाएगा। अनजाने में हुई गलती को क्षमा करें. ब्राह्मणों के हृदय में बहुत दया होनी चाहिए। हे नाथ! आपकी तुलना हमसे क्या है? बताओ, पैर कहां है और सिर कहां है? कहाँ मेरा छोटा सा राम नाम और कहाँ तुम्हारा परशु सहित बड़ा नाम।

अरे बाबा ! हममें एक ही गुण है, धनुष और आपके परम पवित्र लज्जा, साहस, तप, क्षमा, सरलता, ज्ञान, विज्ञान और आस्तिकता- ये नौ गुण हैं। हम हर तरह

से आपसे हारे हैं. हे विप्र! हमारे अपराध क्षमा करो। श्री रामचन्द्रजी ने बार-बार परशुरामजी को मुनि और 'विप्रवर' कहा। तब भागुपति (परशुरामजी) क्रोधित होकर बोले- तुम भी अपने भाई के समान ही कुटिल हो.

क्या आप मुझे शुद्ध ब्राह्मण मानते हैं? मैं तुम्हें बताऊंगा कि मैं कैसा हूं. धनुषों को गड्ढ़ों के समान, बाणों को वेदना के समान और मेरे क्रोध को अत्यंत भयानक अग्नि के समान जानो। चतुरंगिनी सेना सुन्दर समिधाएँ (यज्ञ में जलाई हुई लकड़ियाँ) हैं। इसमें बड़े-बड़े राजा हैं। बलि के पशु आ गये हैं और मैंने इस कुल्हाड़ी से उनका वध कर दिया है। मैंने ऐसे करोड़ों जपयुक्त_रणयज्ञ किए हैं (अर्थात् जिस प्रकार स्वाहा शब्द बोलकर आहुतियां दी जाती हैं, उसी प्रकार मैंने चिल्लाकर राजाओं का यज्ञ किया है।

तुम मेरे प्रभाव को नहीं जानते, इसलिये ब्राह्मण के धोखे से मेरे प्रति अनादरपूर्ण बातें कर रहे हो। तुमने धनुष तोड़ दिया, इससे तुम्हारा अभिमान बहुत बढ़ गया है। उसमें ऐसा अहंकार है, मानो वह संसार जीतकर खड़ा हो। श्री रामचन्द्रजी ने कहा- हे ऋषि! सोचो और बोलो. तुम्हारा गुस्सा बहुत बड़ा है. और मेरी गलती बहुत छोटी है. वह पुराना धनुष था, छूते ही टूट गया। मुझे गर्व क्यों होना चाहिए?

जय भृगुनाथ! यदि हम सचमुच तुम्हें ब्राह्मण कहकर तुम्हारा निरादर करते हैं, तो यह सत्य सुनो। न ही संसार में कोई ऐसा योद्धा है जिसके सामने हम डरकर सिर झुकायें? देवता, दानव, राजा या अन्य अनेक योद्धा, चाहे वे बल में हमारे बराबर हों या बलवान, यदि कोई हमें युद्ध में चुनौती देगा तो हम खुशी-खुशी उससे युद्ध करेंगे, चाहे समय क्यों न हो?

[परशुरामजी ने कहा--] हे राम! हे लक्ष्मीपति! धनुष को अपने हाथ में लो [या लक्ष्मीपति विष्णु का धनुष] और उसे खींचो, ताकि मेरा संदेह दूर हो जाए। परशुरामजी धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने लगे, फिर स्वयं ही चले गये। तब परशुरामजी के मन में बड़ा आश्चर्य हुआ।

तब उसे श्री रामजी का प्रभाव मालूम हुआ, (जिससे) उसका शरीर रोमांचित और प्रसन्न हो गया। उन्होंने हाथ जोड़कर यह शब्द बोले- प्रेम उनके हृदय में नहीं समाया- हे रघुकुल, कमल वन के सूर्य! हे राक्षसों के घने जंगल को जलाने वाली अग्नि! ब्राह्मणों और गौओं का हित चाहने वाले हे भगवान् आपकी जय हो! आपकी जय हो। हे अभिमान, मोह, क्रोध और भ्रम का नाश करने वाले। आपकी जय हो।

उनमें नम्रता, शील, साहस आदि गुणों का समुद्र है और वे शब्दों की रचना करने में बहुत चतुर हैं। जय हो। हे सेवकों को सुख देने वाले, सबसे सुंदर और अपने शरीर में करोड़ों कामदेवों की छवि धारण करने वाले! आपकी जय हो, मैं एक मुँह से आपकी स्तुति कैसे करूँ? हे महादेवजी रूप मानसरोवर के हंसों! आपकी जय हो। मैंने अनजाने में आपसे बहुत सी अनुचित बातें कह दीं। ये दोनों भाई क्षमा के मंदिर हैं। कृपया मुझे माफ़ करें।

श्री रामचन्द्रजी रघुकुल की ध्वजा हैं, जय हो, जय हो, जय हो। यह कहकर परशुरामजी वन में तपस्या करने चले गये। [यह देखकर] दुष्ट राजा अकारण (काल्पनिक) भय से भयभीत हो गये (परशुरामजी तो रामचन्द्रजी से हार गये, हमने उनका अपमान किया था, अब कहीं वे उसका बदला न ले लें, इस व्यर्थ भय के कारण) वे कायर छिपकर सब ओर भाग गये। .

देवताओं ने ढोल बजाए और भगवान पर फूल बरसाने लगे। जनकपुर के सभी नर-नारी प्रसन्न हो गये। उसका भ्रम (अज्ञानता से उत्पन्न) मिट गया। बहुत तेज़ आवाज़ में संगीत बजने लगा. सभी को खूबसूरती से सजाया गया था. सुन्दर मुख और सुन्दर आँखों वाली और कोयल के समान मधुर बोलने वाली स्त्रियाँ एकत्रित होकर सुन्दर गीत गाने लगीं।

जनकजी ने विश्वामित्रजी को प्रणाम किया [और कहा--] भगवान की कृपा से श्री रामचन्द्रजी ने धनुष तोड़ दिया है। दोनों भाइयों ने मुझे उपकृत किया। यह दोष! अब जो उचित हो कहो। ऋषि ने कहा--हे चतुर राजा! सुनना। यद्यपि विवाह धनुष के अधीन था; धनुष टूटते ही विवाह संपन्न हो गया। यह बात देवता, मनुष्य और नाग सभी जानते हैं।

हालाँकि, तुम जाओ और अपने कुल के अनुसार आचरण करो, अपने कुल के ब्राह्मणों, बुजुर्गों और गुरुओं से पूछो और वेदों में वर्णित अनुसार आचरण करो। जाओ और राजा दशरथ को बुलाने के लिए एक दूत को अयोध्या भेजो। राजा प्रसन्न होकर बोले-हे दयालु! बहुत अच्छा ! और उसी समय उसने दूतों को बुलाकर भेजा। तब सभी साहूकारों को बुलाया गया और सभी ने आकर राजा को आदरपूर्वक प्रणाम किया। [राजा ने कहा--] बाजार, सड़कों, घरों, मंदिरों और पूरे शहर को चारों ओर से सजाओ।

साहूकार खुशी-खुशी वहां से चले गए और अपने-अपने घर लौट आए। तब राजा ने सेवकों को बुलाया [और उन्हें आदेश दिया] कि वे विचित्र मंडप सजाएँ और तैयार करें। यह सुनकर उन सभी ने राजा की बात को हृदयंगम कर लिया और प्रसन्न होकर चले गये। उसने कई कारीगरों को बुलाया जो मंडप बनाने में कुशल

एवं चतुर थे। उन्होंने ब्रह्मा की पूजा करके काम शुरू किया और [पहले] सुनहरे केले के स्तंभ बनाए।

हरे पन्ने से पत्तियाँ और फल तथा पन्ना के हरे रत्नों (माणिक) से फूल बनायें। मंडप की अत्यंत विचित्र संरचना देखकर ब्रह्मा की भी बुद्धि भूल गई।
सभी बांसों को सीधी तरफ हरे मोतियों (पन्ना) से बनाया गया था और इस तरह से गूंथ दिया गया था कि यह पता नहीं चलता था कि वे रत्नों से बने हैं या साधारण से। सोने की एक सुंदर नागबेली (पान का पत्ता) बनाई, जो पत्तों के साथ इतनी अच्छी लगती थी कि पहचानी न जा सके।

उसी नागबेली को तराशकर और मोजैक करके बंधन (रस्सी बांधना) बनाएं। बीच-बीच में मोतियों की सुन्दर झालरें हैं। माणिक, पन्ना, हीरा और फ़िरोज़ा, इन पत्थरों को काटा, तराशा और पच्चीकारी की और उनसे कमल बनाए (लाल, हरा, सफ़ेद और फ़िरोज़ा)।

प्रातःकाल अनेक रंगों के पक्षी उत्पन्न हुए, जो हवा के झोंके से गूँजते और टर्र-टर्र करते। खंभों पर देवताओं की मूर्तियाँ खुदी हुई थीं, जो सभी मंगल द्रव्य धारण किये खड़ी थीं। आम के पत्तों को नीलमणि तराश कर बहुत सुन्दर बनाया। सोने के बौर (आम के फूल) से बने फलों के गुच्छे और रेशम की डोरियों से बंधे पन्ने सुशोभित हैं। ऐसा सुंदर और उत्तम बंदनवार बनाओ मानो कामदेव ने पाश सजा लिया हो। बहुत-से मजाल-कलश और सुन्दर पताकाएँ, पताकाएँ, परदे और झाड़-फानूस बनवाये।

उस विचित्र मंडप में जिसमें रत्नों से बने हुए बहुत-से सुन्दर दीपक हैं, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। जिस मंडप में श्री जानकीजी वधू होंगी उसका वर्णन करने की बुद्धि किस कवि में है? रूप और गुणों के समुद्र श्री रामचन्द्रजी जिस मंडप में दूल्हे होंगे, वह तीनों लोकों में प्रसिद्ध हो। जनकजी के महल की शोभा नगर के प्रत्येक घर में दिखाई देती है।

उस समय तिरहुत को देखने वाले को चौदह भुवन तुच्छ प्रतीत होते थे। उस समय जनकपुर के नीच घरों में जो धन-संपत्ति सुशोभित थी, उस पर इन्द्र भी मोहित हो गये। जिस नगर में लक्ष्मीजी छलपूर्वक खरिखा का रूप धारण करके निवास करती हैं, उस नगर की शोभा का वर्णन करने में सरस्वती और शेष भी संकोच करते हैं। जनकजी के दूत श्री रामचन्द्रजी की पवित्र नगरी अयोध्या पहुँचे। वे सुन्दर नगर देखकर प्रसन्न हुए। राजद्वार पर पहुँचकर उसने समाचार भेजा; यह बात राजा दशरथ ने सुनी और उन्हें बुलाया।

दूतों ने उसका स्वागत किया और उसे पत्र दिया। प्रसन्न होकर राजा ने उठकर उसे ले लिया। पत्र पढ़ते समय उसकी आँखें आंसुओं (प्रेम और खुशी के आँसू) से भर गईं, उसका शरीर रोमांचित हो गया और उसकी छाती खुशी से भर गई। हृदय में राम-लक्ष्मण हैं, हाथ में सुन्दर पत्र है, राजा उसे हाथ में लिये रह गये और कुछ मीठा-खट्टा न कह सके। फिर धैर्य रखकर उसने पत्रिका पढ़ी। सत्य सुनकर सारी सभा प्रसन्न हो गई।

समाचार पाकर भरतजी उस स्थान पर आये जहाँ वे अपने मित्रों तथा भाई शत्रुघ्न के साथ खेला करते थे। वह बड़े प्यार से झिझकते हुए पूछता है--पापा! पत्र कहां से आया है? हमारे प्राणों से प्यारे दोनों भाई सुरक्षित हैं और किस देश में हैं? स्नेह से भरे ये शब्द सुनकर राजा ने पत्र दोबारा पढ़ा। पत्र सुनकर दोनों भाई रोमांचित हो गये। स्नेह इतना हो गया कि शरीर में समा न सका। भरतजी का निश्छल प्रेम देखकर सारी सभा को विशेष आनंद हुआ। तब राजा ने दूतों को अपने पास बैठाया और हृदय को प्रसन्न करने वाले मधुर वचन बोले- भाई! बताओ, क्या दोनों बच्चे ठीक हैं? आपने उन्हें अपनी आँखों से अच्छी तरह देखा है, है ना?

उसका शरीर काला और गोरा है, वह धनुष और तरकश रखता है, किशोर है और विश्वामित्र मुनि के साथ है। अगर आप उन्हें पहचानते हैं तो उन्हें उनकी भावनाएं बताएं. राजा विशेष प्रेम के वशीभूत होकर बार-बार इस प्रकार कह (पूछ) रहे हैं। [भाई!] जिस दिन से साधु उसे ले गये, आज हमें सच्चा समाचार मिला है। बताओ महाराज जनक ने उन्हें कैसे पहचाना? ये प्रेमपूर्ण बातें सुनकर दूत मुस्कुराया।

[दूतों ने कहा--] हे राजाओं के मुकुटमणि! सुनो, तुम्हारे समान कोई भी धन्य नहीं है, जिसके राम और लक्ष्मण जैसे पुत्र हैं, जो दोनों लोकों के रत्न हैं। आपके बेटे पूछने लायक नहीं हैं. वह नर सिंह तीनों लोकों की ज्योति का स्वरूप है। जिनके तेज के सामने चंद्रमा मलिन और सूर्य शीतल दिखाई देता है, हे प्रभु! उनके लिए आप कहते हैं कि उन तक कैसे पहुंचें! क्या सूर्य को हाथ में दीपक लेकर देखा जाता है? सीताजी के स्वयंवर में बहुत से राजा और बहुत से योद्धा एकत्रित हुए थे।

लेकिन शिवजी के धनुष को कोई नहीं हटा सका। सभी शक्तिशाली योद्धा पराजित हो गये। भगवान शिव के धनुष ने तीनों लोकों में वीरता का अभिमान रखने वाले सभी लोगों की शक्ति तोड़ दी। बाणासुर, जो सुमेरुको को उठा भी सकता था, वह भी मन में पराजय लेकर चक्कर लगाकर चला गया; और खेल-खेल में ही कैलाश उठाने वाला रावण भी उस सभा में हार गया।

ये हैं महाराज! सुनो, वहाँ (जहाँ अमुक-अमुक योद्धाओं ने हार मान ली थी) रघुवंशमणि श्री रामचन्द्रजी ने बिना किसी प्रयास के ही शिवजी का धनुष तोड़ दिया, जैसे हाथी कमल की डंठल तोड़ देता है। धनुष टूटने की बात सुनकर परशुरामजी क्रोधित हो गये और अनेक प्रकार से आँखें दिखाने लगे। अन्त में उन्होंने श्री रामचन्द्रजी का बल देखकर उन्हें अपना धनुष दे दिया और बहुत प्रार्थना करके वन को चले गये।

हे राजन! जैसे श्री रामचन्द्रजी अतुलनीय बल वाले हैं, वैसे ही लक्ष्मणजी भी शक्ति से परिपूर्ण हैं, जिनके देखने मात्र से राजा काँप उठते हैं, जैसे सिंह के बच्चे को देखकर हाथी काँप उठता है। जय देव. आपके दोनों बच्चों को देखने के बाद अब कोई भी हमारी नज़र में नहीं आता (कोई भी हमारी नज़र में नहीं आता)। प्रेम, ऐश्वर्य और वीरता से ओत-प्रोत दूतों की बातें सभी को अच्छी लगीं।

राजा सभा सहित प्रेम में मग्न हो गये और दूतों का अनुगमन करने लगे। [उसे नहाते हुए देखना। दूत यह कहकर कि यह नीति के विरुद्ध है, अपने कानों को हाथों से ढकने लगा। धर्म का विचार करके (उसके धार्मिक आचरण को देखकर) सभी ने इसे सुख माना। तब राजा उठकर वसिष्ठजी के पास गये और उन्हें पत्रिका दी तथा दूतों को आदरपूर्वक बुलाकर गुरुजी को सारा वृत्तान्त सुनाया।

उसी प्रकार धर्मात्मा मनुष्य के पास सुख-सम्पत्ति बिना किसी आमंत्रण के स्वत: ही चली जाती है। जैसे तुम गुरु, ब्राह्मण, गौ और देवता की सेवा करते हो, उसी प्रकार पवित्र कोसल्या देवी भी हैं। संसार में आपके समान कोई गुणी न है, न है और न कभी होगा। हे राजा! तुमसे भी ज्यादा गुणी. और कौन होगा जिसका राम जैसा पुत्र हो? और जिनके चारों बच्चे वीर, विनम्र, धर्म का व्रत लेने वाले और गुणों के सुंदर सागर हों। हर समय आपका कल्याण है. इसलिए ढोल बजाकर बारात का आयोजन करें.

और जल्दी से आगे बढ़ें. गुरुजी के ऐसे वचन सुनकर 'हे नाथ! 'बहुत अच्छा' कहकर और सिर झुकाकर तथा दूतों का डेरा लगवाकर राजा महल में चला गया। राजा ने सभी गाँव वालों को बुलाया और उन्हें जनकजी की पत्रिका पढ़कर सुनाई। समाचार सुनकर सभी रानियाँ खुशी से भर गईं। तब राजा ने बाकी सब बातें (जो उसने दूतों से सुनी थीं) वर्णन किया।

प्रेम में मगन रानियाँ ऐसी शोभा पा रही हैं जैसे बादलों की गड़गड़ाहट सुनकर मोर प्रसन्न हो जाते हैं। बुजुर्ग महिलाएं खुश होकर आशीर्वाद दे रही हैं। माताएं अपार आनंद में डूबी हुई हैं. उन अत्यंत प्रिय पत्रिकाओं को अपने साथ ले जा रहा

हूँ। हर बात को दिल पर लेने से सीना ठंडा हो जाता है। गजों में श्रेष्ठ दशरथजी ने बार-बार श्रीराम और लक्ष्मण की कीर्ति और पराक्रम का वर्णन किया।

'यह सब साधु की कृपा है' यह कहकर वह बाहर आ गया। तब रानियों ने ब्राह्मणों को बुलाया और उन्हें प्रसन्नतापूर्वक दान दिया। श्रेष्ठ ब्राह्मण आशीर्वाद देते हुए आगे बढ़े। फिर उसने भिखारियों को बुलाया और उन्हें करोड़ों रुपये दिये। चक्रवर्ती महाराज दशरथ के चारों पुत्र अमर रहें। यह कहकर वह अनेक प्रकार के सुन्दर वस्त्र पहनकर चला। खुशी मनाते हुए ढोल वादकों ने बड़ी ताकत से ढोल बजाया। जब यह खबर सभी को मिली तो घर-घर बधाइयों का तांता लग गया।

सभी चौदह लोकों में उत्साह भर गया कि जानकीजी और श्रीरघुनाथजी का विवाह होगा। यह शुभ समाचार पाकर लोग प्रेम में पड़ गये और सड़कों, घरों तथा गलियों को सजाने लगे। यद्यपि अयोध्या श्री रामजी की पवित्र नगरी होने के कारण सदैव रमणीय है, तथापि परस्पर प्रेम के कारण उसे सुन्दर मंडप से सजाया गया था।

पूरे बाजार को झंडों, बैनरों, पर्दों और खूबसूरत झूमरों से सजाया गया है। लोगों ने अपने-अपने घरों को स्वर्ण कलशों, तोरणद्वारों, रत्नों की झालरों, हल्दी, दूब, दही, अक्षत तथा मालाओं से सजाकर नशीला बना दिया। सड़कें चौकों और खूबसूरत चौकों से भरी हुई थीं [द्वारों पर]। चंदन, केसर, कस्तूरी और कपूर से बने सुगंधित द्रव्य को चतुरासम् कहा जाता है।

चंद्रमुखी, जिसके पास बिजली की चमक है, जिसकी आंखें हिरण के बच्चे की तरह हैं और जिसने अपनी सुंदरता से कामदेव की पत्नी रति का गौरव बचाया है, विवाहित खत्री, सभी सोलह श्रृंगार किए हुए, इधर-उधर समूहों में इकट्ठा होते हैं सुन्दर स्वर से मंगल गीत गा रहे हैं, जिनके सुन्दर स्वर सुनकर कोयले भी लज्जित हो जाते हैं। उस राजमहल का वर्णन कैसे किया जाय, जहाँ विश्व को मोहित करने वाला मण्डप बना हुआ है।

अनेक प्रकार की सुन्दर-सुन्दर शुभ वस्तुएँ प्रदर्शित की जा रही हैं और अनेक नगाड़े बजाए जा रहे हैं। कहीं भाट विरुदावली (कुलकीर्ति) का पाठ कर रहे हैं तो कहीं ब्राह्मण वेदों का पाठ कर रहे हैं। सुन्दरियाँ श्री रामजी और श्रीसीताजी के नाम से मंगल गीत गा रही हैं। यहाँ बहुत उत्साह है और महल बहुत छोटा है। इससे (उसमें लीन न होने के कारण) ऐसा प्रतीत होता है मानो चारों ओर वह उत्साह (आनन्द) उमड़ पड़ा हो।

दशरथ के महल की शोभा का वर्णन कौन कवि कर सकता है, जहाँ देवताओं के शिरोमणि रामचन्द्रजी ने अवतार लिया है। तब राजा ने भरतजी को बुलाकर कहा, जाओ घोड़ों, हाथियों और रथों को सजाओ, शीघ्र रामचन्द्रजी की बारात में चलो। यह सुनकर दोनों भाई (भरतजी और शरत्रुघ्नजी) हर्ष से भर गये।

भरतजी ने सारे साहनी अस्तबलों को बुलाकर (घोड़ों को सजाने का) आदेश दिया, वे प्रसन्न होकर भाग गये। वह रुचि के साथ रहता था (जितना वह कर सकता था) और घोड़ों को कसकर सजाता था। घोड़ों को सुंदर रंगों से सजाया गया था। सभी घोड़े बहुत सुन्दर और चंचल हैं। वे अपने पैर पृथ्वी पर इस प्रकार रखते हैं मानो वे जलते हुए लोहे पर हों। घोड़ों की कई प्रजातियाँ हैं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। [ऐसे तेज़ ड्राइवर हैं। मानो हवा बेआबरू होकर उड़ जाना चाहती हो.

भरतजी के समान सभी सुन्दर राजकुमार उन घोड़ों पर सवार हुए। वे सभी सुंदर हैं और आभूषण पहने हुए हैं। उनके हाथों में धनुष-बाण और कमर में भारी तरकश बंधा हुआ है। चुने गए सभी लोग निष्पक्ष, बहादुर, चतुर और युवा हैं। प्रत्येक सवार के साथ दो पैदल सैनिक होते हैं, जो तलवारबाजी की कला में बहुत माहिर होते हैं।

रणधीर वीर सब बाहर आकर नगर के बाहर खड़े हो गये। वे । चतुर लोग भाँति-भाँति की चाल से अपने घोड़े चला रहे हैं और ढोल-नगाड़ों की ध्वनि सुनकर प्रसन्न हो रहे हैं। सारथियों ने कहा, नल एक रत्न है और रथों को सोने के आभूषण डालकर बहुत अनोखा बनाया गया है। उनमें सुंदर घंटियाँ हैं और घंटियाँ सुंदर ध्वनियाँ निकाल रही हैं। वे रथ इतने सुन्दर हैं कि वे सूर्य के रथ की शोभा हर लेते हैं।

अनगिनत काले घोड़े थे. सारथियों ने उन्हें उन रथों में जोत लिया है, जो देखने में सुन्दर और रत्नों से सुसज्जित हैं और जिन्हें देखकर ऋषियों का मन भी मोहित हो जाता है। जो जमीन की तरह ही पानी पर भी चलते हैं। अधिक वेग के कारण इनका शीर्ष पानी में नहीं डूबता। सारथियों ने अपने अस्त्र-शस्त्रों की व्यवस्था करके सारथियों को बुलाया।

रथों पर चढ़े जुलूस नगर के बाहर एकत्रित होने लगे। जो भी जिस काम के लिए जाता है, सबका शुभ शकुन होता है। श्रेष्ठ हाथियों पर सुन्दर दाँत पड़े रहते हैं। उन्हें किस प्रकार सजाया गया था, कहा नहीं जा सकता। मतवाले हाथी घंटियाँ सजाकर (घंटियाँ बजाते हुए) ऐसे चल रहे थे, मानों वर्षा ऋतु के सुन्दर बादलों के समूह गरजते हुए चल रहे हों।

वहाँ कई प्रकार के वाहन हैं जैसे सुंदर पालकी, तमजान (जो कुर्सी की तरह होते हैं) और रथ आदि जिनमें आप आराम से बैठ सकते हैं। श्रेष्ठ ब्राह्मणों के समूह उन पर चढ़कर इस प्रकार चलते थे मानो वे समस्त वेदों की छतें हों! एक ही शरीर धारण किये हुए हैं. मगध के सभी सूत, भाट और स्तुति गायक अपनी क्षमतानुसार वाहनों पर सवार होते थे। अनेक जातियों के खच्चर, ऊँट और बैल असंख्य वस्तुओं से लदे हुए चलते थे।

कहार करोड़ों काँवर लेकर चले। उनमें इतनी तरह-तरह की चीज़ें थीं कि कोई उनका वर्णन नहीं कर सकता। सेवकों के सभी समूह अपनी-अपनी व्यवस्था करके आगे बढ़ गये। सभी के दिलों में अपार खुशी है और उनके शरीर खुशी से भरे हुए हैं। [सभी की एक ही इच्छा है कि] हम दोनों भाइयों श्री राम और लक्ष्मण को कब पूर्ण नेत्रों से देखेंगे?

हाथी दहाड़ रहे हैं, उनकी घंटियाँ भयंकर ध्वनि कर रही हैं। चारों ओर रथ दौड़ रहे हैं और घोड़े हिनहिना रहे हैं। नगाड़े बादलों का अनादर करते हुए कठोर शब्द कर रहे हैं। कोई भी पराई या अपनी बात नहीं सुन सकता। राजा दशरथ के दरवाजे पर इतनी भीड़ है कि अगर वहां पत्थर फेंका जाए तो वह भी धूल में मिल जाएगा। अटारियों पर स्त्रियाँ मंगल थालों में आरती होते देख रही हैं।

और तरह-तरह के सुन्दर गीत गाते हैं। उनकी अपार खुशी को बयां नहीं किया जा सकता. तब सुमंतजी ने दो रथ सजाये और उनमें ऐसे घोड़े जोत लिये जो सूर्य के घोड़ों को भी परास्त करने में सक्षम थे। वे दोनों सुन्दर रथ राजा दशरथ के पास ले आये, जिनकी सुन्दरता का वर्णन सरस्वती भी नहीं कर सकतीं। एक रथ को राजसी साज-सज्जा से सजाया गया था। और दूसरा प्रकाश की किरण था और बहुत सुन्दर था।

राजा वशिष्ठजी को उस सुन्दर रथ पर प्रसन्नतापूर्वक बैठाकर वे स्वयं शिव, गुरु, गौरी (पार्वती) तथा गणेशजी का स्मरण करके [दूसरे] रथ पर चढ़ गये। राजा दशरथजी वशिष्ठजी के साथ [जाते समय] ऐसे शोभा पा रहे हैं, जैसे देवगुरु बृहस्पतिजी के साथ इन्द्र। वेदों की रीति के अनुसार तथा प्रजा की रीति के अनुसार सब कार्य करना और सबको सब प्रकार से सुशोभित देखना।

श्री रामचन्द्रजी का स्मरण करके और गुरु की आज्ञा लेकर जगत के स्वामी दशरथजी शंख बजाने निकले। बारात को देखकर देवता प्रसन्न हो गये और सुन्दर मंगल पुष्पों की वर्षा करने लगे। बड़ा शोर मच गया, घोड़े और हाथी गरजने लगे। आकाश और जुलूस दोनों जगह संगीत वाद्य बजने लगे। देवियाँ

तथा मानव नारियाँ सुन्दर मंगल गीत गाने लगीं तथा रसभरी धुनों के साथ शहनाईयाँ बजने लगीं।

घंटियों की ध्वनि का वर्णन नहीं किया जा सकता। नौकर या कुली पैदल चलते हुए जिमनास्टिक खेल खेल रहे हैं और लहरा रहे हैं (आसमान में ऊंची छलांग लगा रहे हैं)। हंसने और सुंदर गाने में माहिर विदूषक (विदूषक) तरह-तरह की शरारतें कर रहे हैं। सुन्दर राजकुमार बांसुरी और ढोल की आवाज सुनकर घोड़ों को अपने अनुसार इस प्रकार नचा रहा है कि वे ढोल की लय से जरा भी हिले नहीं। चतुर पागल यह सब आश्चर्य से देख रहे हैं।

बारात ऐसी है कि उसका वर्णन करना नामुमकिन है। सुन्दर शुभ शकुन हैं। बायीं ओर नीलकंठ पक्षी चारा ले रहा है, मानों सभी शुभ घटनाओं की सूचना दे रहा हो। दाहिनी ओर, कौआ सुंदर मैदान की शोभा बढ़ा रहा है। सभी को नेवलेका के दर्शन भी हुए। तीनों हल्की (ठंडी, मंद, सुगंधित) हवाएं अनुकूल दिशा में चल रही हैं। श्रेष्ठ (विवाहिता) स्त्रियाँ गोद में घड़े और बालक लिये हुए आ रही हैं।

लोमड़ी बार-बार नजर आती है. गायें सामने खड़ी होकर बछड़ों को दूध पिलाती हैं। हिरणों का समूह [बाईं ओर से] दाहिनी ओर मुड़ गया, मानो सभी पागलों का समूह प्रकट हो गया हो। क्षेमकारी (सफेद सिर वाली चील) विशेष रूप से क्षेम (कल्याण) कह रही है। बायीं ओर एक सुन्दर वृक्ष पर श्यामा दिखाई दी। दो विद्वान ब्राह्मण हाथ में दही, मछली और पुस्तक लेकर आगे आये।

ऐसा लग रहा था मानों सभी शुभ, मंगल और मनोवांछित शकुन एक साथ साकार हो गये हों। ऐसा विवाह सुनकर मानो सारे शकुन नाच उठे [और बोले---] अब तो ब्रह्मा जी ने हमें सत्य कर दिया। इस प्रकार बारात विदा हो गई। घोड़े और हाथी दहाड़ रहे हैं और ढोल पीटे जा रहे हैं। यह जानकर कि दशरथजी सूर्यवेश में ध्वजा बनाकर आ रहे हैं, जनकजी ने नदियों पर पुल बनवाये। बीच-बीच में रहने के लिए सुन्दर घर (शिविर) बनाये गये थे, जिनमें स्वर्ग के समान धन था,

और जहां बारात के सभी लोगों को उनकी पसंद के अनुसार स्वादिष्ट, अच्छा भोजन, बिस्तर और कपड़े मिलते हैं। अपनी इच्छानुसार नित नये सुखों को देखकर वे अपने घर की सारी बारातें भूल गये। ऊंचे-ऊंचे ढोलों की आवाज सुनकर और यह जानकर कि सर्वोत्तम बारातें आ रही हैं, उनका स्वागत करने वालों ने हाथी, रथ, पैदल और घोड़ों की व्यवस्था की और बारात ले जाने के लिए निकल पड़े।

राजा ने प्रसन्नतापूर्वक उपहार स्वरूप दूध, शर्बत, पाला, जल आदि से भरे हुए स्वर्ण कलश, वर्णन न किए जा सकने वाले अमृत के समान नाना प्रकार के पकवानों से भरे हुए नाना प्रकार के बर्तन, थालियाँ आदि, उत्तम फल तथा और भी बहुत-सी सुन्दर वस्तुएँ भेजीं। . आभूषण, वस्त्र, बहुमूल्य पत्थर, पक्षी, पशु, घोड़े, हाथी और अनेक प्रकार की सवारियाँ,

और राजा ने अनेक प्रकार के सुगन्धित और सुखदायक शुभ पदार्थ तथा सगुण पदार्थ भेजे। कांवर दही, चिउड़ा और असंख्य उपहार सामग्री से भरे हुए थे। जब बारात की अगवानी करने वालों ने यह देखा तो उनके हृदय खुशी से भर गए और शरीर उत्साह से भर गए। मेहमानों को सजे-धजे देखकर बाराती खुश हो गए और ढोल-नगाड़े बजाए।

[बारात और मेहमानों के बीच. कुछ लोग खुशी के मारे बगीचे से निकलकर एक-दूसरे से मिलने के लिए दौड़े (सरपट दौड़े) और वे ऐसे मिले जैसे खुशी के दो सागर सारी मर्यादा छोड़कर एक-दूसरे से मिल रहे हों। देवताओं की सुन्दरियाँ पुष्प वर्षा कर रही हैं और गीत गा रही हैं और देवता प्रसन्न होकर ढोल बजा रहे हैं। , स्वागत करने आये। उन्होंने सारी बातें दशरथजी के सामने रखीं और अत्यंत प्रेम से उनसे विनती की।

राजा दशरथ जी ने प्रेम सहित सब वस्तुएँ ले लीं, फिर वे उपहार देने लगे और वे भिखारियों को दे दिये गये। इसके बाद उनका पूजन, आदर-सत्कार और स्तुति करके स्वागतकर्ता उन्हें जनवासे की ओर ले गये। सीताजी ने यह जानकर कि जनकपुर में बारात आ गयी है, अपना कुछ वैभव प्रदर्शित किया। यह बात मन में स्मरण कर उन्होंने सभी सिद्धियों को बुलाया और उन्हें राजा दशरथजी की मेजबानी के लिए भेजा।

सीताजी की आज्ञा सुनकर सभी सिद्धियाँ इंद्रपुर का सारा धन, सुख और भोग-विलास अपने साथ लेकर जनवासे के निवास स्थान पर चली गईं। जब बारातियों ने अपने-अपने रहने के स्थान देखे तो उन्हें वहाँ देवताओं का सारा सुख सहज ही उपलब्ध हुआ। इस ऐश्वर्य के बारे में किसी को कुछ भी पता नहीं चल सका। सभी लोग जनकजी की प्रशंसा कर रहे हैं. सीताजी की महिमा जानकर और उनका प्रेम पहचानकर श्रीरघुनाथजी मन ही मन प्रसन्न हुए। पिता दशरथजी के आगमन का समाचार सुनकर दोनों भाइयों के हृदय में अत्यंत हर्ष हुआ।

संकोच के कारण वे गुरु विश्वामित्रजी से कह न सके; लेकिन मेरे दिल में पापा को देखने की चाहत थी. जब विश्वामित्रजी ने उसकी महान नम्रता देखी तो उनके

हृदय में बड़ा संतोष उत्पन्न हुआ। प्रसन्न होकर उसने दोनों भाइयों को गले लगा लिया। उनका शरीर पुलकित हो गया और (प्रेमियों की) आँखों में आँसू भर आये। वे उस गाँव में गये जहाँ दशरथजी थे। मानो झील प्यासे की ओर निशाना साध रही हो।

जब राजा दशरथ ने अपने पुत्रों सहित साधुओं को आते देखा तो वे प्रसन्न होकर उठ खड़े हुए और मानो सुख के सागर में तैर रहे हों। पृथ्वीपति दशरथ जी ने बार-बार उनके चरणों की धूलि अपने मस्तक पर लगाकर उन्हें प्रणाम किया। विश्वामित्र जी ने राजा को उठाया, हृदय से लगाया, आशीर्वाद दिया और कुशलक्षेम पूछा। तब उन दोनों भाइयों को साष्टांग प्रणाम करते देख राजा हर्ष से भर गया। अपने पुत्रों को [उठाकर] और उन्हें अपने हृदय से लगाकर, उन्होंने अपनी पीड़ा (वियोग के कारण) शांत की। मानो मृत शरीर में फिर से जान आ गई हो.

फिर उन्होंने वशिष्ठजी के चरणों में सिर झुकाया। मुनिश्रेष्ठ ने प्रेम के आनंद में उन्हें अपने हृदय में ले लिया। दोनों भाइयों ने सभी ब्राह्मणों से वंदगा के प्रति वांछित आशीर्वाद प्राप्त किया। भरतजी ने अपने छोटे भाई शत्रुघ्लाशीत श्री रामचन्द्रजी को प्रणाम किया। श्री रामजी ने उन्हें उठाकर हृदय से लगा लिया। लक्ष्मणजी दोनों भाइयों को देखकर प्रसन्न हुए और प्रेम से परिपूर्ण होकर उनसे मिले।

इसके बाद परम दयालु और विनम्र श्री रामचन्द्रजी अपनी क्षमता के अनुसार अयोध्यावासियों, अपने परिवार के सदस्यों, अपनी जाति के लोगों, याचकों, मंत्रियों और अपने मित्रों से मिले। पुत्रों सहित दशरथजी को देखकर नगर के नर-नारी बहुत प्रसन्न होते हैं। [आकाश में] देवता पुष्प वर्षा कर रहे हैं और ढोल बजा रहे हैं और अप्सराएँ गा रही हैं और नृत्य कर रही हैं। शतानन्दजी, अन्य ब्राह्मण, मंतिगण, मगध, सूत, विद्वान और भाट जो उनके स्वागत के लिए आये थे, उन्होंने बारात सहित राजा दशरथजी का सत्कार किया। फिर अनुमति लेकर वे लौट आये.

शादी के दिन से पहले ही बारात आ गई, जिससे जनकपुर में और भी ज्यादा खुशी का माहौल है. सभी लोग ब्रह्मानंद का आनंद ले रहे हैं और विधाता को मनाकर कहते हैं कि हम दिन-रात बढ़ते रहें। श्री रामचन्द्रजी और सीताजी सौन्दर्य की सीमा हैं और दोनों राजा पुण्य की सीमा हैं, यहाँ सर्वत्र जनकपुर के नर-नारियों के समूह एकत्र हुए हैं। कह रहे हैं।

जनकजी के अच्छे कर्मों (सदाचार) का अवतार जानकीजी हैं और दशरथजी के अच्छे कर्मों का अवतार श्री रामजी हैं। इन [दो राजाओं] की तरह किसी ने भी भगवान शिव की पूजा नहीं की; और किसी को भी उनके जैसा परिणाम नहीं मिला. उसके जैसा संसार में न कोई है, न कहीं है, न कभी होगा। हम सब भी पूर्ण पुण्य के प्रतीक हैं, जो इस संसार में जन्म लेकर जनकपुरवासी बने।

और जिन्होंने जानकीजी और श्री रामचन्द्रजी की छवि देखी है। हमारे जैसा खास कौन होगा? और अब हम श्रीरघुनाथजी का विवाह देखेंगे और अपने नेत्रों का लाभ उठायेंगे। कोयल के समान मीठी बोली बोलने वाले पक्षी एक दूसरे से कहते हैं, हे सुन्दर आँखों वाली! विवाह से बड़ा लाभ होता है। बड़े भाग्य से विधाता ने सब व्यवस्था कर दी है, ये दोनों भाई हमारी आँखों के मेहमान बनेंगे।

जनक जी प्रेमवश बार-बार सीता जी को बुलाएँगे और करोड़ों कामदेवों के समान दोनों सुन्दर भाई सीता जी को लेने (विदा करने) आएँगे। फिर उसका कई तरह से स्वागत किया जाएगा. दोस्त! ऐसे ससुराल वालों से कौन प्यार नहीं करेगा? तब-तब हम सभी नगरवासी श्री राम और लक्ष्मण को देखकर प्रसन्न होंगे।

हाय दोस्त! श्री राम और लक्ष्मण की जोड़ी की तरह ही राजा के साथ दो अन्य कुमार भी हैं। वे एक तो सांवले रंग के हैं और दूसरे गोरे रंग के, उनके शरीर के सभी अंग बहुत सुंदर हैं। जिन लोगों ने भी उन्हें देखा है वे सभी यही कहते हैं. एक ने कहा--मैंने तो उसे आज ही देखा है; वे इतने सुन्दर हैं, मानो ब्रह्माजी ने उन्हें अपने हाथों से सजाया हो। भरत तो श्री रामचन्द्रजी के ही आकार-प्रकार के हैं। स्त्री-पुरुष उसे अचानक पहचान लेते हैं। नहीं कर सकता। वे मन को तो बहुत अच्छे लगते हैं, परन्तु मुख से उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। तीनों लोकों में उनकी तुलना के योग्य कोई नहीं है।

दास तुलसी उन्हें कवि कहते हैं और कोविड (विद्वान) कहते हैं कि उनके जैसा कहीं कोई नहीं है। वे शक्ति, नम्रता, ज्ञान, शील और सौंदर्य के सागर के समान हैं। जनकपुर की सभी स्त्रियाँ हाथ फैलाकर विधाता से यह प्रार्थना करती हैं कि चारों भाइयों का विवाह इसी नगर में हो और हम सब सुन्दर मादल गाएँ। स्त्रियाँ आँसुओं से भरी आँखों से प्रसन्न शरीर से एक दूसरे से कह रही हैं कि हे सखी! दोनों राजा गुणों के सागर हैं, त्रिपुनारी शिव सभी मनोकामनाएं पूर्ण करेंगे।

इस तरह वह सभी मनोकामनाएं कर रही हैं और अपने दिल को खुशी से भर रही हैं. सीताजी के स्वयंबर में आये राजाओं को भी चारों भाइयों को देखकर प्रसन्नता हुई। राजा श्री रामचन्द्रजी का पवित्र एवं महान यश कहते हुए अपने-अपने घर

चले गये। इस तरह कुछ दिन बीत गये. जनकपुरवासी और बाराती सभी बहुत खुश हैं।

मंगल के मूल लग्न का दिन आ गया। वह महीना था हेमन्त का और सुहावना महीना था अगहन का। ग्रह, तिथि, नक्षत्र, योग एवं वार श्रेष्ठ थे। ब्रह्माजी ने लग्न (मुहूर्त) का शोध करने के बाद इसके बारे में सोचा, और इसे (लग्मा पत्रिका) नारदजी [जनकजी को] भेज दिया। जनकजी के ज्योतिषियों ने भी यही गणना की थी। जब सबने यह सुना तो कहने लगे-यहाँ का ज्योतिषी भी ब्रह्मा है।

समस्त सुन्दर शुभ और शुद्ध शुभ समयों का उद्गम, गोधूलि का पवित्र समय आ गया है और शुभ शकुन आने लगे हैं, ऐसा जानकर ब्राह्मणों ने जनकजी से कहा। तब राजा जनक ने पुरोहित शतानन्दजी से पूछा कि अब विलम्ब का क्या कारण है। तब शतानन्दजी ने मंत्रियों को बुलाया। वे सारा मजालका सामान सजा कर लाये। बाजे-गाजे, ढोल, नगाड़े तथा अनेक वाद्य बजने लगे तथा मिट्टी के लोटे, बर्तन तथा मंगल वस्तुएं (दधि, दूर्वा आदि) सजाई गईं। सुन्दर विवाहित स्त्रियाँ गीत गा रही हैं और पवित्र ब्राह्मण बेदकी ध्वनि कर रहे हैं।

इस प्रकार सभी लोग आदरपूर्वक बारात की अगवानी करने गए और जहां-जहां बारात थी, वहां-वहां चले गए। अवधपति दशरथजी के समाज का वैभव देखकर देवराज इंद्र भी उन्हें बहुत तुच्छ लगने लगे। (उन्होंने जाकर कहा, "समय हो गया है, अब आ जाओ।" यह सुनकर ढोल बजने लगे। गुरु वशिष्ठजी से पूछकर और कुल की सारी रीति-नीति का पालन करते हुए राजा दशरथजी साधु-संतों और ओके समाज को साथ लेते हैं।

अवधनरेश दशरथजी के भाग्य और वैभव को देखकर तथा उनके जन्म को व्यर्थ जानकर ब्रह्माजी तथा अन्य देवता हजारों मुखों से उनकी स्तुति करने लगे। देवता सुन्दर मद्गल का अवसर जानकर नगाड़े बजाकर पुष्प वर्षा करते हैं। शिवजी, ब्रह्माजी आदि युवक (समूह) बनाकर विमानों पर चढ़े और शरीर में प्रेम भरकर तथा हृदय में उत्साह भरकर श्री रामचन्द्रजी का विवाह देखने के लिए चल पड़े॥ जनकपुर को देखकर देवता इतने मोहित हो गये कि उन सभी को अपना-अपना लोक अत्यंत तुच्छ लगने लगा।

वे विचित्र मंडपों और विभिन्न अलौकिक कृतियों को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। नगर के स्त्री-पुरुष सुन्दरता के भण्डार, सुन्दर, सदाचारी, विनम्र और दयालु हैं। उन्हें देखकर सभी देवी-देवता चाँद की रोशनी में तारों के समान पीले पड़ गये। ब्रह्माजी को विशेष आश्चर्य हुआ; क्योंकि उन्हें वहां उनका कोई काम कहीं नजर नहीं आया.

तब भगवान शिव ने सभी देवताओं को समझाया कि वे आश्चर्यचकित होना न भूलें। अपने दिल में धैर्य रखें और सोचें कि यह [भगवान की सबसे शानदार व्यक्तिगत शक्ति] श्री सीताजी और [सभी ब्रह्मांडों के सर्वोच्च भगवान] श्री रामचन्द्रजी का विवाह है। उनका नाम लेते ही संसार के सारे भूत कट जाते हैं और चारों चीजें (धन, धर्म, काम, मोक्ष) उनकी मुट्ठी में आ जाती हैं, वे जगत के माता-पिता श्रीसीतारामजी हैं; यह बात काम के शत्रु भगवान शिव ने कही।

इस प्रकार भगवान शिव ने देवताओं को समझाया और फिर अपनी सर्वोत्तम लता नंदीश्वर को आगे बढ़ाया। देवताओं ने देखा कि दशरथजी मन में अत्यंत प्रसन्न और शरीर में रोमांच लिये हुए चल रहे हैं। उनके साथ-साथ ऋषि-मुनियों और ब्राह्मणों की मंडली ऐसी शोभा दे रही थी, मानो वे अपने शरीर के समस्त सुखों से उनकी सेवा कर रहे हों। चारों सुन्दर पुत्र एक साथ ऐसे सुशोभित हैं मानो वे पूर्ण मोक्ष (सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य) का शरीर धारण कर रहे हों।

पन्ना और सोने के सुन्दर जोड़े देखकर देवताओं को भी कम प्रेम नहीं हुआ (अर्थात् बहुत प्रेम हुआ)। तब वे रामचन्द्रजी को देखकर मन में बहुत प्रसन्न हुए और राजा की प्रशंसा करके पुष्पों की वर्षा करने लगे। श्री रामचन्द्र जी के सुन्दर रूप को बार-बार नाक से नाक तक देखकर पारबती जी सहित श्री शिव जी का शरीर रोमांचित हो गया और उनकी आँखों में प्रेम के आँसू भर आये। उत्साह से भर गया.

रामजिका मोराके का गले जैसा चमकीला [हरा] काला शरीर है। बेहद इलेक्ट्रिक. जो लोग अनादर कर रहे हैं वे चमकीले, सुंदर [पीले] रंग के कपड़े पहने हुए हैं। विवाह के सभी प्रकार के आभूषण शरीर पर सुन्दर रूप और हर प्रकार से सुशोभित होते हैं। सारा सौन्दर्य अलौकिक है। (माया निर्मित नहीं है, वह दिव्य सच्चिदानंदमयी है) वह कहीं नहीं जा सकती, वह मन को अत्यंत प्रिय लगती है।

उनके साथ मनोहर भाई शोभित भी हैं, जो घोड़ों को नचाते हुए चल रहे हैं। राजकुमार उत्तम घोड़ों को (उनकी चाल) दिखा रहा है और वंश (मगध-भाट) की प्रशंसा करने वाला विरुदावली का पाठ कर रहा है। जिस घोड़े पर श्री रामजी बैठे हैं उसकी (तेज) चाल को देखकर गरुड़ भी लज्जित हो जाते हैं, उस सबका वर्णन नहीं किया जा सकता। बहुत सुन्दर. ऐसा लगता है मानों कामदेव ने ही घोड़े का रूप धारण कर लिया हो।

ऐसा प्रतीत होता है मानो कामदेव घोड़े के भेष में श्री रामचन्द्रजी को अत्यंत सुन्दर लग रहे हों। वह । वह अपनी स्थिति, शक्ति, रूप, गुण और गति से

समस्त लोकों को मोहित कर रहा है। सुंदर मोतियों, रत्नों और माणिकों से जड़ा हुआ वह रत्न प्रकाश से चमक रहा है। उसके सुंदर घुंघराले पतले लगाम को देखकर देवता, मनुष्य और ऋषि-मुनि सभी धोखा खा जाते हैं।

भगवान की इच्छा में मन लगाकर चलता हुआ वह घोड़ा बहुत सुंदर लग रहा है। मानो तारों और बिजली से भरे हुए बादल सुन्दर मयूर नृत्य कर रहे हों। श्री रामचन्द्रजी जिस उत्तम घोड़े पर सवार हैं उसका वर्णन सरस्वती भी नहीं कर सकतीं। शंकरजी ने, जब भगवान विष्णु ने प्रेमपूर्वक श्रीराम को देखा, तब वे स्मृतिस्वरूप हो गये; श्री लक्ष्मी जी सहित उनके पति भी श्री लक्ष्मी जी पर मोहित हो गये। श्री रामचन्द्रजी की सुन्दरता देखकर ब्रह्माजी बहुत प्रसन्न हुए और यह जानकर पश्चाताप करने लगे कि उनकी केवल आठ आँखें हैं।

देवताओं के सेनापति स्वामीकार्तिक के हृदय में बड़ा उत्साह है, क्योंकि वह भगवान ब्रह्मा की आंखों यानी बारह आंखों के माध्यम से राम को देखने का सुंदर लाभ उठा रहे हैं। सुजान इन्द्र श्री रामचन्द्रजी की ओर सहस्त्र नेत्रों से देख रहे हैं और गौतमजी के शाप को अपने लिये सर्वोपरि मान रहे हैं। सभी देवता देवराज इच्छाद्र से ईर्ष्या करते हैं और कह रहे हैं; कि आज इन्द्र के समान भाग्यशाली कोई नहीं है। श्री रामचन्द्र को देखकर देवता प्रसन्न होते हैं और दोनों राजाओं के समाज में विशेष हर्ष होता है।

दोनों ओर से राज समाज में बड़ा हर्ष है और जोर-जोर से ढोल बजाए जा रहे हैं। देवता प्रसन्न होकर 'रघुकुलमणि श्री राम की जय हो, जय हो, जय हो' कहकर पुष्प वर्षा कर रहे हैं। इस प्रकार यह सुनकर कि बारात आ रही है, नाना प्रकार के बाजे बजने लगे और रानी सुहागिन स्त्रियों को बुलाकर परखने के लिये मंगल जल तैयार करने लगी।

गजगामिनी की अनेक प्रकार से आरती करके तथा यथायोग्य सभी मदनालद्रव्यों को सजाकर सजाया जाता है। (हाथी जैसी चाल) कुलीन स्त्रियाँ आनंदु की पूर्वोक्त परीक्षा के लिए गईं। सभी स्त्रियाँ चन्द्रमुखी (चन्द्रमा के समान मुख वाली) तथा सभी मृगलोचनी (हिरण के समान आँखें) हैं तथा सभी अपने शरीर के सौन्दर्य से रति के गौरव को तृप्त करने वाली हैं। उन्होंने विभिन्न रंगों की खूबसूरत साड़ियां पहनी हुई हैं और सारे आभूषण उनके शरीर पर सुशोभित हैं.

वह अपने समस्त अंगों को सुन्दर मंगलमय वस्तुओं से सजाकर कोयल को भी लज्जित कर रही थी। वह मधुर गा रही है. कंगन, करधनी और पायल बज रहे हैं।

खत्रियों की चालें देखकर कामदेव के हाथी भी लज्जित हो जाते हैं। अनेक प्रकार के बाजे बज रहे हैं, आकाश और नगर में सुन्दर-सुन्दर अभिनंदन हो रहे हैं। शची (इंद्राणी), सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती और जो स्वभाव से पवित्र और बुद्धिमान देवियाँ थीं,

वे सभी धोखे से सुंदर स्त्री का रूप धारण कर उसके पति के घर गईं और मधुर स्वर में भजन गाने लगीं। सभी लोग हर्ष के विशेष प्रभाव में थे इसलिए कोई भी उसे नहीं पहचानता था। कौन किसको जानता है? बहुत खुश होकर सभी दुल्हनें ब्रह्मा की परीक्षा लेने गईं। एक सुन्दर गीत गाया जा रहा है. मधुर नगाड़े बज रहे हैं, देवता पुष्प वर्षा कर रहे हैं, बड़ा सौंदर्य है। दूल्हे को प्रसन्न देखकर सभी स्त्रियाँ मन ही मन प्रसन्न हो गईं। उसकी कमल-जैसी आँखों में प्रेम का जल उमड़ आया और उसके सुन्दर होठों में प्रेम की सुगंध भर गई।

श्रीगमचन्द्रजी का क्रोध देखकर सीताजी की माता सुनयनाजी को जो प्रसन्नता हुई, उसे सैकड़ों कल्पों में हजारों सरखति और शेषजी या करोड़ों सरस्वती और शेषजी में भी व्यक्त नहीं किया जा सकता। शुभ अवसर जानकर रानी अपनी आँखों के आँसू रोककर प्रसन्न मन से निरीक्षण कर रही है। रानी ने वेदों में बताए गए और रीति-रिवाजों के अनुसार सभी अनुष्ठान अच्छे से किए।

पन्ननाबद (इन पांच प्रकार के वाद्ययंत्रों के शब्द - तांती, ताल, झांस, नागर और तुरही), पदजध्वनि (वेधध्वनि, वंदिध्वनि, जयध्वनि, शाहगबध्वनि और हलुध्वनि) और मज्जलगान का प्रदर्शन किया जा रहा है। तरह-तरह के जानवरों के कदम पड़ रहे हैं. उन्होंने (रानी ने) आरती की और प्रार्थना की, फिर श्री रामजी ने मंडप में प्रवेश किया. दशरथजी अपने समूह के साथ बैठ गये। उनका वैभव देखकर लोकपाल भी लज्जित हो गये। समय-समय पर देवता पुष्प वर्षा करते हैं और भूदेव ब्राह्मण समयानुसार शान्ति पाठ करते हैं।

आसमान और शहर में शोर है. कोई किसी की बात नहीं सुनता, चाहे अपनी हो या पराया। इस प्रकार श्री रामचन्द्रजी मंडप में आये और अर्घ्य देकर उन्हें आसन पर बैठाया गया। खत्रियों को आसन पर बैठकर, आरती करके तथा दूल्हे को देखकर प्रसन्नता हो रही है। वह ढेर सारे रत्न और आभूषण पहनकर मद्जाल गा रही है। ब्रह्मा और अन्य महान देवता ब्राह्मण के भेष में कौतुक को देख रहे हैं। वे रघुकुल कमल के रूप में खिले हुए सूर्य श्री रामचन्द्रजी की छवि को देखकर अपने अधिकारों को जान रहे हैं।

नाई, बारी, भाट और कलाबाज़ श्री रामचन्द्रजी का आशीर्वाद पाकर प्रसन्न होते हैं और सिर झुकाकर आशीर्वाद देते हैं; उसके हृदय में कोई खुशी नहीं है. जनक

जी और दशरथ जी सभी वैदिक और लोक अनुष्ठान करके बड़े प्रेम से मिले। दोनों राजा एक-दूसरे से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए और कवि को उनके लिए उपमाएँ गढ़ते हुए शर्मिंदगी महसूस हुई। जब उसे कहीं तुलना नहीं मिली तो उसने मन ही मन हार मान ली और मन ही मन निश्चय कर लिया कि वह उनके जैसा ही है। समधियों का मिलन अथवा परस्पर सम्बन्ध देखकर देवता मोहित हो गये और पुष्प वर्षा करके उनकी स्तुति करने लगे।

[वे कहने लगे--] जब से ब्रह्माजी ने सृष्टि रची है, तब से हमने अनेक विवाह देखे और सुने हैं; लेकिन आइए आज ही देखें समाधि, जो समाज में समान है और हर तरह से समान है। देवताओं के सुन्दर सत्य को सुनकर दोनों ओर अलौकिक प्रेम उत्पन्न हो गया। जनक जी आदरपूर्वक दशरथ जी को सुन्दर चरणों और अर्घ्य देकर मंडप में ले आये।

मण्डप को देखकर ऋषियों का मन भी उसकी विचित्र रचना और सौन्दर्य पर मोहित (मोहित) हो गया। सुजान जनकजी ने अपने हाथों से सबके लिए सिंहासन लाकर रखे। उन्होंने प्रसन्न मन से अपने राजा वामदेव तथा अन्य ऋषियों की पूजा की। सभी को दिव्य आसन दिये और सभी से आशीर्वाद प्राप्त किया। तब उन्होंने कोसलधीश राजा दशरथजी को भगवान (महादेवजी) के समान मानकर उनकी पूजा की, उनके मन में कोई अन्य भावना नहीं थी। इसके बाद [अपने सम्बन्धियों द्वारा अपने भाग्य और वैभव के विस्तार की सराहना करते हुए, उन्होंने हाथ जोड़कर प्रार्थना की और शेखी बघारी।

राजा जनकजी ने अपने मित्र दशरथजी के समान सभी बारातियों का सब प्रकार से आदर-सत्कार किया और सभी को उचित स्थान दिया। मैं उस उत्साह को एक शब्द में कैसे बयां कर सकता हूं?

राजा जनक ने दान, आदर, नम्रता तथा उत्तम वाणी से सारी बारात का सत्कार किया। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, दिक्पाल और सूर्य जो श्रीरघुनाथजी के प्रभाव को जानते हैं। वे कपटपूर्वक ब्राह्मणों का भेष बनाकर बड़े आनन्द से सारा नाटक देख रहे थे। जनकजी ने उन्हें देवता मानकर उनकी पूजा की और बिना पहचाने भी उन्हें सुन्दर आसन दिये।

कौन किसको जानता है? हर कोई अपने बारे में भूल गया है. दूल्हे को खुश देखकर दोनों पक्षों में खुशी का माहौल है। सुजान (सर्वज्ञ) श्री रामचन्द्रजी ने देवताओं को पहचान लिया और उनकी मानसिक पूजा करके उन्हें मानसिक आसन दिये। भगवान का विनम्र स्वभाव देखकर देवता मन ही मन बहुत प्रसन्न

हुए। सबके सुन्दर नेत्र-रूपी चकोर श्री रामचन्द्रजी के मुखरूपी चन्द्रमा की छवि को आदरपूर्वक पी रहे हैं; प्यार और ख़ुशी भी कम नहीं है यानी बहुत है.

समय देखकर वशिष्ठजी ने शतानन्दजी को आदरपूर्वक बुलाया। सुनकर वे आदर भाव से आये। वसिष्ठजी ने कहा---अब जाओ और राजकुमारी को शीघ्र ले आओ। ऋषि की आज्ञा पाकर वह प्रसन्नतापूर्वक चला गया। पुजारी की बातें सुनकर बुद्धिमान रानी और उसकी सहेलियाँ बहुत प्रसन्न हुईं। उसने ब्राह्मणों और कुल की वृद्ध स्त्रियों को बुलाकर कुल का अनुष्ठान कराया और सुन्दर मंगल गीत गाये।

जो श्रेष्ठ देवियाँ सुन्दर मानवी नारियों के भेष में हैं, वे सभी स्वभाव से सुन्दर और श्यामला (सोलह वर्ष की) हैं। उन्हें देखकर रनिवास की स्त्रियाँ प्रसन्न होती हैं और उन्हें पहचाने बिना ही वे सभी को अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय हो जाती हैं। रानी उसे पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती के समान मानकर उसका बार-बार आदर करती है। रनिवास की स्त्रियों और सखियों ने सीताजी को सजाया, भीड़ बनाई और प्रसन्नतापूर्वक उन्हें मण्डप में ले गईं।

सुंदर मकालका पोशाक पहनकर [रनिवास की] स्त्रियाँ और सखियाँ सीताजी को आदर सहित ले गईं। सभी सुन्दरियाँ सोलह सुसज्जित मतवाले हाथियों की भाँति चल रही हैं, उनके सुन्दर गीत सुनकर ऋषि-मुनि ध्यान करना बन्द कर देते हैं और कामदेव के अंगारे भी लज्जित हो जाते हैं। पायल, झुमके और खूबसूरत चूड़ियाँ तालकी की लय पर बहुत खूबसूरती से बज रही हैं।

स्वाभाविक रूप से सुन्दर सीताजी स्त्रियों के समूह को इस प्रकार सुशोभित कर रही हैं, मानो सुन्दर कन्याओं के समूह के बीच में साक्षात् परम सुन्दरी स्वरूपा स्त्री सुशोभित हो रही हो। सीताजी की सुन्दरता का वर्णन नहीं किया जा सकता, क्योंकि बुद्धि बहुत छोटी है और सुन्दरता बहुत बड़ी है। बारात में सीताजी आती हुई दिखाई दीं, धन-धान्य से सम्पन्न और सब प्रकार से पवित्र।

सभी ने उन्हें मन ही मन सलाम किया। श्री रामचन्द्रजी के दर्शन से सब कार्य पूर्ण हो गये। राजा दशरथजी अपने पुत्रों सहित प्रसन्न हुए। उनके हृदय में कितनी खुशी है, उसे व्यक्त नहीं किया जा सकता। देवतागण प्रणाम करके पुष्पवर्षा कर रहे हैं। मंगल ग्रह के मूल ऋषियों का आशीर्वाद सुनने को मिल रहा है। गानों और ढोल की आवाज से बहुत शोर होता है. सभी नर-नारी प्रेम और आनंद में डूबे हुए हैं।

कुलाचार करने से गुरुजी प्रसन्न होते हैं और गौरीजी, गणेशजी तथा ब्राह्मणों का पूजन करते हैं। [या ब्राह्मण गौरी और गणेश की पूजा करवा रहे हैं।] देवता प्रकट होते हैं और पूजा प्राप्त करते हैं, आशीर्वाद देते हैं और अत्यधिक प्रसन्न होते हैं। साधु को जब भी मधुपर्क आदि किसी शुभ भोजन की इच्छा होती है तो सेवक उस वस्तु को सोने के थालों और कलशों में भरकर ले जाने के लिए तैयार हो जाते हैं।

सूर्यदेव स्वयं अपने कुल की सभी रीतियों को प्रेम से बताते हैं और उन सभी का आदरपूर्वक पालन करते हैं। इस प्रकार देवताओं की पूजा करके ऋषियों ने सीताजी को एक सुन्दर सिंहासन दिया। श्री सीता जी और श्री राम जी का एक दूसरे को देखना और उनका परस्पर प्रेम देखना किसी से भी नहीं छूटता। जो सर्वोत्तम मन, बुद्धि और वाणी से भी परे है, उसे कवि को कैसे अभिव्यक्त करना चाहिए?

हवन के समय अग्निदेव अग्नि का रूप धारण कर बड़ी प्रसन्नता से आहुति स्वीकार करते हैं और ब्राह्मण के भेष में सभी वेदों का ज्ञान कराते हैं तथा विवाह की विधि बताते हैं। जनकजी की विश्वविख्यात रानी और सीताजी की माता की बात कैसे की जा सकती है। विधाता ने सभी आशीर्वाद, गुण, खुशियाँ और सुंदरता को एकत्रित करके खूबसूरती से तैयार किया है। समय जानकर महर्षियों ने उन्हें बुलाया। यह सुनकर विवाहिता खत्रीयान उसे आदरपूर्वक ले आई। जनकजी के बाईं ओर सुनैनाजी (जनकजी की रानी) इस प्रकार शयन कर रही हैं मानो मैनाजी हिमाचल से सुशोभित हों।

राजा और रानी ने प्रसन्नतापूर्वक अपने हाथों से शुद्ध, सुगन्धित और मंगलकारी जल से भरे हुए स्वर्ण कलश तथा सुंदर मोतियों के थाल लाकर श्री रामचन्द्रजी के सामने रख दिये। मंगल वाणी सहित वेद पढ़ रहा है। शुभ अवसर को भांपते हुए आकाश से फूलों की वर्षा होने लगी। दूल्हे को देखकर राजा-रानी को प्रेम हो गया और वे उसके पवित्र चरण धोने लगे।

वह श्री रामजी के चरणकमलों को सहलाने लगा, उसका शरीर पवित्र प्रेम से भर गया। आकाश और नगर में गीतों, ढोलों और जयकारों की ध्वनि सभी दिशाओं में फैलती हुई प्रतीत हो रही थी। जो कामदेव के शत्रु श्री शिवजी के हृदयरूपी सरोवर में सदैव निवास करते हैं, उन चरणकमलों का एक बार भी स्मरण करने से मन में पवित्रता आ जाती है और कलियुग के सारे पाप दूर हो जाते हैं।

जिनके स्पर्श से पतित गौतम ऋषि की पत्नी अहल्याण परम गति को प्राप्त हुई, जिनके चरण कमल भगवान शिव के मस्तक पर विराजमान हैं, देवता जिन्हें

पवित्रता की सीमा कहते हैं; हमारे ऋषि-मुनि और योगी। मन को बांस बनाकर चरण कमलों का सेवन करने से मनुष्य को अभीष्ट गति प्राप्त होती है; सौभाग्य के पात्र जनकजी उन चरणों को धो रहे हैं। इसे देखकर हर कोई जय-जयकार कर रहा है.

दोनों कुलों के गुरुओं और लड़की ने अपनी हथेलियाँ जोड़ लीं और धर्मग्रंथों का पाठ करना शुरू कर दिया। ग्रहण होते देख ब्रहमादि, देवता, मनुष्य तथा ऋषिगण हर्ष से भर गये। सुख के स्रोत वर-वधू को देखकर राजा-रानी का शरीर पुलकित हो गया और हृदय आनंद से खिल उठा। महाराज जनकजी ने राजाओं के आभूषण के रूप में लोक और बवेदा का अनुष्ठान किया और अपनी कन्या का दान किया।

जैसे हिमवान ने पार्वतीजी को भगवान शिव को और सागर ने लक्ष्मीजी को भगवान विष्णु को दे दिया था, उसी प्रकार जनकजी ने सीताजी को श्री रामचन्द्रजी को समर्पित कर दिया था, जिससे संसार भर में एक सुंदर नई कीर्ति फैल गई। विदेह (जनकजी) कैसे निवेदन करें! उस काली मूर्ति ने वास्तव में उसे विदेह (शरीर की इंद्रियों से रहित) बना दिया। विधिवत हवन किया गया और गठबंधन बनाए गए और भँवरें पड़नी शुरू हो गईं.

जय ध्वनि, वन्दि ध्वनि, वेद ध्वनि, मदल गायन और ढोल की ध्वनि सुनकर चतुर देवता प्रसन्न हो रहे हैं और कल्पवक्ष के पुष्पों की वर्षा कर रहे हैं। दूल्हा-दुल्हन सुंदर बवंडर दे रहे हैं. हर कोई आदरपूर्वक [उसकी ओर देखते हुए] आँखों का भरपूर लाभ उठा रहा है। इस प्यारी जोड़ी का वर्णन नहीं किया जा सकता, मैं जो भी तुलना कहूंगा वह सीमित होगी।

रत्नों के खंभों में श्री रामजी और श्री सीताजी की सुंदर छायाएँ चमक रही हैं, मानो कामदेव और रति अनेक रूपों में श्री रामजी का अनोखा विवाह देख रहे हों। उन्हें (कामदेव और रति को) देखने की इच्छा और झिझक भी कम नहीं है (अर्थात् बहुत हैं); इसीलिए वे बार-बार प्रकट होते हैं और छिप जाते हैं। सभी दर्शक आनंद में मग्न हो गये और जनकजी की भाँति सभी अपनी सुध-बुध भूल गये।

ऋषियों ने प्रसन्नतापूर्वक भँवरें घुमाईं और नेग सहित सभी अनुष्ठान पूर्ण किये। श्री रामचन्द्रजी सीताजी के मस्तक पर सिन्दूर लगा रहे हैं; इस सुंदरता को किसी भी तरह से खोया नहीं जा सकता। ऐसा लगता है मानो कमल को लाल पराग से भर कर साँप अमृत के लोभ से चन्द्रमा को निगल रहा हो। , यहां श्री राम के हाथ की उपमा कमल के समान, संदुर की पराग के समान, श्री राम की

काली भुजा की सर्प की तथा सीताजी के मुख की चंद्रमा के समान की गई है। तब वशिष्ठजी ने आज्ञा दी, तब वर-वधू एक आसन पर बैठे।

श्री रामजी और जानकीजी उत्तम आसनों पर बैठे; उन्हें देखकर दशरथजी मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए। उनके सुन्दर कल्पवृक्ष में नये-नये फल [आते] देखकर उनका शरीर बार-बार रोमांचित हो रहा है। चौदहों भुवन उत्साह से भर गये; सबने कहा कि श्री रामचन्द्रजी का विवाह हो गया है। जीभ एक है और यह जीभ महान है; तो फिर, इसका वर्णन करके इसका अंत कैसे किया जा सकता है?

वशिष्ठजी की आज्ञा पाकर जनकजी ने विवाह का सामान सजाकर मांडवीजी, श्रुतकीर्तिजी को दे दिया। उर्मिलाजी- इन तीनों राजकुमारियों को बुलाया. राजा जनक ने प्रेमपूर्वक भरतजी का विवाह कुशध्वज की बड़ी पुत्री मांडवीजी से किया, जो गुण, ज्ञान, सुख और सौंदर्य की प्रतिमूर्ति थीं। उन्होंने जानकीजी की छोटी बहन उर्मिलाजी को समस्त सुन्दरियों में शिरोमणि मानकर सब प्रकार से कन्याओं का आदर-सत्कार किया और उसका विवाह लक्ष्मणजी से कर दिया; और जिसका नाम श्रुतकीर्ति है तथा जिसके नेत्र सुन्दर हैं, सुन्दर मुख है, जो समस्त गुणों तथा सौन्दर्य तथा शील से सम्पन्न है, राजा ने उसका विवाह शत्रुघ्न के साथ कर दिया।

दूल्हा-दुल्हन अपने-अपने मेल खाते जोड़े को देखकर मन ही मन खुश हो रहे हैं। सभी लोग प्रसन्न होकर उसकी सुन्दरता की सराहना कर रहे हैं और देवता पुष्पों की वर्षा कर रहे हैं। एक ही मण्डप में सुन्दर दूल्हों सहित सभी सुन्दरी वधूएँ ऐसी शोभा का आनन्द ले रही हैं, मानो चारों अवस्थाएँ (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय) अपने चार स्वामियों (विश्व) के साथ जीव के हृदय में विद्यमान हैं। , तेजस, प्राज्ञ और ब्रह्मा)।

सभी पुत्रों सहित बहुओं को देखकर अवधनरेश दशरथजी ऐसे प्रसन्न हो रहे हैं मानो उन्हें राजाओं के राज्याभिषेक (यज्ञ क्रिया, श्राद्ध क्रिया, योग) सहित चारों फलों (धन, धर्म, काम और मोक्ष) की प्राप्ति हो गई हो। क्रिया और ज्ञान क्रिया)। जिस प्रकार श्री रामचन्द्रजी के विवाह समारोह का वर्णन किया गया था, उसी प्रकार सभी राजकुमारों का विवाह हुआ। अतिरिक्त दहेज का कोई उल्लेख नहीं है; पूरा मंडप सोने और रत्नों से भर गया।

अनेक कम्बल, वस्त्र तथा सब प्रकार के विचित्र रेशमी वस्त्र, जिनका कोई कम मूल्य नहीं था (अर्थात् बहुत मूल्यवान थे) तथा हाथी, रथ, घोड़े, दास-दासियाँ तथा आभूषणों से सुसज्जित कामधेनु जैसी गौएँ-[आदि] बहुत सी वस्तुएँ हैं . , उन्हें कैसे गिनें। उनका वर्णन नहीं किया जा सकता; ये तो वही जानते हैं

जिन्होंने देखा है. उसे देखकर लोकपाल भी भयभीत हो गये। अवध नरेश दशरथ जी ने हर बात को खुशी समझकर सहर्ष स्वीकार कर लिया।

वह भिखारियों को दहेज की सामग्री दे देती थी, जो भी उन्हें पसंद आता था। जो कुछ बचा वह जनता भवन में आ गया। तब जनकजी ने हाथ जोड़कर धीमी आवाज में पूरी बारात का आदर करते हुए कहा, राजा जनक ने पूरी बारात का आदर-सत्कार, दान, शील और वैभव से आदर-सत्कार करके बड़ी प्रसन्नता से सारी बारात का सत्कार (दुलार) किया। ऋषियों के समूह की पूजा तथा वन्दना करना | सिर झुकाकर देवताओं को मनाने के बाद राजा ने हाथ जोड़कर सभी से कहा कि देवता और ऋषि-मुनि तो केवल भाव चाहते हैं (वे तो प्रेम से ही प्रसन्न हो जाते हैं, उन सिद्ध महात्माओं को कोई कुछ भी देकर कैसे संतुष्ट कर सकता है); क्या जल का एक जल देकर भी समुद्र तृप्त हो सकता है?

इन लड़कियों को बच्चों की तरह समझो और उनके साथ अच्छा व्यवहार करो। मैंने तुम्हें यहाँ बुलाकर बड़ा दुस्साहस किया, कृपया मेरा अपराध क्षमा करें। तब सूर्यकुल के रत्न दशरथजी ने समधी जनकजी को सर्व सम्मान का खजाना बना दिया (उन्होंने उनका इतना आदर किया कि वे सम्मान के भण्डार बन गये)। उनका आपसी सम्मान शब्दों से परे है, दोनों के दिल प्यार से भरे हुए हैं।

देवता फूल बरसा रहे हैं; राजा प्रजा के पास गया। ढोल, तालियाँ और बेदों की ध्वनि हो रही है; आकाश और नगर दोनों में बड़ी उमंग (खुशी) मच गई, तब मुनिध्वर की आज्ञा पाकर सुन्दर सखियाँ मदल गीत गाती हुई वर-वधूओं के साथ कोहबर में चली गईं। सीताजी बार-बार रामजी की ओर देखती हैं और लज्जित होती हैं; लेकिन उसका मन नहीं हिचकिचाता. उसकी प्रेम की प्यासी आँखें सुंदर मछलियों की छवि देख रही हैं।

श्री रामचन्द्रजी का सांवला शरीर स्वभाव से ही सुन्दर है। उसका सौन्दर्य लाखों कामदेवों को लज्जित कर देता है। महावरस से सुशोभित चरण कमल अत्यंत सुहावने लगते हैं, जिन पर ऋषियों के मन का प्रभात सदैव दृष्टिगोचर होता है। पवित्र और सुंदर पीली धोती सुबह के सूरज और बिजली की रोशनी को अवशोषित करती है। कमर के चारों ओर सुंदर किंकिणी और कटिसूत्र हैं। विशाल भुजाएँ सुन्दर आभूषणों से सुसज्जित हैं।

पीला जनेऊ अत्यंत शोभा प्रदान कर रहा है। हाथ की अंगूठी मन चुरा लेती है। शादी के सभी साजो-सामान से सजे-धजे वे बेहद खूबसूरत लग रहे हैं। हृदय पर पहने सुंदर आभूषण चौड़ी छाती पर शोभा बढ़ाते हैं। पीला दुपट्टा कनखासोती (एक पवित्र धागे की तरह) से सजाया गया है, जिसके दोनों सिरों पर रत्न और

मोती लगे हुए हैं। उसकी कमल के समान सुंदर आंखें हैं, कानों में सुंदर कुंडल हैं और उसका चेहरा सारी सुंदरता का खजाना है।

सुंदर भौहें और सुंदर नाक है। माथे पर तिलक सुंदरता का घर है। जिसमें नाजुक मोती और रत्न गुथे हुए हैं, ऐसा सुन्दर मोर मस्तक पर सो रहा है। सुंदर मोर में जड़े हैं अनमोल रत्न, सारे ड्रेगन दिल चुरा लेते हैं। नगर की सभी स्त्रियाँ और देवियाँ दूल्हे को देखकर तिनके तोड़ रही हैं (उसके बाल उतार रही हैं) और वस्त्र, वस्त्र और आभूषण उतारकर आरती कर रही हैं और मदम गीत गा रही हैं। ईश्वर। पुष्पवर्षा हो रही है और सूत, मगध और भाट सुयश का पाठ कर रहे हैं।

विवाहित स्त्रियाँ सुख पाकर कुंवारियों और कुमारियों को कोहबर (कुल देवता का स्थान) में ले आईं और बड़े प्रेम से मग्यलगीत गाकर सांसारिक अनुष्ठान करने लगीं। पार्वतीजी श्री रामचन्द्रजी को लहकार (वर-वधू का गले मिलना) सिखाती हैं और सरस्वतीजी सीताजी को सिखाती हैं। रनिवास हास्य और विलासिता के आनंद में डूबा हुआ है, [श्री रामजी और सीताजी को देख रहा है। प्रत्येक व्यक्ति जन्म के परम फल को प्राप्त कर रहा है।

उनके हाथ के रत्नों में सुन्दर सौन्दर्य के भण्डार श्री रामचन्द्रजी की छाया दिखाई देती है। यह देखकर जानकीजी दर्शन में वियोग के भय से बहुरूपी लता और दृष्टि को नहीं हिलातीं। उस समय के हँसी-खेल और विनोद के आनन्द और प्रेम का वर्णन नहीं किया जा सकता, केवल मित्र ही जानते हैं। इसके बाद दूल्हा-दुल्हन की सभी खूबसूरत सहेलियां उन्हें जनवासे में ले गईं.

उस समय नगर और आकाश में जहां कहीं भी सुनो, वहीं आशीर्वाद की ध्वनि सुनाई देती है और बड़ा आनन्द होता है। सभी ने प्रसन्न मन से कहा कि चारों खूबसूरत जोड़ियां अमर रहें। भगवान रामचन्द्रजी को देखकर योगिराज, सिद्ध, मुनीश्वर तथा देवताओं ने दुन्दुभी बजाई और प्रसन्न होकर पुष्प वर्षा की तथा 'जय हो, जय हो, जय हो' कहते हुए अपने-अपने लोक को चले गये।

तब चारों (चारों) कुमार बहुओं सहित पिता के पास आये। ऐसा लग रहा था मानों लोग धूमधाम, हर्ष और उल्लास से भरे हुए निकले हों। फिर कई तरह की रसोई बनाई गईं. जनक जी ने बारातियों को बुलाया। राजा दशरथजी अपने पुत्रों सहित चले गये। अतुलनीय बखनारों के चरण पड़ते रहते हैं। आदरपूर्वक सबके पैर धोये और सबको उनके योग्य स्थान पर बैठाया। तब जनकजी ने अवधपति दशरथजी के चरण धोये। उनकी शील और दयालुता का वर्णन नहीं किया जा सकता।

फिर श्री रामचन्द्रजी के चरणकमलों को धोया, जो श्रीशिवजी के हृदयकमल में छिपे हैं। जनकजी ने तीनों भाइयों को श्री रामचन्द्रजी के समान जानकर अपने हाथों से उनके चरण धोये। राजा जनकजी ने सभी को उचित स्थान दिया और अपने प्रिय सभी लोगों को बुलाया। पत्तियाँ आदरपूर्वक गिरने लगीं, जो रत्नों की पत्तियों में सोने की कीलें लगाकर बनाई गई थीं।

चतुर और विनम्र रसोइयों ने क्षण भर में सबके सामने सुन्दर, स्वादिष्ट और पवित्र दाल, चावल और गाढ़ा घी परोस दिया। सभी को पंचकोरा यानी 'प्राणाय स्वाहा, अपानय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदनाथ स्वाहा और समानाय स्वाहा' मंत्र का जाप करना चाहिए और फिर पांच ग्राम भोजन करना चाहिए। गालियों वाला गाना सुनने के बाद उन्हें प्यार हो गया. अनेक प्रकार के अमृततुल्य व्यंजन परोसे गये जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता।

तातूर रसोइये तरह-तरह के व्यंजन परोसने लगे, उनके नाम कौन जानता है। भोजन के चार प्रकार (चर, चोश्य, लेह, पेय अर्थात् चबाने, चूसने, चाटने और पीने से खाने योग्य) विधियाँ बताई गई हैं, प्रत्येक के लिए इतनी-इतनी वस्तुएँ बनाई गईं कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। छः रसों के अनेक सुन्दर प्रकार (खदिष्ट) व्यक्ति होते हैं। प्रत्येक जूस के अनगिनत प्रकार बनाये जाते हैं। भोजन करते समय लड़कियाँ मधुर स्वर में स्त्री-पुरुषों का नाम लेकर गालियाँ दे रही हैं।

समय का सुखद दुरुपयोग सुन्दर होता जा रहा है। यह सुनकर राजा दशरथजी सहित समाज हंसते हैं। इस प्रकार सभी ने भोजन किया और फिर सभी को आदरपूर्वक आचमन (हाथ-मुंह धोने के लिए जल) दिया गया। फिर पान खिलाकर जनकजी ने समाज सहित दशरथजी का पूजन किया। समस्त राजाओं के मुखिया श्री दशरथजी प्रसन्न होकर जनता के पास गये।

जनकपुर में नित नये मंगल हो रहे हैं। दिन और रात पलक झपकते ही बीत जाते हैं। सभी महान राजाओं के मुकुटमणि दशरथजी जाग उठे। याचक उसका गुणगान करने लगे। चारों कुमारों को उनकी सुन्दर वधुओं के साथ देखकर उनके मन में क्या खुशी हुई? बुलाया जा सकता है? प्रातःकाल नित्यकर्म करके वे गुरु वशिष्ठजी के पास गये। उसका हृदय अत्यंत आनंद और प्रेम से भर गया है।

राजा ने प्रणाम और वन्दना करके फिर हाथ जोड़कर इस प्रकार कहा, मानो अमृत में डूबा हुआ हो; हे मुनिराज! सुनो, आपकी कृपा से आज कार्य पूरा हो गया। फिर वामदेव, देवर्षि नारद, वाल्मिकी, जाबालि और विश्वामित्र जैसे महान तपस्वी ऋषियों के समूह आये। राजा ने सबको प्रणाम किया और प्रेम से

पूजा करके उन्हें उत्तम आसन दिये। चार लाख सर्वोत्तम गायें मंगवाई गईं, जो कामधेनु के समान अच्छे स्वभाव वाली और सुखदायक थीं।

उन सबको सब प्रकार से [आभूषण और वस्त्र] सजाकर राजा ने प्रसन्न होकर भूदेव ब्राह्मणों को दे दिया। राजा अनेक प्रकार से विनती कर रहा है कि मुझे इस संसार में रहने का लाभ आज ही मिला है। ब्राह्मणों से आशीर्वाद पाकर राजा प्रसन्न हुआ। तब उन्होंने भिखारियों के समूह बुलाये और सभी से उनकी रुचि पूछकर उन्हें सोना, वस्त्र, रत्न, घोड़े, हाथी और रथ (जिन्हें जो चाहिए था) देकर दशरथजी को दे दिया, जिससे सर्यकुलम खुश हो गया।

राजा बार-बार विश्वामित्र के चरणों में सिर झुकाकर कहते हैं- हे मुनिवर! ये सभी सुख आपकी कृपा का प्रसाद हैं। राजा दशरथजी जनकजी के प्रेम, शील, दया और ऐश्वर्य की हर प्रकार से सराहना करते हैं। प्रतिदिन [सुबह] अयोध्या के राजा उठते हैं और विदाई लेते हैं। लेकिन जनकजी उन्हें प्रेम से रखते हैं। मान-सम्मान हर दिन बढ़ता है. प्रतिदिन हजारों प्रकार के आतिथ्य सत्कार होते हैं। नगर में नित नवीन हर्ष और उत्साह रहता है, दशरथजी के दर्शन करना किसी को अच्छा नहीं लगता।

कई दिन ऐसे ही बीत गए, मानों बाराती प्रेम की रस्सी से बंध गए हों। तब विश्वामित्रजी और शतानन्दजी ने जाकर राजा जनक को समझाया और कहा- यद्यपि आप स्नेह से इसे वश में कर लेते हैं। यदि आप नहीं जा सकते तो भी अब दशरथजी को आज्ञा दीजिए। हे नाथ! जनक जी ने 'बहुत अच्छा' कहकर मंत्रियों को बुलाया। उन्होंने आकर 'जय जीव' कहकर सिर झुकाया।

[जनकजी ने कहा--] तुम्हें अयोध्यानाथ जाना है तो अंदर (रानी निवास) बता दो। यह सुनकर मंत्री, ब्राह्मण, पार्षद तथा राजा जनक भी प्रेम में पड़ गये।
जब जनकपुरवासियों ने सुना कि बारात जाने वाली है तो वे चिंतित हो गये और एक-दूसरे से पूछने लगे। यह सच है कि यह सुनकर सभी लोग ऐसे उदास हो गये मानो शाम को कमल मुरझा गया हो।

आते समय बारात जहाँ-जहाँ ठहरती थी, वहाँ-वहाँ रसोई का विभिन्न प्रकार का सामान भेज दिया जाता था। अनेक प्रकार के सूखे मेवे, व्यंजन और वर्णन से परे भोज्य पदार्थ असंख्य लताओं और गाड़ियों पर लादकर भेजे जाते थे। जनकजी ने बहुत-सी सुन्दर बिछौने भी भेजीं। एक लाख घोड़े और पच्चीस हजार रथ, सभी (ऊपर से नीचे तक) कीलों से सजाये गये।

जिन्हें देखकर दिशाओं के हाथी भी लज्जित हो जाते हैं, उन दस हजार सुसज्जित मतवाले हाथियों को सोने, वस्त्र और रत्नों से भरी गाड़ियाँ, भैंसें, गायें और बहुत-सी अन्य वस्तुएँ दीं। [इस प्रकार] जनक जी ने फिर अपरिमित दहेज दिया, जो कहा नहीं जा सकता और जिसे देखकर लोकपाल के लोकों की सम्पत्ति भी छोटी लगती थी।

इस प्रकार सारी व्यवस्था करके राजा जनक ने उन्हें अयोध्यापुरी भेज दिया। बारात निकलने की बात सुनते ही सभी रानियाँ ऐसी व्याकुल हो गईं मानो मछलियाँ उथले पानी में छटपटा रही हों। वह बार-बार सीताजी को अपनाती है और उन्हें आशीर्वाद देती है और सीख देती है- तुम सदा अपने पति की प्रियतमा रहो, तुम्हारा दाम्पत्य अटल रहे; यह हमारा आशीर्वाद है.

सास, ससुर और गुरु की सेवा करना। अपने पति का स्वभाव देखकर उनकी आज्ञा का पालन करना। बुद्धिमान स्त्रियाँ निम्न वर्ग के लोगों को कोमल शब्दों और अत्यंत प्रेम से धर्म की शिक्षा देती हैं। सभी पुत्रियों को आदरपूर्वक [परतों का धर्म] समझाकर रानियों ने उन्हें बार-बार अपने हृदय में ले लिया। माताएं बार-बार आती हैं और पूछती हैं कि ब्रह्मा ने नारी जाति क्यों रची।

उसी समय सूर्यवंश के ध्वजवाहक श्री रामचन्द्रजी अपने भाइयों सहित जनकजी को विदा करने उनके महल में गये। नगर के नर-नारी उन चारों भाइयों को देखने के लिए दौड़ पड़े, जो प्राकृतिक रूप से सुन्दर थे। कोई कहता है--वह आज जाना चाहता है। विदेह ने विदाई के लिए सारी चीजें तैयार कर लीं। राजा के चारों पुत्रों, इन प्यारे मेहमानों की सुंदरता को अपनी आँखों से देखो। हे बुद्धिमान! न जाने विधाता ने किस पुण्य से उन्हें यहाँ लाकर हमारी आँखों का मेहमान बनाया है।

जैसे मरने वाले को अमृत, जन्म-जन्मान्तर के भूखे को कल्पवृक्ष और नरक में रहने वाली (अथवा नरक के योग्य) आत्मा को परम पद की प्राप्ति होती है, हमारे लिए उनका दर्शन वैसा ही है। श्री रामचन्द्रजी की शोभा का अवलोकन करो और उसे हृदय में धारण करो। अपने मन को साँपों में और उनकी मूर्तियों को रत्नों में बदलो। इस प्रकार सभी को नेत्रों का फल देकर सभी राजकुमार महल में चले गये।

सभी भाइयों को धन के सागर में डूबा देख सारा गांव खुश हो गया. सास-ससुर बड़ी खुशी से निछावर और आरती करती हैं। श्री रामचन्द्रजी की छवि देखकर वह प्रेम में मग्न हो गयी और प्रेम के वशीभूत होकर बार-बार उनके चरणों में गिरने लगी। दिल में प्यार था और कोई शर्म नहीं बची थी. उनके प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कैसे किया जा सकता है?

उन्होंने अपने भाइयों सहित श्री रामजी को स्नान कराया और बड़े प्रेम से शत्रु को भोजन कराया। शुभ अवसर को भाँपकर श्री रामचन्द्रजी विनम्र, स्नेहमय और सशंकित स्वर में बोले- महाराज अयोध्यापुरी जाना चाहते हैं, उन्होंने हमें विदा करने के लिए यहाँ भेजा है। हे माँ! प्रसन्न मन से आज्ञा दीजिये और हमें अपनी सन्तान समझकर सदैव हमारे प्रति अपना स्नेह बनाये रखिये।

ये बातें सुनकर रनिवास उदास हो गया। सासें प्यार से बोल नहीं पातीं. उसने सब कुँवारियों को अपने हृदय में रख लिया और उन्हें उनके पतियों के हाथ में सौंपकर बहुत विनती की। आप परिपूर्ण हैं, आप सुजानाशिरोमणि हैं और आप प्रेममय हैं (आप प्रेम से प्रेम करते हैं)। हे राम! आप भक्तों के सद्गुणों को स्वीकार करने वाले, दोषों का नाश करने वाले और दया के धाम हैं।

इतना कहकर रानी ने उसके पैर पकड़ लिये और चुप रही। ऐसा जान पड़ता था मानो उनकी वाणी प्रेम के दलदल में डूब गयी हो। उनकी स्नेह-युक्त उत्तम वाणी सुनकर श्री रामचन्द्र जी ने अपनी सास का बहुत प्रकार से आदर-सत्कार किया। तब श्री रामचन्द्र जी ने हाथ जोड़कर बार-बार प्रणाम किया और विदा किया। आशीर्वाद प्राप्त करके और फिर मस्तक नवाकर श्री रघुनाथजी अपने भाइयों के साथ चले गये।

श्री रामजी की सुन्दर और मधुर मूर्ति हृदय में लाकर सभी रानियाँ हँसकर निश्चिंत हो गईं। तब माताएं धैर्य रखकर कुमारियों को बुलाकर बार-बार हृदय से लगाने लगीं। वे अपनी बेटियों को जन्म देते हैं, फिर लौटकर उनसे मिलते हैं। आपस में थोड़ा भी प्यार नहीं रहा (अर्थात बहुत प्यार बढ़ गया)। बार-बार मिलने वाली माँओं को यारों ने ही जुदा कर दिया। ठीक वैसे ही जैसे कोई हाल में ब्याही गई गाय को उसके छोटे बछड़े [या बछिया] से अलग कर दे।

सभी स्त्री-पुरुष और मित्रों सहित संपूर्ण जीवन प्रेम के विशेष प्रभाव में है। ऐसा लगता है मानों करुणा और विरह ने जनकपुर में डेरा डाल दिया है। जिन तोते और मैनाओं को जानकी ने सोने के पिंजरों में रखकर पाला और पढ़ाया था, वे व्याकुल होकर कह रहे हैं- वैदेही कहाँ है? उनकी ऐसी बातें सुनकर कौन अपना धैर्य नहीं छोड़ेगा, अर्थात् सभी का धैर्य समाप्त हो गया।

जब पशु-पक्षी भी इस प्रकार व्याकुल हो जाते हैं तो मनुष्यों की स्थिति का वर्णन कैसे किया जा सकता है? तभी जनकजी अपने भाई सहित वहां आये। प्रेम से अभिभूत होकर उसकी आंखें प्रेम के आंसुओं से भर गईं। उन्हें परम वैरागी कहा जाता था; परन्तु सीताजी को देखकर उनका भी धैर्य छूट गया। राजा ने

जानकीजी को हृदय से लगा लिया। प्रेम के प्रभाव से ज्ञान की महान गरिमा नष्ट हो गई, ज्ञान का बांध टूट गया।

सभी बुद्धिमान मंत्री उन्हें समझाते हैं। तब राजा ने बिना समय जाने दुःखी होने का विचार किया। उन्होंने बार-बार अपनी बेटियों को अपने दिल में लिया और सुंदर ढंग से सजाई गई पालकी मंगवाई। साईं परिवार प्यार से बंधा हुआ है. शुभ मुहूर्त जानकर राजा ने सिद्धि से भगवान गणेश का स्मरण किया और कन्याओं को पालकी में बिठाया। गजने ने बेटियों को बहुत सारी बातें समझाईं और उन्हें खियास धर्म और कुल के रीति-रिवाज सिखाए। अनेक दास-दासियाँ दीं, जो सीताजी की प्रिय एवं विश्वस्त दासियाँ थीं।

सीताजी के चले जाने पर जनकपुर की प्रजा व्याकुल हो गयी। मदालकी राशि शुभ शकुन दे रही है। राजा जनकजी ब्राह्मणों तथा मंत्रियों की टोली को साथ लेकर उनके पास पहुँचे। समय देखकर बाजे बजने लगे। बारातियों ने रथों, हाथियों और घोड़ों को सजाया। दशरथजी ने सभी ब्राह्मणों को बुलाया और उन्हें दान तथा आदर-सत्कार से परिपूर्ण किया।

राजा उनके चरणकमलों की धूलि मस्तक पर लगाकर आशीर्वाद प्राप्त करके प्रसन्न हुए और भगवान गणेश का स्मरण करके चले गये। बादलों से अनेक शकुन उत्पन्न हो रहे थे। देवता हर्षित होकर पुष्पवर्षा कर रहे हैं और अप्सराएँ गा रही हैं। अवधपति दशरथजी खुशी-खुशी नगाड़े बजाते हुए अयोध्यापुरी में चले गये। राजा दशरथ जी ने अनुरोध करके प्रतिष्ठित लोगों को वापस भेज दिया। उसने उन्हें आभूषण, वस्त्र, घोड़े और हाथी दिये तथा प्रेम से पुष्ट करके उन्हें समृद्ध अर्थात् बलवान बनाया।

वे सब बार-बार विरुदावली (कुलकीर्ति) का पाठ करके और श्री रामचन्द्रजी को हृदय में रखकर लौट आये। कोसलाध्यक्ष दशरथजी उन्हें बार-बार पीछे मुड़ने के लिए कहते हैं, लेकिन जनक जी प्रेम के कारण पीछे मुड़ना नहीं चाहते। दशरथ जी पुनः सुखद वचन कहते हैं- हे राजन! बहुत दूर आ गये हो, अब लौट जाओ। फिर राजा. दशरथजी रथ से उतरकर खड़े हो गये। उसकी आँखों में प्रेम की धारा बढ़ गई (प्रेम आँसू की धारा बह निकली)।

तब जनक जी ने हाथ जोड़कर मानो आत्म-रस में डुबाकर कहा- कैसी विनती करूं (किन शब्दों में)। हे महाराज! आपने मुझे बहुत गौरव दिया है. अयोध्यानाथ दशरथजी अपने स्वजन समाधि का हर प्रकार से सम्मान करते थे। उनके मिलन में अत्यंत नम्रता थी और इतना प्रेम था जो हृदय में न समाता था।

जनकजी ने मुनिमंडली को सिर झुकाकर प्रणाम किया और सभी से आशीर्वाद प्राप्त किया। फिर वह अपने सभी भाइयों, दामादों से आदरपूर्वक मिला, उनके सौन्दर्य, शील और गुणों से प्रसन्न हुआ; और सुन्दर कमल के समान हाथ जोड़कर ऐसे वचन बोले मानो प्रेम से उत्पन्न हुए हों। जय रामजी. मैं आपकी स्तुति कैसे कर सकता हूँ! आप मुनि रूपी मानसरोवर के हंस और महादेवजी के मन हैं।

जिनके लिए योगी लोग क्रोध, मोह, मोह और मद का त्याग करके योग का अभ्यास करते हैं, जो सर्वव्यापी, ब्रहम, अव्यक्त, अविनाशी, शाश्वत, गुणों और गुणों के योग से मुक्त हैं, जिन्हें चेतन वाणी नहीं जानती और जिनके बारे में सभी केवल अनुमान लगाते हैं , कोई तर्क नहीं है. . कर सकता है; वेद जिनकी महिमा का वर्णन 'नेति' के रूप में करते हैं और जो [सच्चिदानंद] तीनों स्थिर (सदा और बिना किसी परिवर्तन के) रहते हैं;

वह [आप], सभी खुशियों का स्रोत, मेरी आँखों का विषय बन गया। ईश्वर के अनुकूल होने से इस संसार में प्राणियों को सभी लाभ होते हैं। आपने मुझे हर तरह से बढ़ावा दिया और मुझे अपना मान लिया। यदि दस हजार सरस्वती बची हुई हों और हम करोड़ों कल्पों तक गिनती करते रहें, तो भी हे रघुनाथजी! सुनो, मेरे सौभाग्य और तुम्हारे गुणों की कथा कहने से समाप्त नहीं हो सकती। मैं जो कुछ भी कह रहा हूं वह केवल इसी तथ्य पर आधारित है कि आप बहुत कम प्यार से खुश हो जाते हैं।

मैं बार-बार हाथ जोड़कर विनती करता हूं कि मेरा मन भूलकर भी आपके चरणों का साथ न छोड़े। जनकजी के प्रेम से पुष्ट हुए हुए उत्तम वचन सुनकर पूर्णकाम श्री रामचन्द्रजी संतुष्ट हो गये। उन्होंने सुन्दर निवेदन करके अपने ससुर जनकजी को अपने पिता दशरथजी, गुरु विश्वामित्रजी तथा कुलगुरु वसिष्ठजी के तुल्य मानकर उनका सम्मान किया। तब जनकजी ने भरतजी से अनुरोध किया और उन्हें प्रेमपूर्वक आशीर्वाद दिया।

तब राजा ने लक्ष्मणजी और शत्रुघ्नजी से मुलाकात की और उन्हें आशीर्वाद दिया। परस्पर प्रेम के प्रभाव से वे बार-बार एक-दूसरे से प्रेम करने लगे। जनकजी की बारंबार प्रार्थना और स्तुति करके श्रीरघुनाथजी सभी भाइयों के साथ चले। जनकजो ने जाकर विश्वामित्र के चरण पकड़ लिये और उनके चरणों की धूल अपने मस्तक तथा नेत्रों पर लगा ली।

[उन्होंने कहा--] हे मुनीश्वर! सुनो, तुम्हारे सुन्दर दर्शन से कुछ भी दुर्लभ नहीं है मेरे। ऐसा विश्वास मेरे मन में है. सुख-समृद्धि चाहने वाले लोकपाल; लेकिन

[इसे असंभव मानते हुए]। जिसे चाहने में हमें झिझक होती है वह भगवान है। वही सुख-समृद्धि मुझे उपलब्ध हो गई; सारी सिद्धियाँ आपके दर्शन की अनुयायी हैं अर्थात् पीछे-पीछे चलती हैं। इस प्रकार बार-बार विनती पर सिर झुकाकर और आशीर्वाद प्राप्त करके राजा जनक लौट आये।

ढोल-नगाड़ों की ध्वनि के साथ जुलूस शुरू हुआ। छोटे-बड़े सभी समुदाय खुश हैं। गाँव के नर-नारी श्री रामचन्द्रजी के दर्शन करके और नेत्रों का फल पाकर प्रसन्न होते हैं॥ रास्ते में बीच-बीच में सुन्दर पड़ाव करती हुई और लोगों को सुख देती हुई बारात पवित्र दिन में अयोध्यापुरी के निकट पहुँची। ढोल बजने लगे; सुन्दर ढोल बजने लगे। भेरी और शतद्रु का बड़ा शोर है; हाथी-घोड़े दहाड़ रहे हैं। झाँस विशेष शब्द बना रहे हैं, मनभावन डफ और शहनाईयाँ रसीले रागों से बज रही हैं।

सभी सड़कों पर घास उगी हुई थी और जगह-जगह सुंदर चौराहे बनाए गए थे। बाज़ार को मेहराबों, झंडियों और मंडपों से इस प्रकार सजाया गया था कि वर्णन नहीं किया जा सकता।   सुभग तरु परसत धरनि। पैसे कल कर देना. फलों के साथ-साथ सुपारी, केला, आम, मोलसिरी, कदंब और तमाला के पेड़ लगाए गए। वे सुन्दर वृक्ष [फलों के भार से] पृथ्वी को छू रहे हैं। इनके कीमती पत्थर बेहद खूबसूरत कारीगरी से बनाए गए हैं।

हर घर को सजाने के लिए कई तरह के मंगल कलश बनाए गए हैं। श्रीरघुनाथजी की पुरी (अयोध्या) को देखकर ब्रह्मा आदि सभी देवता उन्हें उपदेश देते हैं। उस समय महल बहुत सुन्दर हो रहा था। उनकी रचना देखकर कामदेव भी मंत्रमुग्ध हो गये। मदल शकुन, सौंदर्य, समृद्धि, सुख, सुखद धन।

और दशरथ जी के घर में सब प्रकार का उत्साह (खुशी) फैल गया है, मानो वे सुन्दर शरीर धारण किये हुए हों। श्री रामचन्द्रजी और सीताजी के दर्शन के लिए अच्छा कहें, कौन नहीं तरसेगा? विवाहित स्त्रियाँ झुंड में चली गईं और कामदेव की पत्नी रतिका का भी अनादर किया, जो उन्हें दिखाई दी थीं। सभी लोग सजा-धजाकर सुंदर मंगल द्रव्य और आरती गा रहे हैं, मानो स्वयं देवी सरस्वती अनेक वेश धारण करके गा रही हों।

राजमहल में [खुशी के मारे] शोर मच गया है। उस समय और ख़ुशी का वर्णन नहीं किया जा सकता. कौशल्याजी तथा श्री रामचन्द्रजी की सभी माताएँ प्रेम के विशेष प्रभाव से अपने शरीर की सुध भूल गईं।   उन्होंने भगवान गणेश और त्रिपुरारी शिव की पूजा करके ब्राह्मणों को खूब दान दिया। वह अत्यंत प्रसन्न हो गई मानो किसी अत्यंत गरीब व्यक्ति को चारों चीजें मिल गई हों।

प्रसन्नता और महान आनन्द से विवश होने के कारण सभी माताओं के शरीर दुर्बल हो गये हैं और उनके पैर चल नहीं पाते। श्री रामचन्द्रजी के दर्शन के अत्यंत प्रेम से भरकर वह सारा सामान सजाने लगी। अनेक प्रकार के वाद्ययंत्र बजाए गए। सुमित्राजी ने खुशी से स्टूल सजाया। हल्दी, घास, दही, पत्ते, फूल, पान और सुपारी आदि मंगल ग्रह की मूल वस्तुएं हैं।

और अक्षत (चावल), अँखुए, गोरोचन, लावा और तुलसी के सुंदर फूलों से सजाया जाता है। अलग-अलग रंगों से रंगे खूबसूरत सुनहरे फूलदान ऐसे लगते हैं जैसे वे कामदेव के हों। पक्षियों ने घोंसला बना लिया होगा। शकुना की सुगन्धित वस्तुओं की जितनी प्रशंसा की जाय कम है। सभी रानियाँ पूरी तरह से सज-धज कर तैयार हैं. वह अनेक प्रकार की आरती उतारकर तथा सुन्दर मंगल गीत गाकर प्रसन्न हुई।

धूप के धुंए से आकाश इतना काला हो गया मानो सावन के बादलों ने घूम-घूमकर उसे ढक लिया हो। देवतागण कल्पवृक्ष के पुष्पों की मालाओं की वर्षा कर रहे हैं। वे ऐसे दिखते हैं जैसे बगुलों की एक पंक्ति मोतियों को [अपनी ओर] खींच रही हो। सुन्दर रत्नों से बने बन्दनवार ऐसे लगते हैं जैसे इन्द्रधनुष से सजे हों। सुन्दर और चपल स्त्रियाँ अटारियों पर प्रकट होती और छिपती (आती और जाती) हैं; वे ऐसे प्रतीत होते हैं मानो बिजली चमक रही हो।

ढोल की ध्वनि बादलों की गड़गड़ाहट के समान है। याचिकाकर्ता पिल्ले, मेंढक और मोर हैं। देवता पवित्र सुगन्धित जल की वर्षा कर रहे हैं, जिससे नगर के सभी नर-नारी किसानों के समान प्रसन्न हो रहे हैं। गुरु वशिष्ठजी ने प्रवेश का समय जानकर आज्ञा दी। तब रघुकुलमणि महाराज दशरथजी ने भगवान शिव, पार्वतीजी और गणेशजी का स्मरण किया और समाज सहित हर्षित होकर नगर में प्रवेश किया।

शकुन किये जा रहे हैं, देवता दुंदुभि बजाकर पुष्प वर्षा कर रहे हैं। देवताओं की स्त्रियाँ खुशी से नृत्य कर रही हैं और सुंदर मदल गीत गा रही हैं। मगध, सूत, भाट और चतुर कलाबाज़ तीनों लोकों के परम आकाशस्वरूप, सबको प्रकाश देने वाले श्री रामचन्द्रजी की स्तुति कर रहे हैं। सुंदर बादलों से सराबोर जय ध्वनि और बेदा की निर्मल एवं उत्कृष्ट ध्वनि दसों दिशाओं में सुनाई दे रही है।

अनेक वाद्ययंत्र बजने लगे। आकाश में देवता और नगर में लोग सभी प्रेम में डूबे हुए हैं। बारातें इतनी विस्तृत होती हैं कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। वह अत्यंत प्रसन्न है, प्रसन्नता उसके मन में प्रवेश ही नहीं करती। तब अयोध्यावासियों ने राजा को प्रणाम किया। श्री रामचन्द्रजी को देखते ही वे

प्रसन्न हो गये। सब लोग रत्न और वस्त्र त्याग रहे हैं। [प्रेमियों की] आँखें आँसुओं से भर जाती हैं और शरीर पुलकित हो जाता है।

नगर की स्त्रियाँ प्रसन्नतापूर्वक आरती कर रही हैं और चारों सुन्दर कुमारों को देखकर प्रसन्न हो रही हैं। पालकी के सुन्दर परदे हटाकर दुल्हनों को देखकर प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार सबको सुख देते हुए वह राजद्वार पर आये। माताएं खुशी-खुशी अपनी बहुओं के साथ बेटों की परीक्षा ले रही हैं।

वह बार-बार आरती कर रही हैं. उस प्रेम और महान आनंद का वर्णन कौन कर सकता है जो विभिन्न प्रकार के आभूषणों, बालों और कपड़ों और अनगिनत अन्य चीजों से बरसता है। चारों पुत्रों को पुत्रियों के साथ देखकर माताएँ परमानंद में मग्न हो गईं। वह बार-बार सीताजी और श्री रामजी की छवि देखकर अपना जीवन सफल समझकर प्रसन्न होती है।

सखियाँ बार-बार सीताजी के मुख की ओर देखकर उनके गुणों का गुणगान कर रही हैं। देवता पुष्पवर्षा करते हैं, नृत्य करते हैं, गाते हैं और हर क्षण अपनी सेवाएँ देते हैं। चार प्यारे जोड़ों को देखकर, सरस्वती ने सभी उपमाएँ खोजीं; परन्तु वह कोई उपमा नहीं दे सका, क्योंकि उसे वे सभी सर्वथा महत्वहीन लगे। तब वह भी हारकर श्री रामजी के रूप को मुग्ध होकर देखती रह गई।

वेदों की रीति और कुल की रीति-नीति का पालन करते हुए माताएँ अपनी बहुओं सहित सभी पुत्रों की परीक्षा करके उन्हें महल में ले गईं। स्वाभाविक रूप से, वहाँ चार सुंदर सिंहासन थे, जिन्हें देखकर ऐसा लगता था जैसे कामदेव ने स्वयं अपने हाथों से उन्हें बनाया हो। उन पर। माताओं ने राजकुमारियों और राजकुमारों को बैठाकर आदरपूर्वक उनके पवित्र चरण धोये।

फिर बेदाकी रीति के अनुसार दूल्हा-दुल्हन की अगरबत्ती, दीप और वेदी आदि से पूजा की गई। माताएं बार-बार आरती कर रही हैं और दूल्हा-दुल्हन के सिर पर सुंदर पंखे और झूमर लगाए जा रहे हैं। बहुत सी चीज़ें छोड़ी जा रही हैं; सभी माताएँ आनन्द से भर गयीं और इतनी सुन्दर हो रही थीं मानो योगी को परम तत्व की प्राप्ति हो गयी हो। मानो सदा से बीमार व्यक्ति को अमृत मिल गया हो।

ऐसा लगता है जैसे जन्म से ही एक गरीब व्यक्ति को परमात्मा की प्राप्ति हो गई हो। अंधे को सुन्दर आँखें मिल गईं। गूंगे व्यक्ति के मुंह पर विश्वास करो. सरस्वती आयीं और वह वीर पुरुष ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसने युद्ध जीत लिया हो। इन सुखों से करोड़ गुना अधिक सुख तो माताओं को मिल रहा है। क्योंकि

रघुकुल के चन्द्रमा श्रीगारामजी विवाह करके अपने भाइयों के साथ घर लौट आये हैं।

माताएं लोक रीति-रिवाजों का पालन करती हैं और दूल्हे-दुल्हन झिझकते हैं। इस महान् हर्ष और विनोद को देखकर श्री रामचन्द्रजी मन ही मन मुस्कुरा रहे हैं। यह जानकर कि उसके मन की सभी इच्छाएँ पूरी हो गईं, उसने देवताओं और पितरों की गहन पूजा की। माताएँ सबकी पूजा करके यह वर माँगती हैं कि श्री रामजी सहित उनके भाइयों का कल्याण हो।

देवता गुप्त [अंतरिक्ष] से आशीर्वाद दे रहे हैं और माताएँ प्रसन्न होकर उन्हें प्रचुर मात्रा में प्राप्त कर रही हैं। इसके बाद राजा ने बारातियों को बुलाया और उन्हें गाड़ियाँ, वस्त्र, रत्न और आभूषण आदि दिये। इन्हें पाकर उन्होंने श्री रमणीक को अपने हृदय में रख लिया। वे सभी खुशी-खुशी अपने घर चले गये। राजा ने नगर के सभी स्त्री-पुरुषों को वस्त्र और आभूषण पहनाये। घर-घर बधाइयाँ बजने लगीं।

सब आशीर्वाद देते हैं और गुणों की कथा गाते हैं। तब राजा दशरथ गुरु और ब्राह्मणों के साथ महल में प्रवेश करते हैं। राजा ने प्रजा और वेद के विधान के अनुसार वशिष्ठजी की दी हुई आज्ञा का आदरपूर्वक पालन किया। ब्राह्मणों की भीड़ देखकर सभी रानियाँ अपना महान भाग्य जानकर सम्मान के साथ उठ खड़ी हुईं।

पैर धोने के बाद उसने सभी को नहलाया और राजा ने उनकी विधिवत पूजा करके उन्हें भोजन कराया। आदर, दान और माया से दृढ़ होकर वह सन्तुष्ट मन से आशीर्वाद देता हुआ चला। राजा ने अनेक प्रकार से विश्वामित्र की पूजा की और कहा- हे भगवन्! मेरे समान सौभाग्यशाली दूसरा कोई नहीं है। राजा ने उनकी बहुत प्रशंसा की और रानियों सहित उनके चरणों की धूल स्वीकार की।

महल के अंदर ही उसे रहने के लिए सर्वोत्तम स्थान दिया गया, जिसमें राजा और समस्त राजपरिवार अपना मन प्रसन्न रख सकें (अर्थात् जिसमें राजा और महल की सभी रानियाँ अपने अनुसार उसके आराम का ध्यान रख सकें) इच्छा), तब राजा ने गुरु वशिष्ठजी के चरण कमलों की पूजा और प्रार्थना की। उसके हृदय में प्रेम कम न था। (मतलब बहुत प्यार था).

सभी राजकुमार अपनी बहुओं सहित और राजा अपनी रानियों सहित बार-बार गुरुजी के चरण वंदन करते हैं और साधु आशीर्वाद देते हैं। राजा ने बड़े प्रेमपूर्ण हृदय से अपने पुत्रों और अपनी सारी संपत्ति को उनके सामने रख दिया (उन्हें

स्वीकार करने के लिए)। विनती की. लेकिन मुनिराजने [एक पुजारी के रूप में]। केबल ने उनसे आशीर्वाद मांगा और उन्हें कई तरह से आशीर्वाद दिया।

तब सीताजी सहित श्री रामचन्द्रजी को हृदय में रखकर गुरु वशिष्ठजी प्रसन्नतापूर्वक अपने स्थान पर चले गये। राजा ने ब्राह्मणों की सभी महिलाओं को बुलाया और उन्हें सुंदर बाल और आभूषण पहनाए। फिर उसने समस्त नगर की सब उपपत्नियों (संपन्न बहनों, बेटियों, भतीजियों आदि) को बुलाया और उनकी रुचि समझकर उन्हें वस्त्र दिये। सभी नेगी लोग अपना-अपना नेगी-जोग ले जाते हैं और दशरथजी राजाओं को उनकी इच्छानुसार सिर दे देते हैं।

राजा उन मेहमानों का सम्मान करता था जिन्हें वह प्रिय और श्रद्धेय जानता था। श्रीरघुनाथजी का विवाह देखकर, उत्सव की प्रशंसा करते हुए, पुष्पवर्षा करते हुए, ढोल बजाते हुए और (परम) सुख प्राप्त करके वे अपने-अपने लोक को चले गए। वे एक-दूसरे को श्रोरामाजी की महिमा बताते रहते हैं। प्यार दिल में नहीं समाता.

अपने रिश्तेदारों के साथ प्रेम और आदर सत्कार करने पर राजा दशरथ का हृदय खुशी से भर गया। वे वहाँ पहुँचे जहाँ रनिवास था और कुमारों को उनकी बहुओं सहित देखा।   राजा ने आनंद और उसके पुत्रों को अपनी गोद में ले लिया। उस समय राजा को कितना सुख हुआ, यह कौन कह सकता है? फिर उसने अपने पुत्रों और बहुओं को प्रेम से अपनी गोद में बिठाया और हृदय में आनंद भरकर उन्हें बार-बार सहलाया।

इस समाज (कार्यक्रम) को देखकर रनिवास प्रसन्न हो गये। सबके हृदय में आनंद का वास हो गया। तब राजा ने विवाह कैसे हुआ, सब कुछ बता दिया। उनकी बात सुनकर हर किसी को ख़ुशी होती है. राजा ने भाणे के समान अनेक प्रकार से राजा जनक के गुण, शील, महत्ता, प्रेमपूर्ण आचरण तथा सुन्दर सम्पत्ति का वर्णन किया। जनकजी की लीला सुनकर सभी रानियाँ बहुत प्रसन्न हुईं।

राजा ने अपने पुत्रों सहित स्नान करके ब्राह्मणों, गुरु तथा बन्धु-बान्धवों को बुलाकर नाना प्रकार के भोजन किये। [यह सब करते-करते] रात्रि के पाँच पहर बीत गये। सुन्दर स्त्रियाँ मधाला गा रही हैं। वह रात ख़ुशी और सुंदरता का स्रोत बन गई। सबने झुककर पान खाया और फूलों की मालाओं, इत्र आदि से विभूषित होकर सब शोभा से आच्छादित हो गये।

श्री रामचन्द्रजी को देखकर और आज्ञा पाकर सब लोग सिर नवाकर अपने-अपने घर चले गये। वहां के प्रेम, आनंद, हास्य, महत्ता, समय, समाज और आकर्षण

का वर्णन सैकड़ों सरस्वती, शेष, वेद, ब्रह्मा, महादेवजी और गणेशजी भी नहीं कर सकते। तो फिर मैं उसे कैसे समझाऊँ? कुछ स्थानों पर केंचुआ भी धरती पर कब्ज़ा कर सकता है।

राजा ने सभी प्रकार से सबका आदर-सत्कार करके कोमल शब्दों से रानियों को बुलाया और कहा कि बहुएँ तो अभी बच्ची हैं, दूसरे के घर आ गयी हैं। इन्हें इस तरह रखें जैसे पलकें आँखों को रखती हैं. जैसे पलकें हर तरह से आंखों की रक्षा करती हैं और उन्हें खुशी देती हैं, वैसे ही उन्हें भी खुशी मिलनी चाहिए। लड़के थके हुए हैं और सो रहे हैं, उन्हें ले जाकर सुला दो। ऐसा कहकर राजा श्री रामचन्द्रजी के चरणों में हृदय लगाकर विश्रामगृह में चला गया।

राजा के स्वाभाविक रूप से सुन्दर वचन सुनकर रानियों ने रत्नजटित सोने के परांगण बिछाये। , गाय के फेन के समान सुन्दर और कोमल अनेक श्वेत चादरें वहाँ बिछी हुई थीं। सुन्दर तकियों का वर्णन नहीं किया जा सकता। रत्नों से बने मन्दिर में फूलों की मालाएँ और इत्र सजाये जाते हैं। सुन्दर रत्नों से बने दीपकों तथा सुन्दर चंदोबारी की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। ये तो वही जान सकता है जिसने इन्हें देखा हो.

इस प्रकार सुंदर शय्या की व्यवस्था करके [माताओं ने] श्री रामचन्द्रजी को उठाया और प्रेम से अपनी पीठ पर बिठाया। श्री रामजी बार-बार भाइयों को आदेश देते रहे। फिर वे भी अपने-अपने बिस्तर पर सो गये। श्री रामजी के श्याम, सुन्दर और कोमल नेत्रों को देखकर सभी माताएँ प्रेमपूर्वक वचन कह रही हैं। हे पिता! मार्ग में यात्रा करते समय आपने भयानक ताड़का राक्षसी का वध कैसे किया?

उन दुष्ट मारीच और सूबा को उनके सहायकों सहित, उन भयानक राक्षसों को, जो भयंकर योद्धा थे और जो युद्ध में किसी को कुछ भी नहीं गिनते थे, आपने कैसे मार डाला? हे पिता! मैं इसे स्वीकार करता हूं, भगवान ने मुनि की कृपा से आपके बहुत से कष्ट टाल दिये हैं। दोनों भाइयों ने यज्ञ की देखभाल की और गुरुजी के प्रसाद से सारा ज्ञान प्राप्त किया।

चरणों की धूल छूते ही मुनिपत्री गीली हो गईं। यह कीर्ति सारे संसार में फैल गई, आपने राजाओं के समाज में कछुए की पीठ, वज्र और पर्वत से भी अधिक कठोर शिव धनुष को तोड़ दिया। विश्वविजय और जानकी की प्रसिद्धि प्राप्त की और सभी भाइयों से विवाह करके घर लौट आये। आपके सभी कार्य अमानवीय (मनुष्य की शक्ति से परे) हैं, जिनका निवारण (सम्पूर्ण) विश्वामित्रजी के प्रभाव से ही हुआ है।

हे पिता! आपके चन्द्रमुख को देखकर आज हमारा इस संसार में जन्म सफल हो गया। ब्रहमा तुम्हें देखकर जो दिन बीते हैं, उनकी गिनती न करें (उन्हें हमारी आयु में शामिल न करें)। श्री रामचन्द्र जी ने विनम्र और उत्तम वचन कहकर सभी माताओं को संतुष्ट किया। फिर शिवजी, गुरु तथा ब्राहमणों के चरणों का स्मरण करके उसने अपनी आँखें निद्रा में डाल लीं। (मतलब वे सो रहे हैं)।

नींद में भी उसका अत्यंत मधुर मुख इस प्रकार सो रहा था मानो संध्या के समय लाल कमल सो रहा हो। महिलाएं घर-घर जाकर निगरानी कर रही हैं और एक-दूसरे को गालियां दे रही हैं। रानियाँ कहती हैं- हे पत्नी! देखो, [आज] रात कितनी सुन्दर है, जो आयो ध्यानपुरी को विशेष रूप से सुन्दर बना रही है! [ऐसा कहकर सास-ससुर अपनी सुंदर बहुओं के साथ सो गईं, मानो उनके हृदय में साँपों ने बहुमूल्य रत्न छिपा रखे हों।

भगवान प्रातःकाल पवित्र ब्रहममुहूर्त में जागे। मुर्गियाँ सुन्दर बातें करने लगीं। बजों और हाजियों ने उसकी स्तुति गाई और नगर के लोग द्वार पर जोहर करने आये। ब्राहमणों, देवताओं, गुरु, पिता और माताओं का पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त करके सभी भाई प्रसन्न हुए। माताओं ने उनके मुख की ओर आदर की दृष्टि से देखा। तब वे राजा के साथ द्वार से बाहर आये।

चारों भाई, जो स्वभाव से पवित्र थे, सभी शौच क्रियाओं से निवृत्त होकर पवित्र सरयू नदी में स्नान किया और प्रातःकालीन अनुष्ठान (संध्या वंदन आदि) करने के बाद वे अपने पिता के पास आये। राजा ने उसे देखते ही गले लगा लिया। अनुमति पाकर वह प्रसन्न होकर बैठ गया। श्री रामचड्ढा जी के दर्शन और नेत्र दर्शन के लाभ की यही सीमा है, यह सोचकर सारी सभा शीतल हो गयी। , अर्थात् तीनों प्रकार की गर्मी सदा के लिए लुप्त हो गई।

वशिष्ठजी धर्म का इतिहास सुना रहे हैं और राजा रनिवास सहित सुन रहे हैं। वशिष्ठ जी ने प्रसन्न होकर विश्वामित्र जी के कार्यों का अनेक प्रकार से वर्णन किया, जो ऋषियों की बुद्धि में भी समझ से परे हैं। वामदेव जी बोले- ये सब बातें सत्य हैं. विश्वामित्रजी की सुन्दर कीर्ति तीनों लोकों में फैली हुई है। यह सुनकर सभी खुश हो गए। श्री राम और लक्ष्मण के हृदय में अधिक उत्साह (खुशी) हो गया।

एक अच्छा दिन (शुभ समय) पाकर सुन्दर कद्दू खोले गये। मग्याल, आनंद और विनोद में कोई कमी नहीं हुई (अर्थात् बहुत वृद्धि हुई)। इस प्रकार हर दिन नई खुशियां देखकर देवता सांत्वना देते हैं और भगवान ब्रहमा से अयोध्या में

जन्म लेने की प्रार्थना करते हैं। विश्वामित्र सदैव (अपने आश्रम में) जाना चाहते हैं, परन्तु रामचन्द्र के अनुरोध तथा नम्रता के कारण वे वहीं रुक जाते हैं। महामुनिराज विश्वामित्र दिन-प्रतिदिन राजा के सोगुण भाव (प्रेम) को देखकर उनकी सराहना करते हैं।

अन्त में जब विश्वामित्रजी विदा हुए तो राजा प्रेम में मग्न होकर अपने पुत्रों सहित आगे खड़े हो गये। [उन्होंने कहा--] हे भगवान! यह सब धन तुम्हारा है। मैं सत्रि और उसके पुत्रों सहित आपका सेवक हूँ। हे मुनि! आप लड़कों पर सदैव कृपा बनाये रखेंगी और मुझे भी दर्शन देती रहेंगी। इतना कहकर राजा दशरथ अपने पुत्रों और रानियों सहित विश्वामित्र के चरणों में गिर पड़े और प्रेमहीनता के कारण कुछ बोल न सके।

ब्राह्मण विश्वामित्र जी ने उन्हें अनेक प्रकार से आशीर्वाद दिया और वे चले गये, इस प्रकार का प्रेम कहीं नहीं जाता। श्री राम जी सभी भाइयों को साथ लेकर प्रेमपूर्वक उनके पास पहुँचे और अनुमति लेकर लौट आये। गाधिकुल के चन्द्रमा विश्वामित्र जी मन ही मन श्री रामचन्द्र जी के स्वरूप, राजा दशरथ जी की भक्ति, [चारों भाइयों] के विवाह तथा [सभी के] उत्साह व आनन्द की प्रशंसा करते रहे।

फिर वामदेवजी और रघुकुल के गुरु ज्ञानी वशिष्ठजी ने विश्वामित्रजी की कथा कही। मुनिका की सुन्दर प्रशंसा सुनकर राजा मन ही मन उसके गुणों के प्रभाव की प्रशंसा करने लगा। जब आदेश हुआ तो सब लोग अपने-अपने घर लौट गये। राजा दशरथजी भी अपने पुत्रों सहित महल में गये। सर्वत्र सभी लोग श्री रामचन् के विवाह की कथाएँ गा रहे हैं। श्री रामचन्द्रजी की पवित्र किरणें तीनों लोकों में फैल गईं।

कवियों के प्राणों को पवित्र करने वाले और मद्गलों की खान श्रीसीतारामजी की कीर्ति को ध्यान में रखकर मैंने अपनी वाणी को शुद्ध करने के लिए उसके विषय में कुछ (थोड़ा सा) कहा है। अपनी वाणी को शुद्ध करने के लिए तुलसी ने राम की महिमा कही है। [अन्यथा] श्रीरघुनाथजी का चरित्र एक विशाल महासागर है, उसे किस कवि ने पार किया है? जो लोग यज्ञ की कथा सुनते हैं और विवाह के हर्षोल्लास का वर्णन आदरपूर्वक गाते हैं, वे श्री जानकीजी और श्री रामजी की कृपा से सदैव सुख प्राप्त करते रहेंगे।

जो प्रेमपूर्वक श्रीसीताजी और श्रीरघुनाथजी के विवाह का प्रसंग गाते और सुनते हैं, उनके लिये सदा उत्साह (आनन्द) रहता है; क्योंकि श्री रामचन्द्रजी का यश ही मज्जलक का निवास है।

श्री रामचरितमानस

दूसरा अध्याय

2 / 7.अयोध्या काण्ड

भस्म से सुशोभित, देवताओं में श्रेष्ठ, सभी देवताओं का संहार करने वाले, भक्तों के पापों का नाश करने वाले, सर्वव्यापी, कल्याण स्वरूप, चंद्रमा के समान गौर वर्ण वाले, जिनकी गोद में हिमाचलसुता पार्वती हैं, श्री शंकर जी हों माथे पर गंगा जी, माथे पर द्वितीयक चंद्रमा, गले में हलाहल विष और छाती पर नाग राजा शेष जी, सदैव मेरी रक्षा करें।

रघुवंश को आनंद देने वाले श्री रामचन्द्र जी के मुख की शोभा, जो न तो राज्याभिषेक से प्रसन्न हुई (राज्याभिषेक की बात सुनकर) और न वनवास के दुःख से धूमिल हुई, वह (कमल की छवि) मुख) मुझे सदैव शुभ आशीर्वाद दो।

जिनके होंठ नीले कमल के समान काले और कोमल हैं, जिनके बायीं ओर श्री सीताजी विराजमान हैं और जिनके हाथों में क्रमश: अमोघ बाण और सुंदर धनुष है, उन रघुवंश के स्वामी श्री रामचन्द्रजी को मैं नमस्कार करता हूँ। श्री गुरुजी के चरणकमलों की रज से अपने मन रूपी दर्पण को स्वच्छ करके मैं चारों फल (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) देने वाले श्री रघुनाथजी के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ।

जब से श्री रामचन्द्रजी विवाह करके घर आये हैं, तब से [अयोध्या में] नित नये शुभ आयोजन हो रहे हैं और खुशियों की बधाइयाँ सुनाई दे रही हैं। पुण्य रूपी बादल चौदह लोक रूपी बड़े-बड़े भारी पर्वतों पर सुख रूपी जल की वर्षा कर रहे हैं। ऋद्धि-सिद्धि और धन की मनभावन नदियाँ उफनकर अयोध्या के समुद्र में विलीन हो गईं। नगर के नर-नारी उत्तम जाति के रत्नों का समूह हैं, जो हर प्रकार से पवित्र, अमूल्य और सुन्दर हैं।

शहर की समृद्धि का कोई उल्लेख नहीं है। ऐसा लगता है जैसे ब्रह्माजी की कारीगरी बस इतनी ही है. श्री रामचन्द्रजी का मुख देखकर सभी नगरवासी सब प्रकार से प्रसन्न हो रहे हैं। माताएँ और सहेलियाँ अपनी प्रिय बेल को फल लगते देखकर प्रसन्न होती हैं। श्री रामचन्द्रजी के रूप, गुण, शील और स्वभाव को देखकर और सुनकर राजा दशरथ बहुत प्रसन्न होते हैं।

सभी के मन में ऐसी इच्छा होती है और सभी महादेवजी को समझाते हैं और कहते हैं कि राजा को अपने जीवनकाल में ही श्री रामचन्द्रजी को युवराज की उपाधि देनी चाहिए। एक समय की बात है, रघुकुल के राजा दशरथजी अपनी पूरी सभा के साथ राजसभा में बैठे थे। महाराज समस्त गुणों की प्रतिमूर्ति हैं, वे श्री रामचन्द्रजी की सुन्दर स्तुति सुनकर बहुत प्रसन्न होते हैं।

सभी राजा उनकी कृपा चाहते हैं और लोकपाल अपना भाव रखकर (अनुकूल होकर) उनसे प्रेम करते हैं॥ [पृथ्वी, आकाश, पाताल] तथा तीनों लोकों, भूत, भविष्य और वर्तमान में दशरथजी के समान कोई भी भाग्यशाली नहीं है। मूल मदालों के पुत्र श्री रामचन्द्रजी के लिये जो कुछ कहा जाय वह बहुत कम है। राजा ने सहज ही दर्पण हाथ में लिया और उसमें अपना चेहरा देखकर मुकुट सीधा कर लिया।

(देखा) कान के पास के बाल सफेद हो गये हैं, मानो बुढ़ापा उपदेश दे रहा हो कि हे राजन्! आप श्री रामचन्द्रजी को युवराज पद देकर अपने जीवन और जन्म का लाभ क्यों नहीं उठाते? अपने हृदय में यह विचार करके उसने उसे युवराज का पद देने का निश्चय किया। राजा दशरथ ने शुभ दिन और सुंदर समय पाकर प्रेम से परिपूर्ण शरीर और प्रसन्न मन से गुरु वशिष्ठजी को यह बात बताई।

राजा ने कहा--हे मुनिराज! [कृपया इस अनुरोध को सुनें]। श्री रामचन्द्र अब सब प्रकार से समर्थ हो गये। सेवक, मन्त्री, समस्त नगरवासी तथा जो हमारे शत्रु, मित्र अथवा उदासीन हैं- सभी श्री रामचन्द्र को उतना ही प्रेम करते हैं जितना वे मुझसे करते हैं। मानों आपका आशीर्वाद ही साकार रूप धारण कर उसे सुन्दर बना रहा हो। हे प्रभो! सभी ब्राह्मण अपने परिवार सहित उससे आपकी ही भाँति प्रेम करते हैं।

जो गुरु के चरणों का मुकुट अपने मस्तक पर धारण करते हैं, वे मानो समस्त ऐश्वर्य को अपने वश में कर लेते हैं। मेरे जैसा इसका अनुभव किसी और को नहीं हुआ। आपके श्रीचरणों की पूजा करके मैंने सब कुछ प्राप्त कर लिया। अब मेरे मन में बस एक ही इच्छा है. हे नाथ! आपकी कृपा से वह भी पूरा हो जायेगा। राजा का सहज प्रेम देखकर मुनि प्रसन्न हो गये और बोले-राजन्! कृपया अनुमति दें। बताओ, तुम्हारी क्या इच्छा है?

हे राजन! केवल आपका नाम और प्रसिद्धि ही आपको सभी वांछित चीजें दे सकती है। हे राजाओं के मुकुटमणि! आपके मन की इच्छा फल का अनुसरण करती है (अर्थात् इच्छा करने से पहले ही फल उत्पन्न हो जाता है)। गुरुजी को सब प्रकार से प्रसन्न देखकर राजा प्रसन्न हो गया और नम्र स्वर में बोला- हे नाथ. श्रीरामचन्द्र को युवराज बनाओ। कृपया बताएं (अनुमति दें) तो तैयारी की जाए.

यह लालसा पूरी हो जाने पर मैं यह नहीं सोचता कि शरीर रहूँ या चला जाऊँ, ताकि बाद में पछताना न पड़े। दशरथजी के मदल और आनंद के सुन्दर वचन

सुनकर ऋषि को बहुत प्रसन्नता हुई। वसिष्ठजी ने कहा--]हे राजन्! सुनो, जिनसे विमुख होकर लोग पश्चाताप करते हैं और जिनका भजन किये बिना जिनकी ईर्ष्या दूर नहीं होती, वही स्वामी (सर्वलोक महेश्वर) श्री रामजी आपके शुद्ध प्रेम को मानने वाले पुत्र हैं। श्री रामजी शुद्ध प्रेम के अनुयायी हैं, इसीलिए आपके प्रेम से पुत्र उत्पन्न हुए हैं।

हे राजा! अब देर मत करो; सब कुछ जल्दी से सजाओ. शुभ दिन और सुन्दर शुभ समय तभी है जब श्री रामचन्द्रजी युवराज बनें (अर्थात् उनके राज्याभिषेक के लिये सभी दिन शुभ और सुखद हों)। राजा प्रसन्नतापूर्वक महल में आये और सेवकों तथा मंत्री सुमनतन्त्र को बुलाया। उन्होंने 'जय-जीवा' कहकर सिर झुका लिया। तब राजा ने सुन्दर वचन सुनाकर श्री रामजी को युवराज पद देने का प्रस्ताव रखा।

[और कहा--] यदि पांचों (आप सभी को) यह राय अच्छी लगे तो हृदय में हर्ष भरकर श्री रामचन्द्र जी का राज्याभिषेक करें। यह मनमोहक आवाज सुनते ही मंत्री जी ऐसे प्रसन्न हुए मानो उनके मनोरथ के पौधे को पानी मिल गया हो। मंत्रीगण हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! आप लाखों वर्ष जीवित रहे। आपने एक अच्छे काम के बारे में सोचा है जिससे दुनिया को फायदा होगा। हे नाथ! जल्दी करो, देर भी करो। सेवकों की सुन्दर वाणी सुनकर राजा को ऐसी प्रसन्नता हुई मानो बढ़ती हुई लता को सुन्दर शाखा का सहारा मिल गया हो।

राजा ने कहा- श्री रामचन्द्र के राज्याभिषेक के लिये मुनिराज वसिष्ठ जी की जो आज्ञा हो, आप तुरन्त वही करें। मुनिराज प्रसन्न हो गये और मृदुल स्वर में बोले कि सभी उत्तम तिथियों का जल ले आओ। फिर उन्होंने औषधि, जड़, फूल, फल और पत्ते आदि अनेक जादुई वस्तुओं के नाम बताये, चंवर, मृगचर्म, अनेक प्रकार के वस्त्र, असंख्य जातियों के ऊनी और रेशमी वस्त्र, [विभिन्न प्रकार के] उन्होंने सभी को बुलाने का आदेश दिया राज्याभिषेक के योग्य रत्न तथा अन्य बहुत-सी शुभ वस्तुएँ।

ऋषि ने वेदों में वर्णित सभी नियम बताए और कहा- नगर में बहुत से मंडप सजाओ। शहर की सड़कों के चारों ओर फलों सहित आम, सुपारी और केले के पेड़ लगायें। रत्नों के सुंदर चौक बनाएं और उनसे तुरंत बाजार सजाने को कहें। श्रीगणेशजी, गुरु तथा कुलदेवता की पूजा करें तथा भूदेव ब्राह्मणों की हर प्रकार से सेवा करें।

आइए हम ध्वज, मेहराब, कलश, घोड़े, रथ और हाथी को सजाएँ। ऋषि वशिष्ठजी की बात मानकर सभी अपने-अपने काम में लग गए। मुनिश्वर ने जो

भी कार्य करने का आदेश दिया, उसे इतनी शीघ्रता से किया कि ऐसा लगा जैसे वह पहले ही कर चुका हो। राजा ब्राह्मणों, ऋषियों और देवताओं की पूजा कर रहा है और सभी श्री रामचन्द्रजी के लिए अच्छे काम कर रहे हैं।

श्री रामचन्द्र जी के राज्याभिषेक का शुभ समाचार सुनते ही सम्पूर्ण अवध में बधाइयाँ बजने लगीं। श्री रामचन्द्रजी और सीताजी के शरीर में भी शुभ शकुन देखे गये। उनके सुन्दर थूथन अजीब तरह से फड़कने लगे। दोनों रोमांचित होकर प्रेम से एक-दूसरे से कहते हैं कि ये सभी शकुन भरत के आगमन की सूचना देने वाले हैं। उसे उसके मामा के घर ले जाया गया। इसका बहुत समय हो गया; कई मौके आ रहे हैं और उनसे बार-बार मिलने का मन कर रहा है।' शगुन के माध्यम से प्रियतम (भरत) से मिलने की मान्यता है।

और संसार में हमें भरत के समान प्रेम करने वाला कौन है? शकुन बहुत हो गया, यही फल है, दूसरा नहीं। श्री रामचन्द्रजी अपने भाई भरत के विषय में दिन-रात उसी प्रकार सोचते रहते हैं, जैसे कछुए का हृदय अण्डे में रहता है। वहीं यह परम समाचार सुनकर पूरा गांव खुश हो गया। जैसे चंद्रमा को उगते हुए देखकर समुद्र की लहरें विलासिता (आनंद) से सज जाती हैं।

जो लोग सबसे पहले रनिवास में गए और ये शब्द (समाचार) सुनाए उन्हें बहुत से आभूषण और वस्त्र मिले। रानियों के शरीर प्रेम से पुलकित हो गये और मन प्रेम में मगन हो गये, अत: वे सभी मकलकलश को सजाने लगीं। सुमित्राजी ने अनेक प्रकार के रत्नों से अनेक सुन्दर-सुन्दर वर्ग पूर्ण किये। श्री रामचन्द्रजी की माता कोसल्याजी ने हर्ष में मग्न होकर ब्राह्मणों को बुलाया और बहुत सा दान दिया।

उसने ग्राम देवताओं, देवताओं और साँपों की पूजा की और फिर बलि माँगी। अर्थात् कार्य सिद्ध होने पर पुनः पूजा करने की इच्छा पूर्ण होती है; और प्रार्थना की कि जिस प्रकार श्री रामचन्द्र जी का कल्याण हो, कृपा करके वैसा ही वर दीजिये। कोयल के समान मधुर स्वर वाली, चंद्रमा के समान मुख वाली तथा हिरण के बछड़े के समान आँखों वाली स्त्रियाँ मदाल गाने लगीं।

श्री रामचन्द्रजी का राज्याभिषेक सुनकर सभी नर-नारी मन में प्रसन्न हुए और विधाता से प्रार्थना करने लगे। सब लोग अपनी सुविधानुसार मेज़ सजाने लगे। यद्यपि स्वामी का सेवक के घर जाना संकटों को उत्पन्न करने वाला और संकटों का नाश करने वाला है, तथापि हे भगवन्! उचित तो यह होता कि वह दास को प्रेमपूर्वक काम पर भेजता; ऐसी ही नीति है.

परन्तु प्रभु (आपने) ने अपना अधिकार त्यागकर (स्वयं यहाँ आकर) जो त्याग किया है, उसके कारण यह घर आज पवित्र हो गया है। हे गोसाईं! [अब] जो आदेश दिया जाएगा वह करूंगा। सेवक का लाभ अपने स्वामी की सेवा करने में ही है। [श्री रामचन्द्रजी] के प्रेमपूर्ण वचन सुनकर मुनि वशिष्ठजी ने श्रीरघुनाथजी की स्तुति की और कहा, हे राम! अच्छा, आप ऐसा क्यों नहीं कहते? आप सूर्य के आभूषण धारण कर सकते हैं।

श्री रामचन्द्रजी के गुण, शील और स्वभाव का वर्णन करके मुनिराज प्रेम से भर गये और बोले- हे रामचन्द्रजी! राजा (दशरथजी) ने राज्याभिषेक की तैयारी कर ली है। वे तुम्हें युवराज का पद देना चाहते हैं। [इसलिए] हे भगवान राम! आज व्रत, हवन आदि सभी अनुष्ठान करें ताकि विधाता इस कार्य को कुशलतापूर्वक पूरा कर सकें (सफल बना सकें)। गुरुजी शिक्षा देकर राजा दशरथजी के पास गये। 'श्री रामचन्द्रजी के हृदय में', यह सुनकर मुझे खेद हुआ-

हम सभी भाई एक साथ पैदा हुए थे; खाना, सोना, बचपन के खेल, कान छेदना, यज्ञोपवीत, विवाह आदि सब एक साथ होते थे। लेकिन इस शुद्ध वंश में एकमात्र अनुचित बात यह हो रही है कि अन्य सभी भाइयों को छोड़कर केवल बड़े भाई (मेरे) का राज्याभिषेक होता है। [तुलसीदासजी कहते हैं कि] भगवान श्री राम चन्राज इस सुंदर प्रेमपूर्ण पश्चाताप से भक्तों के मन से बुरे विचारों को दूर करें।

उसी समय प्रेम और आनंद में मग्न लक्ष्मणजी आ गये। रघुकुल रूपी कुमुदिनी का पालन-पोषण करने वाले चन्द्रमा श्री रामचन्द्र ने प्रेमपूर्ण वचन कहकर उनका आदर-सत्कार किया। अनेक प्रकार के वाद्ययंत्र बजाए जा रहे हैं। नगर के अपार आनन्द का वर्णन नहीं किया जा सकता। सभी लोग भरतजी के आगमन की खुशियाँ मना रहे हैं और कह रहे हैं कि वे भी शीघ्र आकर राज्याभिषेक समारोह देखें और अपने नेत्रों का फल प्राप्त करें।

बाजार में, सड़क पर, घर में, सड़क पर और चबूतरे पर (सभी जगह) स्त्री-पुरुष आपस में यही कहते हैं कि कल कौन सा शुभ समय है जब विधाता हमारी इच्छा पूरी करेंगे। कहते हैं-हे माता! हमारी इस महान विपत्ति को देखकर आप आज वैसा ही करें जिससे श्री रामचन्द्रजी राज्य छोड़कर वन में चले जायें और देवताओं का सारा कार्य सिद्ध हो जाय।

श्रीरघुनाथजी दुःख और सुख से रहित हैं। आप श्री रामजी का सारा प्रभाव जानते हैं। जीव अपने कर्मों के कारण सुख-दुःख भोगता है। अत: देवताओं के हित के लिए आप अयोध्या चले जायें। देवताओं ने बार-बार चरण पकड़कर सरस्वती को संकोच कराया। फिर वह देवताओं की बुद्धि को तुच्छ समझकर चली गयी।

इनका निवास तो ऊँचा होता है, परन्तु काम नीचा होता है। वे दूसरों का ऐश्वर्य नहीं देख सकते।

परन्तु भविष्य के कार्य (श्रीरामजी के वन जाने से राक्षसों का संहार होगा, जिससे सारा संसार सुखी होगा) सोचकर चतुर कवि मुझसे (श्रीरामजी के वनवास के चरित्रों का वर्णन करने की) इच्छा करेगा। यह सोचकर सरस्वती मन में हर्ष भरकर दशरथजी की पुरी अयोध्या में आ गईं, मानों कोई ग्रहदशा घोर दुःख देने के लिए आई हो।

कैकेयी की मंथरा नाम की एक मंदबुद्धि दासी थी, सरस्वती ने उसकी बुद्धि को फेंक दिया और उसे अपयश का पात्र बनाकर चली गई। मंथरा ने देखा कि नगर सजा हुआ है। सुन्दर मधुर शुभकामनाएँ बज रही हैं। उन्होंने लोगों से पूछा कि यह कैसा जश्न है? [उससे] जैसे ही उसने श्री रामचन्द्रजी के राज्याभिषेक की बात सुनी, उसका हृदय दुख गया।

वह दुष्ट, नीच जाति की दासी सोचने लगी कि यह मामला रातों-रात कैसे बिगड़ जाए, जैसे कोई कुटिल मधुमक्खी शहद के छत्ते को देखकर इसी ताक में रहती है कि इसे कैसे उखाड़ूँ। वह। दुखी होकर भरतजी की माता कैकेयी के पास गयीं। रानी कैकेयी हँसकर बोलीं- तुम उदास क्यों हो? मंथरा कुछ भी उत्तर नहीं देती, वह केवल गहरी साँस लेकर त्रियाचरित्र बनाकर अपने आँसू छिपा रही है।

रानी हंसने लगी और बोली कि तुम्हारे गाल तो बड़े हैं. (आप तो बड़े बकवादी हैं) मेरा मन कहता है कि लक्ष्मण ने आपको कोई शिक्षा (दण्ड) दी है। फिर भी वह महापापी दासी कुछ नहीं कहती। वह इतनी लंबी-लंबी सांसें छोड़ रही है, मानो कोई काली नागिन फुंफकार रही हो। तब रानी घबराकर बोली- अरे! तुम कहते क्यों नहीं? क्या श्री रामचन्द्र, राजा, लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न ठीक हैं? यह सुनकर कुबरी मंथरा के हृदय में बड़ा दुःख हुआ।

[वह कहने लगी--] हे माता! हमें कोई क्यों सिखाएगा और किसकी ताकत से हम अपना अपमान कराएंगे? आज रामचन्द्र के अतिरिक्त और कौन कुशल है, जिसे जनपद के राजा युवराज का पद दे रहे हैं। आज विधाता कोसल्या पर बड़े कृपालु हुए; यह देखकर उसके हृदय में कोई अभिमान नहीं होता। आप स्वयं जाकर वह सारा सौंदर्य क्यों नहीं देखते, जिसे देखकर मेरा हृदय क्रोध से भर गया है।

आपका बेटा विदेश में है, आपको कोई फर्क नहीं पड़ता. आप तो जानते ही हैं कि स्वामी हमारे वश में हैं। तुम्हें तोशाक-पारलंग पर लेटकर सोना बहुत लुभावना लगता है, तुम्हें राजा की कपटपूर्ण चतुराई नजर नहीं आती। मंथरा के प्रेमपूर्ण

वचन सुनकर, परंतु उसे स्वार्थी समझकर रानी ने उसे प्रणाम किया और बोली- अब चुप रहो, घर तोड़ने वाली! अगर तुमने दोबारा ऐसा कहा तो मैं तुम्हारी जीभ पकड़कर बाहर निकाल लूंगा।

कान, पैर और कूबड़ को टेढ़ा और कुचला हुआ समझना चाहिए। इनमें स्नो भी है और खास तौर पर नौकरानी भी! इतना कहकर भरतजी की माता केकेयी मुस्कुरायीं और फिर बोलीं- हे प्रिय वचनों वाली मंथरा! मैंने तुम्हें यह सिखाया है (तुम्हें सिखाने के लिए मैंने तुम्हें बहुत कुछ कहा है) मैं स्वप्न में भी तुमसे नाराज नहीं हूं। एक खूबसूरत और शुभ दिन वह दिन होगा जब आप जो कहेंगे वह सच होगा। (अर्थात् श्री राम का राज्यतिलक होगा)।

बड़ा भाई मालिक है और छोटा भाई नौकर है। यह सूर्यवंश का सुखद तरीका है. यदि कल सचमुच श्री राम का तिलक है तो हे मित्र! तुम्हें जो भी पसंद हो माँगो और मैं तुम्हें दे दूँगा। स्वभावतः सभी माताएँ राम को कोसल्या के समान प्रिय हैं। उनका मेरे प्रति विशेष प्रेम है. मैंने उसके प्रति उसके प्रेम को परखा है।

यदि विधाता को जन्म देने की इच्छा हो तो यह भी दीजिए- श्री रामचन्द्र पुत्र हैं और सीता पुत्रवधू हैं। श्री राम मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं। उसके तिलक से उसका तिलक सुनकर तुम क्रोधित क्यों हो रहे हो? तुममें भारत की खुशबू है, छल छोड़ो और सच बोलो। तुम सुख के दिनों का स्मरण कर रहे हो, आओ मैं इसका कारण सुनूँ। मंथरा ने कहा- एक ही बयान में सारी उम्मीदें पूरी हो गईं. अब मैं दूसरी भाषा का प्रयोग करूंगा और कुछ कहूंगा. मेरी अभागी खोपड़ी तोड़े जाने योग्य है, अच्छी बात कहकर भी तुम्हें दुःख होता है।

जो झूठी-सच्ची बातें बनाकर कहते हैं, हे माता! वे ही हैं जो तुम्हें प्रिय हैं और मुझे कटु लगते हैं! अब मैं भी ठकुरसुहाती (चेहरा देखकर) ही कहूंगा. नहीं तो मैं दिन-रात चुप रहूँगा। मैं नदिया हूं, मुझे नींद नहीं आ रही है. राजा कोई भी हो, हमें क्या हानि? क्या अब मैं दासी को छोड़कर रानी बन जाऊँगी? (अर्थात् मैं रानी नहीं बन सकी।) हमारा स्वभाव जलने योग्य है। क्योंकि मुझसे तुम्हारी हानि देखी नहीं जाती। इसलिए कुछ बात की थी. परन्तु हे देवी! हमसे बहुत बड़ी गलती हो गई, कृपया हमें माफ कर दीजिए।'

निराधार (अस्थिर) बुद्धि वाली तथा देवताओं की माया के वशीभूत रानी केकेया ने प्रेम की रहस्यमय एवं कपटपूर्ण बातें सुनकर बारिन मंथरा को अपनी सखी (बिना किसी कारण की शुभचिंतक) मान लिया और उस पर भरोसा किया. रानी बार-बार आदर से उससे पूछ रही है, मानो भीलनी के गाने पर हिरणी मोहित हो

गयी हो. यह किया जाता है। जैसे भविष्य (होनहार) होता है, वैसे ही बुद्धि भी विमुख हो जाती है। नौकरानी यह जानकर खुश हुई कि उसकी शर्त लग गयी है।

तुम पूछते हो, लेकिन मैं कहने से डरता हूं। क्योंकि आपने तो मेरा नाम घरफोडी रख ही दिया है. अनेक प्रकार से गढ़ को तोड़ने और बड़ा विश्वास करने के बाद तब अयोध्या की उस साधसती (शनि की साढ़े सात वर्ष की दशरूपी मनन्थरा) ने कहा- हे रानी! आपने जो कहा कि मैं सीता और राम से प्रेम करता हूँ और राम आपसे प्रेम करते हैं, तो यह बात है। क्या सच है। लेकिन वो पहले था, वो दिन अब चले गए हैं. जैसे-जैसे समय बीतता है, दोस्त भी दुश्मन बन जाते हैं।

सूर्य कमल परिवार के रक्षक हैं, लेकिन जल के बिना वही सूर्य उन्हें (कमल को) जलाकर भस्म कर देता है। कौशल्या भाभी तुम्हें उखाड़ना चाहती है. अत: उपाय के रूप में एक उत्तम बाड़ खड़ी करके उसे फँसाओ (उसकी रक्षा करो)। आप अपनी शादी की [झूठी] ताकत के बारे में कुछ भी नहीं सोचते हैं; आप जानते हैं कि राजा आपके अधीन है। लेकिन राजा दिल का गंदा और मुँह का मीठा है! और आपका स्वभाव सीधा है (आप छल और चतुराई नहीं जानते)।

राम की माँ (कोसल्या) बहुत चतुर और गम्भीर है। इसकी थाह कोई नहीं ले सकता. उन्होंने मौके का फायदा उठाया और अपनी बात रखी. जब राजा ने भरत को ननिहाल भेज दिया तो इसे राम की मां की सलाह ही मानें। कोसल्या सोचती है कि जहाँ अन्य सभी पुत्र उसकी अच्छी सेवा करते हैं, वहीं भरतकी माँ को अपने पति की ताकत पर गर्व है। इसलिये हे माता! कौशल्या, तुम बहुत देर से रो रही हो। परन्तु वह छल करने में चतुर है; अत: उसके हृदय की भावनाओं को जान पाना संभव नहीं है। (वह इसे चतुराई से छिपा कर रखती है)।

राजा को तुमसे विशेष प्रेम है। कोसल्या अपने सोने के स्वभाव के कारण उसे देख नहीं पाती। इसलिये उसने जाल बिछाकर राजाओं को अपने वश में कर लिया और भरत की अनुपस्थिति में राम का राज्याभिषेक निश्चित कर लिया; कुल (रघुकुल) के लिए यह उचित है कि राम को तिलक दिया जाए, और यह सभी को स्वीकार्य है; और मुझे यह बहुत पसंद है. लेकिन भविष्य के बारे में सोचकर डर लगता है. भगवान पलटकर केवल उसे (कौशल्या को) ही फल क्यों दें?

इस प्रकार उन्होंने करोड़ों कपटपूर्ण शब्दों का मंथन करके कैकेयी को सत्य का बोध कराया और सैकड़ों स्रोतों के आधार पर कहानियाँ बनाकर ऐसी रचना की कि विरोध बढ़ गया। उनके इस वचन से कैकेयी को उन पर विश्वास हो गया। रानी फिर खुशबू के बारे में पूछने लगी. [मंथरा ने कहा--] क्या पूछते हो? अरे,

तुम अब भी नहीं समझे? जानवर भी अपने अच्छे या बुरे (या दोस्त या दुश्मन) को पहचान सकते हैं।

चीजें तैयार हुए पूरा एक पखवाड़ा बीत गया और आपको आज मुझसे खबर मिली है! मैं आपके ही शासन में खाता और पहनता हूं, अत: सत्य बोलने में मेरा कोई दोष नहीं है। यदि मैं कोई बात बनाकर झूठ बोलूं, तो विधाता मुझे दण्ड देगा। यदि कल राम का राजतिलक हो तो समझो विधाता ने तुम्हारे लिए विपत्ति के बीज बो दिए हैं।

मैं एक रेखा खींचता हूं और बलपूर्वक कहता हूं, हे भामिनी! अब तुम दूधवाली मक्खी बन गयी हो! (जैसे लोग दूध में पड़ी मक्खी को फेंक देते हैं, उसी तरह लोग तुम्हें भी घर से निकाल देंगे।) अगर तुम अपने बेटे के साथ [कोसल्याकी] नौकरानी की भूमिका निभाओगी, तो तुम घर पर रह पाओगी [अन्यथा आपको घर पर ही रहना होगा]। और कोई उपाय नहीं है. कटगुने ने विनता को दुःख दिया था, कोसल्या तुम्हें दुःख देगी। भरत जेल काटेंगे (जेल की हवा खाएंगे) और लक्ष्मण राम के नायब (सहयोगी) होंगे.

जैसे ही केकेयी ने मंथरा के कटु वचन सुने तो वह भयभीत हो गयी और कुछ न कह सकी। उसके शरीर से पसीना निकलने लगा और वह केले की तरह काँपने लगी। तब कुबरी (मंथरा) ने अपनी जीभ दांतों से दबा ली (उसे डर था कि भविष्य का अत्यंत डरावना चित्र सुनकर कहीं कैकेयी का हृदय न रुक जाए, जिससे सारा काम बिगड़ जाएगा)।

फिर उसने रानी को धोखे की लाखों कहानियाँ सुनाकर धैर्य रखने की कोशिश की। कैकेयी की किस्मत बदल गई, उन्हें क्रश प्यारा लगने लगा। वह बगुले को हंसी का पात्र समझकर (वेरिनिको का हित समझकर) उसकी सराहना करने लगी। कैकेयी ने कहा--मन्थरा! सुनो, तुम जो कहते हो वह सत्य है। मेरी दाहिनी आँख लगातार फड़कती रहती है। मैं हर रात बुरे सपने देखता हूँ; लेकिन मेरी नादानी के कारण वो आपको नहीं बताती.

दोस्त! मैं क्या करूँ, मेरा स्वभाव सरल है। मुझे दाएं-बाएं का कुछ भी पता नहीं. जहां तक मेरी क्षमता है, मैंने आज तक कभी किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया है. फिर न जाने किस पाप के कारण भगवान ने मुझे एकाएक यह दारुण दुःख दे दिया। चाहे मैं नेहर जाऊं और वहीं अपना जीवन बिताऊं; लेकिन जब तक मैं जीवित हूं, मैं छोटे-मोटे काम नहीं करूंगा। जिसे परमेश्वर शत्रु के वश में करके जिलाता है, उसके लिये जीवित रहने से मरना ही भला है। [उसने कहा--]

तुम मन में ग्लानि का भाव लेकर ऐसा क्यों कह रहे हो, तुम्हारी खुशी दिन-ब-दिन दोगुनी हो जाएगी।

जिसने तुम्हारा अनिष्ट चाहा है, उसे वैसा ही फल (बुराई के रूप में) मिलेगा। हे स्वामिनी! जब से मैंने यह कुमत सुना है, न दिन को भूख लगती है, न रात को नींद आती है। जब मैंने ज्योतिषियों से पूछा तो उन्होंने एक रेखा खींच दी (गणना से या निश्चित रूप से) और कहा कि भरत ही राजा होंगे, यह सत्य बात है। हे भामिनी! अगर आप ऐसा करेंगे तो मैं आपको इसका समाधान बताऊंगा. राजा आपके अधीन है। [कैकेयी ने कहा--] मैं आपके अनुरोध पर कुएं में गिर सकती हूं, मैं अपने बेटे और पति को भी छोड़ सकती हूं। जब आप मेरा महान् दुःख देखकर कुछ कहेंगे, तो मैं अपने हित के लिये ऐसा क्यों न करूँगा?

कैकेयी को [सभी प्रकार से] स्वीकार करने के बाद (अर्थात उसे एक बलि का जानवर बनाकर) उसने धोखेबाज चाकू को अपने [कठोर] हृदय के पत्थर पर रख दिया (उसके धारकों को तेज कर दिया)। रानी केकेई अपने निकट (जल्द आने वाले) दुःख को कैसे नहीं देख सकती, जैसे हरी घास पर चरने वाली एक मादा पशु, लेकिन यह नहीं जानती कि मृत्यु उसके सिर पर नाच रही है।

मंथरा की बातें सुनने में तो कोमल हैं, परन्तु परिणाम में कठोर (भयानक) हैं। मानो वह शहर को जहर दे रही हो. दासी कहती है--अरे मालकिन! आपने मुझे एक कहानी सुनाई थी, आपको याद है या नहीं? तुम्हारे दोनों आशीर्वाद राजा के पास धरोहर हैं। आज राजा से उन्हें माँगकर अपना सीना ठण्डा करो। अपने बेटे को राज्य और राम को वनवास दो और सोता का सारा आनंद छीन लो।

जब राजा के मन में राम की सुगंध आ जाए तो वचन न टूटे इसके लिए वरदान मांगना। आज रात गुजर गयी तो काम बिगड़ जायेगा. मेरे वचनों को अपने हृदय में प्रिय [या यहां तक कि अपने प्राणों में भी] प्रिय समझो। पापिनी मंथरा ने बड़ी दुष्ट घात लगाकर कहा- जाओ कोप भवन में। सभी कार्य बहुत सावधानी से करें, राजा पर अचानक विश्वास न करें (उसकी बातों में न आएं)।

रानी ने कुबरी को अपने प्राणों के समान प्रिय समझकर उसकी महान बुद्धि की बार-बार प्रशंसा की और कहा- तुम्हारे समान हितकारी संसार में कोई नहीं है मेष राशि। जब मैं दूर जा रहा हूँ तो तुम मेरा सहारा बन गए हो। हे मित्र, यदि भगवान कल मेरी इच्छा पूरी कर दे! मैं तुम्हें अपनी आंखों का तारा बनाऊंगा. इस प्रकार अनेक प्रकार से दासी का आदर-सत्कार करके केकेयी कोपभवन में चली गयी।

विशति (कलह) बीज है, दासी वर्षा ऋतु है, केकेयी की कुबुद्धि उस बीज को बोने की भूमि है। गया। इसमें विश्वासघाती पानी पाकर, अद्दूर फूट पड़ा। दोनों आशीर्वाद उस एस्चडस के दो पत्ते हैं और अंत में इसका परिणाम दुःख ही होगा। कैकेयी कोपका सब तैयार हो गईं और [कोप भवन में] सोने चली गईं। शासन करते-करते वह अपनी दुष्ट बुद्धि से नष्ट हो गयी। राजमहल और नगर में बड़ी धूमधाम है। इस बदमाश के बारे में किसी को कुछ नहीं पता.

नगर के सभी नर-नारी बड़े हर्ष के साथ मंगलकामनाओं से सुसज्जित हो रहे हैं। कुछ अन्दर जाते हैं, कुछ बाहर जाते हैं; राजद्वार पर बड़ी भीड़ है. श्री रामचन्द्र जी के बाल्यकाल में राज्याभिषेक का समाचार सुनकर वे मन ही मन प्रसन्न होते हैं। उनमें से दस-पाँच श्री रामचन्द्रजी के पास जाते हैं। उनके प्रेम को पहचानकर प्रभु श्री रामचन्द्रजी उनका आदर करते हैं और कोमल वाणी से उनका हाल पूछते हैं।

अपने प्रिय मित्र श्री रामचन्द्रजी की आज्ञा पाकर वे घर लौटते हैं और एक-दूसरे से श्री रामचन्द्रजी की प्रशंसा करते हुए कहते हैं - श्रीरघुनाथजी के समान शील और निष्ठा का पालन संसार में कौन करता है? ईश्वर हमें ऐसा प्रदान करें कि हम अपने कर्म के अनुसार परिश्रम करते हुए जिस योनि में जन्म लें, वहीं (उस योनि में) हम सेवक बनें और सीतापति श्री रामचन्द्रजी हमारे स्वामी हों और यह संबंध अंत तक बना रहे।

शहर में हर किसी की यही चाहत है. परन्तु कैकेयी के मन में बड़ी ईर्ष्या है। कुसंगति से कौन नष्ट नहीं होता? अपने से नीच की बात मानने में कोई चतुराई नहीं है। शाम को राजा दशरथ आनंद के साथ केकयी के महल में गये। मानो प्रेम ही शरीर का रूप धारण कर वैराग्य की ओर चला गया हो! कोपभवन का नाम सुनकर राजा घबरा गये। डर के मारे उसके पैर आगे नहीं बढ़ते। जिनकी भुजाओं पर स्वयं भगवान इंद्र विश्राम करते हैं (राक्षसों के भय के बिना) और जिनकी ओर सभी राजा देखते रहते हैं।

वही राजा दशरथ खत्री का क्रोध सुनकर सूख गये। कामदेव की महिमा और महिमा को देखो। जो त्रिशूल, वत्र और तलवार आदि के प्रहार को अपने टखनों पर सहने वाले थे, वे रतिनाथ कामदेव के पुष्प बाण से मारे गये। राजा डरते-डरते अपनी प्रियतमा केकेयी के पास गये। उसकी हालत देखकर उन्हें बहुत दुःख हुआ। कैकेयी भूमि पर लेटी हुई हैं। पुराने मोटे कपड़े पहने हुए. शरीर से विभिन्न आभूषण उतारकर फेंक दिये गये हैं.

उस मूर्ख केके को यह दुष्ट भेष (बुरा भेष) कैसा लग रहा है, मानो भावी वैधव्य की सूचना दे रहा हो। राजा उसके पास गये और मृदु स्वर में बोले-हे प्रिये! तुम उदास क्यों हो? क्या आप देख रहे हैं? दोनों इच्छाएँ [वरदानों की] उस साँप की दो जीभें हैं और दोनों वरदान दाँत हैं; वह काटने के लिए एक प्यारी जगह की तलाश में है। तुलसीदासजी कहते हैं कि राजा दशरथ वचन के वशीभूत होकर इसे (इस प्रकार हाथ मिलाना तथा सर्प के समान दिखना) कामदेव की लीला समझ रहे हैं।

राजा बार-बार कह रहे हैं- हे सुमुखी! हे सुलोचनी! हे कोकिलबयानी. हे गजगामिनी! मैंने अपने क्रोध का कारण सुना। हे प्रिये! किसने तुम्हें नुकसान पहुंचाया? किसके दो सिर हैं? यमराज किसे (अपने लोक में) ले जाना चाहते हैं? बताओ मैं किस राजा को कंगाल बना दूं या किस राजा को देश से निकाल दूं?

यदि तुम्हारा शत्रु अमर (ईश्वर) भी हो तो भी मैं उसे मार सकता हूँ। बेचारे कीट-सदृश नर-नारी, क्या हैं? हेय प्रिय! आप मेरे स्वभाव को जानते हैं कि मेरा मन सदैव आपके मुख रूपी चंद्रमा के समान है। हे प्रिय मेरी प्रजा, मेरा परिवार, सब कुछ (संपत्ति), मेरा बेटा, यहाँ तक कि मेरा जीवन, ये सब आपके नियंत्रण में हैं। यदि मैं तुमसे कपटपूर्वक कुछ कहूं तो हे भामिनी! मुझे कई बार राम की सुगंध महसूस होती है।

तुम हँसते हुए (खुशी से) जो चाहो माँग लो और अपनी सुन्दर आँखों को आभूषणों से सजा लो। अपने मन में विचार करें कि कोई मौका है या नहीं. हे प्रिय। शीघ्र ही इस बुरे भेष को त्याग दो। यह सुनकर और मन में रामजी की महान शपथ का विचार करके मंदबुद्धि केकेयी हँसती हुई उठी और आभूषण पहनने लगी; जैसे कोई हिरण को देखकर फंदा तैयार कर रहा हो.

कैकेयी को अपनी प्रिया जानकर राजा दशरथजी प्रेम से भर गये और पुनः कोमल एवं सुन्दर वाणी में बोले- हे भामिनी! आपकी इच्छा पूरी हो गई है. शहर के हर घर से बधाइयां सुनाई दे रही हैं. मैं कल ही राम को युवराज की उपाधि दे रहा हूं. इसलिये हे सुनयनी! तुम बहुत सुंदर हो। यह सुनते ही उसका कठोर हृदय फटने लगा। मानो कोई पका हुआ फोड़ा फूट गया हो।

इतने भारी दुःख को भी वह हँसकर छिपा लेती थी, जैसे चोर की पत्नी खुल जाने पर नहीं रोती (ताकि उसका भेद खुल न जाये)। राजा अपने छल और चतुराई के बारे में नहीं लिख रहा है. क्योंकि उसे करोड़ों दुष्टों के मुखिया गुरु मननथारा ने शिक्षा दी है। यद्यपि राजा नीति में निपुण होता है; लेकिन त्रियाचरित्र एक अथाह सागर है। फिर उसने मुझसे प्यार करने का नाटक किया (ऊपरी तौर पर प्यार जताते हुए) और अपनी नजरें और चेहरा घुमाकर हंसते हुए बोली-

हे प्रिय, तुम मांगते और माँगते रहते हो, परन्तु कभी कुछ देते या लेते नहीं। आपने दोनों वरदाताओं से कहा था कि उन्हें भी प्राप्त होने में संदेह है। तुमने उन वरदानों को स्मृति में रख लिया और फिर कभी उन्हें नहीं माँगा और अपने भुलक्कड़ स्वभाव के कारण मुझे भी वह वरदान याद नहीं रहा। मुझ पर झूठा आरोप मत लगाओ. भले ही आप दो की जगह चार मांगें. रघुकुल में हमेशा से यह परंपरा रही है कि प्राण भले ही चले जाएं, वचन नहीं जाता।

असत्य के समान पापों का कोई समूह नहीं है। कितने लाखों घुंघराले बाल मिलकर किसी पर्वत के समान हो सकते हैं? 'सत्य' सभी अच्छे गुणों का मूल है। यह बात वेदों और पुराणों में प्रसिद्ध है और मनुजी ने भी यही कहा है। इस पर मैं श्री गम्मामजी की कसम खाने लगा (मेरे मुँह से निकल गया)। श्रीरघुनाथजी मेरे शुभ कर्मों और स्नेह की सीमा हैं। इस प्रकार बात की पुष्टि होने पर मूर्ख केकेयी हँसी और बोली, मानो उसने कुमत (बुरे विचार) रूपी दुष्ट पक्षी (बाज़) को बाहर निकालने के लिए अपनी आँखें खोल ली हों।

राजा की इच्छा सुन्दर वन है, सुख सुन्दर पक्षियों का समुदाय है। भीलनी की तरह कैकेयी भी उस पर अपना वचनरूपी भयंकर बाण छोड़ना चाहती है। [उसने कहा--] ऐ जान! सुनो, मेरे हृदय को प्रसन्न करने वाला एक वर तो दो, भरत का राज्याभिषेक; और हे भगवान! मैं भी हाथ जोड़कर दूसरा वरदान मांगता हूं, कृपया मेरी इच्छा पूरी करें।

राम को तपस्वी का वेश धारण करके चौदह वर्ष तक विशेष वैराग्य भाव (विरागी ऋषियों की भाँति राज्य और परिवार आदि के प्रति पूर्ण उदासीन रहकर) के साथ वन में निवास करना चाहिए। कैकेयी के कोमल वचन सुनकर राजा का हृदय ऐसे दुःखी हुआ जैसे चन्द्रमा की किरणों के स्पर्श से मक्खी का जहाज़ हिल जाता है।

राजा डर गया और उससे कुछ न कह सका, मानो जंगल में कोई चील बटेर पर झपट पड़ी हो। राजा का रंग एकदम उड़ गया था, मानो ताड़ के पेड़ पर बिजली गिर गई हो (जैसे बिजली गिरने पर ताड़ का पेड़ झुलस जाता है और उसका रंग उड़ जाता है, वही हाल राजा का हुआ। उसने अपने माथे पर हाथ रखकर दोनों हाथों को बंद कर लिया) राजा ऐसा सोचने लगा मानो सचमुच सोच रहा हो और शरीर धारण कर रहा हो।

कैकेय ने अयोध्या को नष्ट कर विनाश की सुदृढ़ नींव रखी। किस मौके पर क्या हुआ? मैं स्त्री पर विश्वास करके उसी प्रकार मारा गया, जैसे योग में सिद्धि प्राप्त करते समय अज्ञान योगी को नष्ट कर देता है। इस प्रकार राजा मन ही

मन पश्चाताप कर रहा है। राजा की ऐसी बुरी हालत देखकर मूर्ख केकेयी बा मन ही मन बहुत क्रोधित हुई। [और बोली---] क्या भरत आपका पुत्र नहीं है? क्या तुमने मुझे कीमत देकर खरीद लिया है? (क्या मैं आपकी शादीशुदा पत्नी नहीं हूं?) मुझे दो- हां कहो, नहीं तो ना कहो. आप रघुवंश में सत्य के लिए [प्रसिद्ध] हैं।

तुमने स्वयं मुझसे वरदान माँगा था, भले ही अब न दो। सत्य को छोड़ो और संसार में अपमान सहो। उन्होंने सत्या की बहुत सराहना की और उससे वरदान देने को कहा। सोचा था कि वह मांगेगी. राजा शिबि, दधीचि और बलि ने जो कुछ भी कहा, उन्होंने अपना शरीर और धन त्यागने के बाद भी अपना वचन निभाया। कैकेयी बड़े कटु वचन कह रही है, मानों पानी में नमक छिड़क रही हो।

धर्म का खंभा धारण करने वाले राजा दशरथ ने धैर्यपूर्वक आंखें खोलीं, सिर झुकाया और गहरी सांस लेकर यह कहा- इसने मुझ पर बहुत बड़ा प्रहार किया (ऐसी कठिन परिस्थिति पैदा कर दी जिससे बचना कठिन हो गया)। खड़े हो जाओ (म्यान से बाहर)। अहंकार उस तलवार की मूठ है, विश्वासघात उसकी धार है और उसे कुबरी (मंथरा) रूपी धार पर रखकर तेज़ किया जाता है।

राजा ने देखा कि यह (तलवार) बहुत भयानक और कठोर है [और सोचा--] क्या यह सचमुच मेरी जान ले लेगी? राजा ने छाती कसकर बड़े आदर के साथ अपने प्रिय (कैकायिको) शब्दों में कहा-हे प्रिये! हे कायर! आप विश्वास और प्रेम को कैसे नष्ट कर सकते हैं और ऐसे बुरे शब्द कैसे कह सकते हैं? मेरी दो आँखें (अर्थात् एक ही) हैं, भरत और रामचच्छ; इसमें मैं शद्दुरजी की गवाही देकर सत्य कहता हूं।

मैं प्रातःकाल एक दूत अवश्य भेजूंगा। यह बात सुनकर दोनों भाई (भरत-शत्रुघ्न) तुरंत आ जायेंगे। मैं कोई अच्छा दिन (शुभ मुहूर्त) पाकर सारी तैयारी करके भरत को राज्य दूँगा। राम को राज्य का लोभ नहीं है और भरत से उनका अगाध प्रेम है। मैं बड़ों और छोटों का ध्यान करके अपनी राजनीति कर रहा था (बड़ों को राजतिलक देने जा रहा था)।

इतनी बार राम की खुशबू लेने के बाद, मैं स्वाभाविक रूप से कहता हूं कि सामकी की मां (कोसल्या) ने मुझे इस बारे में कभी कुछ नहीं बताया। निःसंदेह मैंने यह सब तुमसे पूछे बिना किया। इस कारण मेरी इच्छा अधूरी रह गयी. अब अपना गुस्सा छोड़ो और तैयार हो जाओ. कुछ दिनों के बाद भरत युवराज बनेंगे। मुझे केवल एक ही बात का दुःख हुआ कि तुमने बड़ी कठिनाई से दूसरा वर माँगा।

मेरा हृदय अब भी उसकी ज्वाला से जल रहा है। क्या यह स्नेह, क्रोध या सच में सच है? अपना क्रोध छोड़कर राम के अपराध का वृत्तान्त कहो। सब कहते हैं कि हम राम बड़े साधु हैं। इसके अलावा: रामकी उसकी सराहना करती थी और उसके प्रति स्नेह दिखाती थी। अब यह सुनकर मुझे संदेह हो गया कि कहीं आपकी प्रशंसा और स्नेह झूठा तो नहीं था?] जिसकी इच्छाएं शत्रुओं के भी अनुकूल हों, वह अपनी माता के प्रति प्रतिकूल आचरण कैसे करेगा?

हे प्रिये! हँसी और क्रोध का त्याग करो और बुद्धिपूर्वक (सही-गलत) विचार करके वर माँगो, जिससे अब मैं भरत का राजतिलक भरी आँखों से देख सकूँ। मछली पानी के बिना जीवित रह सकती है और साँप मोती के बिना कष्ट और कष्ट में रह सकता है। परन्तु मैं स्वभाव से कहता हूं, मन में जरा सा भी कपट रखकर नहीं कि राम के बिना मेरा जीवन नहीं है।

तुम चतुर हो प्रिये. मुझमें समझ देखो, मेरा जीवन श्रीगम के दर्शन के अधीन है। राजा के कोमल वचन सुनकर मूर्ख केकयी को अत्यंत ईर्ष्या होती है। मानो आग में घी डाला जा रहा हो. [केकेयी कहती है---] आप करोड़ों उपाय क्यों नहीं करते, आपकी माया [चालबाजी] यहां नहीं चलेगी। या तो मैंने जो माँगा है वह मुझे दे दो, नहीं तो 'नहीं' कहने पर तुम्हारी बदनामी होगी। मुझे उपद्रव पसंद नहीं है.

राम तो ऋषि हैं, आप तो ज्ञानी ऋषि हैं और राम की माता भी अच्छी हैं; मैंने सबको पहचान लिया है. कोसल्या ने मेरे लिये जो हित चाहा है, मैं भी साका (स्मरण करने योग्य) करके वही फल प्राप्त करूँगा। यदि राम प्रातःकाल मुनिका बनकर वन में न जायं तो हे राजन्! अपने मन में यह निश्चित रूप से समझ लो कि मैं मर जाऊँगा और तुम बदनाम हो जाओगे!

इतना कहकर कुटिल कैकेयी ऐसे उठ खड़ी हुई मानो क्रोध की नदी उमड़ पड़ी हो। वह नदी पाप के पर्वत से निकली है और क्रोध के जल से भरी हुई है; [यह इतना भयानक है कि] इसे देखा नहीं जा सकता! दोनों आशीर्वाद उस नदी के दो किनारे हैं, कैकेयी का हठ उसकी [तेज] धारा है और कुबरी (मंथरा) के शब्दों की प्रेरणा भैवर है। [क्रोध की वह नदी. राजा दशरथ की छाती को जड़मूल से नष्ट करने वाली विपत्ति सीधे समुद्र की ओर बढ़ चली है।

राजा समझ गये कि बात सचमुच सच्ची है, मेरी मृत्यु ही स्त्री के नाम पर उनके सिर पर नाच रही है। इसके बाद राजा ने कैकेयी के पैर पकड़कर उन्हें बैठाया और प्रार्थना की कि वह सूर्य कुल में शामिल हो जाएं। मेरी छाती पर कुल्हाड़ी मत बनो, मेरा सिर मांगो, मैं तुम्हें अभी दे दूंगा। परन्तु राम के दुःख में मुझे मत

मारो। जिस भी उपाय से हो सके, राम को बनाये रखो। नहीं तो जिंदगी भर छाती जलती रहेगी।

राजा ने देखा कि यह रोग असाध्य है, तब वह भूमि पर गिर पड़ा और सिर पीट-पीटकर जोर से कहने लगा (हा राम! हा राम! जय रघुनाथ!)। केकेयी ने फिर कटु और कठोर वचन बोले, मानो घाव में विष भर रही हो। बोलीं--अंत में यही करना था तो आपने 'मांग-मांग' किस आधार पर कहा?

वह राजा है! जोर-जोर से हंसना और गाल फुलाना- क्या ये दोनों एक साथ हो सकते हैं? उदार भी बनो और कंजूस भी बनो. क्या राजपूती में कोई स्वस्थ रह सकता है? (लड़ाई में बहादुरी दिखाओ और चोट मत खाओ!) या तो वादा छोड़ दो या धैर्य रखो। बेबस खत्री की तरह मत रोओ. सत्यव्रती के लिए शरीर, स्त्री, पुत्र, घर, धन और पृथ्वी- ये सभी तिनके के समान कहे गए हैं।

कैकेयी की हृदयस्पर्शी बातें सुनकर राजा ने कहा, "तुम जो चाहो कह सकती हो, तुममें कोई बुराई नहीं है।" मानो मेरी मृत्यु ने पिशाच की भाँति तुम्हें आ घेरा है, वही तुमसे यह सब कह रहा है। भूल से भी भारत को राजाई नहीं चाहिए। आपके वचन के कारण कुमति आपके जीवन में आई। यह सब मेरे पापों का फल है, जिसके कारण विधाता गलत समय पर मेरे विरुद्ध हो गये।

[तुम्हारा उजाड़] यह सुंदर अयोध्या फिर से अच्छी तरह से बस जाएगी और सभी गुणों का निवास भी श्री राम का प्रभुत्व होगा। सभी भाई उनकी सेवा करेंगे और तीनों लोकों में श्री राम की महिमा होगी। केवल तुम्हारा कलंक और मेरा पश्चाताप मरने के बाद भी नहीं मिटेगा, किसी भी प्रकार नहीं मिटेगा। , अब तुम्हें जो अच्छा लगे वही करो। अपना मुँह छिपाकर मेरी आँखों के पीछे बैठ जाओ (अर्थात् मुझसे दूर हट जाओ, मुझे अपना मुँह मत दिखाओ)।

मैं हाथ जोड़कर कहता हूं कि जब तक मैं जीवित हूं, दोबारा कुछ मत कहना (अर्थात् मुझसे मत बोलना)। अरे अभागिनी! फिर अंत में तुम्हें पछतावा होगा कि तुम धन के लिये गाय की हत्या कर रहे हो। राजा लाख प्रकार से समझाकर (कहकर) पृथ्वी पर गिर पड़ा कि तुम क्यों सर्वनाश कर रहे हो। परन्तु कपट में चतुर कैकेयी कुछ नहीं कहती, मानो (चुप रहकर) मसान जगा रही हो (श्मशान में बैठकर कोई मन्त्र कर रही हो)।

राजा राम-राम जप रहा है और बिना पंख के पक्षी के समान व्यथित है। वह अपने दिल में समझाता है कि सुबह न हो और कोई जाकर भश्री रामचन्द्रजी से यह बात न कहे। हे रघुकुल के गुरु (महान पूर्वज) सूर्यदेव! आप स्वयं नहीं उठते.

अयोध्याको बेहाल देखकर] तुम्हारे हृदय में बड़ी वेदना होगी। राजा का प्रेम और केकेयी की क्रूरता... दोनों को ब्रह्मा ने अपनी सीमा तक बनाया है (अर्थात् राजा का प्रेम सीमित है और कैकेयी की क्रूरता)।

विलाप करते-करते राजा को सुबह हो गयी! शाही द्वार पर वीणा, बोसुरी और शाहदुकी की ध्वनि सुनाई दे रही थी। भाट लोग विरुदावली का पाठ कर रहे हैं और गायक उनके गुणों का गुणगान कर रहे हैं। सुनने में वे राजा को तीर के समान लगते हैं। ये सभी मदनाल आभूषण राजा को कैसे शोभा नहीं देते, जैसे आभूषण उस स्त्री को शोभा नहीं देते जो अपने पति के साथ सती हो जाती है! श्री रामचन्द्रजी के दर्शन की उत्कंठा और लालसा के कारण उस रात किसी को नींद न आयी।

राजद्वार पर मंत्रियों और सेवकों की भीड़ लगी हुई है। सूर्य को उगता देख वे सभी पूछते हैं कि ऐसा क्या विशेष कारण है कि अवधपति दशरथजी अभी तक नहीं जागे? राजा सदैव रात के आखिरी पहर में जागते हैं, लेकिन आज हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। हे सुमन्त्र! जाओ, जाकर राजा को जगाओ। आइए उनकी अनुमति लेकर ही सभी कार्य करें।

तब सुमंत रावले (राजमहल) गए, लेकिन महल को भयानक देखकर वे जाने से डर रहे थे। [ऐसा लगता है] जैसे वह दौड़कर काट लेगा, हम उसकी ओर देखते भी नहीं। मानों विपत्ति और दुःख ने वहाँ डेरा डाल दिया हो। पूछने पर कोई उत्तर नहीं देता; वे उस महल में गये जहाँ राजा और केकेयी थे। 'जय-जीब' कहकर वह सिर झुकाकर बैठ गया और बादशाह की हालत देखकर लगभग सूख गया।

[देखा--] राजा विचारों से व्याकुल है, उसके चेहरे का रंग उड़ गया है। वे भूमि पर ऐसे लेटे हुए हैं मानो कमल अपनी जड़ें छोड़कर (उखड़कर) पड़ा हुआ (सूखा) हो। आप डर के मारे कुछ नहीं पूछ सकते. तब अमंगल से परिपूर्ण और शुभ से रहित कैकेयी ने कहा- राजाओं को सारी रात नींद नहीं आयी, इसका कारण तो जगदीश्वर ही जानें। सुबह वह 'राम-राम' याद करके उठा, लेकिन राजा इस बारे में कुछ नहीं बताता।

तुम जल्दी से राम को बुलाओ. फिर आकर समाचार पूछो। राजा का रुख जानकर सुमन्त्र चले गये। वह समझ गया कि रानी ने कुछ गलत किया है। सुमंत्र सोच-विचार में व्याकुल हो जाते हैं, मार्ग पर पैर नहीं रखते (आगे नहीं बढ़ते), सोचते हैं- राजा रामजी को बुलाकर क्या कहेंगे? किसी तरह दिल में धैर्य रखकर वह दरवाजे तक गया। उसे उदास देखकर सभी पूछने लगे।

सबको समझाकर (किसी प्रकार समझाकर) सुमंतना वहां गईं, जहां सूर्यकुल के तिलक श्री रामचन्द्रजी थे। जब श्री रामचन्द्र जी ने सुमंत्र को आते देखा तो अपने पिता के समान मानकर उनका आदर-सत्कार किया। श्री रामचन्द्र जी का मुख देखकर और राजा की आज्ञा सुनकर वे रघुकुल के दीपक श्री रामचन्द्र जी को अपने साथ ले गये। श्री रामचन्द्रजी मंत्री के साथ (बिना किसी औपचारिकता के) बुरे व्यवहार कर रहे हैं। इसे देखकर लोग उत्साहित हो रहे हैं.

राजा के होंठ सूख रहे हैं और सारा शरीर जल रहा है, मानो मणि के बिना साँप उदास हो रहा हो। पास ही मैंने कैकेयी को क्रोध से भरी हुई देखा, मानो [वास्तव में] मृत्यु बैठी हो और राजा के जीवन की [अंतिम] घड़ियाँ गिन रही हो। श्री रामचन्द्रजी का स्वभाव सौम्य और दयालु है। उसने यह दुःख पहली बार देखा था [अपने जीवन में]; उसने पहले कभी दुःख के बारे में नहीं सुना था। फिर भी समय का विचार करके और हृदय में धैर्य रखकर उन्होंने माता कैकेयी से मधुर वचनों से पूछा-

हे माँ! पिता के दुःख का कारण बताओ ताकि यात्रा हो सके जिससे दुःख दूर हो जायेगा। [कैकेयी ने कहा--] हे राम! सुनो, कुल कारण यह है कि राजा को तुम पर बड़ा स्नेह है। उन्होंने मुझे दो वरदान देने को कहा था. जो भी मुझे पसंद आया मैंने वह मांग लिया। यह सुनकर राजा सोच में पड़ गया; क्योंकि वे आपकी झिझक नहीं छोड़ सकते.

यहां बेटे का प्यार भी है और वादा भी है; राजा इसी दुविधा में है. यदि तुम कर सको तो राजा की आज्ञा का पालन करो और उनके कठिन संकटों का निवारण करो। कैकेयी निर्भय होकर बैठी हुई ऐसे कटु वचन बोल रही है कि सुनकर स्वयं कटुता भी अत्यंत व्यथित हो गयी। जीभ एक धनुष है, शब्द कई तीर हैं और राजा स्वयं एक आसान लक्ष्य की तरह है।

इन सभी साजो-सामान के साथ ऐसा प्रतीत होता है मानो खयं टफनेस किसी महान योद्धा का शरीर धारण कर धनुर्विद्या की कला सीख रहे हों। वह श्रीरघुनाथजी को सारा हाल सुनाकर ऐसे बैठी है, मानो सत्यनिष्ठा की मूर्ति हो। सूर्यकुल के सूर्य, श्री रामचन्द्रजी, स्वाभाविक रूप से हर्ष से भरकर मन ही मन मुस्कुराये और समस्त मोह-माया से रहित ऐसे कोमल और सुन्दर वचन बोले, जो मानो वाणी के आभूषण हों -

हे माँ! सुनो, वही पुत्र भाग्यशाली है, जो अपने माता-पिता के वचनों का पालन करता है। हे माँ, जो पुत्र अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करके उन्हें संतुष्ट करता है! यह पूरी दुनिया में दुर्लभ है. वन में ऋषियों की विशेष सभा होगी,

जिसमें मेरा हर प्रकार से कल्याण होगा। उसमें भी फिर पिता की आज्ञा और हे माता! आप सहमत है,

और प्यारे भरत को राज्य मिलेगा। इन सब बातों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि आज विधाता हर प्रकार से मेरे सामने हैं (मेरे अनुकूल हैं)। यदि मैं ऐसे कार्य के लिए वन में भी जाऊं तो मूर्ख समाज में प्रथम स्थान पर मेरी गिनती होनी चाहिए। वे कल्पवक्ष को छोड़कर पत्थर की सेवा करते हैं और अमृत को त्यागकर विष मांगते हैं। हे माँ, कृपया मन में विचार करें कि वे (महामूर्ख) भी ऐसा अवसर कभी नहीं चूकेंगे।

हे माँ! मुझे विशेष रूप से केवल एक ही दुःख हो रहा है, वह है महाराजा को अत्यंत दुःखी देखना। हे माँ, इतनी सी बात के लिए पापा को इतना कष्ट क्यों सहना पड़े? मैं इस पर विश्वास नहीं करता क्योंकि महाराज बहुत धैर्यवान हैं और उनमें गुणों का अथाह सागर है। अवश्य ही मैंने कोई बड़ा अपराध किया है, जिसके कारण महाराज मुझसे कुछ नहीं कहते। तुम मुझे सूँघो, माँ! तुम सच बताओ.

रघुकुल में श्रेष्ठ श्री रामचन्द्रजी के स्वभाव से ही मूर्ख सीधी बात को विकृत करके जान रहा है; उदाहरण के लिए, यद्यपि पानी एक ही है, जोंक उसमें टेढ़ी-मेढ़ी गति से चलती है। श्री रामचन्द्रजी का भाव पाकर रानी केकेयी प्रसन्न हो गयी और कपटपूर्ण क्रोध से बोली- मैं आपकी और भरत की शपथ खाकर कहती हूँ, मैं राजा के दुःख का और कोई कारण नहीं जानती।

हे पिता! आप अपराध के योग्य नहीं हैं (आपके लिए यह संभव नहीं है कि आप अपने माता-पिता के लिए अपराधी बनें)। आप माता-पिता और भाइयों को सुख देने वाली हैं। हे राम! आप जो कुछ कह रहे हैं वह सत्य है। तुम अपने पिता और माता की बातें मानने को तैयार हो। मैं तुम्हारा बलिहार हूँ, तुम अपने पिता को समझाओ और वही बात कहो जो तुमने चौथी (बुढ़ापे) अवस्था में की थी। उन्हें बदनाम नहीं किया जाना चाहिए.' जिस सद्गुण ने उन्हें आप जैसे पुत्र दिये हैं, उसका अनादर करना उचित नहीं है।

मगध देश में गये आदिक तीर्थ की भाँति कैकेयी के बुरे मुँह में ये शुभ वचन कैसे लगते हैं? अर्रामचंद्रजी को माता कैकेयी की सारी बातें ऐसी लगीं मानो गज्जाजी में जल [सभी अच्छे और बुरे प्रकाशों का] शुभ और सुंदर हो जाता है। इतने में राजा की मूर्छा टूट गयी और वह राम का स्मरण करके (राम-राम कहकर) पलट गये। मंतनी ने श्रीरामचंद्रजी से उचित समय पर आने का अनुरोध किया।

जब राजा ने सुना कि श्री रामचन्द्र आये हैं तो उसने धैर्यपूर्वक आँखें खोलीं। मंत्री ने राजा की देखभाल की और उसे बैठाया। राजा ने श्री रामचन्द्रजी को चरणों पर गिरते (प्रणाम करते हुए) देखा॥ राजा ने स्नेह से अभिभूत होकर रामजी को हृदय से लगा लिया। मानो साँप को अपना खोया हुआ रत्न पुनः मिल गया हो। राजा दशरथजी श्री रामजी को देखते रह गये। उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बह चली।

राजा विशेष शोक के वशीभूत होने के कारण कुछ कह नहीं पाता। वे बार-बार श्री रामचन्द्र जी को हृदय से लगाते हैं और मन में ब्रह्मा जी को समझाते हैं कि श्री रघुनाथ जी वन में न जायें। फिर यहदेव जी का स्मरण करके उनकी ओर देखकर कहते हैं- हे सदाशिव! तुम मेरे हो। अनुरोध सुनो. आप आशुतोष (शीघ्र प्रसन्न होने वाले) और अवढरदानी (जो माँगा जाए उसे देने वाले) हैं। अत: आप मुझे अपना विनम्र सेवक समझकर मेरा दुःख दूर कर दीजिये।

भले ही संसार में अपमान हो और सौभाग्य नष्ट हो जाए। चाहे मैं नरक में गिरूं [नया पाप करके], या स्वर्ग में जाऊं (भले ही मुझे पिछले पुण्यों के फलस्वरूप मिलने वाला स्वर्ग न मिले)। और कृपया मुझे सभी प्रकार के दुःख सहन करने की कृपा करें। परन्तु श्री रामचन्द्र मेरी दृष्टि से छिपे न रहें। राजा मन में ऐसा सोचता है, परन्तु बोलता नहीं। उसका मन पीपल के पत्ते की भाँति हिल रहा है। श्रीरघुनाथजी ने प्रेमवश अपने पिता को जानकर यह अनुमान किया कि यदि माता फिर कुछ कहेगी [तो पिता को दुःख होगा] ---

स्थान, काल और अवसर पर विचार करके विनम्र वचन कहें- हे पिता! मैं कुछ कहता हूं, ये तो दुस्साहस है. कृपया इस अनौचित्य को मेरा बचपना समझकर क्षमा करें। इस छोटी-सी बात के लिए तुम्हें इतना कष्ट हुआ। ये बात मुझे पहले किसी ने नहीं बताई. स्वामी (आपको) को इस हालत में देखकर मैंने अपनी माँ से पूछा। उनसे पूरी कहानी सुनने के बाद मेरी सारी घबराहट शांत हो गई (मुझे बहुत खुशी हुई)।

हे पिता! इस शुभ समय पर आप प्रेमवश सोचना बंद करें और प्रसन्न मन से मुझे आज्ञा दें। ऐसा कहकर भगवान श्री रामचन्द्रजी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने फिर कहा-इस धरती पर उस व्यक्ति का जन्म धन्य है जिसके चरित्र से पिता को अपार खुशी मिलती है। जिसे माता-पिता प्राणों के समान प्रिय होते हैं, चारों चीजें (धन, धर्म, काम, मोक्ष) उसके वश में रहती हैं।

मैं आपकी आज्ञा का पालन करके तथा अपने जन्म का फल प्राप्त करके शीघ्र ही लौट आऊंगा, अतः कृपया अनुमति दें। मैं अपनी मां को विदा करने आ रहा हूं.

फिर मैं आपके चरण छूकर वन में चला जाऊंगा। तब श्री रामचन्द्रजी ऐसा कहते हैं। वहां से चला गया. राजा ने दुःखी होकर कोई उत्तर नहीं दिया। वह अत्यंत तीक्ष्ण (अप्रिय) वस्तु इतनी तेजी से सारे नगर में फैल गई मानो उसके डंक मारते ही बिच्छू का जहर सारे शरीर में फैल गया हो।

यह सुनकर सभी खत्री पुरुष ऐसे व्याकुल हो गये जैसे जंगल में आग देखकर लताएँ और सन्तियाँ सूख जाती हैं। जो जहां सुनता है, वहीं सिर पीटने लगता है। बड़ा दुःख है, किसी को धैर्य नहीं। सबके मुँह सूख जाते हैं, आँखों से आँसू बहने लगते हैं, दुःख हृदय में समा नहीं पाता। मानो करुणरा की सेना पूरी शक्ति के साथ अवध पर उतर आई हो।

सारे मेल मिल गये (सारे संयोग सही थे), इतने में विधाता ने बात बिगाड़ दी कि लोग कैकेयी को गालियाँ दे रहे हैं। इस पापी को क्या सूझा कि इसने छायाघर में आग लगा दी? यह अपने हाथों से (बिना आँखों के) आँखें निकालकर देखना चाहता है और अमृत फेंककर विष का स्वाद चखना चाहता है। यही कुटिल, कठोर, मूर्ख और अभागिनी कैकेयी रघुवंश के बाँस वन के लिए अग्नि बन गयी।

एक पत्ते पर बैठकर उसने पेड़ को काट दिया। खुशियों की जगह गम ने ले ली. श्री रामचन्द्रजी उन्हें सदैव अपने प्राणों के समान प्रिय रहे। अभी भी नहीं पता कि उसने यह बुरा काम करने का फैसला क्यों किया। कवि ठीक ही कहते हैं कि खत्री का स्वभाव हर दृष्टि से अथाह और अकल्पनीय है। तुम अपनी परछाई पकड़ लो, लेकिन भाई. महिलाओं की चाल का पता नहीं चलता.

आग क्या नहीं जला सकती? समुद्र में क्या नहीं समा सकता? अबला कहलाने वाली सबल स्त्री [जाति] क्या नहीं कर सकती? और इस दुनिया में वक्त किसी को नहीं खाता. विधाता ने क्या कहा और अब वह दिखाकर क्या दिखाना चाहता है? एक कहता है कि राजा ने अच्छा नहीं किया, मूर्ख के.के. को वरदान नहीं दिया।

जो लोग हठधर्मी थे (कैकेयी की बात पूरी करने में हठ करके) वे ही सब दुःखों के भागी हुए। सात्रि के विशेष प्रभाव से ऐसा प्रतीत होने लगा मानो उनका ज्ञान और गुण लुप्त होते गये। जो लोग धर्म की मर्यादा जानते हैं और बुद्धिमान हैं, वे राजा को दोष नहीं देते। वे एक-दूसरे को शिबि, दधीचि और हशीश्रद्धा की कहानी सुनाते हैं। इसमें कोई भरतजी की राय देता है। कई तो यह सुनकर उदासीन रह जाते हैं (कुछ नहीं कहते)।

कुछ लोग अपने कानों को हाथों से बंद करके और अपनी जीभ को दांतों के बीच दबाकर कहते हैं कि यह झूठ है, ऐसा कहने से आपके पुण्य नष्ट हो जायेंगे। श्री रामचन्द्रजी भरतजी को प्राणों के समान प्रिय हैं। यदि चन्द्रमा (शीतल किरणों के स्थान पर) अग्नि की चिनगारियाँ बरसाने लगे और अमृत विष के समान हो जाये, तो भी भरत जी अपने मन में भी श्री रामचन्द्र जी के विरुद्ध कभी कुछ नहीं करेंगे।
कुछ लोग विधाता को दोष देते हैं, जिसने अमृत के स्थान पर विष दे दिया। सारे नगर में कोलाहल मच गया, सभी चिंतित हो गये। हृदय में जलन होने लगी, हर्ष और उत्साह लुप्त हो गये। ब्राह्मणों की स्त्रियाँ, कुल के सम्मानित बुजुर्ग और जो लोग कैकेयी के बहुत प्रिय थे, उन्होंने उसकी विनम्रता की सराहना की और उसे सबक सिखाना शुरू कर दिया। लेकिन उनकी बातें उन्हें तीर की तरह लगती हैं.

वह कहती है--आप तो सदैव कहा करते थे कि श्री रामचन्द्र की भाँति भरत भी मेरे लिये उत्तम नहीं हैं; ये बात पूरी दुनिया जानती है. श्री रामचन्द्रजी के प्रति आपका स्वाभाविक स्नेह रहा है। आज किस अपराध में आप उन्हें जंगल देते हैं? ॥तुमने कभी व्यभिचार नहीं किया। आपके प्यार और विश्वास को पूरा देश जानता है. अब कौशल्या ने आपका क्या बिगाड़ा था, जिसके कारण आपने सारे नगर पर वज्रपात कर दिया?

क्या सीताजी अपने पति (श्री रामचन्द्रजी) को छोड़ देंगी? क्या लक्ष्मणजी श्री रामचड्ढाजी के बिना घर में रह सकेंगे? क्या श्री रामचन्द्रजी के बिना भरतजी अयोध्यापुरी का राज्य भोग सकेंगे? और क्या राजा श्री रामचन्द्रजी के बिना जीवित रह सकेंगे? (अर्थात यहां न सीताजी रहेंगी, न लक्ष्मणजी रहेंगे, न भरतजी राज्य करेंगे, न राजा जीवित रहेंगे, सब कुछ उजाड़ हो जाएगा)।

हृदय में यह विचार करके क्रोध को त्याग दो, दुःख और विषाद का घर मत बनो। आप भरत को युवराज की उपाधि अवश्य दें, परंतु श्री रामचन्द्रजी का वन में क्या काम! श्री रामचन्द्रजी राज्य के भूखे नहीं हैं। वे धर्म के सिद्धांत का पालन करते हैं और कामुक सुखों से अलग हैं (अर्थात उन्हें कामुक सुखों से कोई लगाव नहीं है)। अत: यह संदेह मत करो कि यदि श्री रामजी वन नहीं जायेंगे तो वे भरत के राज्य में उपद्रव मचा देंगे; इसके बाद भी यदि आप न मानें तो राजा से एक और ऐसा वरदान ले लें कि श्री राम घर छोड़कर गुरु के घर में निवास करें।

यदि आप हमारे निर्देशों का पालन नहीं करते हैं, तो आपको कुछ नहीं मिलेगा। अगर आप किसी बात पर हंसे हैं तो खुलकर बताएं (कि मैंने मजाक किया है)।

क्या राम जैसा पुत्र योग्य है? यह सुनकर लोग आपसे क्या कहेंगे? जल्दी उठो और वह उपाय करो जिससे यह दुःख और कालदु नष्ट हो जाये।

जिस प्रकार [नगर का] शोक और [तुम्हारा] अभिमान मिट जाता है, उसी प्रकार उपाय करके कुल की रक्षा करो। तैयार होकर हठपूर्वक श्री रामजी को वापस ले आओ और किसी अन्य बात के बारे में मत सोचो। तुलसीदासजी कहते हैं- जैसे सूर्य के बिना दिन, प्राण के बिना शरीर और चंद्रमा के बिना रात [निर्जीव और सौंदर्यहीन हो जाती है], उसी प्रकार श्री रामचन्द्रजी के बिना अयोध्या हो जाएगी; हे भामिनी! इस बात को आप अपने दिल में समझ लें तो बेहतर है।

इस प्रकार मित्रों ने ऐसी शिक्षा दी जो सुनने में मधुर और परिणाम में लाभकारी थी। लेकिन कुटिल कुबड़े द्वारा पढ़ाए गए केकेके ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। केकेयी कोई उत्तर नहीं देती, दुःखी क्रोध के कारण असभ्य होती जा रही है। वह ऐसी लग रही है मानो कोई भूखी बाघिन हिरण को देख रही हो. तब उसके दोस्तों ने इस बीमारी को लाइलाज समझा और उसे छोड़ दिया। सभी लोग उसे मंदबुद्धि और बदकिस्मत लड़की कहकर चले गये।

देवने ने शासन करते हुए इस केकेके को नष्ट कर दिया। उसने जो किया वह कोई नहीं करेगा! नगर के सभी स्त्री-पुरुष इसी प्रकार शोक मना रहे हैं और उस पतित कैकेयी को कोटि-कोटि गालियाँ दे रहे हैं। लोग विषमज्वर (भयंकर दुःख की अग्नि) में जल रहे हैं। गहरी साँस लेकर वह कहता है कि श्री रामचन्द्रजी के बिना जीने की क्या आशा? लोग महान वियोग के भय से व्याकुल हो गये हैं, जैसे जल सूख जाने पर जलचरों का समुदाय व्याकुल हो जाता है।

सभी स्त्री-पुरुष अत्यंत दुःख के वशीभूत हैं। स्वामी श्रीरामचन्द्रजी माता कौशल्या के पास गये। उनके चेहरे पर खुशी और मन में चार गुना उत्साह है. राजा को इसे कहीं नहीं रखना चाहिए, यह विचार मिट गया। [राज्याभिषेक के बारे में सुनकर श्री रामजी को दुःख हुआ और उन्होंने पूछा कि अन्य सभी को छोड़कर केवल मेरे बड़े भाई का ही राज्याभिषेक क्यों होता है। अब माता कैकेयी की अनुमति और पिता की मौन सहमति पाकर विचार लुप्त हो गया।

श्री रामचन्द्रजी का मन नये पकड़े गये हाथी के समान है और राज्याभिषेक उस हाथी को बाँधने के लिये कांटेदार लोहे की बेड़ी के समान है। 'मुझे बनना है', यह सुनकर और यह जानकर कि मैं बंधन से मुक्त हूँ, मेरे हृदय में हर्ष बढ़ गया। रघुकुल तिलक श्री रामचन्द्र जी ने प्रसन्नतापूर्वक दोनों हाथ जोड़कर माता के चरणों में सिर झुका दिया। माता ने उन्हें आशीर्वाद दिया, हृदय से लगा लिया और आभूषण तथा वस्त्र प्रदान किये।

माता बार-बार श्री रामचन्द्रजी का मुख चूम रही हैं। आंखें प्रेम के आंसुओं से भर जाती हैं और हर कोई रोमांचित हो जाता है. उन्होंने श्रीराम को अपनी गोद में बैठाया और फिर हृदय से लगा लिया। सुन्दर स्तनों से प्रेम (दूध) टपकने लगा। उनका प्यार और अपार खुशी शब्दों से परे है। मानों दरिद्र को कुबेर का पद प्राप्त हो गया हो। माता ने उसके सुन्दर मुख की ओर बड़े आदर की दृष्टि से देखकर मधुर वचन बोले-

हे पिता! माँ बलिहारी जाती है, बताओ, वह आनंदमय लग्न कब है, जो मेरे पुण्य, शील और सुख की सुन्दर सीमा है और जन्म लेने के लाभों की पूर्ण अवधि है; और जिसे (लग्न) सभी स्त्री-पुरुष अत्यंत आतुरता से उसी प्रकार चाहते हैं, जैसे प्यासे चातक और चातक शरद् ऋतु की स्वातिनक्षत्र की वर्षा के लिए लालायित रहते हैं।

हे पिता! मैं गेंद ले लूँगा, तुम जल्दी से नहा लो और अपनी इच्छानुसार कुछ मिठाइयाँ खा लो। भाई फिर अपने पिता के पास जाओ. बहुत देर हो गयी है, माँ बलिहारी जाती है। माता के अत्यंत अनुकूल वचन सुनकर - जो मानो वृक्ष रूपी कल्पवृक्ष के फूल हों, जो सुख रूपी रस से भरे हुए हों तथा श्री (राजा लक्ष्मी) की जड़ें हों - ऐसे पुष्पों का दर्शन करना शब्द रूप श्री रामचन्द्र जी ने भौंरा को मन में नहीं भुलाया।

धर्म की प्रगति को जानकर धर्मपरायण श्री रामचन्द्र जी ने अपनी माता से अत्यन्त कोमल स्वर में कहा- हे माता! पिता ने मुझे वनका राज्य दिया है, जहाँ मेरा सब प्रकार से महान् कार्य सम्पन्न होगा। हे माँ! आप प्रसन्न मन से मुझे आज्ञा दें, जिससे मेरी वन यात्रा में आनंद आये। मेरी मुहब्बत से भूल कर भी मत डरना. हे माँ! आपकी कृपा से आनन्द ही आनन्द होगा।

चौदह वर्ष तक स्वर्ग में रहकर तुम मेरे पिता की बात को सत्य सिद्ध करना, तब मैं लौटकर तुम्हारे चरणों का दर्शन करूँगा; अपना दिल उदास मत करो. रघुकुल में श्रेष्ठ श्री रामजी के ये अत्यंत विनम्र और मधुर वचन माता के हृदय में बाण की भाँति लगे और हृदय कसने लगा। उस मृदुल स्वर को सुनकर कोसल्या भयभीत हो गई और उसी प्रकार सूख गई, जैसे वर्षा के जल से घास सूख जाती है।

धैर्य धारण करके माता अपने पुत्र का मुख देखकर दुःखी वचन कहने लगी- हे पिता! तुम अपने पिता को प्राणों के समान प्रिय हो। वह आपके किरदारों को देखकर हमेशा खुश होते थे।' उन्होंने ही राज्य देने के लिए शुभ दिन मांगा था।

तो फिर अब किस अपराध में तुम्हें वन जाने को कहा गया? हे पिता! मुझे कारण बताओ! सूर्य रूपी वन को जलाने वाली अग्नि कौन बनी?

तब श्री रामचन्द्रजी का भाव देखकर मंतनी के पुत्र ने सब कारण बताकर कहा। वह घटना सुनकर वह गूंगी (चुप) सी रह गयी, उसकी स्थिति का वर्णन नहीं किया जा सकता। न तो वह इसे रख सकती है और न ही उसे जंगल जाने के लिए कह सकती है. दोनों ही प्रकार से हृदय में बड़ी वेदना होती है। [तुम मन में सोचते हो कि देखो---- विधाता का मार्ग सबके लिए टेढ़ा ही होता है। चंद्रमा लिखने लगा और राहु लिखने लगा.

कोसल्याजी के मन में धर्म और प्रेम दोनों ही व्याप्त थे। उसकी हालत साँप जैसी हो गई। वह सोचने लगी कि यदि मैं (जिद करके) निवेदन करके पुत्र को रख लूंगी, तो धर्म की हानि होगी और भाइयों में विरोध होगा; ॥और यदि मैं तुम्हें वन में जाने को कहूँ तो बड़ी हानि होगी। इस प्रकार की धर्मसंकट में पड़कर रानी विशेषतया विचारों में पड़ गयी। तब बुद्धिमान कोसल्याजी ने नारी धर्म (पंतीव्रत-धर्म) को समझकर और यह जानकर कि राम और भरत दोनों पुत्र समान हैं -

श्री रामचन्द्रजी की सरल स्वभाव वाली माता बड़े धैर्य से बोलीं- हे पिताजी! मैं बलिहारी जा रहा हूं, तुमने अच्छा किया. पिता की आज्ञा का पालन करना सभी धर्मों का सर्वोच्च धर्म है। मैंने राज्य माँगकर वन दे दिया, इसका मुझे तनिक भी दुःख नहीं है। (दुख की बात यह है कि) तुम्हारे बिना भरत, राजा और प्रजा को भारी कष्ट होगा।

है तात | यदि पिता की आज्ञा हो तो अपनी माता [पिता] को श्रेष्ठ मानकर वन में न जाओ। परंतु यदि पिता और माता दोनों ने ही तुम्हें वन जाने को कहा है तो वह वन तुम्हारे लिए सैकड़ों अयोध्या के समान है। वन के देवता तुम्हारे पिता होंगे और वन देवियाँ तुम्हारी माता होंगी। वहाँ के पशु-पक्षी आपके चरणकमलों के सेवक होंगे। अन्त में राजा को वनवास लेना ही उचित है। आपकी (नाज़ुक) हालत देखकर ही मेरा दिल दुःख से भर जाता है।

यह रघुवंश का तिलक है! वन बड़ा सौभाग्यशाली है और यह अवध अभागा है, जिसे तुमने त्याग दिया। अरे बेटा! अगर मैं कहूँ कि मुझे भी साथ ले चलो, तो तुम्हारे दिल में शक हो जायेगा (कि माँ इसी बहाने मुझे रोकना चाहती है)। बेटा तुम सबके चहेते हो. आत्मा का जीवन और हृदय का जीवन हो। वही (जीवन आधार) जो तुम कहती हो, माँ! मैं वन में चला जाऊँगा और तुम्हारी बातें सुनकर बैठकर पश्चाताप करूँगा!

यही सोच कर मैं झूठा स्नेह दिखाकर जिद्दी नहीं बनता! बेटा ! मैं बलैया को ले जाता हूं, मां समझकर मेरा ध्यान मत भूलो। हे गोसाईं! जिस प्रकार पलकें आंखों की रक्षा करती हैं, उसी प्रकार सभी देवता और पितर आपकी रक्षा करें। आपके वनवास की अवधि (चौदह वर्ष) जल है, आपके प्रियजन और रिश्तेदार मछली हैं। आप दया की खान और धर्म की धुरी के वाहक हैं।

ऐसा सोचकर वही उपाय करें जिसमें जीते जी सबसे मिल सकें। मैं बलिहारी जा रहा हूं, तुम अपने नौकर-चाकरों, परिजनों और पूरे नगर को अनाथ कर दो और खुशी-खुशी वन में चले जाओ। आज सबके पुण्यों का फल पूरा हुआ! कठिन समय हमारे विरुद्ध हो गया। [इस प्रकार] बहुत विलाप करके और अपने को अत्यंत अभागा मानकर माता श्री रामचन्द्रजी के चरणों में लिपट गयीं।

हृदय में भयानक दुःख और वेदना भर गई। उस समय के विविध विलापों का वर्णन नहीं किया जा सकता। श्री रामचन्द्रजी ने सास को उठाकर हृदय से लगा लिया और फिर कोमल वचन कहकर समझाया। उसी समय यह समाचार सुनकर सीताजी अकुला उठीं और अपनी सास के पास जाकर उनके चरणकमलों की वन्दना करके सिर झुकाकर बैठ गईं।

सास ने मुझे धीमी आवाज में आशीर्वाद दिया. सीताजी को अत्यंत सुन्दर देखकर वह व्याकुल हो गयीं। रूपकी राशि और उसके पति से निश्छल प्रेम करने वाली सीताजी मुँह झुकाये बैठी सोच रही हैं। जीवनाथ (प्राणनाथ) वन जाना चाहते हैं। आइए देखें कि कौन सा गुणी व्यक्ति उनके साथ जाएगा - क्या शरीर और आत्मा दोनों उनके साथ होंगे या केवल उनकी आत्मा ही उनके साथ होगी? रचनाकार होने के बारे में कुछ भी पता नहीं है.

सीताजी अपने सुन्दर पैरों के नखों से पृथ्वी को खरोंच रही हैं। ऐसा करते समय कवि वरमालाओं के मधुर शब्दों का वर्णन इस प्रकार करता है कि मानो वरगण प्रेम के वशीभूत होकर यह विनती कर रहे हों कि सीताजी के चरण उन्हें कभी न त्यागें। सीताजी अपने सुन्दर नेत्रों से आँसू बहा रही हैं। उनकी यह दशा देखकर श्री रामजी की माता कौशल्याजी ने कहा- हे पिताजी! सुनो, सीता अत्यंत सुन्दर है और उसके सास-ससुर तथा सभी बन्धु-बान्धव उससे प्रेम करते हैं।

उनके पिता जनकजी राजाओं के मुकुटमणि हैं; ससुर सूर्य कुल का सूर्य है और पति चंद्रमा है जो सूर्य कुल के कमल के फूल का पोषण करता है और गुणों और सुंदरता का भंडार है। फिर तो मुझे सुन्दर रंग, सुन्दर गुण और शील वाली प्यारी

बहू मिल गयी है। मैंने उसे (जानकी को) अपनी आँखों का तारा बनाकर उसके प्रति अपना प्रेम बढ़ाया है और उसमें अपना जीवन लगा दिया है।

कल्पलता की भाँति मैंने बड़े लाड़-प्यार से, प्रेम-जल से सींचकर, अनेक प्रकार से उनका पालन-पोषण किया है। अब इस लता के पुष्पित होने के समय विधाता चले गये। नतीजा क्या होगा यह तो पता नहीं. बिस्तर, गोद और हिंडोले को छोड़कर कभी भी कठोर धरती पर पैर न रखें। मैं जीवन की जड़ी-बूटी की तरह सदैव उनकी रक्षा करता रहा हूँ! वह मुझसे कभी दीये की बाती हटाने को भी नहीं कहती।

वही सीता अब आपके साथ वन में जाना चाहती हैं। हे रघुनाथ! उसके पास क्या आदेश हैं? चंद्रमा की किरणों के अमृत की चाहत रखने वाली चकोरी अपनी आंखें सूर्य की ओर कैसे कर सकती है? वन में हाथी, सिंह, राक्षस आदि अनेक दुष्ट जीव विचरते रहते हैं। अरे बेटा! क्या सुन्दर संजीवनी बूटी विष के बगीचे की शोभा बढ़ा सकती है?

जंगल के लिए भगवान ब्रह्मा ने कोल और भील कन्याओं की रचना की, जो विषय-भोग नहीं जानतीं और जिनका स्वभाव पत्थर के कीड़ों के समान कठोर है। जंगल में उन्हें कभी कोई परेशानी नहीं होती. अथवा तपस्वियों की स्त्रियाँ वन में रहने के योग्य हैं, जिन्होंने तपस्या के लिए सभी सुखों का त्याग कर दिया है। अरे बेटा! चित्र में बंदर को देखकर डरने वाली सीता वन में कैसे रह सकती हैं?

क्या देवसरोवर के कमल उद्यानों में विचरण करने वाला हंस तालाबों में रहने योग्य है? यह सोचकर मैं आपकी आज्ञानुसार जानकी को भी वही शिक्षा दूँगा। माँ कहती है- सीता घर में रहेगी तो मुझे बहुत सहारा मिलेगा। श्री रामचन्द्रजी ने अपनी माता की वह प्रिय वाणी सुनकर, जो शील और वात्सल्य के रस से भीगी हुई जान पड़ती थी।

ज्ञानमय और प्रेमपूर्ण बातें कहकर माता को संतुष्ट किया। फिर वे वन के गुण-दोष बताकर जानकीजी को समझाने लगे। वह माता के सामने सीताजी से कुछ भी कहने में झिझकते थे। परन्तु मन में यह समझकर कि यही समय है, उसने कहा-हे राजकुमारी! मेरी शिक्षा सुनो. मन में कुछ भी गलत मत समझना,

यदि तुम अपना और मेरा भला चाहते हो तो मेरी बात मानो और घर पर ही रहो। हे भामिनी! मेरी आज्ञा का पालन किया जायेगा और मेरी सास की सेवा की जायेगी। घर पर रहना हर तरह से अच्छा है. अपने सास-ससुर के आदरपूर्वक चरणों की पूजा (सेवा) करने से बढ़कर दूसरा कोई धर्म नहीं है। जब भी माँ को

मेरी याद आती है और प्रेम से अभिभूत होकर उसका मन भोला हो जाता है (वह अपने आप को भूल जायेगी)

हे सुन्दरी! बीच-बीच में आप उन्हें धीमी आवाज में पुरानी कहानियां सुनाकर समझाएं। हे सुमुखी! मुझे। ख़ुशबूएं हैं सैकड़ों, ये तो मैं फ़ितरत से कहता हूं कि मैं तुम्हें सिर्फ़ अपनी मां के लिए घर में रखता हूं। [मेरे आदेशों का पालन करने और घर पर रहने से], आपको गुरु और बेदा द्वारा सहमत धर्म का पालन करने का फल बिना किसी परेशानी के मिलता है। परंतु हठ के कारण गालव मुनि और राजा नहुष आदि सभी को कष्ट सहना पड़ा।

हे सुमुखी! हे बुद्धिमान! सुनो, मैं भी अपने पिता के वचनों को पूरा करके शीघ्र ही लौटूंगा। दिन बीतते देर नहीं लगेगी. ओह सुन्दर! हमारा यह पाठ सुनो. हे वामा! यदि आप प्रेम के कारण जिद करेंगे तो परिणाम में आपको कष्ट ही भुगतना पड़ेगा। वह वन बड़ा कठिन (कष्टदायक) और भयानक है। वहां की धूप, ठंड, बारिश और हवा सब बहुत भयानक हैं.

रास्ते में कांटे ही कांटे और बहुत सारे कंकड़ हैं। इन पर बिना जूतों के ही चलना पड़ेगा। आपके चरण कमल कोमल और सुन्दर हैं तथा मार्ग में बड़े-बड़े दुर्गम पर्वत हैं। पर्वतों की गुफाएँ, कंदराएँ, नदियाँ और झरने इतने दुर्गम और गहरे हैं कि कोई उन पर नज़र भी नहीं डाल सकता। भालू, बाघ, भेड़िये, शेर और हाथी ऐसे भयानक शब्द बोलते हैं कि धीरज उन्हें सुनकर भाग जाता है।

तुम्हें जमीन पर सोना होगा, पेड़ की छाल से बने कपड़े पहनने होंगे और कंद, जड़ और पत्ते खाने होंगे। और क्या हम हमेशा हर दिन मिलेंगे? हर चीज़ अपने समय के अनुसार मिलेगी. चारों ओर रात्रिचर राक्षस (राक्षस) घूमते रहते हैं जो मनुष्यों को खा जाते हैं। वे लाखों मिथ्या रूप धारण करते हैं। ऐसा लगता है मानो पहाड़ का पानी हो. जंगल की दुर्दशा का वर्णन नहीं किया जा सकता।

जंगल में भयंकर साँप, भयानक पक्षी और नर-नारियों को चुराने वाले राक्षसों के झुंड रहते हैं। जंगल के आतंक को याद करके ही वीर पुरुष भी भयभीत हो जाते हैं। तब हे मृगलोचनी! आप स्वभाव से डरपोक हैं! ॥है हंसगामणि! आप एक के योग्य नहीं हैं. तुम्हारे वन में जाने की बात सुनकर लोग मेरी निन्दा करेंगे (बुरा-भला कहेंगे)। क्या मानसरोवर के अमृत समान जल से पोषित हंस खारे समुद्र में जीवित रह सकता है?

क्या नए आम के जंगल में घूमने वाली कोयल केरल के जंगल में अच्छी लगती है? अरे। चंद्रमुखी यही मन में विचार करके तुम घर में रहो। जंगल में बड़ा कष्ट

है। जो व्यक्ति स्वाभाविक रूप से कल्याण में रुचि रखने वाले गुरु और स्वामी की शिक्षाओं का पूरे दिल से पालन नहीं करता है, उसके दिल में गहरा पश्चाताप होता है और उसका कल्याण निश्चित रूप से प्रभावित होता है।

अपने प्रियतम के कोमल और प्यारे वचन सुनकर सीताजी की सुन्दर आँखों में आँसू भर आये। श्री रामजी के इस शीतल पाठ ने उन्हें किस प्रकार जला डाला, जैसे शरद ऋतु की चाँदनी रात आग को जला देती है। उसने अपनी सास के चरण छूकर हाथ जोड़कर कहा- हे देवी! कृपया मेरी अत्यधिक धृष्टता को क्षमा करें। मेरे पिता ने मुझे केवल वही शिक्षा दी है जो मेरे परम हित के लिए है। परन्तु मैंने हृदय में यह अनुभव किया कि पति-वियोग के समान संसार में कोई दुःख नहीं है।

हे प्राणनाथ! हे दया के धाम! हेय प्रिय। हे सुखदाता! हे सुजान! हे रघुकुल रूपी कुमुदिनी को खिलने वाले चंद्रमा! तुम्हारे बिना स्वर्ग भी मेरे लिए नर्क के समान है। माँ, पिता, बहन, प्यारा भाई, प्यारा परिवार, दोस्तों का समुदाय, सास, ससुर, शिक्षक, रिश्तेदार, मददगार और सुंदर, विनम्र और सुखद बेटा---

हे नाथ! जहां तक स्नेह और रिश्तों की बात है तो पति के बिना हर कोई सूरज से भी ज्यादा झुलसा देने वाली होती है। शरीर, धन, घर, पृथ्वी, नगर और राज्य, ये सब पति के बिना स्त्री के लिए दुःख का समाज हैं। भोग रोग के समान है, आभूषण बोझ के समान है और संसार यम-यतन (नरक की पीड़ा) के समान है। हे प्राणनाथ! तुम्हारे बिना इस संसार में मेरे लिए कुछ भी सुखदायक नहीं है।

जैसे आत्मा के बिना शरीर और जल के बिना नदी, वैसे ही हे प्रभु! वह बिना पुरुष के एक महिला है. हे भगवान! तुम्हारे साथ रहकर और तुम्हारे स्पष्ट शरद पूर्णिमा के चाँद का पूरा चेहरा देखकर मुझे सारी खुशियाँ मिलेंगी। हे नाथ! तुम्हारे रहते पशु-पक्षी मेरे बन्धु-बान्धव, वन ही नगर, वृक्षों की छालें स्वच्छ पत्तियाँ और पर्णकुटी (पत्तों से बनी कुटिया) ही स्वर्ग के समान सुख देने वाली होंगी।

उदार हृदय वाली वन देवियाँ और वन देवता ही सास-ससुर की भाँति मेरी देखभाल करेंगे तथा कुशा और पत्तों का सुन्दर साथ भगवान के साथ कामदेव के सुन्दर तोशक के समान होगा, कन्द, मूल और फल अमृत के समान भोजन होंगे और पर्वत (जंगल के) अयोध्या का आधार होंगे। सैकड़ों राजमहलों के समान होगा। हर क्षण भगवान के चरणकमलों का दर्शन करके मैं उतना ही प्रसन्न रहूँगा जितना दिन में रहता हूँ।

हे नाथ! आपने हमारे अनेक दुखों और अनेक भय, उदासी और वेदना के बारे में बताया। लेकिन “हे धन्य! ये सब मिलकर भी ईश्वर (आप) से वियोग से होने वाले दुःख की बराबरी नहीं कर सकते। ऐसा जानकर हे सुजानशिरोमणि! तुम मुझे अपने साथ ले चलो, मुझे यहाँ मत छोड़ो। एक दोष है. मैं और क्या अनुरोध कर सकता हूँ? आप दयालु हैं और जानते हैं कि हर किसी के दिल के अंदर क्या है।

हे दीनबन्धु! सुंदर हे! हे सुखदाता! वह शील और प्रेम का भण्डार है! यदि आप मुझे इस अवधि (चौदह वर्ष) तक अयोध्या में रखेंगे, तो जान लीजिये कि मैं जीवित नहीं रहूँगा। आपके चरणकमलों का प्रतिक्षण दर्शन करते रहने से मुझे मार्ग पर चलते समय थकान नहीं होगी। ओ प्यारे! मैं आपकी हर प्रकार से सेवा करूंगा और मार्ग में चलने से होने वाली सारी थकान दूर कर दूंगा।

मैं तुम्हारे चरण धोकर वृक्ष की छाया में बैठकर पंखा झलूंगा और मन में प्रसन्न होऊंगा। पसीने की बूंदों वाला काला शरीर देखना - अपने मृत पति को देखकर मुझे दुख के लिए समय नहीं मिलेगा। यह नौकरानी समतल भूमि पर घास और पेड़ों के पत्ते बीनकर रात भर आपके पैर दबायेगी। आपकी कोमल प्रतिमा को बार-बार देखने से मुझे गर्म हवा का एहसास भी नहीं होगा।

ईश्वर के साथ मुझे (जीवित) देखने वाला कौन है (अर्थात कोई नहीं देख सकता)? जैसे शेरनी को खरगोश और सियार नहीं देख पाते। मैं एक सुन्दर लड़की हूँ और भगवान शिव के योग्य हूँ? आपके लिए तपस्या उचित है और मेरे लिए इन्द्रिय सुख? ऐसे कठोर वचन सुनकर भी जब मेरा हृदय नहीं टूटता, हे प्रभु! [ऐसा प्रतीत होता है] कि यह पामर आत्मा आपके वियोग का दारुण दुःख सहन करेगी।

यह कहकर सीताजी अत्यंत व्यथित हो गईं। वे अपने वचन से विमुख होने को भी सहन नहीं कर सके। (अर्थात् शरीर से अलग होने की बात तो दूर, शब्द से भी अलग होने की बात सुनकर वह अत्यंत व्याकुल हो गयी)। उसकी यह दशा देखकर श्रीरघुनाथजी ने मन ही मन यह जान लिया कि इसे यहाँ हठ करके रखने से यह अपने प्राणों को जीवित न रख सकेगी।

तब दयालु सूर्यकुल के स्वामी श्री रामचन्द्रजी ने कहा, तुम अपना विचार त्याग दो और मेरे साथ वन में चलो। आज दुखी होने का कोई अवसर नहीं है. तुरंत जंगल में जाने की तैयारी करो. श्री गमचन्द्रजी ने अपने प्रिय वचन कहकर अपनी प्रिय सीताजी को समझाया। फिर वह देवी मां के चरणों में गिर पड़ा और आशीर्वाद प्राप्त किया। [माँ ने कहा-] बेटा! शीघ्र लौटकर प्रजा के कष्ट दूर करो और यह निर्दयी माता तुम्हें न भूले!

हे विधाता! क्या मेरी हालत भी फिर बदलेगी? क्या मैं इस प्यारी जोड़ी को दोबारा अपनी आंखों से देख पाऊंगा? अरे बेटा! वह सुन्दर दिन और शुभ घड़ी कब होगी जब तुम्हारी माँ अपने जीते जी तुम्हारा चाँद सा मुख फिर देखेगी? हे पिता! 'वत्स' कहकर, 'लाल' कहकर, 'रघुपति' कहकर, 'रघुबर' कहकर, मैं कब तुम्हें फिर से बुलाऊँगा और तुम्हें हृदय से लगाऊँगा और तुम्हारे अंगों को आनन्द से देखूँगा!

यह देखकर कि माता प्रेम में अधीर हो गयी है और इतनी व्याकुल हो गयी है कि मुँह से शब्द नहीं निकल पाता, श्री रामचन्द्रजी ने उन्हें बहुत प्रकार से समझाया। उस समय और प्रेम का वर्णन वर्णन से नहीं हो सकता। आप क्रोध छोड़ सकते हैं, लेकिन दया मत छोड़िए। काम की गति कठिन है, मेरा भी कोई दोष नहीं। सीताजी की बात सुनकर सास व्याकुल हो गयीं। मैं उनकी हालत का वर्णन कैसे कर सकता हूँ?

उन्होंने बार-बार सीताजी को हृदय से लगाया, उन्हें धैर्यपूर्वक शिक्षा दी और आशीर्वाद दिया कि जब तक गजजी और यमुनाजी में जल की धारा बहती रहेगी, तब तक तुम्हारा सुहाग बना रहेगा। सास ने सीताजी को अनेक प्रकार से आशीर्वाद और शिक्षा दी और उन्होंने (सीताजी ने) बड़े प्रेम से चरण कमलों में बार-बार सिर झुकाया।

जब लक्ष्मणजी ने यह समाचार सुना तो वे व्याकुल हो गये और उदास मुख करके भाग गये। शरीर कांप रहा है, उत्तेजना महसूस हो रही है, आंखें आंसुओं से भरी हुई हैं. प्रेम में अधीर होकर उसने श्री रामजी के चरण पकड़ लिये। वह कुछ नहीं बोल सका, बस खड़ा देखता रहा। [इस प्रकार दीन होना। मानो मछली पानी से बाहर निकलने के बाद खुद को दीन महसूस कर रही हो. हृदय में यही विचार होता है कि हे विधाता! क्या होने जा रहा है ? क्या हमारे सारे सुख और पुण्य पूरे हो गये? ,

श्रीरघुनाथजी मुझसे क्या कहेंगे? क्या आप इसे घर पर रखेंगे या अपने साथ ले जायेंगे? श्री रामचन्द्र जी ने देखा कि भाई लक्ष्मण हाथ जोड़कर अपने शरीर और घर से सब नाता तोड़ कर खड़े हैं।   तब नीति में निपुण तथा शील, प्रेम, सरलता तथा प्रसन्नता के सागर श्री रामचन्द्रजी बोले- हे पिताजी! इससे जो आनन्द प्राप्त होगा, उसे हृदय में समझकर प्रेम के कारण अधीर न हो।

जो लोग स्वाभाविक रूप से अपने माता, पिता, गुरु और गुरु की शिक्षाओं का पूरे दिल से पालन करते हैं, उन्हें ही जन्म लेने का लाभ मिला है; अन्यथा इस संसार

में जन्म लेना व्यर्थ है। हां भाई। ऐसा हृदय में जानकर मेरा उपदेश सुनो और अपने माता-पिता के चरणों की सेवा करो। भरत और शत्रुघ्न घर पर नहीं हैं, महाराज वृद्ध हैं और वे मेरे लिये दुःखी हैं।

इस अवस्था में यदि मैं तुम्हें अपने साथ वन में ले चलूं तो अयोध्या हर प्रकार से अनाथ हो जायेगी। गुरु, पिता, माता, प्रजा और परिवार सभी पर दुःख का बोझ पड़ेगा। अत: तुम यहीं रहो और सबको संतुष्ट करते रहो। अन्यथा हे पिता! यह बहुत बड़ी गलती होगी. जिस राजा के राज्य में उसकी प्रिय प्रजा दुखी रहती है, वह निश्चय ही नरक का पात्र है।

हे पिता! ऐसी नीति मानकर आप घर पर ही रहें. यह सुनकर लक्ष्मणजी अत्यंत व्याकुल हो गये। इन शीतल शब्दों से वे कैसे सूख गये, जैसे पाले के स्पर्श से कमल सूख जाता है! प्रमाश लक्ष्मणजी को कोई उत्तर नहीं देते- यह संभव नहीं है। उन्होंने व्याकुल होकर श्री रामजी के चरणों की वन्दना की और कहा, हे प्रभु! मैं गुलाम हूं और तुम मालिक हो; तो, अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो मुझ पर क्या नियंत्रण रहेगा?

हे प्रभो! आपने मुझे बहुत अच्छी शिक्षा दी है, परंतु अपनी कायरता के कारण वह मुझे अप्राप्य लगी। शास्त्र और नीति पर सर्वश्रेष्ठ अधिकारी वही पुरुष हैं जो धैर्यवान हैं और धर्म की धुरी को पकड़ते हैं। मैं प्रभु (आप) के प्रेम में पला-बढ़ा एक छोटा बच्चा हूँ! कहीं हंस भी मंदराचल या सुमेरु पर्वत उठा लेते हैं! हे नाथ! मैं स्वभाव से कहता हूं, तुम मेरी मानो, मैं तुम्हारे सिवा गुरु, पिता, माता किसी को नहीं जानता।

जहाँ तक संसार में स्नेह, प्रेम और विश्वास की बात है, जिसके बारे में बेडने ने स्वयं गाया है- हे प्रभु! हे दीनबन्धु! हे सबके मन की बात जानने वाले! तुम मेरे लिए सब कुछ हो। धर्म और नीति का उपदेश उसी को करना चाहिए जिसे यश, वैभव या मोक्ष प्रिय हो। परन्तु जो मन, वचन और कर्म से चरणों में प्रेम करता है, हे कृपा सिन्धु! क्या वह भी त्यागने योग्य है?

दया के सागर श्री रामचन्द्र जी ने उस भले भाई के कोमल और नम्र वचन सुनकर और यह जानकर कि वह प्रेम के कारण भयभीत हो गया है, हार्दिक स्नेह से समझाया। और बोला--अरे भाई! जाओ और अपनी माँ को अलविदा कहो, आओ माँ और जल्दी आओ! रघुकुल में श्रेष्ठ श्रीयमजी के वचन सुनकर लक्ष्मणजी प्रसन्न हो गये। बड़ी हानि दूर हुई और बड़ा लाभ हुआ!

वह प्रसन्न मन से माता सुमित्राजी के पास आये, मानो किसी अंधे को दृष्टि मिल गयी हो। उसने जाकर अपनी माँ के चरणों में सिर झुका दिया। परन्तु उनका मन तो रघुकुल को आनन्द देने वाले श्री गरम जी और जानकी जी में था। उदास मन देखकर माँ ने उससे (कारण) पूछा। लक्ष्मणजी ने सारी कथा विस्तार से सुनायी। कठोर वचन सुनकर सुमित्राजी ऐसे डर गईं जैसे जंगल में चारों ओर आग लगी देखकर हिरण डर जाता है।

लक्ष्मण ने देखा कि आज तो अनर्थ हो गया। प्यार में वह काम बिगाड़ देगी! इसीलिए विदा करते समय वे भय से झिझकते हैं और मन में सोचते हैं कि हे विधाता! क्या माँ मुझसे अपने साथ चलने को कहेगी या नहीं? श्री रामजी और श्री सीताजी के सौन्दर्य, सुन्दर आचरण और स्वभाव को समझकर तथा उनके प्रति राजा के प्रेम को देखकर सुमित्रा ने सिर पीट लिया और कहने लगी कि पापी केकय ने मुझे बुरी तरह मारा है।

परन्तु यह उचित समय नहीं है, यह जानकर वे धैर्य रखती रहीं और स्वभाव से ही कल्याण चाहने वाली सुमित्राजी ने मृदु स्वर में कहा- हे पिताजी! जानकीजी तुम्हारी माता हैं और तुम्हें सब प्रकार से प्रेम करने वाले श्री रामचन्द्रजी तुम्हारे पिता हैं। सीता और राम अवश्य वन जायेंगे तो आप अयोध्या में होंगे। कुछ काम नहीं है।

गुरु, पिता, माता, भाई, देवता और गुरु, इन सभी की सेवा प्राण की भाँति करनी चाहिए। फिर श्री रामचन्द्रजी तो प्राणों के प्रिय हैं, हृदय के प्राण हैं और सबके निःस्वार्थ मित्र हैं॥ जहाँ तक संसार में आदरणीय और परमप्रिय व्यक्ति हैं, वे सभी रामजी से सम्बन्ध होने के कारण पूज्य और परमप्रिय मानने के योग्य हैं। ऐसा हृदय में जानकर हे पिता! उनके साथ जंगल में जाओ और इस संसार में रहने का लाभ उठाओ।

मैं बलिहारी जाता हूं, [हे पुत्र!] मेरे साथ-साथ आप भी बड़े भाग्यशाली हो गए हैं क्योंकि आपके मन ने छल-कपट को त्यागकर श्री राम के चरणों में स्थान प्राप्त कर लिया है। संसार में केवल उसी युवती की पुत्री होती है जिसका पुत्र श्रीरघुनाथजी का भक्त हो. अन्यथा जो राम से विमुख पुत्र पाकर अपना हित जानती है, उससे तो बाँझ ही अच्छा है। पशु की भाँति उसका ब्यांत (पुत्र उत्पन्न करना) व्यर्थ है।

तुम्हारे ही भाग्य से श्री रामजी वन जा रहे हैं। हे पिता! कोई अन्य कारण नहीं है। सभी सद्‌गुणों का सबसे बड़ा फल यह है कि श्रीसीतारामजी के चरणों में स्वाभाविक प्रेम होता है। अपने आत्म-प्रेम को काम, क्रोध, ईर्ष्या, अभिमान और

मोह के प्रभाव में न आने दें। सभी प्रकार के विकारों को त्याग कर मन, वचन और कर्म से श्रीसीतारामजी की सेवा करो।

श्री रामजी और सीताजी को अपने माता-पिता के रूप में पाकर आपको वन में हर प्रकार का सुख प्राप्त है। हे वत्स आप वही करें जिससे श्री रामचन्द्रजी को वन में कोई कष्ट न हो, यही मेरी सलाह है। हे पिता! मेरी यही सलाह है (अर्थात तुम्हें भी ऐसा ही करना चाहिए) ताकि तुम्हारे कारण श्री रामजी और सीताजी वन में सुख पाएँ और पिता, माता, प्रिय परिवार और नगर के सुख की स्मृति को भूल जाएँ। तुलसीदासजी कहते हैं कि सुमित्राजी ने इस प्रकार हमारे प्रभु (श्री लक्ष्मणजी) को शिक्षा दी [वान जानेकी]। अनुमति दी और फिर आशीर्वाद दिया कि श्री सीताजी और श्री रघुबीरजी के चरणों में आपका पवित्र (निःस्वार्थ और अनन्य) और गहरा प्रेम प्रतिदिन नवीन होता रहे।

माता के चरणों में सिर झुकाकर और मन में यह भय करते हुए कि कहीं कोई विपत्ति न आ जाए, लक्ष्मण जी तुरंत उस हिरण की भाँति चल दिये, जैसे कोई सौभाग्यवश कठिन जाल से बच निकला हो। लक्ष्मणजी वहाँ गए जहाँ श्री जानकीनाथजी थे और प्रियका को अपने साथ पाकर बहुत प्रसन्न हुए। वे श्रीगमजी और सीताजी के सुन्दर चरणों की वन्दना करके उनके साथ चले और राजमहल में आये।

नगर के पार्षद आपस में कह रहे हैं कि विधाता ने बहुत कुछ बनाकर मामला बिगाड़ दिया है! उनके शरीर दुबले होते जा रहे हैं, मन उदास और चेहरे उदास होते जा रहे हैं। वे ऐसे दुःखी होते हैं जैसे मधु छीन लिये जाने पर। मधु मक्खियाँ व्याकुल हों। हर कोई हाथ मल रहा है और अफसोस में सिर हिला रहा है। मानो पंख विहीन पक्षी चिंतित हो रहे हों। राजद्वार पर बड़ी भीड़ है. उस अपार दु:ख का वर्णन नहीं किया जा सकता।

'श्री रामचन्द्रजी आये हैं,' ऐसे प्यारे वचन कहकर मंत्री ने राजा को उठाकर बिठाया। सीता और अपने दोनों पुत्रों को (जंगल के लिए तैयार) देखकर राजा बहुत दुःखी हुए। सीता और अपने दोनों सुन्दर पुत्रों को देखकर राजा आश्चर्यचकित हो गये और प्रेमवश उन्हें बार-बार अपने हृदय में धारण करने लगे।

राजा व्याकुल है, बोल नहीं पाता। हृदय में दु:ख से उत्पन्न भयंकर वेदना होती है। तब रघुकुल के वीर श्री रामचन्द्रजी ने उठकर अत्यंत प्रेम से उनके चरणों में सिर झुकाया और विदा किया- हे पिताजी! मुझे आशीर्वाद और अनुमति दें. आनन्द का समय है, तुम शोक क्यों मना रहे हो? हे पिता! अपने प्रियतम के प्रेम

में पड़कर प्रमाद (कर्तव्य में भूल) के कारण संसार में तुम्हारी प्रसिद्धि नष्ट होगी और तुम निन्दित होगे।

यह सुनकर स्नेहवश राजा उठे और श्रीरघुनाथजी की बांह पकड़कर बैठाया और बोले- हे पिताजी! सुनो, तुम्हारे लिए ऋषि लोग कहते हैं कि श्री राम ही सबके स्वामी हैं। शुभ और अशुभ कर्मों के अनुसार भगवान हृदय से विचार करके फल देते हैं। जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। ढूँढता है. यही वैदिक नीति है, ऐसा सभी कहते हैं।

[लेकिन इस मौके पर उल्टा हो रहा है. अपराध किसी और को करना होगा और उसका फल किसी और को भुगतना होगा। भगवान की लीला बड़ी विचित्र है, इसे जानने में संसार में कौन समर्थ है? इस प्रकार राजा ने छल छोड़कर श्री रामचन्द्रजी को रखने के लिए अनेक उपाय किये। परन्तु जब उन्होंने धर्मात्मा, धैर्यवान और बुद्धिमान श्री रामजी के भाव देखे और उन्हें ऐसा अनुभव नहीं हुआ कि वे जीवित हैं।

तब राजा ने सीताजी को हृदय से लगा लिया और बड़े प्रेम से उन्हें बहुत सी बातें सिखायीं। वन की व्यथा सुनानी चाहिए। फिर सास, ससुर और पिता के [पास रहने] के सुखों को समझाया। परन्तु सीताजी का मन श्री रामचन्द्रजी के चरणों में लगा हुआ था। इसलिए उन्हें ये घर पसंद नहीं है. महसूस करना और न महसूस करना बहुत भयानक लगा। तब अन्य सभी लोगों ने भी वन में विपत्तियों की अधिकता बताकर सीताजी को समझाया।

मंत्री सुमंत्रजी की पत्नी और गुरु वशिष्ठजी की स्त्री अरुंधतिजी और उनसे अधिक चतुर कौशल्या स्नेहपूर्वक कोमल स्वर में कहती हैं कि [राजा ने] तुम्हें वनवास नहीं भेजा है। इसलिए तुम वही करो जो तुम्हारे ससुर, गुरु और सास कहें. यह शीतल, हितकारी, मधुर और सौम्य पाठ सुनकर सीताजी को अच्छा नहीं लगा। [वह व्याकुल हो गई] मानो शरद की चाँदनी प्रकट होते ही चकाई व्याकुल हो गई हो।

सीताजी संकोचवश उत्तर नहीं देतीं। ये बातें सुनकर कैकेयी तमतमा उठीं। उन्होंने ऋषियों के वस्त्र, आभूषण (माला, करधनी आदि) और बर्तन (कमण्डलु आदि) लाकर श्री रामचन्द्रजी के सामने रख दिये और कोमल वाणी से बोले- हे रघुवीर! तुम राजा को उसके प्राणों के समान प्रिय हो। कायर (प्रेम के कारण हृदय से कमजोर) राजा अपनी शील और स्नेह को नहीं छोड़ता। सद्गुण, सुन्दर यश और परलोक भले ही नष्ट हो जाएँ, परन्तु वे तुम्हें कभी वन में जाने के लिए नहीं कहेंगे।

ऐसा सोचो और जो तुम्हें अच्छा लगे वही करो. अपनी माता का उपदेश सुनकर श्री रामचन्द्रजी को बड़ी प्रसन्नता हुई॥ परन्तु राजा को ये शब्द तीर के समान लगे। वे सोचने लगे. क्यों [क्यों] अभागी आत्माएं अभी भी बाहर नहीं आतीं? राजा मूर्छित हो गये, प्रजा व्याकुल हो गयी। किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा कि क्या किया जाए. श्री रामचन्द्रजी तुरंत मुनिका वेष बनाकर माता-पिता को सिर झुकाकर चले गये।

जंगल के लिए सभी सामान की व्यवस्था करने के बाद (जंगल के लिए आवश्यक सामान अपने साथ लेकर) श्री रामचन्द्र जी अपनी पत्नी (श्री सीता जी) और भाई (लक्ष्मण जी) के साथ ब्राह्मण और गुरु के चरण वंदन करके चले गये। हर कोई बेहोश. महल से निकलकर श्री रामचन्द्र जी ने वसिष्ठ जी के द्वार पर खड़े होकर देखा तो सब लोग आये हुए थे। विरह की आग में जल रहा हूँ. उन्होंने प्रिय वचन कहकर सबको समझाया। तब श्री रामचन्द्रजी ने ब्राह्मणों की सभा बुलाई।

उन्होंने गुरुजी से कहकर उन सबको वर्षाशन (वर्ष भर का भोजन) दिया और आदर, दान तथा नम्रता से अपने वश में कर लिया। फिर उसने भिखारियों को दान और सम्मान देकर संतुष्ट किया और अपने मित्रों को शुद्ध प्रेम से प्रसन्न किया। फिर उसने सेवकों को बुलाकर गुरुजी को सौंप दिया और हाथ जोड़कर कहा- हे गुसाईं! आप अपने माता-पिता की तरह उन सभी का ख्याल रखते रहेंगे।

श्री रामचन्द्र जी बार-बार दोनों हाथ जोड़कर कोमल स्वर में कहते हैं कि मेरा मित्र सब प्रकार से हित करने वाला वही होगा जिसके प्रयत्न से राजा प्रसन्न रहे। बहुत चतुर देशी सज्जनो! मेरे वियोग के दुःख से मेरी सभी माताएँ दुखी न हों, इसके लिए आप सभी वैसा ही उपाय करेंगे। इस प्रकार श्री रामजी ने सबको समझाया और प्रसन्नतापूर्वक गुरुजी के चरणों में सिर झुकाया। फिर गणेशजी, पार्वतीजी और कैलाशपति महादेवजी को समझाकर और आशीर्वाद प्राप्त करके श्रीरघुनाथजी चले गये।

श्री रामजी के जाते ही मुझे बड़ा दुःख हुआ। शहर की दहाड़ सुनाई नहीं देती. युद्धों में अपशकुन दिखाई देने लगे, अयोध्या में महान दुःख फैल गया और देवलोक में सभी लोग शोक और उदासी दोनों के वश में थे। [खुशी इस बात की थी कि अब राक्षसों का नाश हो जायेगा; दुःख अयोध्या के लोगों के दुःख के कारण था]।

जब मूर्छा दूर हुई तो वे उठे और सुमंत्र को बुलाकर कहा- श्री राम तो वन चले गये हैं, परन्तु मेरे प्राण नहीं जा रहे हैं। न जाने किस सुख के लिए वे शरीर में रह रहे

हैं। इससे बड़ा और कौन सा कष्ट हो सकता है, जिसे भोगने के बाद आत्मा शरीर छोड़ दे। तब राजा ने धैर्य धारण करके कहा--हे मित्र! तुम रथ लेकर श्री राम के साथ चलो।

उन दोनों अति सुकुमार बालकों और सुन्दरी जानकी को रथ में बिठाकर जंगल में ले जाओ और चार दिन बाद लौट आना। यदि दोनों थरायवान भाई पीछे न लौटें - क्योंकि श्री रघुनाथजी अपनी प्रतिज्ञा के प्रति सच्चे हैं और नियमों का सख्ती से पालन करते हैं - तो आपको हाथ जोड़कर प्रार्थना करनी चाहिए, हे भगवान। कृपया इसे जनककुमारी सीताजी को वापस दे दीजिये। जब सीता वन को देखकर भयभीत हो जाय तब अवसर पाकर उन्हें मेरी यह शिक्षा सुनाना कि तुम्हारे सास-ससुर ने ऐसा सन्देश दिया है कि हे पुत्री! तुम लौट जाओ, जंगल में बहुत उपद्रव है।

कभी अपने पिता के घर, कभी अपने ससुराल, जहाँ चाहो रहो। ऐसे में आपको कई उपाय करने चाहिए। यदि सीताजी लौट आयेंगी तो मेरे प्राण बच जायेंगे। अन्यथा मेष अंततः मर जाएगा। यदि विधाता इसके विरुद्ध हो तो किसी भी चीज़ को नियंत्रित नहीं किया जा सकता। हा | राम, लक्ष्मण और सीताका को लाकर दिखाओ। इतना कहकर राजा मूर्च्छित हो गये और भूमि पर गिर पड़े।

राजा की आज्ञा पाकर सुमंतजी ने सिर झुकाया और शीघ्रता से रथ इकट्ठा किया और सीताजी सहित नगर के बाहर जहां दोनों भाई थे, वहां चले गये। तब (वहां पहुंचकर) सुमंतने ने राजा के वचन श्री रामचन्द्रजी को सुनाए और उनसे अनुरोध करके उन्हें रथ पर बैठाया। सीताजी सहित दोनों भाई रथ पर चढ़े और अयोध्या को हृदय में बसाकर निकल पड़े।

श्री रामचन्द्रजी को चले जाने और अयोध्या को अनाथ होते देख सभी लोग व्याकुल हो गये और उनके साथ हो लिये। जब वस्त्रसागर श्री रामजी उसे अनेक प्रकार से समझाते हैं, तब वह (अयोध्या को) लौट आता है; लेकिन प्यार के कारण वे फिर वापस आ जाते हैं। अयोध्यापुरी बड़ी डरावनी लगती है. मानो कोई अँधेरी रात हो. नगर के नर-नारी भयानक पशुओं की भाँति एक-दूसरे को देखकर डरते हैं।

घर, श्मशान, परिवार के भूत, पुत्र, शुभचिंतक और मित्र यमराज के दूत हैं। बगीचों में वृक्ष और लताएँ सूख रही हैं। नदियाँ और तालाब इतने भयानक दिखते हैं कि कोई उनकी ओर देख भी नहीं सकता। नगर के करोड़ों घोड़े, हाथी, खेलने के लिए रखे गए हिरण, [गाय, लता, बकरी आदि], लेकिन वे। पपीहा, मोर, कोयल, चकवे, तोता, मैना, सारस, हेस और चकोर--

श्री रामजी के वियोग में सभी लोग व्याकुल हो गये और यहाँ (मौन तथा स्थिर) ऐसे खड़े हो गये मानो चित्रों से उकेरे गये हों। ऐसा लग रहा था मानो शहर फलों से भरा एक विशाल घना जंगल हो। नगर निवासियों में सभी पुरुष, स्त्रियाँ और अनेक पशु-पक्षी थे। (अर्थात अवधपुरी चारों फल - अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) देने वाली नगरी थी और सभी स्त्री-पुरुष प्रसन्नतापूर्वक उन फलों को प्राप्त करते थे।

निर्माता बनाया था भीलनी के रूप में कैकेयी, जिसने दसों दिशाओं में भयानक आग पैदा कर दी थी। श्री रामचन्द्रजी की इस क्रोधाग्नि को लोग सहन न कर सके। सभी लोग चिंतित होकर भाग गये। सभी ने मन में सोचा कि श्री रामजी, लक्ष्मणजी और सीताजी के बिना कोई सुख नहीं है। जहाँ श्री रामजी रहेंगे वहाँ सारा समाज रहेगा। श्री रामचन्द्रजी के बिना हमारा अयोध्या में कोई काम नहीं है।

इस विचार को दृढ़ करके सभी लोग देवताओं और दुर्लभ सुखों से परिपूर्ण अपने घरों को छोड़कर श्री रामचड्ढाजी के साथ चले गये। जो लोग श्री राम के चरण कमलों से प्रेम करते हैं, क्या वे कभी विषय-वासना के वश में हो सकते हैं? घर पर बच्चों और बूढ़ों को छोड़कर सभी लोग एक साथ शामिल हुए। पहले दिन श्रीरघुनाथजी ने तमसा नदी के तट पर निवास किया।

प्रजा को प्रेमपूर्वक देखकर श्रीरघुनाथजी के दयालु हृदय में बड़ा दुःख हुआ। भगवान श्रीरघुनाथजी दयालु हैं। इन्हें दूसरों का दर्द तुरंत महसूस हो जाता है (अर्थात दूसरों का दर्द देखकर ये तुरंत खुद दुखी हो जाते हैं)। श्री रामजी ने प्रेम से भरे हुए कोमल और सुन्दर वचन कहकर लोगों को अनेक प्रकार से समझाया और अनेक धार्मिक उपदेश दिये; लेकिन मंत्रमुग्ध लोग पीछे नहीं हटते.

हया और हया को नहीं छोड़ा जाता. श्रीरघुनाथजी भ्रमित हो गये (संकट में पड़ गये)। दुःख और परिश्रम (थकावट) के कारण लोग सो गये और उनका मन कुछ देवताओं की माया से भी मोहित हो गया। जब दो प्रहर रात्रि बीत गई तो श्री रामचन्द्र जी ने प्रेमपूर्वक मंत्री सुमंत्र से कहा- हे पिताजी! रथ की तलाशी लेने के बाद (अर्थात् इस प्रकार कि पहियों के निशानों से दिशा का पता न चले) रथ को रोकें। और कुछ भी समस्या का समाधान नहीं करेगा.

शंकरजी के चरणों में सिर झुकाकर श्री रामजी, लक्ष्मणजी और सीताजी रथ पर चढ़ गये। मंत्री ने तुरन्त सारथियों को इधर-उधर खोजकर छिपाते हुए भेज दिया। प्रातः होते ही सब लोग जाग गये और बड़ा शोर मच गया कि श्रीरघुनाथजी

चले गये। सारथी को कहीं न पाकर सब लोग कहते हैं 'हा राम!' हा राम!” फोन करने के लिए इधर-उधर भागना।

मानो कोई जहाज समुद्र में डूब गया हो, जिससे व्यापारी समुदाय अत्यंत व्याकुल हो गया हो। वे । वे एक-दूसरे को उपदेश देते हैं कि श्री रामचन्द्र जी ने यह जानकर हमें छोड़ दिया है कि हम पर संकट आयेगा। वे अपनी आलोचना करते हैं और मछलियों की प्रशंसा करते हैं। कहते हैं- श्री गमचन्द्रजी के बिना रहना लज्जा की बात है। यदि विधाता ने शुद्ध विरह रचाया तो माँगने पर मृत्यु क्यों नहीं दे दी।

इस प्रकार बहुत प्रलाप करते हुए वह दुःख से भरकर अयोध्या आये। उन लोगों की विचित्र विरह-दशा का वर्णन नहीं किया जा सकता। वे केवल (चौदह वर्ष की आयु) की आशा के कारण अपनी जान बचा रहे हैं। सभी स्त्री-पुरुष श्री रामचन्द्रजी के दर्शन के लिए नियम और व्रत करने लगे और ऐसे दुःखी हो गए जैसे सूर्य के बिना मक्खी, कमल और कमल निराश हो जाते हैं।

सीताजी और मंत्री सहित दोनों भाई श्रंगवेरपुर पहुँचे। वहाँ गंगाजी को देखकर श्री रामजी ने बड़े हर्ष से रथ से उतरकर प्रणाम किया। लक्ष्मणजी, सुमंत और सीताजी ने भी प्रणाम किया। अश्री रामचन्द्रजी ने सबके साथ सुख पाया। गदाजी सभी खुशियों और शुभता का मूल हैं। वह सभी सुखों की दाता और सभी दुखों का नाश करने वाली है।

श्री रामजी अनेक कथाएँ सुनाते हुए गंगाजी की लहरों को देख रहे हैं। उन्होंने मंत्रियों, छोटे भाई लक्ष्मणजी और प्रिय सीताजी को देवनदी गग्याजी की महान महिमा बताई। इसके बाद सबने स्नान किया, जिससे यात्रा का सारा कष्ट (थकान) दूर हो गया और पवित्र जल पीकर मन प्रसन्न हो गया। जिनका महान परिश्रम (बार-बार जन्म-मृत्यु का) उनके स्मरण मात्र से मिट जाता है, उनके लिए 'श्रम' करना - यह केवल सांसारिक व्यवहार (नरलीला) है।

शुद्ध (प्रकृति से उत्पन्न त्रिगुणों से रहित, दिव्य मदभलविग्रह) सच्चिदानंद-कन्दस्वरूप, सूर्य कुल के ध्वज भगवान श्री रामचन्द्रजी मनुष्य जैसे ऐसे चरित्रों का चित्रण करते हैं, जो संसार सागर से पार होने के लिए पुल के समान हैं। जब यह समाचार निषादराज गुहाणे को मिला तो उन्होंने प्रसन्न होकर अपने प्रियजनों और भाइयों को बुलाया और उपहार स्वरूप फल-मूल (कंद-मूल) लेकर उन्हें थैलियों (बाघिनी) में भरकर उनसे मिलने चल दिए। उसके हृदय में आनन्द की सीमा न रही।

वह साष्टांग प्रणाम करके प्रसाद सामने रखकर बड़े प्रेम से भगवान की ओर देखने लगा। स्वाभाविक प्रेम के प्रभाव से श्रीरघुनाथजी ने उन्हें अपने पास बिठाया और कुशल पूछा। निषादराज ने उत्तर दिया--हे प्रभु! आपके चरणकमलों के दर्शन से ही मैं स्वस्थ हो गया हूँ और आज सौभाग्यशाली व्यक्तियों में आ गया हूँ। अरे बाबा ! यह पृथ्वी, धन और घर सब तुम्हारे हैं। मैं परिवार सहित आपका विनम्र सेवक हूं।

नगर (श्रृंगवेरपुर) में आकर इस सेवक का मान बढ़ाओ जिससे सभी लोग मेरे भाग्य की प्रशंसा करें। श्रीरामचन्द्र जी ने कहा--हे प्रिय मित्र! आपने जो कुछ कहा वह सत्य है. परन्तु पिता ने मुझे अन्यथा आदेश दिया है। उनकी आज्ञा के अनुसार मुझे चौदह वर्ष तक वन में रहकर साधु का व्रत एवं वेष धारण करना होगा तथा साधु के योग्य भोजन करना होगा, गाँव के अन्दर निवास करना उचित नहीं है। यह सुनकर गुहको को बहुत दुःख हुआ।

गाँव के पुरुष श्री रामजी, लक्ष्मणजी और सीताजी का रूप देखकर प्रेमपूर्वक चर्चा करते हैं। [कोई कहता है--] अरे मित्र! मुझे बताओ, वे कैसे माता-पिता हैं जिन्होंने ऐसे [सुंदर और कोमल] बच्चों को जंगल में भेज दिया है। कोई कहता है-राजा ने अच्छा किया, इसी बहाने हमें ब्रह्मा की दृष्टि का लाभ भी दे दिया। तब निषादराज ने मन में विचार किया, उन्हें अशोक का वृक्ष सुखद लगता है।

उन्होंने श्रीरघुनाथजी को ले जाकर वह स्थान दिखाया। श्री रामचन्द्रजी को देखकर बोले, 'यह हर प्रकार से सुन्दर है। देशी लोग जौहर (पूजा) करके अपने घर लौट आये और श्री रामचन्द्रजी सन्ध्या करने के लिये आये। गुहने [इसी बीच] कुशा और मुलायम पत्तों का एक नरम और सुंदर बिस्तर सजाया और बिछाया; और यह देखकर कि वह शुद्ध, मधुर और कोमल है, उस ने उन दोनोंको फल, मूल और जल से भर दिया; या फलों और जड़ों दोनों को अपने हाथों से ऊपर तक रखें।

सीताजी, सुमंतजी और भाई लक्ष्मणजी सहित कंद, मूल और फल खाकर रघुकुलमणि श्री रामकच्छजी लेट गये। भाई। लक्ष्मणजी उनके पैर दबाने लगे। तब भगवान श्रीरामचंद्रजी को सोते हुए देखकर लक्ष्मणजी उठे और मृदु स्वर में मंत्नी सुमंत्रजी को सोने के लिए कहा और वहां से कुछ दूरी पर धनुष-बाण से सुसज्जित होकर वीरासन में बैठकर पहरा देने लगे।

गुहाणे ने विश्वस्त रक्षकों को बुलाया और बड़े प्रेम से उन्हें विभिन्न स्थानों पर तैनात किया। और कमर में तरकश बाँधकर तथा धनुष पर बाण चढ़ाकर लक्ष्मणजी के पास बैठ गये। भगवान को भूमि पर शयन करते देख निषादराज

प्रेम के कारण मन ही मन दुखी हो गये। उसका शरीर पुलकित हो गया और आँखों से प्रेमाश्रु बहने लगे। वे लक्ष्मणजी से प्रेमपूर्वक कहने लगे-

महाराज दशरथजी का महल प्राकृतिक रूप से सुन्दर है, इन्द्रभवन भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता। वहां सुंदर रत्नों से बने बंगले (छत पर बने बंगले) हैं, जिन्हें रति के पति कामदेव ने अपने हाथों से सजाया और बनाया प्रतीत होता है; महाराज दशरथजी का महल प्राकृतिक रूप से सुन्दर है, इन्द्रभवन भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता। इसमें सुंदर रत्नों से बने चोबारे (छत पर बने बंगले) हैं, जिन्हें रति के पति कामदेव ने अपने हाथों से सजाया और बनाया प्रतीत होता है।

कहाँ | ओढ़ने-बिस्तर करने के लिए बहुत-से वस्त्र, तकिए और गद्दे हैं, जो दूध के झाग के समान कोमल, स्वच्छ (चमकीले) और सुन्दर हैं; वहाँ (उन वस्त्रों में) श्री सीता जी और श्री रामचन्द्र जी रात्रि को शयन करते थे और अपने सौन्दर्य से कामदेव तथा रात्रि का अभिमान हर लेते थे। वही श्री सीता और श्री राम जी घास के बिस्तर पर थके हुए और बिना कपड़ों के सोते थे। ऐसी स्थिति में वे दिखाई नहीं देते। माता, पिता, सम्बन्धी, स्वजातीय नागरिक, मित्र, अच्छे आचरण और स्वभाव वाले नौकर-चाकरियाँ -

वही प्रभु श्री रामचन्द्रजी, जिनका सभी लोग प्राणों के समान पालन करते थे, आज पृथ्वी पर सो रहे हैं॥ जिनके पिता जनकजी हैं, जिनका प्रभाव जगत् में प्रसिद्ध है; जानकीजी, जिनके ससुर इन्द्र के मित्र रघुराज दशरथजी हैं और पति श्री रामचन्द्रजी हैं, आज भूमि पर सो रही हैं। विधाता किसी का प्रतिकूल नहीं! क्या सीताजी और श्री रामचन्द्रजी वन के योग्य हैं? लोग सच ही कहते हैं कि कर्म (भाग्य) ही प्रधान है।

कैकयराज की पुत्री अल्पबुद्धि केकय ने बड़ा ही कुटिल कार्य किया, जिससे सुख के समय में रघुनन्दन श्री रामजी और जानकीजी को दुःख हुआ। वह सूर्य कुल के वृक्ष के लिए कुल्हाड़ी बन गई। उस मूर्ख ने सारे संसार को दुःखी कर दिया। श्री राम और सीता को भूमि पर सोते हुए देखकर निषादों को बहुत दुःख हुआ।

तब लक्ष्मणजी ज्ञान, त्याग और भक्ति के रस से युक्त मधुर और कोमल वाणी में बोले- हे भाई! कोई किसी को सुख या दुःख देने वाला नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का फल भोगता है। संयोग (मिलना), वियोग (वियोग), अच्छे और बुरे सुख, शत्रु, मित्र और उदासीनता - ये सब माया के जाल हैं। जन्म-मृत्यु, धन-विपत्ति, कर्म और समय - जहाँ तक इस संसार का संबंध है।

जहाँ तक पृथ्वी, घर, धन, नगर, परिवार, स्वर्ग और नर्क आदि आचरण देखने, सुनने और मन में विचार करने में आते हैं, इन सबका मूल मोह (अज्ञान) है। परमार्थ: ये तो नहीं हैं. ऐसा सोचकर क्रोध नहीं करना चाहिए और न ही किसी पर अनावश्यक दोष लगाना चाहिए। हर कोई अंधेरी रात में सोता है और सोते समय कई तरह के सपने देखता है।

इस सांसारिक रात्रि में योगी जागते हैं, जो आध्यात्मिक प्राणी हैं और सांसारिक संसार से मुक्त हो चुके हैं। मनुष्य को यह जानना चाहिए कि संसार में कोई भी प्राणी तभी जागता है, जब वह सभी सुखों और विलासिता से अलग हो जाता है। जब विवेक होता है, तब रूपरूपी भ्रम भाग जाते हैं, तब (अज्ञानता का नाश हो जाने पर) श्रीरघुनाथजी के चरणों में प्रेम हो जाता है॥ हाय दोस्त। मन, वचन और कर्म से श्री रामजी के चरणों में प्रेम करना, यही सर्वोत्तम मानवीय पुरुषार्थ है।

श्री रामजी परमवस्तु परब्रह्म हैं। वह अविगत (पहचानने योग्य नहीं), अलख के (भौतिक दृष्टि से दिखाई न देने वाला), अनादि (प्रारंभहीन), अनुपम (बिना तुलना के तुलनीय), सभी विकारों से मुक्त है। वेद इनका प्रतिदिन 'नेति-नेति' कहकर वर्णन करते हैं। वही दयालु श्री रामचन्द्रजी मनुष्य शरीर धारण करके भक्तों, भूमि, ब्राह्मणों, गौओं और देवताओं के हित के लिए लीला करते हैं, जिसके श्रवण से संसार के कष्ट मिट जाते हैं।

हाय दोस्त! यह समझो, मोह त्याग दो और श्रीसीतारामजी के चरणों में प्रेम कर लो। इस प्रकार श्री रामचन्द्रजी का भजन-कीर्तन करते-करते सवेरा हो गया। तब जगत् का कल्याण करने वाले और उसे सुख देने वाले श्री रामजी जाग उठे॥ शौच आदि के सब कार्य [प्रतिदिन] करके पवित्र एवं धन्य श्री रामचन्द्रजी ने स्नान किया। तब बड़का ने दूध मांगा और अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी के साथ मिलकर उस दूध से अपने सिर पर बाल बनाए। यह देखकर सुमन्त्र की आँखों में आँसू भर आये।

उसका हृदय जोरों से जलने लगा और मुख उदास हो गया। उसने हाथ जोड़कर गम्भीर वचन बोले- हे प्रभु! कोसलनाथ दशरथजी ने मुझे ऐसी आज्ञा दी थी कि तुम रथ लेकर श्री रामजी के साथ चलो; उन्हें जंगल दिखाकर, भोजन कराकर तथा दोनों भाइयों को तुरंत वापस ले आये। सब संदेह और संकोच दूर करके लक्ष्मण, राम और सीता को वापस ले आओ।

महाराज ने तो यह कहा था, अब प्रभु जो कहेंगे वही करूंगा; मैं तुम्हारा बलिदान हूँ. इस प्रकार विनती करके वह श्री रामचन्द्रजी के चरणों पर गिर पड़ा और

बालक की भाँति रोने लगा; और बोला -- हे पिता ! कृपया ऐसा ही करें ताकि अयोध्या न हो अनाथ हो जाओ. श्री राम जी ने मंत्री को उठाया और धैर्यपूर्वक समझाया, हे पिताजी! आपने धर्म के सभी सिद्धांतों को छान मारा है।

धर्म के लिए शिबि, दधीचि और राजा हरिश्चंद्र। करोड़ों (असंख्य) लोगों को कष्ट सहना पड़ा। बुद्धिमान राजा रन्तिदेव और बलि अनेक कष्ट सहने के बाद भी धर्म पर कायम रहे (उन्होंने धर्म नहीं छोड़ा)। वेदों, शास्त्रों और पुराणों में कहा गया है कि सत्य के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है। वह धर्म मुझे सहज ही प्राप्त हो गया है। इस सच्चे धर्म को त्यागने से तीनों लोकों में बदनामी होगी।

एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए अपमान पाना लाखों मौतों के समान कष्टकारी होता है। हे पिता! मैं तुमसे और क्या कह सकता हूँ! यहाँ तक कि उत्तर देने में भी मैं पाप का दोषी हूँ। तुम जाकर अपने पिता के चरण पकड़ लो और कोटि-कोटि नमस्कार करके, हाथ जोड़कर विनती करो कि हे पिता, कृपया मेरी कोई चिंता न करें।

श्रीरघुनाथजी और सुमनतंत्र का यह संवाद सुनकर परिवारजनों सहित निषादराज व्याकुल हो गये। तब लक्ष्मण जी ने कुछ कड़वी बात कही, प्रभु श्री रामचन्द्र जी ने इसे अत्यंत अनुचित समझकर उन्हें मना किया। श्री रामचन्द्र जी ने सकुचाते हुए सुमंत्र जी को अपनी सुगंध देकर कहा कि तुम जाकर लक्ष्मण का यह सन्देश मत बताना। तब सुमंतन्ना ने राजा को संदेश दिया कि सीता किसी एक का कष्ट सहन नहीं कर पाएंगी।

अत: जैसे सीता अयोध्या लौट आएँ, वैसा ही उपाय तुम्हें और श्री रामचन्द्र को भी करना चाहिए, अन्यथा जिस प्रकार जल के बिना मछली जीवित नहीं रह सकती, उसी प्रकार मैं भी बिना किसी सहारे के जीवित नहीं रह पाऊँगी। सीता के मायके (पिता का घर) और ससुराल में हर सुख है। जब तक यह विपत्ति दूर न हो जाए, वह जहाँ चाहे सुख से रहेगी।

राजा ने जिस प्रकार (विनम्रता और प्रेम से) निवेदन किया है, उसे नम्रता और प्रेम नहीं कहा जा सकता। श्री रामचन्द्रजी की कृपा से उन्होंने अपने पिता का सन्देश सुनकर सीताजी को अनेक प्रकार से लाखों शिक्षाएँ दीं। [उन्होंने कहा--] तुम घर लौट आओगी तो तुम्हारे सास, ससुर, गुरु, प्रियजनों और परिवार की सारी चिंताएं दूर हो जाएंगी। अपने पति के वचन सुनकर जानकीजी कहती हैं- हे प्रियतम! हे परम प्यारे! सुनना।

हे प्रभो! आप दयालु और अत्यंत ज्ञानी हैं। [कृपया विचार करें] छाया शरीर से अलग कैसे रह सकती है? सूर्य का प्रकाश सूर्य को छोड़कर कहां जा सकता है? और चाँद से निकलने के बाद चाँदनी कहाँ जा सकती है? इस प्रकार प्रेमपूर्वक अपने पति की विनती करके सीताजी मन्तति से सुखद वचन कहने लगीं- आप मेरे पिता और ससुर के समान हैं, जो मेरा कल्याण करेंगे। मैं तुम्हें बदले में उत्तर दूँगा, यह बहुत अनुचित है। परंतु हे पिता! मैं पेशाब करके ही आपके सामने आया हूँ, बुरा मत मानना। आर्यपुत्र (स्वामी) के चरणकमलों के बिना संसार के सभी रिश्ते-नाते मेरे लिए व्यर्थ हैं।

मैंने अपने पिता का वैभव देखा है, जिनके चरणों की चौकी बड़े-बड़े राजाओं को मुकुट पहनाती है (अर्थात जिनके चरणों में बड़े-बड़े राजा झुकते हैं)। ऐसे पिता का घर, जो सब प्रकार के सुखों का भण्डार है, पति के बिना मुझे भूलकर भी अपनी माता का घर अच्छा नहीं लगता। मेरे ससुर कोसलराज चक्रवर्ती सम्राट हैं, जिनका प्रभाव चौदहों लोकों में दिखाई देता है; इन्द्र भी आगे आने वालों का स्वागत करते हैं और उन्हें अपने सिंहासन के आधे भाग पर बैठने की जगह देते हैं;

कठिन रास्ते, जंगली भूमि, पहाड़, हाथी, शेर, अथाह तालाब और नदियाँ; कोयला, भील, हिरण और पक्षी- प्राणपति (श्रीरघुनाथजी) के साथ रहने पर ये सभी मुझे सुख देंगे. अत: तुम सास-ससुर के चरणों में गिरकर विनती करना कि वे मेरे विषय में कुछ भी न सोचें; मैं जंगल में स्वभाव से खुश हूं।

मेरे प्रिय और मेरे बहनोई, जो वीर पुरुषों में अग्रणी हैं, धनुष और बाणों से भरे तरकशों से सुसज्जित हैं, मेरे साथ हैं। इससे न तो मुझे यात्रा की कोई थकान होती है, न कोई उलझन, न मन में कोई दु:ख होता है। भूलकर भी मेरे बारे में मत सोचना. सीताजी की शीतल वाणी सुनकर सुमंत्र मणि खो देने वाले सर्प के समान व्याकुल हो गये। आँखों से कुछ दिखाई नहीं देता, कानों से कुछ सुनाई नहीं देता। वह बहुत व्याकुल हो गया और कुछ भी नहीं कह सका।

श्री रामचन्द्रजी ने अनेक प्रकार से उनका समाधान किया। फिर भी उसकी छाती ठंडी नहीं हुई. मंत्री ने साथ रहने के लिए कई यात्राएँ कीं (सुझाव दिए), लेकिन रघुनंदन श्रीरामजी [उन सभी सुझावों का] उचित उत्तर देते रहे। श्रीरामजी की आज्ञा की अवहेलना नहीं की जा सकती। कर्म की गति कठिन है, इसे कोई नियंत्रित नहीं कर सकता। श्री राम, लक्ष्मण और सीताजी के चरणों में सिर झुकाकर सुमन अपनी पूंजी गँवाकर व्यापारी की भाँति लौट आये।

सुमंत्र ने रथ चलाये, घोड़े श्री रामचड्ढा जी की ओर देखकर हिनहिनाने लगे। यह देखकर निषाद लोग दुःख से आतुर होकर सिर पीट-पीटकर पश्चाताप करते हैं। जिनके वियोग में पशु इतने दुःखी हैं वे लोग, उनके माता-पिता कैसे जीवित रहेंगे? श्री रामचन्द्रजी ने सुमंत को बलपूर्वक लौटा दिया। तब तुम गंगाजी के तीर के नीचे आये। श्रीराम ने केवट से नाव मांगी, लेकिन वह नहीं लाया। उसने कहा, “मैं तुम्हारा रहस्य जान गया हूँ।” आपके चरण कमलों की धूल के बारे में सभी कहते हैं कि यह कोई जड़ी-बूटी है जो मनुष्य को बदल देती है, पत्थर को छूते ही पत्थर सुन्दर स्त्री बन जाता है [मेरी नाव लकड़ी की है]। लकड़ी पत्थर से अधिक कठोर नहीं होती. मेरी नाव भी डूब जायेगी और इस प्रकार मेरी नाव भी डूब जायेगी, मैं लुट जाऊँगी [अथवा रास्ता अवरूद्ध हो जायेगा जिससे तुम पार नहीं कर पाओगे और मेरी आजीविका नष्ट हो जायेगी। मेरी जीविकोपार्जन का साधन नष्ट हो जायेगा।

मैं इस नाव से अपने पूरे परिवार का भरण-पोषण करता हूं। और कोई धंधा नहीं जानता. जय प्रभु! यदि आप निश्चित ही पार जाना चाहते हैं तो मुझसे पहले अपने चरणकमलों को साफ करने के लिए कहें। भले ही लक्ष्मण मुझे बाण मारें, जब तक मैं अपने पैर नहीं धो लेता, हे तुलसीदास! हे कपालू! मैं पार नहीं करूंगा.

केवट के प्रेम में लिपटे हुए विचित्र वचन सुनकर श्री रामचन्द्र जी ने जानकी जी और लक्ष्मण जी की ओर देखा और हँस पड़े। श्री रामचन्द्र जी ने केवट की ओर देखकर मुस्कुराये और केवट से बोले- भाई! तुम इतना ही करो कि तुम्हारी नाव न डूबे। जल्दी से पानी लाओ और अपने पैर धो लो. देर हो रही है, पार हो जाओ।

उनके नाम का स्मरण करते ही लोग भवसागर से पार हो जाते हैं और जिन्होंने [दूसरे अवतार में] विश्व को तीन पग से भी छोटा कर दिया था (तीनों लोकों को दो पग में ही नाप लिया था), वही कर्पालु श्री रामचन्द्रजी ने केवट की ओर देखकर गंगा पार कर ली। रहा।

भगवान के ये वचन सुनकर गंगाजी का मन व्याकुल हो गया (कि वे साक्षात भगवान होते हुए भी केवट को नदी पार कराने के लिए नाव की तरह कैसे बना रहे हैं)। लेकिन जैसे ही वह अपने उद्गम स्थान के करीब पहुंची और पैरों को देखा, देवनदी गदगदजी उन्हें पहचानकर रोमांचित हो गईं। वह समझ गयी कि भगवान नाटक कर रहे हैं, इससे उसका मोह नष्ट हो गया; और वह यह सोचकर प्रसन्न हो गयी कि इन चरणों का स्पर्श पाकर वह धन्य हो जायेगी। केवट श्री रामचन्द्रजी की आज्ञा पाकर वह पात्र में जल भरकर ले आया।

वह अत्यंत आनंद और प्रेम से प्रसन्न होकर भगवान के चरण कमल धोने लगा। सभी देवता पुष्प वर्षा करने लगे और कहने लगे कि इसके समान पुण्यात्मा कोई दूसरा नहीं है। चरण धोकर उस जल (चरणोदक) को पूरे परिवार सहित स्वयं [उस महान पुण्य के माध्यम से] पीया। अपने पूर्वजों के साथ भवसागर पार करने के बाद भगवान श्रीराम ने प्रसन्नतापूर्वक उन्हें गढ़जी के पार उतार दिया।

श्री सीतानजी और श्री रामचन्द्रजी, निषादराज और लक्ष्मणजी सहित नाव से उतरकर गदाजी की रेत में खड़े हो गये। तब नाविक ने उतरकर प्रणाम किया। [उसे झुकते हुए देखकर] भगवान को संकोच हुआ कि मैंने उसे कुछ नहीं दिया। अपने पति के मन की बात जानने वाली सीताजी ने प्रसन्न मन से अपनी रत्नजड़ित अंगूठी [अपनी उंगली से] उतार दी। दयालु श्री रामचन्द्रजी ने केवट से कहा, नाव नीचे करो। नाविक व्याकुल हो गया और उसके पैर पकड़ लिए।

उन्होंने कहा--] हे भगवान! मैंने आज क्या हासिल नहीं किया? मेरे दोष, दुःख और दरिद्रता की अग्नि आज बुझ गई है। मैंने लंबे समय तक काम किया. विधाता ने आज बहुत अच्छी मज़दूरी दी है। हे प्रभो! हे दीनदयाल! आपकी कृपा से अब मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। मेरे लौटने पर आप मुझे जो कुछ भी देंगे, मैं उसे प्रसाद के रूप में स्वीकार कर लूँगा।

तब रघुकुल के स्वामी श्रीरामचन्द्रजी ने स्नान करके उनके पार्थिव शरीर की पूजा की और भगवान शिव को सिर नवाकर प्रणाम किया। सीताजी ने हाथ जोड़कर गंगाजी से कहा- हे माता! कृपया मेरी इच्छा पूरी करें. जिससे मैं अपने पति और देवर के साथ सुरक्षित वापस आकर आपकी पूजा कर सकूं. सीताजी की प्रेमपूर्ण विनती सुनकर गंगा के निर्मल जल से उत्तम वाणी निकली -

हे रघुवीर की प्रिय जानकी! सुनो, संसार में तुम्हारे प्रभाव को कौन नहीं जानता? आपके [कपड़े के नजरिये से] लोग देखते ही लोकपाल बन जाते हैं. सभी सिद्धियाँ हाथ जोड़कर आपकी सेवा करती हैं। आपने मुझसे जो महान अनुरोध किया वह मुझ पर एक आशीर्वाद था और मुझे महानता प्रदान की। फिर भी हे देवी! मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा कि मेरे वचन सत्य हों।

आप अपनी प्रियतमा और जीजाजी सहित सकुशल अयोध्या लौट आओगे। आपकी सभी मनोकामनाएं पूरी होंगी और आपकी सुंदर प्रसिद्धि पूरे विश्व में फैलेगी।   मदालदेशी गंगाजी के वचन सुनकर और देवनदी को अनुकूल देखकर सीताजी प्रसन्न हुईं। तब भगवान श्रीरामचन्द्रजी ने निषादराज गुह से कहा कि भाई! अब तुम घर जाओ! यह सुनते ही उसका मुँह सूख गया और हृदय में जलन होने लगी।

गुह ने हाथ जोड़कर विनम्र वचन बोले- हे रघुकुल शिरोमणि! मेरी विनती सुनो. चार (कुछ) दिन नाथ (आप) के पास रहकर, मार्ग दिखाकर, उनके चरणों की सेवा करके---हे रघुराज! मैं जंगल में एक सुन्दर पर्णकुटी बनाऊँगा जिसमें तुम जाकर रहोगे। फिर आप मुझे जो आज्ञा देंगे, मैं रघुवीर (आपसे) प्रार्थना करता हूं, वही करूंगा। उसका स्वाभाविक प्रेम देखकर श्री रामचन्द्र जी उसे अपने साथ ले गये, इससे गुह के हृदय में बड़ा आनन्द हुआ। तब गुह (निषादराज) ने अपनी जाति के लोगों को बुलाया और उन्हें संतुष्ट करके विदा किया।

तब भगवान श्रीरघुनाथजी ने गणेशजी और शिवजी का स्मरण किया और गदजी को सिर नवाकर अपने मित्र निषादराज, छोटे भाई लक्ष्मणजी और सीताजी के साथ वन को चले गये। उस दिन वह पेड़ के नीचे ही रहने लगा। लक्ष्मणजी और उनके मित्र गुहाणे [विश्राम] ने सारी व्यवस्था की। भगवान श्री रामचन्द्र जी प्रात:काल ही सब नित्यकर्म करके चले गये और तीथराज प्रयाग को दर्शन दिये।

सच तो यह है कि राजा की मन्त्री श्रद्धा एक सुन्दर स्त्री है और श्रीवेणी माधवजी की भाँति परोपकारी मित्र है। समस्त वस्तुओं (धर्म, धन, काम और मोक्ष) से भण्डार भरा हुआ है और यह पुण्य प्रान्त है। यह राजा का सुन्दर देश है। इसमें एक दुर्गम, मजबूत और सुंदर किला है, जहां तक दुष्ट-दुश्मन भी नहीं पहुंच पाते। संपूर्ण तीर्थ उनका सर्वश्रेष्ठ वीर सैनिक है, जो पाप की सेना को कुचल देता है और बहुत बहादुर है।

[गंगा, यमुना और सरस्वती] का संगम इसका सबसे सुशोभित सिंहासन है। अक्षयवट एक छत्र है, जो ऋषि-मुनियों का भी मन मोह लेता है। यमुनाजी और गंगाजी की कलियाँ उसके (काले और सफेद) चेनवार हैं, जिनके दर्शन से दुःख और दरिद्रता नष्ट हो जाती है। पुण्य आत्माएं और पवित्र संत उनकी सेवा करते हैं और अपनी सभी इच्छाएं प्राप्त करते हैं। वेदों और पुराणों के समूह हैं, जो इसके सात्विक गुणों का वर्णन करते हैं।

पापों के समूह रूपी हाथी को मारने में सिंह रूपी प्रयागराज का प्रभाव (महानता-महानता) कौन कह सकता है? ऐसे सुखद तीर्थराज को देखकर सुख के सागर रघुकुल श्रेष्ठ श्री रामजी को भी सुख मिला। उन्होंने अपने मुख से सीताजी, लक्ष्मणजी तथा सखा गुह को तीर्थशज की महिमा का वर्णन किया। तदनन्तर प्रणाम करके वन और उद्यानों को देखकर बड़े प्रेम से महत्---कहते हैं।

इस प्रकार श्री राम ने आकर त्रिवेणी के दर्शन किये, जिनके स्मरण मात्र से ही समस्त सुन्दर खेत प्राप्त हो जाते हैं। फिर भगवान शिव की सेवा के लिए प्रसन्नतापूर्वक त्रिवेणी में स्नान किया और तीर्थ के देवताओं की पूजा की। फिर स्नान, पूजन आदि करके भगवान श्री राम भारद्वाज जी के पास आये। ऋषि ने उनकी आराधना करते हुए इसे अपने हृदय में धारण कर लिया। साधु की ख़ुशी का तो कुछ भी कहा नहीं जा सकता. मानो उसे ब्रह्मानन्द की राशि मिल गयी हो।

मुनीश्वर भारद्वाजी ने आशीर्वाद दिया। यह जानकर उनके हृदय में बड़ी प्रसन्नता हुई कि आज विधाता ने हमें श्री सीताजी और लक्ष्मणजी सहित प्रभु श्री रामचन्द्रजी के दर्शन कराये, मानो हमारे समस्त पुण्यों का फल हमारी आँखों के सामने ला दिया हो। मुनिराज ने उनका कुशल क्षेम पूछकर उन्हें आसन दिया और प्रेमपूर्वक पूजन करके उन्हें तृप्त किया। फिर वह ऐसे अच्छे कंद, मूल, फल और अंकुर लेकर आया मानो अमृत से बने हों।

श्री रामचन्द्रजी ने सीताजी, लक्ष्मणजी और सेवक गुह सहित उन सुन्दर जड़ वाले फलों को बड़े चाव से खाया। थकावट दूर होने पर श्री रामचन्द्रजी प्रसन्न हो गये। तब भारद्वाज जी ने उनसे कोमल वचन बोले--- हाय राम. आपके दर्शन करते ही मेरी तपस्या, तीर्थयात्रा और यज्ञ सफल हो गये। आज मेरा जप, योग और त्याग सफल हो गया और आज मेरे सभी शुभ साधनों का समुदाय भी सफल हो गया।

लाभ की कोई सीमा नहीं है और खुशी की कोई सीमा नहीं है (भगवान के दर्शन को छोड़कर)। आपके दर्शन से मेरी सारी आशाएँ पूर्ण हो गयीं। अब आप मुझे यह वर दीजिए कि आपके चरणकमलों में मेरा स्वाभाविक प्रेम निवास करे। जब तक मनुष्य कर्म, वचन और मन से छल-कपट का त्याग करके आपका दास नहीं बन जाता, तब तक लाख उपाय करने पर भी उसे आत्म-प्रेम में भी सुख नहीं मिलता।

मुनि के वचन सुनकर तथा उनकी भक्ति से भगवान श्री रामचन्द्रजी (लीला की दृष्टि से) आनन्द से भर गये। डर गया। तब श्री रामचन्द्र जी ने (अपना ऐश्वर्य छिपाते हुए) करोड़ों (असंख्य) प्रकार से भारद्वाज मुनिका सुन्दर सुयश कहकर सबको बताया। उन्होंने कहा--]हे मुनीश्वर! जिसका तुम आदर करते हो वही सबसे बड़ा है और वहीं सारे सद्गुणों का निवास है। इस प्रकार श्री रामजी और मुनि भारद्वाजजी दोनों एक दूसरे के प्रति विनम्र हो रहे हैं। अवर्णनीय खुशी का अनुभव हो रहा है.

यह समाचार पाकर (श्रीराम, लक्ष्मण और सीताजी के आगमन का) प्रयाग के ब्रह्मचारी, तपस्वी, ऋषि, सिद्ध और उदासी सभी श्री दशरथजी के सुंदर पुत्रों को देखने के लिए भारद्वाजजी के आश्रम में आये। श्री रामचन्द्रजी ने सबको प्रणाम किया। नेत्रों का लाभ पाकर सभी प्रसन्न हो गये और अपार प्रसन्नता पाकर आशीर्वाद देने लगे। वह श्री रामजी की सुन्दरता की प्रशंसा करने लगा।

श्री राम जी ने रात्रि को वहीं विश्राम किया और प्रातःकाल प्रयागराज में स्नान कर ऋषि को प्रसन्नतापूर्वक सिर नवाकर श्री सीता जी, लक्ष्मण जी तथा सेवक गुह के साथ प्रस्थान किया। चलते समय श्री रामजी ने ऋषि से बड़े प्रेम से कहा- हे नाथ! बताओ हमें किस रास्ते से जाना चाहिए? ऋषि मन ही मन हंसते हैं और श्री रामजी से कहते हैं कि आपके लिए सभी मार्ग सरल हैं।

तब ऋषि ने अपने शिष्यों को अपने साथ चलने के लिए बुलाया। जैसे ही उन्होंने [साथ चलने की बात] सुनी, लगभग पचास शिष्य मन में खुशी लेकर आये। श्री रामजी के प्रति सभी के मन में अगाध प्रेम है। सब कहते हैं रास्ता हमने देखा है. तब ऋषि ने चार ब्रह्मचारियों को चुना और अपने साथ ले गए, जिन्होंने कई जन्मों तक सभी अच्छे कर्म किए थे। श्रीरघुनाथजी को प्रणाम करके और मुनि की आज्ञा पाकर वह हृदय में अत्यंत प्रसन्न होकर चल पड़ा।

जब वह किसी गांव के पास से गुजरता है तो स्त्री-पुरुष उसका रूप देखने के लिए दौड़ पड़ते हैं। जन्म का फल पाकर वे अनाथ हो जाते हैं और मन को नाथ के पास भेजकर (शरीर के साथ न रहने के कारण) दुःखी होकर लौटते हैं। तदनन्तर श्री रामजी ने चारों ब्रह्मचारियों को विदा किया; वे अभीष्ट वस्तु (अनूठी भक्ति) प्राप्त करके लौट आये। यमुनाजी को पार करने के बाद सभी ने यमुनाजी के जल में स्नान किया, जिसका रंग श्री रामचन्द्रजी के शरीर के समान काला था।

यमुनाजी के तट पर रहने वाले नर-नारी (शुभ समाचार है कि दो अत्यंत सुंदर युवक और एक अत्यंत सुंदर स्त्री निषाद के साथ आ रहे हैं) सभी लक्ष्मणजी, श्रीगमजी की शोभा देखकर अपना-अपना काम-काज भूलकर भागने लगे और अपने सौभाग्य की प्रशंसा करने लगे। और सीताजी. उनके मन में कई लोग परिचय जानने की इच्छा से भरे रहते हैं। लेकिन वे नाम और गांव पूछने में झिझकते हैं. उनमें से जो बूढ़े और चतुर थे; उन्होंने किसी प्रकार श्री रामचन्द्र जी को पहचान लिया।

उसने सब लोगों को सारा वृत्तान्त सुनाया कि वह अपने पिता की आज्ञा पाकर वन में चला गया है। यह सुनकर सभी दुखी हो गए और पछता रहे थे कि रानी और राजा ने अच्छा नहीं किया। उसी अवसर पर एक तपस्वी वहाँ आये, जो

तेजस्वी, नाटे और सुन्दर थे। कवि को अपनी गति का पता नहीं है [या वह एक कवि था जो अपना परिचय नहीं देना चाहता]। वह वैरागी के भेष में था और मन, वचन तथा कर्म से श्री रामचन्द्रजी का प्रेमी था।

कुछ टीकाकार तेजहपुन्न तपस के इस प्रसंग को प्रक्षेप मानते हैं और कुछ लोगों की दृष्टि में यह अप्रासंगिक तथा ऊपर से जोड़ा हुआ प्रतीत होता है, परंतु यह सभी प्राचीन प्रतियों में विद्यमान है। गुसाईंजी अलौकिक अनुभव वाले व्यक्ति थे। मैं नहीं जानता कि इस घटना को यहाँ रखने में क्या रहस्य है; लेकिन यह कोई प्रक्षेपक नहीं है. जब इस तपस्या को 'कवि अलिखित गति' कहा जाता है तो कौन निश्चित रूप से कह सकता है कि यह क्या है। हमारे अनुसार ये तपस्वी या तो श्री हनुमानजी थे या फिर ध्यानमग्न तुलसीदासजी।

अपने इष्ट देव को पहचानकर उनकी आँखें भर आईं और शरीर रोमांचित हो गया। वह लकड़ी की भाँति पृथ्वी पर गिर पड़ा, उसकी (प्रेम-ग्रस्त) अवस्था का वर्णन नहीं किया जा सकता। श्री रामजी ने प्रेम से रोमांचित होकर उसे हृदय से लगा लिया। (उन्हें इतनी ख़ुशी हुई) मानो किसी गरीब को पारस मिल गया हो। हर कोई [दर्शक | उन्होंने कहा कि मानो प्रेम और परोपकार (परम तत्व) दोनों शरीर के रूप में मिल रहे हों।

फिर वह लक्ष्मणजी के चरणों में गिर पड़ा। उसने प्रेम के उत्साह से इसे उठाया। फिर उन्होंने सीताजी के चरणों की धूल अपने मस्तक पर धारण की। माता सीताजी ने भी उन्हें अपना छोटा बच्चा मानकर आशीर्वाद दिया। तब निषादराज ने उन्हें प्रणाम किया। यह जानकर कि श्री रामचन्द्रजी मेरे प्रेमी हैं, वह आनन्दपूर्वक उनसे (निषाद) मिला। वह तपस्वी अपने दोनों नेत्रों से श्री रामजी के सौंदर्य का पान करने लगा और ऐसे प्रसन्न हो गया जैसे कोई भूखा मनुष्य सुन्दर भोजन पाकर प्रसन्न हो जाता है।

इधर गाँव की स्त्रियाँ कह रही हैं--अरे सखी! बताओ, वे कैसे माता-पिता हैं जिन्होंने ऐसे (सुंदर और कोमल) बच्चों को जंगल में भेज दिया है। श्री रामजी, लक्ष्मणजी और सीताजी का रूप देखकर सभी नर-नारी प्रेम में विह्वल हो जाते हैं। तब श्री रामचन्द्र जी ने अपने मित्रों को बहुत प्रकार से समझाया (घर लौटने के लिए)। श्री रामचन्द्रजी की आज्ञा मानकर वह अपने घर चला गया।

तब सीताजी, श्री रमणी तथा लक्ष्मणजी ने हाथ जोड़कर पुनः यमुनाजी को प्रणाम किया तथा सूर्य पुत्री यमुनाजी की स्तुति की, सीताजी सहित दोनों भाई प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़े। रास्ते में उन्हें कई यात्री मिलते हैं। उन्होंने दोनों

भाइयों की ओर देखकर प्रेमपूर्वक उनसे कहा कि आपके समस्त अंगों पर राजचिह्न देखकर हमारे हृदय में बड़ा विचार होता है।

ऐसे राजसी लक्षणों के होते हुए भी तुम लोग मार्ग पर चल रहे हो, इससे हम समझते हैं कि ज्योतिष मिथ्या है। यह घने जंगलों और विशाल पहाड़ों से होकर गुजरने वाला एक कठिन रास्ता है। वहां आपके साथ हैं सुकुमारी खत्री. हाथियों और सिंहों से घिरा यह भयानक जंगल दिखाई भी नहीं देता। अगर इजाजत हो तो चलो साथ चलें. आप जहां तक चाहें हम आपको ले जायेंगे और फिर आपको प्रणाम करके लौट आयेंगे।

इस प्रकार पथिक प्रेमवश अपने शरीर को चमकाते हुए तथा आँखों में (प्रेम के आँसुओं से) आँसुओं से भरकर पूछता है। परन्तु श्री रामचन्द्रजी कोमल विनम्र वचन कहकर उन्हें दया का सागर लौटा देते हैं। वे सम्पूर्ण मार्ग में बसे हुए नागों तथा देवताओं के नगरों तथा गाँवों को देखकर प्रशंसा, ईर्ष्या तथा वासना से कहते हैं कि किस पुण्यात्मा ने किस शुभ समय में इन्हें बसाया था, जो आज ये इतने धन्य, पुण्यात्मा हो रहे हैं। और बेहद खूबसूरत.

श्री रामचन्द्रजी के चरण जहाँ-जहाँ जाते हैं, इन्द्र की पुरी अमरावती भी उनके समान नहीं है। जो लोग सड़क के निकट रहते हैं वे भी बड़े पुण्यात्मा होते हैं - स्वर्ग में रहने वाले देवता भी उनकी स्तुति करते हैं - जो सीताजी और लक्ष्मणजी सहित घनश्याम श्री रामजी के दर्शन भरी आँखों से करते हैं, जिन तालाबों और नदियों में श्री रामजी स्नान करते हैं, देवसरोवर और देव नदियाँ भी उसकी स्तुति करती हैं। .

कल्पवृक्ष भी उस वृक्ष की प्रशंसा करता है जिसके नीचे भगवान विराजमान हैं। श्री रामचन्द्रजी के चरणकमलों का स्पर्श पाकर पृथ्वी अपने को बड़ा भाग्यशाली समझती है। मार्ग में बादल छाया देते हैं और देवता पुष्प वर्षा करके आश्रय देते हैं। श्री रामजी मार्ग में पर्वतों, वनों और पशु-पक्षियों को देखते हुए बढ़ रहे हैं।

जब श्रीरघुनाथजी, सीताजी और लक्ष्मणजी सहित किसी गाँव के निकट जाते हैं, तो उनके आगमन का समाचार सुनते ही बच्चे, बूढ़े, स्त्री-पुरुष अपना घर-बार भूलकर तुरंत उनके दर्शन के लिए चल पड़ते हैं। उनकी स्थिति का वर्णन नहीं किया गया है. ऐसा लगता है मानों गरीबों को बहुमूल्य पत्थरों का ढेर मिल गया हो। वे हर एक को बुलाते हैं और उन्हें इसी क्षण अपनी आँखों का लाभ उठाना सिखाते हैं।

कुछ तो श्री रामचन्द्रजी को देखकर इतने प्रेम से भर जाते हैं कि उन्हें देखते हुए उनके साथ-साथ चलते रहते हैं। कुछ नेत्र-पागल अपनी छवि हृदय में ले आते हैं और शरीर, मन और वाणी से शिथिल हो जाते हैं (अर्थात उनके शरीर, मन और वाणी का व्यवहार अनियंत्रित हो जाता है)। एक बड़ी और सुन्दर परछाई देखकर वे वहाँ मुलायम घास और पत्तियाँ बिछाते हैं और कहते हैं, "एक क्षण के लिए यहीं अपनी थकान मिटाओ।" . तो फिर आप अभी या सुबह जा सकते हैं.

कोई एक घड़ा भरकर जल लाता है और धीमी आवाज में कहता है- प्रभु! कृपया कम से कम ऐसा करें. उनके प्यारे वचन सुनकर और उनका अपार प्रेम देखकर दयालु श्री रामचन्द्रजी ने यह जानकर कि सीताजी मन में थकी हुई हैं, एक बड़े वृक्ष की छाया में एक घड़ी तक विश्राम किया। सत्रिय-पुरुष आनन्दित होते हैं और सौंदर्य को देखते हैं। उसकी अद्वितीय सुंदरता ने उनकी आँखों और दिलों को आकर्षित किया है।

सब लोग चकोर के समान श्री रामचन्द्रजी के मुख को (एकाग्र होकर) देख रहे हैं और चारों ओर से सुशोभित हो रहे हैं॥ श्रीरामजी का नवीन रंग का (काला) वक्षस्थल अत्यंत सुंदर है, जिसे देखकर करोड़ों कामदेवों का मन मोहित हो जाता है। बिजली के समान वर्ण वाले लक्ष्मणजी बहुत अच्छे लगते हैं।

वे अंगुलियों के सिरे तक सुंदर और मन को अत्यंत प्रसन्न करने वाले होते हैं। वे दोनों साधुओं (बालक आदि) के वस्त्र पहने हुए हैं और कमर में तरकस बांधे हुए हैं। कमल के समान हाथों में धनुष-बाण शोभा पा रहे हैं।

उनके सिरों पर सुन्दर बालों के मुकुट हैं; छाती, भुजाएँ और आँखें विशाल हैं और पसीने की बूंदों के समूह चेहरे पर शरद ऋतु की पूर्णिमा के समान सुंदर शोभा दे रहे हैं। उस प्यारे जोड़े का वर्णन नहीं किया जा सकता; क्योंकि मुझमें सुन्दरता तो बहुत है, परन्तु बुद्धि बहुत कम है। सभी लोग अपने पूरे ध्यान, मन और बुद्धि से श्री राम, लक्ष्मण और सीताजी की शोभा देख रहे हैं।

प्यार के प्यासे [गांव वाले]। उनके सौन्दर्य और माधुर्य को देखकर नर-नारी उसी प्रकार थक गये, जैसे दीपक को देखकर मृग और मृग निश्चल हो जाते हैं। गाँव की स्त्रियाँ सीताजी के पास जाती हैं; लेकिन अत्यधिक स्नेह के कारण वह पूछने में झिझकती है। सभी लोग बार-बार उसके चरणों में आते हैं और सहज ही सरल एवं कोमल शब्दों में कहते हैं- हे राजकुमारी! हम निवेदन करते हैं (कुछ निवेदन करना चाहते हैं), परन्तु अपने स्वभाव के कारण कुछ माँगने से डरते हैं।

हे स्वामिनी! कृपया हमारी गुस्ताखी माफ करें और हमें जंगली समझकर बुरा न मानें। ये दोनों राजकुमार बेहद खूबसूरत हैं. पन्ना (पन्ना) और सोने को चमक उन्हीं से मिली है; यानी पन्ना और सोने में मौजूद हरी और सुनहरी आभा उनकी हरी-नीली और सुनहरी चमक के एक कण के बराबर भी नहीं है।

सांवला और गोरा रंग है, सुन्दर किशोरावस्था है; दोनों ही बेहद खूबसूरत और खूबसूरत जगहें हैं. उनका मुख शरद ऋतु के चंद्रमा के समान और उनकी आंखें शरद ऋतु के कमल के समान हैं। हे सुमुखी बताओ, अपने सौन्दर्य से करोड़ों कामदेवों को लज्जित करने वाले तुम्हारे ये लोग कौन हैं? उनके ऐसे प्रेमपूर्ण और सुन्दर वचन सुनकर सीताजी लज्जित हुईं और मन ही मन मुस्कुरायीं।

उसे देखकर गोरे रंग वाली सीताजी (संकोच से) पृथ्वी की ओर देखती हैं। वे दोनों तरफ की झिझक के कारण झिझक रहे हैं (अर्थात न बताने में गांव वालों को ठेस पहुंचने के डर से झिझक है और बताने में झिझक है)। हिरणी के समान नेत्र और कोकिला के समान वाणी वाली सीताजी प्रेम से मधुर वचन बोलीं-

सरल स्वभाव, सुन्दर और गोरे शरीर वाले इस व्यक्ति का नाम लक्ष्मण है; ये मेरा छोटा साला है. तब सीताजी ने (शर्मिंदगी में) अपना चंद्रमुख अपने आंचल से ढक लिया और अपने प्रिय (श्री रामजी) की ओर देखा, उनकी भौहें ऊपर उठी हुई थीं और उनकी आंखें चिड़ियों की तरह सुंदर थीं, सीता जी ने उन्हें इशारे से बताया कि वह (श्री रामचन्द्र) जी) मेरे पति हैं. यह जानकर गाँव की सभी युवतियाँ इस प्रकार प्रसन्न हुईं मानो कंगालों ने बहुत सारा धन लूट लिया हो।

वह बड़े प्रेम से सीताजी के चरणों में गिरती है और उन्हें अनेक प्रकार से आशीर्वाद देती है (मंगलकामना करती है) कि जब तक पृथ्वी शेषजी के सिर पर रहेगी, तब तक तुम सुहागन स्त्री बनी रहोगी और पार्वतीजी के समान अपने पति की प्रिय रहोगी। हे देवी! हम पर अपनी कृपा न छोड़ें। हम बार-बार हाथ जोड़कर विनती करते हैं कि आप फिर से इस रास्ते पर लौट आएं,

और हमें अपनी दासी समझकर दर्शन दीजिये. सीताजी ने उन सबको प्रेम की प्यासी देखा, और. उसने मीठी-मीठी बातें करके उन्हें अच्छी तरह संतुष्ट कर दिया। मानों चाँदनी ने कुमुदिनी को पोषण देकर पुष्ट कर दिया हो। उसी समय श्री रामचन्द्रजी का भाव जानकर लक्ष्मणजी ने लोगों से माँगा रास्ता धीमी आवाज में. यह सुनकर स्त्री-पुरुष दुःखी हो गये। अलग होने की संभावना से उनके शरीर रोमांचित हो गए और उनकी आंखें प्यार से भर गईं।

उनका हर्ष लुप्त हो गया और मन दुःखी हो गया, मानो विधाता ने उनकी दी हुई सम्पत्ति छीन ली हो। उन्होंने कर्म की गति को समझते हुए धैर्य से काम लिया और अच्छे फैसले लेकर आसान रास्ता दिखाया। तब श्रीरघुनाथजी लक्ष्मणजी और जानकीजी सहित गये और सब लोगों से प्रेममय वचन कहकर लौट आये, परन्तु उनके हृदय को अपने पास ही मोहित कर लिया।

लौटते समय वे स्त्री-पुरुष बहुत पश्चाताप करते हैं और मन में ईश्वर को दोष देते हैं। आपसी। , बहुत बड़ा। दुःख के साथ कहा जाता है कि विधाता के सारे कर्म उलटे हैं। वह विधाता सर्वथा निरंकुश, क्रूर और निडर है, जिसने चंद्रमा को मोमी (घटना-बढ़ना), कल्पवृक्ष को वृक्ष और समुद्र को खारा बना दिया। उसने इन राजकुमारों को वन में भेज दिया है।

जब विधाता ने उन्हें वनवास दिया है, तब उन्होंने अपने भोग-विलास को व्यर्थ कर दिया है। जब वे सड़क पर बिना जूतों (नंगे पैर) के चल रहे हैं, तो विधाता ने व्यर्थ ही अनेक वाहन (वाहक) बनाये। जब वे फूल-पत्तों से ढँके हुए भूमि पर पड़े रहते हैं, तब विधाता सुन्दर शय्या (शय्या और बिछौना) क्यों बनाता है? जब विधाता ने उन्हें बड़े-बड़े वृक्षों के नीचे निवास स्थान दिया, तब उन्होंने उज्ज्वल महल बनाकर व्यर्थ परिश्रम किया।

जो सुन्दर और अत्यंत कोमल होते हुए भी ऋषियों के वस्त्र धारण करते हैं और जटाधारी होते हैं, तो करतार (निर्माता) ने अनेक प्रकार के आभूषण और वस्त्र बनाए हैं। जो इन कंद, मूल और फलों को खाते हैं, उनके लिए संसार में अमृत आदि अन्न होते हैं। यह फालतू है। कोई कहता है- वे स्वभाव से ही सुन्दर हैं, उनका सौन्दर्य और माधुर्य शाश्वत और प्राकृतिक है। ये स्वयं प्रकट हुए हैं और ब्रह्मा द्वारा निर्मित नहीं हैं।

जहाँ तक वेदों में सृष्टिकर्ता के कार्यों का वर्णन है जो हमारे कानों, आँखों और मन से अनुभव होते हैं, चौदह लोकों में खोजो और देखो कि ऐसे पुरुष और ऐसी स्त्रियाँ कहाँ हैं? वे कहीं भी विद्यमान नहीं हैं, इससे यह सिद्ध होता है कि वे सृष्टिकर्ता के चौदह लोकों से पृथक हैं और आपके तेज से ही आपकी रचना हुई है।

उन्हें देखकर विधाता का मन मोहित हो गया, फिर वह उनकी तुलना के योग्य अन्य स्त्री-पुरुषों की रचना भी करने लगा। उन्होंने बहुत मेहनत की, लेकिन उनकी कोई भी भविष्यवाणी सफल नहीं हुई। ईर्ष्या के कारण वह उन्हें जंगल में ले आया और छिपा दिया।

कोई कहता है, "हम ज़्यादा नहीं जानते।" हाँ, हम निश्चित रूप से स्वयं को अत्यंत धन्य मानते हैं [वे जो उसे देख रहे हैं] और हमारी समझ में, जिन्होंने उसे देखा है, जो उसे देख रहे हैं और जो उसे देखेंगे वे भी बहुत पुण्यात्मा हैं। यह प्रिय शब्द कहते-कहते सबकी आँखों में प्रेम के आँसू भर आते हैं। और उनका कहना है कि बेहद नाजुक शरीर वाले ये लोग कठिन रास्ते पर कैसे चलेंगे.

स्त्रियाँ प्रेम के कारण व्याकुल हो जाती हैं। मानो शाम को चकवि [भविष्य के वियोग की पीड़ा से]। सो रहे हैं (उदास महसूस कर रहे हैं). वह अपने चरण कमलों को कोमल और मार्ग को कठिन जानकर अपने व्यथित हृदय से श्रेष्ठ वचन कहती है- उनके कोमल और लाल चरणों (तलवों) को छूते ही पृथ्वी उसी प्रकार सिकुड़ जाती है, जैसे हमारे हृदय सिकुड़ जाते हैं। . यदि जगदीश्वर ने उन्हें वनवास दिया तो सारा मार्ग पुष्पों से क्यों नहीं भर दिया?

हे मित्र, ब्रह्मा से जो माँगोगे वही मिलेगा! [हम- तो उनसे पूछकर] उन्हें अपनी नज़रों में ही रखो! इस अवसर पर जो स्त्री-पुरुष नहीं आये वे श्रीसीतारामजी के दर्शन नहीं कर सके। उनकी सुंदरता सुनकर वे व्याकुल हो जाते हैं और पूछते हैं, "भाई! अब तक ये कितनी दूर चले गए?" और जो लोग समर्थ हैं वे दौड़कर उनके दर्शन करते हैं और अपने जन्म का परम फल प्राप्त करके बड़े आनन्द से लौटते हैं।

गर्भवती, प्रसूता आदि] समर्थ बालक, बालक और वृद्ध [दर्शन न मिलने के कारण। वे ही हाथ मलते हैं और पछताते हैं। इस प्रकार श्री रामचन्द्रजी जहाँ भी जाते हैं, वहाँ लोग प्रेम के वशीभूत हो जाते हैं। श्री रामचन्द्रजी, जो सूर्य कुल के कुमुदिनी के प्रसन्न चन्द्रमा स्वरूप हैं। इसे देखकर हर गांव में ऐसी ही खुशी हो रही है. जो लोग वनवास की कोई खबर सुनते हैं, वे राजा-रानी दशरथ-कैकेई को दोष देते हैं।

कोई कहता है कि राजा बहुत अच्छा है, जिसने हमें अपनी आँखों का लाभ दिया। पुरुष और महिला दोनों एक-दूसरे से सरल, प्रेमपूर्ण, सुंदर बातें कह रहे हैं। कहते हैं- धन्य हैं वे माता-पिता जिन्होंने उन्हें जन्म दिया। धन्य हैं वे नगर जहाँ से वे आये। वह देश, पर्वत, वन और गाँव धन्य हैं, और वे स्थान भी धन्य हैं जहाँ वे जाते हैं।

ब्राह्मण ने जिसे (श्रीरामचन्द्रजी को) सब प्रकार से प्रेम किया है, उसकी रचना करके सुख प्राप्त किया है॥ पथिक श्री राम और लक्ष्मण की सुन्दर कथा सारे मार्ग और वन में फैल गयी है। रघुकुल रूपी कमल को खिलाने वाले सूर्य श्री रामचन्द्रजी सीताजी और लक्ष्मणजी के साथ वन की ओर देखते हुए मार्ग में

प्रजा को सुख देते हुए चल रहे हैं। आगे श्री रामजी हैं, पीछे लक्ष्मणजी सुशोभित हैं। संन्यासियों के वेश में ये दोनों बेहद खूबसूरत लग रहे हैं. दोनों के बीच सीताजी कितनी सुंदर दिखाई दे रही हैं, जैसे ब्रह्मा और जीव के बीच माया।

फिर, मैं इसे वह छवि कहता हूं जो मेरे मन में बस रही है - मानो वसंत ऋतु और कामदेव के बीच रति (कामदेव की गोद) सुंदर है। तब मैं अपने हृदय में खोजकर एक उपमा कहता हूँ, मानो बुध (चन्द्रमा का पुत्र) और चन्द्रमा के बीच रोहिणी (चन्द्रमा की सत्री) सो रही हो।

भूमि पर अंकित प्रभु श्री रामचन्द्रजी के दोनों पदचिन्हों के बीच अपने पैर रखकर सीताजी इस भय से मार्ग पर चलती रहीं कि कहीं प्रभु के पदचिन्हों पर उनका पैर न पड़ जाय। मर्यादा की रक्षा के लिए लक्ष्मणजी सीताजी और श्री रामचन्द्रजी दोनों के पदचिन्हों को दाहिनी ओर रखकर मार्ग पर चल रहे हैं।

श्री रामजी, लक्ष्मणजी और सीताजी का सुन्दर प्रेम वाणी का विषय नहीं है (अर्थात अवर्णनीय है) इसलिए कैसे कहा जा सकता है? पशु-पक्षी भी उस छवि को देखकर प्रेम में डूब जाते हैं। श्री रामचन्द्रजी ने यात्री के रूप में उनका भी हृदय चुरा लिया है। जिन-जिन लोगों ने प्रिय पथिक सीताजी सहित उन दोनों भाइयों को देखा, वे बिना किसी परिश्रम के भव के दुर्गम मार्ग (जन्म-मृत्यु के संसार में भटकने का भयानक मार्ग) को खुशी-खुशी पार कर गए (अर्थात् सहज ही मुक्ति पा गए)। आने और जाने का चक्र)।

आज भी जिसके जीवन में भी जिसके हृदय में लक्ष्मण, सीता और राम हैं, वह भी श्री रामजी के परमधाम की उस मंजिल को प्राप्त कर लेगा जो विरले ही संतों को प्राप्त होती है। उस दिन सीताजी को थका हुआ जानकर और समीप ही एक बड़ा वृक्ष और जल देखकर श्री रामचन्द्रजी वहीं रुक गये। कंद, मूल, फल खाकर [रात भर वहीं रहना]। प्रातःकाल स्नान करके श्रीरघुनाथजी आगे बढ़े।

सुन्दर वन, तालाब और पर्वत देखकर भगवान श्री रामचन्द्रजी वाल्मिकीजी के आश्रम में आये। श्री रामचन्द्रजी ने देखा कि मुनिका का निवास अत्यन्त सुन्दर है, जहाँ सुन्दर पर्वत, वन और पवित्र जल हैं। झीलों में कमल खिल रहे हैं और वनों में वृक्ष खिल रहे हैं और भौंरे रस में डूबे हुए सुन्दर गुंजन कर रहे हैं। बहुत से पशु-पक्षी शोर मचा रहे हैं और क्रोध से मुक्त होकर प्रसन्न होकर घूम रहे हैं।

उस पवित्र एवं सुन्दर आश्रम को देखकर कमलनयन श्री रामचन्द्रजी प्रसन्न हो गये। रघुश्रेष्ठ श्री रामजी का आगमन सुनकर महर्षि वाल्मिकीजी उनकी अगवानी के लिये आगे आये। श्री रामचन्द्रजी ने मुनि को प्रणाम किया।

विप्रश्रेष्ठ मुनि ने उन्हें आशीर्वाद दिया। श्री रामचन्द्रजी की छवि देखकर ऋषि की आंखें शीतल हो गईं। ऋषि उन्हें आदरपूर्वक आश्रम में ले आये।

महर्षि वाल्मिकी जी ने अपने प्रिय अतिथियों से मिलकर उनके लिये मीठे कन्द, मूल और फल बनाये। श्रीसीताजी, लक्ष्मणजी और रामचन्द्रजी ने फल खाये। तब ऋषि ने उन्हें [आराम करने के लिए] सुंदर स्थान बताए। मुनि श्री रामजी के पास बैठे हैं और उनके मंगलमय विग्रह को नेत्रों से देखकर वाल्मिकीजी मन में बड़े हर्ष का अनुभव कर रहे हैं। तब श्रीरघुनाथजी ने कमल के समान हाथ जोड़कर मधुर वचन बोले-

हे मुनिनाथ! आप त्रिकालदर्शी हैं. सारा संसार आपके हाथ की हथेली में रखे बेर के समान है। ऐसा कहकर प्रभु श्री रामचन्द्र जी ने फिर रानी के.के. की कथा विस्तार से सुनायी। निर्वासन में भेज दिया गया;   और कहा--हे प्रभु! पिता की आज्ञा का पालन करना, माता का कल्याण और भरत के समान प्रेम, मेरे धर्मात्मा भाई का राजा होना और फिर मुझे आपके दर्शन मिलना, ये सब मेरे सद्गुणों का ही प्रभाव है।

हे ऋषि! आज आपके चरणों के दर्शन करके हमारे सारे पुण्य सफल हो गये (हमें पुण्यों का फल मिल गया)। अब जहां आपकी आज्ञा हो और जहां कोई साधु उद्देग को प्राप्त न हो-॥ क्योंकि जिन राजाओं से ऋषि-मुनि और तपस्वी पीड़ित होते हैं, वे बिना अग्नि के ही जलकर भस्म हो जाते हैं (क्योंकि वे दुष्ट थे)। ब्राह्मणों की संतुष्टि ही सभी बुराइयों की जड़ है और भूदेव ब्राह्मणों का क्रोध करोड़ों कुलों का नाश कर देता है।

ऐसा मन में रखकर आप मुझे वह स्थान बताइये जहाँ मैं लक्ष्मण और सीता के साथ जा सकूँ और वहाँ सुंदर पत्तों और घास की कुटिया बना सकूँ, हे दयालु! मुझे कुछ देर रुकने दो। हे राम! आप वेदों की मर्यादा के रक्षक जगदीश्वर हैं और जानकीजी (आपका रूप) माया हैं, जो आपकी कृपा का भण्डार, आपकी कृपा पाकर संसार की रचना, पालन और संहार करती हैं।

जो हजार सिर वाले सांपों के स्वामी हैं और जो पृथ्वी को अपने सिर पर धारण करते हैं, वही चरागाहों के स्वामी शेषजी लक्ष्मण हैं। देवताओं के कार्य के लिये तुमने राजा का शरीर धारण किया है और दुष्ट राक्षसों की सेना का नाश करने आये हो।

हे राम! आपका स्वरूप अदृश्य, बुद्धि से परे, अवर्णनीय, अवर्णनीय और विशाल है। वेद लगातार इसका वर्णन 'नेति-नेति' के रूप में करते हैं। हे राम! संसार

दृश्यमान है, आप उसके द्रष्टा हैं। आप तो ब्रह्मा, विष्णु और शतदूर को भी नचाने वाले हैं। जब वे ही आपके हृदय को नहीं जानते तो और कौन आपके हृदय को जानेगा?

केवल वही आपको जानता है, जिसे आपने जन्म दिया है और जैसे ही आप उसे जानते हैं, वह आपका ही स्वरूप बन जाता है। हे रघुनन्दन! हे भक्तों के हृदय को शीतल करने वाले चंदन! आपकी कृपा से ही भक्त आपको जान पाते हैं। आपका शरीर आनन्दमय है (यह कर्म-बद्ध, प्रकृतिजनित पंच महाभूतों से बना त्रि-शरीर विशिष्ट शरीर नहीं है) तथा समस्त विकारों [उत्पत्ति-विनाश, वृद्धि-क्षय आदि] से मुक्त है।

यह रहस्य केवल सत्तासीन व्यक्ति ही जानते हैं। आपने देवताओं और संतों के कार्य के लिए दिव्य पुरुष शरीर धारण किया है और प्राकृत (सामान्य, सामान्य) राजाओं की तरह बोलते और करते हैं।

हे राम! आपके चरित्रों को देखकर और सुनकर मूर्ख लोग मोहित हो जाते हैं और बुद्धिमान लोग प्रसन्न हो जाते हैं। आप जो कुछ भी कहते और करते हैं वह सही (सही) है; क्योंकि जैसा स्वागत हो वैसा ही नाचना चाहिए (इस समय आप मनुष्य रूप में हैं इसलिए मानवीय व्यवहार करना ही उचित है। आपने मुझसे पूछा कि मुझे कहां रहना चाहिए? लेकिन मुझे पूछने में संकोच हो रहा है, कृपया मुझे वह स्थान बताएं जहां आप नहीं हैं।) तो फिर मैं तुम्हें रहने के लिए एक जगह दिखाता हूँ।

ऋषि के प्रेमपूर्ण वचन सुनकर श्री रामचन्द्र जी (भेद खुलने के डर से) मन में लज्जा से मुस्कुराये। वाल्मिकीजी हंसे और फिर अमृत में डूबी मधुर वाणी में बोले- हे रामजी. सुनो, अब मैं तुम्हें वे स्थान बताऊंगा जहां तुम्हें सीताजी और लक्ष्मणजी सहित निवास करना चाहिए। जिनके कान आपकी सुंदर कहानियों के रूप में कई सुंदर नदियों वाले समुद्र की तरह हैं -

वे लगातार भरते रहते हैं, लेकिन कभी संतुष्ट नहीं होते, उनके दिल आपके लिए खूबसूरत घर हैं और जिन्होंने अपनी आंखों पर नजरें जमा रखी हैं, जो हमेशा आपके दीदार के बादल की चाहत रखते हैं; वे स्वर्ग और ब्रह्मलोक की सुंदरता का तिरस्कार करते हैं), हे रघुनाथजी! आप भाई लक्ष्मणजी और सीताजी सहित उन लोगों के हृदय के मनोहर भवनों में निवास करें।

आपके यश के निर्मल मानसरोवर में, जिनकी जीभ हंस के समान आपके गुणों के मोती चुगती रहती है, हे रामजी! आप उसके हृदय में निवास करते हैं, जिसकी

नाक प्रतिदिन भगवान (आप) के पवित्र और सुगंधित [फूल] सुंदर प्रसाद को आदर के साथ स्वीकार करती है (सूंघती है), और जो आपको अर्पित करने के बाद भोजन करता है और आपके रूप में वस्त्र और आभूषण पहनता है प्रसाद;

देवताओं, गुरुओं और ब्राह्मणों को देखकर जिनका सिर बड़े आदर और प्रेम से झुकता है; जिनके हाथ नित्य श्री रामचन्द्रजी (आप) के चरणों का वंदन करते हैं और जिनके हृदय में श्री रामचन्द्रजी (आप) में ही श्रद्धा है, अन्य किसी में नहीं; और जिनके चरण श्री रामचन्द्रजी के तीर्थ पर जाते हैं (आप); हे राम जी ! आप उनके मन में बसते हैं. जो लोग प्रतिदिन आपके [रामनामरूप] मंत्रराज का जाप करते हैं और अपने परिवार (परिकर) सहित आपकी पूजा करते हैं।

जो अनेक प्रकार से तर्पण और हवन करते हैं और ब्राह्मणों को भोजन कराकर बहुत-सा दान देते हैं; और जो गुरु का पूरे हृदय से आदर करते हैं, उन्हें हृदय में आपसे भी बड़ा (बड़ा) मानते हैं। सेवा करना;

और ये सब कर्म करके हम केवल यही फल माँगते हैं कि श्री रामचन्द्रजी के चरणों में हमारी प्रीति हो; सीताजी और रघुकुल को आनंद पहुँचाने वाली आप दोनों उन लोगों के मन-मन्दिरों में विराजमान हो गईं। जिसमें न काम है, न क्रोध है, न मद है, न मद है, न मोह है; वहाँ कोई भी नहीं है लालच न क्रोध; न राग है, न द्वेष है; और वहां कोई छल, अहंकार और माया नहीं है - हे रघुराज। आप उनके हृदय में निवास करें.

जो सभी को प्रिय है और सभी के लिए लाभकारी है; जो दुख और सुख, स्तुति और गाली दोनों के समान हैं, जो सोच-विचारकर सत्य और प्रिय वचन बोलते हैं और जो जागते-जागते आपकी ही शरण में आते हैं और जिनका आपके अतिरिक्त कोई आश्रय नहीं है, हे राम! ! आप उनके मन में बसते हैं. जो पराई स्त्री को जन्म देने वाली माता और पराये धन को विष से भी बदतर विष समझते हैं;

जो दूसरों का धन देखकर प्रसन्न होते हैं और दूसरों का दुर्भाग्य देखकर विशेष दुःखी होते हैं तथा हे राम! जिन्हें आप प्राणों की तरह प्यार करते हैं उनके मन आपके रहने के लिए शुभ भवन हैं। तात! आप दोनों भाई सीता सहित अपने इच्छित मन्दिर में निवास करें जिसके स्वामी, मित्र, पिता, माता और गुरु सभी आप ही हों।

जो अवगुणों को छोड़कर सबके गुणों को ग्रहण करता है, ब्राह्मण और गाय के लिए कष्ट सहता है, जिसकी नीति और कुशलता से संसार में प्रतिष्ठा है, उसका

सुन्दर मन ही तुम्हारा घर है। जो सद्गुणों को अपना और अवगुणों को अपना समझता हो, जो हर प्रकार से तुम पर विश्वास करता हो और जो रामभक्त तुम्हें प्रिय लगता हो, उसके हृदय में तुम सीता सहित निवास करो।

जो जाति, कुल, धन, धर्म, अभिमान, प्यारे परिवार और सुख देने वाले घर को छोड़कर केवल आपको ही अपने हृदय में रखता है, हे रघुनाथजी! तुम उसके दिल में रहो.   जिसकी दृष्टि स्वर्ग, नरक और मोक्ष में समान है, क्योंकि वह सर्वत्र (सर्वत्र) धनुष-बाण धारण किये हुए आपको ही देखता है; और जो कर्म, वाणी और मन से आपका सेवक है, हे रामजी! आप उसके हृदय में निवास करें।

जो कभी कुछ नहीं चाहता और जो आपके प्रति स्वाभाविक प्रेम रखता है, उसके मन में आप निरंतर निवास करें; वह आपका अपना घर है. इस प्रकार ऋषि वाल्मिकीजी ने श्री रामचन्द्रजी को वह भवन दिखाया। श्री रामजी को उसकी प्रेमपूर्ण बातें अच्छी लगीं। तब ऋषि ने कहा- हे सूर्यकुल के स्वामी! सुनो, अब इस समय मैं सुखदायक आश्रम को बुलाता हूं (निवास स्थान का वर्णन करता हूं);

आप चित्रकोट पर्वत पर निवास करें, वहां आपके लिए सभी प्रकार की सुविधाएं मौजूद हैं। वहाँ मनभावन पर्वत और सुन्दर वन हैं। यह हाथियों, शेरों, लकड़बग्घों और पक्षियों का विश्राम स्थल है। वहां एक पवित्र नदी है, जिसकी पुराणों में प्रशंसा की गई है और जिसे ऋषि अत्रि की पत्नी अनसूयाजी अपनी तपस्या के बल से लेकर आई थीं। वह गदाजी की धारा है, उसका नाम मन्दाकिनी है। वह सभी पापी बच्चों को निगलने वाली डाकिनी के रूप में है।

वहाँ अत्रि आदि अनेक महर्षि निवास करते हैं, जो योग, जप तथा तप द्वारा अपने शरीर को सुदृढ़ करते हैं। हे राम जी! आइए हम सभी के परिश्रम को सफल बनाएं और पर्वतश्रेष्ठ चित्रकूट को भी गौरव प्रदान करें जैसा कि महामुनि वाल्मिकी जी ने चित्रकूट की अनंत महिमा का वर्णन करते हुए कहा था। तब सीताजी सहित दोनों भाइयों ने आकर महानदी मंदाकिनी में स्नान किया।

श्री रामच्च्द्धजी ने कहा--लक्ष्मण! यह बहुत अच्छा घाट है. अब यहीं कहीं रहने की व्यवस्था करो. तब लक्ष्मणजी ने पयस्विनी नदी के ऊँचे उत्तरी तट की ओर देखकर कहा- इसके चारों ओर एक धनुषाकार नहर घूम रही है। नदी (मंदाकिनी) उस धनुष की प्रत्यंचा है और शम, दाम, दान बाण हैं। कलियुग के सभी पाप इसके अनेक हिंसक जानवरों का लक्ष्य हैं। मानो चित्रकूट स्वयं कोई अचल शिकारी हो, जिसका निशाना कभी नहीं चूकता और जो सामने से मारता है।

सभी देवता कोल-भीलों के भेष में आए और उन्होंने [दिव्य] पत्तों और घास के सुंदर घर बनाए। दो ऐसी सुन्दर झोपड़ियाँ बनाईं जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। उनमें से एक बहुत सुन्दर, छोटी और दूसरी बड़ी थी। भगवान श्री रामचन्द्रजी, लक्ष्मणजी और जानकीजी सहित सुन्दर घास और पत्तों के भवन में शोभायमान हैं। मानो कामदेव अपनी पत्नी रति और वसंत ऋतु के साथ मुनिका के भेष में सुशोभित हों।

उस समय देवता, नाग, किन्नर और दिक्पाल चित्रकूट में आये और श्री रामचन्द्र जी ने सबको प्रणाम किया। नेत्रों का लाभ पाकर देवता प्रसन्न हुए। देवसमाज ने पुष्पवर्षा करके कहा- हे भगवन्! आज आपके दर्शन करके हम सनाथ हो गये। तब उन्होंने उनसे निवेदन करके अपना दुःख सुनाया और दुःख दूर होने का आश्वासन पाकर वे प्रसन्नतापूर्वक अपने-अपने स्थान को चले गये।

श्रीरघुनाथजी चित्रकूट में विराजमान हो गये हैं, यह समाचार सुनकर अनेक ऋषि-मुनि आये। प्रसन्न मुनिमण्डली को आते देखकर रघुकुल के चन्द्रमा श्री रामचन्द्रजी ने साष्टांग प्रणाम किया। संत श्री रामजी को अपने हृदय में ले लेते हैं और सफलता का आशीर्वाद देते हैं। वे सीताजी, लक्ष्मणजी और श्री रामचन्द्रजी की छवि देखते हैं और अपने सभी साधनों को सफल मानते हैं।

प्रभु श्री रामचन्द्रजी ने मुनिमण्डली को यथोचित सम्मान देकर विदा किया। श्री रामचन्द्रजी के चले जाने के बाद वे सभी अपने-अपने आश्रमों में स्वतंत्रतापूर्वक योग, जप, यज्ञ और तप करने लगे। जब कोल-भीलों को यह समाचार (श्री रामजी के आगमन का) मिला तो वे ऐसे प्रसन्न हुए मानो उनके घर नौ खजाने आ गये हों। वे दोनों कंद, मूल और फल ले गये। मानों गरीब सोना लूटने निकले हों।

जिन लोगों ने दोनों भाइयों को पहले देखा था, उनमें से अन्य लोग रास्ते में जाते समय उनसे कारण पूछते हैं। इस प्रकार श्री रामचन्द्रजी की शोभा सुनते-सुनते और कहते-कहते सब लोग आये और श्रीरघुनाथजी के दर्शन किये। प्रसाद को सामने रखकर वे जौहर करते हैं और बड़े प्रेम से भगवान की ओर देखते हैं। वे ऐसे मंत्रमुग्ध थे जैसे वे हर जगह खड़े हों, जैसे वे किसी चित्र में हों। उनके शरीर रोमांचित हैं और उनकी आँखों से प्रेम के आँसू छलक रहे हैं।

श्री रामजी उन सबको जानते थे, प्रेम में मग्न थे और “प्रिय वचन” कहकर सबका आदर करते थे। वह बार-बार हाथ जोड़कर प्रभु श्री रामचन्द्रजी की प्रार्थना करता है और नम्र वचन कहता है- नाथ। प्रभु (आपके) चरणों का दर्शन पाकर अब हम सब अमर हो गये हैं। हे कोसलराज! यह हमारा सौभाग्य है कि आप यहां आये।

हे नाथ! जहाँ भी आपने अपने चरण रखे हैं, वे पृथ्वी, जंगल, सड़कें और पहाड़ धन्य हैं, धन्य हैं घाटियों में घूमने वाले पक्षी और जानवर, जो आपको देखकर सफल जन्म का आशीर्वाद देते हैं। हम सब अपने परिवारों सहित धन्य हैं कि हमने आपको आँसुओं से भरी आँखों से देखा। आपने सोच-समझकर बहुत अच्छे स्थान पर निवास किया है। आप यहां हर मौसम में खुश रहेंगे.

हम हाथी, सिंह, साँप और बाघ से आपकी रक्षा करके हर तरह से आपकी सेवा करेंगे। हे प्रभो ! हमने यहां कदम-कदम पर बीहड़ जंगल, पहाड़, गुफाएं और कंदराएं देखी हैं। हम तुम्हें वहां (उन स्थानों में) शिकार कराएंगे और तालाब, झरने आदि जलाशय दिखाएंगे। हम परिवार सहित तुम्हारे सेवक हैं। हे नाथ! इसलिए हमें आदेश देने में संकोच न करें.

वेदों की वाणी और ऋषियों के मन भी अप्राप्य हैं, करुणा के धाम भगवान श्री रामचन्द्र जी भीलों की बातें उसी प्रकार सुन रहे हैं, जैसे पिता अपने बच्चों की बातें सुनता है। श्री रामचन्द्र जी को प्रेम ही प्रिय है; जो जानता हो (जानना चाहता हो), वह बता दे। , तब श्री रामचाचाजी ने वन में विचरण करने वाले उन सभी लोगों को प्रेम से भरे हुए कोमल वचन कहकर संतुष्ट किया।

फिर उन्हें विदा करें. वे सिर झुकाकर चले और प्रभु की स्तुति सुनते हुए घर आये। इस प्रकार देवताओं और ऋषियों को सुख देने वाले दोनों भाई सीताजी सहित वन में रहने लगे। जब से श्रीरघुनाथजी वन में रहने आये, तब से वन कष्टमय हो गया। अनेक। विभिन्न प्रकार के पेड़ खिलते और फलते हैं और उनके तनों के चारों ओर लिपटी हुई सुंदर लताओं के मंडप होते हैं।

वे प्राकृतिक रूप से कल्पवृक्ष के समान सुन्दर हैं। मानो उन्होंने देवताओं का वन (नंदनवन) छोड़ दिया हो। उषाकाल की पंक्तियाँ सुन्दर गुनगुनाती रहती हैं और सुखदायक, शीतल, मन्द और सुगन्धित वायु बहती रहती है। नीलकंठ, कोयल, तोते, पपीहे, चकवे आदि चकोर आदि पक्षी कानों को सुख देने वाले और मन को चुराने वाली तरह-तरह की बोलियाँ बोलते हैं।

हाथी, सिंह, वानर, सूअर और हिरण, ये सभी जामुन छोड़कर एक साथ विचरते हैं। शिकार के लिये घूमते हुए श्री रामचन्द्रजी की छवि देखकर पशुओं के समूह विशेष प्रसन्न होते हैं। जहाँ तक संसार में देवताओं के वन हैं, सभी लोग श्री रामजी के वन से प्रेरणा लेते हैं। गंगा, सरस्वती, सूर्यकुमारी, यमुना, नर्मदा, गोदावरी आदि धन्य नदियाँ।

सभी तालाब, समुद्र, नदियाँ और अनेक नदियाँ मन्दाकिनी की स्तुति करती हैं। उदयाचल, अस्ताचल, केलास, मंदराचल और सुमेरु आदि जो सभी देवताओं के निवास स्थान हैं। चित्रकोट के सभी प्रकार के पक्षी, पशु, लताएँ, वृक्ष, घास और अंकुर पुण्य के प्रतीक हैं और धन्य हैं - देवता दिन-रात यही कहते हैं।

श्री रामचन्द्रजी के दर्शन से नेत्रधारी प्राणी जन्म का फल पाकर दुःख से मुक्त हो जाते हैं और जड़ वस्तुएँ (पर्वत, छाती, भूमि, नदियाँ आदि) भगवान के चरणों का स्पर्श पाकर सुखी हो जाते हैं। इस प्रकार सभी लोग परम गति (मोक्ष) के अधिकारी बन गये। वे वन और पर्वत प्राकृतिक रूप से सुन्दर, कीचड़युक्त और परम पवित्र को भी पवित्र करने वाले हैं। जहाँ सुख के सागर श्री रामजी विराजमान हैं, उसकी महिमा का वर्णन कैसे किया जा सकता है?

सीताजी, लक्ष्मणजी और श्री रामचन्द्रजी भवसागर से निकलकर अयोध्या से प्रस्थान करने के बाद जिस वन में रहे थे, उस वन की परम शोभा है, हजार मुख वाले भी उसे लाख शेषजी नहीं कह सकते। मैं इसका वर्णन कैसे कर सकता हूँ? क्या यह संभव है कि तालाब में एक छोटा सा कछुआ भी उड़ सके? लक्ष्मणजी मन, वचन और कर्म से श्री रामचन्द्रजी की सेवा करते हैं। उनकी विनम्रता और स्नेह का वर्णन नहीं किया जा सकता।

हर क्षण श्री सीता रामजी के चरणों को देखते और उनके प्रति उनके प्रेम को जानकर लक्ष्मण जी को स्वप्न में भी अपने भाई, माता-पिता और घर की याद नहीं आती। श्री रामचन्द्र जी के साथ सीता जी अयोध्यापुरी, कुटुम्बी तथा घर की स्मृतियों को भूलकर प्रसन्न रहती हैं। वह प्रतिक्षण अपने पति श्री रामचन्द्रजी के चन्द्रमा के समान मुख को देखकर उसी प्रकार प्रसन्न होती है, जैसे चकोरनकुमारी (चकोरी) चन्द्रमा के मुख को देखकर प्रसन्न होती है।

स्वामी का अपने प्रति प्रेम दिन-प्रतिदिन बढ़ता देखकर सीताजी दिन में चन्द्रमा के समान प्रसन्न रहती हैं। सीताजी का मन श्री रामचन्द्रजी के चरणों में अनुरक्त है, जिससे उन्हें वन हजार अवध के समान प्रिय लगता है। प्रियतम (श्री रामचन्द्रजी) के पास पत्ते प्यारे लगते हैं। हिरण और पक्षी प्रिय सम्बन्धी लगते हैं। साधुओं के खत्री उनके सास के समान होते हैं, महर्षियों के खत्री उनके ससुर के समान होते हैं और कंद, मूल और फलों का भोजन उन्हें अमृत के समान लगता है।

स्वामी के साथ सुन्दर साहचर्य (फूलों और पत्तों की शय्या) सैकड़ों कामदेव की शय्याओं के समान सुख देने वाली है। जिनकी कृपादृष्टि मात्र से जीव रक्षक बन जाता है। जब वे जाते हैं, तो उन्हें सुख और विलासिता का प्रलोभन दिया जा

सकता है। श्री रामचन्द्रजी का स्मरण करके भक्तगण सभी सुख-विलास को तिनके के समान त्याग देते हैं, श्री रामचन्द्रजी की प्रिय पत्नी तथा जगतजननी सीताजी के लिए सुख-विलास का यह त्याग कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

भगवान प्राचीन कथाएँ और कहानियाँ सुनाते हैं और लक्ष्मणजी और सीताजी बड़े आनन्द से सुनते हैं। श्री रामचन्द्रजी को जब भी अयोध्या की याद आती है तो उनकी आँखों में आँसू भर आते हैं। माता-पिता, बन्धु-बान्धवों तथा भरत के प्रेम, शील तथा सेवा का स्मरण करना---

वस्त्रधारी समुद्र भगवान श्रीरामचन्द्रजी दुःखी हो जाते हैं, परन्तु फिर उसे बुरा समय समझकर धैर्यवान हो जाते हैं। श्री रामचन्द्रजी को दुःखी देखकर सीताजी और लक्ष्मणजी भी उसी प्रकार व्याकुल हो जाते हैं, जैसे किसी व्यक्ति की छाया उस व्यक्ति से मिलती-जुलती हो।

तब धीर, कपालू तथा भक्तों के हृदय को शीतल करने के लिए चंदन रूपी रघुकुल में आनंद लाने वाले श्री रामचन्द्रजी प्रियजन की दुर्दशा तथा भाई लक्ष्मण की दशा देखकर कुछ पवित्र कथाएँ सुनाने लगते हैं, जिन्हें सुनकर लक्ष्मणजी तथा सीताजी ख़ुशी पाओ. श्री रामचन्द्रजी, लक्ष्मणजी और सीताजी सहित पर्णमाला से सुशोभित हैं, जैसे इन्द्र अपनी पत्नी शची और पुत्र जयन्त के साथ अमरावती में रहते हैं।

प्रभु श्री रामचन्द्रजी किस प्रकार सीताजी और लक्ष्मणजी का पलकों की पुतलियों की भाँति पालन-पोषण करते हैं। यहाँ लक्ष्मणजी, श्री सीताजी और श्री रामचन्द्रजी; अथवा लक्ष्मणजी और सीताजी श्री रामचन्द्रजी की उसी प्रकार सेवा करते हैं, जैसे अज्ञानी मनुष्य अपने शरीर की करते हैं।

पक्षियों, पशुओं, देवताओं और तपस्वियों का कल्याण करने वाले भगवान इस प्रकार वन में सुखपूर्वक निवास कर रहे हैं। तुलसीदासजी कहते हैं--मैंने श्री रामचन्द्रजी के सुन्दर वन गमन का वृत्तान्त कहा। अब संमन्त्र किस प्रकार अयोध्या आये इसकी कथा सुनो, जब निषादराज भगवान श्री रामचन्द्रजी को लेकर लौटे तो उन्होंने मंत्री (सुमन्त्र) सहित रथ देखा। मंटी को व्यथित देखकर निषाद को कैसा दुःख हुआ, यह बताया नहीं जा सकता।

(निषादकी को अकेले आते देखकर) सुमन्त्र हा राम! हा राम हा सीते! हाँ, लक्ष्मण. पुकारते हुए वह अत्यंत व्याकुल होकर भूमि पर गिर पड़ा। [रथ के] घोड़े दक्षिण की ओर [जहाँ श्री रामचन्द्रजी गये थे] हिनहिनाते हैं। मानो पंख विहीन पक्षी चिंतित हो रहे हों। वे न तो घास चरते हैं और न ही पानी पीते हैं। बस आँखों से

पानी बह रहा है. श्री रामचन्द्रजी के घोड़ों को इस अवस्था में देखकर सभी निषाद व्याकुल हो गये।

तब निषादराज ने धैर्य धारण करके कहा- हे सुमन्त्र जी! अब दुःख छोड़ो. आप विद्वान और दान के ज्ञाता हैं। विधाता प्रतिकूल है, यह जानकर धैर्य रखें। मधुर वाणी में अनेक कथाएँ सुनाकर निषाद ने सुमंत्र को बलपूर्वक लाकर रथ पर बिठा लिया। , लेकिन दु:ख के कारण वह इतना कमजोर हो गया कि रथ नहीं चला सका। उनके हृदय में श्री रामचन्द्रजी के वियोग की बड़ी तीव्र वेदना है।

जो कोई भी राम, लक्ष्मण या जानकी का नाम लेता है, घोड़े हिनहिनाने लगते हैं और प्यास से उसकी ओर देखने लगते हैं। घोड़ों की दुर्दशा का वर्णन कैसे किया जा सकता है? वे ऐसे व्याकुल हैं जैसे मोती के बिना साँप। मंत्री और घोड़ों की यह हालत देखकर निषादराज दुःख से विह्वल हो गये। फिर उसने अपने चार श्रेष्ठ सेवकों को बुलाया और उनके साथ सारथी के पास गया।

निषादराज सारथी (सुमन्त्रजी) को गुफा में भेजकर लौट आये। उनके वियोग और दुःख का वर्णन नहीं किया जा सकता। वे चारों निषाद रथ लेकर अवध की ओर चल दिये। (सुमन्त्र और घोड़ों की ओर देखते हुए) वे भी प्रतिक्षण दुःख में डूबे रहते थे। दुःख से व्याकुल और दीन सुमंत्रजी सोचते हैं कि श्री रघुवीर के बिना रहना अभिशाप है। आख़िरकार, यह निम्न शरीर अस्तित्व में नहीं रहेगा। अब जैसे ही श्रीगमचन्द्रजी अलग हुए तो उनको यश नहीं मिला [क्यों]।

ये जीवन बदनामी और पाप के पात्र बन गये। अब वे यात्रा क्यों नहीं करते? नमस्ते ! मतलबी दिमाग [बहुत अच्छा] मौका चूक गया। अब भी दिल के दो टुकड़े नहीं होते. सुमंत हाथ मलकर और सिर पीटकर पश्चाताप करता है। मानो किसी कंजूस ने अपना समृद्ध खजाना खो दिया हो। वह ऐसे चल रहा था मानो कोई महान योद्धा वीरता का बाना पहनकर युद्ध से भाग गया हो और महान योद्धा कहला रहा हो।

जैसे विवेकशील, वेदों का ज्ञाता, सदाचारी तथा अच्छी जाति का (कुलीन) ब्राह्मण गलती से शराब पी लेता है और बाद में पछताता है, उसी प्रकार मन्त्री सुमंत्र सोच (पछतावा) कर रहा है। यदि कोई विवाहित स्त्री कुलीन कुल की, सात्विक भावना वाली, बुद्धिमान और मन, वचन तथा कर्म से अपने पति को परमेश्वर के समान मानने वाली होती है, तो भाग्यवश उसे उस समय अपने पति को छोड़ना पड़ता है (अपने पति से अलग रहती है)। जो भयानक पीड़ा उसके हृदय में होती है, वही मंत्री के हृदय में भी होती है।

आँखों में पानी भर आया है, क्रोध शांत हो गया है। कानों से सुनाई नहीं देता, मन व्याकुल है। होंठ सूखे हैं, मुँह सुन्न है। परन्तु मृत्यु के ये सब लक्षण होने पर भी जीवन नहीं निकलता; क्योंकि हृदय में काल के द्वार हैं; अर्थात चौदह वर्ष बीत जाने पर भगवान पुनः मिलेंगे की आशा बाधा उत्पन्न कर रही है।

सुमंत्रजी के चेहरे का रंग बदल गया है, जो दिखाई नहीं देता। ऐसा लगता है मानों उन्होंने माता-पिता की हत्या कर दी हो. राम के वियोग से उसके मन में बड़ी ग्लानि (पीड़ा) हो रही है, मानो कोई पापी मनुष्य नरक में जाने के उपाय के बारे में सोच रहा हो। जब नगर के सब व्याकुल नर-नारी दौड़े आकर मुझसे पूछेंगे, तब मैं हृदय पर वज्र चढ़ाकर सबको उत्तर दूँगा।

जब सभी दुःखी माताएँ पूछेंगी, हे विधाता! मैं उन्हें क्या बताऊंगा? जब लक्ष्मणजी की माँ मुझसे पूछेंगी तो मैं उन्हें क्या सांत्वना देने वाला सन्देश बताऊँगा? जब श्री रामजी की माता ऐसी दौड़ती हुई आयेंगी जैसे उन्हें अभी-अभी ब्यायी हुई गाय का स्मरण हो, तब पूछने पर मैं उन्हें उत्तर दूँगा कि श्री राम, लक्ष्मण और सीता वन को गये हैं।

जो भी पूछेगा उसे इसका जवाब देना होगा! नमस्ते! अब मैं अयोध्या जाकर यह सुख पाना चाहता हूं! जब संकटग्रस्त राजा, जिसका जीवन श्रीरघुनाथजी के [दर्शन] पर निर्भर है, मुझसे पूछेगा, तब मैं उसे किस मुँह से उत्तर दूँगा कि मैं राजकुमारों को सुरक्षित ले आया हूँ। जैसे ही राजा लक्ष्मण, सीता और श्रीराम का समाचार सुनेंगे, वे तिनके की भाँति अपना शरीर त्याग देंगे।

मेरे प्रियतम (श्री रामजी) रूपी जल के अलग होते ही वह जालीदार हृदय मिट्टी की भाँति फट नहीं गया, अत: मैं जानता हूँ कि विधाता ने मुझे यह 'यातना का शरीर' दिया है। जिसका परिणाम पापी प्राणियों को भुगतना पड़ता है। सुमंत इस प्रकार मार्ग में पश्चाताप कर रहे थे, इसी बीच रथ तुरंत तमसा नदी के तट पर पहुंच गया। मांटी ने चारों निषादों को विदा किया. दुःख से व्याकुल होकर वह सुमंत्र के चरणों में गिर पड़ा।

नगर में प्रवेश करते समय लोग (अपराध के कारण) ऐसे झिझकते हैं मानो उन्होंने किसी गुरु, ब्राह्मण या गाय की हत्या कर दी हो। जब अँधेरा हो गया तो उन्होंने अयोध्या में प्रवेश किया और रथ को दरवाजे पर खड़ा करके (चुपके से) महल में प्रवेश कर गये। जिन लोगों ने भी यह समाचार सुना, वे सब रथ देखने के लिये राजमहल में आये।

पूरा दिन एक पेड़ के नीचे बैठकर बिताया। जब शाम हुई तो मुझे मौका मिल गया. रथ को पहचानकर और घोड़ों को व्याकुल देखकर उनके शरीर गर्मी में ओलों के समान क्षीण (कमजोर) हो रहे थे। नगर के पुरुष और स्त्रियाँ ऐसे व्याकुल हैं जैसे पानी घट जाने पर मछलियाँ [व्याकुल हो जाती हैं]। अकेले मंत्री के आगमन की बात सुनकर सारा गाँव व्याकुल हो गया। राजमहल उन्हें ऐसा भयानक लग रहा था मानो वह भूतों का निवास (श्मशान भूमि) हो।

सभी रानियाँ बहुत चिंतित होकर पूछती हैं; परंतु सुमंत को कोई उत्तर नहीं सूझ रहा, उनकी वाणी कमजोर (बंद) हो गयी है। न तो हम अपने कानों से कुछ सुन सकते हैं और न ही अपनी आंखों से कुछ देख सकते हैं। जो भी सामने आता है, उससे पूछते हैं-बताओ, राजा कहां हैं? मंत्री को परेशान देखकर दासियाँ उन्हें कोसल्याजी के महल में ले गईं। सुमंतना ने जाकर देखा तो राजा ऐसे बैठे थे मानो अमृतहीन चंद्रमा हों।

राजा आसन, शय्या तथा आभूषणों से रहित होकर पूर्णतया मलीन (उदास) भूमि पर लेटा हुआ है। वह लंबी-लंबी सांसें लेता है और सोचता है मानो राजा ययाति स्वर्ग से गिरकर सोच रहे हों। राजा हर पल अपने सीने को विचारों से भरता रहता है। वह इतनी व्यथित अवस्था में है मानो [गिधर्जा जटायुका का भाई] सम्पाती पंख जलने के बाद गिर गया हो। राजा [बार-बार] 'राम, राम', हे स्नेही (प्रिय) राम! कहते हैं, फिर 'हा राम, हा लक्ष्मण, हा जानकी' कहने लगते हैं।

यह देखकर मंत्री ने प्रणाम किया और 'जयजीव' कहा। यह सुनकर राजा व्याकुल होकर उठ खड़े हुए और बोले- सुमंत्र! बताओ राम कहाँ है? राजा ने सुमंत को हृदय से लगा लिया। मानो डूबते को कोई सहारा मिल गया हो. राजा ने मंत्री को स्नेह से अपने पास बैठाकर आँखों में आँसू भरकर पूछा-

हे मेरे प्यारे दोस्त! श्री राम से कुशल पूर्वक कहना. बताओ श्रीराम, लक्ष्मण और जानकी कहां हैं? क्या तुम उन्हें वापस ले आये हो या वे जंगल में चले गये हैं? यह सुनकर मण्टी की आँखों में पानी भर आया। राजा ने दुःख से व्याकुल होकर फिर पूछा- सीता, राम और लक्ष्मण का सन्देश बताओ। राजा श्री रामचन्द्रजी के रूप, गुण, शील और स्वभाव का स्मरण करके मन में विचार करता है।

और वह कहता है--] मैंने उसे राजा बनने की बात कहकर वनवास भेज दिया, यह सुनने के बाद भी कि जिस व्यक्ति (राम) के हृदय में कोई खुशी या दुःख नहीं था, जिसने वियोग के बाद भी अपने प्राण नहीं खोए। उसका बेटा, तो मुझसे बड़ा पापी कौन होगा? हाय दोस्त! जहाँ श्री राम, जानकी और लक्ष्मण हों, कृपया मुझे

भी वहीं ले चलो। यदि नहीं, तो मैं ईमानदारी से कहता हूं कि मेरा जीवन अब आगे बढ़ना चाहता है।

राजा बार-बार मंत्री से पूछता है- मेरे प्यारे पुत्रों का संदेश बताओ। हाय दोस्त! आप तुरंत ऐसा उपाय करें जिससे श्री राम, लक्ष्मण और सीता मुझे दिखाई दें। सर सुधीर धुरंधर देवा. साधु समाज सदैव आपकी सेवा करेगा। मांटी धैर्यवान होकर कोमल स्वर में बोली- महाराज! आप विद्वान एवं ज्ञानी व्यक्ति हैं। अरे बाबा ! आप वीर एवं साहसी पुरूषों में सर्वश्रेष्ठ हैं। आपने सदैव संतों की संगति का आनंद लिया है।

जन्म और मृत्यु, सुख और दुःख का भोग, हानि और लाभ, प्रियजनों का मिलन और विछोह, यह सब हे प्रभु! वे रात और दिन की तरह समय और कर्म के प्रभाव में असहाय बने रहते हैं। मूर्ख लोग सुख में आनन्दित होते हैं और दुःख में रोते हैं, परन्तु धैर्यवान लोग मन में दोनों को एक समान समझते हैं। हे सबके हितकारी (रक्षक)! तुम्हें धैर्य रखना चाहिए, विचार करना चाहिए और शोक मनाना चाहिए। छोड़ देना।

श्री रामजी का पहला निवास (स्थान) तमसा के तट पर, दूसरा गज्जतीर पर था। उस दिन सुबह सीताजी सहित दोनों देवियों ने स्नान कर छीरू मगावा के स्रोत से जल पिया। अपना खुद का बुना हुआ मुकुट बनाएं। केवट (निषादराज) ने बहुत सेवा की। उन्होंने रात्रि विश्राम सिंगौर (श्रृंगवेरपुर) में किया। अगले दिन सुबह होते ही बड़ा ने दूध मांगा और उससे श्री राम और लक्ष्मण ने अपने सिर पर जटाओं का मुकुट बनाया.

तब श्रीरामचंद्र के मित्र निषादराज ने एक नाव मंगवाई। पहले प्रिया सीताजी को उस पर आरूढ़ किया गया और फिर श्रीरघुनाथजी को आरूढ़ किया गया। तब लक्ष्मणजी ने अपना धनुष-बाण सजाया और प्रभु श्री रामचन्द्रजी की आज्ञा पाकर स्वयं ऊपर चढ़ गये। मुझे व्यथित देखकर श्री रामचन्द्र जी ने धैर्यपूर्वक मधुर वचन बोले- हे पिताजी! पिताजी को मेरा नमस्कार कहना और उनके चरणकमलों को बार-बार पकड़ना।

फिर आपके चरण पकड़कर प्रार्थना करें कि हे पिता! मेरी चिंता मत करो. आपकी दया, अनुग्रह और सद्गुण से, हमें जीवन में और आगे चलकर सौभाग्य प्राप्त होगा। हे पिता! आपकी कृपा से वन में जाते समय मुझे सब प्रकार का सुख प्राप्त होगा। मैं आज्ञा का भलीभांति पालन करके आपके चरणों के दर्शन हेतु सकुशल लौट आऊंगा। सभी माताओं के चरणों में गिरकर और उनसे बहुत विनती करने

के बाद तुलसीदास कहते हैं, तुम्हें वही प्रयत्न करना चाहिए जिसमें कोसलपति के पिता का कल्याण हो।

बार-बार चरण कमल पकड़कर गुरु वशिष्ठजी को अपना सन्देश देता हूँ कि वे ही उपदेश दें जिससे अवधपति पिता मेरे बारे में न सोचें। हे पिता! आप सभी ग्रामवासियों और संबंधियों से निवेदन करें और उन्हें मेरे अनुरोध के बारे में बताएं कि केवल वही व्यक्ति मेरे लिए हर तरह से लाभदायक है, जिसके प्रयास से राजा प्रसन्न रहेगा।

जब भरत आएँ तो उनसे मेरा सन्देश कहना कि राजा पद प्राप्त करके उन्हें नीति नहीं छोड़नी चाहिए; कर्म, वचन और मन से प्रजा का पालन करना तथा सभी माताओं को समान मानकर उनकी सेवा करना। और अरे भाई! पिता, माता और रिश्तेदारों की सेवा करके अंत तक भाईचारा बनाए रखें। ये क्या है पापा! राजा (पिता) को ऐसा रखना कि वह कभी मेरे बारे में (किसी भी प्रकार) न सोचे।

लक्ष्मणजी ने कुछ कठोर वचन कहे। परन्तु श्री रामजी ने उनसे बड़ाई करके फिर निवेदन किया और बार-बार शपथ दिलाई [और कहा--] हे पिता! वहां लक्ष्मण के बचपन के बारे में मत बताइये. सीताजी भी नमस्कार करके कुछ कहने लगीं, परंतु स्नेहवश निश्चिंत हो गईं। उसकी बोलती बंद हो गयी, आँखों में आँसू भर आये और शरीर रोमांच से भर गया।

जो श्रीरामजी का यह सन्देश लेकर जीवित लौट आया, मैं अपनी परेशानी कैसे बताऊँ! इतना कहते-कहते मंत्री जी की वाणी रुक गई (वे चुप हो गए) और ग्लानि तथा हानि के विचार से वे उदास हो गए। सारथी सुमन्त्र के वचन सुनते ही राजा पृथ्वी पर गिर पड़े, उनके हृदय में भयंकर जलन होने लगी। उसे कष्ट होने लगा, उसका मन तीव्र आसक्ति से व्याकुल हो गया। मानो मछली पर पानी (पहली बारिश का पानी) लग गया हो.

सारी रानियाँ शोक में रो रही हैं। उस महान् विपत्ति का वर्णन कैसे किया जाय? उस समय का विलाप सुनकर दुःखी को भी दुःख हुआ और रोगी का भी धैर्य टूट गया। राजा के रावले (निवास स्थान) में शोर [रोना] सुनकर पूरी अयोध्या में बड़ा हंगामा मच गया। [ऐसा लग रहा था] मानो रात में पक्षियों के विशाल जंगल में एक सख्त परत गिर गई हो।

राजा की जान खतरे में थी. मणि के बिना साँप मानो व्याकुल (मरने के कगार पर) हो गया हो। सारी इन्द्रियाँ अत्यंत व्याकुल हो उठीं, मानो तालाब में कमल वन जल के बिना सूख गया हो। राजा को अत्यंत दुःखी देखकर कौशल्याजी ने

मन ही मन यह जान लिया कि अब सूर्यकुल का सूर्य अस्त हो गया है। तब श्री रामचन्द्रजी की माता कोसल्या ने हृदय में धैर्य रखकर समय के अनुकूल वचन बोले-

हे नाथ! ऐसा अपने मन में समझो और समझो कि श्री रामचन्द्र का वियोग अथाह समुद्र है। अयोध्या एक जहाज है और आप उसके कप्तान हैं. सभी प्रियजन (परिवार एवं प्रजा) इस जहाज पर सवार यात्रियों के समाज हैं। अगर आप धैर्यवान हैं तो आप हर चीज पर काबू पा लेंगे। नहीं तो पूरा परिवार डूब जायेगा. ओह प्रिय प्रभु। यदि तुम मेरी विनती अपने हृदय में रखोगे तो श्री राम, लक्ष्मण और सीता पुनः मिलेंगे।

अपनी प्रिय पत्नी कौशल्या के कोमल वचन सुनकर राजा ने आँखें खोलकर देखा! मानो कोई तड़पती मछली पर ठंडा पानी छिड़क रहा हो। राजा धैर्य रखकर उठ बैठा और बोला-सुमनतन्त्र! बताओ दयालु श्री राम कहाँ हैं? लक्ष्मण कहाँ हैं? स्नेही राम कहाँ है? और मेरी प्यारी बहू जानकी कहाँ है?

राजा व्याकुल होकर अनेक प्रकार से विलाप कर रहा है। वह रात एक युग के समान लम्बी हो गयी, कटती नहीं थी। राजा को अंधे साधु (श्रवणकुमार के पिता) का श्राप याद आया। उसने कोसल्या को सारी कहानी बता दी। इतिहास सुनाते-सुनाते राजा व्याकुल हो गये और बोले कि श्रीराम के बिना जीने की आशा अपमानजनक है। उस शरीर का क्या करूंगी जिसने मुझसे प्यार करने का वादा नहीं निभाया?

राम-राम कहते, फिर राम कहते, फिर राम-राम कहते और फिर राम कहते, राजा ने श्री राम के वियोग में अपना शरीर त्याग दिया और सुरलोक चले गये। जीने और मरने का फल केवल दशरथजी को ही प्राप्त हुआ, जिनकी पवित्र कीर्ति अनेक ब्रह्माण्डों में फैली हुई थी। जीवित रहते हुए उन्होंने श्री रामचन्द्रजी का चन्द्रमा के समान मुख देखा और श्री राम-वियोग को कारण बनाकर अपनी मृत्यु को टाल दिया।

सारी रानियाँ दुःख से रो रही हैं। वे राजा के सौन्दर्य, शील, बल और वैभव की प्रशंसा करते हुए अनेक प्रकार से विलाप कर रहे हैं और बार-बार भूमि पर गिर रहे हैं। दास-दासियाँ दुःखी होकर विलाप कर रहे हैं और नगरवासी घर-घर जाकर विलाप कर रहे हैं। कहा जाता है कि आज धर्म, गुण और रूप की मर्यादाओं के भण्डार सूर्य कुल का सूर्य अस्त हो गया है!

सब लोग हनन बिना आँखों के संसार को अन्धा बनाने वाली कैकेयी! रात इस प्रकार शोक में बीती। प्रातःकाल सभी बड़े-बड़े विद्वान ऋषि आये। तब ऋषि वशिष्ठ ने समय के अनुसार और अपने ज्ञान के प्रकाश से अनेक कथाएँ सुनाकर सभी का दुःख दूर किया।

वशिष्ठजी ने नाव में तेल भरकर राजा के शरीर को उसमें रख दिया। फिर उसने दूतों को बुलाकर उनसे कहा- तुम सब शीघ्र दौड़कर भरत के पास चलो। राजा की मृत्यु का समाचार किसी को मत बताना। जाकर भरत से कह देना कि गुरुजी ने दोनों भाइयों को बुलावा भेजा है। साधु की आज्ञा सुनकर धवन (दूत) दौड़े आये। वे अपनी गति से अच्छे-अच्छे घोड़ों को भी लज्जित कर देते हैं।

जब से अयोध्या में विपत्ति प्रारम्भ हुई, भरतजी को अपशकुन मिलने लगे। उन्हें रात को डरावने स्वप्न आते थे और जब जागते थे तो (उन स्वप्नों के कारण) लाखों (असंख्य) प्रकार की बुरी कल्पनाएँ किया करते थे। शांति के लिए वह प्रतिदिन ब्राह्मणों को भोजन कराता और दान देता था। अनेक प्रकार से रुद्राभिषेक करते थे। वह मन ही मन महादेवजी को प्रसन्न करके अपने माता-पिता, परिवार और भाइयों की कुशलता माँगता था।

भरतजी इस प्रकार मन में चिंता कर रहे थे कि दूत आ गया। गुरुजी का आदेश सुनते ही उसने गणेशजी को मना लिया और चला गया। एक-एक पल साल की तरह बीत रहा था. इस प्रकार भरतजी नगर के निकट पहुँचे। नगर में प्रवेश करते ही अपशकुन होने लगे। कौवे बुरी जगह बैठे हैं और बुरी तरह काँव-काँव कर रहे हैं।

गधा और सियार विपरीत बातें कर रहे हैं। यह सुनकर भरत के हृदय में बड़ा दुःख हो रहा है। तालाब, नदियाँ, जंगल, बगीचे सभी अनाकर्षक होते जा रहे हैं। शहर बहुत भयानक लग रहा है. पक्षी, पशु, घोड़े और हाथी, श्रीगरमजी के वियोग के दुःख रोग से पीड़ित होकर (इतने दुःखी हो रहे हैं कि) उन्हें देखा नहीं जा सकता। नगर के नर-नारी अत्यंत दुःखी हो रहे हैं। मानो सभी ने अपनी सारी संपत्ति खो दी हो.

नगर के लोग मिलते तो हैं, पर कुछ कहते नहीं; गोंसे (चुपके से) प्रणाम करके चला जाता है। भरतजी भी किसी का कुशल-क्षेम नहीं पूछ सकते, क्योंकि उनके मन में भय और दुःख भरा हुआ है। बाजार और सड़कें नजर नहीं आ रही हैं. ऐसा लगता है मानों शहर की दसों दिशाओं में जंगल में आग लग गयी हो! अपने पुत्र का आगमन सुनकर चन्द्रमा के रूप में केकेयी (बड़ी) सूर्य रूपी कमल पर प्रसन्न हो गयी।

आरती करने के बाद वह हर्ष से उठकर दौड़ी और द्वार पर भरत तथा शरतरुघ्न से मिली और उन्हें महल में ले आयी। भरतने सभी परिवारों को दुःखी देखा। मानो कमलों की माता को पाला चाट गया हो। एक कैकेयी ही ऐसी प्रसन्न दिखाई देती है मानो भीलनी वन में आग लगाकर उसे आनंद से भर रही हो। वह अपने पुत्र को विचारमग्न और मूडी (अत्यंत उदास) देखकर पूछने लगी- हमारे पति तो कुशल से हैं?

भरतजी ने कहा सब ठीक है। फिर उनके परिवार का हालचाल पूछा. भरतजी ने कहा--बताओ, पिताजी कहाँ हैं? मेरी सभी माँएँ कहाँ हैं? सीताजी और मेरे प्यारे भाई राम-लक्ष्मण कहाँ हैं? अपने पुत्र के प्रेमपूर्ण वचन सुनकर सिन्धी कैकेयी ने आँखों में आँसू भरकर भरत के कानों और हृदय में काँटों के समान चुभने वाले शब्द कहे-

है तात | मैंने पूरी चीज़ बना ली थी। बेचारी मंथरा बनी मददगार। लेकिन विधाता ने बीच में थोड़ा सा काम बिगाड़ दिया. वह यह कि राजा देवलोक पहुँच गया था। यह सुनकर भरत दुःख से व्यथित हो गये। मानो शेर की दहाड़ सुन रहा हो. हाथी डरा हुआ है. उन्होंने कहा 'तात! तात! हा तात!' पुकारते-पुकारते वह अत्यंत व्यथित हो गया और भूमि पर गिर पड़ा।

[और विलाप करने लगे] हे पिता! मैं तुम्हें [चलते समय 3 भी नहीं देख सका। [नमस्ते |] आपने मुझे श्री रामजी को सौंपा ही नहीं। फिर धैर्य बँधाने के बाद वे शान्त हो गये। उठकर बोला-माँ! मुझे अपने पिता की मृत्यु का कारण बताओ? कैकेयी अपने पुत्र की बात सुनकर कहने लगी। मानो हृदय बिन्दुओं को (चाकू से काटकर) छेदकर उसमें विष भर रहे हो। कुटिल और कठोर कैकेयी ने आरंभ से अंत तक वह सब कुछ किया जो वह कर सकती थी। प्रसन्न मन से बताया.

श्री रामचन्द्र जी के वन जाने की बात सुनकर भरत जी अपने पिता की मृत्यु को भूल गये और हृदय में यह जानकर कि वे ही इस सब अनर्थ के कारण हैं, मौन और स्तब्ध हो गये (अर्थात उनकी वाणी रुक गयी और वे स्तब्ध रह गये)। अपने पुत्र को व्याकुल देखकर केकेयी समझाने लगी। मानो पानी पर नमक लगा रहे हों. [उसने कहा--] हे पिता! राजा विचार करने योग्य नहीं है। उन्होंने समृद्धि और प्रसिद्धि अर्जित की और इसका पर्याप्त आनंद उठाया।

अपने जीवनकाल में ही उन्होंने अपने जन्म के सभी फल प्राप्त कर लिये और अन्त में वे इन्द्रलोक गये। ऐसा सोचना बंद करो और समाज के साथ-साथ शहर पर भी राज करो. यह सुनकर राजकुमार भरतजी बहुत भयभीत हो गये। मानो

किसी पके हुए घाव पर अंगारा छू गया हो। उसने धैर्यपूर्वक गहरी साँस ली और कहा, "पापी!" तुमने कुलका का सब प्रकार से नाश कर दिया है।

नमस्ते ! यदि तुम्हारी ऐसी ही अत्यंत बुरी इच्छाएँ थीं, तो तुमने मुझे जन्म लेते ही क्यों नहीं मार डाला? तुमने पेड़ को काटा और उसकी पत्तियों को पानी दिया और जीवित रहने के लिए मछलियों पर पानी छिड़का। (अर्थात् मेरा भला करने गए, उल्टे मेरा ही अहित कर बैठे) राम-लक्ष्मण से मुझे सूर्यवंश [स वंशावली] दशरथजी [समान] पिता और भाई मिले। परन्तु हे माँ! तुम वह माँ हो जिसने मुझे जन्म दिया! क्या किया जाय, विधाता के वश में कुछ भी नहीं है।

हे कुमति! जब तू ने अपने हृदय में यह बुरा विचार उत्पन्न किया, तो तेरे हृदय के टुकड़े क्यों न हो गए? वरदान माँगते समय क्या तुम्हें कोई कष्ट नहीं हुआ? क्या आपकी जीभ नहीं पिघली? क्या तुम्हारे मुँह में कीड़े तो नहीं पड़ गये? राजा ने आप पर कैसे विश्वास किया? [ऐसा प्रतीत होता है] कि विधाता ने उसकी मृत्यु के समय उसकी बुद्धि छीन ली थी। हृदय की गति विधाता भी नहीं जान सके। वह पूर्णतया छल, पाप और दुर्गुणों की खान है।

तब राजा सीधा, विनम्र और धार्मिक था। वे स्त्री स्वभाव को कैसे जान सकते हैं? अरे संसार के प्राणियों में ऐसा कौन है जिसे श्रीरघुनाथजी प्राणों के समान प्रिय न हों? वे श्री रामजी भी तुम्हारे लिये दुष्ट हो गये (शत्रु प्रतीत होने लगे)! आप कौन हैं? मुझे सच बताओ! वह जो है वही है, अब मेरे मुँह पर स्याही पोतकर (मेरा मुँह काला करके) उठकर मेरी आँखों के पीछे बैठ जा।

विधाता ने मुझे श्री रामजी (आपके) के विरोधी हृदय से बनाया है [या विधाता ने मुझे हृदय से राम का विरोधी बनाया है]। मेरे समान पापी और कौन है? मैं तुम्हें व्यर्थ ही कुछ बता रहा हूं. अपनी माता की दुष्टता सुनकर शत्रुघ्नजी का सम्पूर्ण हृदय क्रोध से जलने लगता है, परन्तु उनसे कुछ भी वश नहीं चलता। उसी समय कुबरी (मंथरा) भांति-भांति के वस्त्र और आभूषण पहनकर वहां आई।

उन्हें (अलंकृत) देखकर लक्ष्मण के छोटे भाई शत्रुघ्नजी क्रोधित हो गये। मानो। जलती अग्नि में घी की आहुति दी गई है. उसने जोर से मुक्का मारा और कूबड़ पर लात मारी। वह चिल्लाते हुए मुंह के बल जमीन पर गिर पड़ी. उसका कूबड़ टूट गया, खोपड़ी फट गई, दाँत टूट गए और मुँह से खून बहने लगा। [वो कराहते हुए बोली-]हे भगवान! मैंने क्या गलत किया? जिन्होंने अच्छा किया उन्हें बुरे परिणाम मिले।

उनकी यह बात सुनकर और उन्हें अंदर तक दुष्ट मानकर शत्रुघ्नजी उनका थैला पकड़कर उन्हें खींचने लगे। तब दयानिधि भरतजी ने उन्हें तथा दोनों भाइयों को [तत्काल] मुक्त कर दिया। कोसल्याजी के पास गये। कोसल्याजी ने मैले-कुचैले वस्त्र पहने हैं, मुख का रंग बदल गया है, वे दुःखी हो रही हैं, दुःख के बोझ से उनका शरीर सूख गया है। वह ऐसी लग रही है मानों सुन्दर स्वर्णिम कल्पलता वन में शीतदंशित हो गयी हो।

भरत को देखते ही माता कौशल्या जी उठकर दौड़ीं। परंतु चक्कर आने के कारण वह अचेत होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। यह देखकर भरतजी अत्यंत व्याकुल हो गये और अपने शरीर की सुध-बुध भूलकर उनके चरणों में गिर पड़े। तब उसने कहा-माँ! पिताजी कहां हैं? उन्हें दिखाओ। सीताजी और मेरे दोनों भाई श्रम-लक्ष्मण कहाँ हैं? [उन्हें दिखाओ।] कैकेयी, दुनिया क्यों जमी हुई है? और अगर पैदा हुआ तो बांस क्यों नहीं बन गया?

जिसने मेरे जैसे कुल को कलंकित करने वाले, अपकीर्ति को लाने वाले और अपनों को धोखा देने वाले पुत्रों को जन्म दिया। तीनों लोकों में मेरे समान अभागा कौन है? जिसके कारण हे माँ! यह स्थिति आपके साथ हुई! पिता स्वर्ग में हैं और श्री रामजी वन में हैं। केतु की भाँति मैं ही इन सब अनर्थों का कारण हूँ। मुझ पर शर्म की बात है! मेरा जन्म बाँस के जंगल में लगी आग में हुआ और मैं घोर पीड़ा, दुःख और दोषों का शिकार हुआ।

भरतजी के कोमल वचन सुनकर माता कौशल्याजी फिर धीरे से उठ गईं। उसने भरत को उठाकर अपनी छाती से लगा लिया और आँखों से आँसू बहाने लगी। सरल स्वभाव वाली माता ने बड़े प्रेम से भरतजी को हृदय से लगा लिया, मानो श्रीराम लौट आये हों। तब लक्ष्मणजी के छोटे भाई शत्रुघ्न ने उन्हें गले लगा लिया। दुःख और प्रेम हृदय में समा नहीं सकते।

कोसल्याजी का स्वभाव देखकर सभी कह रहे हैं- श्रीराम की माता का स्वभाव ऐसा क्यों न हो? माता ने भरतजी को अपनी गोद में बिठाया और उनके आंसू पोंछकर कोमल वचन बोले- समय और कर्म की गति को अमिट जानकर अपने हृदय में किसी प्रकार की हानि या ग्लानि मत करो। अरे बाप रे! किसी को दोष मत दो. विधाता, जो मुझे इतने दुःख में भी जीवित रख रहा है, उसने मुझे हर प्रकार से उलट-पुलट कर दिया है। फिर भी, कौन जानता है कि उसे क्या पसंद है?

हे पिता! अपने पिता के आदेश पर श्री रघुवीर ने अपने आभूषण और वस्त्र त्याग दिये और वल्कल-वसाखत्र धारण कर लिया। उसके हृदय में न तो दुःख था और

न ही प्रसन्नता। उसका मुख प्रसन्न था; मेरे मन में न राग था, न क्रोध, न द्वेष। सभी प्रकार से सबको संतुष्ट करके वह वन में चला गया। यह सुनकर सीता भी उनके साथ हो गईं। वह किसी भी तरह से श्री राम के चरणों की भक्त नहीं थी।

यह सुनकर लक्ष्मण भी उठकर चले गये। श्रीरघुनाथ ने उन्हें रोकने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वे उन्हें रोक न सके। तब श्रीरघुनाथजी सबको सिर नवाकर सीता और छोटे भाई लक्ष्मण को साथ लेकर चले गये। श्री राम, लक्ष्मण और सीता वन चले गये। न तो मैं उनके साथ गया और न ही मैंने उनके साथ जिंदगी बिताई. ये सब इन आंखों के सामने हुआ. फिर भी उस अभागी आत्मा ने शरीर नहीं छोड़ा।

मुझे अपने प्रियतम की ओर देखते हुए शर्म भी नहीं आती; राम जैसी पुत्री वाली माँ! राजा को अच्छी तरह पता था कि कैसे जीना और मरना है। मेरा हृदय सैकड़ों बच्चों के समान कठोर है। कोसल्याजी के वचन सुनकर भरत सहित समस्त वनवासी व्याकुल हो गये और विलाप करने लगे। ऐसा लग रहा था जैसे राजमहल शोक का निवास बन गया हो।

भरत और शत्रुघ्न दोनों भाई दुःखी होकर विलाप करने लगे। तब कौशल्याजी ने उन्हें हृदय से लगा लिया। भरतजी को अनेक प्रकार से समझाया और बहुत-सी ज्ञान की बातें कहीं। भरतजी ने भी सभी माताओं को पुराणों और वेदों की सुन्दर-सुन्दर कहानियाँ सुनाकर समझाया। भरतजी हाथ जोड़कर बिना छल के सुंदर, शुद्ध और सरल स्वर में बोले-

जो पाप माता-पिता और पुत्रों को मारने से होते हैं और जो ब्राह्मणों की गौशाला और नगर को जलाने से होते हैं; स्त्री और बालक की हत्या करने से जो पाप होते हैं तथा मित्र और राजा को विष देने से जो पाप होते हैं - कर्म, परहेज और मन से होने वाले सभी दोष और उपकर्म (बड़े और छोटे पाप) कौन से कवि कहते हैं, हे विधाता! यदि इस कार्य में मेरी कोई भूमिका नहीं है, तो हे माँ! वे सारे पाप मुझ पर आ पड़ें।

जो लोग श्रीहरि और श्रीशंकरजी के चरणों को छोड़कर भयानक भूतों की पूजा करते हैं, हे माँ! यदि इसमें मेरी बात हो तो विधाता मुझे अपनी स्वीकृति प्रदान करें। लोग वेद बेचते हैं, धर्म का दोहन करते हैं, गपशप करते हैं, दूसरों के पाप बताते हैं; जो कपटी, कुटिल, झगड़ालू और क्रोधी हैं, और जो बेदों की निन्दा करते हैं और जगत के विरोधी हैं;

जो लोग लालची, लम्पट और लोभी जैसा व्यवहार करते हैं; जो पराये धन और परायी स्त्री की खोज में रहते हैं; हे माँ! यदि इस कार्य में आपकी सहमति हो तो मुझे उनकी भयंकर गति का ज्ञान हो जायेगा। जिनकी संगत में प्यार नहीं होता; जो अभागे मनुष्य परोपकार के मार्ग से विमुख हो जाते हैं; जो मनुष्य शरीर पाकर श्री हरिका का जप नहीं करते; जिनको हरि-हर (भगवान् विष्णु तथा शंकरजी) की कृपा अच्छी नहीं लगती;

जो लोग वेदों का मार्ग छोड़कर (वेद विरुद्ध) गलत मार्ग अपनाते हैं; जो ठग हैं, और भेष बदलकर जगत को धोखा देते हैं; हे माँ! यदि मुझे यह रहस्य मालूम भी हो तो शंकरजी मुझे उन लोगों की जानकारी दें। भरतजी के स्वाभाविक, सत्य और सरल वचन सुनकर माता कौशल्याजी कहने लगीं- हे पिताजी! आप मन, वचन और शरीर से सदैव श्री रामचन्द्र जी को प्रिय हैं।

श्री राम तुम्हारे प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं और तुम भी श्री रघुनाथजी को अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय हो। चाहे चन्द्रमा जहर उगलने लगे और पाला आग बरसाने लगे; जलचर जीवों को जल से विरक्ति हो सकती है और ज्ञान प्राप्त करने पर भी उनकी आसक्ति दूर नहीं हो सकती; परन्तु आप कभी भी श्री रामचन्द्र के विरुद्ध नहीं हो सकते। यह आपका विचार है, संसार में जो ऐसा कहते हैं उन्हें स्वप्न में भी सुख और सौभाग्य प्राप्त नहीं होता।

यह कहकर माता कोसल्याणे ने भरतजी को अपने हृदय से लगा लिया। उसके स्तनों से और [प्रेमियों की] आँखों से दूध बहने लगा। पानी फैल गया. इस प्रकार सारी रात बैठे-बैठे बहुत विलाप करते हुए व्यतीत हो गई। तभी वामदेवजी और वशिष्ठजी आये। उसने सभी मंत्रियों और साहूकारों को बुलाया। तब मुनि वशिष्ठ जी ने भरतजी को दान के सुन्दर एवं सामयिक वचन दिये और अनेक प्रकार का उपदेश दिया।

[वशिष्ठजी ने कहा--]हे पिताजी! दिल से धैर्य रखें और आज जो भी काम करने का अवसर मिले उसे करें। गुरुजी की बात सुनकर भरतजी उठे और सभी को तैयारी करने को कहा। वेदों में वर्णित विधि के अनुसार राजा के शरीर को स्नान कराया गया और एक अत्यंत विचित्र विमान बनाया गया. भरतजी ने सभी माताओं के चरण पकड़कर (अर्थात प्रार्थना करके उन्हें सती होने से रोका)। उन रानियों को भी श्री राम के दर्शन की अभिलाषा बनी रही।

चंदन और अगर आदि अनेक प्रकार के सुगंधित पदार्थ तथा कपूर, गुग्गुल, केसर आदि अनेक प्रकार के सुगंधित पदार्थ बहुत-से भर कर आये। सरयूजी नदी के तट पर एक सुंदर चिता बनाई गई थी, जो स्वर्ग की सुंदर सीढ़ी के समान दिखती

थी। महर्षि वशिष्ठजी ने जहाँ-जहाँ आज्ञा दी, भरतजी ने सहस्रों प्रकार से वैसा ही किया। शुद्ध होने के बाद [उचित परिश्रम से] सब कुछ दान कर दिया गया। गाय, घोड़े, हाथी आदि अनेक प्रकार के वाहन।

भरतजी ने राजगद्दी, आभूषण, वस्त्र, अन्न, पृथ्वी, धन और मकान दे दिया; भूदेव ब्राह्मण से दान पाकर उसका कार्य सिद्ध हो गया (अर्थात् उसकी सभी इच्छाएँ पूर्ण हो गईं)। भरतजी ने अपने पिता के लिये जो किया उसका वर्णन करोड़ों मुखों से भी नहीं किया जा सकता। तभी शुभ दिन निकालकर महर्षि वशिष्ठजी आये और उन्होंने मंत्रियों तथा सभी साहूकारों को बुलाया।

सभी लोग राज्यसभा में जाकर बैठ गये. तब मुन्नी ने भरतजी और श्रुघनजी दोनों भाइयों को भेजा। वशिष्ठजी ने भरतजी को अपने पास बैठाया और नीति तथा धर्म से युक्त वचन बोले। सबसे पहले महर्षि ने कैकेयी के बुरे कर्मों की पूरी कहानी बताई। फिर राजा के धर्म और सत्य की प्रशंसा की, जिसने अपना शरीर त्यागकर जीवन व्यतीत किया।

श्री रामचन्द्रजी के गुण, शील और स्वभाव का वर्णन करते-करते मुनिराज की आँखों में आँसू भर आये और वे पुलकित हो गये। तब मुनिवर लक्ष्मणजी और सीताजी के प्रेम की प्रशंसा करते हुए शोक और शोक में मग्न हो गये। मुनिनाथ ने दुःखी होकर लिखा और कहा- हे भरत! सुनो, भावी (होनहार) बड़ा बलवान है। हानि-लाभ, जीवन-मृत्यु और यश-अपयश यह सब विधाता के हाथ में है।

ऐसा सोचने पर दोष किसे दिया जाए? और किस पर व्यर्थ क्रोध करना चाहिए? हे पिता, मन में विचार कर। राजा दशरथ सोचने में सक्षम नहीं हैं। हमें उस ब्राह्मण के बारे में सोचना चाहिए जो वेदों को नहीं जानता और जो अपना धर्म छोड़कर विषय-भोग में डूबा रहता है। हमें उस राजा के बारे में सोचना चाहिए जो नीति नहीं जानता और जिसकी प्रजा अपने प्राणों के समान प्रिय नहीं है।

हमें सोचना चाहिए about that Vaishya जो धनवान होते हुए भी कंजूस है और जो आतिथ्य सत्कार और भगवान शिव की भक्ति में कुशल नहीं है। हमें सोचना चाहिए about that Shudra जो ब्राह्मणों का अपमान करता है, बहुत बोलता है, वैभव प्रिय है और अपने ज्ञान पर घमंड करता है।

हमें उस स्त्री के बारे में सोचना चाहिए जो अपने पति को धोखा देने वाली, कुटिल, झगड़ालू और दुराचारी स्वभाव की होती है। उस ब्रह्मचारी के बारे में सोचना चाहिए जो ब्रह्मचर्य व्रत को त्याग देता है और अपने गुरु की आज्ञा का पालन नहीं करता है। उस स्त्री के बारे में सोचना चाहिए जो अपने पति को धोखा

देने वाली, कुटिल, झगड़ालू और दुराचारी होती है। उस ब्रह्मचारी का विचार करना चाहिए जो ब्रह्मचर्य व्रत को त्याग देता है और गुरु की आज्ञा का पालन नहीं करता।

जो लोग तपस्या छोड़कर सुख भोगते हैं वे ही वानप्रस्थ के बारे में सोचने के योग्य हैं। हमें उसके बारे में सोचना चाहिए जो चुगलखोर हो, अकारण क्रोध करता हो तथा माता, पिता, गुरु तथा भाइयों से झगड़ा करता हो। जो दूसरों को हानि पहुंचाता है, अपने शरीर का पोषण करता है और अत्यंत क्रूर है, उसके बारे में सब प्रकार से विचार करना चाहिए। और वह हर प्रकार से विचार करने में सक्षम है जो छल-कपट का त्याग नहीं करता और हरिका का भक्त बन जाता है।

कोसलराज दशरथजी विचार करने योग्य नहीं हैं, जिनका प्रभाव चौदहों लोकों में दिखाई देता है। हे भारत! तुम्हारे पिता के समान न तो कभी कोई राजा हुआ है और न ही कभी कोई होगा। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र और दिक्पाल सभी दशरथजी के गुणों की कथा कहते हैं।

हे पिता! बताओ, जिनके श्री राम, लक्ष्मण, आपके और शत्रुघ्न जैसे पवित्र पुत्र हों, उनकी प्रशंसा कोई कैसे कर सकता है? राजा हर प्रकार से भाग्यशाली था। उनके लिए दुःख महसूस करना व्यर्थ है। यह सुनने और समझने के बाद तुम सोचना छोड़ दो और राजा की आज्ञा मानकर उसके अनुसार आचरण करो।

राजा ने तुम्हें राजगद्दी दे दी है. तुम्हें अपने पिता के वचनों का पालन करना चाहिए, जिन्होंने स्वयं को बचाने के लिए श्री रामचन्द्रजी को त्याग दिया और राम के वियोग की अग्नि में अपने शरीर का त्याग कर दिया। राजा को उसकी बातें प्रिय थीं, परंतु उसकी जान नहीं। इसलिये हे पिता! अपने पिता के वचनों को सत्य सिद्ध करो! राजा की आज्ञा का हृदय से पालन करो, इससे तुम्हें हर प्रकार से लाभ होगा।

परशुरामजी ने अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए अपनी माता का वध कर दिया; सभी लोग इसके गवाह हैं. राजा ययाति के पुत्र ने अपनी युवावस्था अपने पिता को दे दी। अपने पिता की आज्ञा का पालन करने से उन्हें कोई पाप या अपमान नहीं लगता था। जो लोग उचित-अनुचित का विचार छोड़कर अपने पिता के वचनों का पालन करते हैं, वे [यहाँ] सुख और सौभाग्य के पात्र बनते हैं और अन्त में इन्द्रपुरी (स्वर्ग) में निवास करते हैं।

अपना वादा पूरा करना सुनिश्चित करें. शोक छोड़ो और प्रजा की आज्ञा मानो। ऐसा करने से स्वर्ग का राजा संतुष्ट हो जायेगा और तुम्हें पुण्य एवं सुन्दर यश

मिलेगा और दोष भी नहीं लगेगा। यह बात तो श्वास-श्वास में प्रसिद्ध है और सभी विद्वान [स्मृति-पुराण आदि] भी इस बात से सहमत हैं कि पिता जिसे राज्य देता है, उसी को राज्याभिषेक होता है। इसलिये तुम राज करो, अपराध भाव छोड़ दो। मेरी बात को हितकर समझो।

ये बातें सुनकर श्री रामचन्द्रजी और जानकीजी प्रसन्न होंगे और कोई भी पंडित इसे अनुचित नहीं कहेगा। कोसल्याजी आदि प्रजा के सुख से आपकी सभी माताएँ भी प्रसन्न होंगी। जो तुम्हारे और श्री रामचन्द्रजी के उत्तम सम्बन्ध को जानता है वह तुम्हारे साथ हर प्रकार से अच्छा व्यवहार करेगा। जब श्री रामचन्द्रजी लौट आएँ तो उन्हें राज्य सौंप देना और सुन्दर स्नेहपूर्वक उनकी सेवा करना।

मंत्री हाथ जोड़कर कह रहे हैं- आपको गुरुजी की आज्ञा का पालन करना होगा। जब श्रीरघुनाथजी लौटें तो जो उचित हो वही करना। कोसल्याजी भी धैर्यपूर्वक कह रहे हैं-हे पुत्र! गुरुजी का आदेश एक मार्ग के रूप में है। इसका सम्मान करना चाहिए और इसे लाभकारी मानकर इसका पालन करना चाहिए। -समय की प्रगति को जानकर दुःख का त्याग कर देना चाहिए।

श्रीरघुनाथजी तो वन में हैं, महाराज स्वर्ग पर राज्य करने गये हैं। और हे पिता! तुम इस तरह कायर हो रहे हो. अरे बेटा! आप अपने परिवार, लोगों, प्रशंसकों और सभी माताओं के लिए एकमात्र सहारा हैं। विधाता को प्रतिकूल और समय को कठोर देखकर धैर्य रखें, आपकी माता आपके लिए त्याग करेगी। गुरु की आज्ञा मानकर उसके अनुसार आचरण करो और प्रजा की आज्ञा मानकर अपने परिजनों के दुःख दूर करो।

भरतजी ने गुरु के वचन और मंत्रियों के अभिवादन सुने, जो उनके हृदय में चंदन के समान शीतल थे। तभी उन्होंने माता कोसल्या की शील, प्रेम और सरलता के रस से सराबोर कोमल वाणी सुनी। सरलता के रस से सराबोर माता की वाणी सुनकर भरतजी व्याकुल हो गये।

उनके कमल नयन जल (आँसू) बहाकर हृदय के नव अंकुर को सींचने लगे। (उसकी आँखों में आँसू ने उसके वियोग के दुःख को बहुत बढ़ा दिया और उसे अत्यधिक व्यथित कर दिया।) उसकी हालत देखकर उस समय सभी लोग उसके शरीर के बारे में सब कुछ भूल गए। तुलसीदासजी कहते हैं--सब लोग स्वाभाविक प्रेम की सीमा का आदरपूर्वक श्रीभरतजी की स्तुति करने लगे।

भरतजी ने धैर्य की धुरी को पकड़कर धैर्य रखा, कमल के समान हाथ जोड़े, शब्दों को मानो अमृत में डुबाया और सभी को उचित उत्तर देने लगे - गुरुजी ने मुझे सुंदर उपदेश दिया। [फिर] लोग, मनात्ती आदि सभी इस बात से सहमत हैं। माँ ने भी उचित समझकर अनुमति दे दी है और मैं भी अवश्य ही उनकी आज्ञा मानकर वैसा ही करना चाहता हूँ।

(क्योंकि गुरु, पिता, माता, गुरु और मित्र के वचनों को सुनकर प्रसन्न मन से उसे अच्छा समझकर ग्रहण करना चाहिए। उचित-अनुचित का विचार करने से धर्म की हानि होती है और पाप का बोझ सिर पर आ जाता है) आप मुझे वही सरल शिक्षा दे रहे हैं, जिसका आचरण मेरे लिये हितकारी होगा, यद्‌यपि मैं इन बातों को भली प्रकार समझता हूँ, फिर भी मेरा हृदय संतुष्ट नहीं होता।

पिताजी स्वर्ग में हैं, श्रीसीतारामजी वन में हैं और आप मुझसे राज्य करने को कह रहे हैं। क्या आप इसी में मेरी भलाई समझते हैं या कोई बड़ा काम होने की आशा रखते हैं? सीतापति श्री रामजी की सेवा में ही मेरा कल्याण है, सो मेरी माता की दुष्टता ने उसे छीन लिया। मैंने मन में यह निश्चय कर लिया है कि अन्य किसी उपाय से मुझे लाभ नहीं होगा।

राज्यलक्ष्मण, श्री रामचन्द्रजी और सीताजी के चरणों को देखे बिना यह शोक समुदाय कैसा (इसका मूल्य क्या है)? जैसे वस्त्रों के बिना आभूषणों का बोझ व्यर्थ है। त्याग के बिना ब्रह्म का विचार व्यर्थ है। शैगी शारोर के लिए विभिन्न प्रकार के प्रसाद बेकार हैं। श्रीहरि की भक्ति के बिना जप और योग व्यर्थ हैं। एक सुंदर शरीर आत्मा के बिना बेकार है। इसी प्रकार श्रीरघुनाथजी के बिना मेरा सब कुछ व्यर्थ है।

कृपया मुझे श्री रामजी के पास जाने की अनुमति दीजिये! मेरी एकमात्र रुचि निश्चित रूप से इसी में है। और तुम मुझे राजा बनाकर अपना ही भला चाहते हो, यह भी मोह के कारण कह रहे हो। कैकेयी पुत्र, तुम कुटिल, राम से विमुख और निर्लज्ज हो, मोह के वशीभूत होकर आधे-अधूरे मन के राज्य में ही सुख चाहते हो।

मैं सत्य कहता हूं, तुम सब सुनकर विश्वास करो, धर्मात्मा मनुष्य को ही राजा होना चाहिए। जैसे ही तुम हठ करके मुझे राज्य दोगे, पृथ्वी पाताल में समा जायेगी। मेरे समान पाप का घर कौन होगा, जिसके कारण सीताजी और श्री रामजी को वनवास हुआ? राजा ने श्री रामजी को एक वन दे दिया और उसके अलग होते ही वे स्वयं स्वर्ग चले गये।

और मैं दुष्ट, जो सब उपद्रवों का कारण है, होश में बैठा हुआ सब कुछ सुन रहा हूं! श्रीरघुनाथजी के बिना घर देखने और संसार का उपहास सहने पर भी यह जीवन अक्षुण्ण रहता है। इसके पीछे कारण यह है कि इस आत्मा को श्री राम के पवित्र विषय से कोई लगाव नहीं है। ये लालची लोग केवल जमीन और सुख के भूखे हैं। मैं अपने हृदय की कठोरता का कहाँ तक वर्णन कर सकता हूँ? जिसने वचरका का भी अनादर करके महिमा प्राप्त की है।

किसी कारण से काम कठिन हो जाता है, इसमें मेरी कोई गलती नहीं है. वज्र हड्डी से अधिक मजबूत होता है और लोहा पत्थर से अधिक मजबूत होता है। कैकेयी से उत्पन्न शरीर को चाहने वाले ये पामर सर्वथा (पूर्णतः) अभागे हैं॥ प्रियतम से बिछुड़ने पर भी. मुझे अपनी जान प्यारी है, भविष्य में और भी बहुत कुछ देखूंगा और सुनूंगा.

और मुझे सुख, सुन्दर यश और अच्छा राज्य दिया! कैकेयी ने सबके काम बनाये! इससे बेहतर मेरे लिए क्या हो सकता है? ऊपर से आप लोग मुझसे राजतिलक भी मांगते हैं! कैकेयी के गर्भ से इस संसार में जन्म लेने में मेरे लिए कुछ भी अनुचित नहीं है। मेरे बारे में सब कुछ विधाता ने स्वयं ही तय किया है। [फिर] लोग और पंच (आप लोग) उसमें क्यों मदद कर रहे हैं?

यदि किसी ऐसे व्यक्ति को शराब पिलाई जाए जो बुरी आत्माओं से पीड़ित हो [या जिस पर कोई भूत सवार हो], या जो वायु रोग से पीड़ित हो और फिर उसे बिच्छू ने काट लिया हो, तो बताओ, यह किस प्रकार का उपचार है? कैकेयी के पुत्र के लिये संसार में जो कुछ भी उपयुक्त था चतुर विधाता ने मुझे वही दिया। लेकिन विधाता ने मुझे 'दशरथ का पुत्र' और 'राम का छोटा भाई' होने का घमंड व्यर्थ दिया।

आप सभी भी मुझसे वैक्सीन लगवाने के लिए कह रहे हैं. राजा की आज्ञा मानने से सभी का कल्याण होता है। मुझे किसको और किस तरह से जवाब देना चाहिए? जिसकी भी रुचि हो, आप सब भी प्रसन्नतापूर्वक यही कह सकते हैं। मेरी माता कैकेयी सहित मुझे तो छोड़िये, और कौन कहेगा कि यह कार्य अच्छा हुआ है? मेरे अतिरिक्त जड़ जगत में ऐसा कौन है जिसे श्रीसीतारामजी प्राणों के समान प्रिय न हों?

हर कोई अंतिम हानि में बड़ा लाभ देख रहा है। मेरा दिन ख़राब चल रहा है, इसमें किसी की गलती नहीं है। आप सब जो कहते हैं वही सही है. क्योंकि तुम लोग सन्देह, शील और प्रेम के वशीभूत हो। श्री रामचन्द्रजी की माता अत्यंत सरल

हृदय हैं और उनका मुझ पर विशेष प्रेम है। इसलिये वह मेरी नम्रता देखकर स्वाभाविक स्नेहवश ऐसा कह रही है।

गुरुजी ज्ञान के सागर हैं, यह तो सारी दुनिया जानती है, जिनके लिए दुनिया हथेली में बेर के समान है, वे भी मेरे लिए राजतिलक के रूप में सुशोभित हो रहे हैं। यह सत्य है कि जब विधाता आपके विरुद्ध हो तो हर कोई आपके विरुद्ध हो जाता है। श्री रामचन्द्रजी और सीताजी को छोड़कर संसार में कोई यह न कहेगा कि इस विपत्ति में मेरी कोई सहमति नहीं है। मैं ख़ुशी से उसकी बात सुनूंगा और सहूंगा. क्योंकि जहां भी पानी होगा, वहां अंततः कीचड़ होगा।

मुझे इस बात का डर नहीं है कि दुनिया मेरे बारे में बुरा बोलेगी, न ही मुझे अगली दुनिया के बारे में कोई विचार है। मेरे हृदय में एक ही दुःख है कि मेरे कारण श्रीसीतारामजी दुःखी हो गये। जीवन का सर्वोत्तम लाभ लक्ष्मण को हुआ, जिन्होंने सब कुछ त्याग कर अपना संपूर्ण जीवन श्री रामजी के चरणों में समर्पित कर दिया। मेरा जन्म श्री रामजी के वनवास के लिये ही हुआ है। मुझे किस बात का पछतावा है, अभागे झूठे?

मैं सिर झुकाकर सबको अपनी भयानक विनम्रता के बारे में बताता हूं। श्रीरघुनाथजी के चरणों के दर्शन किये बिना मेरी ईर्ष्या दूर नहीं होगी। मैं किसी अन्य समाधान के बारे में नहीं सोच सकता. श्री राम के बिना मेरे हृदय की बात कौन जान सकता है? मेरे मन में एक ही संकल्प है कि सुबह होते ही भगवान श्री राम के पास जाऊंगा.

यद्यपि मैं बुरा और अपराधी हूं और यह सब उपद्रव मेरे ही कारण हुआ है, तथापि श्री रामजी मुझे शरण में अपने सम्मुख आया देखकर मेरे सब पाप क्षमा कर देंगे और मुझ पर विशेष कृपा करेंगे। श्रीरघुनाथजी शील, संकोच, अत्यंत सरल स्वभाव, कृपा। और खेहके घर हैं. श्री रामजी ने कभी शत्रु का भी अहित नहीं किया। यद्यपि मैं कुटिल हूँ, फिर भी मैं उनका बच्चा और दास हूँ।

आप पाँचों (सभी) लोग भी इसी में मेरी भलाई समझते हैं और सुन्दर शब्दों से आज्ञा और आशीर्वाद देते हैं, जिससे श्री रामचन्द्र जी मेरी प्रार्थना सुनकर और मुझे अपना दास समझकर राजधानी में लौट आते हैं। यद्यपि मैं कुमाता से उत्पन्न हुआ हूं और दुष्ट हूं तथा सदैव दोषी रहता हूं, फिर भी मुझ श्री रामजी को विश्वास है कि वे मुझे अपना समझकर मेरा त्याग नहीं करेंगे।

भरतजी की बात सबको अच्छी लगी। मानो वे श्री रामजी के प्रेम रस में भीग गये हों। श्री राम के वियोग रूपी भयंकर विष से सभी जल गये। ऐसा लगा मानों वे

बीज सहित मंत्र सुनते ही जाग गये हों। माता, माता, गुरु, नगर के सभी नर-नारी खरहे के कारण अत्यंत दुःखी हो गये। सभी भरतजी की प्रशंसा करते हैं और कहते हैं कि आपका शरीर श्री राम के प्रेम का प्रतीक है।

हे तात भरत! आप ऐसा क्यों नहीं कहते? आप श्री रामजी को प्राणों के समान प्रिय हैं। जो मनुष्य अपनी मूर्खता से तुम्हारी माता केकयी की दुष्टता के कारण तुम पर संदेह करेगा, वह करोड़ों दुष्ट पूर्वजों के साथ युगों-युगों तक नरक के भवन में निवास करेगा। मणि साँप के पापों और अवगुणों को स्वीकार नहीं करती। बल्कि, यह जहर को दूर करता है और दुःख और दरिद्रता को जला देता है।

भरतजी हैं! अवश्य वन में जाइये, जहाँ श्री रामजी हैं; आपने बहुत अच्छी सलाह दी. आपने दु:ख के सागर में डूबे हुए सभी लोगों को (महान) सहारा दिया। सबके हृदय में हर्ष भी कम न था (अर्थात् बहुत आनन्द था)! मानो बादलों की गड़गड़ाहट सुनकर चील और मोर आनंदित हो रहे हों। [अगले दिन] प्रातःकाल चलने का सुन्दर निर्णय देखकर भरतजी सबके प्रिय हो गये।

महर्षि वशिष्ठजी की पूजा करके और भरतजी को प्रणाम करके सब लोग विदा लेकर अपने-अपने घर चले गये। संसार में भरतजी का जीवन धन्य है, ऐसा कहकर वे उनके शील और स्नेह की सराहना करते रहते हैं। वे आपस में कहते हैं, महान काम हो चुका है. सभी लोग जाने की तैयारी करने लगे. मैं जिससे भी कहती रहती हूं कि मैं घर की देखभाल के लिए हूं, उसे ऐसा लगता है जैसे मेरी गर्दन दबा दी गई है।

कुछ लोग कहते हैं - किसी को जीने के लिए मत कहो, इस संसार में जीवन का लाभ कौन नहीं चाहता? वह संपत्ति, घर, सुख, मित्र, माता, पिता, भाई सब जल जाएं जो श्री रामजी के चरणों में आकर (खुशी से) मुस्कुराने में सहायता नहीं करते। लोग घर-घर में कई तरह की शोभा यात्राएं सजा रहे हैं। मेरे हृदय में [बड़ी] ख़ुशी है कि मुझे सुबह निकलना है। भरतजी ने घर जाकर नगर, घोड़े, हाथी, महल, खजाना आदि का विचार किया।

सारी सम्पत्ति श्रीरघुनाथजी की है। यदि मैं उसकी सुरक्षा का कोई प्रबंध किये बिना ही उसे छोड़ दूँगा तो परिणाम मेरे पक्ष में नहीं होगा। क्योंकि अपने स्वामी के साथ विश्वासघात करना सभी पापों में सबसे बड़ा पाप है। नौकर वह है जो अपने मालिक का भला करता है, भले ही कोई करोड़ों रुपये का दोष क्यों न दे। यह सोचकर भरतजी ने ऐसे विश्वस्त सेवकों को बुलाया जो रात्रि के अंधेरे में भी अपने धर्म से विचलित न हुए हों।

भरतजी ने उन्हें सब रहस्य समझाया और फिर उत्तम धर्म बताया; और जो पात्र होता था, उसे उसी कार्य पर नियुक्त कर दिया जाता था। सारी व्यवस्था करके और पहरा देकर भरतजी राममाता कोसल्याजी के पास गये। यह जानकर कि सभी माताएँ दुःखी हैं, प्रेम के स्वामी (प्रेम का सार जानने वाले) भरतजी ने उनसे उनके लिए पालकी तैयार करने और सुखासन यान (सुखपाल) सजाने के लिए कहा।

शहर के नर-नारी चकवे-चकवी की तरह सुबह उठकर मन में बड़ी प्यास लेकर जाना चाहते हैं। सारी रात जागने के बाद सुबह हुई। तब भरतजी ने चतुर मंत्रियों को बुलाया। और कहा--तिलक का सारा सामान ले जाओ। मुनि वशिष्ठजी श्री रामचन्द्रजी को वन में ही राज्य दे देंगे, शीघ्र आओ। यह सुनकर मंत्रियों ने पूजा की और तुरंत घोड़ों, रथों और हाथियों को सजाया।

सबसे पहले मुनिराज वशिष्ठजी अरुन्धती तथा अग्निहोत्र के समस्त साज-सामान के साथ रथ पर सवार हुए। तब ब्राह्मणों का समूह, जो सभी तपस्या और महिमा के भंडार थे, कई घुड़सवारों पर सवार होकर निकल पड़े। नगर के सभी लोग अपने-अपने रथ सजाकर चित्रकूट की ओर चल पड़े। सभी रानियाँ ऐसी सुन्दर पालकियों पर सवार हुईं जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता।

विश्वस्त सेवकों को नगर सौंपकर और सबको आदर सहित विदा करके, फिर श्रीसीताराम जी के युद्धों का स्मरण करके भरत और शत्रुघ्न दोनों भाई वहाँ से चले गये। सभी स्त्री-पुरुष श्री रामचन्द्र जी के दर्शन के वश में होकर (दर्शन की अनन्य इच्छा से) ऐसे चल रहे थे, मानो प्यासे हाथी पानी की ओर दौड़ रहे हों (बड़े वेग से उन्मत्त हो रहे हों)। श्रीसीतारामजी [सभी सुखों का त्याग कर रहे हैं। यह विचार मन में लेकर भरतजी अपने छोटे भाई शत्रुघ्नजी के साथ पैदल ही चल पड़े।

उनका स्नेह देखकर लोग प्रेम में डूब गये और सभी घोड़े, हाथी और रथ छोड़कर पैदल ही चलने लगे। तब श्री रामचन्द्रजी की माता कौशल्याजी भरतजी के पास गईं और उनके पास अपनी पालकी खड़ी करके कोमल स्वर में बोलीं-

अरे बेटा! बैलों को ले मैया, तुम चढ़ो रथ पर। नहीं तो पूरा प्यारा परिवार दुखी हो जाएगा. तुम चलोगे तो सब चलेंगे। दुःख के कारण सभी लोग दुबले हो रहे हैं और चलने-फिरने के योग्य नहीं रह गये हैं। अपनी माता की आज्ञा मानकर और

उनके चरणों में सिर झुकाकर दोनों भाई रथ पर चढ़ गये और चलने लगे। पहले दिन तमसापार में रुकने के बाद वह दूसरे दिन गोमती के तट पर पहुंचे।

कुछ लोग केवल दूध पीते हैं, कुछ लोग फल खाते हैं और कुछ लोग रात में केवल एक समय ही भोजन करते हैं। आभूषण और विलासिता को छोड़कर सभी लोग श्री रामचन्द्रजी के लिए नियम और व्रत करते हैं। सरयू नदी के तट पर रात्रि विश्राम करके प्रातःकाल वे वहाँ से प्रस्थान कर श्रीदवेरपुर के निकट पहुँचे। जब निषादराज ने सारा समाचार सुना तो वह दुःखी हो गये और मन में सोचने लगे-

क्या कारण है कि भरत वन में जा रहे हैं, अवश्य ही उनके मन में कोई छल है। यदि मेरी माता में कुटिलता न थी तो फिर मैं सेना क्यों लेकर आया हूँ? मैं सोचता हूं कि श्रीगम को उसके छोटे भाई लक्ष्मण सहित मारकर मैं सुखपूर्वक और बिना किसी उपद्रव के राज्य करूंगा। भरत ने राजनीति को अपने हृदय में स्थान नहीं दिया (राजनीति का विचार नहीं किया)। तब (पहले) कलंक ही था, अब प्राण से हाथ धोना पड़ेगा।

यदि सभी देवता और दानव योद्धा एकत्रित हो जाएँ तो भी श्री रामजी को युद्ध में कोई हरा नहीं सकता। भारत के ऐसा करने में आश्चर्य की क्या बात है? जहरीली लताएँ कभी अमृत नहीं धारण करतीं! ऐसा सोचकर गृह (निषादराज) ने अपनी जाति के लोगों से कहा कि सभी लोग सावधान रहें। नावों पर कब्ज़ा कर लो और फिर उन्हें डुबा दो और सभी घाट बंद कर दो।

सुसज्जित हो जाओ और हमलों को रोको और सभी मरने के लिए तैयार हो जाओ (अर्थात भारत के खिलाफ युद्ध में लड़ने और मरने के लिए तैयार हो जाओ)। मैं भरत से (मैदान में) लोहा लूँगा और जब तक जीवित हूँ, उसे सीमा पार नहीं करने दूँगा। मर गये, फिर गन्ने का किनारा, श्री राम की वासना और क्षणभंगुर शरीर (जिसकी इच्छा हो वह नष्ट हो जाये); भरत श्री रामजी के भाई और राजा हैं (उनके हाथों मर रहे हैं) और मैं तुच्छ सेवक ऐसी मृत्यु पाता हूँ।

मैं अपने स्वामी के कार्य के लिए युद्ध लड़ंगा और अपने यश से चौदहों लोकों को आलोकित करूंगा। मैं श्रीरघुनाथजी के लिये अपने प्राण त्याग दूँगा। मेरे दोनों हाथों में खुशी के लड्डू हैं (अर्थात यदि मैं जीत गया तो मुझे राम के सेवक की प्रसिद्धि मिलेगी और यदि मैं मारा गया तो मुझे श्री रामजी की दैनिक सेवा मिलेगी)।

जिसकी गिनती संतों के समाज में नहीं होती और जिसका श्री रामजी के भक्तों में कोई स्थान नहीं है, वह व्यर्थ ही पृथ्वी पर बोझ बनकर रहता है। यह माँ के युवा स्तनों को काटने के लिए एक कुल्हाड़ी मात्र है। [इस प्रकार श्री रामजी के लिए प्राण त्यागने का निश्चय करके] निषादराज दुःख से मुक्त हो गए और सबको प्रोत्साहित करके तथा श्री रामचन्द्रजी का स्मरण करके उन्होंने तुरंत तरकश, धनुष और कवच माँगा।

[उन्होंने कहा-] अरे भाइयों! जल्दी करो और सब कुछ व्यवस्थित करो. मेरी आज्ञा सुनकर किसी के मन में कायरता न आये। सब लोग प्रसन्न होकर बोले-हे प्रभु! बहुत अच्छा; और एक दूसरे को प्रोत्साहित करने लगे. निशादराज को प्रणाम करके सभी निषद चले गये। वे सभी महान योद्धा हैं और उन्हें युद्ध करना बहुत पसंद है। श्री गमछन्छाजी के चरण कमलों की पादुकाओं का स्मरण करते हुए उन्होंने भाठियाँ (छोटी तरकशें) बाँधीं और धनुहियों (छोटी धनुष) पर मन्नतें रखीं।

कवच पहने हुए, उसके सिर पर लोहे का हेलमेट है और वह कुल्हाड़ी, भाले और भाले को सीधा कर रहा है। कुछ लोग तलवार के हमलों को रोकने में बहुत कुशल होते हैं। वे इतने उत्साह से भर जाते हैं मानो धरती छोड़कर आकाश में छलांग लगा रहे हों। वे अपना साज-सामान (युद्ध साज-सामान और दल) तैयार करके निषादराज गुहको में जाकर जौहर करने लगे। सुंदर योद्धाओं को देखकर निषादराज ने उन सभी को योग्य पहचाना और नाम लेकर उनका सम्मान किया।

उसने कहा--हाँ भाइयों! धोखा न खाना (अर्थात् मरने से न डरना), यही आज मेरा बड़ा काम है। यह सुनकर सभी योद्धा बड़े उत्साह से बोले- हे वीर! अधीर मत होइए. हे नाथ! श्री रामचन्द्र जी की शक्ति और आपके बल से हम भरत की सेना को योद्धा विहीन और घोड़े विहीन कर देंगे (एक-एक वीर और एक-एक घोड़े को मार डालेंगे)। जब तक जिंदा हूं पीछे नहीं हटूंगा। पृथ्वी को धूल में बदल डालूँगा (उसे सिरों और तनों से ढँक दूँगा)।

योद्धाओं के विशाल समूह को देखकर निषादराज ने कहा, "युद्ध नगाड़ा बजाओ।" इतना कहते ही उनकी बायीं तरफ छींक आ गयी. भविष्यवक्ताओं ने कहा कि मैदान सुन्दर हैं (विजय होगी)। एक बूढ़े ने शगुन पर विचार करके कहा- भरत से मिलो, उससे झगड़ा न होगा। भरत श्री रामचन्द्रजी को समझाने जा रहे हैं। शकुन कह रहा है कि कोई विरोध नहीं है.

यह सुनकर निषादराज गुहणे ने कहा- बूढ़ा ठीक कह रहा है। मूर्ख लोग बिना सोचे-समझे कोई काम करके पछताते हैं। भरतजी के शील और स्वभाव को समझे बिना युद्ध करना शत्रु के लिए बड़ी हानि है। अत: हे योद्धा! तुम लोग एकत्र होकर सारे घाट बंद कर दो, मैं जाकर भरतजी से मिलूंगा और उनका पता लगाऊंगा। मैं यह जानने के बाद कि उनके भाव मित्र के हैं, शत्रु के हैं या उदासीन के हैं, आकर तदनुसार व्यवस्था करूँगा।

मैं उसके स्नेह को उसके सुन्दर स्वभाव से पहचान लूँगा। नफरत और प्यार छुपने से नहीं छुपते. यह कह कर वह उपहार का सामान सजाने लगा। उसने कंद, मूल, फल, पक्षी और हिरण मंगवाये। कहार लोग ढेर सारी बूढ़ी और मोटी मछलियाँ लाते थे जिन्हें पहिना कहा जाता था। उपहार का सामान सजाकर मिलने जायेंगे तो शुभ शकुन मिलेगा।

मुनिराज वशिष्ठजी को देखकर निषादराज ने अपना नाम बताया और दूर से ही प्रणाम किया। मुनिध्वर वसिष्ठजी ने उन्हें राम का प्रिय जानकर आशीर्वाद दिया और भरतजी को समझाया कि वे श्री राम के मित्र हैं। यह सुनकर भरतजी ने रथ छोड़ दिया। वे रथ से उतरे और प्रेम से भरकर चल दिये। अपना गाँव, जाति और नाम बताने के बाद निषादराज गुहणे ने धरती पर सिर झुकाकर जौहर किया।

उन्हें झुकते देख भरतजी ने उन्हें उठाकर अपनी छाती से लगा लिया। हृदय में प्रेम नहीं है, मानो स्वयं लक्ष्मणजी मिल गये हों। भरतजी गुहको को बड़े प्रेम से गले लगा रहे हैं। सब लोग प्रेम की रीति सिखा रहे हैं (ईर्ष्या से प्रशंसा कर रहे हैं); मदजल की मूल ध्वनि 'धन्य-धन्य' करके देवता उसकी स्तुति कर रहे हैं और पुष्प वर्षा कर रहे हैं।

वे कहते हैं- जो लोक और वेद दोनों में सब प्रकार से हीन माना जाता है, जिसकी छाया का स्पर्श करना पड़ता है और स्नान करना पड़ता है, उसी निषाद को मूठ में भरकर (हृदय से लगाकर) श्री रामचन्द्रजी के छोटे भाई भरतजी (खुशी और प्रेम से) अपने शरीर में पुलकावली से मिल रहे हैं। हैं।

जो लोग राम-राम कहते हुए जम्हाई लेते हैं (अर्थात् जो आलस्यवश भी राम नाम का उच्चारण करते हैं) उनके सामने पापों का समूह (कोई भी पाप) नहीं आता। तब श्री रामचन्द्र जी ने स्वयं इस गुफ़ा को अपने हृदय में ले लिया और कुल सहित इसे जगत्पावन (संसार को पवित्र करने वाला) बना दिया।

कर्मनाशा नदी का जल जब गंगा में गिरता (मिलता) है, तो कहो कौन उसे मस्तक पर धारण नहीं करता? संसार जानता है कि उल्टा नाम (मरा-मरा) जपने

से वाल्मिकीजी ब्रह्मा के समान हो गये। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, सदियों से यही परंपरा चली आ रही है। श्रीरघुनाथजी ने किसकी स्तुति नहीं की? इस प्रकार देवतागण राम नाम की स्तुति कर रहे हैं और उसे सुनकर अयोध्यावासी प्रसन्न हो रहे हैं।

रामसखा ने प्रेम के साथ मिलकर निषादराज से भरतजी की कुशलक्षेम और कुशलक्षेम पूछी। भरतजी का शील और प्रेम देखकर निषध उस समय अंतर्ध्यान हो गया (प्रेम में मुग्ध होकर अपने शरीर की भी सुधि भूल गया)। उनके मन में संकोच, प्रेम और आनंद इतना बढ़ गया कि वे खड़े-खड़े भरतजी की ओर ताकते रहे। फिर उन्होंने धैर्य रखकर भरतजी के चरणों की वन्दना की और हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगे-

हे प्रभो! समृद्धि की उत्पत्ति: आपके चरणकमलों का दर्शन करके मैंने स्वयं को तीनों कालों में समृद्ध पाया है। अब आपकी परम कृपा से करोड़ों कुलों (पीढियों) सहित मेरा कल्याण हो गया। अपने कर्म और कुल को समझकर मन में भगवान श्री रामचन्द्रजी की महिमा का दर्शन (विचार) किया; अर्थात् कहां मैं नीच जाति का और नीच कर्म करने वाला प्राणी हूं और कहां अनंत ब्रह्मांडों के स्वामी भगवान श्री रामचन्द्रजी? परन्तु उन्होंने दयावश मेरे जैसे तुच्छ व्यक्ति को भी स्वीकार कर लिया, यह समझकर कि जो रघुवीर श्री राम के चरणों की पूजा नहीं करता, उसने संसार के रचयिता द्वारा धोखा खाया है।

मैं धोखेबाज, कायर, मूर्ख और दुराचारी हूं और हर तरह से दोनों लोक-वेदों की सीमा से परे हूं। परन्तु जब से श्री रामचन्द्रजी ने मुझे अपनाया है, तब से मैं जगत् का रत्न हो गया हूँ। निषादराज का प्रेम देखकर और उनके सुन्दर वचन सुनकर भरतजी के छोटे भाई श्रुघ्नजी उनसे मिले। तब निषाद ने उनका नाम लेकर सुन्दर (नम्र और मधुर) स्वर में आदरपूर्वक सभी रानियों को सम्बोधित किया।

रानियाँ उन्हें लक्ष्मणजी के समान मानती हैं और आशीर्वाद देती हैं कि वे एक लाख वर्ष तक सुखपूर्वक जीवित रहें। नगर के मनुष्य निषाद को देखकर ऐसे प्रसन्न हुए, मानो लक्ष्मणजी को देख रहे हों। सभी कहते हैं कि उन्हें जीवन का लाभ मिला है, जिन्हें श्री रामचन्द्र जी ने कल्याण रूप में अपनी बांहों में गले लगा लिया है। अपने भाग्य की महिमा सुनकर निषाद अत्यंत प्रसन्न हुआ और सभी को अपने साथ ले गया।

उसने अपने सभी सेवकों को संकेत किया। स्वामी की स्वीकृति मिलने के बाद वे निकल पड़े और घरों में, पेड़ों के नीचे, तालाबों और बगीचों और जंगलों में रहने

के लिए स्थान बनाए। जब भरतजी ने यह देखा तो प्रेम के कारण उनके सारे अंग शिथिल हो गये। निषधकों को गले लगाया। (अर्थात कंधे पर हाथ रखकर चलना) वह ऐसी शोभा दे रहा है, मानो उसने विनम्रता और प्रेम का शरीर धारण कर रखा हो।

इस प्रकार भरतजी को सारी सेना सहित जगत् को पवित्र करने वाले गजराजजी के दर्शन हुए। श्री रामघाट [जहाँ श्री रामजी ने सायंकाल को स्नान किया था] को नमस्कार है। उनका मन इतना आनंदित हो गया, मानो उन्हें साक्षात् श्री राम मिल गये हों। नगर के नर-नारी गंगा के ब्रहमरूपी जल को देखकर प्रणाम कर रहे हैं और हर्षित हो रहे हैं। गदाजी में स्नान करके सभी लोग हाथ जोड़कर यही वर माँगते हैं कि हम श्री रामचन्द्रजी के चरणों में रहेंगे। प्रेम कम नहीं होना चाहिए (अर्थात् बहुत अधिक होना चाहिए)।

भरतजी ने कहा- हर-हर गंगे! आपका राज सबको सुख देने वाला और सेवक के लिए कामधेनु है। मैं हाथ जोड़कर यह वर माँगता हूँ कि श्रीसीतारामजी के चरणों में मेरा स्वाभाविक प्रेम हो। इस प्रकार भरतजी ने स्नान किया और गुरुजी की आज्ञा पाकर तथा यह जानकर कि सभी माताओं ने स्नान कर लिया है, शिविर से बाहर चले गये।

लोगों ने जगह-जगह डेरा डाल दिया। भरतजी ने पूछा कि सब लोग आराम से आकर बसे हैं या नहीं। फिर देवता की पूजा करके और अनुमति लेकर दोनों भाई श्री रामचर्चाजी की माता कोसल्याजी के पास गये। भरतजी ने सभी माताओं के चरण दबाकर और कोमल वचन कहकर उनका सत्कार किया। तब आपने अपनी माताओं का पालन-पोषण भाई शत्रुघ्न को सौंप दिया और फिर आप निषध कहलाये।

भरतजी अपने मित्र निषादराज के साथ हाथ में हाथ डाले चले। थोड़ा सा भी प्रेम नहीं है (अर्थात बहुत अधिक प्रेम है) जिससे उनका शरीर शिथिल होता जा रहा है। भरतजी अपने मित्र से कहते हैं कि मुझे वह स्थान दिखाओ - और मेरी आँखों और मन की जलन को शांत करो - जहाँ सीताजी, श्री रामजी और लक्ष्मण रात को सोये थे। इतना कहते ही उनकी आँखों में प्रेम के आँसू भर आये। भरतजी की बातें सुनकर निषाद को बहुत दुःख हुआ। वह तुरंत उन्हें वहां ले गया--

जहां श्री रामजी ने पवित्र अशोक की छाती के नीचे विश्राम किया था। भरतजी ने वहाँ बड़े प्रेम और आदर के साथ दण्डवत प्रणाम किया। कुशोंकी की सुन्दर सहचरी को देखकर उसने उसकी परिक्रमा की और उसे प्रणाम किया। श्री

रामचन्द्रजी के पदचिन्हों का रक्त मैंने अपनी आँखों से लगाया। [उस समय का] प्रेम प्रचुर मात्रा में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

जब भरतजी ने सीताजी के आभूषणों और वस्त्रों से गिरे हुए दो-चार स्वर्ण कण (सोने के कण या तारे आदि) देखे तो उन्हें सीताजी के समान समझकर अपने मस्तक पर रख लिया। उसकी आँखें प्रेम के आँसुओं से और हृदय ग्लानि से भर गया। उन्होंने बहुत सुन्दर आवाज में ये शब्द कहे -

ये स्वर्ण कण या तारे भी सीताजी के वियोग से उसी प्रकार श्रीहीन (सुशोभित) और कान्तिहीन हो रहे हैं, जैसे राम के वियोग से अयोध्या के नर-नारी लुप्त हो रहे हैं (दुःख के कारण क्षीण हो रहे हैं)। जिनके पिता राजा जनक हैं, जिनके हाथ में इस संसार में सुख और योग दोनों हैं, उन सीताजी से मैं किसकी उपमा दूं?

जिनके ससुर सूर्य कुल के सूर्य राजा दशरथजी हैं, जिन्हें अमरावती के भगवान इंद्र ने भी शिक्षा दी थी। (ईर्ष्या उसके जैसा ऐश्वर्य और ऐश्वर्य पाना चाहती थी); और भगवान श्रीरघुनाथजी तो उनके प्राणनाथ हैं, जो इतने महान हैं कि जो भी महान बनता है, वह श्री रामचन्द्रजी की महानता (प्रदत्त) के कारण ही बनता है।

उन पतिपरायण महान स्त्रियों के बीच सीताजी की शय्या देखकर मेरा हृदय काँपता और फटता नहीं; हे शंकर! यह वज्र से भी अधिक कठोर है। मेरा छोटा भाई लक्ष्मण बहुत सुन्दर और प्यारा है। ऐसे भाई किसी के पास नहीं हैं, न हैं, न होने की संभावना है। जो लक्ष्मण अवधवासियों के प्रिय हैं, अपने माता-पिता के प्रिय हैं और श्रीसीताराम जी के प्रिय हैं;

जिनका शरीर कोमल और सौम्य स्वभाव का है, जिनके शरीर को कभी गरम वायु का स्पर्श भी नहीं हुआ, वे वन में सब प्रकार की विपत्तियाँ सह रहे हैं। [नमस्ते !] मेरी इस छाती ने अपनी कठोरता में लाखों विपत्तियों का अनादर किया है [वरना कभी तो फट जाती]।

श्री रामचन्द्रजी ने जन्म (अवतार) लेकर जगत को आलोकित (अत्यधिक विभूषित) किया॥ वह रूप, शील, सुख और समस्त गुणों का सागर है। श्री रामजी का स्वभाव समस्त ग्रामवासियों, परिवारजनों, गुरु, पिता और माता को सुख देने वाला है। शत्रु भी श्री रामजी का गुणगान करते हैं। ये अपनी वाणी, मिलने-जुलने के तरीके और व्यवहार से लोगों का मन मोह लेते हैं। भगवान श्री रामचन्द्रजी के गुणों की गिनती करोड़ों सरस्वती और अरबों शेषजी भी नहीं कर सकते।

सुख और आनन्द के भण्डार रघुवंश शिरोमणि श्रीरामचन्द्रजी पृथ्वी पर आसन बिछाकर शयन करते हैं। विधाता की गति बड़ी प्रबल है। श्रीगमचन्द्र जी ने कभी दुःख का नाम भी नहीं सुना। महाराज स्वयं उनकी देखभाल जीवन के वृक्ष की तरह करते थे। सभी माताएँ भी दिन-रात उनकी देखभाल करती थीं, जैसे साँप अपनी पलकों की देखभाल करते हैं।

वही श्री रामचन्द्रजी अब वनों में पैदल विचरण करते हैं और कंद-मूल तथा फल-फूल खाते हैं। अमद्राल की मूल निवासी कैकेयी को धिक्कार है, जो अपने प्रिय पति से भी शत्रुतापूर्ण हो गई। मुझ पाप के समुद्र और उस अभागे मनुष्य को धिक्कार है, जिसके कारण यह सब उत्पात हुआ। विधाता ने मुझे कलंकित बनाया और कुमाता ने मुझे द्रोही बनाया।

यह सुनकर निषादराज प्रेमपूर्वक समझाने लगे- हे प्रभु! तुम व्यर्थ क्यों परेशान होते हो? श्रीरामचन्द्रजी तुम्हें प्रिय हैं और तुम श्रीरामचन्द्रजी को प्रिय हो। यह निष्कर्ष (निश्चित सिद्धांत) है, दोष प्रतिकूल रचनाकारों का है। प्रतिकूल भाग्य का सामना करना बहुत कठोर है, जिसने माता कैकेयी को पागल बना दिया।

(मन बदल कर) उस रात प्रभु श्री रामचन्द्रजी बार-बार आदरपूर्वक आपकी स्तुति करते थे। तुलसीदासजी कहते हैं-- [निषादगज कहते हैं कि--] श्री रामचन्द्रजी को आपके समान कोई प्रिय नहीं है, मैं शपथ खाता हूँ। यह जानते हुए कि परिणाम में भ्रांति होगी, मन में धैर्य रखो।

श्री रामचन्द्रजी भय और संकोच, प्रेम और कृपा के धाम हैं, ऐसा समझकर मन में निश्चय करके चलो और विश्राम करो, अपने मित्र के वचन सुनकर, हृदय में धैर्य रखकर और श्री रामचन्द्रजी का स्मरण करके भरतजी डेरेको की ओर चले। यह समाचार (श्री रामजी के रहने के स्थान का) पाकर नगर के सभी स्त्री-पुरुष अत्यंत उत्सुक हो गये और उस स्थान को देखने के लिये चल पड़े।

वे उस स्थान की परिक्रमा करके उन्हें प्रणाम करते हैं और कैकेयी की बहुत निन्दा करते हैं। आंखों में पानी भर जाता है और दूषित प्रभाव पड़ता है। कुछ लोग भरतजी के प्रेम की प्रशंसा करते हैं और कुछ कहते हैं कि राजा ने अपना प्रेम बहुत अच्छी तरह निभाया। सभी लोग अपनी निन्दा करते हुए निषाद की प्रशंसा करते हैं। उस समय की निराशा और दुःख का वर्णन कौन कर सकता है?

सारी रात सब जागते रहे। सुबह होते ही गुरूजी एक सुन्दर नाव पर सवार थे। उसे फहराने के बाद सभी माताओं को नई नाव पर बिठाया गया। चार घंटे में सभी लोग गंगा पार कर गए। तब भरतजी नीचे आये और सबको संभाला। प्रातःकाल

का अनुष्ठान पूरा करके, देवी माँ के चरणों की पूजा करके तथा गुरुजी को प्रणाम करके भरतजी ने निषादगणों को आगे बढ़ाया [रास्ता दिखाने के लिए] और सेना का नेतृत्व किया।

निषादराज को आगे रखकर सभी माताओं की पालकियाँ पीछे-पीछे चलीं। छोटे भाई श्रुघनजी को बुलाया गया और वे भी उनके साथ हो लिये। फिर गुरुजी ब्राह्मणों के साथ चले गये। इसके बाद आपने (भरतजी ने) गदजी को प्रणाम किया और लक्ष्मण सहित श्रीसीता-रामजी का स्मरण किया। भरतजी पैदल ही चले। कोटल (सवार रहित) घोड़े लगाम से बंधे हुए चल रहे हैं।

श्रेष्ठ सेवक बार-बार कहते हैं, हे प्रभु! आप घोड़े की सवारी करें. भानराटजी उत्तर देते हैं कि श्री रामचन्द्रजी तो पैदल गये थे और हमारे लिये रथ, हाथी, घोड़े बनाये गये हैं। मेरे लिए सिरके पर चलना बेहतर है. सेवक का कर्तव्य सबसे कठिन होता है। भरतजी की हालत देखकर और उनकी कोमल आवाज सुनकर सभी सेवकों को ग्लानि हो रही है।

भ्रारतजी ने प्रेम में बड़े उत्साह से सीताराम-सीताराम कहते हुए तीसरे पहर प्रयाग में प्रवेश किया। किया। उसके पैरों के छाले कैसे चमकते हैं, जैसे कमल की पंखुड़ियों पर ओस की बूंदें चमकती हैं। आज भरतजी पैदल आये हैं, यह समाचार सुनकर सारा समाज दुःखी हो गया।

जब भरतजी को पता चला कि सभी लोग मर गये हैं तो वे त्रिवेणी आये और उन्हें प्रणाम किया। फिर उन्होंने विधिपूर्वक [गंगा-यमुना के] श्वेत और श्याम जल में स्नान किया और ब्राह्मणों को दान देकर सम्मानित किया। श्वेत-श्याम (यमुनाजी और गदजाजी) लहरों को देखकर भरतजी के शरीर में उत्तेजना उत्पन्न हो गई और उन्होंने हाथ जोड़कर कहा- हे तीर्थराज! आप सभी मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली हैं. आपका प्रभाव वेदों में प्रसिद्ध है और जगत् में दिखाई देता है।

मैं अपना धर्म (भिक्षा न लेने का क्षत्रिय धर्म) छोड़कर आपसे भिक्षा मांगता हूं। सदाचारी मनुष्य कौन सा दुष्कर्म नहीं करता? ऐसा हृदय में जानकर अच्छा दानी संसार में मनुष्य की प्रार्थना सफल कर देता है (अर्थात् जो कुछ मांगता है वही दे देता है)। मुझे न तो धन में रुचि (इच्छा) है, न धर्म में, न काम में, न मैं मोक्ष चाहता हूं। हर जन्म में श्री रामजी के चरणों में प्रेम हो, बस इतना ही माँगता हूँ, और कुछ नहीं।

चाहे स्वयं श्री रामचन्द्रजी मुझे कुटिल समझें और लोग मुझे गुरुद्रोही और गुरुद्रोही कहें; परन्तु आपकी कृपा से श्रीसीताराम जी के चरणों में मेरा प्रेम

दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहे। सेघ जीवन भर चातक को भूल सकता है और अगर वह पानी भी मांगता है, तो वह वज्र और पत्थर (ओले) गिरा सकता है, लेकिन अगर चातक की रतन कम हो जाती है, तो उसके शब्द कम हो जाएंगे (उसकी प्रतिष्ठा नष्ट हो जाएगी)। जयगी) | यह उसके प्यार को बढ़ाने के लिए हर तरह से फायदेमंद है।

जिस प्रकार सोने को तपाने पर उसकी चमक बढ़ जाती है, उसी प्रकार प्रियतम के चरणों में प्रेम के नियमों का पालन करने से प्रेमी सेवक का गौरव बढ़ जाता है। भरतजी के वचन सुनकर त्रिवेणी के मध्य से एक सुन्दर, सुखदायक वाणी आयी- हे तात भरत! आप हर तरह से एक संत हैं. श्री रामचन्द्रजी के चरणों में आपका अत्यंत प्रेम है। आप अनावश्यक रूप से दोषी महसूस कर रहे हैं. श्री रामचन्द्र जी का आपके समान कोई प्रिय नहीं है।

त्रिवेणीजी के अनुकूल वचन सुनकर भरतजी का शरीर पुलकित हो गया और हृदय हर्ष से भर गया। भरतजी धन्य हैं, धन्य हैं कहकर देवता प्रसन्न हो गये और फूल बरसाने लगे। तीर्थराज प्रयाग में रहने वाले वानप्रस्थ, ब्रह्मचारी, गृहस्थ और उदासीन (संन्यासी) सभी बहुत प्रसन्न हैं और दस-पांच मिलकर आपस में कहते हैं कि भरतजी का प्रेम और शील शुद्ध और सच्चा है। .

श्री रामचन्द्रजी के सुन्दर गुणों को सुनकर वे महर्षि भरद्वाजजी के पास आये। ऋषि ने भरतजी को उन्हें प्रणाम करते हुए देखा और उन्हें मूर्ति रूप में अपना सौभाग्य माना। नन्हें ने दौड़कर भरतजी को उठाया, हृदय से लगाया और आशीर्वाद देकर कृतार्थ किया। ऋषि ने उसे एक आसन दिया।

वे सिर झुकाये बैठे थे, मानों वे भागकर निःसंकोच घर में घुस जाना चाहते हों। उनके मन में यह बड़ा विचार है कि यदि साधु कुछ पूछेंगे तो मैं क्या उत्तर दूँगा? भरतजी की विनम्रता और संकोच देखकर मुनि ने कहा- भरत! सुनो, हम सबको खबर मिल गई है। सृजक के कर्तव्य पर कोई नियंत्रण नहीं है।

अपनी माता के कृत्य को समझकर (याद करके) मन में ग्लानि मत करो। हे पिता! कैकेयी का कोई दोष नहीं, उनकी बुद्धि तो सरस्वती ने बिगाड़ दी थी। ऐसा कहने से भी किसी का भला नहीं होगा, क्योंकि विद्वानों को लोक और वेद दोनों ही मान्य हैं। परंतु हे पिता! आपकी शुद्ध स्तुति गाने से संसार और वेद दोनों की महिमा होगी।

यह बात जनता और वेद दोनों को मान्य है और सभी कहते हैं कि पिता जिसे राज्य देता है, उसे ही राज्य मिलता है। राजा सत्यव्रती थे। यदि वे तुम्हें बुलाकर

राज्य देते तो तुम्हें सुख मिलता, धर्म की स्थापना होती और यश की प्राप्ति होती।

समस्त अनर्थों की जड़ श्री रामचन्द्रजी का वनवास है, जिसे सुनकर समस्त संसार को दुःख हुआ। खैर, श्री राम का वन प्रस्थान भी नियति की तरह ही हुआ। मूर्ख रानी ने भविष्य को कुचल दिया और अंततः पश्चाताप किया।

यदि तुम्हारा कोई उसमें तनिक भी दोष निकालता है तो वह नीच, अज्ञानी तथा अधर्मी है। यदि आप राज भी करते तो भी आप पर दोष न लगता। यह सुनकर श्री रामचन्द्रजी भी संतुष्ट हो गये होंगे। हे भारत! अब तुमने बहुत अच्छा किया है; यह राय आपके लिए सही थी. श्री रामचन्द्रजी के चरणों में प्रेम ही संसार के समस्त सुन्दर फूलों का मूल है।

तो वही (श्री रामचन्द्र जी के चरणों का प्रेम) ही तुम्हारा धन, प्राण और आत्मा है; आपके जैसा भाग्यशाली कौन है? हे पिता! ये आपके लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं है. क्योंकि आप दशरथजी के पुत्र और श्री रामचन्द्रजी के प्रिय भाई हैं। हे भारत! सुनो, श्री रामचन्द्र के मन में तुम्हारे समान प्रेम के योग्य दूसरा कोई नहीं है। लक्ष्मणजी, श्री रामजी और सीताजी ने अत्यंत प्रेम से आपकी स्तुति करते हुए सारी रात व्यतीत की।

जब वह प्रयागराज में स्नान कर रहे थे तो मुझे उनका यह मतलब पता चला. वे तो तुम्हारे प्रेम में मग्न थे। श्री रामचन्द्र जी को आपके प्रति वही (अत्यधिक) घृणा है जो संसार में जीवन के सुखों के प्रति मूर्ख (आसक्त) मनुष्य को होती है। श्रीरघुनाथजी की यह बहुत अधिक प्रशंसा नहीं है। क्योंकि श्रीरघुनाथजी ही शरणागत के सम्पूर्ण कुल का पालन-पोषण करते हैं। हे भारत! मेरी राय तो यह है कि आपको श्री रामजी के साक्षात् प्रेम स्वरूप ही समझना चाहिए।

हे भारत! आपके लिए (आपकी समझ में) यह एक मजाक है, लेकिन हम सभी के लिए यह एक सबक है। यह समय भगवान राम की भक्ति की सिद्धि के लिए अत्यंत शुभ (बहुत शुभ) हो गया है। हे पिता! आपकी कीर्ति शुद्ध अमावस्या है और श्री रामचन्द्रजी के सेवक कुमुद और चकोर हैं।

[वह चंद्रमा प्रतिदिन अस्त और घटता है, जिससे कुमुद और चकोर दुखी हैं]; परन्तु तेरी कीर्ति का यह चन्द्रमा सदैव उदय रहेगा; यह कभी अस्त नहीं होगा. वह सांसारिक आकाश में घटेगी नहीं, बल्कि दिन-प्रतिदिन दोगुनी होती जायेगी। त्रैलोक्यरूपी चकवा इस यशरूपी चंद्रमा को अत्यंत प्रेम करेगा और भगवान श्री रामचन्द्रजी के तेजरूपी सूर्य उसकी छवि को दूर नहीं करेंगे। यह चन्द्रमा

दिन-रात सबको सुख प्रदान करता रहेगा। कैकेयी के कुकर्मों रूपी राहु को वह निगल नहीं सकेगा।

यह चंद्रमा श्री रामचन्द्रजी के प्रेम के सुन्दर अमृत से परिपूर्ण है। यह गुरु अपमान के दोष से कलंकित नहीं है। इस प्रसिद्ध चन्द्रमा की रचना करके आपने पृथ्वी को भी अमृत उपलब्ध कराया। अब श्री रामजी के भक्त इस अमृत से तृप्त हों। राजा भागीरथ गज्जाजी को लाए, जिनकी स्मृति (गदाजी) सभी सुंदर मंडलों का स्रोत है। दशरथजी के गुणों का तो वर्णन ही नहीं किया जा सकता; और तो और, दुनिया में आपके बराबर कोई नहीं है।

जिनके प्रेम और लज्जा के वश में होकर स्वयं भगवान श्री राम [सच्चिदानंदघन] आकर प्रकट हुए, जिन्हें श्री महादेवजी अपने हृदय की आँखों से कभी नहीं देख सके (अर्थात् जिनके स्वरूप को हृदय में देखकर शिवजी कभी थकते नहीं थे)।

परंतु उससे भी बढ़कर आपने कीर्ति रूपी अद्वितीय चंद्रमा की रचना की, जिसमें हिरण रूपी श्री राम का प्रेम निवास करता है। हे पिता! आप बेवजह अपने मन में ग्लानि महसूस कर रहे हैं. पारस में आकर भी तुम दरिद्रता से डरते हो।

हे भारत! सुनो, हम झूठ नहीं बोलते. हम उदासीन हैं (किसी का पक्ष नहीं लेते), तपस्वी हैं (किसी से कुछ नहीं कहते) और जंगल में रहते हैं (किसी से कोई काम नहीं रखते)। हमें सभी साधनों का सर्वोत्तम फल प्राप्त हुआ, हमें लक्ष्मणजी, श्री रामजी और सीताजी के दर्शन प्राप्त हुए।

[सीता और लक्ष्मण सहित श्री राम का दर्शन] यह आपका दर्शन है, उस महान फल का चरम फल है। प्रयागराज सहित हमारा सौभाग्य है। हे भारत! आप धन्य हैं, आपने अपनी प्रसिद्धि से संसार को जीत लिया है। यह कहकर ऋषि प्रेम में मग्न हो गये।

भारद्वाज मुनि की बात सुनकर पार्षद प्रसन्न हो गये। देवताओं ने 'साधु-साधु' कहकर उनकी स्तुति करते हुए पुष्प वर्षा की। भरतजी आकाश और प्रयागराज में 'धन्य-धन्य' की ध्वनि सुनकर प्रेम में मग्न हो जाते हैं। भरतजी का शरीर आनंद से भर गया है, श्रीसीतारामजी उनके हृदय में हैं और उनके कमल के समान नेत्र प्रेम के आंसुओं से भरे हुए हैं। साधु-समूह को प्रणाम करने के बाद उन्होंने ये शब्द कहे-

वहाँ साधुओं का समाज है और फिर तीर्थराज है। यहां असली खुशबू खाने से भी बहुत नुकसान होता है. यदि इस स्थान पर कोई बात कही जाय तो इससे बड़ा

कोई पाप या नीचता नहीं होगी। यह बात मैं सच्ची भावना से कहता हूँ। आप सर्वज्ञ हैं और श्रीरघुनाथजी हृदय के अन्दर की बात जानते हैं। (यदि मैं कुछ भी असत्य कहूं तो आपसे और उनसे छिप नहीं सकता)। मे माता केकयी की कर्णिका | किसी भी चीज़ के बारे में मत सोचो. न ही मैं इस बात से दुखी हूं कि दुनिया मुझे कमतर समझेगी.

न तो मुझे इस बात का डर है कि मेरा परलोक बिगड़ जाएगा और न ही मुझे अपने पिता की मृत्यु का दुःख है। क्योंकि उनके सुन्दर गुण और महिमा सारे संसार में सुशोभित हैं। उन्हें श्री राम और लक्ष्मण जैसे पुत्र मिले। फिर जिस राजा ने श्री रामचन्द्रजी के वियोग में क्षण भर के लिए अपना शरीर त्याग दिया हो, ऐसे राजा को सोचने का क्या कारण है? [सोच यह है कि] श्री रामजी, लक्ष्मणजी और सीताजी साधुओं के भेष में बिना पैरों में जूते पहने घूमते हैं।

वे भारी कपड़े पहनते हैं, फल खाते हैं, धरती पर सोते हैं और पत्ते बिछाकर पेड़ों के नीचे रहते हैं और प्रतिदिन सर्दी, गर्मी, बारिश और हवा सहन करते हैं। इस दुःख की जलन से मेरी छाती जलती रहती है। मुझे न तो दिन में भूख लगती है और न ही रात को नींद आती है. मैंने मन ही मन सारी दुनिया छान मारी, लेकिन इस बीमारी का इलाज कहीं नहीं मिला।

माँ की कूमत (बुरे विचार) ही पापों का मूल कारण है। उन्होंने हमारे कल्याण के लिए काम किया. उससे उन्होंने कालहरूपी कुकथका कुमंत्र बनाया और चौदह वर्ष तक कठिन कुमंत्र का जाप करके उस यंत्र को गाड़ दिया। यहां माता के बुरे विचार बढ़ई हैं, भरत को राज्य मिला है, राम का वनवास दुष्टात्मा है और चौदह वर्ष की अवधि दुष्टात्मा है। ,

उसी ने मेरे लिये यह सब दुष्ट रचा और सारे जगत् को टुकड़े-टुकड़े करके नष्ट कर दिया। यह समस्या श्री रामचन्द्र जय की वापसी के बाद ही समाप्त हो सकती है और तभी अयोध्या बस सकती है, किसी अन्य उपाय से नहीं। भरतजी की बातें सुनकर ऋषि प्रसन्न हुए और सभी ने अनेक प्रकार से उनकी प्रशंसा की। [ऋषि ने कहा-] हे पिता! ज़्यादा मत सोचो. श्री रामचन्द्रजी के चरणों का दर्शन करते ही सारा दुःख दूर हो जायेगा।

इस प्रकार मुनिश्रेष्ठ भारद्वाज जी ने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा- अब आप सभी हमारे स्नेही अतिथि बन जाइये और हम जो भी कंद, मूल, फल और फूल दें, कृपया उसे स्वीकार करें। मुनि के वचन सुनकर भरत को हृदय में अनुभव हुआ कि यह बड़ा विचित्र संकोच अचानक आ गया है! तब उसने गुरुजनों के

वचन को महत्त्वपूर्ण (आदरणीय) समझकर उनके चरणों की वन्दना की और हाथ जोड़कर कहा-

हे नाथ. आपकी आज्ञा का पालन करना और उसका पालन करना हमारा परम धर्म है। ऋषि को भरतजी की ये बात अच्छी लगी. उसने अपने विश्वस्त सेवकों और शिष्यों को बुलाया। और कहा कि भरत का आतिथ्य सत्कार करना चाहिए। जाकर कंद, मूल और फल ले आओ। उन्होंने कहा 'हे नाथ! 'बहुत अच्छा' कहकर उसने सिर झुका लिया और फिर वे बड़े प्रसन्न होकर अपने-अपने काम में लग गये।

मुनि को चिंता हुई कि हमने बहुत बड़े अतिथियों को आमंत्रित किया है। अब देवता कोई भी हो, उसकी पूजा तो होनी ही चाहिए। यह सुनकर ऋद्धियाँ और अणिमादि सिद्धियाँ आईं [और बोलीं--] हे गोसाईं! आप जो आदेश देंगे हम वही करेंगे.

मुनिराज प्रसन्न हो गये और कहा - छोटे भाई शत्रुघ्न और भरतजी सहित समाज श्री रामचन्द्रजी के वियोग से व्याकुल हैं, उनका आतिथ्य करके उनका कष्ट दूर करें।

रिद्धि-सिद्धि ने मुनिराज की आज्ञा को सिर झुका लिया और स्वयं को भाग्यशाली माना। सभी सिद्धियाँ आपस में कहने लगीं- श्री रामचन्द्रजी के छोटे भाई भरत ऐसे अतिथि हैं, जिनकी तुलना में कोई नहीं आ सकता। इसलिए आज ऋषियों के चरण वंदन के बाद वही कार्य करना चाहिए जिससे पूरा राज समाज प्रसन्न हो। ऐसा कहकर उसने बहुत से सुन्दर मकान बनवाये, जिन्हें देखकर विमान भी लज्जित हो जाते हैं।

वे घर अनेक सुखों (इंद्रियों की वस्तुएं) और ऐश्वर्य (वैभव) की वस्तुओं से भरे हुए थे, जिन्हें देखकर देवता भी मोहित हो जाते थे। दास-दासियों ने सब प्रकार की सामग्री बड़े मन से लेकर अपना मन भर लिया। देखते रहो (अर्थात् उनकी इच्छानुसार करते रहो)।

सिद्धियों ने एक क्षण में सुख की वह सारी वस्तुएँ सजा दीं जो स्वर्ग में नहीं, आत्म-प्रेम में भी नहीं। सबसे पहले जिस किसी को भी रुचि होती थी, उसे सुंदर और आरामदायक आवास देते थे और फिर भरतजी को परिवार सहित दे देते थे, क्योंकि ऋषि भारद्वाजजी ने ऐसी आज्ञा दी थी।

भरतजी चाहते थे कि उनके सभी साथियों को आराम मिले, इसलिए उनकी इच्छा जानकर ऋषि ने उन लोगों को पहले स्थान दिया और भरतजी को परिवार सहित सबसे पीछे स्थान देने का आदेश दिया। महर्षि ने अपनी तपस्या के बल से ऐसा वैभव उत्पन्न किया जिसे देखकर ब्रह्मा भी चकित रह गये।

जब भरतजी ने मुनि का प्रभाव देखा तो उन्हें समस्त लोकपालों [इंद्र, वरुण, यम, कुबेर आदि] के लोक उनके सामने तुच्छ लगने लगे। सुख की सामग्री का वर्णन नहीं किया जा सकता, जिसे देखकर बुद्धिमान लोग भी त्याग भूल जाते हैं। आसन, शय्या, सुन्दर वस्त्र, छत्र, वन, उद्यान, नाना प्रकार के पशु-पक्षी, सुगंधित फूल और अमृत के समान स्वादिष्ट फल, अनेक प्रकार के स्वच्छ जलाशय (तालाब, कुएँ, बावड़ी आदि),

और अमृत भी अमृत के समान पवित्र भोज्य पदार्थ थे, जिन्हें देखकर हर कोई संयमी पुरुषों (निष्पक्ष भिक्षुओं) की तरह कंधे उचका रहा था। सबके शिविर में [इच्छित वस्तु देने वाला]। कामधेनु और कल्पवक्ष हैं, जिन्हें देखकर इन्द्र और इन्द्राणों की भी इच्छा होती है (उनका मन भी ललचाता है)।

यह वसंत ऋतु है. तीन प्रकार की हवा चल रही है: ठंडी, धीमी और सुगंधित। चारों चीज़ें [धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष] सभी के लिए सुलभ हैं। माला, चंदन, वृक्ष आदि प्रसाद देखकर सभी हर्ष और विषाद के वशीभूत हो जाते हैं। एक व्यक्ति भोग की सामग्री और ऋषि की तपस्या के प्रभाव को देखकर प्रसन्न होता है और एक इस विचार से दुखी होता है कि हम, जो नियमों के अनुसार रहते थे, अभाव में सुख और विलासिता में क्यों फंस गए। श्री राम? ऐसा न हो कि हमारा मन इनमें आसक्त हो जाए और नियम-कायदों को त्याग दे।

धन (ऐश्वर्य की सामग्री) ही चक्र है और भरतजी ही चक्र हैं और ऋषि की आज्ञा ही खेल है, जिन्होंने उस रात उन दोनों को आश्रम रूपी पिंजरे में बंद करके खाया और इसी तरह सुबह हो गई। जिस प्रकार वैश्या द्वारा पिंजरे में बंद कर देने पर भी चकवी और चकवे रात्रि में एक साथ नहीं आते, उसी प्रकार भरद्वाजजी के आदेश पर रात्रि भर भोजन सामग्री लेकर रहने पर भी भरतजी ने उन्हें छुआ तक नहीं। उसका मन।

प्रातःकाल भरतजी ने तीर्थराज में स्नान किया और समाज सहित ऋषियों को सिर झुकाकर प्रणाम करके आज्ञा और आशीर्वाद के लिये साधुओं से बहुत प्रार्थना की। तदनन्तर भरतजी मार्ग जानने वाले सब लोगों (कुशल मार्गदर्शकों) सहित मन को एकाग्र करके चित्रकूट की ओर चल पड़े। भरतजी रामसखा हाथ जोड़कर गुहके से ऐसे चले जा रहे हैं, मानो प्रेम ही अवतार हो।

न पैरों में जूते हैं, न सिर पर साया। उसका प्रेम, नियम, व्रत और धर्म निष्कपट (सच्चा) है। वे सखा निषादराज से लक्ष्मणजी, श्री रामचन्द्रजी और सीताजी का मार्ग पूछते हैं और वह धीमी आवाज में बता देते हैं। श्री रामचन्द्रजी के रहने के स्थानों और वृक्षों को देखकर उसके हृदय में प्रेम नहीं रुकता। भरतजी की यह दशा देखकर देवता पुष्पवर्षा करने लगे। धरती नरम हो गयी और राह आसान हो गयी.

बादलों की छाया हो रही है, सुख देने वाली सुन्दर हवा चल रही है। श्री रामचन्द्र जी को भरतजी की यात्रा के समान सुखद मार्ग न मिला था। रास्ते में असंख्य जड़-चेतन प्राणी थे। उनमें से जिनको प्रभु श्री रामचन्द्रजी ने देखा, अथवा जिन्होंने प्रभु श्री रामचन्द्रजी को देखा, वे सब [वही। समय] परम पद का अधिकारी बन गया। परन्तु अब भरतजी के दर्शन से उनका भव (जन्म-मरण) रोग दूर हो गया। , श्री रामदर्शन के माध्यम से वे परम पद के अधिकारी बन गये थे, लेकिन भारतदर्शन के माध्यम से उन्हें वह परम पद प्राप्त हुआ।

भरतजी के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं है, जिनका स्मरण स्वयं श्री राम मन ही मन करते रहते हैं। इस संसार में जो एक बार 'राम' कह देता है, वह भी तर जाता है। फिर भरतजी श्री रामचन्द्रजी के प्रिय और उनके छोटे भाई हो गये। फिर रास्ता उनके लिए महल (खुशी) कैसे नहीं हो सकता? ऐसा सिद्ध, ऋषि-मुनि और महर्षि कह रहे हैं। भरतजी को देखकर हृदय में हर्ष होता है।

भरतजी के इस प्रेम का प्रभाव देखकर देवराज इंद्र को चिंता हुई कि कहीं उनके प्रेम के कारण श्री रामजी पीछे न हट जाएं और उनका बना बनाया काम न बिगड़ जाए। अच्छे के लिए दुनिया अच्छी है और बुरे के लिए बुरी है (जो व्यक्ति जैसा है उसे दुनिया वैसी ही दिखाई देती है)। वह गुरु बृहस्पतिजी हैं। आप कहां हैं प्रभु? आप वही उपाय करें जिससे श्री रामचन्द्रजी और भरतजी का मिलन न हो।

श्री रामचन्द्रजी शर्मीले और प्रेम के वशीभूत हैं और भरतजी प्रेम के सागर हैं। इन्द्र की बात सुनते ही देवगुरु बहस्पतिजी मुस्कुराये। उन्होंने ज्ञान चक्षुओं से रहित सहस्र नेत्र वाले इन्द्रक को मूर्ख समझा और कहा - हे देवराज! यदि कोई मायापति श्री रामचन्द्रजी के सेवक के साथ माया करता है तो वह उलटी होकर अपने ही ऊपर गिर जाती है।

उस समय (पिछली बार) श्री रामचन्द्रजी का भाव जानकर मैंने कुछ किया। लेकिन इस समय इसे कुचलने से नुकसान ही होगा। हे देवराज! श्रीरघुनाथजी का स्वभाव सुनो, वे अपने प्रति किये गये अपराधों से कभी क्रोधित नहीं होते।

लेकिन जो भी अपने भक्त के खिलाफ कोई अपराध करता है वह श्री राम के क्रोध की आग में जल जाता है। इतिहास (कहानी) लोक और वेद दोनों में प्रसिद्ध है। दुर्वासाजी इस महिमा को जानते हैं। सारा संसार श्री राम का जप करता है, श्री रामजी जिनका जप करते हैं, भरतजी के समान श्री रामचन्द्रजी का प्रेमी कौन होगा? ये देवराज हैं. रघुकुलश्रेष्ठ श्री रामचन्द्रजी के भक्त का काम बिगाड़ने का विचार भी मत करो। ऐसा करने से इस लोक में अपकीर्ति और परलोक में दुःख होगा और दुःख का बोझ दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जायेगा।

जय देवराज! हमारा उपदेश सुनो. श्री रामजी अपने सेवक से बहुत प्रेम करते हैं। वे सेवक की सेवा से सुख मानते हैं और सेवक से शत्रुता करने को उससे भी बड़ा पाप मानते हैं। समान होते हुए भी उनमें न तो राग है और न ही क्रोध। न ही वे किसी के पाप, पुण्य या गुण-अवगुण को स्वीकार करते हैं। उन्होंने संसार में कर्म को प्रधान बनाया है। जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है।

हालाँकि, वे भक्त और अभक्त के मन के अनुसार समान और विचित्र व्यवहार करते हैं (भक्त को प्रेम से गले लगाते हैं और अभक्त को मार डालते हैं और उसका गला घोंट देते हैं)। सदाचारी, निष्कलंक, निर्विकार और सदा एकरस रहने वाले भगवान श्री राम भक्त के प्रेम के कारण ही सदाचारी बने हैं। श्री गरमजी हमेशा अपने सेवकों (भक्तों) के हितों में रुचि रखते हैं। वेद, पुराण, ऋषि-मुनि और देवता इसके साक्षी हैं। ऐसा हृदय में जानकर कुटिलता त्यागकर भरतजी के चरणों में सुन्दर प्रेम करो।

हे इन्द्रदेव! श्री रामचन्द्रजी के भक्त सदैव दूसरों के कल्याण में लगे रहते हैं, दूसरों के दुःख से दुःखी होते हैं और दयालु होते हैं। फिर भरतजी तो भक्तों के मुकुटमणि हैं, उनसे तनिक भी मत डरो। प्रभु श्री रामचन्द्रजी सत्य के प्रतिज्ञाकर्ता हैं और देवताओं का कल्याण करते हैं। और भरतजी श्री रामजी की आज्ञा का पालन करने वाले हैं। आप स्वार्थ के कारण व्यर्थ ही परेशान हो रहे हैं। इसमें भरतजी का दोष नहीं, आपका ही मोह है।

देवगुरु बहस्पतिजी के उत्तम वचन सुनकर इन्द्र को बड़ी प्रसन्नता हुई और उनका मन नष्ट हो गया। तब देवराज प्रसन्न होकर पुष्प वर्षा करके भरतजी के स्वभाव की प्रशंसा करने लगे। इस प्रकार भरतजी मार्ग में बढ़ते जा रहे थे। उसकी प्रेमपूर्ण स्थिति देखकर ऋषि-मुनि और सिद्ध लोग भी दुःखी हो जाते हैं। भरतजी जब भी 'राम' कहकर गहरी सांस लेते हैं तो ऐसा लगता है मानो चारों ओर प्रेम उमड़ पड़ा हो।

उनकी प्रेम और नम्रता से भरी बातें सुनकर कपड़े और पत्थर भी पिघल जाते हैं। अयोध्या के लोगों का प्रेम व्यक्त नहीं किया जा सकता. बीच में रहकर भरतजी यमुना के तट पर आये। यमुनाजी का जल देखकर उनकी आँखों में आँसू भर आये। श्रीरघुनाथजी के (काले) रंग के सुन्दर जल को देखकर भरतजी समस्त समाज सहित (प्रेम से विह्वल होकर) डूबते हुए समुद्र में (अर्थात यमुनाजी के काले जल को देखकर) श्री रामजी के विरह रूपी विवेक रूपी जहाज पर चढ़ गए। सभी लोग श्यामवर्ण भगवान के प्रेम में खो गये और उन्हें न पाकर विरह वेदना से पीड़ित हो गये, तब भरतजी को यह आभास हुआ कि वे शीघ्र ही जाकर उनके साक्षात दर्शन करेंगे, इस विचार से वे पुनः उत्साहित हो गये .

उस दिन उन्होंने यमुनाजी के तट पर निवास किया। समय के अनुसार सभी के लिए भोजन आदि की सुन्दर व्यवस्था की गई। [निषादराज की सलाह पाकर] रात में घाटों से असंख्य नावें वहाँ आ पहुँचीं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। प्रातःकाल सब लोग एक शिविर में पार हो गये और श्री रामचन्द्रजी के मित्र निषादराज की सेवा से संतुष्ट हुए। फिर स्नान करके नदी को प्रणाम करके दोनों भाई निषादराज के साथ चले गये।

आगे-आगे बड़े-बड़े ऋषि-मुनि अच्छी सवारियों पर चल रहे हैं, उनके पीछे सारा राज-समाज चल रहा है। उनके पीछे दोनों भाई बेहद साधारण पोशाक में चल रहे हैं. नौकर-चाकर, मित्र और मंत्री का पुत्र उसके साथ हैं। लक्ष्मण, सीताजी और श्रीरघुनाथजी का स्मरण हो रहा है। श्री रामजी ने जहां-जहां निवास और विश्राम किया, वहीं-वहीं पूजा वहाँ प्यार से.

यह सुनकर सड़क पर रहने वाले सभी पुरुष अपना घर छोड़कर जाति का अध्ययन करने के लिए काम करते हैं और उसके सौंदर्य और प्रेम को देखकर अपने जन्म का फल प्राप्त करके खुशी मनाते हैं। गाँव की स्त्रियाँ प्रेमपूर्वक एक-दूसरे से कहती हैं- सखी! ये राम-लक्ष्मण हैं या नहीं? हाय दोस्त! उनकी हालत, शरीर और शक्ल एक जैसी है. शील और सत्यनिष्ठा उन्हीं के समान है और उनका आचरण भी उन्हीं के समान है।

परन्तु हे मित्र, न तो वह उस भेष में है (वल्कल वेषधारी मुनिवेश), और न ही सीताजी उसके साथ हैं। और चतुर्दजिनी सेना उनके आगे-आगे चल रही है। तब उनके चेहरे पर खुशी नहीं होती, दिलों में अफसोस होता है। हाय दोस्त! इसी भिन्नता के कारण संदेह उत्पन्न होता है। अन्य महिलाओं को उनका तर्क पसंद आया. सब कहते हैं कि उनके जैसा होशियार कोई नहीं है. दूसरी स्त्री ने उसकी प्रशंसा करके मीठी-मीठी बातें कहीं और कहा, “तुम्हारे वचन सत्य हैं, इससे उसका आदर हो रहा है।”

श्री रामजी के राज्याभिषेक का आनन्द कैसे नष्ट हुआ, यह सब वृत्तान्त प्रेमपूर्वक सुनाकर फिर वह भरतजी के शील, स्नेह और सौभाग्य की प्रशंसा करने लगी। भरतजी का भाईचारा, भक्ति और उनका आचरण, बोलने और सुनने से दुःखों और दोषों को दूर करने वाले हैं। हाय दोस्त! उनके बारे में जितना भी कहा जाए, वह बहुत कम है. श्री रामचन्द्रजी के भाई ऐसे क्यों न हों?

छोटे भाई शत्रुघ्‍त भरतजी को देखकर आज हम सब भी धन्य हो गये। इस प्रकार भरतजी के गुणों को सुनकर और उनकी दशा देखकर खरायण पश्चाताप करते हैं और कहते हैं, "यह पुत्र कैकेयी के समान माता के योग्य नहीं है।" दूसरे लोग कहते हैं, “इसमें रानी की भी गलती नहीं है।” यह सब विधाता ने किया है, जो हमारे अनुकूल है। हम लोग नीच खत्रिय हैं, प्रजा और वेद दोनों के नियमों से हीन हैं, कुल और कर्म दोनों से मलिन हैं।

जो बुरे देशों (जंगली प्रदेशों) और बुरे गाँवों में रहते हैं और स्त्रियों में सबसे नीच स्त्रियाँ हैं, उन्हें महान गुणों के फल के रूप में हम कहाँ देख सकते हैं? ऐसी ही खुशी और आश्चर्य हर गांव में हो रहा है. मानो रेगिस्तान में कल्पवृक्ष उग आया हो। भरतजी के दर्शन होते ही मार्ग में रहने वाले लोगों के भाग्य बदल गये। ऐसा प्रतीत होता है मानो ईश्वर की कृपा से तीर्थराज प्रयाग सिंहल द्वीप के निवासियों के लिये सुलभ हो गया है।

[इस प्रकार] भरतजी श्री रामचन्द्रजी के गुणों सहित उनकी कथा सुनकर और श्रीरघुनाथजी का स्मरण करते हुए चले जा रहे हैं। वे तीर्थों के दर्शन करके खानों और ऋषियों के आश्रमों तथा देवताओं के मन्दिरों को प्रणाम करते हैं और मन ही मन वर माँगते हैं कि श्रीसीतारामजी के चरणकमलों में प्रेम बना रहे। मरमा में भील, कर्नल आदि वनवासी तथा वानप्रस्थ, ब्रह्मचारी, तपस्वी तथा विरक्त लोग पाये जाते हैं।

वे प्रत्येक को प्रणाम करके पूछते हैं कि लक्ष्मणजी, श्री रामजी और जानकीजी किस वन में हैं? वे प्रभु के सब समाचार सुनाते हैं और भरतजी के दर्शन करके अपने जन्म का फल पाते हैं। जो लोग कहते हैं कि उन्होंने उन्हें सफलतापूर्वक देखा है, वे उन्हें श्री राम और लक्ष्मण के समान प्रिय मानते हैं। इस प्रकार वे परम सुन्दर वाणी से पूछते रहते हैं और श्री रामजी के वनवास की कथा सुनते रहते हैं।

उस दिन वहीं ठहरे और दूसरे दिन प्रातःकाल श्रीरघुनाथजी का स्मरण करते हुए चले गये। भरतजी की तरह उनके साथ सभी लोग भी श्री रामजी के दर्शन के

लिए लालायित हैं। सभी को अपशकुन मिल रहा है. आनंद देने वालों की आंखें और भुजाएं [पुरुषों के दाईं ओर और लड़कियों के बाईं ओर] फड़क रही हैं। समाज सहित भरतजी को हर्ष हो रहा है कि हमें श्री रामचन्द्रजी मिलेंगे और दुःख की पीड़ा दूर हो जायेगी।

उसी समय रामसखा निषादराज को स्वाभाविक रूप से सुंदर पर्वत शिखर कामदगिरि का दर्शन हुआ, जिसके निकट पयस्विनी नदी के तट पर सीताजी सहित दोनों भाई निवास करते हैं। सभी ने उस पर्वत को देखा और 'जानकी-जीवन श्री रामचन्द्र जी' चिल्लाये। यह कहकर वे प्रणाम करके झुक जाते हैं। राज-समाज प्रेम में ऐसा डूबा हुआ है, मानो श्रीरघुनाथजी अयोध्या लौट आये हों।

उस समय भरतजी में जो प्रेम था उसका वर्णन शेषजी भी नहीं कर सकते। कवि के लिए यह उतना ही दुर्गम है जितना अहंकार और मोह से दूषित लोगों के लिए यह ब्रह्मानंद है। श्री रामचन्द्रजी के प्रेम के कारण सभी निश्चिन्त हो जाने के कारण वे सूर्यास्त तक (दिन भर में) केवल दो कोस ही चल सके और जल की सतह का सौन्दर्य देखकर रात्रि को वहीं ठहर गये (बिना कुछ खाये-पीये) . | बने रहे. रात्रि बीतने पर श्रीरघुनाथजी के प्रेमी भरतजी आगे बढ़े।

उधर रात्रि शेष रहते ही श्री रामचन्द्र जी जाग गये। रात को सीताजी ने ऐसा स्वप्न देखा [जिसे वे श्री गयामजी को सुनाने लगीं] मानों भरतजी समाज सहित यहीं आये हों। उनके शरीर भगवान से विरह की अग्नि में तप रहे हैं। हर कोई दुःखी, दीन-हीन और मन से दुःखी है। अपने ससुराल को एक अलग ही रूप में देखा. सीताजी का स्वप्न सुनकर श्री रामचन्द्रजी की आँखों में आँसू भर आये और स्वयं भगवान ने सबको विचारमुक्त कर दिया। लिलासे] सोच के वश में हो गया।

[और कहा--] लक्ष्मण! ये चक्कर अच्छा नहीं है. कोई भयानक बुरी खबर सुनाएगा (बहुत बुरी खबर)। ऐसा कहकर उसने अपने भाई के साथ स्नान किया और त्रिपुरारी महादेवजी की पूजा करके ऋषियों का सत्कार किया। देवताओं का आदर (पूजन) और ऋषियों को प्रणाम करके श्री रामचन्द्रजी बैठ गये और उत्तर दिशा की ओर देखने लगे।

आकाश में धूल है; अनेक पशु-पक्षी व्याकुल होकर भाग रहे हैं और भगवान के आश्रम में आ रहे हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि यह देखकर भगवान श्रीरामचन्द्रजी जाग गये और सोचने लगे कि इसका क्या कारण है? वह मन ही मन चकित हो गया। उसी समय कोल-भीलों ने आकर सब समाचार सुनाये।

तुलसीदासजी कहते हैं कि श्री राम के सुन्दर वचन सुनकर उनके हृदय में अत्यंत हर्ष हुआ। मेरे शरीर में कंपकंपी भर गई और शरद ऋतु के कमल के समान मेरी आंखें प्रेम के आंसुओं से भर गईं। सीतापति श्री रामचन्द्रजी फिर विचारों में पड़ गये कि भरत के आने का कारण क्या है? तभी किसी ने आकर कहा कि उनके साथ विशाल चतुर्जलिनी सेना है।

यह सुनकर श्री रामचन्द्रजी बड़े विचारमग्न हो गये। इधर पिता के वचन और इधर भाई भरतजी की झिझक - भरतजी के स्वभाव को मन में समझकर भगवान श्री रामचन्द्रजी को अपने मन को स्थिर करने के लिए कोई स्थान नहीं मिलता। तब मुझे यह जान कर संतोष हुआ कि भरत एक साधु और बुद्धिमान व्यक्ति है और मेरी बात मानता है। जब लक्ष्मण जी ने देखा कि प्रभु श्री राम मन में चिंतित हैं तो वे समय के अनुसार अपने नीतिपरक विचार कहने लगे---

हे प्रभो! मैं तुम्हारे बिना पूछे कुछ कहता हूं; सेवक यदि ठीक समय पर उद्दण्ड हो तो उसे उद्दंड नहीं माना जाता (अर्थात यदि आप पूछें तो मैं कह दूँगा, ऐसा अवसर नहीं है; इसलिए यह कहना मेरे लिए धृष्टता नहीं होगी। हे प्रभु - आप) सर्वज्ञों में शिरोमणि हैं (सब कुछ जानते हैं), परन्तु सेवक अपनी समझ के अनुसार बोलता है।

हे नाथ! आप परम दयालु (बिना किसी कारण के बड़ी भलाई करने वाले), सरल हृदय, विनय और दयालुता के भण्डार हैं, सभी से प्रेम करते हैं और उन पर विश्वास करते हैं तथा हृदय में सभी को अपने समान मानते हैं। परन्तु मूर्ख कामुक प्राणी प्रभुत्व प्राप्त करने के बाद मोह के कारण अपना वास्तविक स्वरूप प्रकट कर देते हैं। सारा संसार जानता है कि भरत नीतिज्ञ, साधु और चतुर है तथा उसे भगवान (आपके) चरणों में प्रेम है।

आज भी वे भरत श्री रामजी (आप) का पद (राजगद्दी या सत्ता) पाकर धर्म की मर्यादा नष्ट कर आगे बढ़ रहे हैं। कुटिल भाई भरत बुरे समय को देखकर और यह जानकर कि रामजी (आप) वनवास में अकेले (असहाय) हैं, मन में बुरे विचार करके समाज को एकजुट करके राज्य को नष्ट करने के लिए यहां आए हैं। दोनों भाई करोड़ों (अनेक प्रकार की) उत्पातियों की सेना इकट्ठी करके आये हैं।

यदि उनके हृदय में छल-कपट न हो तो रथ, घोड़े और हाथियों की कतार किसे अच्छी लगेगी? परन्तु भरत को अकारण दोष कौन दे सकता है? राजगद्दी पाते ही सारा संसार पागल (नशीला) हो जाता है। राजा नहुष ब्राह्मणों की पालकी पर

सवार हुए। और राजा वेन के समान कोई भी नीच नहीं होगा, जो संसार और वेद दोनों से विमुख हो गया।

सहस्त्रबाहु, देवराज इंद्र और त्रिशंक आदि ने कल किसे राजगद्दी नहीं दी? भरत ने यह उपाय ठीक ही किया है। क्योंकि शत्रु और ऋण को तनिक भी नहीं छोड़ना चाहिए। हाँ, भरत ने एक काम अच्छा नहीं किया, वह यह कि उन्होंने रामजी (आपका) को असहाय समझकर उनका अनादर किया! परन्तु आज युद्ध में श्री रामजी (आपका) का क्रोधित रूप देखकर उन्हें यह बात विशेष रूप से समझ में आ जायेगी (अर्थात् इस अनादर का फल भी उन्हें भली प्रकार मिलेगा)।

इतना कहते ही लक्ष्मणजी नीति के प्रति अपना प्रेम भूल गये और पुलकावली के बहाने उनकी छाती युद्ध के रस से भर गयी (अर्थात् नीति के वचन कहते समय उनके शरीर में वीरता का रस भर गया)। वह प्रभु श्री रामचन्द्रजी के चरणों की वन्दना करके उनके चरणों को अपने मस्तक पर रखकर उन्हें सच्चा और स्वाभाविक बल कहकर बोला।

हे नाथ-| मैं जो कहता हूं उसे अनुचित मत समझना. भारतने हमारे साथ कम छेड़छाड़ नहीं की है। आखिर जब स्वामी हमारे साथ हैं तो हम किस हद तक सह सकते हैं और अपना दिल टूटा रख सकते हैं।

संसार जानता है कि मैं क्षत्रिय कुल, रघुकुल में उत्पन्न हुआ हूँ और श्री रामजी (आपका) का अनुयायी (सेवक) हूँ। [फिर कोई इसे कैसे सहन कर सकता है?] जो धूल के समान नीच है, परन्तु लात मारने पर भी ऊपर उठ जाती है। इतना कहकर लक्ष्मणजी उठे और हाथ जोड़कर अनुमति मांगी। विरस मानो नींद से जाग गया हो. उसने सिर पर बाल बाँधकर तरकश कमर में कस लिया, धनुष सजाया और बाण हाथ में लेकर बोला-

आज मैं श्री राम (आपका) का सेवक होने का गौरव ग्रहण करूँ और भरत को युद्ध करना सिखाऊँ। श्री रामचन्द्रजी (आपके) के अनादर का फल पाकर दोनों भाई (भरत और शत्रुघ्न) युद्धशय्या पर सो गये। अच्छा हुआ कि सारा समाज आकर एकत्र हो गया। आज मैं अपना सारा पुराना क्रोध प्रकट कर दूँगा। जैसे शेर हाथियों के झुण्ड को कुचल देता है और जैसे बाज शेर को लपेट लेता है।

उसी प्रकार मैं सेना और छोटे भाई सहित भरत का तिरस्कार करूंगा और उसे मैदान में हरा दूंगा। यदि शंकरजी आकर भी उसकी सहायता करें तो भी मुझमें रामजी की सुगंध है, मैं उसे युद्ध में अवश्य मार डालूँगा (नहीं छोड़ूँगा)। लक्ष्मणजी को क्रोध से भड़का हुआ देखकर और उनकी प्रामाणिक (सच्ची) सुगंध

सुनकर सभी भयभीत हो जाते हैं और लोकपाल भयभीत होकर भाग जाना चाहते हैं।

पूरी दुनिया भय में डूबी हुई थी. तभी लक्ष्मणजी के अपार बाहुबल की प्रशंसा करते हुए आकाशवाणी हुई- हे पिता! आपके माहात्म्य और प्रभाव को कौन बता या जान सकता है? लेकिन काम चाहे कोई भी हो अगर वह पूरी समझ के साथ किया जाए कि वह सही है या गलत तो हर कोई उसे अच्छा ही कहता है। वेद और विद्वान कहते हैं कि जो लोग बिना सोचे-समझे जल्दबाजी में कोई काम कर देते हैं और बाद में पछताते हैं, वे बुद्धिमान नहीं होते।

दिव्य वाणी सुनकर लक्ष्मणजी घबरा गये। श्री रामचन्द्रजी और सीताजी ने उनका आदर-सत्कार किया [और कहा--] हे पिताजी! आपने बहुत सुन्दर नीति कही। अरे भइया! राज्य मद सबसे कठिन मद है। जो लोग साधुओं की सभा (सत्सद) में नहीं गए हैं, वे राजा की शराब पीते ही मतवाले हो जाते हैं।

हे लक्ष्मण! सुनो, ब्रह्मा की सृष्टि में भरत जैसा महापुरुष न तो कभी सुना गया है और न ही कहीं देखा गया है। [अयोध्या के राज्य के बारे में हम क्या कहें] ब्रह्मा, विष्णु और महादेव का पद प्राप्त करने के बाद भी भरत को राज्य करने की इच्छा नहीं हुई! क्या कांजी की बूँदों से कभी क्षीरसागर नष्ट (फट) सकता है?

भले ही अंधेरा युवा (दोपहर) सूरज को निगल जाए। आकाश बादलों में विलीन हो सकता है। गोके खुर- अगस्त्यजी को इतने पानी में डूब जाना चाहिए और पृथ्वी अपनी स्वाभाविक क्षमा मांग लेगी। सहनशीलता तो छोड़ ही दीजिए) मच्छर भी उड़े तो सुमेरू उड़ जाए। लेकिन अरे भाई! भारत कभी राजा नहीं बन सकता। हे लक्ष्मण! मैं आपकी और अपने पिता की शपथ खाकर कहता हूँ कि संसार में भरत के समान पवित्र और भला भाई कोई नहीं है।

हे पिता! विधाता ने सद्गुण रूपी दूध और दुर्गुण रूपी जल को मिलाकर इस दृश्य जगत की रचना की है। लेकिन भरत ने सूर्य रूपी तालाब में हंस के रूप में जन्म लेकर गुण और दोष को अलग कर दिया (दोनों को अलग कर दिया)। गुणरूपी दूध को ग्रहण करके और दुर्गुणरूपी जल को त्यागकर भरत ने अपने यश से जगत् को प्रकाशमान किया है। भरतजी के गुण, शील और स्वभाव का वर्णन करते-करते श्रीरघुनाथजी प्रेम के सागर में मग्न हो गये।

श्री रामचन्द्रजी के वचन सुनकर और भरतजी के प्रति उनका प्रेम देखकर सभी देवता उनकी स्तुति करने लगे (और कहने लगे) श्री रामचन्द्रजी के समान कृपा का धाम दूसरा कौन है? यदि इस संसार में भारत का जन्म न हुआ होता, तो

पृथ्वी पर सभी धर्मों के आधार स्तंभों को कौन धारण करता? हे रघुनाथजी! कवि की कल्पना से परे, उनकी कल्पना से परे भरतजी के गुणों की कथा आपके सिवा और कौन जान सकता है?

देवताओं की वाणी सुनकर लक्ष्मण जी, श्री रामचन्द्र जी और सीता जी को अत्यंत प्रसन्नता हुई, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। यहां भरतजी ने समस्त समाज सहित पवित्र मंदाकिनी में स्नान किया। फिर सबको नदी के पास ठहराकर और माता, गुरु तथा मांटी से अनुमति मांगकर भरतजी, निषादराज और शत्रुघ्न के साथ वहां गये, जहां श्री सीताजी और श्री रघुनाथजी थे।

भरत जी अपनी माता कैकेयी के कृत्यों को समझकर (याद करके) झिझकते हैं और अपने मन में करोड़ो (अनेक) बुरे विचार करते हैं (सोचते हैं---) कि श्री राम, लक्ष्मण और सीता जी अपना स्थान छोड़कर कहीं अन्यत्र न चले जाएँ मेरा नाम सुनने के बाद जगह अपनी मां की राय में मुझे मानते हुए. वे जो कुछ भी करेंगे वह बहुत कम है, परंतु वे स्वयं को (अपने विरुद्ध संबंध देखकर) समझकर और मेरे पापों तथा कमियों को क्षमा करके मेरा आदर करेंगे।

चाहे वे मुझे गन्दे दिमाग का समझकर त्याग दें, या अपना सेवक समझकर मेरा आदर करें, (कुछ भी करें); श्री रामचन्द्रजी की जूतियाँ ही मेरी शरण हैं। श्री रामचन्द्रजी अच्छे स्वामी हैं, उनमें दोष भी हैं। सब कुछ गुलाम का है. संसार में चातक और मछली ही प्रसिद्धि के पात्र हैं, जो अपने नाम और प्रेम को सदैव नया रखने में माहिर होते हैं। मन में यह विचार करके भरतजी अपनी राह पर चल दिये। उसके सभी लोग झिझक और प्यार से आराम कर रहे हैं।

ऐसा प्रतीत होता है मानो माताकी द्वारा किया गया पाप उन्हें वापस लौटा देता है, परंतु भरतजी धैर्य की धुरी पकड़कर भक्ति के बल से चले जाते हैं। जब हम श्रीरघुनाथजी के भाव को समझते (स्मरण) करते हैं, तब अधिकाधिक उनके चरणों में गिरने लगते हैं॥ उस समय भारत की क्या स्थिति थी? जैसे जल के प्रवाह में जल की बूंदों की गति। भरतजी के विचार और प्रेम को देखकर उस समय निषध विदेह हो गया (देह का भान भूल गया)।

शुभ शकुन दिखाई देने लगे। उनकी बात सुनकर और विचार करके निषाद ने कहा- विचार समाप्त होंगे, आनंद भी होगा, परंतु अंत में दुःख भी होगा। भरतजी के सेवक (गुह) की सारी बातें सत्य थीं और वे आश्रम के निकट पहुँच गये। जब भरतजी ने वहां जंगल और पर्वतों का समूह देखा तो ऐसे प्रसन्न हुए मानो किसी भूखे को अच्छा भोजन मिल गया हो।

जिस प्रकार भूतकाल के भय से दुःखी और तीनों तापों, क्रूर ग्रहों तथा महामारियों से पीड़ित मनुष्य किसी अच्छे देश या अच्छे राज्य में जाकर सुखी हो जाते हैं, ठीक वैसी ही स्थिति भरतजी की हो रही है। इसी तरह। अतिवृष्टि या अनावृष्टि, चूहों, टिड्डियों, तोतों का उत्पात तथा दूसरे राजा का आक्रमण- ये छह उपद्रव जो खेतों में बाधा उत्पन्न करते हैं, 'इति' कहलाते हैं।

श्री रामचन्द्रजी के निवास के कारण वन की संपदा इतनी शोभायमान है मानो कोई अच्छा राजा पाकर प्रजा प्रसन्न हो रही हो। सुहावना वन ही पवित्र देश है। विवेक इसका राजा है और त्याग इसका मंत्री है। यम (अहिंसा, सत्य, निःस्वार्थता, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) और नियम (चिंतन, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर के प्रति समर्पण) योद्धा हैं। पर्वत राजधानी है, शांति और बुद्धि दो सुंदर रानियाँ हैं। वह महान राजा राज्य के सभी अंगों से परिपूर्ण है और श्री रामचन्द्रजी के चरणों पर आश्रित होने के कारण उसके मन में चाव (प्रसन्नता या उत्साह) रहता है। स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और सेना- ये राज्य के सात अंग हैं।

बुद्धिमान राजा मोहरूपी राजा को उसकी सेना सहित परास्त करके निःसंदेह शासन कर रहा है। उसके शहर में सुख, संपत्ति और अच्छे दिन आते हैं। वन प्रांतों में ऋषियों के असंख्य आवास ऐसे हैं मानो वे नगरों, कस्बों, गाँवों और खेतों का संग्रह हों। अनेक विचित्र पक्षियों तथा अनेक पशुओं से मनुष्यों का समाज प्रतीत होता है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

गेंडा, हाथी, सिंह, बाघ, सूअर, भैंसा और लताओं को देखकर राजा की सजावट की प्रशंसा होती है। वे सभी अपना घर छोड़कर हर जगह एक साथ घूमते हैं। मानों यह चतुरज्जिनि सेना हो। जल के सोते बह रहे हैं और मतवाले हाथी दहाड़ रहे हैं। ऐसा लगता है मानो वहां कई तरह के ढोल बजाए जा रहे हों. चकवा, चकोर, पपीहा, तोते और कोयलों तथा सुन्दर हंसों के समूह प्रसन्न मन से गा रहे हैं।

प्रभातों के समूह गुंजन कर रहे हैं और मोर नाच रहे हैं। उस अच्छे राज्य में मानो चारों ओर हाहाकार मच गया हो. बेल, संदूक, घास सभी फलों और फूलों से भरे हुए हैं। पूरा समाज आनंद और प्रसन्नता का स्रोत बन रहा है। श्री रामजी के पर्वत की शोभा देखकर भरतजी के हृदय में अत्यंत प्रेम उत्पन्न हो गया। जिस प्रकार एक तपस्वी अपने नियम समाप्त होने पर अपनी तपस्या का फल पाकर प्रसन्न हो जाता है।

तब केवट दौड़कर ऊपर चढ़ गया और भुजाएँ उठाकर भरतजी से बोला- हे प्रभु! इन्हें पाने के बाद ब्लैकबेरी, आम और टमाले के विशाल स्तन दिखाई देते हैं। उत्तम वृक्षों के बीच में एक सुंदर, विशाल, विशाल वृक्ष सुशोभित है, जिसका दृश्य मन को मोहित कर देता है, इसके पत्ते नीले और घने हैं और इसमें लाल फल लगते हैं। इसकी सघन छाया हर ऋतु में सुख देती है।

ऐसा प्रतीत होता है मानो भगवान ब्रह्मा ने परम सौन्दर्य को एकत्रित कर अंधकार और लालिमा की राशि जैसी आकृति का निर्माण किया हो। हे गुसाईं! ये पेड़ उस नदी के पास हैं, जहां श्री राम की कुटिया स्थित है। वहाँ अनेक सुन्दर तुलसी के वृक्ष हैं जो कहीं सीताजी ने तो कहीं लक्ष्मणजी ने लगाये हैं। इस विशाल छाया में सीताजी ने अपने कर कमलों से एक सुन्दर वेदी बनायी है।

जहाँ सुजान श्रीसीतारामजी साधुओं की टोली के साथ बैठकर प्रतिदिन सभी शास्त्रों, वेदों और पुराणों की कथाएँ और इतिहास सुनते हैं। मित्र की बातें सुनकर और उसके स्तन देखकर भरतजी की आँखों में आँसू भर आये। दोनों भाई प्रणाम करके चले। उनके प्रेम का वर्णन करने में सरस्वती जी भी झिझकती हैं।

श्री रामचन्द्रजी के पदचिन्ह देखकर दोनों भाई ऐसे प्रसन्न होते हैं मानो उस बेचारे को परमात्मा मिल गया हो। वे बहनकी रज को मस्तक पर रखकर हृदय और नेत्रों पर लगाते हैं और श्रीरघुनाथजी के मिलन के समान सुख पाते हैं।

भरतजी की अवर्णनीय स्थिति देखकर वन के पशु-पक्षी और जीव-जन्तु प्रेम में मग्न हो गये। प्रेम के विशेष प्रभाव से निषादराज का मित्र भी रास्ते में आ गया। भूल गया। तब देवताओं ने सुन्दर मार्ग दिखाया और पुष्पवर्षा करने लगे।

भरत के प्रेम की यह स्थिति देखकर सिद्ध और भक्त भी स्नेह से भर गये और उनके स्वाभाविक प्रेम की प्रशंसा करने लगे कि यदि भरत ने इस पृथ्वी पर जन्म न लिया होता, प्रेम न किया होता तो जड़ को चेतन और चेतन को निर्जीव में कौन बदलता?

प्रेम अमृत है, विरह मंदराचल पर्वत है, भरतजी गहरा सागर हैं। देवताओं और ऋषियों के हित के लिए वस्त्रों के सागर श्री रामचन्द्र जी ने अपने वीराकार मंदराचल से इस गहरे भरत रूपी सागर का मंथन करके इस प्रेम रूपी अमृत को प्रकट किया है। घने जंगल की आड़ के कारण लक्ष्मण जी अपने मित्र निषादराज के साथ इस सुंदर जोड़े को नहीं देख सके। भरत जी ने समस्त वनों में भगवान श्री रामचन्द्रजी का निवास और सुन्दर पवित्र आश्रम देखा।

आश्रम में प्रवेश करते ही भरतजी का दुःख और ईर्ष्या गायब हो गई, मानो योगी को परम तत्व प्राप्त हो गया हो। भरतजी ने देखा कि लक्ष्मणजी प्रभु के सामने खड़े हैं और पूछा; प्रेमपूर्वक बात कहना (पूछी गई बात का प्रेमपूर्वक उत्तर देना)।

सिरपर उलझा हुआ है। उनकी कमर के चारों ओर ऋषि (वल्कल) का वस्त्र बंधा हुआ है और उसके अंदर एक तरकश लटका हुआ है। उनके हाथ में तीर और कंधे पर धनुष है. वेदी पर ऋषि-मुनियों का समुदाय बैठा हुआ है और सीताजी के साथ श्रीरघुनाथजी विराजमान हैं। श्री रामजी के वस्त्र काले हैं, जटाएं उलझी हुई हैं और शरीर काला है। [सीतारामजी ऐसे दिखते हैं] मानो रति और कामदेव ने मुनिका वेष धारण कर लिया हो।

श्री रामजी अपने कमल पुष्पों पर धनुष बाण घुमा रहे हैं और जैसे ही वे मुस्कुराकर उनकी ओर देखते हैं तो उनकी ईर्ष्या दूर हो जाती है (अर्थात वे जिसकी ओर भी मुस्कुराकर देखते हैं, उन्हें परम सुख और शांति मिलती है)।

सीताजी और रघुकुलचन्द्र श्री रामचन्द्रजी सुन्दर मुनिन्दलि के मध्य में ऐसे सुशोभित हो रहे हैं मानो सच्ची भक्ति और सच्चे प्रेम रूपी ज्ञान की सभा में बैठे हों।

छोटे भाई शत्रुघ्न और मित्र निषादराज सहित भरतजी का मन प्रेम में डूबा हुआ है। हर्ष-शोक, सुख-दुःख आदि सब भूल गये। हे नाथ! मेरी रक्षा करो, हे गुसाईं! 'मेरी रक्षा करो' ऐसा कहकर वह दण्ड के समान पृथ्वी पर गिर पड़ा।

लक्ष्मण जी ने प्रेम की बात पहचान ली और मन ही मन जान लिया कि भरत जी उन्हें प्रणाम कर रहे हैं। [वे श्रीगमजी की ओर मुंह करके खड़े थे, भरतजी उनकी पीठ के पीछे थे; इस कारण उसने नहीं देखा।] अब इस ओर भाई भरतजी का मधुर प्रेम है और दूसरी ओर स्वामी श्री रामचन्द्रजी की सेवा की प्रबल इच्छा है।

न तो किसी से मिलना संभव है (एक क्षण भी सेवा से अलग होकर) और न प्रेम से छोड़ना (उपेक्षा करना) संभव है। लक्ष्मणजी के मन की इस दुविधा का वर्णन कोई महान कवि ही कर सकता है। उनका ध्यान सेवा पर ही केन्द्रित रहा (सेवा को विशेष महत्वपूर्ण मानकर उसी में लगे रहे) मानो कोई खिलाड़ी (पतंग उड़ाने वाला) उड़ी हुई पतंग को खींच रहा हो।

लक्ष्मणजी ने प्रेम से पृथ्वी पर सिर झुकाकर कहा- हे रघुनाथजी! भरतजी प्रणाम कर रहे हैं। यह सुनकर श्रीरघुनाथजी प्रेम में अधीर हो गये। कहीं वस्त्र गिरे, कहीं तरकश, कहीं धनुष और कहीं बाण। धन्य श्री रामचन्द्र जी ने उन्हें बलपूर्वक

उठाकर हृदय से लगा लिया। भरतजी और श्री रामजी का जिस प्रकार मिलन हुआ, उसे देखकर सभी अपना सुध-बुध भूल गये।

मिलने का प्यार कैसे जाहिर करें? कवि परिवार के लिए वह कर्म, मन और वाणी की पहुंच से परे है। दोनों भाई (भरतजी और श्री रामजी) अपने मन, बुद्धि, बुद्धि और अहंकार को भूलकर परम प्रेम से परिपूर्ण हो रहे हैं।

बताओ, उस महान प्रेम का इज़हार कौन करेगा? कवि की बुद्धि किसकी छाया का अनुसरण करे? कवियों के लिए अक्षर और अर्थ ही सच्ची शक्ति हैं। नट टॉकी की लय के अनुसार नृत्य करता है।

भरतजी और श्रीरघुनाथजी का प्रेम अपरिमेय है, जहाँ ब्रह्मा, विष्णु और महादेव का मन भी नहीं पहुँच पाता। मैं उस प्यार को मूर्खता कैसे कह सकता हूँ? भला, क्या गोदार की तान से भी सुन्दर धुन बजाई जा सकती है? भरतजी और श्री रामचन्द्रजी का जिस प्रकार मिलन हुआ, उसे देखकर देवता भयभीत हो गये और उनके हृदय धड़कने लगे॥ देवगुरु बृहस्पतिजी ने समझाया, तब वे मूर्ख सचेत हो गये और पुष्पवर्षा करके उनकी स्तुति करने लगे।

तब शत्रुघ्न श्री रामजी प्रेम के साथ केवट (निषादराज) से मिले। भरतजी लक्ष्मणजी को प्रणाम करते हुए बड़े प्रेम से उनसे मिले। तब लक्ष्मणजी अपने छोटे भाई शम्रुघल से (बड़े उत्साह के साथ) मिले। फिर उन्होंने निषादराज को हृदय से लगा लिया। तब भरत और शर्मरुण दोनों भाइयों ने उपस्थित ऋषियों को प्रणाम किया और मनोवांछित आशीर्वाद प्राप्त कर प्रसन्न हुए।

भरतजी अपने छोटे भाई शत्रुघ्न के साथ प्रेम में भरकर सीताजी के चरणकमलों को सिर पर धारण करके बार-बार सीताजी को प्रणाम करने लगे। सीता जी ने उन्हें उठाकर अपने कर कमलों से उनके मस्तक को स्पर्श किया और दोनों को बैठाया।

सीताजी ने मन में आशीर्वाद दिया; वे प्यार में डूबे होने के कारण शरीर की परवाह नहीं करते। सीताजी को सब प्रकार से अपने अनुकूल देखकर भरतजी विचारशून्य हो गये और उनके हृदय का कल्पित भय मिट गया।

नि गति से शून्य है (अर्थात् संकल्प-विकल्प और चाञ्जल्य से शून्य है)। उस अवसर पर केवट (निषादराज) ने धैर्य दिखाया और हाथ जोड़कर प्रार्थना करने

लगा- हे भगवन्! मुनिनाथ वसिष्ठजी सहित सभी माताएँ, नगरवासी, सेवक, सेनापति, मंत्री- सभी आपके वियोग से व्याकुल हो आये हैं।

गुरु का आगमन सुनकर दया के सागर श्री रामचन्द्र जी ने शत्रुघ्न जी को सीता जी के पास बिठाया और उसी क्षण परम धैर्यवान, धर्मात्मा तथा दयालु श्री रामचन्द्र जी शीघ्रता से चले गये। गुरुजी को देखकर लक्ष्मणजी सहित प्रभु श्री रामचन्द्रजी प्रेम से भर गये और साष्टांग प्रणाम करने लगे। मुनि वशिष्ठजी ने दौड़कर उन्हें गले लगा लिया और प्रेम से वशीभूत होकर दोनों भाइयों से मिले।

तब प्रेम से वशीभूत होकर केवट (निषादराज) ने उनका नाम लेकर दूर से ही वशिष्ठजी को प्रणाम किया। ऋषि वशिष्ठजी ने उन्हें राम की सखी के रूप में पहचान लिया और बलपूर्वक उन्हें अपने हृदय में ले लिया। मानो ज़मीन पर लोटते हुए प्यार को कैद कर लिया हो.

श्रीरघुनाथजी की भक्ति सुन्दर मदभालों का मूल है। देवताओं ने प्रशंसापूर्वक ऐसा कहकर आकाश से पुष्पों की वर्षा शुरू कर दी। वे कहने लगे- संसार में उनके समान नीच कोई नहीं है और वशिष्ठजी के समान महान कौन है?

जिसे देखकर (निषाद) मुनिराज वसिष्ठजी लक्ष्मणजी से भी अधिक प्रसन्न हो गये। यह सब सीतापति श्री रामचन्द्रजी के भजन का प्रत्यक्ष माहात्म्य और प्रभाव है। दयाकी खान, सुजान प्रभु श्री राम जी सभी लोगों को दुःखी (मिलने को व्याकुल) जानते थे। फिर प्रत्येक व्यक्ति से जैसी उसकी मिलने की इच्छा हो (उसकी रुचि के अनुसार) वैसा ही भाव रखना।

वे क्षण भर में ही लक्ष्मणजी सहित सभी से मिले और उनके दुख-दर्द दूर कर दिये। श्री रामचंगजी के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं है. जैसे एक ही सूर्य की (अलग-अलग) छाया (छवि) लाखों बर्तनों में एक साथ दिखाई देती है। सभी ग्रामीण प्रेम से भरकर नाविक से मिलते हैं और उसके भाग्य की सराहना करते हैं। श्री रामचन्द्रजी ने सभी माताओं को दुःखी देखा। मानों पाले ने सुन्दर लताओं की कतारों को मार डाला हो।

सबसे पहले रामजी की मुलाकात के.के.ई. से हुई। और अपने सरल स्वभाव और भक्ति से उनकी बुद्धि को प्रबुद्ध कर दिया। तब श्री रामजी ने उनके चरणों में गिरकर समय, कर्म और विधाता को दोष देते हुए उन्हें सान्त्वना दी। तब श्रीरधुनाथजी सभी माताओं से मिले। उन्होंने सबको सान्त्वना दी और सन्तुष्ट किया कि हे माँ! संसार ईश्वर के अधीन है। किसी को दोष नहीं देना चाहिए.

तब दोनों भाइयों ने भरतजी के साथ आये ब्राह्मण बंधुओं सहित गुरुजी की पत्नी अरुधतीजी के चरण वंदन किये और गदाजी तथा गोरीजी के समान उन सबका आदर सत्कार किया। वे सभी प्रसन्न हो गये और कोमल शब्दों में आशीर्वाद देने लगे। फिर दोनों भाइयों ने पैर पकड़ लिए और सुमित्रा जी की गोद से चिपक गए। मानो किसी बेहद गरीब व्यक्ति को दौलत का तोहफा मिल गया हो. तब दोनों भाई माता कौशल्याजी के चरणों में गिर पड़े। प्यार की वजह से उनकी सारी बंदिशें ढीली हो जाती हैं।

माँ ने बड़े स्नेह से उसे गले लगा लिया और आँखों से बहते प्रेमाश्रुओं से उसे नहला दिया। कवि को उस समय के सुख और दुःख का वर्णन किस प्रकार करना चाहिए? जैसे कि एक गूंगे स्वाद का वर्णन कैसे किया जाए। श्रीरथुनाथजी अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी के साथ माता कौशल्या से मिले और गुरु को आश्रम में आने के लिए कहा। तदनन्तर मुनीश्वर वसिष्ठजी की आज्ञा पाकर जल और भूमि का सौभाग्य देखकर समस्त अयोध्यावासी नीचे उतर आये।

भरतजी, लक्ष्मणजी और श्रीरघुनाथजी कुछ चुनिंदा लोगों जैसे ब्राह्मणों, मंत्रियों, माताओं और गुरुओं आदि के साथ पवित्र आश्रम में गए। सीताजी आईं और महान ऋषि वशिष्ठजी के चरणों में गिर गईं और उन्हें वांछित आशीर्वाद मिला। तब गुरुपल्ली महिला साधुओं के साथ अरुंधति जी से मिलीं। उन्हें कितना प्यार था, कहा नहीं जा सकता.

सीताजी ने सबके चरण पृथक-पृथक पूजकर उनके हृदय को प्रिय आशीर्वाद प्राप्त किया। जब सुन्दरी सीताजी ने अपने सभी ससुराल वालों को देखा तो डर के मारे अपनी आँखें बंद कर लीं। अपनी सास की बुरी हालत देखकर उसे ऐसा लगा जैसे राजकुमारियाँ किसी राक्षस के वश में हो गई हों। [वह मन में सोचने लगी] क्रूर विधाता ने क्या किया है? सीताजी को देखकर उन्हें भी बहुत दुःख हुआ। [सोचा] भगवान हम पर जो कुछ भी थोपता है, हमें वह सब सहन करना होगा।

तब जानकोजी हृदय में धैर्य और नील कमल के समान जल भरी आँखों से जाकर अपने ससुराल के सभी लोगों से मिलीं। उस समय पृथ्वी पर करुणा (करुण-रस) फैल गई। सीता जी सबसे प्रेम से मिल रही हैं और सभी सास-ससुर अपने प्रेमपूर्ण हृदय से आशीर्वाद दे रहे हैं कि तुम सदा खुशियों से भरपूर रहो (अर्थात् सदा सौभाग्यशाली रहो)।

सीताजी और सभी रानियाँ प्रेम से व्याकुल हो गयीं। तब बुद्धिमान गुरु ने सभी को बैठने के लिए कहा। तब मुनिनाथ वसिष्ठजी ने संसार की गति को जादुई (अर्थात् संसार मिथ्या है, इसमें कुछ भी स्थायी नहीं है) बताकर कुछ आध्यात्मिक कहानियाँ (कहावतें) कहीं। इसके बाद वशिष्ठजी ने राजा दशरथजी के निधन के बारे में बताया। यह सुनकर रघुनाथजी को अत्यंत दुःख हुआ। और उनकी मृत्यु का कारण अपने प्रति द्वेष को मानकर धीरधुरधर श्री रामचन्द्रजी अत्यंत दुःखी हुए।

वज्र के समान कठोर और कड़वी आवाज सुनकर लक्ष्मणजी, सीताजी और सभी रानियाँ विलाप करने लगीं। सारा समाज दुःख से अत्यंत व्याकुल हो गया! मानो आज ही राजा की मृत्यु हुई हो। तब मुनि वशिष्ठजी ने श्री गयामजी को समझाया। तब उन्होंने अपने समाज सहित महान नदी मंदाकिनीजी में अपने प्राण त्याग दिये। उस दिन भगवान श्री रामचन्द्रजी ने निर्जला व्रत रखा। ऋषि वशिष्ठ के कहने पर भी किसी ने जल ग्रहण नहीं किया।

दूसरे दिन प्रातःकाल मुनि वशिष्ठजी ने श्रीरघुनाथजी को जो आज्ञा दी, प्रभु श्री रामचन्द्रजी ने आदर और भक्तिपूर्वक वह सब कार्य किया। वेदों में जो कहा गया है उसके अनुसार अपने पिता का अनुष्ठान करने से पाप के अन्धकार को नष्ट करने वाले सूर्य के समान श्री रामचन्द्रजी पवित्र हो गये थे! पापरूपी कपास को तुरंत जलाने वाली अग्नि जिसका नाम है; और जिनका स्मरण मात्र ही समस्त शुभ चक्रों का मूल है,

वह [नित्य शुद्ध-बुद्ध | प्रभु श्री रामजी पवित्र हो गये! ऋषियों का मत है कि उनकी शुद्धि तीर्थों के आह्वान से भगवान की शुद्धि के समान है। (गडजाजी स्वभाव से पवित्र हैं, इसके विपरीत, उनके बीच जिन तीर्थों का आह्वान किया जाता है, वे गडजाजी के संपर्क में आने से शुद्ध हो जाते हैं। इसी तरह, सच्चिदानंद के रूप में श्री राम हमेशा शुद्ध होते हैं, यहां तक कि उनके संपर्क से उनके कर्म भी शुद्ध हो गए। दो) शुद्ध होकर दिन बीत गये तब श्रीरामचन्द्रजी ने प्रीति सहित गुरुजी से बात की।

हे नाथ! यहां सभी को बहुत दुख हो रहा है. वे केवल कंद, मूल, फल और पानी खाते हैं। भाई शत्रुंगरासंहित भारतको; मन्त्रियों और सभी माताओं को देखकर मुझे एक-एक क्षण एक युग के समान प्रतीत होता है। अत: तुम्हें सबके साथ अयोध्यापुरी लौट जाना चाहिए। आप यहाँ हैं, और राजा अमरावती (स्वर्ग) में हैं (अयोध्या वीरान है)! मैं काफ़ी कह चुका हूँ, यह सब बहुत ही अभिमानपूर्ण है! हे गोसाईं! जो उचित हो वो करो.

[वशिष्ठजी ने कहा--] हे राम! आप धर्म के सेतु और दया के धाम हैं, ऐसा क्यों नहीं कहते? लोग दुखी हैं. चलो दो दिन आपके दर्शन करके हमें शांति मिले. श्री रामजी के वचन सुनकर सारा समाज भयभीत हो गया। मानो जहाज बीच समंदर में डगमगा गया हो. परन्तु जब उसने गुरु वशिष्ठजी के महान् कल्याण-हितकारी वचन सुने तो मानो उस जहाज के लिये वायु अनुकूल हो गयी।

सभी लोग पवित्र पयस्विनी नदी में [या पयस्विनी नदी के पवित्र जल में] तीनों समय (सुबह, दोपहर और शाम) स्नान करते हैं, जिसके दर्शन से पापों के समूह नष्ट हो जाते हैं और मदलामूर्ति श्री रामचन्द्रजी को प्रणाम करके दर्शन करते हैं। भरी निगाहों से उस पर. सभी लोग श्री रामचन्द्रजी के पर्वत (कामदगिरि) और वन को देखने जाते हैं, जहाँ सब सुख हैं और सब दुःखों का अभाव है। झरने अमृत के समान जल बरसाते हैं और तीन प्रकार की वायु (शीतल, सौम्य, सुगंधित) तीनों प्रकार के ताप (आध्यात्मिक, आध्यात्मिक, आध्यात्मिक) को हर लेते हैं।

यहाँ वृक्षों, लताओं, घासों की असंख्य प्रजातियाँ और अनेक प्रकार के फल, फूल और पत्तियाँ हैं। वहाँ सुन्दर चट्टानें हैं। वृक्षों की छाया सुख देती है। जंगल की सुंदरता का वर्णन कैसे किया जा सकता है? तालाबों में कमल खिल रहे हैं, जलपक्षी गीत गा रहे हैं, प्रभात गुंजन कर रहे हैं और अनेक रंगों के पशु-पक्षी बिना किसी शत्रुता के जंगल में घूम रहे हैं।

वनों में रहने वाले कोल, किरात और भील आदि लोग शुद्ध, सुंदर और स्वादिष्ट मधु (शहद) बनाकर सुंदर घड़ों में रखते हैं और उन्हें कंद, मूल, फल और अंकुर आदि के बंडलों से भर देते हैं। फिर सभी को नम्रतापूर्वक और प्रणाम करके बताते हैं। उन चीज़ों के विभिन्न स्वाद, प्रकार, गुण और नाम। लोग उनके लिए बहुत अधिक कीमत चुकाते हैं, लेकिन वे उन्हें लेते नहीं हैं और श्री गमजी से उन्हें वापस करने की अपील करते हैं।

प्रेम में डूबे लोग धीमी आवाज में कहते हैं कि संत प्रेम को पहचानते हैं और उसका आदर करते हैं (अर्थात आप ऋषि हैं, हमारा प्रेम देखते हैं, पैसे देकर या लौटाकर हमारे प्रेम का तिरस्कार न करें)। तुम पुण्यात्मा हो, हम नीच निषाद हैं। श्री रामजी के वचनों से ही हमने आपके दर्शन किये हैं।

आपके दर्शन हमारे लिए अत्यंत दुर्लभ हैं, जैसे रेगिस्तान के लिए गदराजी की धारा दुर्लभ है! देखो, श्री रामचन्द्रजी ने निषाद पर कितनी कृपा की है। जैसा राजा होता है, वैसा ही उसका परिवार और प्रजा भी होनी चाहिए। अपने हृदय में यह

जानकर संकोच छोड़कर हमारा प्रेम देखो, कृपा करो और हमें प्रसन्न करने के लिए ही फल, घास और अंकुर ग्रहण करो।

तुम प्रिय वस्त्र पहनकर वन में आये हो। हम आपकी सेवा करने के लिए नियत नहीं हैं। हे प्रभो! हम तुम्हें क्या देंगे? भीलों की मित्रता केवल ईंधन (लकड़ी) और पत्तों तक ही सीमित है। हमारी सबसे बड़ी सेवा यह है कि हम आपके कपड़े और बर्तन चोरी न करें। हम निर्जीव प्राणी हैं, हम जीवित प्राणियों के प्रति हिंसक हैं; कुटिल, कुचाली, कुबुद्धि और कुजाति हैं।

हमारे दिन और रात पाप करने में ही व्यतीत होते हैं। फिर भी हमारे पास न तो कमर में कपड़ा है और न ही हम अपना पेट भर पाते हैं। हमारे भीतर कभी भी धर्म की कोई भावना कैसे हो सकती है? यह सब श्रीरघुनाथजी के दर्शन का ही प्रभाव है। जब से हमने भगवान के चरणकमलों के दर्शन किये हैं, हमारे दुःख, दुःख और दोष मिट गये हैं। वनवासियों की बातें सुनकर अयोध्यावासी प्रेम से भर गये और अपने भाग्य की सराहना करने लगे।

सभी अपने भाग्य को सराहने लगे और प्रेम की बातें करने लगे। उनके बोलने-चालने का ढंग तथा एक-दूसरे से मिलने-जुलने का ढंग तथा श्रीसीतारामजी के चरणों के प्रति उनका प्रेम देखकर सभी प्रसन्न हो रहे हैं। उन कोल-भीलों की बातें सुनकर सभी स्त्री-पुरुष अपने प्रेमी का निरादर (उसकी निंदा) करते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि यह रघुवंशमणि श्रीरामचंद्रजी की कृपा है कि लोहा नोका को अपने ऊपर लेकर तैरने लगा।

सभी लोग अत्यंत प्रसन्न होकर प्रतिदिन जंगल में घूमते रहते हैं। जैसे प्रथम वर्षा ऋतु के बाद मेंढक और मोर मोटे हो जाते हैं (वे खुशी से नाचते-कूदते हैं), उसी प्रकार अयोध्यापुरी के सभी नर-नारी प्रेम में अत्यंत मग्न हो रहे हैं। उनके दिन पलक झपकते ही बीत जाते हैं। सीताजी अपने ससुराल में जितने वेश धारण करती थीं, उतने ही वेश धारण करके सभी ससुरालवालों की समान आदर-सत्कार से सेवा करती थीं।

यह रहस्य श्री रामचन्द्रजी के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था। सर्वभ्रमं पराशक्ति महामाया। वह श्री सीताजी की माया में है। सीताजी ने अपने सास-ससुर को सेवा के अधीन कर लिया। सुख पाकर उन्होंने शिक्षा और आशीर्वाद दिया। सीताजी सहित दोनों भाइयों (श्रीराम-लक्ष्मण) के सरल स्वभाव को देखकर कुटिल रानी कैकेयी को बहुत पश्चाताप हुआ। वह पृथ्वी और यमराज से विनती करती है, लेकिन पृथ्वी उसे टूटने नहीं देती और विधाता उसे मरने नहीं देता।

लोक और वेदों में प्रसिद्ध है और कवि (ज्ञानी) भी कहते हैं कि जो लोग श्री रामजी से विमुख हो जाते हैं उन्हें नरक में भी स्थान नहीं मिलता। सभी के मन में यह शंका थी कि हे विधाता! श्री रामचन्द्रजी को अयोध्या जाना पड़ेगा या नहीं? भरतजी को न रात को नींद आती है और न दिन को भूख लगती है। वे पवित्र विचारों में ऐसे व्याकुल हैं जैसे नीचे कीचड़ में डूबी हुई मछली पानी की कमी से व्याकुल होती है।

भरतजी सोचते हैं कि माता को काले ने कुचल डाला है। जैसे जब धान पकता है तो उसका भय सताने लगता है। अब मुझे कोई उपाय नहीं सूझ रहा कि श्री रामचन्द्रजी का राज्याभिषेक किस प्रकार हो। गुरुजी की आज्ञा मानकर श्री रामजी अवश्य ही अयोध्या लौटेंगे।

परंतु ऋषि वशिष्ठजी श्रीरामचंद्रजी की रुचि जानने के बाद ही कुछ कहेंगे (अर्थात वे श्रीरामजी को उनकी रुचि देखे बिना जाने के लिए नहीं कहेंगे)। माता कौशल्याजी की सलाह पर श्रीरघुनाथजी भी लौट सकते हैं; परन्तु श्री रामजी को जन्म देने वाली माता क्या कभी हठ करेगी?

मेरे नौकर का क्या मतलब? उसमें भी समय ख़राब है (मेरे दिन अच्छे नहीं हैं) और विधाता प्रतिकूल है। यदि मैं हठ करूंगा तो यह घोर दुष्कर्म (अधर्म) होगा, क्योंकि सेवक का कर्तव्य शिवजी के पर्वत कैलाश से भी भारी (पालन करना कठिन) है। भरतजी के मन में एक भी विचार अटका नहीं। सोचते सोचते रात बीत गयी. भरतजी प्रातःकाल स्नान करके भगवान श्री रामचन्द्रजी को सिर नवाकर बैठे ही थे कि मुनि वशिष्ठजी ने उन्हें बुला भेजा।

भरतजी गुरु के चरणकमलों को प्रणाम करके आज्ञा पाकर बैठ गये। उसी समय ब्राह्मण, महाजन, मंत्री आदि सभी पार्षद आकर एकत्र हो गये। महर्षि वशिष्ठजी ने उचित वचन बोले- हे पार्षदों! हे सुजान भरत! सुनना। सूर्य कुल के सूर्य महाराज श्री रामचन्द्र एक धार्मिक एवं स्वतंत्र देवता हैं।

वे सत्यवादी और वेदों की मर्यादा के संरक्षक हैं। श्री रामजी का अवतार विश्व कल्याण के लिये हुआ है। वे गुरु, पिता और माता के वचनों का पालन करने वाले हैं। वे दुष्टों के संहारक और देवताओं के हितैषी हैं। नीति, प्रेम, परम लक्ष्य और अर्थ का सत्य (उससे) श्री रामजी के समान कोई नहीं जानता। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, चंद्र, सूर्य, दिक्पाल, माया, जीव, सभी कर्म और समय,

जहाँ तक शेषजी और [पृथ्वी और पाताल के अन्य राजा] आदि प्रभुता करते हैं और योग की जो सिद्धियाँ वेदों और शास्त्रों में गाई गई हैं, उनके विषय में अपने हृदय में भली-भांति विचार करो, [तब यह स्पष्ट दिखाई देगा] श्री रामजी की आज्ञा उन सबमें सर्वोपरि है (अर्थात् श्री रामजी ही सबमें बड़े महेश्वर हैं। अतः श्री रामजी की आज्ञा और भाव का पालन करना ही हम सब के लिये हितकर है।) [इस सिद्धांत और रहस्य को समझना] अब हे बुद्धिमानों, जो सब को अच्छा लगे, मिलजुल कर करो।

श्री रामजी का राज्याभिषेक सबके लिए सुखद है। सुख और आनंद की उत्पत्ति का यही एकमात्र मार्ग है। [अब] श्रीरघुनाथजी को अयोध्या कैसे जाना चाहिए? सोचो और कहो, यही उपाय करना चाहिए। नीति, परोपकार और स्वार्थ (सांसारिक हित) से ओत-प्रोत महर्षि वशिष्ठ जी के वचन सभी ने सुने। परन्तु किसी को कोई उत्तर नहीं मालूम, सभी निरीह (सोचने की शक्ति विहीन) हो गये हैं। तब भरतने सिर झुकाकर हाथ जोड़ लिये।

[और कहा--] सूर्यवंश में अनेक राजा हुए हैं, एक से बढ़कर एक। सबके जन्म का कारण उनके माता-पिता हैं और ईश्वर उनके कर्मों का शुभ तथा अशुभ फल देते हैं। आपके लिए आशीर्वाद ही वह है जो दुखों को दबाता है और आपको सभी आशीर्वाद प्रदान करता है; ये तो दुनिया जानती है. हे भगवान! आप ही वह व्यक्ति हैं जिसने ईश्वर की गति को भी रोक दिया था। जो तुमने ले लिया (निश्चय) उसे कौन रोक सकता है?

अब आप मुझसे कोई उपाय पूछें, यह सब मेरा दुर्भाग्य है। भरतजी के प्रेमपूर्ण वचन सुनकर गुरुजी का हृदय प्रेम से उमड़ आया। [उन्होंने कहा-] हे पिता! यह सच है, लेकिन यह रामजी की कृपा से ही है। रामविमुख व्यक्ति को स्वयं में भी सफलता नहीं मिलती है। हे पिता! मुझे एक बात कहने में झिझक हो रही है. बुद्धिमान लोग, सब कुछ चलता देखकर, दूसरे आधे हिस्से को छोड़ देते हैं [दूसरे आधे की रक्षा के लिए]।

अत: तुम दोनों भाई भरत-शत्रुघ्न को वन में चले जाना चाहिए और लक्ष्मण, सीता तथा श्री रामचन्द्र को लौटा देना चाहिए। ये सुन्दर वचन सुनकर दोनों भाई प्रसन्न हो गये। उनके सारे अंग परमानंद से भर गये। उनका हृदय प्रसन्न हो गया। शरीर कान्ति से सुशोभित हो गया।

मानो राजा दशरथ का उदय हो गया हो और श्री रामचन्द्रजी राजा बन गये हों! अन्य लोगों को लाभ अधिक और हानि कम प्रतीत हुई। लेकिन रानियों को एक

जैसा सुख और दुःख हुआ (चाहे राम-लक्ष्मण वन में रहें या भरत-शरणुघ्न, उनके दोनों पुत्रों का वियोग होगा, यह जानकर वे सभी रोने लगीं।

चौदह वर्ष की कोई अवधि नहीं है, मैं जीवन भर वन में रहूँगा। मेरे लिए इससे बड़ी कोई ख़ुशी नहीं है. श्री रामचन्द्रजी और सीताजी मर्म को जानते हैं और आप सर्वज्ञ और ज्ञानी हैं। यदि आप यह सत्य कह रहे हैं तो हे प्रभु! अपनी बात सिद्ध करो (उनके अनुसार व्यवस्था करो)।

भरतजी के वचन सुनकर और उनका प्रेम देखकर मुनि वसिष्ठजी सारी सभा सहित अन्तर्धान हो गये (किसी को भी अपने शरीर की सुधि न रही)। भरतजी का महान् वैभव समुद्र है, मुनि की बुद्धि उसके तट पर असहाय खत्री की भाँति खड़ी है। वह उस सागर को पार करना चाहती है, इसके लिए उसने मन ही मन एक उपाय भी ढूंढ लिया है. परन्तु [उसे पार करने का साधन] कोई नाव, जहाज या बेड़ा नहीं मिलता। भरतजी की स्तुति और कौन करेगा? क्या तालाब की खोल में भी समुद्र समा सकता है?

भरतजी को ऋषि वशिष्ठजी की अंतरात्मा बहुत पसंद आई और वे समाज सहित श्री रामजी के पास आ गए। प्रभु श्री रामचन्द्रजी ने उन्हें प्रणाम किया और उन्हें उत्तम आसन दिया। साधु की आज्ञा सुनकर सभी लोग बैठ गए। महर्षि देश, काल और अवसर के अनुसार विचार करके बोले- हे सर्वज्ञ! हे सुजान! हे धर्म, नीति, गुण और ज्ञान के भण्डार राम! सुनना---

वह सबके हृदय में निवास करते हैं और सबके अच्छे-बुरे भावों को जानते हैं। कृपया ऐसा समाधान बताएं जो ग्रामवासियों, माला और भरत के लिए लाभकारी हो। दुखी लोग कुछ भी कहने से पहले कभी नहीं सोचते. जुआरी अपने दांव के बारे में सोचता है। मुनि के वचन सुनकर श्रीरघुनाथजी कहने लगे- हे नाथ। समाधान आपके हाथ में है.

अपना पक्ष रखना और आपकी आज्ञा को सत्य मानकर प्रसन्नतापूर्वक पालन करने में ही सबका हित है। सबसे पहले तो मुझे जो आदेश दिया जायेगा, मैं उसी उपदेश को सिर माथे पर रखकर करुंगा। तब हे गोसाईं! जिससे कहोगे, वह हर प्रकार से सेवा (आज्ञा का पालन) में लग जायेगा। मुनि वशिष्ठजी कहने लगे--हे राम! आपने सच कहा. परन्तु भरत के प्रेम ने इस विचार को जाने न दिया।

इसीलिए मैं बार-बार कहता हूं, मेरी बुद्धि भरत की भक्ति के वश में हो गई है। मेरी समझ से भारत के हित को ध्यान में रखते हुए, भगवान शिव साक्षी हैं, जो कुछ भी किया जाएगा, वह सब शुभ ही होगा। पहले भरत का निवेदन

आदरपूर्वक सुनो, फिर विचार करना। फिर साधुमत, लोकमत, राजनीति और वेदों का सार निकालकर (तदनुसार) उसका सूत्रीकरण करो।

भरतजी पर गुरुजी की उपस्थिति देखकर श्री रामचन्द्रजी के हृदय में विशेष प्रसन्नता हुई। श्री रामचन्द्र जी ने भरतजी को शरीर, मन और वचन से धर्म का पालन करने वाला और अपना सेवक मानकर गुरु की आज्ञा के अनुसार सुखद, सौम्य और कल्याण के मूल शब्द कहे - हे नाथ। मैं आपकी सुगंध और पिता के चरणों में प्रार्थना करता हूं (मैं आपसे सच कहता हूं) कि भरत के समान संपूर्ण विश्व में कोई भाई नहीं है।

जो लोग गुरु के चरणकमलों के भक्त हैं, वे संसार में (सांसारिक दृष्टि से) और वेदों में (आध्यात्मिक दृष्टि से) दोनों में भाग्यशाली हैं। [तब] उस भरत का भाग्य कौन बता सकता है जिस पर आपका (गुरु) ऐसा प्रेम है। यह जानकर कि मैं छोटा भाई हूं, भरत के सामने उसकी प्रशंसा करने में संकोच करता हूं। (फिर भी मैं यही कहूंगा) भरत जो कहें वही करना श्रेयस्कर है। इतना कहकर श्री रामचन चुप हो गये।

तब मुनि भरतजी ने कहा- हे पिताजी! सभी विघ्नों को छोड़कर दया के सागर अपने प्यारे भाई से अपने हृदय की भावना व्यक्त करो। मुनि के वचन सुनकर और श्री रामचन्द्रजी का भाव देखकर, गुरु और स्वामी को अपने सर्वथा अनुकूल जानकर भरतजी सारा भार अपने ऊपर है, ऐसा समझकर कुछ नहीं कह सकते। वे सोचने लगे.

वह अपने शरीर में रोमांच का अनुभव करते हुए बैठक में खड़ा हो गया। कमल के समान नेत्रों में प्रेमाश्रुओं की बाढ़ आ गयी। [उन्होंने कहा--] मैंने जो कहा उसे मुनिनाथ ने स्वयं पूरा किया (जो कुछ मैं कह सकता था, उन्होंने कहा)। और मैं क्या कहूं? मैं अपने स्वामी का स्वभाव जानता हूं। अपराधी पर भी उन्हें कभी गुस्सा नहीं आता. उनकी मुझ पर विशेष कृपा एवं आशीर्वाद है। खेल-कूद में भी मैंने कभी उनकी नाराजगी नहीं देखी.

बचपन से ही मैंने उसे कभी नहीं छोड़ा और उसने भी कभी मेरा मन नहीं तोड़ा (मेरी इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं किया)। मैंने अपने दिल में भगवान की कृपा के तरीकों को अच्छी तरह से देखा (अनुभव) किया है। जब मैं हारता हूँ तब भी भगवान मुझे खेल में जीत दिलाते रहते हैं। मैंने भी प्रेम और संकोच के कारण तुम्हारे सामने कभी मुँह नहीं खोला। मेरी प्रेम की प्यासी आँखें प्रभु के दर्शन से आज तक तृप्त नहीं हुई हैं।

लेकिन विधाता को मेरा दुलार सहन नहीं हुआ. उसने एक मतलबी माँ होने के बहाने [मेरे और मेरे मालिक के बीच] एक दूरी पैदा कर दी। आज भी मुझे ये कहना शोभा नहीं देता. क्योंकि कौन अपनी समझ में संत और शुद्ध हो गया है? (जिसे दूसरे संत और पवित्र मानते हैं, वह संत है)।

यह हृदय में धारण करना कि मेरी माता नीच है और मैं सदाचारी तथा साधु हूं, करोड़ों दुष्कर्मों के बराबर है। क्या फली की बाली से अच्छा चावल प्राप्त हो सकता है? क्या काला घोंघा मोती पैदा कर सकता है?

किसी के भी अन्दर दोष का लेश मात्र भी नहीं है। मेरा दुर्भाग्य अथाह सागर है। मैंने अपने पापों का फल न समझकर व्यर्थ ही कटु वचन कहकर अपनी माता को भस्म कर दिया। मैंने अपने हृदय में सब जगह खोजा और हार गया (मुझे अपने कल्याण का कोई साधन नहीं मिल रहा है)। भले ही यह केवल एक ही प्रकार का हो, यह निश्चित रूप से मेरे लिए अच्छा है। अर्थात् गुरु महाराज सर्वशक्तिमान हैं और श्रीसीतारामजी मेरे गुरु हैं। इस वजह से मुझे रिजल्ट अच्छा लग रहा है.

इस पवित्र तीर्थस्थान में, गुरुजी और स्वामी के पास, साधुओं की सभा में, मैं यह बात सच्ची भावना से कहता हूँ। ये प्यार है या धोखा? ये झूठ है या सच? सर्वज्ञ ऋषि वशिष्ठजी और [अंतर्यामी] श्रीरघुनाथजी इसे जानते हैं। प्यार की कसमें पूरी करने के बाद पिता की मौत और मां की मूर्खता की गवाह पूरी दुनिया है। माताएँ व्याकुल हैं, उनसे देखा नहीं जाता। अवधपुरी के नर-नारी दुःख से जल रहे हैं।

यह सुनकर और समझकर कि मैं ही इन सब अनर्थों का मूल हूँ, मैंने ही सब दुःख भोगे हैं। श्री रघुनाथ जी लक्ष्मण और सीता जी सहित साधुओं का भेष बनाकर बिना जूते पहने पैदल ही वन में चले गये। यह सुनकर शंकर जी साक्षी हैं, मैं इस घाव के साथ भी जीवित रहा (यह सुनकर मैं मरा नहीं)! तब निषादराज का प्रेम देखकर भी कठोर हृदय में यह वस्त्र भी नहीं चुभा (फटा नहीं)।

अब यहां आकर मैंने सबकुछ अपनी आंखों से देखा है. यह निर्जीव प्राणी जीवित रहकर सब कुछ सहन कर लेगा। जिन्हें देखकर मार्ग में चलने वाले साँप और कुतिया भी अपना भयंकर विष और तीव्र क्रोध त्याग देते हैं। अत्यंत व्यथित और दुःख, प्रेम, नम्रता और सदाचार से सराबोर भरतजी की उत्तम वाणी सुनकर सभी लोग शोक में डूब गये, सारी सभा में दुःख फैल गया। कमल वन पर मानो पाला पड़ गया हो।

तब मुनिवर वशिष्ठजी ने अनेक पुरानी (ऐतिहासिक) कहानियाँ सुनाकर भरतजी की समस्या का समाधान किया। तब कुमुदबन सूर्य को प्रसन्न करने वाले चन्द्रमा श्री रघुनन्दन ने उचित वचन बोले--- हे पिताजी! तुम व्यर्थ ही अपने हृदय में द्वेष रखते हो। जान लें कि जीवन की गति ईश्वर के अधीन है। मेरी राय में, तीनों कालों [भूत, भविष्य, वर्तमान] और तीनों लोकों [स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल] के सभी पुण्यात्मा पुरुष आपसे हीन हैं।

मन में भी दुष्टता का आरोप लगाने से यह लोक (यहाँ का सुख, यश आदि) नष्ट हो जाता है और परलोक भी नष्ट हो जाता है (मृत्यु के बाद भी अच्छी गति नहीं मिलती)। माता कैकेयी को केवल वे मूर्ख ही दोष देते हैं जो गुरु और साधुओं की सभा में नहीं गये। हे भारत! आपके नाम का स्मरण करते ही सारे पाप, अज्ञान और भ्रम के समूह नष्ट हो जायेंगे और तुम्हें इस लोक में सुन्दर यश तथा परलोक में सुख प्राप्त होगा।

हे भारत! मैं स्वभाव से सत्य बोलता हूं, भगवान शिव साक्षी हैं, यह पृथ्वी आपके संरक्षण में है। हे पिता! अनावश्यक बहस न करें. नफरत और प्यार छुपे रहते हैं. पशु-पक्षी साधुओं के पास [निर्भय होकर] जाते हैं। वे चले जाते हैं, लेकिन हिंसा करने वाले शव देखते ही भाग जाते हैं. पशु-पक्षी भी मित्र और शत्रु को पहचानते हैं। फिर मानव शरीर तो गुणों और ज्ञान का भण्डार है।

हे पिता! मुझे तुम्हारे बारे में अच्छे से मालूम है। क्या करें ? बहुत कन्फ्यूजन (दुविधा) है. राजा ने सत्य की रक्षा के लिए मुझे त्याग दिया और प्रेम के लिए अपना शरीर त्याग दिया। उनकी बातें पढ़ते हुए मन में एक विचार उठता है. उससे भी ज्यादा आपकी झिझक है. गुरुजी ने मुझे उस पर भी अनुमति दे दी है. तो अब आप जो कहें, मैं अवश्य करना चाहता हूँ।

मेरे हृदय को प्रसन्न करके और संकोच छोड़कर तुम जो कुछ कहोगी, मैं आज वही करूँगा। सत्यप्रतिज्ञ रघुकुल श्रेष्ठ श्री गयामजी के ये वचन सुनकर सारा समाज प्रसन्न हो गया। देवगणों सहित देवराज इन्द्र भयभीत हो गये और सोचने लगे कि अब बना बनाया काम बिगड़ जायेगा। केवल चाहता है. कुछ उपाय करना संभव नहीं है. तब वे सब मन ही मन श्री रामजी के पास गये॥

फिर वे विचार करके आपस में कहने लगे कि श्रीरघुनाथजी तो भक्त की भक्ति के वश में हैं। ऋषि और दुर्वासाकी की घटना को याद करके देवता और इंद्र पूरी तरह निराश हो गए। पहले देवताओं को बहुत समय तक कष्ट सहना पड़ा। तब भक्त प्रधान ने स्वयं भगवान नुसिंह को प्रकट किया था। सभी देवता आपस में

कानाफूसी करते हैं और सिर झुकाकर कहते हैं कि अब (इस बार) देवताओं का कार्यभार भरतजी के हाथ में है॥

हे देवताओं! और कोई उपाय नजर नहीं आता. श्री रामजी अपने श्रेष्ठ सेवकों की सेवा का आदर करते हैं (अर्थात यदि कोई उनके भक्त की सेवा करता है तो वे बहुत प्रसन्न होते हैं)। अत: सभी को अपने हृदय में प्रेम रखकर भरतजी का स्मरण करना चाहिए, जिन्होंने अपने गुणों और शील से श्री रामजी को वश में कर लिया था।

देवताओं की राय सुनकर देवगुरु बहस्पतिजी ने कहा- ठीक सोचा, तुम्हारा भाग्य बड़ा है। भरतजी के चरणों का प्रेम ही संसार के समस्त मंगलों का मूल है। सीतानाथ श्री रामजी के सेवक की सेवा सैकड़ों कामधेनु के समान सुन्दर है। यदि तुम्हारे मन में भरतजी के प्रति भक्ति आ गयी है तो अब सोचना बंद कर दो। रचनाकार ने बात बता दी।

अरे जीजाजी! भरतजी का प्रभाव तो देखो। श्रीरघुनाथजी अपने स्वाभाविक स्वभाव से पूर्णतः उनके वश में हैं। हे देवताओं! भरतजी श्री रामचन्द्रजी की छाया हैं (उनके साथ छाया की तरह चलने वाले हैं) ऐसा जानकर अपने मन को स्थिर कर लो, डरने की कोई बात नहीं है। देवगुरु बहस्पति जी और देवताओं के मत और विचार सुनकर अन्तर्यामी प्रभु श्रीरामजी को संकोच हुआ। भरतजी को लगा कि सारा भार उन्हीं पर है और वे हृदय में करोड़ों विचार करने लगे।

सब बातों पर विचार करने के बाद अंततः उन्होंने मन में निश्चय किया कि श्री रामजी की आज्ञा में ही उनका कल्याण है। उसने अपनी प्रतिज्ञा छोड़ दी और मुझसे प्रतिज्ञा पूरी की। ये भी कम दयालु और स्नेही नहीं थे (अर्थात् बड़ी कृपा और स्नेह दिखाते थे) श्री जानकीनाथ जी ने मुझ पर सब प्रकार से बड़ी कृपा की। तदनन्तर भरतजी ने दोनों कमलों को जोड़कर उन्हें प्रणाम किया और बोले---

हे प्रभो! हे कृपा के सागर! ओह भीतर वाले! अब मुझे क्या कहना चाहिए [अधिक] और मुझे क्या कहना चाहिए? यह जानकर कि गुरु महाराज प्रसन्न हैं और स्वामी अनुकूल हैं, मेरे मलिन मन की कल्पित पीड़ा मिट गयी। मैं झूठे डर से डर गया था. मेरी सोच का कोई आधार नहीं था. यदि आप दिशा भूल गए तो हे भगवान! इसमें सूरज की गलती नहीं है. मेरा दुर्भाग्य, मेरी माँ की दुष्टता, विधाता की कुटिल चाल और समय की कठिनाई,

उन सबने मिल कर अपने पाँव रखकर (प्रतिज्ञा लेकर) मुझे नष्ट कर दिया था। लेकिन शरणार्थियों के रक्षक, आपने [शरणार्थियों की रक्षा करने की] अपनी

प्रतिज्ञा पूरी की (मुझे बचा लिया)। ये आपकी कोई नई आदत नहीं है. यह संसार और वेदों में प्रकट है, छिपा हुआ नहीं है। सारा संसार बुरा है; परन्तु हे प्रभु! तुम ही तो अनुकूल हो। यदि हाँ, तो बतायें कि यह लाभ किसके हित में हो सकता है? हे भगवान, आपका स्वभाव कल्पवृक्ष के समान है; वह न तो किसी के पक्ष में हैं और न ही किसी के विरोध में.

यदि कोई उस वृक्ष (कल्पवृक्ष) को पहचानकर उसके पास जाए तो उसकी छाया ही सारी चिंताओं को नष्ट कर देगी। राजा और रंक, अच्छे और बुरे, संसार में हर किसी को जो चाहिए वह माँगते ही मिल जाता है। गुरु और स्वामी का सब प्रकार से स्नेह देखकर मेरा क्रोध नष्ट हो गया, मन में कोई संदेह नहीं रहा। हे दयाकी खान! अब इतना ही करो कि प्रभु के मन में दास के लिये कोई क्षोम (किसी प्रकार का विचार) न रहे।

जो सेवक अपने स्वामी को संकट में डालकर अपना लाभ चाहता है, उसकी बुद्धि नीच होती है। सेवक का हित इसी में है कि वह सभी सुख और लोभ त्याग कर केवल अपने स्वामी की सेवा करे। हे नाथ! आपके पास लौटने में हर किसी का स्वार्थ है और आपकी आज्ञा का पालन करने में लाखों प्रकार का लाभ है। यह स्वार्थ और परोपकार का सार है, सभी गुणों का फल है और सभी शुभ कार्यों का श्रृंगार है।

हाय भगवान्! आप मेरी एक प्रार्थना सुन लें, फिर जो उचित हो वही करें। राजतिलक की सारी सामग्री तैयार करके लायी है, भगवान चाहे तो इसे सफल बनाइये (उपयोग करिये)। छोटे भाई शरथ्रुघ्नममेत, मुझे वन में भेज दो और सभी को नष्ट कर दो (अयोध्या लौटने के बाद)। अन्यथा किसी भी प्रकार से (यदि आप अयोध्या जाने को तैयार नहीं हैं) हे भगवन्! लक्ष्मण और शत्रुघ्न दोनों भाइयों को लौटा दो और मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।

अथवा हम तीनों भाई वन में चले जायें और हे श्रीरघुनाथजी! आप श्री सीताजी सहित [अयोध्या] लौट जाइये। हे दयासागर! वही करो जो प्रभु को प्रसन्न हो. हे देव! आपने सारा बोझ (जिम्मेदारी) मुझ पर डाल दिया। परंतु मुझे न तो नैतिकता का विचार है और न ही धर्म का। मैं ये सब बातें अपने स्वार्थ के लिए कह रहा हूं.' आर्त (दुखी) व्यक्ति के मन में चेतना (अंतरात्मा) नहीं होती।

ऐसे नौकर को देखकर शर्म भी आती है जो अपने मालिक का आदेश सुनकर जवाब देता है। मैं अवगुणों का ऐसा अथाह सागर हूं (जो भगवान को उत्तर दे रहा हूं)। परन्तु स्वामी (आप) तो मुझे सन्त कहकर मेरी प्रशंसा करते हैं। वह दयालु है। अब तो मुझे वही राय अच्छी लगती है, जिससे स्वामी के मन में कोई झिझक

पैदा न हो। मैं भगवान के चरणों की सौगंध खाकर सच्ची भावना से कहता हूं, विश्व के कल्याण के लिए यही एकमात्र उपाय है।

प्रभु जो भी आदेश देंगे, सभी लोग किसी भी प्रकार की झिझक को छोड़कर प्रसन्न मन से पूरे दिल से उसका पालन करेंगे और सभी परेशानियां और उलझनें दूर हो जाएंगी। भरतजी के पवित्र वचन सुनकर देवता प्रसन्न हो गये और 'साधु-साधु' कहकर उनकी प्रशंसा करते हुए पुष्प वर्षा करने लगे। अयोध्यावासी असमंजस में पड़ गये [देखें अब श्री रामजी क्या कहते हैं]। तपस्वी और वनवासी (श्री रामजी के वन में रहने की आशा से) मन में अत्यंत प्रसन्न हुए॥

परन्तु श्रीरघुनाथजी सशंकित होकर चुप रहे। यह अवस्था प्रभु (सोम) की है। सारी सभा गहरे सोच में पड़ गयी। उसी समय जनकजी के दूत आ गये, यह सुनकर मुनि वशिष्ठजी ने तुरंत उन्हें बुलाया। उन्होंने आकर प्रणाम किया और श्री रामचन्द्रजी के दर्शन किये। उनका (भिक्षु जैसा) रूप देखकर वे बहुत दुखी हुए। महर्षि वशिष्ठजी ने दूतों से राजा जनक का कुशल समाचार सुनाने को कहा।

यह (मुनिका का नेक प्रश्न) सुनकर महान् दूत ने हाथ जोड़कर पृथ्वी पर मस्तक झुकाया और कहा- हे स्वामी, आप आदरपूर्वक पूछें, यही हे गोसाईं! यह समृद्धि का कारण बन गया। अन्यथा हे प्रभु! कोसलनाथ दशरथजी के साथ सब कुछ अच्छा हो गया। [उनके जाने से] सारा संसार अनाथ (गुरु के बिना असहाय) हो गया, लेकिन मिथिला और अवध विशेष रूप से अनाथ हो गए।

चला गया (अच्छा-बुरा भूल गया) उस समय विदेह को देखने वालों में से किसी को भी ऐसा नहीं लगा कि उसका नाम विदेह (बिना शरीर-सम्मान के) सच है! [क्योंकि जिस मनुष्य को अपने शरीर का अभिमान नहीं है वह शोक कैसे कर सकता है?] रानी की हार सुनकर राजा जनकजी को कुछ समझ नहीं आया, जैसे मणि के बिना साँप को कुछ समझ नहीं आता। तब भरतजी के राज्य और श्री रामचन्द्रजी के वनवास की बात सुनकर मिथिलेश्वर जनकजी के हृदय में अत्यंत दुःख हुआ।

राजा ने विद्वानों तथा मन्त्रियों के समाज से विचार करके कहने को कहा कि आज (इस समय) क्या करना उचित है? अयोध्या की स्थिति को समझते हुए और दो राहों में उलझे हुए, "जाएं या रहें?" किसी ने कुछ नहीं कहा. [जब किसी ने कोई सलाह नहीं दी] तब राजा ने मन में धैर्यपूर्वक विचार करके चार चतुर गुप्तचरों को अयोध्या भेजा [और उनसे कहा कि] तुम लोग [श्री राम के प्रति]

भरतजी की सद्भावना (अच्छी भावना, प्रेम) या दुर्भावना (बुरी भावना, विरोध) की असलियत पता करके जल्दी वापस आ जाओ, ताकि किसी को तुम्हारे बारे में पता न चले।

गुप्तचर अवध गये और भरतजी के आचरण को जानकर तथा उनके कार्यों को देखकर जैसे ही भरतजी चित्रकूट के लिये रवाना हुए, वे तिरहुत (मिथिला) के लिये प्रस्थान कर गये। [गुप्त | दूतों ने आकर राजा जनकजी के दरबार में भरतजी के कार्यों का अपनी बुद्धि के अनुसार वर्णन किया। यह सुनकर गुरु, परिजन, मंत्री और राजा सभी विचार और दुःख से अत्यंत व्यथित हो गये।

तब जनकजी ने धैर्य रखकर भरतजी की प्रशंसा करते हुए अच्छे योद्धाओं और सहनियों को बुलाया। उसने अपने घर, नगर और देश में पहरेदार रख लिये और बहुत से घोड़ों, हाथियों, रथों आदि पर सवार हो गया। दुग्धिया मुहूर्त देखकर वे उसी समय चले गये। रास्ते में राजा ने कहीं भी विश्राम नहीं किया। आज ही खबर प्रयागराज में स्नान करके रवाना हुई। जब सभी लोग यमुनाजी में उतरने लगे।

तब हे प्रभु! हमें खबर लेने के लिए भेजा. यह कहकर उन्होंने (दूतों ने) पृथ्वी पर सिर झुकाया। महर्षि वशिष्ठजी ने तुरंत दूतों को छह-सात भीलों के साथ रवाना कर दिया। जनकजी का आगमन सुनकर अयोध्या का सारा समाज प्रसन्न हो गया। श्री रामजी को बड़ी झिझक हुई और विशेषकर देवराज इन्द्र सोच-विचारकर वश में हो गये।

कुटिल कैकेयी मन में पश्चाताप से भर गयी। किसे बताएं और किसे दोष दें? और सभी स्त्री-पुरुष मन में यह सोचकर प्रसन्न हो रहे हैं कि (जनकजी के आने से तो अच्छा हुआ) चार (कुछ) दिन और रहना पड़ेगा। वो दिन भी ऐसे ही बीत गया. अगली सुबह सभी लोग नहाने लगे. हंस लेकर सभी स्त्री-पुरुष गणेशजी, गौरीजी, महादेवजी तथा सूर्यदेव की पूजा करते हैं।

तब लक्ष्मीपति भगवान विष्णु के चरणों की वन्दना करते हैं, दोनों हाथ जोड़कर और टखने फैलाकर विनती करते हैं कि श्री रामजी राजा हों, जानकीजी रानी हों और राजधानी अयोध्या आनन्द की सीमा हो- फिर वे दोनों सुखपूर्वक निवास करें। समाज और श्रीगमजी को भरतजी को युवराज बनाना चाहिए। अरे बाबा ! सभी को इस सुख के अमृत से सींचकर इस संसार में रहने का लाभ दें।

गुरु, समाज और भाइयों सहित अवधपुरी में श्री रामजी का राज्य हो और श्री रामजी के राजा रहते हुए हमारी मृत्यु अयोध्या में हो। हर कोई यही मांगता है.

अयोध्यावासियों की प्रेमपूर्ण बातें सुनकर ऋषि-मुनि भी उनके योग और वैराग्य की आलोचना करते हैं। यह नित्य अनुष्ठान करके अवधवासी तेजस्वी शरीर वाले श्री रामजी को प्रणाम करते हैं।

उच्च, निम्न और मध्यम सभी वर्गों के स्त्री-पुरुष अपनी-अपनी भावना के अनुसार श्री रामजी के दर्शन पाते हैं। श्रीगमचन्द्रजी सावधानी से सबका आदर करते हैं और सभी श्रीरामचन्द्रजी की कृपा की प्रशंसा करते हैं। श्री रारामजी प्रसिद्ध है वह बचपन से ही प्रेम को पहचानते हैं और सदाचार का पालन करते हैं। श्रीरघुनाथजी विनय और संकोच के सागर हैं। उनके चेहरे सुंदर होते हैं या वे सभी से मित्रवत व्यवहार करते हैं, उनकी आंखें सुंदर होती हैं या वे सभी को दया और प्रेम की दृष्टि से देखते हैं और सरल स्वभाव के होते हैं।

श्री रामजी के गुणों का बखान करते-करते सभी लोग प्रेम से भर गये और अपने भाग्य को सराहने लगे कि संसार में ऐसे बहुत कम लोग हैं जिनके पास हमारे जैसे गुणों का अपार भण्डार है; जिन्हें श्री रामजी अपना जानते हैं (वे जानते हैं कि ये मेरे हैं) जनकजी ने जैसे ही पर्वतश्रेष्ठ कामदनाथ को देखा, उन्हें प्रणाम किया और रथ छोड़ दिया (पैदल चलने लगे)।

श्री रामजी के दर्शन की लालसा और उत्साह के कारण मार्ग में किसी को तनिक भी थकान या कष्ट महसूस नहीं होता। मन वहीं है जहां श्री राम और जानकीजी हैं। मन के बिना शरीर के सुख-दुख का ज्ञान किसे होगा? जनकजी ऐसे ही चल रहे हैं. समाज के साथ उनकी बुद्धि भी प्रेम के नशे में चूर हो रही है। सभी को करीब आता देख वे प्रेम से भर गए और एक दूसरे से आदर भाव से मिलने लगे।

जनकजी [वशिष्ठ तथा अन्य अयोध्यावासी] ऋषियों के चरणों की वन्दना करने लगे तथा श्री रामचन्द्रजी [शतानन्द तथा अन्य जनकपुरवासी] ऋषियों को प्रणाम करने लगे। तब श्री रामजी अपने भाइयों सहित राजा जनकजी से मिले और उन्हें समाज सहित अपने आश्रम में ले गये।

श्री रामजी का आश्रम शांतरसा रूपी पवित्र जल से भरा हुआ समुद्र है। जनकजी की सेना (समाज) मानो करुणा की नदी (करुणारस) है, जिसे श्रीरघुनाथजी उस आश्रम रूपी शांति सागर में मिलाने के लिए ले जा रहे हैं।

करुणा की यह नदी इतनी बढ़ गई है कि ज्ञान और त्याग के तटों को डुबाती चली जाती है। दुखद शब्द नदियाँ और झरने हैं, जो इस नदी में मिलते हैं; और सोच की लंबी सांसें (आहें) हवा के झोंकों से उठती लहरें हैं, जो नदी के किनारे के खूबसूरत पेड़ों को तोड़ रही हैं।

भयंकर विषाद (दुःख) उस नदी की तीव्र धारा है। भय और भ्रम (भ्रम) इसके असंख्य भँवर और चक्र हैं। विद्वान नाविक हैं, ज्ञान एक बड़ी नाव है। परन्तु वे उसका अध्ययन नहीं कर सकते (उस ज्ञान का उपयोग नहीं कर सकते), इसका कोई अनुमान भी नहीं लगा सकता।

जंगल में भटकते हुए बेचारे कोल-किरात ही वे यात्री हैं जो उस नदी को देखकर थक गये हैं और मन ही मन हार मान रहे हैं। जब करुणा की यह नदी आश्रम-समुद्र से मिली तो मानो वह समुद्र खुल गया। दोनों राज समाज शोक से व्याकुल थे। किसी को न ज्ञान था, न धैर्य, न लज्जा। सभी लोग रो रहे हैं और राजा दशरथ के रूप, गुण और सद्गुणों की प्रशंसा करते हुए दुःख के सागर में डुबकियाँ लगा रहे हैं।

सभी स्त्री-पुरुष दुःख के सागर में डुबकी लगाते-लगाते बड़े दुःखी हो रहे हैं और सोच-विचार कर रहे हैं। वे सभी विधाता पर दोष लगा रहे हैं और क्रोधित होकर कह रहे हैं कि अहितकर विधाता ने क्या किया है? उस समय विदेह (जनकराज) की हालत देखकर तुलसीदासजी कहते हैं कि देवताओं, सिद्धों, तपस्वियों, योगियों और मुनियों में कोई भी ऐसा नहीं है जो प्रेम की नदी को पार कर सके (प्रेम में डूबे बिना रह सके)।

सर्वत्र महर्षियों ने प्रजा को अमर्यादित उपदेश दिये और वशिष्ठजी ने विदेह (जनकजी) से कहा- हे राजन्! आपको धैर्य रखना चाहिए। जिनका ज्ञानरूपी सूर्य गतिरूपी रात्रि को नष्ट कर देता है और जिनकी वाणी की किरणें ऋषियों के कमलों को खिलवा देती हैं (उन्हें प्रसन्न कर देती हैं) क्या उन राजा जनक के प्रति भी मोह और वात्सल्य कभी निकट आ सकते हैं?

यह श्रीसीतारामजी के प्रेम की महिमा है! [अर्थात् राजा जनक की यह दशा श्रीसीतारामजी के अलौकिक प्रेम के कारण हुई, सांसारिक मोह के कारण नहीं। सांसारिक मोह-माया से पार हो चुके लोगों पर भी श्रीसीतारामजी का प्रेम अपना प्रभाव दिखाए बिना नहीं रहता।]

वेदों ने संसार में तीन प्रकार के प्राणियों का वर्णन किया है- विषयी, साधक तथा ज्ञानी एवं सिद्ध पुरुष। इन तीनों में से जिसका मन श्री रामजी की स्तुति से सराबोर है, उसका संतों की सभा में बहुत सम्मान होता है। श्री रामजी के प्रेम के बिना ज्ञान उसी प्रकार शोभा नहीं देता, जैसे पतवार के बिना जहाज। वशिष्ठजी ने विदेहराज (जनकजी) को अनेक प्रकार से समझाया। इसके बाद सभी ने श्री रामजी के घाट पर दंडवत प्रणाम किया।

सभी नर-नारी शोक में डूब गये। वह दिन बिना पानी के बीत गया (भोजन तो दूर, किसी ने पानी भी नहीं पिया)। यहाँ तक कि पशु-पक्षी और हिरण भी कुछ नहीं खाते थे। तो फिर हमें अपने प्रियजनों और रिश्तेदारों के बारे में भी क्यों सोचना चाहिए? निमिराज जनकजी और रघुराज रामचन्द्रजी तथा दोनों ओर के समाज ने दूसरे दिन प्रातःकाल स्नान किया और सब लोग एक बड़े वृक्ष के नीचे बैठे। सबका मन दुःखी और शरीर दुर्बल है।

जो ब्राह्मण दशरथजी की नगरी अयोध्या में रहते थे, और जो ब्राह्मण मिथिलापति जनकजी की नगरी जनकपुर में रहते थे, और सूर्यवंश के गुरु वशिष्ठजी और जनकजी के पुरोहित शतानंदजी, जिन्होंने सांसारिक उत्थान और मोक्ष का मार्ग खोजा था, वे सभी वे धर्म, नीति, त्याग और ज्ञान पर आधारित अनेक उपदेश देने लगे। विश्वामित्रजी ने पूरी सभा को पुरानी कहानियाँ (इतिहास) सुनाकर सुन्दर ढंग से समझाया।

तब श्रीरघुनाथजी ने विश्वामित्रजी से कहा, हे प्रभु! कल सभी लोग पानी पिए बिना रह गए थे [अब हमें कुछ खाना चाहिए]। विश्वामित्रजी ने कहा कि श्रीरघुनाथजी ठीक कहते हैं। ढाई दिन (आज भी) बीत गए। विश्वामित्रजी के भाव देखकर तिरहुतराज जनकजी ने कहा- यहाँ भोजन करना उचित नहीं है। सबके मन में राजा का सुन्दर कथन | अच्छा लगा मुझे। अनुमति पाकर सभी लोग स्नान करने चले गये।

उसी समय वनवासी (कोल-किरात) अनेक प्रकार के फल, फूल, पत्ते, जड़ आदि थैलों और बोझों में भरकर लाये। श्री रामचन्द्रजी की कृपा से सभी पर्वत अभीष्ट वस्तु देने में समर्थ हो गये। वे दर्शन मात्र से ही सारे दुःख दूर कर देते थे। ऐसा लगता है जैसे तालाबों, नदियों, जंगलों और पृथ्वी के सभी हिस्सों में खुशी और खुशी है।

प्रेम उमड़ रहा है. उस अवसर पर जंगल में बहुत उत्साह (खुशी) था, ठंडी, धीमी, सुगंधित हवा चल रही थी जो सभी को खुशी दे रही थी।

वन की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता, मानो पृथ्वी जनकजी की मेजबानी कर रही हो। तब जनकपुर के सभी लोग स्नान करके और श्री रामचन्द्रजी, जनकजी तथा मुनि से अनुमति लेकर उनके सुन्दर स्तनों को देखकर प्रेम से भरकर सभी ओर जाने लगे। अनेक प्रकार के पवित्र, सुन्दर और अमृततुल्य [स्वादिष्ट] पत्ते, फल, मूल और कंद -

श्री रामजी के गुरु वशिष्ठजी ने सभी को आदर सहित पूर्ण भार भेजा। फिर पितरों, अतिथियों तथा गुरु का पूजन करके फल खाने लगे। इस प्रकार चार दिन बीत गये। श्री रामचन्द्रजी को देखकर सभी नर-नारी प्रसन्न हो जाते हैं। दोनों समुदायों के मन में यह इच्छा है कि श्रीसीतारामजी के बिना लौटना अच्छा नहीं है।

श्रीसीतारामजी के साथ वन में रहना करोड़ों देवताओं के निवास के समान सुखदायक है। श्री लक्ष्मणजी, श्री रामजी और श्री जानकीजी को छोड़कर जिसे भी अपना घर अच्छा लगता है, विधाता उसके विरुद्ध हो जाते हैं।

जब भगवान सबके अनुकूल होंगे, तभी श्रीराम वन में निवास कर सकेंगे। मंदाकिनी जी का तीन बार स्नान और भोग, फूलों की माला (समूह) के रूप में श्री राम के दर्शन, श्री राम के पर्वत (कामदनाथ), जंगलों और तपस्वियों के स्थानों में घूमना और अमृत जैसे कंद, मूल और फल खाना। चौदह साल पलक झपकते ही खुशी से बीत जायेंगे और हमें ऐसा महसूस नहीं होगा कि वे जा रहे हैं।

हर कोई कह रहा है कि हम इस खुशी के लायक नहीं हैं, हमारी किस्मत कहां है? दोनों ही समाज अपने स्वाभाविक स्वभाव से श्री रामचड्ढाजी के चरणों में प्रेम रखते हैं। हर कोई यही कामना कर रहा है. उनकी प्रेम भरी बातें सुनते ही [श्रोताओं का] मन मोह लेती हैं। उसी समय सीताजी की माता श्री सुनयनाजी की भेजी दासियाँ कौशल्याजी आदि से मिलने का सुन्दर अवसर देखने आयीं।

उनसे यह सुनकर कि सीता के सभी ससुरालवाले इस समय स्वतंत्र हैं, जनकराजक रनिवास उनसे मिलने आये। कोसल्याजी ने उनका आदरपूर्वक सत्कार किया और उन्हें उचित आसन दिया। दोनों ओर के सबके शील और प्रेम को देखकर और सुनकर कठोर त्वचा भी पिघल जाती है। शरीर रोमांचित और शिथिल है और आंखों में [दुःख और प्रेम के] आंसू हैं। आपके सभी [पैर]। उसने अपने नाखूनों से ज़मीन को खरोंचा और सोचने लगी।

अमृत केवल सुना जा सकता है और विष सर्वत्र प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। विधाता के सभी कार्य भयावह हैं। सर्वत्र कौवे, उल्लू और बगुले ही दिखाई देते हैं; हंस तो मानसरोवर में ही है. यह सुनकर देवी सुमित्राजी दुःखी होकर कहने लगीं----सृष्टिकर्ता का मार्ग बड़ा ही विपरीत और विचित्र है, जो सृष्टि की रचना करके उसका पालन-पोषण करता है और फिर उसका विनाश कर देता है। विधाता की बुद्धि बच्चों के खेल के समान निर्दोष (विवेकहीन) है।

कौसल्याजी ने कहा--किसी का दोष नहीं है; दुःख, सुख, हानि और लाभ सभी कर्म के अधीन हैं। कर्म की गति कठिन (अज्ञेय) है, इसे केवल विधाता ही जानता है, जो शुभ-अशुभ सभी फलों का दाता है। ईश्वर की आज्ञा सबके सिर पर है। वह उत्पत्ति, स्थिति (पालन) और लय (विनाश) तथा अमृत और विष (ये सब भी उसी के अधीन हैं) का प्रधान है। हे देवी! व्यर्थ सोचना बेकार है. सृजक का प्रश्न ऐसा है जो अचल एवं शाश्वत है।

हे मित्र, तुम महाराज की मृत्यु और जीवन की बातें हृदय में स्मरण करके इतनी चिन्ता करते हो। हम अपने स्वार्थ की हानि देखकर ऐसा (स्वार्थवश) करते हैं। माता सीताजी बोलीं- आपका कथन उत्तम एवं सत्य है. आप अवधपति (महाराज दशरथजी) की रानी हैं, पुण्यात्माओं की सीमा हैं। तो फिर, वह ऐसा क्यों नहीं कहेगी?

कौशल्याजी ने दुःखी मन से कहा- यदि श्री राम, लक्ष्मण और सीता वन जायेंगे तो परिणाम अच्छा होगा, बुरा नहीं। मुझे भरत की चिंता है. भगवान की कृपा और आपके आशीर्वाद से, मेरे [चार] बेटे और [चार] बहुएँ गढ़जी के पानी की तरह पवित्र हैं। हाय दोस्त! मुझे कभी श्री राम की सुगंध नहीं आई, इसलिए आज मैं श्री राम की शपथ लेता हूं और यह बात सच्ची भावना से कहता हूं।

भरत की शील, गुण, नम्रता, बड़प्पन, भाईचारा, भक्ति, विश्वास और अच्छाई का वर्णन करने में सरस्वती की बुद्धि भी झिझकती है। समुद्र समुद्र की गहराई तक जा सकते हैं। मैं भरत को सदैव कुलका दीपक के नाम से जानता हूँ। महाराज ने भी मुझसे यही बात बार-बार कही थी। सोने की पहचान तभी होती है जब उसे जौहरी द्वारा परखा और परखा जाता है। इसी प्रकार समय आने पर मनुष्य की परीक्षा उसके स्वभाव से ही (उसके चरित्र को देखकर) की जाती है।

लेकिन आज मेरे लिए ये कहना अनुचित है. शोक और मातम में विवेक (विवेक) कम हो जाता है (लोग कहेंगे कि मैं श्रीहताश भरत की प्रशंसा कर रहा हूं)। कौशल्याजी के गदाजी के समान पवित्र वचन सुनकर सभी रानियाँ प्रेम से अभिभूत हो गईं। कोसल्याजी ने फिर धैर्यपूर्वक कहा-हे देवी मिथिलेश्वरी! ज्ञान के भण्डार श्री जनकजी के प्रियतम, सुनो, तुम्हें क्या उपदेश दिया जाता है?

हे रानी! मौका पाकर आप राजकुमारों को जितना हो सके समझाना चाहिए और कहना चाहिए कि लक्ष्मण को घर में ही रहने दो और भरत को वन में चले जाना चाहिए। यदि यह राय राजा के मन में हो [सही]। अगर आप जांच कर लें तो ऐसी यात्रा करने से पहले अच्छे से सोच लें। मैं भरतका के बारे में बहुत सोचता हूं।

भरत के हृदय में अगाध प्रेम है। मुझे उनके घर में रहना अच्छा नहीं लगता (मुझे डर है कि उनकी जान को खतरा हो सकता है)।

कोसल्याजी का स्वभाव देखकर तथा उनकी सरल एवं उत्तम वाणी सुनकर सभी रानियाँ करुणा में डूब गईं। आकाश से पुष्पों की वर्षा होने लगी और आशीर्वाद की ध्वनि होने लगी। सारा महल देखकर सिद्ध, योगी और मुनि थक गये, तब सुमित्राजी ने धैर्यपूर्वक कहा, हे देवी! दो घंटे बीत गए. यह सुनकर श्री रामजी की माता कोसल्याजी प्रेमपूर्वक उठीं-

और प्रेम और सद्भावना से बोली-अब आप तुरंत डेरेको आ जाइये। अब भगवान हमारी गति हैं, अथवा मिथिलेश्वर जनकजी के सहायक हैं। कोसल्याजी का प्रेम देखकर और उनके विनम्र वचन सुनकर जनकजी की प्रिय पत्नी ने उनके पवित्र चरण पकड़ लिए और बोली- हे देवी! आप राजा दशरथ की रानी और श्री राम की माता हैं। आपकी विनम्रता उचित है.

भगवान अपने तुच्छ लोगों का भी सम्मान करते हैं। वे आग का धुआँ और पहाड़ों की घास अपने सिर पर सहन करते हैं। हमारे राजा कर्म, मन और वाणी से आपके सेवक हैं और श्री महादेव-पार्वतीजी सदैव हमारे सहायक हैं। संसार में ऐसा कौन है जो आपका सहायक बन सके? क्या सूर्य की सहायता करने से दीपक को कहीं यश मिल सकता है? श्री रामचन्द्र जी बन में जाकर देवताओं का कार्य करेंगे और अवधपुरी में अटल राज्य करेंगे।

देवता, नाग और मनुष्य सभी श्री रामचन्द्रजी की भुजाओं के बल पर अपने-अपने लोक (लोक) में सुखपूर्वक रहेंगे॥ यह सब ऋषि याज्ञवल्क्य पहले ही कह चुके हैं। हे देवी! मुनिका का कथन व्यर्थ (झूठा) नहीं हो सकता। ऐसा कहकर बड़े प्रेम से उनके चरणों में गिरकर सीताजी से [सीताजी को साथ भेजने का] निवेदन किया और सुंदर आज्ञा प्राप्त की, तब सीताजी और उनकी माता डेरेको चली गईं।

जानकीजी अपने प्रिय स्वजनों से उसी प्रकार मिलीं, जिसकी वे पात्र थीं। जानकीजिको. उन्हें तपस्वी के भेष में देखकर सभी लोग शोक से अत्यंत व्याकुल हो गये।
जनकजी श्री रामजी के गुरु वशिष्ठजी से आज्ञा लेकर डेरेको गये और यहाँ आकर उन्होंने सीताजी के दर्शन किये। |जनकजी ने अपने पवित्र प्रेम और जीवन की अतिथि जानकीजी को हृदय से लगा लिया।

उनके हृदय में प्रेम [वात्सल्य] का सागर उमड़ पड़ा। राजा का मन मानो प्रयाग की ओर चला गया। उस सागर के अंदर उन्होंने [आदिशक्ति] को देखा। सीताजी के [अप्राकृतिक] प्रेमरूपी अक्षयवटकों को बढ़ते देखा। उस पर (सीताजी के प्रेम रूपी नितंब) श्री राम (बाल रूप में भगवान) के प्रेम रूपी बालक सुशोभित हो रहे हैं।

जनकजी के ज्ञान से चिरंजीवी (मार्कण्डेय) मुनि व्याकुल हो गये और मानो डूब रहे थे, श्री राम के प्रेम रूपी बालक का सहारा पाकर वे बच गये। वस्तुतः ज्ञानीशिरोमणि विदेहराज की बुद्धि मोह-माया में नहीं फँसी है। यह श्रीसीतारामजी के प्रेम की महिमा है।

[जिसने उनके जैसे बड़े-बड़े ज्ञानी भी हतप्रभ रह गए। माता-पिता के प्रेम के कारण सीताजी इतनी व्याकुल हो गयीं कि स्वयं पर नियंत्रण न रख सकीं। [परंतु परम थैर्यवती] पृथ्वी की पुत्री सीताजी ने समय और सुन्दर धर्म का विचार करके थैर्य ले लिया।

सीताजी को तपस्वी वेष में देखकर जनकजी को विशेष प्रेम और संतोष हुआ। उन्होंने कहा--बेटी! आपने दोनों कुलों को पवित्र कर दिया। आपके निर्मल यश से सारा संसार प्रकाशित हो रहा है; ये तो हर कोई कहता है. आपकी यशरूपी देवनदी गंगाजी को भी जीतकर उसी ब्रह्माण्ड में प्रवाहित होती है। यह लाखों ब्रह्माण्डों में प्रवाहित हुई है। गडजाजी ने पृथ्वी पर केवल तीन स्थानों (हरिद्वार, प्रयागगज और गदसागर) को बड़ा (तीर्थ) बनाया है। परन्तु आपके तेज ने अनेक तीर्थों को साधुओं के समान तीर्थ बना दिया है।

पिता जनकजीने तो स्लेहसे! सच सुन्दर शब्द. परन्तु उनका यह बखान सुनकर सीताजी सशंकित हो उठीं। माता-पिता ने उन्हें फिर अपने हृदय से लगा लिया और उन्हें लाभकारी, सुन्दर शिक्षाएँ और आशीर्वाद दिये। सीताजी कुछ नहीं कहतीं, परंतु मन में संकोच करती हैं कि रात को मैं [सास की सेवा छोड़ दूंगी]।

यहां रहना अच्छा नहीं है. जानकीजी के भाव देखकर रानी सुनयना ने (उनकी मंशा को समझकर) राजा जनकजी को जन्म दिया। तब वे दोनों मन ही मन सीताजी के शील और स्वभाव की सराहना करने लगे।

राजा और रानी बार-बार मिले और हार्दिक स्नेह और आदर के साथ सीताजी को विदा किया। समय पाकर चतुर रानी ने राजा से सुन्दर वाणी में भरतजी की स्थिति का वर्णन किया। [समुद्र से निकलने वाले] अमृत में सोने की सुगंध और

चंद्रमा के समान अमृत को सुनकर राजा ने [प्रेम से वशीभूत होकर] भरतजी का व्यवहार सुना।

मैंने (प्रेम के आँसुओं से) पानी से भरी अपनी आँखें बंद कर लीं (ऐसा लग रहा था मानो मैं बे भरतजी के प्रेम में ध्यान कर रहा हूँ)। वे शारीरिक रूप से रोमांचित हो गये और हृदय में हर्ष भरकर भरतजी की सुन्दर कीर्ति की सराहना करने लगे।

, उन्होंने कहा--] वह सुमुखी है! हे सुनयनी! ध्यान से सुनो। भरतजी की कथा तुम्हें संसार के बंधन से मुक्त कर देगी। धर्म, राजनीति और ब्रह्मविचार - इन तीन विषयों में मुझे अपनी बुद्धि के अनुसार (कुछ-कुछ) ज्ञान है (अर्थात् कुछ-कुछ जानता हूँ)।

भरतजी के चरित्र, यश, कर्म, धर्म, शील, गुण और शुद्ध ऐश्वर्य सभी को समझने और सुनने में सुख देते हैं और सभी पवित्रता में गदाजी और स्वाद (मिठास) में अमृत का तिरस्कार करते हैं। भरतजी अनन्त गुणों से सम्पन्न तथा उपमा रहित पुरुष हैं। भरतजी की तरह यह जान लो कि ये भरतजी ही हैं। सुमेरू पर्वत किस सेर के बराबर कहा जा सकता है? इसलिये (उसकी तुलना पुरुष से करने में) कवि समाज की बुद्धि भी भ्रमित हो गयी।

हे श्रेष्ठ वर्णमाला! भरतजी की महिमा का वर्णन करना जलहीन पृथ्वी पर मछली के चलने के समान सभी के लिए अकल्पनीय है। हे रानी! सुनो, भरतजी की अनन्त महिमा केवल श्री रामचन्द्रजी ही जानते हैं; लेकिन वे भी इसका वर्णन नहीं कर सकते.

इस प्रकार प्रेम के पहले भरतजी के प्रभाव का वर्णन करके और फिर अपनी पत्नी के मन की रुचि जानकर राजा ने कहा- लक्ष्मणजी को लौट जाना चाहिए और भरतजी को वन में चले जाना चाहिए, इसी में सबकी भलाई है और यही सबके मन में है।

परन्तु हे देवी! भरतजी और श्री रामचन्द्रजी का एक दूसरे के प्रति प्रेम और विश्वास बुद्धि और विचार तक सीमित नहीं हो सकता। यद्यपि श्री रामचन्द्रजी समता की सीमा हैं, फिर भी भरतजी प्यार और स्नेह की सीमा है.

भरतजी ने श्री रामचन्द्रजी के प्रति अनन्य प्रेम के अतिरिक्त अन्य किसी परोपकारिता, स्वार्थ और सुख-सुविधा के बारे में अपने मन की कीमत पर भी नहीं सोचा है। श्री गमजी के चरणों का प्रेम ही उनका साधन है और वही उनकी सफलता है। मुझे तो यही भरतजी का एकमात्र सिद्धान्त प्रतीत होता है।

राजा ने सिसकते हुए (प्रेम से अति प्रसन्न होकर) कहा-भरतजी भूलकर भी या मन से भी श्री रामचन्द्रजी की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करेंगे। इसलिए क्रोध के वशीभूत होकर चिंता नहीं करनी चाहिए। प्रेमपूर्वक श्री रामजी और भरतजी के गुणों का वर्णन करते-करते पति-पत्नी को रात पलक झपकते ही बीत गई। प्रातःकाल दोनों राजपुरुष उठे, स्नान किया और देवताओं की पूजा करने लगे।

स्नान करके श्रीरघुनाथजी गुरु वशिष्ठजी के पास गये और उनके चरण वंदन करके उनका ध्यान पाकर बोले- हे नाथ! भरत, अवधपुर की प्रजा तथा माताएँ सभी शोक से व्याकुल तथा वनवास से दुःखी हैं। मिथिलापति राजा जनकजी भी समाज सहित बहुत समय तक दुःख भोगते रहे हैं। इसलिये हे प्रभु! जो सही है वही करो. सभी का कल्याण आपके हाथ में है.

ऐसा कहकर श्रीरघुनाथजी बहुत घबरा गये। उनके विनम्र स्वभाव को देखकर ऋषि वशिष्ठजी प्रेम और आनंद से भर गये। [उन्होंने खुलकर कहा--] हे राम! आपके बिना । घर-बार आदि संपूर्ण सुख के साधन दोनों राजसमाजों के लिए नरक के समान हैं। हे राम - आप समस्त प्राणियों के प्राण, समस्त आत्माओं के प्राण और समस्त सुखों के सुख हैं। हे पिता! तुम्हारे सिवा जो घर को पसंद करते हैं, विधाता उसके विरुद्ध है।

जहां श्री राम के चरण कमलों में प्रेम नहीं है, वहां सुख, कर्म और धर्म जल जाना चाहिए। जिसमें श्री राम के प्रेम की प्रधानता नहीं है, वह योग बुरा है और वह ज्ञान अज्ञान है।
तुम्हारे बिना हर कोई दुखी है और जो खुश हैं वो तुम्हारी वजह से ही खुश हैं। आप वो सब कुछ जानते हैं जो किसी के मन में है. आपकी आज्ञा सबके ऊपर है. कृपालु (आप) हर किसी की स्थिति को अच्छी तरह से जानते हैं।

इसलिए, आपको आश्रम का दौरा करना चाहिए। इतना कहकर मुनिराज स्नेह से निश्चिंत हो गये। तब श्री राम जी प्रणाम करके चले गये और मुनि वशिष्ठ जी धैर्यपूर्वक जनक जी के पास आये। गुरु जी ने श्री रामचन्द्र जी के समान प्रेम और नम्रता से राजा जनक जी को सुन्दर वचन सुनाये [और बोले--] हे महाराज! अब वही करो जो धर्म सहित सबके हित में हो।

हे राजा! आप ज्ञान के भण्डार, हितैषी, धर्मात्मा और धर्म में दृढ़ हैं। इस समय आपके बिना इस दुविधा को सुलझाने में और कौन सक्षम है? मुनि वशिष्ठजी के वचन सुनकर जनकजी प्रेम में मग्न हो गये। उनकी हालत देखकर ज्ञानथ और वैराग्य भी वैराग्य हो गये (अर्थात् ज्ञान के प्रति उनका वैराग्य नष्ट हो गया)। वे

प्रेम से निश्चिन्त हो गये और मन में सोचने लगे कि हमारा यहाँ आना अच्छा नहीं हुआ।

राजा दशरथजी ने श्रीरामजी को वन में जाने के लिए कहा और उन्होंने स्वयं अपने प्रियतम के प्रेम को सिद्ध (सच्चा) किया (अपने प्रियतम के वियोग में अपने प्राण त्याग दिए), परंतु अब हम उन्हें गहन वन में भेजेंगे और वहाँ आनन्द मनाते हुए लौटेंगे। हमारी बुद्धि की महानता; कि हमारा कोई मोह ही नहीं; हम श्री रामजी को वन में छोड़कर चले गये, दशरथजी की तरह नहीं मरे!

यह सब सुनकर और देखकर तपस्वी, ऋषि और ब्राह्मण प्रेम से अत्यंत व्याकुल हो गये। समय का विचार करके राजा जनकजी ने धैर्य रखा और समाज सहित भरतजी के पास गये। भरतजी आये और उन्हें आगे ले गये।आना सामने आकर उनका स्वागत किया) और उन्हें समय के अनुसार अच्छी सीटें दीं। जनकजी कहने लगे- हे तात भरत! श्री रामजी का स्वरूप तो आप जानते ही हैं।

श्री रामचन्द्रजी सच्चे भक्त और धार्मिक व्यक्ति हैं, वे सभी के प्रति आदर और स्नेह रखते हैं। इसीलिए वे संकट का सामना झिझक कर कर रहे हैं; अब आप जो भी आदेश दें, उन्हें बता देना चाहिए. यह सुनकर भरतजी बहुत प्रसन्न हुए और आँखों में आँसू भरकर बड़े धैर्य से बोले- हाँ प्रभु! आप हमारे पिता के समान ही प्रिय एवं पूजनीय हैं। और माता-पिता भी कुलगुरु श्री वसिष्ठजी जितने शुभचिंतक नहीं हैं।

विश्वामित्रजी आदि ऋषि-मुनियों का समाज है। और आज आपके ऊपर भी ज्ञान का सागर मौजूद है. हे प्रभो! मुझे अपना बच्चा, सेवक और आज्ञा मानने वाला समझकर शिक्षा दो। इस समाज और [पुण्य] स्थान में, आपको [जानकार और श्रद्धेय की तरह] पूछना चाहिए! अगर मैं इस पर चुप रहूँ तो गंदा समझा जाऊँगा; और कुछ भी कहना पागलपन होगा, फिर भी मैं छोटे मुँह से बड़ी बातें कह देता हूँ। हे पिता! कृपया विधाता को प्रतिकूल समझकर क्षमा करें।

यह वेदों, शास्त्रों और पुराणों में प्रसिद्ध है और दुनिया जानती है कि सेवा करना बहुत कठिन है। स्वामीधर्म (अपने स्वामी के प्रति कर्तव्य की पूर्ति) और स्वार्थ (दोनों को एक साथ नहीं निभाया जा सकता) के बीच संघर्ष है। दुश्मनी अंधी होती है और प्यार का कोई ज्ञान नहीं होता. [मैं स्वार्थ कहूं या प्रेम, दोनों में गलती होने का डर रहता है।]

इसलिये मुझे पराधीन जानकर (मुझसे बिना पूछे), श्री रामचन्द्रजी के भाव (रुचि), धर्म और [सत्य के] व्रत को ध्यान में रखते हुए, जो सबको प्रिय हो और सबके हित में हो, वही सबके प्रति प्रेमपूर्वक करो।

भरतजी की बातें सुनकर और उनके स्वभाव को देखकर समाज सहित राजा जनक उनसे सहमत हो गये। सराहना करने लगे. भरतजी के वचन सहज और दुर्गम, सुन्दर, कोमल और कठोर हैं। इनमें अक्षर तो कम हैं, परन्तु अर्थ बहुत विशाल है।

जैसे दर्पण में चेहरे का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है और दर्पण हाथ में होने पर भी वह (चेहरे का प्रतिबिम्ब) पकड़ में नहीं आता, उसी प्रकार भरतजी की यह अद्भुत वाणी भी पकड़ में नहीं आती (शब्दों से इसका अर्थ समझ में नहीं आता)). किसी को कुछ जवाब नहीं दे सके.

तब राजा जनकजी, भरतजी और मुनि वशिष्ठजी समाज सहित उस स्थान पर गये, जहाँ कुमुदिनी रूपी देवताओं ने सरस्वती का स्मरण किया और उनकी स्तुति की और कहा- हे देवी!

देवता आपकी शरण में आये हैं, उनकी रक्षा कीजिये। अपनी माया रचकर भरतजी का मन फेर दो। श्रीरामचड्ढाजी चंद्रमा को छाया प्रदान करके देवताओं के कुल की रक्षा (रक्षा) करें।

यह समाचार सुनकर सभी लोग सोच-विचार में उसी प्रकार व्याकुल हो गये, जैसे नये (प्रथम वर्ष) जल के सम्पर्क में आने पर मछलियाँ व्याकुल हो जाती हैं। देवताओं ने पहले कुलगुरु वशिष्ठजी की दुर्दशा देखी और फिर विदेहजी का विशेष स्नेह देखा; तभी मैंने भरतजी को श्री राम की भक्ति से परिपूर्ण देखा। यह सब देखकर स्वार्थी देवता भयभीत हो गये और निराश होकर हार मान गये। उन्होंने सभी को श्रीराम के प्रेम में सराबोर देखा। इससे देवता लोग सोच-विचार में इतने डूब गये कि इसका कोई हिसाब नहीं रहा।

देवराज इन्द्र ने विचारशील होकर कहा कि श्री रामचन्द्रजी स्नेह और संकोच के वश में हैं। तो हर कोई एक साथ करो एक साथ कुछ. भ्रम पैदा करें (भ्रम); नहीं तो काम बिगड़ जाता है. देवताओं ने सरस्वती का स्मरण कर उनकी स्तुति की और कहा- हे देवी! देवता आपकी शरण में आ गये हैं, उनकी रक्षा कीजिये। तुम अपनी माया रचकर भरतजी का मन विचलित कर दो। और छाया देकर देवताओं के कुल की रक्षा (रक्षा) करो।

देवताओं की प्रार्थना सुनकर और यह जानकर कि देवता अपने स्वार्थ के कारण मूर्ख बन गये हैं, बुद्धिमान सरस्वती ने कहा- आप मुझसे भरतजी का मन बदलने के लिये कह रहे हैं। तुम हजार आँखों से भी सुमेरु को नहीं देख सकते! ब्रह्मा, विष्णु और महेश की माया बहुत प्रबल है! परन्तु भरतजी की बुद्धि को वह भी नहीं देख सकती। आप उन बुद्धियों को निर्दोष बनाने के लिए मुझसे कह रहे हैं (उन्हें यह भूला दीजिए) कि क्या चाँदनी अपनी तीव्र किरणों से सूर्य को चुरा सकती है?

भरतजी के हृदय में श्रीसीतारामजी निवास करते हैं। जहाँ सूर्य का प्रकाश है, क्या वहाँ अँधेरा हो सकता है? ऐसा कहकर सरस्वतीजी ब्रह्मलोक चली गईं। देवता ऐसे व्याकुल हो गये जैसे रात्रि में मक्खी व्याकुल हो जाती है। दुष्टबुद्धि स्वार्थी देवताओं ने बुरी सलाह दी और बुरा षड्यन्त्र रचा। वे भ्रम का जाल रचकर भय, भ्रम, घृणा और अत्याचार फैलाते हैं।

देवराज इंद्र को कुचलने के बाद सोचने लगे कि कामका को बनाना और तोड़ना सब भरतजी के ही हाथ में है। इधर राजा जनकजी [वशिष्ठ मुनि आदि सहित] श्रीरघुनाथजी के पास गये। सूर्य कुल के दीपक श्री रामचन्द्र जी ने सबका आदर किया तो रघु कुल के पुरोहित वशिष्ठ जी ने ऐसी बातें कहीं जो समय, समाज और धर्म के प्रतिकूल न थीं। उन्होंने सबसे पहले जनकजी और भरतजी का संवाद सुनाया। फिर उन्होंने भरतजी द्वारा कहे हुए सुन्दर वचन सुनाये।

[फिर बोले--] हे तात राम ! मेरी राय तो यह है कि सब कुछ आपकी आज्ञा के अनुसार ही करना चाहिए। यह सुनकर श्रीरघुनाथजी दोनों हाथ जोड़कर सरल और मृदुल स्वर में सत्य वचन बोले- मिथिलेश्वर जनकजी के सामने मेरा कुछ भी कहना सब प्रकार से अनुचित है। मैं तुम्हें शपथ दिलाता हूं कि तुम्हारी और महाराज की जो आज्ञा होगी, वही सत्य होगा और सब लोग उसका पालन करेंगे।

श्री रामचड्ढा जी की प्रतिज्ञा सुनकर मुनि और जनक जी सहित सभा को आश्चर्य (स्तब्ध) हो गया। किसी को उत्तर देते नहीं बन रहा, सब भरतजी का मुँह ताक रहे हैं। भरतजी ने सकुचाते हुए सभा की ओर देखा। रामबंधु (भरतजी) ने बड़े धैर्य से और असामयिक परिणाम देखकर अपने प्रेम को वैसे ही नियंत्रित किया, जैसे अगस्त्यजी ने बढ़ते हुए विंध्याचल को रोका था।

हिरण्याक्ष ने दु:ख रूपी बुद्धि रूपी पृथ्वी को, जो कि विमल गुण रूपी संसार का गर्भ था, हर लिया। भरतजी के विवेक रूपी विशाल शूकर (वराह रूपी भगवान) ने [शोक रूपी हिरण्याक्ष को नष्ट कर दिया। बिना किसी प्रयास के उसे बचा लिया!

भरत जी ने सबको प्रणाम किया और हाथ जोड़कर श्री रामचन्द्र जी, राजा जनक जी, गुरु वशिष्ठ जी तथा ऋषि-मुनियों से विनती की- कृपया आज मेरे द्वारा किये गये इस अनुचित व्यवहार को क्षमा करें। मैं कोमल (छोटे) मुँह से कठोर (अशिष्ट) शब्द बोल रहा हूँ।

तब उन्होंने मन ही मन मनोहर सरस्वतीजी का स्मरण किया। वह मानस (उनका मानसिक रूप मानसरोवर) से आई और उनके मुख पर बैठ गई। शुद्ध अंतःकरण, धर्म और नीति से परिपूर्ण भरतजी की वाणी सुन्दर हंस (गुण-दोष का विचार करने वाली) के समान है। अंतरात्मा की आँखों से समस्त समाज को प्रेम से निश्चिन्त देखकर, सबको प्रणाम करके, श्री सीताजी और श्री रघुनाथजी का स्मरण करके भरतजी ने कहा---

हाय भगवान्! आप पिता, माता, मित्र, गुरु, स्वामी, पूजनीय, हितैषी और अंतर्यामी हैं। वह सरल हृदय वाला, महान गुरु, विनय का भंडार, शरणागत की रक्षा करने वाला, सर्वज्ञ, ज्ञानी, समर्थ, शरणागत की भलाई करने वाला, गुणों का आदर करने वाला और अवगुणों को हरने वाला होता है। और पाप. हे गोसाईं! तुम भी मेरे जैसे मालिक हो और अपने मालिक को धोखा देने में मैं भी तुम्हारे जैसा ही हूं।

हालाँकि पुच ऊँची और नीची है। अमिया अमरपद महरु मीचू॥ मैं भगवान (आप) और अपने पिता के वचनों का उल्लंघन करके तथा समाज को एकत्रित करके मोहवश यहाँ आ गया हूँ। संसार में अच्छा-बुरा, ऊंच-नीच, अमृत और अमरता (देवताओं का पद), विष और मृत्यु आदि - मैंने कहीं भी ऐसा कोई नहीं देखा या सुना जो मन में भी श्री रामचन्द्रजी (आपकी) आज्ञा का उल्लंघन करता हो। मैंने हर तरह से वही गुस्ताखी की, लेकिन भगवान ने उस गुस्ताखी को प्रेम और सेवा के रूप में स्वीकार कर लिया।

हे नाथ! आपने अपनी दयालुता और भलाई से मेरा भला किया, जिससे मेरे अवगुण भी सुन्दरता (गुण) के समान हो गये और मेरी सुन्दर कीर्ति सर्वत्र फैल गयी।

हे नाथ! अपने तौर-तरीके और ख़ूबसूरत स्वभाव का; वैभव जगत् में विख्यात है, और वेद शक्तारों द्वारा गाये जाते हैं। जो क्रूर, कुटिल, दुष्ट, मूर्ख, आलसी, नीच, बेशर्म, नास्तिक और निडर होते हैं।

उन्हें अपने सामने शरण में आते हुए सुनकर एक बार प्रणाम करने के बाद ही आपने उन्हें स्वीकार किया। आपने उन (शरणार्थियों) के दोष देखकर भी कभी उन्हें हृदय पर नहीं लगाया और उनके गुणों को सुनकर साधु-समाज में उनकी प्रशंसा की।

ऐसा स्वामी कौन है जो नौकर पर दयालु हो, जो नौकर के लिए सभी चीजों की व्यवस्था स्वयं करता हो (उसकी सभी जरूरतों को पूरा करता हो) और यहां तक कि बिना किसी काम को अपना समझे (अर्थात यह जाने कि मैंने उसके लिए कुछ भी नहीं किया है) नौकर), इसके विपरीत, नौकर को झिझक महसूस होगी, यह विचार अपने दिल में रखें!

मैं भुजाएँ उठाकर प्रतिज्ञा करता हूँ और (बड़े बल से) कहता हूँ, आपके अतिरिक्त ऐसा स्वामी कोई नहीं है। [बंदर आदि] जानवर नृत्य करते हैं और तोते [सीखा] पाठ में निपुण हो जाते हैं। लेकिन तोते की गुणवत्ता [शिक्षण दक्षता] और जानवर के नृत्य की गति [क्रमशः] शिक्षक और नृत्य करने वाले पर निर्भर होती है।

इस प्रकार तू ने अपने सेवकों की बुरी बातें सुधारकर और उनका आदर करके उन्हें पवित्रों का मुकुट पहनाया। दयालु (तुम्हारे) सिवा और कौन बलपूर्वक (हठपूर्वक) अपनी इच्छा का पालन करेगा? ॥ आर्य, मैंने चाहे दु:ख के कारण, चाहे स्नेह के कारण या बाल-स्वभाव के कारण ही आज्ञा छोड़ दी (उनका पालन न करके) फिर भी दयालु प्रभु (आप) ने मुझ पर दृष्टि की और मुझे सब प्रकार से अच्छा समझा (मेरे इस गलत कार्य को भी अच्छा माना)।

मैंने सुंदर मुदजलाओं के आधार पर आपके चरण देखे और मुझे एहसास हुआ कि भगवान स्वभाव से ही मेरे अनुकूल हैं। इस बड़े समाज में. मैंने अपना भाग्य देखा और इतनी बड़ी गलती के बावजूद स्वामी को मुझसे कितना प्यार है।

कृपानिधान ने मुझ पर प्रचुर आशीर्वाद और दया बरसाई है (अर्थात् आपने मुझ पर ऐसी अपार कृपा की है जिसका मैं बिल्कुल भी पात्र नहीं था)। हे गोसाईं! आपने अपनी विनम्रता, स्वभाव और अच्छाई से मुझे प्यार किया।
हे नाथ! मैंने अपने स्वामी और समाज की झिझक को छोड़कर, जैसा मुझे लगा, उतनी नम्रतापूर्वक, विनम्रतापूर्वक बोलकर पूरी धृष्टता का परिचय दिया है। अरे बाबा ! मेरी उत्कंठा जानकर आप मुझे क्षमा कर देंगे।

किसी हितैषी (बिना कारण भलाई करने वाले), बुद्धिमान तथा श्रेष्ठ गुरु से बहुत अधिक कहना बहुत बड़ा अपराध है। इसलिये हे भगवन्! अब कृपया मुझे अनुमति दें, आपने जो कुछ मैंने कहा था उसे सही कर दिया है। भगवान (आप)

के चरण कमलों के रहस्य, जो कि सत्य, अच्छाई (गुण) और खुशी की सुखद सीमा (अवधि) है, का आह्वान करके, मैं उस इच्छा (इच्छा) को व्यक्त करता हूं जो जागते समय मेरे दिल में रहती है , सोना और यहां तक कि आत्म-प्रेम में भी।

वह हित है छल, स्वार्थ और चारों फलों धन, धर्म, काम और मोक्ष को छोड़कर हितकारी प्रेम से भगवान की सेवा करना। और श्रेष्ठ गुरु की आज्ञाकारिता के समान कोई सेवा नहीं है। अरे बाबा! अब वही प्रसाद सेवक को आदेश के रूप में देना चाहिए।

ऐसा कहकर भरतजी प्रेम से अत्यंत असहाय हो गये। शरीर रोमांचित हो गया, आँखों में प्रेम के आँसू भर आये। अकुलाकर (व्याकुल होकर) उसने पकड़ा भगवान श्री रामचन्द्र जी के चरण कमल। उस समय के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता.

दयालु श्री रामचन्द्रजी ने अपनी सुन्दर वाणी से भरतजी का आदर-सत्कार किया और हाथ पकड़कर अपने पास बैठा लिया। भरतजी की विनती सुनकर और उनका स्वभाव देखकर सारी सभा और श्रीरघुनाथजी प्रेम से निश्चिंत हो गये। श्रीरघुनाथ जी), ऋषियों का समाज, मुनि वशिष्ठ जी और मिथिलापति जनक जी प्रेम से निश्चिंत हो गये।

सब लोग भरतजी के भाईचारे और उनकी भक्ति की अपार महिमा की सराहना करने लगे। देवता मलिन मानस से भरतजी की स्तुति करने लगे और उन पर पुष्प वर्षा करने लगे। तुलसीदासजी कहते हैं--भरतजी की वाणी सुनकर सब लोग व्याकुल हो गये और रात्रि के आगमन से कमल के समान मुरझा गये।

दोनों समाज के सभी स्त्री-पुरुषों को दीन-दुखी देखकर मलिन बुद्धि वाला इंद्र मृतकों को मारकर सत्ता प्राप्त करना चाहता है। देवराज इन्द्र छल और दुष्टता की पराकाष्ठा हैं। उसे केवल किसी और की हानि और अपना लाभ प्रिय है। इचद्रक्री अनुष्ठान को के समान है। वह धोखेबाज और गंदी सोच वाला है, उसे किसी पर भरोसा नहीं है।

तब सभी देवमाया पर विशेष मोहित हो गये। परन्तु वे श्री रामचन्द्रजी के प्रेम से पूर्णतः पृथक नहीं हुए थे (अर्थात् श्री रामजी के प्रति उनका प्रेम अभी भी कुछ सीमा तक शेष था)।

भय और चिंता के कारण किसी का मन स्थिर नहीं रहता। एक क्षण में वे जंगल में रहना चाहते हैं और एक ही क्षण में उन्हें घर अच्छे लगने लगते हैं। लोगों के मन में इस तरह की दुविधा होने से वे दुखी हो रहे हैं. मानो नदी और समुद्र का संगम हो. जल क्रोधित हो रहा है. (जैसे नदी और समुद्र के बीच का पानी स्थिर नहीं रहता, कभी इधर आता, कभी उधर जाता, वही स्थिति लोगों के मन में हो गई।)

वे कहीं भी संतुष्ट नहीं होते क्योंकि उनका मन दो तरफा होता है और वे एक-दूसरे को अपना मतलब भी नहीं बताते। दयालु श्री रामचन्द्रजी यह अवस्था देखकर मन ही मन हँसे और बोले- कुत्ता, इन्द्र और युवक (कामुक पुरुष) एक ही (एक ही स्वभाव के) हैं। [पाणिनि व्याकरण के अनुसार स्वां, युवान् और मघवन् शब्दों के रूप भी एक जैसे हैं]

भरतजी, जनकजी, ऋषियों, मंत्रियों और बुद्धिमान ऋषियों के अलावा, बाकी सभी को दैवीय शक्ति का आशीर्वाद मिला, जिसे उन्होंने (किसी भी प्रकृति और स्थिति के) योग्य पाया। कृपासिंधु श्री रामचन्द्रजी ने अपने प्रेम और देवराज इन्द्र के भारी छल से प्रजा को दुःखी देखा। भरत जी की भक्ति से सभा में राजा जनक, गुरु, ब्राह्मण और मंत्री आदि सभी की बुद्धि तीव्र हो गयी।

सभी लोग चित्रलिखे से श्री रामचन्द्रजी की ओर देख रहे हैं। सिखाए गए शब्दों को झिझकते हुए बोलता है। भरतजी की प्रेम, नम्रता, दीनता और महानता सुनने में तो अच्छी लगती है, परन्तु वर्णन करना कठिन है। जिनकी भक्ति देखकर ऋषि-मुनि और मिथिलेश्वरी जानकीजी प्रेम में मग्न हो गये, तुलसीदास भरतजी की महिमा का गुणगान कैसे कर सकते हैं? उनकी भक्ति और सुन्दर भावनाओं से [कवि के] हृदय आलोकित (विकासशील) हो रहे हैं।

परन्तु वह बुद्धि अपने को छोटी और भरतजी की महिमा को बड़ी मानकर सशंकित हो गयी (वर्णन करने का साहस न कर सकी) और काव्य-परम्परा की सीमा को स्वीकार कर लिया। उसके गुणों में बड़ा रस है; लेकिन उन्हें बता नहीं सकते. बुद्धि की गति बालक के बोल जैसी हो गई (वह निराश हो गई)! भरतजी का निर्मल यश निर्मल चंद्रमा है और कवि की बुद्धि चकोरी है, जो भक्तों के हृदय में निर्मल आकाश में चंद्रमा को उगते हुए देखकर उसकी ओर देखती रहती है, फिर उसका वर्णन कौन कर सकता है?

भरतजी के स्वभाव का वर्णन वेदों के लिये भी सरल नहीं है। [तो] कवियों, कृपया मेरी तुच्छ बुद्धि की बेचैनी को क्षमा करें। भरतजी की सद्भावना भरी बातें सुनकर कौन मनुष्य श्रीसीतारामजी के चरणों में प्रेम न कर लेगा। जो भरतजी

का स्मरण करके श्री रामजी का प्रेम न पा सके, उसके समान अभागा (अभागा) कौन होगा? सबकी दशा देखकर और भक्त (भरतजी) के हृदय का हाल जानकर कृपालु श्री रामजी!

धार्मिक, धैर्यवान, नीति में चतुर; सत्य, स्नेह, शील और प्रसन्नता का सागर; नीति और प्रेम पर चलने वाले श्रीरघुनाथजी देश, काल, अवसर और समाज को देखकर उसके अनुसार आचरण करते हैं। उन्होंने ऐसे वचन कहे जो वाणी का सार प्रतीत होते थे, परिणाम देने वाले होते थे और सुनने में चन्द्रमा के समान अमृत के समान लगते थे। [उन्होंने कहा--] हे भरत के पिता! आप धर्म की धुरी को धारण करने वाले, लोक और वेद दोनों के ज्ञाता तथा प्रेम विद्या में निपुण हैं।

हे पिता! आप मेरे समान कर्म, वाणी और मन से शुद्ध हैं। गुरुजनों के समाज में और ऐसे बुरे समय में छोटे भाई के गुणों का वर्णन कैसे किया जा सकता है? हे पिता! आप सूर्य कुल की रीति, सत्यप्रिय पिता की कीर्ति और प्रेम, समय, समाज और गुरुजनों के शील तथा मित्र और शत्रु सभी के विचारों को जानते हैं।

आप सबके कर्म (कर्तव्य) तथा अपने और मेरे परम हितकारी धर्म को जानते हैं। हालाँकि मैं. मैं तुम पर हर तरह से भरोसा करता हूं, फिर भी वक्त के हिसाब से कुछ न कुछ कहता हूं. अरे बाप रे! पिता के बिना (उनकी अनुपस्थिति में) गुरुवंश की कृपा से ही हमारी बात चलती है; अन्यथा हमारी प्रजा, परिजन और सभी लोग नष्ट हो जाते।

यदि सूर्य बिना समय (सूर्यास्त से पहले) अस्त हो जाए तो बताओ इस संसार में कौन दुःख भोगेगा? हे पिता! उसी प्रकार का उत्पात रचने वाले ने यह (पिता की असामयिक मृत्यु) किया है। मुनि महाराज तंथा मिथिलेश्व ने सभी को बचाया। राज्य, लज्जा, प्रतिष्ठा, धर्म, पृथ्वी, धन, मकान - ये सब गुरुजी के प्रभाव (शक्ति) से सुरक्षित रहेंगे और परिणाम शुभ होगा।

गुरुजी का प्रसाद (कृपा) घर और जंगल में समाज के साथ-साथ आपका और हमारा रक्षक है। वह माता, पिता, गुरु तथा स्वामी की आज्ञा का पालन करने तथा समस्त धर्मों रूपी पृथ्वी का पालन करने में शेषजी के समान हैं।

हे तत्! तुम भी वैसा ही करो और मुझसे भी ऐसा ही करवाओ और सूर्यकुल के रक्षक बन जाओ। साधक के लिए यह (आज्ञा रूपी साधना) संपूर्ण सिद्धियाँ, यश, अच्छी प्रगति और धन देने वाली त्रिमूर्ति है।

इस बारे में सोचें और बड़ी मुसीबत झेलने के बाद भी अपने लोगों और परिवार को खुश रखें। अरे भइया! सभी ने मेरी तकलीफें साझा की हैं, लेकिन आपको एक अवधि (चौदह वर्ष) (सबसे अधिक दुःख) के लिए बड़ी कठिनाई हुई है। तुम्हें कोमल जानकर भी मैं यह बात कठोरता से (अलगाव की बात) कह रहा हूँ। हे पिता! बुरे वक्त में मेरे लिए ये अनुचित नहीं है.' बुरे वक्त में अच्छे भाई ही मदद करते हैं. वज्र के प्रहार को भी हाथ से रोका जा सकता है।

तुलसीदासजी कहते हैं कि सुकवि सेवक स्वामी का ऐसा प्रेमपूर्ण व्यवहार सुनकर उनकी प्रशंसा करते हैं। प्रेम सागर के अमृत (मंथन से निकली हुई) से भीगी हुई प्रतीत होने वाली श्री रघुनाथजी की वाणी सुनकर सारा समाज निश्चिंत हो गया; हर कोई प्यार के नशे में डूब गया। यह हालत देखकर सरखटीना चुप रही।

भरतजी को अत्यंत संतुष्टि हुई। जैसे ही वह भगवान के अनुकूल हो गया, उसके दुःख और दोष दूर हो गए (वे उसे छोड़कर भाग गए)। उसका चेहरा प्रसन्न हो गया और उदासी दूर हो गई। मानो उस गूंगे पर सरस्वती ने आशीर्वाद दे दिया हो। उन्होंने पुनः प्रेमपूर्वक प्रणाम किया और कमल पुष्पों को जोड़कर कहा- हे भगवन्! आपके साथ जाने का सौभाग्य भी मिला और इस संसार में जन्म लेने का लाभ भी मिला।

वह दयालु है! अब जो भी आदेश होगा, मैं उसका सम्मानपूर्वक पालन करूँगा! लेकिन देव. कृपया मुझे वह सहारा (कोई सहारा) दीजिए जिसकी सेवा करके मैं काल को पार कर सकूं (अवधि काट सकूं) ॥हे भगवन्। स्वामी (आप) के अभिषेक हेतु गुरुजी की अनुमति प्राप्त कर मैं सभी तीर्थ स्थानों से जल ले रहा हूँ; उसके लिए क्या आदेश है?

मेरे मन में एक और बड़ी इच्छा है, जो भय और संकोच के कारण कह नहीं पाती। बोले--]अरे भाई! कहना। तब प्रभु की आज्ञा पाकर भरतजी प्रेम से भरी सुन्दर वाणी में बोले- यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं चित्रकूट के तीर्थों, तीर्थों, वनों, पशु-पक्षियों, तालाबों, नदियों, झरनों और समूहों का दर्शन करूँ। पहाड़ों की और विशेष रूप से प्रभु (आप) के पदचिह्नों से चिह्नित भूमि की।

[श्रीरघुनाथजी ने कहा--] निश्चय ही अत्रि ऋषि की आज्ञा सिर पर रख (उनसे पूछकर जो कुछ वे कहें वही करना) और निर्भय होकर वन में विचरण करो। अरे भइया! अत्रि मुनि के प्रसाद से वन-सुख का दाता, परम पवित्र और अत्यंत सुन्दर है -

और जहां भी ऋषियों के प्रमुख अत्रिजी आदेश दें, वहां तीर्थ द्वारा लाया गया जल स्थापित करें। भगवान के वचन सुनकर भरतजी प्रसन्न हो गये और प्रसन्न होकर अत्रिजी मुनि के चरणों में सिर झुका दिया।

भरतजी और श्री रामचन्द्रजी का संवाद सुनकर सम्पूर्ण सुन्दर मंगलमय पदार्थों के मूल स्वार्थी देवता रघुकुल की प्रशंसा करके कल्पवृक्ष के पुष्पों की वर्षा करने लगे। 'भरतजी धन्य हैं, प्रभु श्री राम की जय!' ऐसा कहकर देवता अत्यंत प्रसन्न होने लगे। भरतजी के वचन सुनकर ऋषि वशिष्ठजी, मिथिलापति जनकजी तथा सभा में उपस्थित सभी लोगों को हर्ष हुआ।

विदेहराज जनकजी भरतजी और श्री रामचन्द्रजी के गुणों के समूह और प्रेम से बहुत रोमांचित हुए। तारीफ कर रहे हैं. नौकर और मालिक दोनों का व्यवहार सुन्दर होता है। उनका नियम और प्रेम पवित्र लोगों को भी अति पवित्र बना देता है। मंत्री और पार्षद सभी उन पर मोहित हो गये और उनकी बुद्धिमत्ता की सराहना करने लगे।

श्री रामचन्द्रजी और भरतजी का वार्तालाप सुनकर दोनों समुदायों के हृदयों में हर्ष और विषाद (भरतजी के सेवाधर्म को देखकर हर्ष और राम के वियोग की सम्भावना पर दुःख) दोनों हो गये।

श्री रामचन्द्रजी की माता कोसल्याजी ने दुःख और सुख को समान जानकर अन्य रानियों को भी श्री रामजी के गुण कहकर प्रोत्साहित किया। कोई श्रीगमजी की महानता की चर्चा कर रहा है, तो कोई भरतजी की अच्छाइयों की प्रशंसा कर रहा है.

तब अत्रिजी ने भरतजी से कहा- इस पर्वत के पास एक सुन्दर कुआँ है। इसमें इस पवित्र, अद्वितीय और अमृतमय तीर्थ जल को स्थापित करें। अत्रिमुनि की अनुमति पाकर भरतजी ने जल के सभी पात्र भेजे और अपने छोटे भाई शत्रुघ्न, अत्रि मुनि तथा अन्य संतों के साथ उस स्थान पर गये, जहाँ अथाह कुआँ था।

और उस पवित्र जल को उस पवित्र स्थान में रख दिया। तब अत्रि ऋषि प्रेम से प्रसन्न होकर बोले- हे पिताजी! यह सनातन सिद्ध स्थान है। यह समय से गायब हो गया था इसलिए इसके बारे में किसी को पता नहीं चला। तब [भरतजी के] सेवकों ने उस जलयुक्त स्थान को देखा और उन सुन्दर तीर्थों के जल से एक विशेष कुआँ बनाया। भाग्य से सारे संसार को लाभ हुआ।

धर्म का विचार, जो अप्राप्य था, [इस कूप के प्रभाव से]। यह आसान हो गया. अब लोग इसे भरतकूप कहेंगे। तीर्थ के जल के संयोग से वह अत्यंत पवित्र हो गया। इसमें प्रेमपूर्वक स्नान करके तथा नियमों का पालन करके प्राणी मन, वचन और कर्म से पवित्र हो जायेंगे।

कपकी की महिमा गाते हुए सभी लोग वहाँ गये, जहाँ श्रीरघुनाथजी थे। अत्रिजी ने उस तीर्थयात्रा का पुण्य प्रभाव श्रीरघुनाथजी को बताया। प्रेमपूर्वक धर्म का इतिहास सुनाते-सुनाते रात्रि सुखपूर्वक कट गई और प्रातःकाल हुआ। भरत-शापघ्न बंधुओं ने नित्यकर्म से निवृत्त होकर श्री रामजी, अत्रिजी तथा गुरु वशिष्ठजी से आज्ञा प्राप्त की।

सभी लोग समाज सहित साधारण वेश में पैदल ही श्री रामजी की वन (प्रदक्षिणा) के दर्शन के लिए चल दिये। पैरों को कोमल और जूतों के बिना चलते देखकर पृथ्वी हृदय से कोमल हो गयी। धरती ने कांटे, कांटे, कंकड़, दरारें आदि कड़वी, कठोर और बुरी चीजों को छिपाकर सुंदर और नरम रास्ते बनाए। शीतल, मन्द, सुगन्धित पवन अपने साथ सुख लेकर चलने लगी।

रास्ते में देवताओं ने फूल बरसाये, बादलों ने छाया दी, वृक्षों पर फूल आये और फल लगे, घासों ने कोमलता दिखाई, मृग (जानवर) उनकी ओर देखते रहे और पक्षी सुन्दर वचन बोलते रहे - ये सब भरतजी की प्रिय जानकी की सेवा करने लगे। जी. जब साधारण मनुष्य को भी जम्हाई लेते समय (आलस्य से) 'राम' कहने से सारी सिद्धियाँ सुलभ हो जाती हैं, तो श्री रामचन्द्रजी के प्रिय भरतजी के लिए यह कोई बड़ी (आश्चर्यजनक) बात नहीं है।

इस समय भरतजी वन में भटक रहे हैं। उनके नियम और प्रेम को देखकर ऋषि-मुनि भी लज्जित हो जाते हैं। पवित्र जल के स्थान (नदियाँ, कुएँ, तालाब आदि), पृथ्वी के भिन्न-भिन्न भाग, पक्षी, पशु, वृक्ष, घास, पर्वत, वन और उद्यान - इन सबको विशेष सुन्दर, विचित्र, पवित्र और दिव्य देखकर भरतजी पूछते हैं और उनका प्रश्न सुनकर ऋषिराज अत्रिजी प्रसन्न होकर सबके कारण, नाम, गुण और पुण्य प्रभाव बताते हैं।

सब कुछ विशेष सुन्दर, विचित्र, पवित्र और दिव्य देखकर भरतजी पूछते हैं और उनका प्रश्न सुनकर ऋषिराज अत्रिजी प्रसन्न होकर सबके कारण, नाम, गुण और पुण्य प्रभाव बताते हैं। भरतजी का स्वभाव, प्रेम और सुन्दर सेवा देखकर वन देवता प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद देते हैं। इस प्रकार घूमते-घूमते ढाई दिन के बाद वे लौट आये और आकर भगवान श्रीरघुनाथजी के चरणकमलों के दर्शन किये। भरतजी ने पाँच दिन में सभी तीर्थों का दर्शन कर लिया। भगवान विष्णु

और महादेवजी की स्तुति सुनते-सुनते वह (पाँचवाँ) दिन भी बीत गया और शष्य थक गये।

[अगले छठे दिन] प्रातः स्नान करके भरतजी, ब्राह्मण, राजा। जनक और सारा समाज एकत्र हो गया। हृदय में यह जानते हुए भी कि आज सबसे विदा लेने का अच्छा दिन है, कर्पालु श्री रामजी यह कहने में झिझक रहे हैं। श्री रामचन्द्रजी ने गुरु वशिष्ठजी, राजा जनकजी, भरतजी तथा सारी सभा की ओर देखा, परन्तु फिर वे दृष्टि फेरकर पृथ्वी की ओर देखने लगे। सभा उनकी विनय की सराहना करती है और सोचती है कि श्री रामचन्द्रजी के समान कोई शर्मीला स्वामी नहीं है।

श्री रामचन्द्रजी के भाव देखकर सुजान भरतजी विशेष धैर्य के साथ प्रेमपूर्वक उठे, प्रणाम किया और हाथ जोड़कर कहने लगे- हे नाथ! आपने मेरी सभी रुचियों का ध्यान रखा। सभी ने मेरे लिये कष्ट उठाया और तुम्हें भी अनेक प्रकार से कष्ट सहना पड़ा। अब प्रभु मुझे आज्ञा दीजिये। मुझे जाकर सम्पूर्ण काल (चौदह वर्ष तक) अवध का उपभोग करना चाहिए।

हे विनम्र! जिस साधन से यह सेवक पुनः उनके चरणों का दर्शन कर सके - हे कोसलधीश हे कपालु! मुझे पूरे कालखंड में यही शिक्षा दो। हे गोसाईं! आपके प्रेम और रिश्ते से अवधपुर की जनता, परिवार और जन-जन सभी निर्मल और निर्मल आनंद से परिपूर्ण हैं। भवदुःख (जन्म-मृत्यु का दुःख) की ज्वाला में जलना ही तुम्हारे लिए अच्छा है और भगवान (तुम्हारे) के बिना परमपद (मोक्ष) का लाभ भी व्यर्थ है। (इच्छा) और आगे जीने का ज्ञान, हे प्रणतपाल! आप सभी किसी न किसी का अनुसरण करेंगे और हे भगवान! अंत तक दोनों पक्षों को संभालेंगे.

मुझे हर तरह से बहुत आत्मविश्वास है। सोचने पर किंचितमात्र भी विचार शेष नहीं रहता। मेरी विनम्रता और मेरे स्वामी के प्रति प्रेम ने मिलकर मुझे जिद्दी बना दिया है। हे प्रभो! इस बड़े दोष को दूर करो और संकोच छोड़कर मेरे सेवक को शिक्षा दो। भरतजी की विनती सुनकर सभी ने हंस की तरह दूध और पानी को अलग करने की उनकी क्षमता की प्रशंसा की।

दीन और अत्यंत चतुर श्री रामजी भाई भरतजी के नम्र और कपटपूर्ण वचन सुनकर उन्होंने देश, काल और अवसर के अनुकूल वचन बोले- हे पिता! गुरु वशिष्ठजी और महाराज जनकजी सभी आपकी, मेरी, परिवार, घर और वन की चिंता करते हैं। जब गुरुजी, मुनि विश्वामित्रजी और मिथिलापति जनकजी हमारे ऊपर हैं, तो हमारे और आपके बीच कोई परेशानी नहीं है।

मेरे और आपके लिए परम पुरुषार्थ, स्वार्थ, कल्याण, धर्म और परोपकार इसी में है कि हम दोनों भाई अपने पिता की आज्ञा का पालन करें। राजा की भलाई (अपने भक्तों की रक्षा) से ही संसार और वेद दोनों में भलाई है।

पिता, माता और गुरु की शिक्षाओं (आज्ञाओं) का पालन करने से गलत रास्ते पर चलने पर भी आप गड्ढे में नहीं गिरेंगे, सभी विचारों को छोड़कर आगे बढ़ें और पूरे काल तक उसी का पालन करें।

देश, राजकोष, परिवार आदि सभी की जिम्मेदारी गुरुजी के चरणों में है। तुम ऋषि वशिष्ठजी, माताओं और मन्त्रियों की शिक्षा का पालन करो और उसी के अनुसार पृथ्वी, प्रजा और राजधानी की रक्षा करते रहो। तुलसीदासजी कहते हैं-- [श्री रामजी ने कहा--] मुखिया को मुखिया के समान होना चाहिए, जो खाने-पीने में अकेला हो, लेकिन विवेक से सभी स्थानों का ध्यान रखता हो।

राजधर्म का सार भी यही है. जैसे एक चाहत मन के अंदर छुपी रहती है. श्रीरघुनाथजी ने भाई भरत को अनेक प्रकार से समझाया। लेकिन बिना किसी सहारे के उनके मन में न तो संतुष्टि थी और न ही शांति.

इधर भरतजी का शील (प्रेम) है और उधर गुरुजनों, मन्त्रियों और समाज की उपस्थिति है! यह देखकर श्रीरघुनाथजी अत्यंत संकोच और स्नेह से वशीभूत हो गये। (अर्थात् भरतजी के प्रेम के कारण वे उन्हें सत्ता देना चाहते हैं, परन्तु साथ ही गुरु आदि भी संकोच करते हैं।) अन्त में (भरतजी के प्रेम के कारण) भगवान श्री रामचन्द्रजी ने कृपा करके उन्हें राजगद्दी दे दी और भरतजी ने आदरपूर्वक उसे अपने सिर पर ले लिया।

करुणानिधान श्री रामचन्द्रजी की दो खड़ाऊँ प्रजा के प्राणों की रक्षा के लिए दो प्रहरी के समान हैं। मानो रतजी के प्रेम रूपी रात्रि के लिए एक डिब्बा हो और मानो जीवन के साधन के लिए राम नाम के दो अक्षर हों। खघुकुल की सुरक्षा के लिए दो दरवाजे हैं। कुशल (उत्कृष्ट) कार्य करने के लिए दो हाथी (सहायक) हैं।

और सेवा के महान धर्म का सुझाव देने के लिए उनके पास स्पष्ट आंखें हैं। यह समर्थन पाकर भरतजी अत्यंत प्रसन्न हैं। उन्हें वैसी ही प्रसन्नता हुई जैसी श्रीसीतारामजी के होते तो होती।

भरतजी ने प्रणाम करके विदा किया, तब श्री रामचन्द्रजी ने उन्हें हृदय से लगा लिया। इधर, दुष्ट इंद्र ने बुरे अवसर का फायदा उठाया और लोगों को नष्ट कर

दिया। वह कुचलना भी सभी के लिए लाभकारी हो गया। भविष्य की आशा की तरह, यह जीवन के लिए जीवनरक्षक बन गया। अन्यथा (यदि उच्चाटन न हुआ होता) तो लक्ष्मणजी, सीताजी और श्री रामचन्द्रजी के वियोग के दुष्ट रोग से सब लोग भय से (विलाप करके) मर जाते।

श्री रामजी की कृपा से सारा भ्रम दूर हो गया। लूटपाट करने आई देवताओं की सेना लाभकारी और सुरक्षात्मक हो गई। श्री रामजी भाई भरत को बाँहों में बाँहें डाले मिल रहे हैं। श्री रामजी के प्रेम के उस रस का वर्णन नहीं किया जा सकता। तन, मन और वाणी में प्रेम उमड़ पड़ा।

धैर्य की धुरी धारण करने वाले श्रीरघुनाथजी ने भी धैर्य छोड़ दिया। वह अपने कमल समान नेत्रों से प्रेमाश्रु बहाने लगे। उनकी यह दशा देखकर देवताओं की सभा दुःखी हो गयी।

श्री गरमजी और भरतजी के अतुलनीय प्रेम को बिना किसी तुलना के देखकर वे भी वैराग्य और विवेक के साथ शरीर, मन और वचन से उस प्रेम में लीन हो गये। जहाँ जनक जी और गुरु वशिष्ठ जी की बुद्धि की गति कुण्ठित हो गयी, उस दिव्य प्रेम को प्राकृत (सांसारिक) कहना बहुत बड़ा दोष है।

श्री रामचन्द्रजी और भरतजी के विरह का वर्णन सुनकर लोग कवि को कठोर हृदय समझेंगे।

झिझक की वह भावना अकथनीय है। अत: कवि की सुन्दर वाणी उस समय अपने प्रेम को याद करके झिझकने लगी। श्रीरघुनाथजी ने उसे भरतजी के सामने प्रस्तुत किया और समझाया। तब उन्होंने प्रसन्न होकर शत्रुघ्नजी को हृदय से लगा लिया। सेवक और मंत्री भरतजी का रुख पाकर सब लोग अपना-अपना काम करने लगे। यह सुनकर दोनों समाजों में बड़ा दुःख हुआ। वे जाने की तैयारी करने लगे.

प्रभु के चरणकमलों की पूजा करके और श्री रामजी की आज्ञा को ध्यान में रखकर भरत और श्रृंग दोनों भाई चले गये। ऋषि, तपस्वी और वन देवता सभी का आदर करते थे और उनसे बार-बार अनुरोध करते थे। फिर लक्ष्मणजी को प्रणाम करके, सीताजी के चरणों की धूलि मस्तक पर धारण करके और सब लोगों का आशीर्वाद सुनकर प्रेमपूर्वक चल दिया।

श्री रामजी ने अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित राजा जनकजी को सिर नवाकर बहुत प्रकार से प्रार्थना और स्तुति की [और कहा--] हे भगवन्! दयावश तुमने

बहुत कष्ट उठाया। आप समाज सहित वन में आये। अब आशीर्वाद देकर नगर को चले जाओ। यह सुनकर राजा जनकजी धैर्यपूर्वक चले गये। तब श्री रामचन्द्रजी ने मुनि, ब्रह्मा तथा मुनियों को विष्णु तथा शिव के तुल्य समझकर उनका आदर-सत्कार करके विदा किया।

तब श्री राम और लक्ष्मण दोनों भाई अपनी सास (सुनयनाजी) के पास गये और उनके चरण वन्दना करके आशीर्वाद प्राप्त करके लौट आये। तब श्री रामचन्द्र जी ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण जी सहित विश्वामित्र, वामदेव, जाबालि, अपने हितैषी परिवारजनों, नगरवासियों तथा मन्त्रियों को आदर-सत्कार करके विदा किया। श्री रामचन्द्रजी की कृपा से उन्होंने छोटे, मझोले और बड़े सभी वर्गों के स्त्री-पुरुषों का आदर-सत्कार किया और उन्हें लौटाया।

प्रभु श्री रामचन्द्र जी ने भरत की माता कैकेयी के चरणों की वन्दना करके शुद्ध (शुद्ध) प्रेम से उनसे मुलाकात की और उनके सारे संकोच तथा विचारों को दूर करके उनकी पालकी सजायी और उन्हें विदा किया।

अपने प्रिय पति श्री रामचन्द्रजी से निश्छल प्रेम करने वाली सीताजी नेहर के सम्बन्धियों तथा माता-पिता से मिलकर लौट आईं। फिर उसने ससुराल के सभी लोगों का अभिवादन किया और गले लगाया. उनके प्रेम का वर्णन करने के लिए कवि के हृदय में कोई उत्साह नहीं है। उनके उपदेश सुनकर मनवांछित आशीर्वाद प्राप्त किया।

सीताजी अपने ससुराल और माता-पिता दोनों के प्रेम में बहुत समय तक डूबी रहीं। तब श्रीरघुनाथजी ने सुन्दर-सुन्दर पालकियाँ मंगवाईं और सब माताओं को आश्वासन देकर उन्हें पालकियाँ अर्पित कर दीं। राजा जनकजी की सेना घोड़े, हाथी तथा अन्य प्रकार के वाहनों से सुसज्जित होकर निकली।

सीताजी और लक्ष्मणजी सहित सभी लोग श्री रामचन्द्रजी को हृदय में रखकर मूर्च्छित हुए चले जा रहे हैं। घण्टा, घोड़े, हाथी आदि जानवर मन में पराजित (निर्बल) हो गये हैं और अपनी इच्छानुसार चल रहे हैं। गुरु वशिष्ठजी और गुरुपत्नी अरुंधतिजी के चरण वंदन के बाद भगवान श्री रामचड्ढाजी सीताजी और लक्ष्मणजी सहित हर्ष और विषाद के साथ पर्णकुटी लौट आये।

फिर उन्होंने निषादराजों को आदर सहित विदा किया। वह ठीक से चला गया, परंतु उसके हृदय में वियोग का भारी दुःख था। तब श्री रामजी ने कोल, किरात, भील आदि वनवासियों को लौटा दिया। वे सब बड़े हर्ष के साथ (पूजन करके) लौटे।

प्रभु श्री रामचन्द्रजी, सीताजी और लक्ष्मणजी बड़े वृक्ष की छाया में बैठे हुए हैं और अपने प्रियजनों तथा परिजनों के वियोग से दुःखी हो रहे हैं। वे भरतजी के स्नेह, स्वभाव और सुन्दर वाणी की प्रशंसा करके उनकी प्रिय पत्नी सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मणजी के विषय में बताने लगे।

प्रेम के प्रभाव से श्री रामचन्द्र जी ने भरत जी की वाणी, मन, कर्म-प्रेम तथा विश्वास का अपने शब्दों में वर्णन किया। उस समय चित्रकूट के पक्षी, जीव-जन्तु, जलचर मछलियाँ, सभी सजीव-निर्जीव प्राणी दुःखी हो गये। देवताओं ने रीरघुनाथजी की हालत देखकर उन पर फूल बरसाए और घर-घर जाकर उनकी दुर्दशा बताई। भगवान श्रीरामचन्द्रजी ने उन्हें प्रणाम किया और आश्वासन दिया। फिर वे खुश होकर चले गए, उनके दिलों में ज़रा भी डर नहीं था।

भगवान श्री रामचन्द्रजी अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी और सीताजी सहित पर्णसमूह में इस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं मानो वे त्याग, भक्ति और ज्ञान के शरीर को सुशोभित कर रहे हों। मुनि, ब्राह्मण, गुरु वशिष्ठजी, भरतजी और राजा जनकजी- सारा समाज श्री रामचन्द्रजी के वियोग से दुःखी है। हर कोई भगवान के गुणों को मन में याद करते हुए सड़क पर चुपचाप चल रहा है।

[पहला दिन] सभी लोग यमुना में उतरे और उसे पार किया। वह दिन बिना भोजन के बीत गया। दूसरा पड़ाव गज्जाजी (गज पार श्रृंगवेरपुर में) था। वहां रामसखा निषादराज ने सब कुछ ठीक कर दिया। तब साईं ने नीचे उतरकर गोमतीजी में स्नान किया और चौथे दिन सभी लोग अयोध्याजी पहुंचे। जनकजी चार दिन तक अयोध्या में रहे और राजकाज तथा समस्त साज-सज्जा की देख-रेख की।

और मंतनी, गुरुजी और भरतजी को राज्य सौंपकर, सारा सामान व्यवस्थित करके वे तिरहुत की ओर प्रस्थान कर गये। नगर के सभी लोगों ने गुरुजी की शिक्षाओं का पालन किया और श्री रामजी की राजधानी अयोध्याजी में खुशी से रहने लगे। सभी श्री रामचन्द्रजी के दर्शन के लिए नियम और व्रत करने लगे। वे रत्न और सुख-सुविधाओं को छोड़कर अवधि की आशा पर जी रहे हैं।

मंत्रियों और विश्वस्त सेवकों को समझाकर भरतजी ने पहल की। पाठ सीखने के बाद वे सभी अपने-अपने काम में व्यस्त हो गये। तब उन्होंने छोटे भाई शत्रुघ्ननि को बुलाकर पढ़ाया और सभी माताओं की सेवा उसे सौंप दी। भरतजी ने ब्राह्मणों को बुलाकर हाथ जोड़कर उन्हें अपनी स्थिति के अनुसार प्रणाम किया और कहा

कि जो भी कार्य होगा, चाहे वह ऊंचा हो या नीचा (छोटा या बड़ा), अच्छा हो या बुरा, मैं उसे आज्ञा दूंगा। . संकोच न करें.

भरतजी ने तब परिवार के सदस्यों, नागरिकों और अन्य लोगों को बुलाया, उनकी समस्याओं का समाधान किया और उन्हें खुशी से रहने दिया। तब वे अपने छोटे भाई शत्रुघ्नजी के साथ गुरुजी के घर गये और हाथ जोड़कर प्रणाम करके बोले- यदि आज्ञा हो तो मैं नियमानुसार रहूँगा। मुनि वसिष्ठजी ने प्रेमपूर्वक कहा, हे भरत! आप जो कुछ भी समझेंगे, कहेंगे और करेंगे वही दुनिया में धर्म का सार होगा।

यह सुनकर भरतजी ने शिक्षा और महान आशीर्वाद प्राप्त करके ज्योतिषियों को बुलाया और अच्छा समय निकालकर बिना किसी विश्वास के भगवान की चरण पादुका को सिंहासन पर स्थापित कर दिया। तब श्री रामजी की माता कोसल्याजी और गुरुजी के चरणों में सिर झुकाकर और प्रभु के चरणों की आज्ञा पाकर, धर्म का खंभा उठाने के लिए दृढ़ संकल्पित भरतजी ने नंदीग्राम में कुटिया बनाई और वहीं रहने लगे।

सिर पर जूट और शरीर पर ऋषि (बाल्कल) वस्त्र पहनकर उसने धरती खोदी और उसके अंदर एक तकिया बिछाया। भोजन, वस्त्र, बर्तन, व्रत, नियम- सभी बातों में वह प्रेमपूर्वक ऋषियों के कठोर धर्म का पालन करने लगा। उन्होंने मन, शरीर और वचन से (संकल्प लेकर) तिनका-तिनका तोड़कर आभूषण, वस्त्र तथा अनेक प्रकार के सुख-सुविधाओं का त्याग कर दिया।

अयोध्या राज्य पर देवराज इंद्र का शासन था और राजा दशरथ की संपत्ति के बारे में सुनकर कुबेर भी शर्मिंदा हो जाते थे।
थे,

उसी अयोध्यापुरी में भरतजी चम्पा के उद्यान में भौंरे की भाँति निर्लिप्त रहते हैं। जो भाग्यशाली पुरुष श्री रामचन्द्रजी के प्रेमी हैं, वे लक्ष्मी के विलास (भोग किये हुए धन) को वमन के समान त्याग देते हैं (फिर उसकी ओर देखते भी नहीं)। फिर तो वे स्वयं ही श्री रामचन्द्रजी के प्रेम के पात्र हैं। ऐसा करने से (भोजन के त्याग के रूप में) छटक्की की बहुत प्रशंसा होती है और नीर-क्षीर-विवेक के बल (शक्ति) के कारण हँसी की भी प्रशंसा होती है।

भरतजी का शरीर दिन-प्रतिदिन पतला होता जाता है। तेज (भोजन, घी आदि से उत्पन्न चर्बी) कम हो रही है। ताकत और चेहरे की विशेषताएं (चेहरे की चमक या सुंदरता) वही बनी हुई हैं। राम के प्रति प्रेम का व्रत प्रतिदिन नया और दृढ़

होता जाता है, धर्म का समूह बढ़ता जाता है और मन दुखी (अर्थात प्रसन्न) नहीं होता। संस्कृत शब्दकोष में 'तेज' का अर्थ मिलता है और इस अर्थ को लेने से 'घटै' के अर्थ के साथ भी संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं है।

जैसे शरद ऋतु की रोशनी (वृद्धि) से पानी कम हो जाता है, लेकिन बेंतों की सुंदरता बढ़ती है और कमल उगते हैं। शम, दम, संयम, नियम और व्रत आदि भरतजी के हृदय रूपी निर्मल आकाश के नक्षत्र हैं। विश्वास स्वयं तारा है [उस आकाश में], चौदह वर्ष की अवधि [ध्यान की] पूर्णिमा के समान है और स्वामी श्री गमजी की स्मृति आकाश के समान उज्ज्वल है।

रामप्रेम अचल (हमेशा रहने वाला) और अस्थिरहित चंद्रमा है। वह अपनी संगति (नक्षत्रों) सहित सदैव सुन्दर रूप से सुशोभित रहता है।

भरतजी के रहन-सहन, समझ, आचरण, भक्ति, वैराग्य, सात्विक गुणों और ऐश्वर्य का वर्णन करने में सभी लोग संकोच करते हैं; क्योंकि स्वयं शेष, गणेश और सरस्वती भी वहाँ पहुँच योग्य नहीं हैं (दूसरों को तो भूल ही जायें)। वे प्रतिदिन प्रभु के चरणों की पूजा करते हैं, उनके हृदय में कोई प्रेम नहीं है। पादुकाओं से अनुमति लेकर वे विभिन्न प्रकार के राजकार्य करते हैं।

शरीर सुखी है, हृदय में श्रीसीता-रामजी हैं। जिह्वा राम नाम का जप कर रही है, आँखों में प्रेम का जल भरा हुआ है। लक्ष्मणजी, श्री रामजी और सीताजी तो वन में रहते हैं, परंतु भरतजी घर पर रहकर ही तपस्या करके अपने शरीर को पुष्ट कर रहे हैं। दोनों पक्षों की स्थिति को समझकर सभी कहते हैं कि भरतजी हर प्रकार से प्रशंसनीय हैं। इनके व्रत-नियमों के बारे में सुनकर साधु-संत भी लज्जित हो जाते हैं और इनकी हालत देखकर साधु-संत भी लज्जित हो जाते हैं।

पाप समूह रूपी हाथी के लिए सिंह है। वह सभी संकटों का नाश करने वाला है। जो भक्तों को आनंद देने वाले और संसार के बोझ (संसार के दुःख) को दूर करने वाले तथा श्री राम के प्रेम रूपी चंद्रमा का सार (अमृत) हैं।

यदि भरतजी श्रीसीतारामजी के प्रेमामृत से परिपूर्ण होकर पैदा न हुए होते तो ऋषि-मुनियों के लिए अप्राप्य अगम यम, नियम, शम, दाम आदि कठिन व्रतों का पालन कौन करता?

अपनी भलाई के लिए दुःख, संताप, दरिद्रता, अहंकार आदि बुराइयों को कौन दूर करेगा? और कलिकाल में श्री रामजी के सामने तुलसीदास जैसे पद का हठ कौन करता? तुलसीदासजी कहते हैं - जो कोई भरतजी के चरित्रों को आदर और

नियम से सुनेगा, उसे निश्चय ही श्रीसीतारामजी के चरणों में प्रेम हो जाएगा और उसे सांसारिक हितों से विरक्ति हो जाएगी।

. . . .

श्री रामचरितमानस

तीसरा अध्याय

3 / 7. अरण्य काण्ड

धर्मरूपी वक्षःस्थल की जड़, विवेकरूपी समुद्र को आनंद देने वाला पूर्णिमा का चंद्रमा। त्याग रूपी कमल का सूर्य, जो पाप रूपी अंधकार को अवश्य ही मिटा देता है, तीनों तापों को नष्ट करने वाला है, जो मोह रूपी बादलों के समूह को बिखेरने की विधि (क्रिया) से आकाश से उत्पन्न होता है। मैं पवन-स्वरूप, ब्रह्मा के वंशज (आत्मजन) और महाराजा श्री रामचन्द्र के सबसे प्रिय, कालदा के संहारक श्री शंकर को नमस्कार करता हूँ।

वे भारी वजनों से सुशोभित हैं, कमल के समान बड़ी आंखें हैं और सिर पर जटाजूट धारण किए हुए हैं, जो श्री सीताजी और लक्ष्मणजी के साथ मार्ग पर चलते समय आनंद देते हैं, उन श्री रामचन्द्रजी की मैं पूजा करता हूं। हे पार्वती! श्री रामजी के गुण रहस्यमय हैं, पंडित और साधु उन्हें समझते हैं और वैराग्य प्राप्त करते हैं। परन्तु जो लोग परमेश्वर से विमुख हो गए हैं और जिन्हें धर्म से प्रेम नहीं है, वे [उसकी बात सुनकर] बड़े मूर्ख बन जाते हैं।

जहां तक मेरी जानकारी है, मैंने भरतजी के ग्रामीणों के प्रति अनूठे और सुंदर प्रेम के गीत गाए हैं। अब भगवान श्री रामचन्द्र जी के उस परम पवित्र चरित्र को सुनो, जो देवताओं, मनुष्यों तथा ऋषियों के हृदय को सुखदायक है, जिसका वे वन में आचरण कर रहे हैं। एक बार श्री राम जी ने सुंदर फूल चुनकर अपने हाथों से विभिन्न प्रकार के आभूषण बनाए और सुंदर स्फटिक शिला पर बैठकर प्रभु ने आदरपूर्वक उन आभूषणों को श्री सीता जी को पहनाया।

देवराज इन्द्र के मूर्ख पुत्र जयन्त का रूप धारण करके श्रीरघुनाथजी की शक्ति देखना चाहते हैं। जैसे बड़ी मूर्ख चींटी समुद्र की थाह लेना चाहती है। वह कौआ, जिसे भगवान की शक्ति की परीक्षा लेने के लिए मूर्ख बनाया गया था, सीताजी के चरणों के पास चोंच मारकर भाग गया। जब रक्त बहने लगा तो श्रीरघुनाथजी ने जाकर धनुष पर सरकण्डे का बाण चढ़ाया।

अत्यंत दयालु और दीन-दुखियों पर सदैव प्रेम रखने वाले श्रीरघुनाथजी उस दुर्गुणी व्यक्ति के घर आकर मूर्ख जयन्त द्वारा धोखा खा गये। मंत्र से प्रेरित

होकर उन्होंने ब्रह्म बाण चलाया। कौआ डर गया और भाग गया। वह अपना असली रूप धारण करके पिता इंद्र के पास गया, लेकिन यह जानकर कि वह श्री रामजी का विरोधी है, इंद्र ने उसे अपने पास नहीं रखा।

तब वह निराश हो गया, उसके मन में भय उत्पन्न हो गया; जैसे दुर्वासा ऋषि चक्र से डरते थे। वह भय और शोक से थका हुआ तथा व्याकुल होकर ब्रह्मलोक, शिवलोक आदि सभी लोकों में इधर-उधर भागता रहा। [लेकिन रखना तो दूर] किसी ने उन्हें बैठने के लिए भी नहीं कहा। श्री रामजी के द्रोहियों को कौन रोक सकता है? काकभुशुण्डिजी कहते हैं--हे गरुड़! सुनो, उसके लिए माँ मृत्यु के समान, पिता यमराज के समान और अमृत विष के समान हो जाता है।

मित्र सैकड़ों शत्रुओं जैसा व्यवहार करने लगता है। देवनदी गग्याजी उसके लिए वेतरणी (यमपुरी की नदी) बन जाती है। अरे भइया! सुनो, जो श्रीरघुनाथजी से विमुख हो जाता है, उसके लिए सारा संसार अग्नि से भी अधिक गर्म (जलने वाला) हो जाता है। नारदजी ने जब जयन्त को दुःखी देखा तो उन्हें दया आ गयी; क्योंकि संतों का हृदय बहुत कोमल होता है। उन्होंने [इसे समझाया] और तुरंत इसे श्री गमजी के पास भेज दिया। वह [गया] और पुकारा, "हे समर्पण करने वालों के दाता!" कृपया मेरी रक्षा करें.

उत्सुक और भयभीत होकर जयन्त ने जाकर श्री रामजी के चरण पकड़ लिए [और कहा--] हे दयालु रघुनाथजी! रक्षा करो, रक्षा करो. मैं मंदबुद्धि व्यक्ति आपके अतुलनीय बल और आपकी अतुलनीय श्रेष्ठता (शक्ति) को नहीं समझ सका। मुझे मेरे कर्मों का फल मिल गया है. अब हे प्रभु! कृपया मेरी रक्षा करें. मैं आपकी शरण में आया हूँ। [शिवजी कहते हैं--] हे पार्वती! दयालु श्रीरघुनाथजी ने उसके अत्यंत दु:ख भरे वचन सुनकर, पलक झपकते ही उसे छोड़ दिया।

उसने मोहवश विश्वासघात किया था, अत: उसे मारना उचित होते हुए भी भगवान ने दया करके उसे मुक्त कर दिया। श्री रामजी के समान दयालु और कौन होगा? ॥चित्रकूट में बसने के बाद श्रीरघुनाथजी ने अनेक चरित्र किये, जो कानों के लिए अमृत के समान हैं। तब (कुछ देर बाद) श्री रामजी ने मन में सोचा कि अब तो मुझे सब लोग जानते हैं, (यहाँ) तो बड़ी भीड़ होगी।

, इसलिए | सभी ऋषियों को विदा करके दोनों भाई सीताजी सहित चले गये। जब प्रभु अत्रिजी के आश्रम में गये तो उनके आगमन का समाचार सुनकर महर्षि प्रसन्न हो गये, उनका हृदय पुलकित हो गया, अत्रिजी उठकर दौड़ पड़े। उन्हें दौड़ते हुए देखकर श्री रामजी तेजी से आगे आये। मुनि ने श्री रामजी को प्रणाम

करते हुए (उठाकर) हृदय से लगा लिया और दोनों लोकों (दोनों भाइयों) को प्रेमाश्रुओं से नहलाया॥

श्रीगमजी की छवि देखकर ऋषि की आंखें ठंडी हो गईं। फिर वे आदरपूर्वक उसे अपने आश्रम में ले आये। पूजा करके और सुन्दर वचन कहकर ऋषि ने कन्द-कन्द और फल दिये, जो भगवान के मन को बड़े प्रसन्न करने वाले लगे।

प्रभु सिंहासन पर विराजमान हैं। परम कुशल मुनि उसके सौंदर्य को नेत्रों से भरकर देखकर हाथ जोड़कर स्तुति करने लगे---हे भक्त! हे दयालु! हे सौम्य स्वभाव वाले! मैं तुम्हें सलाम करता हुँ। मैं आपके चरणकमलों की वन्दना करता हूँ जो निःस्वार्थ लोगों को अपना परमधाम देते हैं।

आप परम सुन्दर श्याम हैं, संसार सागर को मथने के लिए अजगर के समान चलने वाले, खिले हुए कमल के समान नेत्रों वाले तथा नशा आदि विकारों से छुड़ाने वाले हैं। हे प्रभु! आपकी लंबी भुजाओं की शक्ति और आपका ऐश्वर्य अपरिमेय (बुद्धि से परे या असीम) है। आप, तीनों लोकों के स्वामी, तरकश और धनुष-बाण धारण करने वाले,

सूर्यवेश के आभूषण महादेवजी के धनुष को तोड़ने वाले, साधु-संतों को आनंद देने वाले और देवताओं के शत्रु दैत्य समूह का नाश करने वाले हैं। आप कामदेव के शत्रु महादेवजी द्वारा पूजित, ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा सेवित, शुद्ध ज्ञान के देवता और सभी दोषों के विनाशक हैं।

हे लक्ष्मी, हे सुखों की खान और सज्जनों के एकमात्र मार्ग! शचिपति (इंद्र) के प्रिय छोटे भाई (वामनजी) मैं आपको नमस्कार करता हूँ! मैं स्वरूपा-शक्ति श्री सीताजी तथा छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित आपकी पूजा करता हूँ।

जो मनुष्य ईर्ष्या न करके आपके चरणकमलों का सेवन करते हैं, वे वाद-विवाद (विभिन्न प्रकार के संदेह) आदि कामनाओं से भरे हुए संसार सागर में नहीं गिरते, जो मनुष्य मुक्ति के लिए, इंद्रियों को वश में करके (इंद्रियों को दूर करके) एकांत में रहते हैं वस्तुएँ) जो प्रसन्न होकर आपकी पूजा करते हैं, वे निज स्वरूप को प्राप्त होते हैं।

उत्तम (आप) जो एक (अद्वितीय), अद्भुत (मायावी दुनिया से अलग), भगवान (सर्वशक्तिमान), संकल्पहीन, भगवान (सभी के स्वामी), व्यापक, जगद्गुरु, शाश्वत (अनन्त), तुरीय (तीनों गुणों से पूरी तरह से परे) हैं) और केवल (अपने स्वरूप में स्थित) । | और | जो इंद्रियों के लिए प्रिय हैं, कुयोगियों के लिए

अत्यंत दुर्लभ हैं, अपने भक्तों के लिए कल्पवृक्ष हैं (अर्थात उनकी सभी इच्छाओं को पूरा करने वाले हैं), समान (निष्पक्ष) और हमेशा आनंद से भोगने के योग्य हैं; मैं निरंतर पूजा करता हूं.

हे अद्वितीय सौन्दर्य! हे धरती के स्वामी! हे जानकीनाथ! मैं तुम्हें सलाम करता हुँ। आप मुझ पर प्रसन्न हों, मैं आपको नमस्कार करता हूँ। मुझे अपने चरण कमलों में भक्ति प्रदान करें।

इसमें कोई संदेह नहीं कि जो मनुष्य आपके प्रति श्रद्धा रखते हुए आदरपूर्वक इस स्तुति को पढ़ते हैं, वे आपके परम पद को प्राप्त करते हैं। ऋषि ने [इस प्रकार] प्रार्थना की और फिर सिर झुकाकर और हाथ जोड़कर कहा - हे भगवन्! मेरी बुद्धि आपके चरण कमलों को कभी न छोड़े।

फिर परम नम्र और विनम्र श्री सीताजी [अत्रिजी की पत्नी]। वह अनसूयाजी के चरण पकड़कर उनसे मिलीं। ऋषिपल्ली के हृदय में बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने सीता को आशीर्वाद दिया और अपने पास बैठाया।

और उन्हें ऐसे दिव्य वस्त्र और आभूषण पहनाएं, जो प्रतिदिन पवित्र और सुंदर बने रहें। फिर उसी के बहाने ऋषिपल्ली ने मधुर और मधुर आवाज में महिलाओं के कुछ धर्मों के बारे में बताना शुरू किया. हे राजकुमारी! सुनो, माता, पिता, भाई सभी कल्याणकारी हैं, परन्तु वे सभी एक सीमा तक ही (सुख) प्रदान करते हैं।

परन्तु हे जानकी! पति तो [मोक्ष स्वरूप] है। वह अनंत [खुशियों] का दाता है। वह स्त्री हीन है, जो ऐसे पति की सेवा नहीं करती।

इस प्रकार अपने पति का अपमान करने से भी खरी को यमपुर में अनेक प्रकार के कष्ट मिलते हैं। स्त्री अपने पति को शरीर, वाणी और मन से प्रेम करे, यही एक ही धर्म, एक ही व्रत और एक ही नियम है।

संसार में चार प्रकार के पाप होते हैं। वेद, पुरुण और संत सभी कहते हैं कि एक अच्छे पति के मन में ऐसी भावना होती है कि दुनिया में कोई भी दूसरा पुरुष (मेरे पति को छोड़कर) अपने आप से भी प्यार नहीं करता है।

एक मध्यवर्गीय महिला दूसरे पति को किस तरह देखती है, जैसे कि वह उसका अपना भाई, पिता या पुत्र है (अर्थात, वह अपने बराबर के किसी व्यक्ति को

अपने भाई के समान, बड़े को अपने पिता के समान और छोटे को अपने पुत्र के समान देखती है) जो अपने धर्म को ध्यान में रखकर और अपने कुल की मर्यादा को ध्यान में रखकर जीवित रहती है। हाँ, वह निम्न कोटि की स्त्री है, ऐसा वेद कहते हैं।

और जो स्त्री अवसर के अभाव या भय के कारण विवाह करके रह जाती है, उसे संसार में हीन स्त्री समझना चाहिए। जो स्त्री अपने पति को धोखा देकर दूसरे के पति के साथ संबंध बनाती है वह सौ कल्प तक नरक में रहती है।

उस व्यक्ति के समान संतुष्ट कौन होगा जो क्षण भर के सुख के लिए सौ करोड़ (असंख्य) जन्मों के दुःख को नहीं समझता? जो छल-कपट को त्यागकर सन्मार्ग को अपनाता है, उसे बिना किसी प्रयास के ही परम लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है।

लेकिन जो अपने पति के विरुद्ध चलती है, वह जहां भी जाती है और जन्म लेती है, अपनी शुद्ध युवावस्था में विधवा हो जाती है। वह जन्म से ही अपवित्र है, परंतु अपने पति की सेवा करके वह अनजाने में ही शुभत्व को प्राप्त कर लेती है। [केवल पितृभक्ति के कारण। आज भी तुलसीजी भगवान को प्रिय हैं और चारों वेद उनका गुणगान करते हैं।

हे सीता! सुनो, तुम्हारा नाम लेने मात्र से स्त्रियाँ अपने पति के व्रत का पालन करेंगी। श्री रामजी आपको प्राणों के समान प्रिय हैं, मैंने जगत् के कल्याण के लिये यह (पतिब्रत धर्म की) कथा कही है।

यह सुनकर जानकीजी अत्यंत प्रसन्न हुईं और आदरपूर्वक उनके चरणों में सिर झुका दिया। तब कृपापुत्र श्री रामजी ने मुनि से कहा- यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं अब दूसरे वन में चला जाऊं। तुम मुझ पर कृपा बनाये रखना और मुझे अपना सेवक समझकर अपना प्रेम मत छोड़ना।

धर्मधुरंधर प्रभु श्री गयामजी के वचन सुनकर मुनि प्रेमपुतंक ने कहा- ब्रह्ममय, शिव और सनकादि, जिनका आशीर्वाद सभी परोपकारी (तत्त्ववेत्ता) चाहते हैं, हे रामजी। आप वही भगवान हैं जो निःस्वार्थ लोगों के प्रिय और गरीबों के मित्र हैं, जो ऐसे कोमल वचन बोलते हैं।

अब मुझे लक्ष्मी जी की चतुराई समझ में आई, जो सभी देवताओं को छोड़कर स्वयं की पूजा करती थीं। ऐसा उस व्यक्ति के साथ क्यों नहीं होगा जो अत्यंत

महान है और हर चीज़ में उनके बराबर है? मैं कैसे कहूँ, हे प्रभु! तुम अब जाओ? हे नाथ! आप अंतर्मुखी हैं, ऐसा आप स्वयं कहते हैं। इतना कहकर धीर मुनि भगवान की ओर देखने लगे। ऋषि की आँखों से प्रेम के आँसू बह रहे हैं और उनका शरीर रोमांचित हो गया है।

साधु अतिशय प्रेम से परिपूर्ण है; उनका शरीर रोमांचित है और उनकी आँखें श्री यमजी के कमल चेहरे पर टिकी हुई हैं। [मन में विचार] मैंने ऐसा कौन सा जप-तप किया, जिससे मुझे मन, ज्ञान, गुण और कामनाओं से परे ईश्वर के दर्शन हुए। जप, योग तथा धर्म-समूह से मनुष्य को अनन्य भक्ति की प्राप्ति होती है। तुलसीदास दिन-रात श्री रघुबीर के पवित्र चरित्र गाते हैं।

श्री रामचन्द्रजी का सुन्दर यश कलियुग के पापों का नाश करने वाला, मन का दमन करने वाला और सुख देने वाला है। इसे आदरपूर्वक सुनने वालों पर श्री रामजी प्रसन्न होते हैं। यह कठिन समय पापों का खजाना है; इसमें न तो धर्म है, न ज्ञान, न योग या जप। ऐसे में जो मनुष्य सारा भरोसा छोड़कर केवल श्री रामजी को भजते हैं, वे ही चतुर हैं।

देवताओं, मनुष्यों और ऋषियों के गुरु श्रीगमजी मुनि के चरणकमलों में सिर झुकाकर वन में चले गये। आगे श्री रामजी हैं और उनके पीछे उनके छोटे भाई लक्ष्मणजी हैं। दोनों साधु सुंदर कपड़े पहने हुए हैं और खूब सजे हुए हैं. दोनों के बीच में श्री जानकीजी इतनी सुन्दर हैं, मानो ब्रह्मा और जीव के बीच में माया हो। नदियाँ, जंगल, पहाड़ और दुर्गम घाटियाँ, सभी अपने स्वामियों को पहचानते हैं और सुंदर मार्ग प्रदान करते हैं।

[श्री रामजी के हाथों मरने के बाद] उसे तुरंत सुंदर (दिव्य) रूप प्राप्त हुआ। भगवान ने उन्हें दुःखी देखकर अपने परमधाम भेज दिया। तब वे अपने सुन्दर छोटे भाई लक्ष्मणजी और सीताजी के साथ वहाँ आये जहाँ ऋषि शरभंगजी थे। श्री रामचन्द्रजी के मुखकमल को देखकर ज्ञानी मुनि के नेत्र बड़े आदर के साथ उसका (मकरन्दरा) पान कर रहे हैं॥ शरभंगजी का जन्म धन्य है।

मुनि ने कहा--हे दयालु रघुबीर! हे शंकरजी के रूप में मानसरोवर के राजहंस! सुनो, मैं ब्रह्मटोक जा रहा था। इसी बीच मैंने अपने कानों से सुना कि श्री रामजी मेरे रूप में आयेंगे। तब से मैं दिन-रात तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं।' अब (आज) प्रभु के दर्शन पाकर मेरी छाती शीतल हो गयी। हे नाथ! मैं सभी प्रकार से हीन हूँ। आपने मुझे अपना विनम्र सेवक समझकर मुझ पर दया की है।

ऋषि ने योग, यज्ञ, जप, तप, व्रत आदि सभी चीजें भगवान को समर्पित कर दीं और बदले में भक्ति का वरदान ले लिया। इस प्रकार दुर्लभ भक्ति प्राप्त करने के बाद ऋषि शरभंग जी ने एक चिता का निर्माण किया और हृदय से सभी मोह-माया त्याग कर उस पर बैठ गये। श्री रामजी नीले बादल के समान काले शरीर वाले पूर्ण स्वरूप हैं! भगवान (आप) सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित सदैव मेरे हृदय में निवास करें।

ऐसा कहकर शरभंगजी ने अपने शरीर को योगग्नि में भस्म कर दिया और श्री रामजी के वस्त्र लेकर वे बेकुंठ चले गये। ऋषि भगवान में लीन नहीं हुए क्योंकि उन्होंने विवेक का वरदान पहले ही ले लिया था। ऋषियों के समूह में सर्वश्रेष्ठ ऋषि की यह (दुर्लभ) गति देखकर शरभंगजी मन में विशेष प्रसन्न हुए। सभी ऋषि श्री रामजी की स्तुति कर रहे हैं [और कह रहे हैं]। दयालु और दयालु. ईश्वर की जय (करुणा का मूल)

तब श्रीरघुनाथजी आगे बढ़े। महान संतों के कई समूह उनके साथ जुड़ गए। हड्डियों का ढेर देखकर श्रीरघुनाथजी को बड़ी दया आयी और उन्होंने ऋषियों से पूछा। ऋषियों ने कहा--]हे भगवन्! आप सर्वज्ञ और अन्तर्यामी हैं। हमें जानने के बावजूद (एक अजनबी की तरह) आप हमसे कैसे पूछ रहे हैं? राक्षसों के समूह.

सभी ऋषियों को खा लिया गया है [ये सभी उनकी हड्डियों के ढेर हैं]। यह सुनकर श्री रघुवीर की आँखें चमक उठीं। वह आँसुओं से भर गया (उसकी आँखें करुणा के आँसुओं से भर गईं)।

श्री रामजी ने भुजाएँ उठाकर प्रतिज्ञा की कि मैं पृथ्वी को राक्षसों से मुक्त करूँगा। फिर उन्होंने सभी ऋषि-मुनियों के आश्रमों में जाकर उन्हें दर्शन और वार्तालाप का सुख दिया। ऋषि अगस्त्यजी के सुतीक्ष्ण नाम के एक बुद्धिमान (ज्ञानी) शिष्य थे, उन्हें भगवान से प्रेम था।

वह मन, वचन और कर्म से श्री रामजी के चरणों का सेवक था। उसे किसी अन्य देवता पर, यहां तक कि स्वयं पर भी विश्वास नहीं था।

जैसे ही उन्होंने अपने कानों से प्रभु के आगमन की बात सुनी, वे तरह-तरह की मनोकामनाएं करते हुए तेजी से दौड़ने लगे। हे विधाता! क्या दीनबंधु श्रीरघुनाथ जी मुझ जैसे दुष्ट पर दया करेंगे? क्या स्वामी श्री राम जी अपने छोटे भाई

लक्ष्मण जी सहित मुझे सेवक बनकर मिलेंगे? मेरे हृदय में दृढ़ विश्वास नहीं है; क्योंकि मेरे मन में भक्ति, वैराग्य और ज्ञान नहीं है।

मैंने न तो सत्संग, योग, जप या यज्ञ किया है और न ही भगवान के चरणकमलों में मेरी गहरी आसक्ति है। हाँ, दया के भण्डार प्रभु का यह कथन है कि जिसे किसी अन्य का सहारा नहीं, वही उसे प्रिय है।

भगवान की इस बात का स्मरण होते ही ऋषि प्रसन्न हो गये और मन में कहने लगे- अहा! आज मेरे नेत्र उस प्रभु का दर्शन करके सफल होंगे जो मुझे जीवन के बंधन से मुक्त करता है। शिवजी कहते हैं---हे भवानी! ज्ञानी मुनि पूर्णतया प्रेम में डूबे हुए हैं। उसकी वह दशा जाती नहीं।

उन्हें दिशा, उनके कोण आदि तथा रास्ते के बारे में कुछ भी समझ नहीं आ रहा है। मैं नहीं जानता कि मैं कौन हूँ और कहाँ जा रहा हूँ, मुझे इसका ज्ञान भी नहीं है। कभी-कभी वे पीछे मुड़कर फिर आगे बढ़ने लगते हैं और कभी-कभी [प्रभुके | गुण गाने और नाचने लगते हैं।

ऋषि को गहरा प्रेम और भक्ति प्राप्त हुई। भगवान श्री राम पेड़ के पीछे छिपकर भक्त की प्रेम स्थिति देख रहे हैं। मुनिका के महान प्रेम को देखकर भवभय (यात्रा के भय) को दूर करने वाले श्री रघुनाथजी मुनिका के हृदय में प्रकट हुए।

प्रभु को अपने हृदय में देखकर; ऋषि सड़क के बीच में निश्चल बैठे रहे। क्रोध के कारण उनका शरीर कटहल के समान हो गया। तब श्रीरघुनाथजी उनके पास आये और अपने भक्त के प्रेम की अवस्था देखकर मन में बहुत प्रसन्न हुए। श्री रामजी ने अनेक प्रकार से ऋषि को जगाया, परन्तु ऋषि नहीं जागे; क्योंकि वह भगवान के ध्यान का आनन्द ले रहा था। तब श्री राम जी ने अपना राजसी रूप छिपा लिया और अपना चतुर्भुज रूप अपने हृदय में प्रकट कर दिया।

फिर (जैसे ही उनका पसंदीदा रूप अस्तित्व में आया) ऋषि व्याकुल होकर कैसे उठ खड़े हुए, जैसे मणि के बिना सर्वश्रेष्ठ (मणिधर) साँप व्याकुल हो जाता है। ऋषि ने अपने सामने श्री रामजी को सीताजी और लक्ष्मणजी सहित श्यामसुन्दर-विग्रहसुखधाम में देखा। धन्य महान ऋषि, प्रेम में डूबे हुए, गिरा लकड़ी बनकर श्री रामजी के चरणों पर गिर पड़ा। श्री रामजी ने उसे अपनी विशाल भुजाओं से उठा लिया और बड़े प्रेम से हृदय से लगा लिया।

मुनि से मिलकर दयालु श्री रामचन्द्रजी ऐसे शोभायमान हो रहे हैं, मानो तमलका वृक्ष सोने की छाती से लिपटा हुआ हो। ऋषि निश्चल खड़े होकर श्री रामजी के

मुख की ओर इस प्रकार देखते रहे, मानो चित्र में लिखा हो। तब ऋषि ने हृदय में धैर्य रखकर बार-बार उनके चरण छुए। फिर वह भगवान को अपने आश्रम में ले आये और उनकी अनेक प्रकार से पूजा की।

ऋषि कहने लगे--हे भगवन्! मेरी विनती सुनो. मैं आपकी स्तुति कैसे कर सकता हूँ? आपकी महिमा अपरम्पार है और मेरी बुद्धि अल्प है। जैसे सूरज के सामने जुगनू की रोशनी! उनका नीले कमल की माला के समान काला शरीर है! हे बालों के मुकुट और ऋषियों के कवच! श्री रामजी, वस्त्र पहने हुए, हाथों में धनुष-बाण और कमर में तरकश बाँधे हुए हैं! मैं आपको निरंतर नमस्कार करता हूं।

भगवान हिरण रूपी घने जंगल को जलाने वाली अग्नि हैं, साधु रूपी कमल वनों को खिलने वाले सूर्य हैं, राक्षसों रूपी सिंह हाथियों के समूह को परास्त करने वाले हैं और गरुड़ रूपी गरुड़ हैं। गतिरूपी पक्षियों को मारें, वे सदैव हमारी रक्षा करें।

उनकी आंखें लाल कमल के समान हैं और सुंदर वस्त्र पहने हुए हैं! सीताजी की आंखों के रूप में चकोर के चंद्रमा, हृदय के रूप में मानसरोवर के हंस, विशाल हृदय और भुजाओं वाले श्री रामचड्ढाजी! मैं तुम्हें थप्पड़ मारता हूं.

जो संशय रूपी सर्प का भक्षण करने वाले गरुड़ हैं, जो अत्यंत कठोर तर्क से उत्पन्न होने वाले दुख का नाश करने वाले हैं, जो आवागमन को समाप्त करने वाले तथा देवताओं के समूह को आनंद देने वाले हैं, श्री गमजी सदैव हमारी रक्षा करें। हे निर्गण, सगुण, विषम और सजातीय! हे वाणी और इंद्रियों से परे ज्ञान! हे अद्वितीय, पवित्र, सर्वथा दोषरहित, अनंत तथा पृथ्वी का भार हरने वाले श्री रामचन्द्रजी! में तुम्हें सलाम करता हुँ।

श्री रामजी, सूर्य कुल के ध्वज, भक्तों के लिए कल्पवृक्ष के बगीचे, क्रोध, लोभ, अहंकार और काम को डराने वाले, अत्यंत चतुर और संसार सागर को पार करने के लिए पुल के समान हैं। सदैव मेरी रक्षा करो.

हे निर्गण, सगुण, विषम और सजातीय! हे वाणी और इंद्रियों से परे ज्ञान! हे अद्वितीय, पवित्र, सर्वथा दोषरहित, अनंत तथा पृथ्वी का भार हरने वाले श्री रामचन्द्रजी! में तुम्हें सलाम करता हुँ।

जो भक्तों के लिए कल्पवृक्ष के बगीचे हैं, जो क्रोध, लोभ, अहंकार और काम को डरा देते हैं, जो अत्यंत चतुर हैं और जो संसार सागर को पार करने के लिए पुल के समान हैं, सूर्य कुल के ध्वज श्री रामजी सदैव रक्षा करें मुझे।

जिनकी भुजाओं की महिमा अतुलनीय है, जो शक्ति के धाम हैं, जिनका नाम श्री रामजी है, जो कलियुग के बड़े-बड़े पापों का नाश करने वाले हैं, जो धर्म के ढाल (रक्षक) हैं और जिनके गुणों का समुच्चय निरंतर सुख देने वाला है मेरे कल्याण का विस्तार करें.

यद्‍यपि आप पवित्र हैं, सर्वव्यापक हैं, अविनाशी हैं और सबके हृदय में निरन्तर निवास करते हैं हे कृपालु श्री रामजी! लक्ष्मणजी और सीताजी सहित वन में विचरण करने वाली आप इसी रूप में मेरे हृदय में निवास करें। यह भूलकर भी अभिमान मत खोना कि मैं सेवक हूँ और श्रीरघुनाथजी मेरे स्वामी हैं। ऋषि के वचन सुनकर श्री रामजी मन में बहुत प्रसन्न हुए। तब वह प्रसन्न हो गया और महर्षि को हृदय से लगा लिया।

[और कहा--] हे ऋषि! मुझे अत्यंत प्रसन्न जानो. तुम जो वरदान मांगोगे मैं तुम्हें दूंगा। मुनि सुतीक्शाननि ने कहा--मैंने कभी वर नहीं माँगा। मुझे समझ नहीं आता कि क्या झूठ है और क्या सच है, (क्या माँगा जाता है, क्या नहीं)।

अत: हे रघुनाथजी! हे दासों को सुख देने वाले! तुम्हें जो पसंद हो वह मुझे दे दो। श्रीरामचन्द्रजी ने कहा--हे मुने! आप गहन भक्ति, त्याग, विज्ञान और सभी गुणों और ज्ञान की मूर्ति बनें।

[तब ऋषि ने कहा--] मुझे भगवान का दिया हुआ वरदान प्राप्त हो गया है। अब मुझे जो पसंद हो वह दे दो---हे भगवान! हे श्री रामजी! छोटे भाई लक्ष्मणजी और सीताजी, आप धनुष-बाण सहित मेरे हृदयरूपी आकाश में चंद्रमा के समान सदैव स्थिर रहकर निवास करें।

'एवमस्तु' (ऐसा हो सकता है) का उच्चारण करके लक्ष्मीनिवास श्रीरामचड्ढाजी प्रसन्न होकर अगस्त्य मुनि के पास गये। [तब सुतीक्ष्णजी ने कहा--] मुझे गुरु अगस्त्यजी के दर्शन किये और इस आश्रम में आये बहुत दिन हो गये। अब भी मैं भगवान (आपके) साथ गुरुजी के पास जाता हूं।

इसमें हे नाथ! मुझ पर आपका कुछ भी बकाया नहीं है. मुनि की चतुराई देखकर कृपा के भण्डार श्री रामजी उन्हें अपने साथ ले गये और दोनों भाई हँसने लगे।

रास्ते में देवराज श्री रामजी अपनी अद्वितीय भक्ति का वर्णन करते हुए अगस्त्य मुनि के आश्रम में पहुँचे। सुतीक्ष्ण तुरंत गुरु अग्रस्वाजी के पास गए और उन्हें प्रणाम करके बोले- हे नाथ! अयोध्या के राजा दशरथजी के पुत्र जगदाधर श्री रामचन्द्रजी अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी और सीताजी के साथ आपसे मिलने आये हैं, हे देव! आप दिन-रात जप करते रहते हैं।

यह सुनते ही अगस्त्यजी तुरंत उठकर दौड़ पड़े। जैसे ही उसने भगवान को देखा, उसकी आँखों में खुशी और प्रेम के आँसू भर आये। दोनों भाई ऋषि के चरण कमलों में गिर पड़े। मुनि ने बड़े प्रेम से उन्हें उठाकर अपने हृदय से लगा लिया। मुनिवर ने आदरपूर्वक उनका कुशल-क्षेम पूछा और उन्हें लाकर उत्तम आसन पर बिठाया। फिर अनेक प्रकार से भगवान की पूजा करके उसने कहा- आज मेरे समान भाग्यशाली कोई नहीं है।

जहाँ तक (जितने भी) ऋषि-मुनि थे, सब आनन्दकन्द श्री रामजी को देखकर प्रसन्न हुए॥ हो गया। मुनियों की टोली में श्री रामचन्द्रजी सबकी ओर मुख करके बैठे हैं (अर्थात प्रत्येक साधु श्री रामचन्द्रजी को अपनी ओर सम्मुख बैठे हुए देखता है और सभी साधु उनके मुख की ओर देखते रहते हैं)। ऐसा प्रतीत होता है मानो चकोरों का समुदाय शरद पूर्णिमा की ओर देख रहा हो।

तब श्री रामजी ने ऋषि से कहा- हे प्रभु! आपसे कुछ भी छिपा नहीं है. मैं जिस कारण से आया हूँ उसका कारण तो तुम्हें मालूम ही है। इसलिये हे पिता! मैंने तुम्हें कुछ नहीं समझाया. हे प्रभो! अब आप मुझे वही मन्त्र (सलाह) दीजिये जिससे मैं ऋषियों के शत्रु राक्षसों को मार सकूँ। भगवान की आवाज सुनकर ऋषि मुस्कुराए और बोले- हे प्रभु! आप इस प्रश्न के बारे में क्या सोचते हैं?

हे पापों का नाश करने वाले! आपके भजन के प्रभाव से मुझे आपकी महिमा का कुछ-कुछ ज्ञान हो गया है। आपकी माया एक विशाल गूलर के वृक्ष के समान है, जिसके फल अनेक ब्रह्माण्डों के समूह हैं। ब्रह्मांड के उन फलों के अंदर जीवित और निर्जीव प्राणी [जैसे गूलर के फल के अंदर रहने वाले छोटे जानवर] रहते हैं और वे [अपनी उस छोटी सी दुनिया में] इसके अलावा और कुछ नहीं जानते हैं। जो उन फलों को खाता है उसे कठिन से कठिन समय का सामना करना पड़ता है। वो वक़्त भी तुमसे हमेशा डरता रहता है.

आपने समस्त लोकपालों के स्वामी होते हुए भी एक मनुष्य की भाँति मुझसे प्रश्न पूछे। "हे आपकी कृपा के स्वामी, मैं यह वरदान माँगता हूँ कि आप श्री सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित सदैव मेरे हृदय में निवास करें। मुझे आपके चरण कमलों में गहरी भक्ति, त्याग, सत्संग और अटूट प्रेम मिले।

यद्यपि आप अखण्ड और अनन्त ब्रह्मा हैं, जो अनुभव से ही ज्ञात होते हैं और संतजन जिनकी पूजा करते हैं;

यद्यपि मैं आपके ऐसे रूप को जानता हूं और उसका वर्णन भी करता हूं, फिर भी पीछे से देखने पर मैं सगुण ब्रह्म (आपके इस सुंदर रूप) में ही प्रेम मानता हूं। आप सदैव अपने सेवकों की प्रशंसा करते हैं, इसलिये हे रघुनाथजी! आप मुझसे पूछो। हाँ प्रभु! वहाँ एक अत्यंत सुन्दर और पवित्र स्थान है, उसका नाम पदंचवटी है। हे प्रभो ! आप दण्डक-क्वांको | पद्चावती जहां है उस स्थान को शुद्ध करो और महर्षि गौतमजी के कठोर शाप को दूर करो।

हे रघुकुल के स्वामी! आप सभी ऋषियों पर दया करें और वहीं निवास करें। मुनि की आज्ञा पाकर श्री रामचन्द्रजी वहाँ से चले और शीघ्र ही पंचचटी के निकट पहुँचे। वहां उनकी मुलाकात गृध्रराज जटायु से हुई। श्री रामचन्द्र जी उनसे अनेक प्रकार से प्रेम करके गोदावरी जी के पास एक कुटिया में रहने लगे।

पशु-पक्षियों के समूह प्रसन्न हैं और भौंरे मधुर गुंजन करके उनकी शोभा बढ़ा रहे हैं। जिस वन में श्री रामजी निवास करते हैं, उसका वर्णन सर्पगज शेषजी भी नहीं कर सकते। एक बार प्रभु श्री रामजी सुखपूर्वक बैठे थे। उस समय लक्ष्मणजी ने उनसे सरल शब्दों में कहा- हे देवता, मनुष्य, ऋषि और चराचर स्वामी! मैं अपना स्वामी मानकर (स्वयं को अपना स्वामी मानकर) आपसे प्रार्थना करता हूँ।

अरे बाबा! मुझे समझाओ और वही कहो, जिससे मैं सब कुछ छोड़कर केवल तुम्हारे चरणों की सेवा करूँ। ज्ञान, वैराग्य तथा माया का वर्णन; और उस भक्ति को बताओ जिसके कारण तुम दया करते हो। हे भगवान! ईश्वर और जीव में अन्तर बताइये, जिससे मुझे आपके चरणों में प्रेम हो और दुःख, मोह तथा भ्रम नष्ट हो जायें।

[श्री रामजी ने कहा--] हे पिताजी! मैं तुम्हें सब कुछ नहीं समझा सकता. आप अपने मन, हृदय और बुद्धि से सुनें। मैं और मेरा, तू और तेरा - यही माया है, जिसने सभी प्राणियों को वश में कर रखा है। जहाँ तक मन इन्द्रियों के विषयों की ओर जाता है, हे भाई! उस सब को भ्रम जानना। उनके दो रहस्य भी सुनो- एक ज्ञान और दूसरा अज्ञान।

एक (अज्ञान) दुष्ट (दोषपूर्ण) है और अत्यंत दुःखी है, जिसके वश में होकर जीव संसार रूपी कूप में पड़ा हुआ है। और एक (विद्या) है जिसके वश में गुण हैं और जो संसार की रचना करती है, वह केवल ईश्वर से प्रेरित है, उसकी अपनी कोई शक्ति नहीं है। ज्ञान वह है जहाँ (जिसमें) मान आदि का एक भी [दोष] न हो।

और जो सभी में ब्रह्म को समान रूप से देखता है। हे पिता, उसे ही कहना चाहिए जिसने सभी सिद्धियों और तीनों गुणों को तिनके की तरह त्याग दिया है।

जिसमें अभिमान, अहं, हिंसा, क्षमा न करना, कुटिलता, गुरु सेवा का अभाव, अपवित्रता, अस्थिरता, मन पर संयम न रखना, इंद्रियों के प्रति आसक्ति, अहंकार, जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा और रोग के संसार में सुख, आसक्ति। स्त्री-पुत्र-घर आदि और प्रेम, वांछनीय और अवांछनीय की प्राप्ति में हर्ष और दुख, भक्ति का अभाव, एकांत में मन का अभाव, कामुक पुरुषों की संगति में प्रेम - ये अठारह नहीं हैं और स्थिति में शाश्वत आध्यात्मिकता (आत्मा) और तत्वज्ञान के अर्थ का शाश्वत दर्शन।

जो माया, देवता तथा अपने स्वरूप को नहीं जानता, उसे जीव कहना चाहिए। जो (कर्म) बंधन और मोक्ष देता है, जो सब से परे है और माया का प्रेरक है, वह भगवान है। वेदों में उस मार्ग का वर्णन किया गया है जिससे व्यक्ति को वैराग्य प्राप्त होता है और योग के अभ्यास से ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान से मोक्ष प्राप्त होता है। और अरे भाई! जो मुझे शीघ्र प्रसन्न करता है वही मेरी भक्ति है जो भक्तों को सुख देती है।

वह भक्ति एक खटतंत्र है, उसे किसी अन्य साधन [ज्ञान, विज्ञान आदि] से कोई सहारा (अपेक्षा) नहीं है। ज्ञान और विज्ञान उसके अधीन हैं। हे पिता! भक्ति अद्वितीय है और सुख का मूल है; , और यह तभी प्राप्त होता है जब संत प्रसन्न होते हैं। अब मैं भक्ति के साधन के बारे में विस्तार से बताऊंगा - यह एक आसान मार्ग है जिसके द्वारा जीव मुझे आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। सबसे पहले, व्यक्ति को ब्राह्मणों के चरणों में अत्यधिक प्रेम होना चाहिए और वेदों की परंपरा के अनुसार अपने [वर्णाश्रम] कार्यों में लगे रहना चाहिए।

इसका परिणाम होगा विषयों का त्याग। तब (त्याग करने पर) मेरे धर्म (भागवत धर्म) में प्रेम उत्पन्न हो जायेगा। तब श्रवण आदि नौ प्रकार की भक्ति दृढ़ हो जायेगी और हृदय में मेरी लीलाओं के प्रति अगाध प्रेम उत्पन्न हो जायेगा।

जिसे संतों के चरणकमलों में अत्यधिक प्रेम है; मन, वचन और कर्म से पूजा का दृढ़ नियम होना चाहिए और जो सब कुछ जानने वाला हो और गुरु, पिता, माता, भाई, पति और भगवान के रूप में मेरी सेवा करने में दृढ़ हो;

मेरा गुणगान करते समय जिसका शरीर पुलकित हो जाता है, वाणी प्रफुल्लित हो जाती है और जिसके नेत्रों से (प्रेम के) आँसू बहने लगते हैं तथा जो काम, मद और अभिमान आदि से मुक्त हो जाता है, हे भाई! मैं सदैव उसके वश में रहता हूँ।

जिसके कर्म, वचन और विचार मेरे ही हैं; और जो निःस्वार्थ भाव से मेरी पूजा करते हैं, उनके हृदय कमल में मैं सदैव विश्राम करता हूँ।

इस भक्तियोग को सुनकर लक्ष्मणजी को अत्यंत प्रसन्नता हुई और उन्होंने प्रभु श्री रामचाचाजी के चरणों में सिर झुका दिया। इस प्रकार त्याग, ज्ञान, सदाचार और नीति की बातें करते-करते कुछ दिन बीत गये। रावण की एक बहन थी जिसका नाम शूर्पणखा था, जो नागिन के समान भयानक और दुष्ट हृदय वाली थी। वह एक बार पदजावती के पास गई और वहां दोनों राजकुमारों को देखकर व्याकुल (काम से पीड़ित) हो गई।

काकभुशुण्डिजी कहते हैं---हे गरुड़जी! [शूर्पणखा जैसी राक्षसी, धार्मिक ज्ञान से रहित कामी व्यक्ति] जब कोई स्त्री किसी सुंदर पुरुष को देखती है, चाहे वह भाई हो, पिता हो या पुत्र हो, तो वह परेशान हो जाती है और अपने मन पर नियंत्रण नहीं रख पाती, जैसे नीलम पिघल जाता है (लौ से पिघल जाता है) सूरज को देखने के बाद. वह सुंदर रूप धारण करके भगवान के पास गई और मुस्कुराते हुए बोली- न तो आपके जैसा कोई पुरुष है और न ही मेरे जैसी कोई स्त्री है! विधाता ने बहुत सोच-विचार कर यह संयोग बनाया है।

संसार में मेरे लिये कोई योग्य वर (वर) नहीं है इसलिये मैंने तीनों लोक ढूँढ़ लिये। इसलिये मैं अब तक कुँवारी (अविवाहित) रही। अब तुम्हें देखकर मेरा मन स्थिर हो गया है। प्रभु श्री रामचन्द्रजी ने सीताजी की ओर देखकर कहा कि मेरा छोटा भाई कुमार है। फिर वह लक्ष्मणजी के पास गयी। लक्ष्मणजी ने उसे शत्रु की बहन समझकर प्रभु की ओर देखा और कोमल स्वर में कहा-

वह सुंदर है! सुनो, मैं उनका दास हूँ। मैं पराधीन हूं, अतः तुम्हें सुख नहीं मिलेगा। आज वे कोसलपुर के राजा हैं। यदि सेवक सुख चाहता है, भिखारी सम्मान चाहता है, व्यसनी (जो जुआ, शराब आदि का आदी है) धन चाहता है और व्यभिचारी सौभाग्य चाहता है, लालची प्रसिद्धि चाहता है और अहंकारी चारों फल - धन चाहता है, धर्म, काम, मोक्ष, फिर ये सभी प्राणी आकाश को दुहते हैं और दूध पीते हैं। चाहते हैं (अर्थात असंभव चीजों को संभव बनाना चाहते हैं)।

वह लौटकर पुनः श्री रामजी के पास आयी। भगवान ने उसे फिर लक्ष्मणजी के पास भेजा। लक्ष्मणजी ने कहा- वही तुमसे प्रेम करेगा जो अपनी लज्जा को त्याग देगा (अर्थात प्रतिज्ञा करके) (अर्थात् जो पूर्णतः निर्लज्ज होगा)। तब वह क्रोधित (क्रोधित) हो गई और श्री रामजी के पास गई और अपना भयानक रूप प्रकट किया। सीताजी को भयभीत देखकर श्रीरघुनाथजी ने लक्ष्मणजी को संकेत करके कहा।

लक्ष्मणजी ने बिना किसी हिचकिचाहट के शीघ्र ही उसका वध कर दिया। मानो रावण को उसके हाथों ललकारा हो! वह बिना किसी हिचकिचाहट के राक्षसी बन गई। [उसके शरीर से खून बहने लगा] मानो किसी [काले] पहाड़ से गेरू की धारा बह रही हो। वह विलाप करती हुई खर-दूषण के पास गयी [और बोली--] हे भाई! धिक्कार है तुम्हारी वीरता पर, धिक्कार है तुम्हारी ताकत पर।

उसने पूछा, तब शूर्पणखाने सारी बात समझाते हुए बोली. सारी बात सुनकर राक्षसों ने अपनी सेना तैयार की। राक्षस झुंड बनाकर भाग गये। मानो पंखदार काजल के पहाड़ों का झुंड हो। ये कई प्रकार के वाहनों पर लगाए जाते हैं और कई आकार (दिखने) वाले होते हैं। वह विशाल है और अनेक प्रकार के असंख्य भयानक अस्त्र-शस्त्र धारण करता है। उन्होंने नाक और कान कटे हुए अशुभ रूप वाली शूर्पणखा को सामने रखा।

अनगिनत भयानक अपशकुन हो रहे हैं. परन्तु चूँकि वे मृत्यु के वश में हैं, वे सब उन्हें कुछ भी नहीं गिनते। वे दहाड़ते हैं, ललकारते हैं और आकाश में उड़ते हैं। सेना को देखकर योद्धा बहुत प्रसन्न होते हैं। कोई कहता है दोनों भाइयों को जीवित पकड़ लो, मार डालो और खत्री को छीन लो। आकाश धूल से भर गया। तब श्रीगमजी ने लक्ष्मणजी को बुलाया और उनसे कहा-

राक्षसों की भयंकर सेना आ पहुँची है। आप जानकीजी के साथ पर्वत की कन्दराओं में जाइये। ध्यान से। प्रभु श्री रामचन्द्रजी के वचन सुनकर लक्ष्मणजी हाथ में धनुष-बाण लेकर श्रीसीताजी के साथ आये। श्री रामजी ने यह देखकर कि शत्रु की सेना (पास) आ गयी है, हँसकर कठोर धनुष चढ़ाया।

भारी धनुष चढ़ाये हुए और सिर पर जातक बाण बाँधे हुए भगवान कितने शोभायमान हो रहे हैं, मानो पन्ना के पर्वत पर दो साँप करोड़ों बिजलियों के साथ युद्ध कर रहे हों। कमर के चारों ओर कसकर कांपें। भगवान श्री रामचन्द्रजी अपनी विशाल भुजाओं में धनुष लिये बाणों का संधान करके राक्षसों की ओर देख रहे हैं। मानो मतवाले हाथियों के समूह को आते देखकर सिंह घूरकर देख रहा हो।

'पकड़ो-पकड़ो' चिल्लाते हुए राक्षस योद्धा बगीचे से निकलकर (बड़े वेग से) दौड़े चले आये। और उन्होंने श्रीयामजी को चारों ओर से घेर लिया. उदाहरण के लिए, बालसूर्य (उगते सूरज) को अकेले देखकर, वे मंदेह नामक राक्षस से घिर जाते हैं। सौन्दर्य और माधुर्य से सम्पन्न भगवान श्री राम को देखकर राक्षसों की सेना थक गयी। वे उन पर तीर नहीं चला सकते थे। खर-दूषण ने मंत्री को बुलाकर कहा- यह राजकुमार मनुष्यों का आभूषण है।

सभी साँपों, राक्षसों, देवताओं, मनुष्यों और ऋषियों में से, हमने अनगिनत को देखा, जीया और मारा है। परन्तु हे सब भाईयों! सुनो, ऐसा सौन्दर्य हमने अपने पूरे जीवन में कहीं नहीं देखा। यद्यपि उन्होंने हमारी बहनों को कुरूप बना दिया है, तथापि ये अद्वितीय पुरुष मारे जाने के योग्य नहीं हैं। 'अपनी छुपी हुई पत्नी हमें तुरंत दे दो और दोनों भाई जीवित होकर घर लौट आएं।'

तुम सब मेरा यह कथन उनसे कहो और उनका उत्तर (उत्तर) सुनकर शीघ्र आओ। दूतों ने जाकर श्री रामचन्द्रजी को यह सन्देश सुनाया। यह सुनकर श्री रामचन्द्र जी मुस्कुराये और बोले- हम क्षत्रिय हैं, वन में शिकार करते हैं और सदैव तुम्हारे जैसे दुष्ट पशुओं की खोज में घूमते रहते हैं। हम किसी ताकतवर दुश्मन को देखकर नहीं डरते. [अगर हम लड़ने आएं] तो हम एक बार काल से भी लड़ सकते हैं।

यद्यपि हम मनुष्य हैं तथापि हम ही राक्षसों का विनाश करते हैं और ऋषियों की रक्षा करते हैं। हम बालक हैं, परन्तु दुष्टों को दण्ड देने वाले भी हम ही हैं। अगर ताकत नहीं है तो घर लौट जाओ. वह युद्ध में पीठ दिखाने वाले को नहीं मारता। युद्ध में उतरना, कपटी और चतुर होना तथा शत्रु पर दया करना बड़ी कायरता है। दूतों ने तुरंत लौटकर सारी बात बतायी, जिसे सुनकर खर-दूषण का हृदय अत्यंत जलने लगा।

, खर-दुशंका का हृदय दुखा। फिर उसने कहा--इसे पकड़ लो. यह सुनकर भयानक राक्षस योद्धा तीर, धनुष, तोमर, शक्ति (गायन), शूल (भाला), कृपाण (खंजर), परिघ और कुल्हाड़ी से सुसज्जित होकर भागने लगे। प्रभु श्री राम ने पहले धनुष पर अत्यंत कठोर, कठोर और भयानक प्रहार किया, जिसे सुनकर राक्षस बहरे और व्याकुल हो गये। उस वक्त उन्हें किसी बात का होश नहीं था.

तब वे शत्रुओं को बलवान जानकर सावधान होकर दौड़े और श्री रामचन्द्रजी पर नाना प्रकार के रक्त की वर्षा करने लगे। श्री रघुवीरजी ने उनके अस्त्र-शस्त्रों को तिल के समान टुकड़े-टुकड़े कर दिया। फिर धनुष को कान तक पकड़कर बाण छोड़ें। अत्यंत तीखे बाणों को देखकर राक्षस पीठ मोड़कर भागने लगे। तब खर, दूषण और बृशिरा तीनों भाई क्रोधित होकर बोले- जो कोई युद्ध से भागेगा।

हम उसे अपने हाथों से मार डालेंगे. तब राक्षस मन में मरने की इच्छा लेकर भागते-भागते पीछे मुड़ गये और अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से श्री रामजी पर आक्रमण करने लगे। शत्रु को अत्यन्त क्रोधित हुआ देख भगवान ने अपने धनुष पर बाण चढ़ाकर बहुत से बाण छोड़े, जिससे भयानक राक्षस कटने लगे। उसकी

छाती, सिर, भुजाएँ, हाथ और पैर पृथ्वी पर सर्वत्र गिरने लगे। तीर लगते ही वे हाथी की भाँति चिंघाड़ने लगते हैं। उनके पर्वत जैसे धड़ टुकड़े-टुकड़े होकर गिर रहे हैं।

योद्धाओं के शरीर सैकड़ों टुकड़ों में काट दिये जाते हैं। फिर धोखा खाकर उठ जाते हैं। अनेक भुजाएँ और सिर आकाश में उड़ रहे हैं और बिना सिर के धड़ दौड़ रहे हैं। चील [या कौवे], कौवे आदि पक्षी और सियार कठोर और भयानक चिल्लाने की आवाज निकाल रहे हैं। सियार चिल्ला रहे हैं, भूत, पिशाच और शैतान खोपड़ियाँ बटोर रहे हैं [या बर्तन भर रहे हैं]। कपालों पर वीर-बैताल ताल ठोक रहे हैं और योगिनियाँ नृत्य कर रही हैं।

श्री रघुवीर के भयंकर बाणों ने योद्धाओं की छाती, भुजाएँ और सिर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उनके धड़ जहां-तहां गिर जाते हैं. फिर वे उठकर लड़ते हैं और 'पकड़ो-पकड़ो' चिल्लाते हैं।

गिद्ध पंखों का एक सिरा पकड़कर उड़ते हैं और पिशाच दूसरे सिरे को हाथ से पकड़कर दौड़ते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानों युद्ध रूपी नगर के निवासी अनेक बच्चे पतंग उड़ा रहे हों। अनेक योद्धा मारे गये और पराजित हुए। बहुत से लोग, जिनके हृदय फट गए हैं, झूठ बोल रहे हैं और कराह रहे हैं। अपनी सेना को व्याकुल देखकर त्रियेशिग और खर-दूषण जैसे योद्धा श्री रामजी की ओर मुड़े।

असंख्य राक्षस क्रोधित होकर श्री रघुवीर पर एक साथ बाण, शक्ति, तोमर, कुल्हाड़ी, शूल और कृपाण छोड़ने लगे। भगवान ने क्षण भर में ही शत्रुओं के बाणों को काट कर उन पर ललकारा और अपने बाण छोड़ दिये। सभी राक्षस सेनापतियों के हृदय में दस-दस बाण मारो।

योद्धा ज़मीन पर गिरते हैं, फिर उठते हैं और लड़ते हैं। वे मरते नहीं, अनेक प्रकार के आडंबर रचते हैं। यह देखकर देवता भयभीत हो जाते हैं कि चौदह हजार भूत (राक्षस) हैं और अयोध्यानाथ श्री रामजी अकेले हैं॥ देवताओं और ऋषि-मुनियों को भयभीत देखकर मायापति ने बड़ा भारी शोर मचाया, जिससे शत्रु सेनाएं एक-दूसरे को राम समझने लगीं और आपस में लड़ने लगीं।

हर कोई राम-राम कहकर शरीर छोड़ देता है [“यह राम है, इसे मार डालो”] और निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त करते हैं। श्री राम की कृपा से उसने यह उपाय करके पल भर में ही शत्रुओं का नाश कर दिया। देवता प्रसन्न होकर पुष्प वर्षा कर रहे हैं, आकाश में नगाड़े बज रहे हैं। फिर वे सबकी प्रशंसा करके अनेक विमानों पर सुशोभित होकर चले गये।

जब श्रीरघुनाथजी ने शत्रुओं को युद्ध में हरा दिया और देवताओं, मनुष्यों तथा ऋषियों सबका भय नष्ट हो गया, तब लक्ष्मणजी सीताजी को ले आये। उनके चरणों में गिरकर भगवान ने प्रसन्नतापूर्वक उन्हें उठा लिया और अपने हृदय से लगा लिया।

सीताजी श्री गमजी के श्याम और कोमल शरीर को अत्यंत प्रेम से देख रही हैं, उनकी आँखों पर चोट नहीं है। इस प्रकार पंजवटी में स्थित होकर श्री रघुनाथजी देवताओं और ऋषियों को सुख देने वाले पुरुष के समान आचरण करने लगे। खर-दूषण का विनाश देखकर उसने शूर्पणखाने में जाकर रावण को भड़काया। वह बहुत क्रोधित हुई और बोली, "तुम देश और खजाने को भूल गये।"

वह शराब पीता है और दिन-रात सोता रहता है। क्या तुम नहीं जानते कि शत्रु तुम्हारे ऊपर खड़ा है? बिना नीति के राज्य और बिना धर्म के धन प्राप्त करना, देवताओं को समर्पित किए बिना अच्छे कर्म करना और बुद्धि विकसित किए बिना विद्या का अध्ययन करना केवल श्रम की ओर ले जाता है। प्रजा के सड़ने से तप, बुरी सलाह से राजा, मन से ज्ञान, शराब पीने से लज्जा, आदि होता है।

विनय के बिना (विनम्रता नहीं), प्रेम और अभिमान (अहंकार) से पुण्यात्मा शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं, ऐसी नीति मैंने सुनी है। शत्रु, रोग, अग्नि, पाप, गुरु और सर्प को कम नहीं आंकना चाहिए। यह कहकर शूर्पणखा रोने लगी और अनेक प्रकार से विलाप करने लगी। वह रावण की सभा के मध्य में व्याकुल पड़ी हुई अनेक प्रकार से रोती हुई कह रही थी कि हे दशग्रीव! क्या तुम्हारे जीते जी मेरी हालत ऐसी होनी चाहिए?

शूर्पणखा की बात सुनते ही परामर्शदाता अकुला उठ खड़ा हुआ। उन्होंने शूर्पणखा की बांह पकड़कर उसे उठाया और समझाया। लद्धापति रावण ने कहा- बताओ, तुम्हारे नाक-कान किसने काटे। वह बोली- अयोध्या के राजा दशरथ का पुत्र, जो मनुष्यों में सिंह के समान है, शिकार खेलने के लिये वन में आया है। मैंने उनके कार्यों को ऐसा समझा है कि वे पृथ्वी को राक्षसों से मुक्त कर देंगे।

दोनों भाइयों का बल और वैभव अतुलनीय है। वे दुष्टों और देवताओं का संहार करने में लगे हुए हैं। वह साधुओं को सुख देने वाला है। वह सौन्दर्य का धाम है, 'राम' उसका नाम है। उसके साथ एक जवान खूबसूरत औरत भी है. विधाता ने उस स्त्री को इस रूप में बनाया है कि करोड़ों रति (कामदेव की पत्नी) उस पर आश्रित हैं। उसके छोटे भाई ने मेरे नाक-कान काट दिये। यह सुनकर कि मैं तुम्हारी बहन हूं, वे मुझ पर हंसने लगे.

मेरी पुकार सुनकर खर-दूषण सहायता को आये। परन्तु उसने क्षण भर में ही सारी सेना को मार डाला। खर-दूषण और त्रिशिरक का वध सुनकर रावण के सारे अंग जल गये। उसने शूर्पणखा को समझाया और तरह-तरह से अपनी ताकत का बखान किया, लेकिन [मन मैं]। वह बहुत चिंतित होकर अपने महल में गया, पूरी रात उसे नींद नहीं आई।

[वह मन में सोचने लगा--] देवता, मनुष्य, दानव, नाग और पक्षियों में कोई भी ऐसा नहीं है जो मेरे सेवक को ढूंढ सके। खर-दूषण मेरे ही समान बलशाली थे। ईश्वर के अतिरिक्त उन्हें और कौन मार सकता है? यदि देवताओं को आनन्द देने वाले और पृथ्वी का भार हरने वाले भगवान अवतरित हो गये हैं तो मैं जाकर उनके विरुद्ध हठपूर्वक युद्ध करूंगा और भगवान के बाण की चोट से मर जाऊंगा और भवसागर से तैरकर दूर चला जाऊंगा।

इस तामस शरीर से कोई भक्ति नहीं होगी; इसलिए मन, वचन और कर्म से यह दृढ़ निश्चय है। और यदि वह मनुष्य रूप में राजकुमार होता तो उसकी पत्नी उन दोनों को युद्ध में परास्त करने के बाद हारा हुआ महसूस करती। यह सोचकर रावण रथ पर चढ़कर अकेला ही समुद्र तट पर जहाँ मारीच रहता था, वहाँ चला गया। शिवजी कहते हैं- हे पार्वती! यहां श्री रामचन्द्रजी द्वारा रची गई युक्ति की सुन्दर कथा सुनो।

जब लक्ष्मणजी कंद-मूल लेने के लिये वन में गये, तब (अकेले) आशीर्वाद और प्रसन्नता के समूह श्री रामचन्द्रजी ने हँसकर जानकीजी से कहा- हे प्रिये! हे व्रत और धर्म का पालन करने वाले सुन्दर सुशील! सुनना ! अब मैं कोई सुन्दर मानवीय लीला करूँगा। अत: जब तक मैं राक्षसों का नाश न कर दूं, तब तक तुम्हें अग्नि में निवास करना चाहिए।

जैसे ही श्री रामजी ने सब कुछ समझाया, श्री सीताजी प्रभु के चरणों को हृदय में रखकर अग्नि में समा गईं। सीताजी ने वहां अपनी छाया रख दी, जो उनके ही समान शील और सौंदर्य वाली तथा उतनी ही विनम्र थी। भगवान ने जो भी लीला रची उसका रहस्य लक्ष्मणजी भी नहीं जानते थे। स्वार्थी और मतलबी रावण वहाँ गया जहाँ मारीच था और उसे सिर झुकाने पर मजबूर कर दिया।

नीचे झुकना भी बहुत कष्टकारी होता है. जैसे धनुष, धनुष, साँप और बिल्ली का झुकना। हे भवानी! दुष्टों की मीठी बातें भी भयावह होती हैं, बिन मौसम के फूलों की तरह! तब मारीच ने उनकी पूजा करके आदरपूर्वक पूछा- हे पिताजी! तुम्हारा मन इतना व्याकुल क्यों है और अकेले क्यों आये हो?

रावण ने, जो अभागा था, बड़े गर्व से उसे सारा वृत्तान्त सुनाया [और फिर कहा-] तू छली, कपटी मृग बन जा, मैं किस उपाय से उस राजवधू को छीन लूँगा। तब उन्होंने (मारीचेन ने) कहा- हे दशाशीष! सुनना। वह मानव रूप में चराचर देवता हैं। हे पिता! उनसे शत्रुता न करें. एक उनकी हत्या से मरता है और एक उनके पुनरुत्थान से जीवित रहता है (हर किसी का जीवन और मृत्यु उनके नियंत्रण में है)।

यही राजकुमार ऋषि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करने गये थे। उस समय श्रीरघुनाथजी ने मुझ पर बिटना फलका बाण मारा था, जिससे मैं क्षणभर में उसी योजन पर गिर पड़ा। इनसे छुटकारा पाने में कोई दिक्कत नहीं है. मेरी हालत भँवरे जैसी हो गयी है. अब तो मुझे सर्वत्र भाई श्री राम और लक्ष्मण ही दिखाई देते हैं। और हे पिता! भले ही वह एक इंसान हो, एक महान योद्धा है। उनका विरोध करने में सफलता नहीं मिलेगी (आपको सफलता नहीं मिलेगी)।

जो ताड़का और सुबाहु पर प्रहार करके भगवान शिव के धनुष को तोड़ सकता है और खर, द्रुशन तथा बत्रसिग को मार सकता है, ऐसा भयंकर बाली भला मनुष्य कैसे हो सकता है? अत: तुम अपने कुल की भलाई का विचार करके घर लौट आओ। यह सुनकर रावण क्रोधित हो गया और उसने लोगों को खूब गालियाँ दीं। [कहा--] अरे मूर्ख! क्या आप मुझे गुरु की तरह ज्ञान सिखाते हैं? बताओ संसार में मेरे समान योद्धा कौन है?

तब मारीच को अपने मन में एहसास हुआ कि इन नौ लोगों - शास्त्री (हथियार चलाने वाला), मर्मि (रहस्यों को जानने वाला), एक सक्षम स्वामी, एक मूर्ख, एक अमीर आदमी, एक पुजारी, एक भांडे, एक कवि - को नाराज करने से कोई फायदा नहीं है। और एक रसोइया. जब मारीच को अपनी मृत्यु दोनों ओर से दिखाई देने लगी तो वह श्रीरघुनाथजी की शरण में गया (अर्थात् उनकी शरण में जाना ही उसने श्रेष्ठ समझा)। [सोचा कि] मेरे उत्तर (नहीं) देते ही यह अभागा आदमी मुझे मार डालेगा। फिर मैं श्रीरघुनाथजी के बाण से क्यों न मरूँ?

मन में यही भावना लेकर वह रावण के साथ चला गया। श्री रामजी के चरणों में उनका अटूट प्रेम है। उसके मन में बड़ा हर्ष है कि आज उसे अपने प्रिय श्री गरमजी के दर्शन होंगे; लेकिन उसने अपनी यह ख़ुशी रावण से जाहिर नहीं की. वह मन में सोचने लगा-मैं अपने नेत्रों को सफल करके अपने परम प्रियतम का दर्शन कर सुख प्राप्त करूंगा। मैं जानकीजी और अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित धन्य श्री रामजी के चरणों में अपना मन लगाऊंगा।

जिनके क्रोध से भी मुक्ति मिलती है और जिनकी भक्ति से अवश (स्वतंत्र ईश्वर जिसे कोई भी वश में नहीं कर सकता) को भी वश में कर लेता है, अहा! वे स्वयं आनन्द के सागर श्रीहरि अपने हाथों से बाण चलाकर मेरा वध करेंगे!

मैं यहोवा को धनुष और बाण लिये हुए मुझे पकड़ने के लिये पृथ्वी पर अपने पीछे दौड़ता देखूंगा। मेरे समान सौभाग्यशाली दूसरा कोई नहीं है। जब रावण उस वन (जिस वन में श्री रघुनाथजी रहते थे) के निकट पहुँचा, तब मारीच धोखेबाज मृग बन गया। यह बहुत अजीब था, इसका कुछ भी वर्णन नहीं किया जा सकता। शरीर सोने का बना था और रत्नों से जड़ा हुआ था।

सीताजी ने उस अत्यन्त सुन्दर मृग को देखा, जिसके अंग अत्यन्त सुन्दर थे। [वह कहने लगी--] हे भगवान! हे कपालु रघुवीर! सुनना। इस हिरण की छाल बहुत सुंदर होती है। जानकीजी बोलीं- हे सत्य की शपथ लेने वाले प्रभु! इसे मार डालो और इसका चमड़ा ले आओ। तब श्रीरघुनाथजी ने [मारीच के मन में कपटी मृग बनने का विचार किया। सब कारण जानते हुए भी वह देवताओं का कार्य करने के लिए प्रसन्नतापूर्वक उठ खड़ा हुआ।

हिरण को देखकर श्री राम ने उसकी कमर में कोड़ा बाँधा और हाथ में धनुष लेकर उस पर एक सुन्दर (दिव्य) बाण चलाया। तब भगवान ने लक्ष्मणजी को समझाते हुए कहा- हे भाई! वन में अनेक राक्षस विचरते हैं। आप अपनी बुद्धि और विवेक के बल और समय का विचार करके सीता की रक्षा करें। भगवान को देखकर हिरण भाग गया। श्री रामचन्द्रजी भी धनुष चढ़ाकर उनके पीछे दौड़े।

वेद जिनके विषय में हम 'नेति-नेति' कहते रहते हैं और जिनका ध्यान भगवान शिव भी नहीं कर सकते (अर्थात जो मन और वाणी से सर्वथा परे हैं), वे ही श्री रामजी माया रचित मृग के पीछे भाग रहे हैं। कभी-कभी वह करीब आता है और फिर भाग जाता है। कभी प्रकट होता है तो कभी छिपा रहता है।

इस प्रकार प्रकट होकर, छिपकर तथा अनेक छल करके वह भगवान को हर ले गया। तब श्री रामचन्द्र जी ने एक कठोर बाण चलाया, [लगते ही] वह बड़े शब्द के साथ पृथ्वी पर गिर पड़ा। उन्होंने पहले लक्ष्मणजी का नाम लिया, फिर मन में श्री रामजी का स्मरण किया। प्राण त्यागते समय उन्होंने अपना (राक्षसी) शरीर प्रकट किया और प्रेमपूर्वक श्री रामजी का स्मरण किया।

सुजान (सर्वज्ञ) श्री राम जी ने उसके हृदय के प्रेम को पहचान लिया और उसे वह शक्ति (अपना परम पद) प्रदान की जो ऋषियों के लिए भी दुर्लभ है। देवता बहुत

से फूल बरसा रहे हैं और भगवान के गुणों की प्रशंसा कर रहे हैं [कि] श्रोघुनाथजी इतने विनम्र व्यक्ति हैं कि उन्होंने राक्षसों को भी अपना सर्वोच्च स्थान दिया है।

मारीच को मारकर श्री रघुवीर तुरंत पीछे लौट गये। हाथ में धनुष और कमर में तरकश लटकाए वह शोभायमान दिख रहे हैं। यहां जब सीताजी ने दुःख भरे वचन कहे (मरते समय मारीचका की 'हा लक्ष्मण' की आवाज)। वह बहुत भयभीत हो गयी और लक्ष्मणजी से बोली-

तुम जल्दी जाओ, तुम्हारे भाई बड़े संकट में हैं। लक्ष्मणजी हँसकर बोले- हे माता! सुनो, जिनकी भौंह के इशारे मात्र से सारी सृष्टि का विनाश हो जाता है, वे श्री रामजी क्या प्रेम में भी कभी संकट में पड़ सकते हैं? इस पर जब सीताजी कुछ हृदयस्पर्शी वचन (हृदय-भेदी वचन) कहने लगीं, तब भगवान की प्रेरणा से लक्ष्मणजी का मन भी व्याकुल हो उठा।

उन्होंने श्री सीताजी को वन और दिशाओं के देवताओं को सौंप दिया और रावण रूपी चंद्रमा के लिए राहुर के रूप में उस स्थान पर चले गए जहां श्री रामजी थे।

मौका देखकर रावण यति (संन्यासी) का भेष बनाकर श्री सीताजी के पास आया। जिससे देवता और दानव भी इतने भयभीत रहते हैं कि उन्हें रात को नींद नहीं आती और दिन में पेट भरा हुआ महसूस होता है। खाना नहीं खाता - वही दस सिर वाला रावण चोरी के लिए कुत्ते की तरह इधर-उधर देखने लगा। [काकभुशुण्डिजी कहते हैं--] हे गरुड़जी! इस प्रकार कुमार्ग पर पैर रखते ही शरीर में तेज, बुद्धि और बल का लेशमात्र भी नहीं रहता।

कुत्ता खाली पाकर चुपचाप बर्तनों में मुँह डालकर कुछ चुरा लेता है, इसे 'भदिहाई' कहते हैं। रावण ने अनेक मनोहर कहानियाँ रचकर सीताजी के प्रति नीति, भय और प्रेम का परिचय दिया। सीताजी ने कहा--हे यति गोसाईं! सुनो, तुम दुष्टों की भाँति बोले।

तब रावण ने अपना असली रूप दिखाया और नाम बताया तो सीताजी डर गईं। उसने बड़े धैर्य के साथ कहा-अरे दुष्ट! बस खड़े रहो, भगवान आ गए हैं। जिस प्रकार एक घृणित खरगोश को सिंह का शिकार अच्छा लगता है, उसी प्रकार हे राक्षस राजा! तुम [मेरी इच्छा करके] काल के वश में हो गये हो। ये वचन सुनकर रावण को क्रोध तो आया, परंतु मन ही मन सीताजी के चरण वंदन से उसे प्रसन्नता भी हुई।

तब रावण ने क्रोध में भरकर सीताजी को रथ पर बैठाया और बड़े वेग से आकाश मार्ग से भ्रमण किया; परन्तु भय के कारण उसने रथ नहीं हटाया। ,सीताजी विलाप कर रही थीं--] हे जगत के अद्वितीय नायक श्रीरघुनाथजी! तू किस अपराध से मुझ पर अपनी कृपा भूल गया है? हे दुःखों का नाश करने वाले, हे शरणागत को सुख देने वाले, हे रघुकुल रूपी कमल सूर्य।

हा लक्ष्मण! तुम्हारा दोष नहीं है। मुझे गुस्सा आया और मुझे इसका परिणाम भुगतना पड़ा. श्री जानकीजी अनेक प्रकार से विलाप कर रही हैं - [हाय!] भगवान की बहुत कृपा है, लेकिन वो गाड़ियाँ बहुत कम बची हैं। यह श्रीरामचन्द्रजी का परिक्षेत्र है। [उसने देखा कि] नीच राक्षस उन्हें [बुरी तरह से] ले जा रहा था, मानो कपिला गाय म्लेच्छ के हाथ में पड़ गई हो।

[उन्होंने कहा--] हे सीता पुत्री! डरो मत. मैं इस राक्षस को नष्ट कर दूंगा. [इतना कहकर] वह पक्षी गाय की भाँति अपनी खाल छोड़कर पर्वत की ओर क्रोध में कैसे दौड़ा? [उसने चिल्लाकर कहा-] हाय रे दुष्ट! वह खड़ा क्यों नहीं हो सकता? निर्भय होकर चला गया! तुम मुझे नहीं जानते थे? यमराज के समान उन्हें आता देख रावण पीछे मुड़ा और मन में अनुमान लगाने लगा-

यह या तो मैनाक पर्वत है या पक्षियों का स्वामी गरुड़। लेकिन वह (गरुड़) अपने भगवान विष्णु के साथ-साथ मेरी सेनाओं को भी जानता है! [पास आने पर] रावण ने उसे पहचान लिया [और कहा--] यह बूढ़ा जटायु है। वह मेरे हाथ के रूप में तीर्थ में अपना शरीर त्यागेगा। यह सुनकर गिद्ध क्रोध से भरकर बड़े वेग से दौड़ा और बोला- रावण! मेरी शिक्षा सुनो. जानकीजी को छोड़ कर सुरक्षित अपने घर चले जाओ। अन्यथा, हे अनेक भुजाओं वाले! ऐसा होगा कि--

श्री रामजी के क्रोध की अत्यंत भयानक अग्नि में सारा वंश जलकर भस्म हो जायेगा। योद्धा रावण कुछ उत्तर नहीं देता। तब गिद्ध क्रोधित होकर भाग गया। उसने [रावण के] बाल पकड़े और उसे रथ से नीचे खींच लिया, रावण पृथ्वी पर गिर गया। गिद्ध ने सीता को एक तरफ बिठाया और फिर मुड़कर रावण पर अपनी चोंच से हमला कर दिया और रावण के शरीर को फाड़ डाला। इससे वह एक पल के लिए बेहोश हो गये.

तब क्रोधित रावण ने अत्यंत खतरनाक खंजर निकाला और उससे जटायु के पंख काट दिये। पक्षी (जटायु) श्री रामजी के अद्भुत पराक्रम का स्मरण करके पृथ्वी पर गिर पड़ा। रावण सीताजी को पुनः रथ पर बैठाकर बड़े वेग से चला, उसे भी कम भय नहीं हो रहा था। _सीताजी आकाश में विलाप करती हुई जा रही हैं। मानो शिकारी के जाल में कोई भयभीत हिरण फँस गया हो।

पर्वत पर बैठे वानरों को देखकर सीताजी ने हरि का नाम लिया और अपने वस्त्र पहन लिये। इस प्रकार उन्होंने सीताजी को ले जाकर अशोक वन में रखा। अनेक प्रकार से सीताजी को भय और प्रेम दिखाने के बाद जब वह दुष्ट हार गया, तब उसने सीताजी से काम-काज करवाकर (सारी व्यवस्था ठीक करके) अशोक वृक्ष के नीचे रख दिया। जिस प्रकार श्री रामजी कपटी मन से दौड़े थे, वही छवि हृदय में रखकर वह हरि नाम का जप करती रहती है।

इधर श्रीरघुनाथजी अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी को आते देख बाह्य रूप से बहुत चिंतित हुए [और बोले-] हे भाई! तुम जानकी को अकेला छोड़कर मेरी आज्ञा की अवहेलना करके यहाँ आये हो! वन में राक्षसों के झुण्ड घूमते रहते हैं। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि सीता आश्रम में नहीं है। छोटे भाई लक्ष्मण जी ने श्री राम के चरण कमल पकड़ लिये और हाथ जोड़कर बोले- हे प्रभु! मेरी कोई गलती नहीं है.

भगवान श्री राम लक्ष्मणजी के साथ गोदाबाड़ी के तट पर जहां उनका आश्रम था, वहां गये। आश्रम को जानकी से रहित देखकर श्री रामजी सामान्य मनुष्य की भाँति व्यथित और दुःखी हो गये। [वह विलाप करने लगा--] हे गुणों की खान जानकी! रूप, आचरण, व्रत और नियम से पवित्र हे सीते! लक्ष्मणजी ने अनेक प्रकार से समझाया। तब श्री रामजी लताओं और वृक्षों की पंक्तियों से पूछते हुए चले-

हे पक्षियों! हे पशुओं! हे मधुमक्खियों की पंक्तियाँ! क्या आपने मृगनयनी सीता को कहीं देखा है? कौआ, तोता, कबूतर, हिरण, मछली, मधुमक्खियों का समूह, बुद्धिमान कोयल, साँप, अनार, बिजली, कमल, शरद ऋतु का चंद्रमा और साँप, वरुण का पाश, कामदेव का धनुष, हंस, हाथी और सिंह-ये सब आज अपनी प्रशंसा सुन रहे हैं। .

घंटियाँ, सोना और केले आनन्द मना रहे हैं। उनके मन में कोई संदेह या झिझक नहीं है. हे जानकी! सुनो, तुम्हारे बिना आज वे सब ऐसे प्रसन्न हैं मानो उन्हें राज्य मिल गया हो। (अर्थात आपके आग्रह के आगे वे सभी तुच्छ, अपमानित और लज्जित थे। आज आपको न देखकर उन्हें अपने सौंदर्य पर गर्व हो रहा है)।

यह प्रतिस्पर्धा आपसे कैसे दूर हो जाती है? हे प्रिये! आप शीघ्र प्रकट क्यों नहीं होते? इस प्रकार [अनन्त ब्रह्मपादोंका अथवा श्री सीताजी की शक्ति का परम महिमामय रूप] प्रभु श्री रामजी सीताजी की खोज करते हुए इस प्रकार विलाप करते हैं, मानो वे कोई महाप्रेमी तथा अत्यंत कामी पुरुष हों।

काम से परिपूर्ण, आनंद के प्रतीक, अजन्मा और अमर श्री राम मनुष्य की तरह व्यवहार कर रहे हैं। आगे [जाते समय] उन्होंने गृधपति जटायु को वहां लेटे हुए देखा। वह श्री रामजी के चरणों का स्मरण कर रहा था, जिनमें (ध्वजा, कुलीश आदि की) रेखाएँ (चिन्ह) हैं।
कपसागर श्री रघुवीर ने अपने करकमलों से उनके मस्तक का स्पर्श किया (कमल के पुष्प को मस्तक पर फिराया)। श्री रामजी का सुन्दर मुख देखकर उसका सारा दुःख दूर हो गया।

तब गिद्ध ने धैर्य रखकर ये शब्द बोले- हे जन्म और मृत्यु के भय को नष्ट करने वाले प्रभु श्री राम। सुनो हे नाथ! रावण ने मेरी यह हालत कर दी है. वही दुष्ट मनुष्य जानकीजी को हर ले गया है। हे गोसाईं! वह उन्हें दक्षिण की ओर ले गया है। सीताजी बहुत दुखी हैं. वह कराह रही थी. हे प्रभो ! तुम्हें देखने के लिए मैंने अपनी जिंदगी दांव पर लगा दी थी. हे धन्य! अब वे बस जाना चाहते हैं.

श्रीरामचन्द्रजी ने कहा--हे पिताजी! शरीर को बनाये रखें. तब उन्होंने हँसते हुए मुझसे यह कहा - मृत्यु के समय जिसका नाम मेरे मुँह में आ जाता है, वेद गाते हैं कि घोर से घोर पापी भी मुक्त हो जाता है - वही (आप) मेरे सामने खड़े हैं मेरी आँखों का विषय. हे नाथ! अब किस कमी की तलाश करूं शरीर को? श्रीरघुनाथजी नेत्रों में आँसू भरकर कहने लगे- हे पिताजी! आपको अपनी सर्वश्रेष्ठ कमोसा [दुर्लभ] गति मिल गई है।

जिनके मन में दूसरों का कल्याण है, उनके लिए संसार में कुछ भी (कोई भी गति) दुर्लभ नहीं है। हे पिता! तुम अपना शरीर त्याग दो और मेरे परमधाम को चले जाओ। मैं तुम्हें क्या दे सकता हूँ? आप पूर्णकाम (सबकुछ प्राप्त कर चुके) हैं तात! तुम जाकर अपने पिता को सीताहरण की बात मत बताना। यदि मैं राम हूँ तो दस मुख वाला रावण अपने परिवार सहित वहाँ आयेगा और स्वयं कहेगा।

जटायुं ने गिद्ध का शरीर छोड़कर हरिका का रूप धारण किया और अनेक अद्वितीय (दिव्य) आभूषण तथा [दिव्य] पीले पत्थर धारण किये। उनका शरीर काला है, चार विशाल भुजाएं हैं और उनकी आंखों में पानी (प्रेम और खुशी के आंसू) भरे हुए हैं, वे स्तुति कर रहे हैं - हे रामजी। आपकी जय हो । आपका स्वरूप अद्वितीय है, आप निर्गुण, सगुण हैं तथा सत्य ही गुणों (माया) का प्रेरक है। रावण की भयंकर भुजाओं को टुकड़े-टुकड़े करने की दस विद्याएँ-

मैं उन दयालु श्री राम को प्रतिदिन नमस्कार करता हूं, जो पृथ्वी के लिए प्रचंड बाण रखते हैं, जिनका अंधकार जल के बादल के समान है, जिनका मुख कमल

के समान है और जिनकी आंखें लाल कमल के समान हैं, जिनकी भुजाएं विशाल हैं और जो मृत्यु के भय से मुक्ति दिलाता है।

आप अनंत शक्तिशाली, शाश्वत, अजन्मा, अव्यक्त (निराकार), एक, अदृश्य (अदृश्य), गोविंद (वेदवाक्योंद्रर जानने योग्य), इंद्रियों से परे, [जन्म-मृत्यु, सुख-दुख, सुख-दुख आदि] का नाश करने वाले हैं। इंद्रियाँ, विज्ञान के घन की ओर, वे पृथ्वी की नींव हैं और संत राम-मंत्र का जाप करने वाले शाश्वत सेवकों के मन को आनंद देते हैं।

मैं श्री रामजी को प्रतिदिन प्रणाम करता हूं, जो निःस्वार्थ लोगों के प्रेमी हैं (निःस्वार्थ लोगों के प्रेमी हैं या उनके प्रिय हैं) और जो वासना जैसी बुरी (बुरी प्रवृत्ति) पार्टी को कुचल देते हैं।

जिसे श्रुतियाँ निर्ज्ञान (माया से परे), ब्रह्म, सर्वव्यापक, विकाररहित और जन्महीन कहकर गाती हैं। जो ऋषि-मुनियों द्वारा ध्यान, ज्ञान, वैराग्य और योग आदि अनेक कर्मों द्वारा प्राप्त किये जाते हैं। वे ही (स्वयं श्री भगवान) करुणाकन्द ऐश्वर्य के समूह में प्रकट होकर समस्त जड़-चेतन जगत् को मोहित कर रहे हैं। मेरे हृदयरूपी कमल रूप में अनेक कामदेवों की छवियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं।

जो दुर्गम और सुगम है, शुद्ध स्वभाव वाला है, विषम और सम है तथा सदैव शीतल (शांत) है। योगी लोग बहुत प्रयत्न करने पर भी अपने नशे और कामनाओं पर सदैव नियंत्रण रखते हुए जो देख पाते हैं, वह यह है कि जगत में निवास करने वाले तीनों लोकों के स्वामी श्री रामजी सदैव अपने सेवकों के वश में रहते हैं, यह मेरे हृदय में यह है कि जिंता का जनेऊ सारे आवागमन को नष्ट करने वाला है।

अखण्ड भक्ति का वरदान माँगकर राजा जटायु श्रीहरि के परमधाम को चले गये। श्री रामचन्द्र जी ने अपनी शक्ति के अनुसार सारे संस्कार [दाह संस्कार आदि] अपने हाथों से किये। श्रीरधुनाथजी अकारण ही अत्यंत कोमल हृदय, दयालु और मनमौजी हैं। गिद्ध [पक्षियों में भी]। वह नीच पक्षी और मांसाहारी था, उसे वह दुर्लभ गति भी प्राप्त थी, जिसे योगी लोग माँगते रहते हैं।

[शिवजी कहते हैं---] हे पार्वती! सुनो, वे मनुष्य अभागे हैं जो भगवान को छोड़कर पदार्थों में आसक्ति रखते हैं। फिर दोनों भाई सीताजी की खोज में आगे बढ़े। वे घनत्व पर नजर रखना जारी रखते हैं। वह घना जंगल लताओं और वृक्षों से भरा हुआ है। वहाँ बहुत से पक्षी, हिरण, हाथी और शेर रहते हैं। रास्ते में आते समय

श्री रामजी ने कबंध नामक राक्षस का वध कर दिया। उसने अपने श्राप के बारे में सब कुछ बता दिया.

[उन्होंने कहा--] दुर्वासाजी ने मुझे श्राप दिया था। अब भगवान के चरणों के दर्शन से वह पाप मिट गया। [श्री रामजी ने कहा--] हे गंधर्व! सुनो, मैं तुमसे कहता हूं, जो ब्राह्मण कुल से द्रोह करता है, वह मुझे पसंद नहीं है। जो मन, वचन और कर्म से कपट त्यागकर भूदेव ब्राह्मणों की सेवा करता है, मेरे, ब्रह्मा, शिव आदि सभी देवता उसके वश में हो जाते हैं।

संत कहते हैं कि ब्राह्मण शाप देने, मारने और कटु वचन कहने पर भी पूजनीय है। शील और सदाचार में हीन ब्राह्मण भी पूजनीय है। और अच्छे गुणों से युक्त तथा ज्ञान में डूबा हुआ शूद्र भी पूजा के योग्य नहीं है। श्री रामजी ने इसे अपना धर्म (भागवत-धर्म) कहकर उन्हें समझाया। उनके चरणों का प्रेम देखकर वह प्रसन्न हो गया। तदनन्तर वह श्रीरघुनाथजी के चरणकमलों में सिर नवाकर अपनी गति (गन्धर्वरूप) को प्राप्त होकर आकाश में चला गया।

उदार श्री रामजी ने उसे गति दी और शबरीजी के आश्रम में पहुँचे। तभी शबरी जी ने श्री रामचन्द्र जी को घर में आते देखा। मुनि माताजी के वचनों को याद करके उनका हृदय प्रसन्न हो गया। शबरीजी दो सुंदर भाइयों के चरणों से लिपट गईं, उनका रंग काला और गोरा था, उनकी कमल के आकार की आंखें और विशाल भुजाएं थीं, उनके सिर पर जटाओं का मुकुट था और उनके हृदय पर वन माला थी।

वह प्रेम में मग्न हो गयी और उसके मुँह से कोई शब्द न निकला। वह बार-बार चरण कमलों में सिर झुका रही है। , फिर उसने जल लेकर विधिपूर्वक दोनों भाइयों के पैर धोये और फिर उन्हें सुन्दर आसन पर बैठाया। उन्होंने अत्यंत रसीले और स्वादिष्ट कंद, मूल और फल लाकर श्री रामजी को दिये। प्रभु ने बार-बार उनकी स्तुति की और प्रेम से उन्हें खाया।

फिर वह हाथ जोड़कर आगे खड़ी हो गयी. प्रभु को देखकर उसका प्रेम अत्यंत बढ़ गया। [उसने कहा-] मैं आपकी स्तुति कैसे करूँ? मैं नीच जाति का हूं और अत्यंत मूर्ख हूं। जो लोग निम्नतम से भी निम्नतम हैं, उनमें स्त्रियाँ भी निम्नतम से भी निम्नतम हैं; और उनमें पापों का नाश भी होता है! मैं मंद हूं। श्रीरघुनाथजी ने कहा-हे भामिनी! मेरी बात सुनो। मैं केवल भक्तिपूर्ण रिश्ते में विश्वास करता हूं।

जाति, पौत्र, कुल, धर्म, अभिमान, धन, बल, कुल, गुण और चतुराई - ये सब होते हुए भी भक्तिहीन मनुष्य जलहीन बादल के समान कैसा दिखता है [सौंदर्य के

बिना दिखता है]। अब मैं तुम्हें अपनी नई भक्ति बताता हूँ। आप ध्यान से सुनें और मन में याद रखें. पहली भक्ति संतों का सत्संग है। मेरी कहानी के सन्दर्भ में दूसरी भक्ति प्रेम है।

तीसरी भक्ति है बिना किसी अभिमान के गुरु के चरणकमलों की सेवा करना और चौथी भक्ति है छल-कपट छोड़कर मेरे गुणों का गुणगान करना। मेरे (राम) मंत्र का जप करना और मुझ पर दृढ़ विश्वास रखना - यह पाँचवीं भक्ति है, जो वेदों में प्रसिद्ध है। छठी भक्ति है इंद्रियों पर नियंत्रण, शील (अच्छा आचरण या चरित्र), कई गतिविधियों से वैराग्य और संतों के धर्म (आचरण) में निरंतर संलग्न रहना।

सातवीं भक्ति है सारे संसार को समभाव से मुझमें लीन देखना और संतों का मुझसे भी अधिक आदर करना। आठवीं भक्ति है जो कुछ मिले उसी में संतुष्ट रहना और प्रेम में भी दूसरों के दोष न देखना।   सबके साथ सरल और बिना कपट के व्यवहार करना, हृदय में मुझ पर विश्वास रखना और किसी भी स्थिति में हर्ष या विषाद न करना। जिस किसी के पास इन नवों में से एक भी है, चाहे वह पुरुष हो, स्त्री हो, निर्जीव हो या चेतन -

हे भामिनी! वह मुझे बहुत प्रिय है. तब आपमें सभी प्रकार की भक्ति प्रबल हो जाती है। अत: जो गति योगियों के लिए भी दुर्लभ है, वह आज तुम्हें सुलभ हो गयी है। मेरे दर्शकों का सबसे अनोखा परिणाम यह है कि जीव अपने स्वाभाविक रूप को प्राप्त कर लेता है। हे भामिनी! अब अगर आपको गजगामिनी जानकी के बारे में कोई खबर पता हो तो बताएं.

शबरी ने कहा--]हे रघुनाथजी! तुम पम्पा नामक झील पर जाओ। वहाँ तुम्हारी सुग्रीव से मित्रता होगी। अरे बाबा ! हे रघुवीर! वह तुम्हें सब कुछ बता देगा. हे धैर्यवान मन! सब कुछ जानते हुए भी तुम मुझसे पूछते हो. उसने प्रभु के चरणों में बार-बार प्रणाम करके प्रेमपूर्वक सारा वृत्तांत सुनाया।

सारी कथा कहने के बाद भगवान के मुख का दर्शन करें और उनके चरणकमलों को अपने हृदय में धारण करें। यज्ञाग्नि को त्यागकर (जलाकर) वह उस दुर्लभ हरिपद्म में लीन हो गयी, जहाँ से लौटना संभव नहीं। तुलसीदासजी कहते हैं कि अनेक प्रकार के कर्म, अधर्म और अनेक मत- ये सब दुःखदायी हैं; हे मनुष्यों! इन्हें त्याग दो और श्री रामजी के चरणों में श्रद्धा और प्रेम रखो।

जो नीच जाति और पापों की जन्मभूमि थी, जिसने ऐसे लोगों को भी मुक्त कर दिया, हे मूर्ख मन! क्या आप ऐसे ईश्वर को भूलकर सुख चाहते हैं? श्री

रामचन्द्रजी उस वन को भी छोड़कर आगे चले गये। दोनों भाई अतुलनीय बलशाली हैं और मनुष्यों में सिंह के समान हैं। प्रभु उदास भाव से कई कहानियाँ और संवाद सुनाते हैं -

हे लक्ष्मण! जरा जंगल की खूबसूरती देखिए. इसे देखकर कौन परेशान नहीं होगा? पक्षियों और जानवरों के सभी समूहों में महिलाएँ भी शामिल हैं। मानो वे मेरी आलोचना कर रहे हों. जब हिरणों का झुंड हमें देखकर भागने लगता है तो हिरण उनसे कहते हैं- तुम डरो मत. तुम साधारण मृग से उत्पन्न हुए हो, इसलिए आनंद लो। वे सोने के मृग को खोजने आये हैं।

हाथी मादा हाथियों को साथ लेकर चलते हैं. मानो वे मुझे सिखा रहे हों [कि बच्चों को कभी अकेला नहीं छोड़ना चाहिए]। यहां तक कि एक सुविचारित शाखत्र को भी बार-बार देखा जाना चाहिए। अच्छी सेवा करने पर भी राजा को वश में नहीं समझना चाहिए। भले ही औरत को दिल में रखा जाए; परन्तु युवती, राजकुमार और राजा किसी के वश में नहीं रहते। हे पिता! इस खूबसूरत झरने को देखो. यह भय मेरे प्रियतम के बिना मुझमें भय उत्पन्न कर रहा है।

मुझे व्याकुल, शक्तिहीन तथा पूर्णतया अकेला जानकर कामदेव ने वन, भृंगों तथा पक्षियों के साथ मुझ पर आक्रमण कर दिया। लेकिन जब उनके दूत ने देखा कि मैं अपने भाई के साथ हूं (अकेला नहीं) तो उनकी बात मानकर कामदेव ने अपनी सेना रोक दी और डेरा डाल दिया. दे दिया है।

विशाल वक्षस्थलों में लताएँ ऐसी उलझी हुई प्रतीत होती हैं मानो विभिन्न प्रकार के तंबू ताने हुए हों। केले और ताड़ के पेड़ सुन्दर झंडों के समान हैं। इन्हें देखकर वही मोहित नहीं होता जिसका मन धैर्यवान हो। कई स्तन विभिन्न प्रकार से सूजे हुए होते हैं। मानो अलग-अलग वर्दी पहने हों, हुंह। बहुत से धनुर्धर होने चाहिए। कुछ स्थानों पर सुन्दर वृक्ष दिख रहे हैं। मानो योद्धाओं ने अलग-अलग शिविर लगा रखे हों।

अंगारे चिंघाड़ रहे हैं, मानो मतवाले हाथी दहाड़ रहे हों। ढेक और महोख पक्षी ऊँट और खच्चरों की तरह होते हैं। मोर, चकोर, तोता, कबूतर और हंस मानो सब सुन्दर ताजे (अरबी) घोड़े हों। पर्वतों की चट्टानें रथ हैं और जल के सोते नगाड़े हैं। पपीहे एक भाट है, जो गुणों के समूह (विरदावली) का वर्णन करता है।

सुबह की गुंजन घंटियों और शहनाइयों की आवाज है। मानो शीतल, मंद और सुगंधित वायु दूत बनकर आई हो। इस प्रकार ऐसा प्रतीत होता है मानो कामदेव अपनी चतुर्भुजी सेना के साथ सभी को चुनौती देते हुए घूम रहे हों। हे लक्ष्मण!

जो कामदेव की इस सेना को देखकर धैर्य रखते हैं, उनकी संसार में वीरों में प्रतिष्ठा होती है। इन कामदेव की एक खत्रिका में महान शक्ति है। जो बच जाता है वही सर्वश्रेष्ठ योद्धा है.

हे पिता! काम, क्रोध और लोभ - ये तीन बहुत शक्तिशाली बुराइयाँ हैं। ये विज्ञान के धाम ऋषि-मुनियों के मन को भी क्षण भर में पवित्र कर देते हैं। लोभ में इच्छा और अभिमान की शक्ति है, वासना में केवल खतरे की शक्ति है और क्रोध में कठोर शब्दों की शक्ति है; ऐसा महर्षि सोचते और कहते हैं।

[शिवजी कहते हैं--] हे पार्वती! श्री रामचन्द्रजी गुणातीत (तीन गुणों से परे), सर्वव्यापक जगत के स्वामी और सब कुछ जानने वाले हैं। [उपरोक्त बातें कहकर] उन्होंने कामी लोगों की असहायता दर्शायी है और धैर्यवान (विवेकशील) लोगों के हृदय में वैराग्य को दृढ़ किया है।

क्रोध, काम, लोभ, अहंकार और माया- ये सब श्री रामजी की कृपा से मुक्त हो जाते हैं। जिस मनुष्य पर नट (भगवान नटराज) प्रसन्न हो जाता है, वह मोह (माया) के जाल में नहीं फँसता। हे उमा! मैं तुम्हें अपना अनुभव बताता हूं---हरिका भजन सत्य है, यह सारा जगत स्वप्न जैसा [झूठा] है। तब प्रभु श्री रामजी पंपा नामक एक सुंदर और गहरे तालाब की ओर चले गए।

इसका जल संतों के हृदय के समान पवित्र है। मन को मोह लेने वाले चार सुंदर घाट बंधे हैं। हर जगह तरह-तरह के जानवर पानी पी रहे हैं। उदार दानी पुरुषों के घर में मानो भिखारियों की भीड़ लगी रहती है। घनी झाड़ियों (कमल के पत्तों) की आड़ में पानी का आसानी से पता नहीं चलता।

जिस प्रकार निर्गुण ब्रह्म माया से आवृत होने के कारण दिखाई नहीं देता। उस सरोवर के अत्यंत अथाह जल की सभी मछलियाँ सदैव इसी प्रकार प्रसन्न रहती हैं। जिस प्रकार धार्मिक लोगों के सभी दिन सुखपूर्वक बीतते हैं।

इसमें रंग-बिरंगे कमल खिल रहे हैं। अनेक पक्षी मधुर गुंजन कर रहे हैं। पक्षी, मुर्गे और राजहंस ऐसे गा रहे हैं, मानो प्रभु को देखकर उनकी स्तुति कर रहे हों। कौवे, बगुले आदि पक्षियों का समुदाय दिखाई देता है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। सुन्दर-सुन्दर पक्षियों की बोली बहुत अच्छी लगती है, मानो वे जाते हुए यात्री को बुलाते हों।

उस झील (पम्पासरोवर) के पास भिक्षुओं ने एक आश्रम बनाया है। इसके चारों ओर जंगल में सुन्दर वृक्ष हैं। चंपा, मौलसिरी, कदंब, तमाल, पाटल, कटहल,

ढाक और आम आदि - अनेक प्रकार के वृक्ष नये पत्तों और (सुगंधित) फूलों से भरे हुए हैं, जिनके ऊपर भौंरों के समूह गुंजन कर रहे हैं। स्वभावतः शीतल, मंद, सुगन्धित और मन को मोहने वाली वायु सदैव बहती रहती है।

अंगारे कुहू कुह की ध्वनि कर रहे हैं। उनकी ओजस्वी वाणी सुनकर ऋषि-मुनि भी अपनी एकाग्रता खो बैठते हैं। फलों के बोझ से झुककर सभी स्तन पृथ्वी के समीप आ गये हैं, जैसे दानी मनुष्य महान धन पाकर झुक जाता है।

एक अत्यन्त सुन्दर तालाब देखकर श्री रामजी ने स्नान किया और परम सुख पाया। सुन्दर एवं उत्तम स्तन की छाया देखकर श्रीरघुनाथजी अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित बैठ गये।

तब सभी देवता और ऋषि-मुनि वहाँ आये और स्तुति करके अपने-अपने स्थान को चले गये। कृपालु श्री रामजी बड़े प्रसन्न होकर बैठे हैं और अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी को रसभरी कहानियाँ सुना रहे हैं। भगवान को वियोग में देखकर नारदजी के मन में एक विशेष विचार आया। [उन्होंने सोचा] मेरे शाप को स्वीकार करके श्री रामजी नाना प्रकार के दुखों (कष्टों) का बोझ उठा रहे हैं।

मुझे जाकर ऐसे (भक्त) भगवान का दर्शन करने दो। ऐसा मौका दोबारा नहीं मिलेगा. यह सोचकर नारदजी हाथ में वीणा लेकर वहाँ गये, जहाँ भगवान प्रसन्न होकर बैठे थे। वे रामचरित्र को मधुर स्वर में गा रहे थे और अनेक प्रकार से प्रेमपूर्वक उसका वर्णन कर रहे थे। उन्हें झुकते देख श्री रामचन्द्रजी ने नारदजी को उठाया और बहुत देर तक हृदय से लगाकर रखा। फिर उन्होंने वेलकम (कुशल) के बारे में पूछा और उन्हें अपने पास बैठा लिया. लक्ष्मणजी ने आदरपूर्वक उनके पैर धोये।

अनेक प्रकार से विनती करने पर और यह जानकर कि भगवान उनके हृदय में प्रसन्न हैं, तब नारदजी ने कमल के समान हाथ जोड़कर कहा- श्रीरघुनाथजी स्वभाव से उदार हैं! सुनना। आप सुन्दर, सुलभ एवं सहज वरदान देने वाले हैं। हैं। यह दोष! मैं वर माँगता हूँ, वह मुझे दे दो, यद्यपि तुम सब कुछ जानने वाले हो। पहले से ही पता है। श्री रामजी ने कहा--]हे ऋषि! आप मेरे स्वभाव को जानते हैं. क्या मैं अपने भक्तों से कभी कुछ छिपाता हूँ? हे बुद्धिमान, मुझे कौन सी चीज़ सबसे अधिक पसंद है? आप नहीं पूछ सकते?

मुझे भक्त का कुछ भी ऋण नहीं है। ऐसा विश्वास भूलकर भी न छोड़ें. तब नारदजी प्रसन्न हो गये और बोले - मैं ऐसा वरदान माँगता हूँ, मेरी यह धृष्टता है -

यद्यपि ईश्वर के अनेक नाम हैं और वेद कहते हैं कि वे सभी एक-दूसरे से महान हैं, तथापि हे भगवन्! राम का नाम सभी नामों से बढ़कर हो और पापी पक्षियों के समूह के लिए संहारक के समान हो।

तेरी भक्ति पूर्णिमा की रात है; उसमें 'राम' नाम पूर्णिमा बन जाए और बाकी सभी नाम तारे बनकर भक्तों के हृदय रूपी निर्मल आकाश में विराजमान हो जाएं। दया के सागर श्रीरघुनाथजी ने मुनि से कहा 'एवमस्तु' (ऐसा ही हो)।

तब नारदजी मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए और भगवान के चरणों में सिर झुका दिया। श्रीरघुनाथजी को अत्यंत प्रसन्न देखकर नारदजी फिर कोमल वाणी से बोले- हे रामजी! हे रघुनाथजी! सुनो, जब तुमने अपनी माया से मुझे मोहित कर लिया,

तब मैं शादी करना चाहता था. हे प्रभु, आपने मुझे विवाह क्यों नहीं करने दिया? [भगवान ने कहा--] हे ऋषि! सुनो, मैं तुमसे सच्चे दिल से कहता हूं कि जो लोग सारी आशा और भरोसा छोड़कर केवल मुझे ही भजते हैं, मैं उनकी सदैव उसी तरह रक्षा करता हूं, जैसे मां अपने बच्चे की रक्षा करती है। जब छोटा बच्चा आग और साँप को पकड़ने के लिए दौड़ता है तो माँ उसे अपने हाथों से अलग करके बचा लेती है।

जब वह बड़ा हो जाता है तो मां उस बेटे से प्यार तो करती है, लेकिन पहले वाली बात नहीं रह जाती (अर्थात उसे मां के समान बच्चे की तरह उसकी रक्षा की चिंता नहीं रहती, क्योंकि वह मां पर निर्भर रहने के बजाय खुद ही अपनी रक्षा करने लगता है)। बुद्धिमान व्यक्ति मेरे परिपक्व बेटे और [आपकी तरह] जैसा है। जो सेवक अपने अधिकार की अवहेलना करता है, वह मेरे नवजात पुत्र के समान है।

मेरे सेवकों के पास केवल मेरी ताकत है और उसके (बुद्धिमान व्यक्ति) के पास अपनी ताकत है। लेकिन काम और क्रोध रूपी शत्रु दोनों के ही हैं। [भक्त के शत्रुओं को मारने का उत्तरदायित्व मुझ पर है, क्योंकि वह मेरे प्रति समर्पित होने के कारण मेरी शक्ति पर विश्वास करता है; परंतु बुद्धिमान मनुष्य की शक्ति पर विश्वास करने वाले शत्रुओं को नष्ट करना मेरा उत्तरदायित्व नहीं है।] ऐसा सोचकर बुद्धिमान लोग मेरी ही पूजा करते हैं। ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी वे भक्ति नहीं छोड़ते।

काम, क्रोध, लोभ और अहंकार आदि मोह (अज्ञान) की प्रबल शक्तियाँ हैं। इनमें से मायारूपिणी (माया का अवतार) सत्री सबसे गंभीर पीड़ा देने वाली है। सुनो,

पुराण, वेद और संत कहते हैं कि स्त्री सुंदर वन विकसित करने के लिए वसंत के समान है। ग्रीष्म रूपी नारी जप, तप और नियम रूपी समस्त जल को पूर्णतया ग्रहण कर लेती है।

सभी धर्म कमल के समूह हैं। निम्न (व्यक्तिपरक) सुख देने वाली यह स्त्री हिम बनकर उन्हें जला देती है। तब ममता रूपी जावों (जंगल) का समूह खरी रूपी शिशिर ऋतु का अनुभव करके हरा-भरा हो जाता है। पापी उल्लुओं के समूह के लिए यह घोर सुख देने वाली अत्यंत अँधेरी रात्रि है। बुद्धि, बल, शील और सत्य- ये सब मछलियाँ हैं और इन्हें फँसाकर नष्ट करने के लिये स्त्री बाँसुरी के समान है, ऐसा चतुर पुरुष कहते हैं।

एक जवान औरत सभी विकारों का स्रोत, दर्द का स्रोत और सभी दुखों की खान है। इसलिये हे ऋषि! यह बात मैंने अपने जीवन में जानते हुए भी तुम्हें विवाह करने से रोका था। श्रीरघुनाथजी के सुन्दर वचन सुनकर मुनिका का शरीर पुलकित हो गया और नेत्रों में प्रेमाश्रु भर आये। [वह मन में कहने लगा---] बताओ, किस भगवान के पास ऐसी विधि है, जो अपने सेवक पर इतना स्नेह और प्रेम रखता हो।

जो मनुष्य माया को त्यागकर ऐसे भगवान की पूजा नहीं करते, वे विद्या से हीन, मूर्ख तथा दुर्भाग्यशाली होते हैं। तब नारद मुनि ने आदरपूर्वक कहा- हे विज्ञान-विशेषज्ञ! श्रीराम जी! सुनो-- हे रघुवीर. अस्तित्व के भय (जन्म और मृत्यु के भय) को नष्ट करने वाले हे मेरे भगवान! अब कृपया मुझे संतों के लक्षण बताइये। [श्री रामजी ने कहा--] हे ऋषि! सुनो, मैं संतों के उन गुणों को बताता हूँ जिनके कारण मैं उनके वश में रहता हूँ।

संत बनो (काम, क्रोध, लोभ, मोह, नशा और ईर्ष्या - ये) छह विकारों (दोषों) को जीने वाले, पाप रहित, इच्छा रहित, निश्चल (स्थिर बुद्धि, अकिद्धन (सर्व-त्यागी), बाहर और अंदर से पवित्र सुख का निवास) , असीम ज्ञानवानु , इच्छा रहित , शाकाहारी , सत्यवादी , कवि , विद्वान , योगी ,

वे सतर्क, दूसरों का सम्मान करने वाले, अभिमान रहित, धैर्यवान, धर्म के ज्ञान और अभ्यास में अत्यधिक निपुण, गुणों के स्वामी, सांसारिक दुखों से मुक्त और संदेह से पूरी तरह मुक्त हैं। मेरे चरणकमलों के अतिरिक्त उसे न तो अपना शरीर प्रिय है और न ही अपना घर। वह अपने कानों से अपने गुण सुनने में झिझकता है और दूसरों के गुण सुनने में विशेष प्रसन्न होता है। वह सम और शांत है, न्याय को कभी नहीं छोड़ता। ये सरल स्वभाव के होते हैं और सभी से प्यार करते हैं।

वे जप, तप, व्रत, शक्ति, संयम और नियम में लगे रहते हैं और गुरु, गोविंद तथा ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम रखते हैं। मेरे चरणों में उनका विश्वास, क्षमा, मैत्री, दया, प्रसन्नता और सच्चा प्रेम है। इसमें त्याग, विवेक, नम्रता, विज्ञान (ईश्वर के तत्व का ज्ञान) और वेद-पुराणों का यथार्थ ज्ञान है। वे कभी अहंकार, अभिमान और अभिमान नहीं करते और भूलकर भी गलत रास्ते पर कदम नहीं रखते।

वे सदैव मेरी लीलाएँ गाते और सुनते हैं और निष्काम भाव से दूसरों के हित में लगे रहते हैं। हे ऋषि! सुनो, संतों में जो गुण होते हैं उनका वर्णन सरस्वती और वेद भी नहीं कर सकते। 'शेष और शारदा भी नहीं कह सकते' यह सुनकर नारदजी ने श्री राम के चरण पकड़ लिए। इस प्रकार विनम्र भगवान, दयालु भगवान ने अपने मुख से अपने भक्तों के गुणों का बखान किया। भगवान के चरणों में बार-बार सिर झुकाकर नारदजी ब्रह्मलोक चले गये। तुलसीदासजी कहते हैं कि वे मनुष्य धन्य हैं, जो सारी आशा छोड़कर केवल श्रीहरि के रंग में रंग गए हैं।

जो रावण के शत्रु श्री रामजी की पवित्र स्तुतियाँ गाएँगे और सुनेंगे, उन्हें त्याग, जप और योग के बिना ही श्री रामजी की दृढ़ भक्ति प्राप्त होगी। युवतियों का शरीर दीपक के गोले के समान है, हे मन! उसके पतंगे मत बनो. काम और मदिरा को त्यागकर श्री रामचन्द्रजी का भजन करो और सदैव सत्सद्र करो।

श्री रामचरितमानस

चौथा अध्याय

<u>4 / 7. किष्किंधा काण्ड</u>

कुंद के फूल और नीले कमल के समान सुंदर श्वेत और श्याम, अत्यंत बलशाली, ज्ञान का धाम, सुंदर, सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर, वेदों द्वारा पूजित, प्रिया [या प्रेयसी | गौओं और ब्राह्मणों के समूह | खोज में लगे हुए, रघुवंश के सर्वश्रेष्ठ दो भाई, श्री रामजी और श्री लक्ष्मणजी, यात्री के रूप में: निश्चित रूप से वे हमारे लिए भक्तिपूर्ण हैं।

धन्य हैं वे सुकृती प्राणात्मा पुरुष) जो वेद रूपी समुद्र के [मंथन] से उत्पन्न हुए हैं, जो भगवान श्री शंभु के अविनाशी, सुंदर और उत्कृष्ट चेहरे कलबुग की अशुद्धियों को पूरी तरह से नष्ट कर देते हैं। सदैव चन्द्रमा में सुन्दर, जन्म-मरण के रोगों की औषधि धारण करने वाले, सबको सुख देने वाले और श्री जानकीजी के जीवन को देने वाले, वे निरन्तर श्री राम नाम के अमृत का पान करते हैं।

जिस काशी में श्री शिव और पार्वती निवास करते हैं, उसे मुक्ति की जन्मभूमि, ज्ञान की खान और पापों का नाश करने वाली मानकर उसका सेवन क्यों नहीं करना चाहिए? जिसने स्वयं उस भयानक हलाहल विष को पी लिया जिससे सभी देवता जल रहे थे, हे मन्दबुद्धि! आप उन शंकरजी की पूजा क्यों नहीं करते? उससे अधिक दयालु कौन है?

श्रीरघुनाथजी फिर आगे बढ़े। ऋष्यमूक पर्वत निकट आ गया। सुग्रीव अपने मन्त्रियों सहित वहाँ (ऋष्यमूक पर्वत पर) रहते थे। अतुलनीय बल की सीमा : श्री रामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी को आते देखकर सुग्रीव अत्यंत भयभीत हो गये और बोले--हे हनुमान! सुनो, ये ड्रोन पुरुष शक्ति और धन का अवतार हैं। आप ब्रह्मचारी का रूप धारण करके जाकर देखिये। अपने हृदय में उनका यथार्थ अर्थ जानकर मुझे इशारे से समझा देना।

यदि वे गंदे मोती मेरे द्वारा भेजे गए हैं तो मुझे तुरंत यह पर्वत छोड़कर भाग जाना चाहिए। यह सुनकर हनुमानजी ब्राह्मण के रूप में वहां गए और सिर झुकाकर इस प्रकार पूछा- 'जिसने मन को हर लिया है वह आपकी सुंदर, कोमल गांड है और आप जंगल की कड़ी धूप और हवा को सहन कर रहे हैं।' . क्या आप ब्रह्मा, विष्णु, महेश - इन तीन देवताओं में से कोई हैं, या आप दोनों नर और नारायण हैं।

या क्या आप ही जगत के मूल कारण और सभी लोकों के स्वामी स्वयं भगवान हैं, जिन्होंने लोगों को भवसागर से पार उतारने और पृथ्वी का भार नष्ट करने के लिए मानव रूप में अवतार लिया है? श्री रामचन्द्रजी ने कहा---हम कोसलराज दशरथजी के पुत्र हैं और अपने पिता का वचन मानकर वन में आये हैं। हमारे नाम राम और लक्ष्मण हैं, हम दोनों भाई हैं। हमारे साथ एक सुन्दर युवती थी।

यहीं (कोने में) राक्षस जानकी को हर ले गया। हे ब्राह्मण! हम तो उसे ही ढूंढते रहते हैं. हमने तुम्हें अपना चरित्र बता दिया है। अब हे ब्राह्मण! अपनी कहानी स्पष्ट करें. हनुमानजी प्रभु को पहचानकर उनके चरण पकड़ कर पृथ्वी पर गिर पड़े (साष्टांग प्रणाम किया)। [शिवजी कहते हैं--] हे पार्वती! उस ख़ुशी का वर्णन नहीं किया जा सकता. शरीर रोमांचित हो जाता है, मुख से शब्द नहीं निकलते। वे प्रभु के सुन्दर भेष की रचना देख रहे हैं!

फिर धैर्यपूर्वक प्रशंसा की। अपने पूर्वजों को पहचानकर मन में खुशी होती है। तब हनुमानजी ने कहा- हे प्रभु! मैंने जो पूछा वह सही था, मैंने तुम्हें वर्षों बाद देखा, वह भी एक तपस्वी के वेश में और मेरे वानर मन के साथ, इस कारण मैं तुम्हें पहचान नहीं सका और अपनी स्थिति के अनुसार मैंने तुमसे पूछा, लेकिन तुम कैसे पूछ रहे हो एक इंसान की तरह?

मैं तुम्हारी माया से विस्मृत फिरता हूँ; इसी कारण मैंने अपने स्वामी (आपको) को नहीं पहचाना। एक तो मैं इस प्रकार मन्द हूँ, दूसरे यह कि मैं मोह के वश में हूँ, तीसरे यह कि मैं हृदय से कुटिल और अज्ञानी हूँ, फिर हे नम्र प्रभु! प्रभु (आप) भी मुझे भूल गये! हे नाथ! यद्यपि मुझमें अनेक अवगुण हैं, तथापि सेवक को अपने स्वामी को नहीं भूलना चाहिए। हे नाथ! जीव आपकी माया से मोहित हो गया है। आपकी कृपा से ही उसे मोक्ष मिल सकता है.

हे रघुवीर! मैं आपसे कसम खाता हूँ कि मैं भजन के बारे में कुछ नहीं जानता। नौकर मालिक के भरोसे और बेटा माँ के भरोसे निश्चिन्त रहता है। इतना कहकर हनुमानजी प्रभु के चरणों में गिर पड़े और अपना असली शरीर प्रकट कर दिया। उसके हृदय में प्रेम भर गया। तब श्रीरघुनाथजी ने उसे उठाकर हृदय से लगा लिया। और उसे अपनी आंखों के जल से सींचकर ठंडा किया।

और हे हनुमान! वही है जिसकी बुद्धि कभी नहीं डांवाडोल होती कि मैं सेवक हूं और यह जीव (जड़) संसार मेरे स्वामी भगवान का रूप है। स्वामी को अनुकूल (प्रसन्न) देखकर पवनकुमार हनुमानजी के हृदय में हर्ष हुआ और उनके सारे दुःख दूर हो गये। [उन्होंने कहा--] हे भगवान! इसी पर्वत पर वानरराज सुग्रीव रहते हैं, वे आपके सेवक हैं। हे भगवान! उससे मित्रता करो और उसे विनम्र

समझकर निर्भय बनाओ। वह सीताजी की खोज करेगा और करोड़ों वानरों को चारों ओर भेज देगा।

इस प्रकार सब कुछ समझाने के बाद हनुमानजी (श्रीराम-लक्ष्मण) ने दोनों को अपनी पीठ पर बिठा लिया। जब सुग्रीव ने श्री रामचन्द्रजी को देखा तो उन्होंने अपना जन्म अत्यंत धन्य समझा। उन्होंने सुग्रीव के चरणों में सिर झुकाया और आदरपूर्वक उनका स्वागत किया। श्रीरघुनाथजी भी अपने छोटे भाई सहित उनसे गले मिलकर मिले। सुग्रीव मन में इस प्रकार विचार कर रहा है कि हे विधाता! क्या वह मुझसे प्यार करेगा?

तब हनुमान जी ने दोनों ओर की सारी कथा सुनायी और अग्नि को साक्षी देकर (अर्थात् अग्नि को साक्षी देकर वचन देकर मित्र बना लिया) उनके परस्पर प्रेम को दृढ़ किया। वे दोनों (दिल से) प्यार करते थे और कोई मतभेद नहीं रखते थे। तब लक्ष्मणजी ने श्री रामचन्द्रजी का सारा इतिहास सुनाया। सुग्रीव ने आँखों में आँसू भर कर कहा- हे प्रभु! मिथिलेश कुमारी जानकी जी मिलेंगी.

वे दोनों (दिल से) प्यार करते थे और कोई मतभेद नहीं रखते थे। तब लक्ष्मणजी ने श्री रामचन्द्रजी का सारा इतिहास सुनाया। सुग्रीव ने आँखों में आँसू भर कर कहा- हे प्रभु! मिथिलेश कुमारी जानकी जी मिलेंगी. हमें देखकर उसने कहा, 'रम! टक्कर मारना ! हा राम!" वह चिल्लाया और अपने कपड़े गिरा दिए। जब श्रीराम ने उसे माँगा तो सुग्रीव ने तुरन्त दे दिया। वस्रा को हृदय से लगाकर रामचन्द्र जी ने बहुत सोचा।

सुग्रीव ने कहा--हे रघुवीर! सुनो, सोचना बंद करो और मन में धैर्य रखो। मैं हर तरह से आपकी सेवा करूंगा, इस तरह कि जानकीजी आकर आपसे मिलें. अपने मित्र सुग्रीव की बातें सुनकर श्री रामजी प्रसन्न हो गये। [और कहा--] हे सुग्रीव! बताओ तुम जंगल में क्यों रहते हो?

[सुग्रीव ने कहा--हे नाथ! बाली में दो भाई हैं. हमारे बीच इतना प्यार था कि उसे बयान नहीं किया जा सकता. हे प्रभो ! राक्षस मय का एक पुत्र था, उसका नाम मायावी था। एक । इस बार वह हमारे गांव आये. वह आधी रात को नगर के फाटक पर आया और पुकारकर कहा। बालि शत्रु का बल (चुनौती) सहन नहीं कर सकता। सकना। वह दौड़ा, उसे देखकर मायावी भाग गया। मैं भी अपने भाई के साथ गया था.

एक पखवाड़े (पन्द्रह दिन) तक मेरी प्रतीक्षा करो। यदि मैं उतने दिनों में न आऊँ तो समझना कि मैं मारा गया। हे खरारी! मैं वहां एक महीने तक रहा. वहाँ (उस

गुफ़ा से) रक्त की एक विशाल धारा निकली। तब [मैं समझ गया कि] उसने बच्चों को मार डाला, अब वह आएगा और मुझे मार डालेगा। इसलिए मैंने वहां (गुफा के द्वार पर) एक पत्थर रख दिया और भाग गया.

जब मंत्रियों ने नगर को राजा विहीन देखा तो उन्होंने बलपूर्वक मुझे राज्य दे दिया। बालि ने उसे मार डाला और घर लौट आया। मुझे (सिंहासन पर) देखकर उसने अपना क्रोध बढ़ा दिया (सोचा कि बहुत विरोध हो रहा है)। उसने सोचा कि राज्य के लोभ के कारण ही उसने गुफा के द्वार पर एक पत्थर रखवा दिया है, जिससे वह बाहर न निकल सके; और यहां आकर वह राजा बन गया.

उसने मुझे एक दुश्मन की तरह बहुत बुरी तरह से पीटा और मेरी आवाज़ और मेरा भगनासा भी छीन लिया। हे दयालु रघुबीर! उसके भय से मैं समस्त लोकों में संकटग्रस्त होकर भटकता रहा। शाप के कारण वह यहाँ नहीं आता, फिर भी मेरे मन में भय बना रहता है। सेवक की दुर्दशा सुनकर दीन-दुखियों पर दया करने वाले श्रीरघुनाथजी की दोनों विशाल भुजाएँ फड़क उठीं।

[उन्होंने कहा--] हे सुग्रीव! सुनो, मैं बच्चों को एक ही बांस से मार डालूँगा। यदि वह ब्रह्मा और रुद्र की शरण भी ले तो भी उसके प्राण नहीं बचेंगे। जो लोग अपने मित्रों के दुःख से दुःखी नहीं होते, उन्हें देखना ही महापाप के समान लगता है। अपने पर्वत-जैसे दुःख को धूल के समान और अपने मित्र के दुःख को धूल के समान, सुमेरु (बड़ा भारी पर्वत) के समान समझो।

जिनमें लोभ के कारण ऐसी बुद्धि नहीं होती, वे मूर्खतापूर्ण हठ के कारण किसी से मित्रता क्यों करते हैं? मित्र का कर्तव्य है कि वह अपने मित्र को बुरे रास्ते से रोककर अच्छे रास्ते पर ले जाये। इसके गुण. अवगुणों को प्रकट करो और छिपाओ। लेने-देने में कोई संदेह न रखें. सदैव अपनी शक्ति के अनुसार ही भलाई करो। विपत्ति के समय हमेशा दोगुना प्यार दिखाएं। वेद कहते हैं कि ये संत (श्रेष्ठ) मित्र के गुण (लक्षण) हैं।

जो सामने मधुर वचन बोलता है और पीठ पीछे बुराई करता है तथा हृदय में दुष्टता रखता है - हे भाई! [इस प्रकार] जिसका मन साँप के समान टेढ़ा हो, ऐसे बुरे मित्र का त्याग कर देना ही श्रेयस्कर है। मूर्ख सेवक, कंजूस राजा, दुष्ट स्त्री और धोखेबाज मित्र - ये चारों कांटों के समान हैं। हाय दोस्त! अब तुम मेरी चिंता करना बंद कर सकते हो. मैं हर तरह से आपके काम आऊंगा (आपकी मदद करूंगा)।

सुग्रीव ने कहा, “हे रघुवीर! सुनो, बाली महान, बलवान और अत्यंत शूरवीर है। तब सुग्रीव ने श्रीराम को दुंदुभि राक्षस की हड्डियाँ और ताड़ के पेड़ दिखाए। श्रीरघुनाथजी ने बिना परिश्रम ही उन्हें (सहजता से) ध्वस्त कर दिया।

श्री रामजी की असीम शक्ति को देखकर सुग्रीव का प्रेम बढ़ गया और उसे विश्वास हो गया कि वे अवश्य ही उस कन्या को मार डालेंगे। वह बार-बार चरणों में सिर झुकाने लगा। भगवान को पहचानकर सुग्रीव मन ही मन प्रसन्न हुआ। जब ज्ञान उत्पन्न हुआ तो उन्होंने ये शब्द कहे - हे प्रभु! आपकी कृपा से अब मेरा मन स्थिर हो गया है। मैं सभी सुख, धन, परिवार और बड़प्पन त्यागकर आपकी सेवा करूंगा।

क्योंकि आपके चरणों की पूजा करने वाले संत कहते हैं कि ये सब (सुख, धन आदि) राम की भक्ति के विरुद्ध हैं। संसार में जितने भी शत्रु, मित्र तथा सुख-दुःख [आदि इन्द्र] हैं, वे सभी मायाचरित हैं, परमार्थ नहीं। हे श्री रामजी! बाली मेरा परम उपकारक है, जिसकी कृपा से मैंने तुम्हें दुःख का नाश करने वाला पाया है; और अगर आपका सपने में भी किसी से झगड़ा हुआ है तो जागने पर आप उसे समझेंगे और मन में झिझक महसूस करेंगे कि मैंने सपने में भी उससे झगड़ा क्यों किया।

हे प्रभो! अब आप मुझे इस प्रकार प्रसन्न कीजिए कि मैं सब कुछ छोड़कर दिन-रात आपकी ही आराधना करूं। सुग्रीव के त्याग के वचन सुनकर (उनके क्षणिक त्याग को देखकर) श्री गरमजी ने, जो हाथ में धनुष लिये हुए थे, हँसते हुए कहा- आपने जो कुछ कहा है, वह सब सत्य है; लेकिन हे मित्र! मेरी बातें झूठी नहीं हैं (अर्थात् बालि मारा जायेगा और राज्य तुम्हें मिलेगा)। काकभुशुण्डिजी कहते हैं कि- हे पक्षीराज गरुड़! रंगमंच में वानर की भाँति श्री राम सबको नचाते हैं, यही वेद कहते हैं।

तदनन्तर श्रीरघुनाथजी सुग्रीव को साथ लेकर और हाथ में धनुष-बाण लेकर चल दिये। तब श्रीरघुनाथजी ने सुग्रीव को बाली के पास भेजा। श्री रामजी की शक्ति पाकर वे बालि के पास गये और गर्जना की। जैसे ही बालि ने यह सुना, वह क्रोधित हो गया और तेजी से भागा। उसकी पत्नी तरण ने उसके पैर पकड़ लिये और उसे समझाया, हे प्रभु! सुनो, सुग्रीव जिन दो भाइयों से मिला है वे तेज और बाल्की सीमा हैं।

वे कौशलाधीश दशरथजी के पुत्र राम और लक्ष्मण के युद्ध में कालका को भी हरा सकते हैं। बलि ने कहा--हे कायर! (डरते हुए) प्रिये. सुनो, श्री रधुनाथजी तो दूरदर्शी हैं। यदि कदाचित वे मुझे मार डालें तो मैं नष्ट हो जाऊँगा (परमगति को

प्राप्त हो जाऊँगा)। इतना कहकर महाबली और अहंकारी बाली ने सुग्रीव को तिनके के समान समझा और चला गया। दोनों भिड़ गए. बालि ने सुग्रीव को बहुत डराया और मुक्कों से गर्जना की।

तब सुग्रीव व्याकुल होकर भागने लगा। मुक्के का प्रहार वज्रपात के समान लगा। [सुग्रीव ने आकर कहा--] हे दयालु रघुबीर! मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि बालि मेरा भाई नहीं है, काल है। श्री रामजी ने कहा-- तुम दोनों भाइयों का रूप एक जैसा है। इसी भ्रम के कारण मैंने उसे नहीं मारा। तब श्री रामजी ने अपने हाथ से सुग्रीव के शरीर का स्पर्श किया, जिससे उसका शरीर त्वचा के समान हो गया और सारा दर्द दूर हो गया।

सुग्रीव ने कई चालें चलीं, लेकिन (अंत में) डर के आगे झुक गया और अपना दिल हार गया। तब श्री रामजी ने लक्ष्य करके बालक के हृदय में बाण मारा। बाण लगते ही बालि व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। परन्तु प्रभु श्री रामचन्द्रजी को सामने देखकर वह फिर उठ बैठा। भगवान का शरीर काला है, सिर पर उलझे बाल हैं, आंखें लाल हैं, वे तीर और धनुष धारण करते हैं।

बलि ने बार-बार भगवान की ओर देखा और अपने मन को उनके चरणों में केन्द्रित किया। उन्होंने ईश्वर को पहचानकर अपना जन्म सफल समझा। उसके हृदय में प्रेम था, परन्तु मुख में कठोर वचन थे। उन्होंने श्री रामजी की ओर देखकर कहा- हे गोसाईं! तुमने धर्म की रक्षा के लिये अवतार लिया है और मुझे शिकारी की भाँति (गुप्त रूप से) मार डाला? मैं बहुत क्रोधित हूँ और सुग्रीव से प्रेम करता हूँ? हे नाथ! तुमने मुझे किस कारण से मारा?

[श्री रामजी ने कहा--] हे मूर्ख! सुनो, छोटे भाई की पत्नी, बहन, बेटे की पत्नी और बेटी - ये चारों समान हैं। जो कोई भी उन्हें बुरी नजर से देखता है उसे मारने में कोई पाप नहीं है। अरे मूर्ख। तुम्हें बहुत गर्व है. आपने अपने खनन पाठों पर भी ध्यान नहीं दिया। सुग्रीब को मेरी भुजाओं के बल पर आश्रित समझने पर भी वह और भी अहंकारी है! तुम उसे मारना चाहते थे.

[बालक ने कहा--) हे श्री रामजी सुनिए, मेरी चतुराई स्वामी (आप) को मात नहीं दे सकती। हे प्रभु! अन्त में परकः में आपकी शरण में मैं फिर भी पापी ही रह गया।
कन्या की अत्यंत कोमल आवाज सुनकर श्रीराम ने उसके सिर पर हाथ फेरा। [और कहा--] मैं तुम्हारी जंजीरें अचल कर दूंगा, तुम अपनी जान बचाना। बलि ने कहा--हे धन्य! सुनना-

ऋषि-मुनि हर जन्म में (हर जन्म में) अनेक प्रकार की साधनाएँ करते रहते हैं। फिर भी अन्त में वह उन्हें 'राम' नहीं कह पाता (उनके मुँह से राम नाम नहीं निकलता)। जिनके नाम के प्रभाव से शंकरजी काशी में सभी को समान रूप से अविनाशी मुक्ति (मुक्ति) देते हैं। अच्छा तो श्री रामजी स्वयं मेरी आँखों के सामने प्रकट हो गये हैं। हे भगवान! क्या ऐसा संयोग दोबारा कभी बनेगा?

श्रुतियाँ 'नेति-नेति' कहकर निरंतर जिसकी स्तुति करती हैं, और मुनिजन ध्यान में केवल प्राण और मन को जीतकर और कामनाओं को (विषयों की कामना से) पूर्णतया निस्तेज कर जिनका दर्शन ही करते हैं, वही हैं प्रभु (आप) जो मेरे सामने साक्षात दिखाई दे रहे हैं। तुमने मुझे बड़े अभिमान से जानकर मेरा शरीर रखने को कहा। परंतु ऐसा मूर्ख कौन होगा जो कल्पवक्ष को काटकर उसकी दीवार बनाने की हठ करेगा (अर्थात जो संपूर्ण कार्य करने वाले आपको छोड़कर इस नश्वर शरीर को आपसे बचाना चाहेगा) ?)

मैं जिस भी योनि में जन्म लूंगा, श्री रामजी (आपके) के चरणों में प्रेम करूंगा! हे मंगलमय प्रभु! यह मेरा पुत्र अंगद नम्रता और बल में मेरे ही समान है, कृपया इसे स्वीकार करें। और हे देवताओं और मनुष्यों के स्वामी! बाँह पकड़ कर अपना गुलाम बना लो। श्री रामजी के प्रति अगाध प्रेम रखते हुए उस बालक ने इतनी आसानी से अपना शरीर त्याग दिया, जैसे हाथी अपने गले से फूलों की माला को गिरने नहीं देता।

श्री रामचन्द्रजी ने बालकों को अपने परमधाम भेज दिया। नगर के सभी लोग व्याकुल होकर भाग गये। बालिका तारा अनेक प्रकार से विलाप करने लगी। उसके बाल बिखरे हुए हैं और शरीर नियंत्रण से बाहर है. तारा को दुःखी देखकर श्रीरघुनाथजी ने उसे ज्ञान दिया और उसकी माया दूर कर दी। [उन्होंने कहा--] यह अत्यंत नीच शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु इन पांच तत्वों से निर्मित हुआ है।

वह शरीर आपके सामने ही सो रहा है और आत्मा शाश्वत है। तो फिर क्यों रो रहे हो? जब उसे ज्ञान प्राप्त हुआ तो वह भगवान के चरणों में गिर पड़ी और परम भक्ति का वरदान माँगा। [शिवजी कहते हैं--] हे उमा! स्वामी श्रीरामजी सबको कठपुतली की तरह नचाते हैं। इसके बाद श्री रामजी ने सुग्रीव को आदेश दिया और सुग्रीव ने कन्या की मृत्यु के सभी अनुष्ठान किये।

तब श्री रामचन्द्रजी ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण को समझाया और कहा कि जाकर सुग्रीव को राज्य दे दो। श्रीरघुनाथजी की प्रेरणा (आदेश) से सभी ने श्रीरघुनाथजी के चरणों में सिर झुकाया.

लक्ष्मणजी ने तुरंत सभी नगरवासियों और ब्राह्मणों के समुदाय को बुलाया और (उनके सामने) सुग्रीवक को राज्य और अंगदक को युवराज का पद दिया। हे पार्वती! संसार में श्री रामजी के समान कल्याणकारी कोई गुरु, पिता, माता, पुत्र या गुरु नहीं है। देवता, मनुष्य और ऋषि-मुनियों की यही रीति है कि सभी स्वार्थ के लिए ही प्रेम करते हैं।

दिन-रात संतान के भय से व्याकुल रहने वाले सुग्रीव के शरीर पर अनेक घाव हो गये। उन्होंने सुग्रीव को, जिसकी छाती चिंता से जलती रहती थी, वानरों का राजा बना दिया। श्री रामचन्द्रजी की भावनाएँ बड़ी दयालु हैं। ऐसे भगवान को लोग जानकर भी त्याग देते हैं, वे विपत्ति के जाल में क्यों न फँसें? तब श्रीराम ने सुग्रीव को बुलाया और उसे अनेक प्रकार से राजनीतिक शिक्षा दी।

खूबसूरत जंगल खिलखिला रहा है और बेहद खूबसूरत है। शहद के लालच में मधुमक्खियों के समूह भिनभिना रहे हैं। जब से प्रभु आये, जंगल में सुन्दर कन्द, मूल, फल और पत्तों की प्रचुरता हो गयी। सुन्दर और अद्‌वितीय पर्वत को देखकर देवताओं के सम्राट श्रीगमजी अपने छोटे भाई सहित वहीं ठहर गये। देवताओं, सिद्‌धों और ऋषियों ने मधुमक्खियों, पक्षियों और जानवरों के शरीर धारण किए और भगवान की सेवा करने लगे।

जब से रमापति श्री रामजी वहां निवास करने लगे, तब से वह वन मंडल के समान हो गया। वहाँ एक अत्यन्त चमकीला सुन्दर स्फटिक का बना हुआ पत्थर है, जिस पर दोनों भाई प्रसन्न होकर बैठे हैं। श्री गरमजी अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी को भक्ति, त्याग, राजनीति और ज्ञान की अनेक कहानियाँ सुनाते हैं। बरसात के मौसम में आसमान में गरजते बादल बहुत सुहावने लगते हैं।

[श्री रामजी कहने लगे--] हे लक्ष्मण! देखो, मोरों के झुण्ड बादलों को देखकर नाच रहे हैं। जिस प्रकार वैराग्य में लीन ग्वाले विष्णु भक्त को देखकर प्रसन्न होते हैं। जैसे संत दुष्टों के वचन सहते हैं, वैसे ही पहाड़ बूँदों की मार कैसे सह लेते हैं? छोटी-छोटी नदियाँ भर जाती हैं और किनारों को तोड़ती हुई बहने लगती हैं, जैसे दुष्ट लोग थोड़े से धन से भी (मर्यादा को छोड़कर) बह जाते हैं। पृथ्वी पर गिरते ही जल गंदला हो गया। ऐसा हो गया मानो शुद्‌ध आत्मा को माया ने घेर लिया हो।

जल एकत्रित होकर तालाबों में भर रहा है, जैसे-जैसे सद्‌गुण सज्जन के पास आते हैं। नदी का जल समुद्र में जाकर उसी प्रकार स्थिर हो जाता है, जैसे श्रीहरि से मिलने पर जीव अचल (गति से मुक्त) हो जाता है। पृथ्वी हरी-भरी हो गई है,

घास से भर गई है, जिसके कारण रास्ते का पता नहीं चलता। जिस प्रकार विधर्म के प्रचार से पवित्र ग्रन्थ गुप्त (विलुप्त) हो जाते हैं।

सभी दिशाओं में मेढकों की ध्वनि ऐसी सुखद लगती है मानो विद्यार्थियों का कोई समूह वेदों का पाठ कर रहा हो। अनेक वृक्षों में नये पत्ते आ गये हैं, जिससे वे उतने ही हरे-भरे और सुन्दर हो गये हैं, जितना ज्ञान प्राप्त करने पर साधक का मन हो जाता है। मदार और जवासा पत्रहीन हो गये (उनके पत्ते झड़ गये)। जिस प्रकार दुष्टों के उद्यम उत्तम अवस्था में भी असफल होते रहे (उनका एक भी सफल नहीं हुआ)।

ढूढ़ने पर भी धूल कहीं नहीं मिलती, जैसे क्रोध धर्म को छीन लेता है (अर्थात् क्रोध के आवेश में धर्म का ज्ञान नहीं रहता)।

भारी वर्षा के कारण खेतों की क्यारियाँ उसी प्रकार खराब हो गई हैं, जैसे स्वतंत्रता के कारण स्त्रियाँ बिगड़ जाती हैं। चतुर किसान खेतों की निराई कर रहे हैं (उनमें से घास आदि निकालकर फेंक रहे हैं)। जैसे विद्वान लोग मोह, अभिमान और मान-मर्यादा का त्याग कर देते हैं, उसी प्रकार अकरावक पक्षी दिखाई नहीं देते; जिस प्रकार कलियुग आने पर धर्म भाग जाते हैं। ऊसर में वर्षा तो होती है, परन्तु वहाँ घास तक नहीं उगती। जिस प्रकार हरि भक्त के मन में वासना उत्पन्न नहीं होती।

पृथ्वी नाना प्रकार के जीव-जंतुओं से भरी हुई है और उसी प्रकार सुंदर है जैसे अच्छा शासन मिलने पर जनसंख्या बढ़ जाती है। कई यात्री थके हुए हैं और रोक यहाँ और वहाँ, जैसे ज्ञान उत्पन्न होने पर इंद्रियाँ [शिथिल हो जाती हैं और वस्तुओं की ओर बढ़ना बंद कर देती हैं]। कभी-कभी हवा बहुत ज़ोर से चलने लगती है, जिससे बादल इधर-उधर गायब हो जाते हैं। उदाहरणार्थ, दुष्ट पुत्र के जन्म से कुल का सदाचार नष्ट हो जाता है।

कभी-कभी (बादलों के कारण) दिन में पूरा अंधेरा हो जाता है और कभी-कभी सूरज निकल आता है। जिस प्रकार बुरी संगति से ज्ञान नष्ट हो जाता है और अच्छी संगति से ज्ञान उत्पन्न होता है। हे लक्ष्मण! देखो, वर्षा बीत गई और सबसे सुंदर शरद ऋतु आ गई। पूरी सतह सूजी हुई घास से ढकी हुई थी। मानो बरसात के मौसम ने अपना बुढ़ापा [सफ़ेद बालों के रूप में] प्रकट कर दिया हो।

अगस्त्य की मीनार उठी और पथ के जल को तृप्ति की भाँति सोख लिया अवशोषण लालची लोग. नदियों और तालाबों का निर्मल जल मद और मोह से मुक्त संतों के हृदय के समान सुन्दर हो रहा है। नदियों और तालाबों का पानी

धीरे-धीरे सूख रहा है. जैसे बुद्धिमान लोग अपने प्रेम का त्याग करते हैं। शरद ऋतु जानकर खंजन पक्षी आये। जैसे समय के साथ, सुंदर आशीर्वाद आते हैं (सद्गुण दिखाई देने लगते हैं)

न मिट्टी है, न धूल है; इससे पृथ्वी [पवित्र होकर] ऐसी शोभा दे रही है मानो किसी बुद्धिमान राजा का कार्य हो! जल के समाप्त हो जाने से मछलियाँ उसी प्रकार व्याकुल हो रही हैं, जैसे परिवार का एक मूर्ख (अविवेकी) सदस्य धन के बिना व्याकुल होता है। बादलों के बिना साफ आकाश उतना ही सुंदर हो रहा है जितना भगवान का भक्त सभी आशाओं को त्याग कर सुशोभित होता है। कुछ स्थानों पर (दुर्लभ स्थानों में) शरद ऋतु की वर्षा होती है। जैसे किसी विरले को ही मेरी भक्ति प्राप्त होती है।

[शरद ऋतु मिलने के बाद] राजा, तपस्वी, व्यापारी और भिखारी [क्रमशः विजय, तपस्या, व्यापार और भिक्षा के लिए। खुशी-खुशी शहर छोड़ दिया। जैसे श्री हरिकी की भक्ति प्राप्त करने के बाद चारों आश्रमों के लोग परिश्रम (विभिन्न प्रकार के साधनों के रूप में) छोड़ देते हैं।

अथाह जल में रहने वाली मछलियाँ प्रसन्न होती हैं, जैसे श्रीहरि की शरण में जाने पर कोई बाधा नहीं रहती। कमल के खिलने से तालाब कितना सुन्दर होता है, जैसे निर्गुण ब्रह्म सगुण हो जाने पर सुन्दर हो जाता है।

भौंरे अनोखे शब्द गुंजन कर रहे हैं और पक्षी भाँति-भाँति की सुन्दर ध्वनियाँ निकाल रहे हैं। रात्रि को देखकर चकवे के मन में उसी प्रकार दुःख हो रहा है, जैसे किसी दुष्ट व्यक्ति को पराये धन को देखकर दुःख होता है। पपीहा रट रहा है, उसे बहुत प्यास लगी है, जैसे श्री शंकरजी के द्रोही को सुख नहीं मिलता (सुख के लिए रोता रहता है), उसी प्रकार रात्रि में चंद्रमा शरद ऋतु की गर्मी हर लेता है। संतों के दर्शन से मानो पाप दूर हो जाते हैं।

चकरों का समुदाय चंद्रमा को ऐसे निहार रहा है मानो उन्हें अपनी निमिष आँखों से भगवान मिल गये हों। आइए दर्शन करें. मछली : और नर्तकियाँ शीत के भय से उसी प्रकार नष्ट हो गईं, जैसे ब्राह्मण से युद्ध करने पर कुल नष्ट हो जाता है। [वर्षा ऋतु के कारण] पृथ्वी पर व्याप्त जीव-जंतु शरद ऋतु के मिलने पर उसी प्रकार नष्ट हो गए, जैसे सद्गुरु के मिलने पर संशय और भ्रम के समूह नष्ट हो जाते हैं।

बारिश बीत गई और साफ़ शरद ऋतु आ गई। परंतु हे पिता! सीता का कोई समाचार नहीं मिला। एक बार मुझे पता चल जाए कि कैसे, तो मैं समय पर

विजय प्राप्त कर सकता हूं और जानकी को एक क्षण में वापस ला सकता हूं। चाहे वह कहीं भी रही हो, अगर जीत गयी होती, तो हाय! मैं निश्चित रूप से यात्रा करूंगा और उसे वापस लाऊंगा।' मुझे राज्य, नगर और पत्नी मिल गयी, अत: सुग्रीव भी मुझे भूल गया। कल मैं उस मूर्ख को उसी तीर से मार डालूँगा जिससे मैंने बच्चों को मारा था! [शिवजी कहते हैं--] हे उमा. जो लोग नशे और मोह से मुक्त हैं, क्या उन्हें स्वप्न में भी क्रोध आ सकता है? [यह सिर्फ एक मजाक है]।

जिन ज्ञानी मुनियों ने श्रीरघुनाथजी के चरणों में प्रेम स्वीकार किया है, वे ही इस चरित्र (लीलारहस्य) को जानते हैं। जब लक्ष्मणजी को पता चला कि भगवान क्रोधित हैं तो उन्होंने अपना धनुष चढ़ाया और तीर हाथ में ले लिया। तब दया की सीमा श्रीरघुनाथजी ने अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी को समझाया, हे पिताजी! मित्र, सुग्रीव को भय दिखाकर ही ले आओ [उसे मारने की कोई आवश्यकता नहीं है]

इधर (किष्किंधा नगर में) पवनकुमार श्री हनुमान जी ने सोचा कि सुग्रीव श्री राम जी के कार्यकर्ताओं को भूल गया है। वह सुग्रीव के पास गये और उनके चरणों में सिर झुकाया। [साम, दान, दंड, भेद | उन्होंने उन्हें चार प्रकाशकों की नीति समझायी। हनुमानजी की बातें सुनकर सुग्रीव को बहुत भय हुआ। [और कहा--] विषयों ने मेरा ज्ञान छीन लिया। अब हे पवनसुत! जहाँ भी वानरों के समूह रहते हों, वहाँ दूतों के समूह भेजो।

और उससे कहना कि जो एक पखवाड़े (पन्द्रह दिन) के अन्दर न आयेगा वह मेरे हाथों मारा जायेगा। तब हनुमान जी ने दूतों को बुलाया और सबका खूब आदर-सत्कार कर सबको भय, प्रेम और नीति का परिचय दिया। सभी बंदर उनके चरणों में सिर झुकाकर चल दिये। इसी समय लक्ष्मणजी नगर में आये। उनका क्रोध देखकर बंदर इधर-उधर भागने लगे।

यहाँ तक कि मेरे चाचा को भी संदेह था कि मैं नगर को जलाकर राख कर दूँगा। तब बालि के पुत्र अंगदजी सारे नगर को व्याकुल देखकर उनके पास आये। अंगद ने उनके चरणों में सिर झुकाकर क्षमा माँगी। तब लक्ष्मणजी ने उन्हें अभय बाहु दी (हाथ उठाकर कहा कि डरो मत)। लक्ष्मणजी का क्रोध अपने कानों से सुनकर सुग्रीव भय से अत्यंत व्याकुल हो गये और बोले-

हे हनुमान! सुनो, तुम तारों को अपने साथ ले जाओ और राजकुमार से विनती करो (उसे समझा-बुझाकर शांत करो)। हनुमान जी ने तारा सहित जाकर लक्ष्मण जी के चरणों की वन्दना की और प्रभु की सुन्दर महिमा का वर्णन किया। वह उनसे विनती करके महल में ले आये और उनके चरण धोकर सिंहासन पर

बिठाया। तब वानरराज सुग्रीव ने उनके चरणों में सिर झुकाया और लक्ष्मणजी ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें गले लगा लिया।

सुग्निव ने कहा--हे प्रभु! विषय के समान कोई अन्य वस्तु नहीं है। इससे साधु-संतों के मन में भी क्षण भर में मोह उत्पन्न हो जाता है [-फिर मैं तो कामुक प्राणी हूं]। सुग्रीव के विनम्र वचन सुनकर लक्ष्मणजी प्रसन्न हुए और उसे अनेक प्रकार से समझाया। तब पवनसुत हनुमानजी ने सारा हाल कह सुनाया क्योंकि दूतों का दल सभी दिशाओं में चला गया था।

फिर अंगद तथा अन्य वानरों को साथ लेकर तथा श्री रामजी के छोटे भाई लक्ष्मणजी को आगे रखकर (अर्थात उनके पीछे-पीछे) सुग्रीव प्रसन्नतापूर्वक चलकर वहाँ आये, जहाँ रघुनाथजी थे। सुग्रीव ने श्रीरघुनाथजी के चरणों में सिर झुकाकर और हाथ जोड़कर कहा- हे नाथ! किसी भी चीज़ के लिए मुझे दोष दो। हे देव नहीं है! आपकी माया बड़ी प्रबल है. जब तुम दया करो तो हे राम! तभी उसे छोड़ा जाता है.

हे प्रभो! देवता, मनुष्य और ऋषि-मुनि सभी प्रजा के अधीन हैं। फिर, मैं एक पामर जानवर हूं और जानवरों में सबसे कामुक बंदर भी हूं। जिसके सुन्दर नेत्रों से बाण नहीं लगा है, जो भयानक क्रोध की अँधेरी रात में भी जागता रहता है (क्रोध से अंधा नहीं होता) और जिसने लोभ के पाश से अपना गला नहीं घोंटा है, हे रघुनाथजी! वह आदमी आपके जैसा ही है. ये गुण साधनों से प्राप्त नहीं होते। आपकी कृपा से ही कुछ लोग उन्हें प्राप्त कर पाते हैं।

तब श्रीरघुनाथजी ने मुस्कुराकर कहा- हे भाई! तुम मुझे भरत के समान प्रिय हो। अब अपना मन उस उपाय में लगाओ जिससे तुम्हें सीता का समाचार मिल सके। बातचीत चल ही रही थी कि बंदरों का एक झुंड आ गया। सभी दिशाओं में अनेक प्रजातियों के बंदरों के समूह दिखाई देने लगे।

शिवजी कहते हैं--हे उमा! मैंने वह वानरों की सेना देखी थी। उसकी गिनती. जो ऐसा करना चाहता है वह महामूर्ख है। सभी वानर आकर श्री रामजी के चरणों में सिर झुकाते हैं और श्रीमुख के दर्शन कर कृतज्ञ होते हैं। ऐसा कोई नहीं था जिससे श्री रामजी ने कुशल न पूछा हो, क्योंकि भगवान तो निराकार और सर्वव्यापक हैं (सभी रूपों और स्थानों में विद्यमान हैं)।

अनुमति पाकर सभी लोग जहां-तहां खड़े हो गये. तब सुग्रीव ने सभी को समझाते हुए कहा, हे वानर समूहों! यह श्री रामचन्द्रजी का कार्य है, और मेरा निवेदन (निवेदन) है; तुम घूमो. आगे बढ़ो और जानकीजी को खोजो। अरे भइया! एक

महीने के अंदर वापस आ जाओ. जो कोई एक महीना बिताकर बिना पता चले लौट आएगा, उसे मैं मार डालूंगा (अर्थात मुझे ही उसे मरवाना पड़ेगा)।

सुग्रीव की बात सुनकर सभी वानर तुरंत जहाँ-तहाँ (अलग-अलग दिशाओं में) जाने लगे। तब सुग्रीव ने अंगद, नल, हनुमान आदि प्रमुख योद्धाओं को बुलाया और कहा- हे वीर और चतुर नील, अंगद, जाम्बवान और हनुमान! आप सभी महारथी एक साथ दक्षिण दिशा की ओर चलें और किसी से सीताजी का पता पूछें।

मन, वचन और कर्म से सीताजी का पता लगाने और श्री रामचन्द्रजी का कार्य सिद्ध करने का उपाय सोचो। सूर्य को पीछे से और अग्नि को हृदय (सामने) से सेवन करना चाहिए। परंतु गुरु की सेवा छल-कपट छोड़कर पूरी निष्ठा (मन, वचन और कर्म) से करनी चाहिए।

माया (वस्तुओं के प्रति स्नेह-आसक्ति) को छोड़कर परलोक (ईश्वर के दिव्य निवास की बात करने के लिए ईश्वर की सेवा का एक साधन) का सेवन करना चाहिए, ताकि अस्तित्व (जन्म और मृत्यु) से उत्पन्न होने वाले सभी दुखों का नाश हो सके। अरे भइया! शरीर धारण करने का फल यह है कि मनुष्य को सब कर्मों (इच्छाओं) को छोड़कर केवल श्री रामजी का भजन करना चाहिए।

\जो गुण (गुणी) को पहचानता है वही श्री रघुनाथजी के चरणों का प्रेमी है॥ आज्ञा माँगकर और फिर उनके चरणों में सिर झुकाकर और श्रीरघुनाथजी का स्मरण करके सब लोग प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़े।

सबके पीछे पवनसुत श्री हनुमानजी ने सिर झुकाया। कार्य के बारे में सोचते हुए भगवान ने उसे अपने पास बुलाया। उन्होंने अपने करकमलों से उसके मस्तक का स्पर्श किया और उसे अपना सेवक समझकर अपने हाथ से अंगूठी उतारकर उसे दे दी। , और कहा--] सीता को अनेक प्रकार से समझाओ और मेरी शक्ति तथा विरह (प्रेम) कहकर शीघ्र लौट आओ। हनुमानुजी ने अपना जन्म सफल समझा और प्रभु का आशीर्वाद हृदय में लेकर चल दिये।

यद्यपि देवताओं की रक्षा करने वाले भगवान सब कुछ जानते हैं, फिर भी वे राजनीति की रक्षा कर रहे हैं (राजनीति की गरिमा बनाए रखने के लिए वे सीताजी का पता लगाने के लिए हर जगह वानरों को भेज रहे हैं) सभी वानर जंगलों, नदियों, तालाबों, पहाड़ों और गुफाओं में खोज करते रहते हैं पहाड़ों। मन श्री रामजी के काम में लगा हुआ है। देह का प्यार भूल गया है।

यदि कहीं उसे कोई राक्षस मिल जाए तो वह एक ही झटके में उसके प्राण हर लेता है। कई तरीकों से पहाड़ों और जंगलों की खोज करना। यदि कोई साधु मिल जाए तो सभी उसका पता पूछने के लिए उसे घेर लेते हैं। इसी बीच सभी को अत्यधिक प्यास लगी, जिससे सभी अत्यंत व्याकुल हो गये. लेकिन पानी कहीं नहीं मिला. घने जंगल में सब भूल गये। हनुमानजी ने मन में अनुमान लगाया; हर कोई बिना पानी पिए मरना चाहता है.

वह पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और चारों ओर देखा और पृथ्वी के अंदर एक गुफा में एक आश्चर्य देखा। इसके ऊपर चील, बगुले और हंस उड़ रहे हैं और बहुत से पक्षी इसमें प्रवेश कर रहे हैं। पवनकुमार हनुमानजी पर्वत से नीचे आये और सबको ले जाकर गुफा दिखाई। सभी ने हनुमानजी को आगे किया और वे बिना देर किए गुफा में प्रवेश कर गए।

अंदर जाकर उसने एक सुंदर बगीचा और तालाब देखा, जिसमें बहुत सारे कमल खिले हुए थे। वहां एक सुन्दर मन्दिर है, जिसमें सती की मूर्ति विराजमान है। सबने दूर से ही उसे प्रणाम किया और पूछने पर उसने अपनी सारी कहानी सुना दी। फिर उसने कहा -- जलपान करो और सब प्रकार के रसीले और सुन्दर फल खाओ।

[अनुमति मिलने के बाद] सबने स्नान किया, मीठे फल खाये और फिर सब लोग उनके पास आये। तब उसने अपनी सारी कथा सुनायी [और बोली--] अब मैं वहाँ जाऊँगी जहाँ श्रीरघुनाथजी हैं। तुम लोग आंखें बंद कर लो और गुफा से बाहर निकल जाओ। सीताजी तुम्हें मिल जायेंगी, तुम शोक मत करो (निराश मत होओ)। आंखें बंद करने के बाद जब उन्होंने आंखें खोलीं तो सभी योद्धाओं ने क्या देखा कि वे समुद्र के किनारे खड़े हैं।

जो गुण (गुणी) को पहचानता है और भाग्यशाली है, वही श्रीरघुनाथजी के चरणों का प्रेमी है॥ आज्ञा माँगकर और फिर श्रीरघुनाथजी का स्मरण करके उनके चरणों में सिर नवाकर सब लोग प्रसन्न होकर चल दिये। सबके पीछे पवनसुत श्री हनुमान जी ने सिर झुकाया।

कार्य के बारे में सोचते हुए भगवान ने उसे अपने पास बुलाया। उन्होंने अपने करकमलों से उसके मस्तक का स्पर्श किया और उसे अपना सेवक समझकर अपने हाथ से अंगूठी उतारकर उसे दे दी।

[और कहा--] सीता को अनेक प्रकार से समझाओ और मेरी शक्ति तथा विरह (प्रेम) कहकर शीघ्र लौट आओ। हनुमानजी ने अपना जन्म सफल समझा और

हृदय में प्रभु का आशीर्वाद लेकर चल दिये। यद्यपि देवताओं की रक्षा करने वाले भगवान सब कुछ जानते हैं, फिर भी वे राजनीति की रक्षा कर रहे हैं (राजनीति की मर्यादा बनाए रखने के लिए वे सीताजी का पता लगाने के लिए हर जगह वानरों को भेज रहे हैं)।

सभी वानर जंगलों, नदियों, तालाबों, पर्वतों और पर्वतों की गुफाओं में खोजते फिर रहे हैं। मन श्री रामजी के काम में लगा हुआ है। देह का प्यार भूल गया है। यदि कहीं उसे कोई राक्षस मिल जाए तो वह एक ही झटके में उसके प्राण हर लेता है। पहाड़ों और जंगलों की कई तरह से खोज की जा रही है। यदि कोई साधु मिल जाए तो सभी उसका पता पूछने के लिए उसे घेर लेते हैं।

ठीक तभी। सभी को बहुत प्यास लगी, जिससे सभी अत्यंत व्याकुल हो गये। लेकिन जलाओ. वह कहीं नहीं मिला. घने जंगल में सब भूल गये। हनुमान जी ने मन में सोचा कि हर कोई बिना पानी पिए मरना चाहता है। वह पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और चारों ओर देखा और पृथ्वी के अंदर एक गुफा में एक आश्चर्य देखा। इसके ऊपर चील, बगुले और हंस उड़ रहे हैं और बहुत से पक्षी इसमें प्रवेश कर रहे हैं।

पवनकुमार हनुमानजी पर्वत से नीचे आये और सबको ले जाकर गुफा दिखाई। सभी ने बिना देर किए हनुमानजी को आगे किया और गुफा में प्रवेश कर गए। अंदर जाकर उसने एक सुंदर बगीचा और तालाब देखा, जिसमें बहुत सारे कमल खिले हुए थे। वहाँ एक सुन्दर मन्दिर है, जिसमें एक तपोमूर्ति स्त्री विराजमान है।

सबने दूर से ही उसे प्रणाम किया और पूछने पर उसने अपनी सारी कहानी सुना दी। फिर उसने कहा -- जलपान करो और सब प्रकार के रसीले और सुन्दर फल खाओ। आज्ञा पाकर सबने स्नान किया, मीठे फल खाये और फिर सब लोग उनके पास आये। तब उसने अपनी सारी कहानी सुनायी [और बोली--] अब मैं वहां जाऊंगी जहां श्रीरघुनाथजी हैं।

तुम लोग आंखें बंद कर लो और गुफा से बाहर निकल जाओ। सीताजी तुम्हें मिल जायेंगी, तुम शोक मत करो (निराश मत होओ)। आंखें बंद करने के बाद जब उन्होंने आंखें खोलीं तो सभी योद्धाओं ने क्या देखा कि वे समुद्र के किनारे खड़े हैं।

और वह स्वयं वहाँ गयी, जहाँ श्रीरघुनाथजी थे। उसने जाकर भगवान के चरणकमलों में सिर झुकाया और अनेक प्रकार से प्रार्थना की। प्रभु ने उसे अपनी अटूट भक्ति प्रदान की।

प्रभु की आज्ञा को सिर पर रखकर और श्री रामजी के दोनों चरणों को, जिनकी ब्रह्मा और महेश भी पूजा करते हैं, हृदय में रखकर वह (स्वयंप्रभा) बद्रिकाश्रम चली गई। इधर वानर मन में विचार कर रहे हैं कि काल बीत गया; लेकिन कोई काम नहीं हुआ. सब इकट्ठे हो गये और आपस में बातें करने लगे, 'अरे भाई! अब सीताजी का समाचार लिये बिना लौटकर हम क्या करेंगे?

अंगद ने नेत्रों में आँसू भर कर कहा कि हमारी मृत्यु दोनों प्रकार से हुई। यहां सीताजी का ख्याल नहीं रखा गया और वहां जाने पर वानर राज सुग्रीव मुझे मार डालेगा. मेरे पिता की हत्या के बाद ही वह मुझे मार देता. केवल श्री रामजी ने ही मेरी रक्षा की, इसमें सुग्रीव का कोई उपकार नहीं है। अंगद बार-बार सभी से कह रहे हैं कि अब उनकी मृत्यु हो गयी है, इसमें कोई संदेह नहीं है.

वानर वीर अंगद की बातें सुनते हैं; लेकिन कुछ कह नहीं सकते. उनकी आंखों से पानी बह रहा है. एक पल के लिए सभी लोग सोच में पड़ गए। तब सब लोग ऐसे वचन कहने लगे---हे योग्य राजकुमार! हम सीताजी को खोजे बिना नहीं लौटेंगे। इतना कहकर सभी वानर समुद्र तट पर जाकर घास पर बैठ गये।

अंगद का दुःख देखकर जाम्बवान ने उन्हें विशेष उपदेश की कथा सुनायी। [उन्होंने कहा--है तत्: श्री रामजी को मनुष्य न समझो, उन्हें निर्गुण ब्रह्म, अजेय और अजन्मा समझो।

हम सभी सेवक बड़े भाग्यशाली हैं, जिनका सदैव सगुण ब्रह्म (श्री रामजी) में प्रेम रहता है। भगवान अपनी इच्छा से देवताओं, पृथ्वी, गायों और ब्राह्मणों के लिए अवतार लेते हैं [किसी कर्म बंधन के कारण नहीं]। वहाँ सगुणोपासक [सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, साड़ी और सायुज्य जैसे भक्त] सभी प्रकार के मोक्ष को त्याग देते हैं और उनकी सेवा में एक साथ रहते हैं।

इस प्रकार जाम्बवान अनेक प्रकार से कथा कह रहे हैं। संपाति ने पर्वत की गुफाओं में उनकी बातें सुनीं। बाहर आकर उसने बहुत सारे बंदर देखे। तब उन्होंने कहा-जगदीश्वर ने मेरे लिए घर बैठे बहुत सा भोजन भेजा है! मैं आज ये सब खाऊंगा. कई दिन बीत गए, वह भोजन के बिना मर रहा था। कभी भी भरपेट खाना नहीं मिलता. आज विधाता ने एक साथ ढेर सारा भोजन दे दिया।

गिद्ध की बात सुनते ही सभी डर गए और समझ गए कि अब वे मरने वाले हैं। तब उस गिद्ध (सम्पाती) को देखकर सभी वानर खड़े हो गये। जाम्बवान के मन में एक विशेष विचार आया। अंगद ने मन में विचार करके कहा- अहा! जटायु के समान सौभाग्यशाली कोई नहीं है। श्री रामजी के कार्य के लिये उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया और परम मंगलमय प्रभु के परमधाम को चले गये।

हर्ष और दु:ख से भरा हुआ समाचार (समाचार) सुनकर पक्षी (सम्पाती) वानरों के पास आया। बंदर डर गये. उन्हें निर्भयता का वचन देने के बाद उन्होंने पास जाकर जटायुक से उनका वृत्तांत पूछा तो उन्होंने उन्हें सारी कहानी बता दी। भाई जटायुकि की हरकतें सुनकर सम्पाती ने अनेक प्रकार से श्रीरघुनाथजी की महिमा का वर्णन किया।

[उन्होंने कहा--] मुझे समुद्र के किनारे ले चलो, मैं जटायु को त्याग दूँगा। इस सेवा के बदले में मैं अपने वचन से तुम्हारी सहायता करूँगा (अर्थात तुम्हें बता दूँगा कि सीताजी कहाँ हैं) और तुम जो खोज रहे हो वह तुम्हें मिल जायेगा। समुद्र के किनारे अपने छोटे भाई जटायु का श्राद्ध आदि कर्म करने के बाद सम्पाती ने उसकी कहानी सुनानी शुरू की- हे वीर वानरों! सुनो, हम दोनों भाई अपनी चढ़ती जवानी में एक बार आकाश में उड़कर सूर्य के निकट गये।

वह (जटायु) तीव्रता सहन नहीं कर सका और पीछे मुड़ गया। (लेकिन) मैं अहंकारी था इसलिए मैं सूर्य के पास गया। प्रचंड गर्मी से मेरे पंख जल गये। मैं जोर से चिल्लाई और जमीन पर गिर पड़ी. चैनराम नाम के एक ऋषि थे। मुझे देखकर उन्हें बड़ी दया आयी। ये शुरू हुआ। उन्होंने मुझे बहुत स्पष्टता से ज्ञान प्रदान किया और मुझे मेरे शरीर-जनित अभिमान से मुक्त कर दिया।

उन्होंने कहा-- । त्रेता युग में परम ब्रह्मा मानव शरीर धारण करेंगे। राक्षसों का राज्य उसकी पत्नी को छीन लेगा। ईश्वर उसकी खोज में दूत भेजेंगे। उनसे मिलकर तुम पवित्र हो जाओगे और तुम्हारे पंख विकसित हो जायेंगे; चिंता मत करो। उन्हें सीताजी को दिखाओ। मुनि के वचन आज सत्य हो गये। अब तुम मेरी बातें सुनकर भगवान का कार्य करो।

लद्धा त्रिकुटा पर्वत पर बसा है। रावण वहाँ स्वाभाविक रूप से निर्भय रहता है। वहाँ अशोक नाम का एक उद्यान है, जहाँ सीताजी रहती हैं। (इस समय भी) वह सोच में डूबी हुई बैठी है। मैं उन्हें देखता हूं, आप नहीं देख सकते; क्योंकि गिद्ध की दृष्टि अपार होती है (बहुत दूर तक पहुंचती है)। क्या करें ? मैं बूढ़ा हो गया हूं, नहीं तो मैं अवश्य तुम्हारी कुछ सहायता करता।

जो सौ योजन (चार सौ कोस) समुद्र को पार कर सकता है और बुद्धिमान है वही श्री रामजी का कार्य कर सकेगा। निराश होने से मत डरना] मुझे देखकर मन में धैर्य रखना। देखिये, श्री राम जी की कृपा से देखते ही देखते मेरा शरीर कैसा हो गया (पंखों के बिना तो दयनीय था, पंख उगते ही सुन्दर हो गया)! उनके नाम का स्मरण करने से पापी भी भवसागर से छूट जाते हैं, आप उनके दूत हैं, इसलिये कायरता छोड़ दीजिये और श्री रामजी को हृदय में रखकर उपाय कीजिये।

काकभुशुण्डिजी कहते हैं--]हे गरुड़जी! इतना कहकर जब गिद्ध चला गया। उन (बंदरों) के मन में बड़ा आश्चर्य हुआ। सबने बताई अपनी-अपनी ताकत! लेकिन सभी ने समुद्र की ओर जाने को लेकर संदेह जताया. ऋषिराज जाम्बवान कहने लगे- मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ।

उसके शरीर में पिछले लड़के का कोई निशान भी नहीं बचा है. जब खरारी (खरके शत्रु श्री गयाम) वामन बने, तब मैं छोटा था और बहुत ताकत रखता था।

यज्ञ को बाँधते-बाँधते भगवान इतने बड़े हो गये कि वर्णन नहीं किया जा सकता, परन्तु मैं दो घंटे के अन्दर ही दौड़कर (उस शरीर की) सात प्रदक्षिणा कर ली। अंगद ने कहा--मैं पार करूंगा। लेकिन लौटने के समय को लेकर दिल में कुछ संशय है. जाम्बवान ने कहा- आप सब प्रकार से योग्य हैं। लेकिन आप सबके नेता हैं, आपको कैसे भेजा जाए?

ऋक्षराज जाम्बवान ने श्री हनुमानजी से कहा- हे हनुमान! हे पराक्रमी! सुनो, तुम क्या चुप बैठे हो? आप पवन के पुत्र हैं और शक्ति में पवन के समान हैं। आप बुद्धि, विवेक और विज्ञान की खान हैं। हे पिता, संसार में ऐसा कौन सा कठिन कार्य है? आप ऐसा नहीं कर सके. श्री रामजी के कार्य के लिये ही तो आपने अवतार लिया है। यह सुनते ही हनुमानजी पर्वत के आकार के (अत्यंत विशाल) हो गये।

[जाम्बवान ने कहा-] हे पिताजी! तुम जाकर केवल इतना करो कि सीताजी के दर्शन करके लौट आओ और उन्हें समाचार सुनाओ। तब कमलनयन श्री राम अपनी शक्ति से राक्षसों का संहार करेंगे और सीता जी को ले आयेंगे, खेल के लिये ही अपने साथ वानरों की सेना भी ले जायेंगे। श्रीराम अपनी वानर सेना सहित राक्षसों का वध करके सीता को ले आयेंगे।

तब देवता और नारदादि मुनि तीनों लोकों को पवित्र करने वाले भगवान की सुंदर महिमा का वर्णन करेंगे, जिसे सुनने, गाने, कहने और समझने से मनुष्य परम

पद को प्राप्त करते हैं और जिसे तुलसीदास, मधुकर (भ्रमर) श्री के चरण कमलों में गाते हैं। रघुवीर.

श्री रघुवीर का यश भव जन्म और मृत्यु के रोग की [अचूक] औषधि है। जो नर-नारी इसे सुनेंगे, त्रिशिरा के शत्रु श्री राम उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण करेंगे। जिनका शरीर नीले कमल के समान काला है, जिनकी सुंदरता करोड़ों कामदेवों से भी अधिक है और जिनका नाम पापी पक्षियों को मारने वाले शिकारी (व्याध) के समान है, उन श्री राम के गुणों का समूह। (लीला) जरूर सुननी चाहिए.

ऋक्षराज जाम्बवान कहने लगे- मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ। उसके शरीर में पिछले लड़के का कोई निशान भी नहीं बचा है. जब खरारी (खरके शत्रु श्रीयम) वामन बने, तब मैं छोटा था और मुझमें बहुत ताकत थी। बालिका को बांधते समय भगवान इतने बड़े हो गए कि वर्णन नहीं किया जा सकता, लेकिन मैं दो घंटे के भीतर दौड़कर सात परिक्रमा पूरी कर ली।

अंगद ने कहा--मैं पार करूंगा। लेकिन लौटने के समय को लेकर दिल में कुछ संशय है. जाम्बवान ने कहा- आप सब प्रकार से योग्य हैं। लेकिन आप सबके नेता हैं, आपको कैसे भेजा जाना चाहिए? ऋक्षराज जाम्बवान ने श्री हनुमानजी से कहा- हे हनुमान! हे पराक्रमी! सुनो, तुम क्या चुप बैठे हो? आप पवन के पुत्र हैं और शक्ति में पवन के समान हैं। आप बुद्धि, विवेक और विज्ञान की खान हैं।

हे पिता, इस संसार में ऐसा कौन सा कठिन कार्य है? आप ऐसा नहीं कर सके. आपने श्री रामजी के कार्य के लिये ही अवतार लिया है। यह सुनते ही हनुमानजी पर्वत के आकार के (अत्यंत विशाल) हो गये। उसका रंग सोने के समान है, उसका शरीर कान्ति से सुशोभित है, मानो वह पर्वतों का दूसरा राजा सुमेरु हो। हनुमानु जी बार-बार सिंह के समान चिल्लाकर बोले- मैं खेल-खेल में ही इस खारे समुद्र को पार कर सकता हूँ।

मैं रावण को उसके सभी सहायकों सहित मारकर त्रिकूट पर्वत को उखाड़कर यहाँ ला सकता हूँ। हे जाम्बवान, मैं आपसे विनती करता हूं, कृपया मुझे सही सबक सिखाएं (मुझे क्या करना चाहिए)। [जाम्बवान ने कहा---] हे पिताजी! तुम जाकर केवल इतना करो कि सीताजी के दर्शन करके लौट आओ और उन्हें समाचार सुनाओ। तब कमलनयन श्री राम अपनी मांसपेशियों के बल से राक्षसों का संहार करेंगे और सीता जी को ले आयेंगे, खेल के लिये ही वानर सेना को भी अपने साथ ले जायेंगे।

श्री राम वानर सेना सहित राक्षसों का विनाश करके सीता को ले आयेंगे। तब नारद आदि देवता और ऋषि भगवान की उस सुंदर कीर्ति का वर्णन करेंगे, जो तीनों लोकों को पवित्र करने वाली है, जिसे सुनने, गाने, कहने और समझने से मनुष्य परम गति को प्राप्त करता है और जिसे तुलसीदासजी गाते हैं। श्री रघुवीर की कीर्ति भव (जन्म और मृत्यु) के रोग का [अचूक] इलाज है। जो स्त्री-पुरुष इसे सुनेंगे, त्रिशिरा के शत्रु श्री राम उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण करेंगे।

जिनका शरीर नीले कमल के समान काला है, जिनकी सुंदरता करोड़ों कामदेवों से भी अधिक है और जिनका नाम पापी पक्षियों को मारने वाले शिकारी (व्याध) के समान है, उन श्री राम के गुणों के समूह (लीला) को अवश्य सुनना चाहिए।

श्री रामचरितमानस

पाँचवाँ अध्याय

5 / 7.   सुन्दर काण्ड

शांतिपूर्ण, शाश्वत, अप्रमेय (प्रमाणों से परे), निष्पाप, मुक्ति के रूप में परम शांति देने वाला, ब्रह्मा, शंभू और शेषजी द्वारा निरंतर सेवित, वेदांत द्वारा जानने योग्य, सर्वव्यापी, देवताओं में सबसे बड़ा, माया से मानव रूप में प्रकट होने वाला, मैं अपना समर्पण करता हूं राम कहे जाने वाले ब्रह्मांड के भगवान को प्रणाम।

मैं पवनपुत्र, श्रीरघुनाथजी के प्रिय भक्त, वानरों के स्वामी, महान बल के धाम, सोने के पर्वत (सुमेर) के समान उज्ज्वल शरीर वाले, में स्थित श्री हनुमानजी को नमस्कार करता हूं। राक्षस रूपी वन को नष्ट करने के लिए अग्नि रूप, ज्ञानियों में श्रेष्ठ, सभी गुणों के अवतार, वानरों के स्वामी, श्री रघुनाथजी के प्रिय भक्त।

जाम्बवान के सुन्दर वचन सुनकर हनुमानजी मन में बहुत प्रसन्न हुए। [उन्होंने कहा--] अरे भाई! जब तक मैं सीताजी के दर्शन करके न लौट आऊं तब तक तुम सब दु:ख सहकर तथा कंद, मूल और फल खाकर मेरी प्रतीक्षा करना। काम जरूर पूरा होगा, क्योंकि मैं बहुत खुश हूं.' ऐसा कहकर और सबको प्रणाम करके तथा श्रीरघुनाथजी को हृदय में रखकर हनुमानजी प्रसन्नतापूर्वक चले।

समुद्र के किनारे एक सुन्दर पर्वत था। हनुमानजी खेल-खेल में (स्वतः ही) उनके ऊपर कूद पड़े और बार-बार श्री रघुबीर का स्मरण करके परम बलशाली हनुमानजी बड़े वेग से उनके ऊपर कूद पड़े। जिस पर्वत पर हनुमानजी ने पैर रखा था (जिससे उन्होंने छलांग लगाई थी) वह पर्वत तुरंत पाताल में समा गया। जैसे श्रीरघुनाथजी का अमोघ बाण चलता है, वैसे ही हनुमानजी भी चलें।

समुद्र ने उन्हें श्रीरघुनाथजी का दूत समझकर मैनाक पर्वत से कहा, हे मैनाक! आप ही उनकी थकान दूर करते हैं (अर्थात् उन्हें अपने ऊपर विश्राम देते हैं)।

हनुमानजी ने उसे हाथ से छुआ, फिर प्रणाम करके कहा- भाई! श्री रामचन्द्रजी का कार्य किये बिना मुझे कहाँ विश्राम मिलेगा? देवताओं ने पवनपुत्र हनुमानजी को जाते हुए देखा। उनकी विशेष शक्ति और बुद्धि को जानने के लिए उन्होंने सुसासा नामक नाग की माता को उनकी परीक्षा लेने के लिए भेजा, उसने आकर हनुमानजी से यह बात कही-

आज देवताओं ने मुझे भोजन दिया है। ये वचन सुनकर पवनकुमार हनुमानजी ने कहा- श्री रामजी का कार्य करके मैं लौट आऊं और सीताजी का समाचार प्रभु

को सुनाऊं, तब आकर तुम्हारे मुख में प्रवेश करूंगा [तुम मुझे खा लेना]। हे माँ! मैं सच कहता हूं, अब मुझे जाने दो। जब उसने किसी भी प्रकार उसे जाने न दिया तो हनुमानजी ने कहा- तो फिर मुझे मत खाओ।

उसने अपना मुँह पूरा (चार कोस में) फैला दिया। तब हनुमानजी ने अपना शरीर दोगुना बढ़ा लिया। उन्होंने सोलह योजनाएँ व्यक्त कीं। हनुमानजी तुरंत बत्तीस योजन लम्बे हो गये। जैसे-जैसे सुरसा अपने मुँह का आकार बढ़ाती जाती थी, हनुमानजी अपना दोहरा रूप दिखाने लगते थे। उन्होंने कहा सौ योजन (चार सौ कोसका)। तब हनुमानजी ने अत्यंत छोटा रूप धारण कर लिया।

और उसके मुख में प्रवेश करके [तुरंत] वे फिर बाहर आए और उसके सामने सिर झुकाकर उसे विदा किया। [उसने कहा--] मुझे तुम्हारी बुद्धि का रहस्य मिल गया है, जिसके लिए देवताओं ने मुझे भेजा था। आप श्री रामचन्द्रजी के सभी कार्य करेंगे, क्योंकि आप बल और बुद्धि के भण्डार हैं। यह आशीर्वाद देकर वह चली गई, तब हनुमानजी प्रसन्न होकर चले गए।

समुद्र में एक रक्षामती रहती थी। वह आकाश में उड़ते पक्षियों को मायाजाल से पकड़ लेती थी। आकाश में उड़ने वाले जीव-जन्तु पानी में अपनी परछाई देखते और उस परछाई को पकड़ लेते, जिससे वे उड़ नहीं पाते और पानी में गिर जाते। इस प्रकार वह सदैव आकाश में उड़ने वाले जीवों को खा जाती थी। यही चाल उसने हनुमानजी पर भी खेली। हनुमानजी ने तुरंत अपना छल पहचान लिया।

पवनपुत्र, वीर और बुद्धिमान श्री हनुमानजी ने उसका वध किया और समुद्र पार कर गये। वहां जाकर उन्होंने जंगल का सौंदर्य देखा. पक्षी शहद (फूलों) के लोभ से गुनगुना रहे थे। अनेक प्रकार के फलों और फूलों से स्तन सुशोभित होते हैं। पशु-पक्षियों के समूह को देखकर उसे बहुत प्रसन्नता हुई। सामने एक विशाल पर्वत देखकर हनुमानजी अपना भय त्याग कर उसकी ओर दौड़ पड़े।

[शिवजी कहते हैं--] हे उमा! इसमें वानर हनुमान की कोई महिमा नहीं है. यह परमेश्वर की महिमा है, जो समय को भी नष्ट कर देती है। पर्वत पर चढ़कर उन्होंने लंका देखी। यह बहुत बड़ा किला है, इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। यह बहुत ऊँचा है, इसके चारों ओर समुद्र है। स्वर्णिम दीवार परम ज्योति बन रही है।

वहाँ विचित्र रत्नों से जड़ी हुई एक सुनहरी दीवार है, उसके अन्दर अनेक सुन्दर मकान हैं, चौराहे, बाज़ार, सुन्दर सड़कें और गलियाँ हैं; इस खूबसूरत शहर को कई तरह से सजाया जाता है। हाथियों, घोड़ों, खच्चरों के समूहों तथा पैदलों और

रथों के समूहों को कौन गिन सकता है? अनेक रूपों वाले राक्षसों के समूह हैं, उनकी अत्यंत शक्तिशाली सेना वर्णन से परे है।

वनों, बाग-बगीचों, फूलों के बगीचों, तालाबों, कुओं और बावड़ियों का सौंदर्यीकरण किया जाता है। मनुष्य, नाग, देवता और गंधर्वों की कन्याएँ अपने सौन्दर्य से ऋषियों का भी मन मोह लेती हैं। कहीं पर्वतों के समान विशाल शरीर वाले अत्यंत बलवान पहलवान (पहलवान) गरज रहे हैं। वे कई अखाड़ों में कई तरह से लड़ते हैं और एक-दूसरे को चुनौती देते हैं।

भयंकर शरीर वाले करोड़ों योद्धा चारों दिशाओं में बड़ी सावधानी से नगर की रक्षा करते हैं। कहीं दुष्ट राक्षस भैंसों, मनुष्यों, गायों, गधों और बकरियों को खा रहे हैं। तुलसीदासजी ने उनकी कथा थोड़ी इसलिए कही है कि श्री रामचन्द्रजी के बाणरूपी तीर्थ में शरीर त्यागने के बाद वे अवश्य ही परम आनन्द को प्राप्त होंगे।

नगर के असंख्य रक्षकों को देखकर हनुमानजी ने बहुत छोटा रूप धारण करके रात के समय नगर में प्रवेश करने का निर्णय लिया। हनुमान जी भगवान श्री रामचन्द्र जी का स्मरण करते हुए लद्दा के पास गये, जिन्होंने (छोटे) मच्छर का रूप धारण किया और मनुष्य रूप से खेला। [लक्सजा के द्वार पर] लद्दिनी नाम की राक्षसी रहती थी। वह बोली- तुम मेरा अपमान करके (मुझसे बिना पूछे) कहाँ जा रहे हो?

अरे मूर्ख! क्या तुम मेरा रहस्य नहीं जानते? जहाँ तक चोर हैं, वे सब मेरे भोजन हैं। महावानर हनुमानजी ने उस पर मुक्का मारा, जिससे वह खून की उल्टी करते हुए जमीन पर गिर पड़ी। फिर लड़की ने खुद को संभाला और डर के मारे उठ कर हाथ जोड़कर विनती करने लगी. [उन्होंने कहा--] जब ब्रह्माजी ने रावण को वरदान दिया था, तब जाते समय राक्षसों का परिचय मुझे बिना किसी संदेह के बता दिया था कि-

जब आप बंदर के हमले से परेशान हो जाते हैं; तब तुम जानोगे कि राक्षसों का नाश हो गया। हे पिता! यह मेरा बड़ा पुण्य है कि मैं श्री रामचन्द्रजी के दूत (आपका) नेत्रों से दर्शन कर सका। अन्य पैमानों पर दी जाने वाली पेशकश उस खुशी के बराबर नहीं हो सकती जो अकेले प्यार (पल) से आती है।

नगर में प्रवेश करो और अयोध्यापुरी के राजा श्रीरघुनाथजी को हृदय में रखकर सब कार्य करो। उसके लिए विष अमृत बन जाता है, शत्रु मित्र बन जाते हैं, समुद्र गायक के खुर के समान हो जाता है, आग शीतल हो जाती है।

और हे गरुड़जी! सुमेरु पर्वत उसके लिये राजा के समान हो जाता है, जिसे श्री रामचन्द्रजी ने एक बार अपनी कृपा से देख लिया था। तब हनुमानजी ने अत्यंत छोटा रूप धारण किया और भगवान का स्मरण करते हुए नगर में प्रवेश किया। उसने एक-एक महल की तलाशी ली। सर्वत्र असंख्य योद्धा देखे। फिर वह रावण के महल में गया। ये बहुत अजीब था, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता.

हनुमानु जी ने उसे (रावण को) सोते हुए देखा; परन्तु जानकी जी महल में नहीं दिखीं। तभी एक सुंदर महल दिखाई दिया। वहां भंगावन का एक अलग मंदिर बनाया गया था। वह महल श्री रामजी के अस्त्र-शस्त्रों (धनुष-बाण) के चिह्नों से अंकित था, उसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। वहाँ तुलसी के नये-नये वृक्षों के समूह देखकर कपिराज श्री हनुमानजी प्रसन्न हो गये।

लद्धा राक्षसों के समूह का निवास स्थान है। यहाँ सज्जन (पवित्र पुरुष) कहाँ रहते हैं? हनुमानजी इस प्रकार मन में तर्क करने लगे। उसी समय विभीषणजी जाग गये। उसने (विभीषण ने) राम नाम का स्मरण (उच्चारण) किया। हनुमानजी ने उन्हें सज्जन व्यक्ति समझा और मन ही मन प्रसन्न हुए। [हनुमानजी ने सोचा कि] मैं (अपनी ओर से) हठपूर्वक उनका परिचय कराऊंगा, क्योंकि साधु के कार्य में कोई हानि नहीं होती [इसके विपरीत, लाभ ही होता है]।

हनुमानजी ने ब्राह्मण का रूप धारण करके उन्हें वचन सुनाये (आवाज़ दिये)। जैसे ही विभीषणजी ने यह सुना, वे उठकर वहाँ आ गये। कुशल को प्रणाम करके उसने पूछा [और कहा] हे ब्राह्मणदेव! अपनी कहानी स्पष्ट करें. क्या आप हरि के भक्तों में से एक हैं? क्योंकि तुम्हें देखकर मेरा हृदय प्रेम से उमड़ रहा है। अथवा आप ही दीनों से प्रेम करने वाले श्री रामजी हैं, जो मुझे सौभाग्यशाली बनाने (घर में दर्शन देकर कल्याण करने) आये हैं?

तब हनुमान जी ने श्री रामचन्द्र जी की सारी कथा सुनायी और उनका नाम भी बताया। सुनते ही उन दोनों के शरीर पुलकित हो गये और श्री रामजी के गुणों का स्मरण कर दोनों का मन प्रेम और आनंद में डूब गया। विभीषणजी ने कहा--हे पवनपुत्र! मेरी बात सुनी. मैं यहां वैसे ही रहता हूं. दांतों के बीच खराब जीभ. हे पिता! सूर्यकुल के स्वामी श्री रामचन्द्रजी मुझे अनाथ क्यों समझें? क्या तुम कभी मुझ पर एक एहसान करोगे?

मेरे तामसिक (राक्षस) शरीर में होने से मुझे किसी प्रकार की सहायता नहीं मिलती और न ही मेरे हृदय में श्री रामचन्द्रजी के चरणकमलों के प्रति प्रेम है। परन्तु हे हनुमान! अब मुझे विश्वास हो गया कि श्री रामजी की मुझ पर कृपा है;

क्योंकि हरिकी कृपा के बिना संत नहीं मिलते। जब श्री रघुवीर की कृपा हुई है, तभी तो आपने हठपूर्वक मुझे (अपनी ओर से) दर्शन दिये हैं। [हनुमानजी ने कहा--] हे विभीषणजी! सुनो, यह परमेश्वर की रीति है, कि वह अपने दास से सदा प्रेम रखता है।

अच्छा बताओ मैं कौन हूँ? [जातिका] मैं एक चंचल बंदर हूं और हर तरह से नीच हूं। यदि कोई सुबह-सुबह हमारा (बंदरों का) नाम लेगा तो उसे उस दिन भोजन नहीं मिलेगा। हाय दोस्त! सुनो, मैं कितना अभागा हूं; परन्तु श्री रामचन्द्र जी ने मुझ पर भी कृपा की है। भगवान के गुणों का स्मरण करके हनुमानजी की आँखों में प्रेम के आँसू भर आये।

जो ऐसे स्वामी (श्रीरघुनाथजी) को जानते हुए भी भूल जाते हैं और [विषयों के पीछे] भटकते हैं, उन्हें दुःख क्यों नहीं होना चाहिए? इस प्रकार श्री रामजी के गुणों का वर्णन करते-करते उन्हें अवर्णनीय (परम) शान्ति प्राप्त हुई। तब विभीषण जी और श्री जानकी जी ने वहां (लद्धा में) कैसे रहते थे, यह सब वृत्तान्त सुनाया। तब हनुमानजी ने कहा--हे भाई! सुनो, मैं जानकी माता के दर्शन करना चाहता हूँ।

विभीषणजी ने [माँ के दर्शन के बाद] सारी युक्तियाँ बतायीं। तब हनुमानजी विदा लेकर चले गये। फिर वही (पहले जैसा) मुखौटे जैसा रूप धारण करके वे अशोक वन (जंगल का भाग) में उस स्थान पर गये, जहाँ सीताजी रहती थीं। सीताजी को देखकर हनुमानजी ने उन्हें नम्रतापूर्वक प्रणाम किया। वे रात के चारों घंटे बैठे-बैठे ही बिता देते हैं। शरीर पतला हो गया है, सिर पर बालों की लट है। वह हृदय में श्री रघुनाथजी के गुणों का कीर्तन (स्मरण) करती रहती है।

श्री जानकी जी की आँखें उनके चरणों पर टिकी हुई हैं (नीचे की ओर देखते हुए) और उनका मन श्री गम जी के चरण कमलों में लीन है। जानकीजी को संकट में देखकर पवनपुत्र हनुमानजी बहुत दुखी हुए। हनुमानजी पेड़ के पत्तों में छिपकर सोचने लगे कि हे भाई! मुझे क्या करना चाहिए (उनका दुःख कैसे दूर करूं)? उसी समय रावण सज-धजकर अनेक खत्रियों को साथ लेकर वहाँ आया।

उस दुष्ट ने सीताजी को अनेक प्रकार से समझाया। समता, दान, भय और विवेक का परिचय दिया। रावण ने कहा--हे सुमुखी! हे बुद्धिमान! सुनना। मैं मंदोदरी जैसी सभी रानियों को आपकी दासी बनाऊंगा, यह मेरी प्रतिज्ञा है। तुम बस एक बार मेरी तरफ देख लो! जानकीजी अपने परम प्रिय मित्र श्री रामचन्द्रजी का स्मरण करके तृण की आड़ में कहने लगीं-

दशमुख. सुनो, क्या जुगनू की रोशनी से कभी कमल का फूल खिल सकता है? जानकीजी फिर कहती हैं- तुम्हें अपने बारे में भी ऐसा ही सोचना चाहिए। अरे दुष्ट! तुम्हें श्री रघुवीर के निषेध का ज्ञान नहीं है। हे पापी! तुम मुझे रेगिस्तान में ले आये हो। हे दुष्ट! बेशर्म! तुझे लज्जा नहीं आती ? ॥ अपने को जुगनू के समान और रामचन्द्र जी को सूर्य के समान तथा सीता जी के कठोर वचन सुनकर रावण ने तलवार निकालकर बड़े क्रोध से कहा-

सीता ! तुमने मेरा अपमान किया है. मैं इस कठोर कृपाण से उसका तीक्ष्ण सिर काट डालूँगा। अन्यथा [अभी भी] कृपया मेरी बात शीघ्र स्वीकार कर लें। हे सुमुखी! नहीं तो जान से हाथ धोना पड़ेगा! [सीताजी ने कहा--] हे दशग्रीव! भगवान की जो भुजा काले कमल की माला के समान सुन्दर और हाथी की सूँड़ के समान मजबूत और विशाल है, या तो वह भुजा स्वयं मेरे गले में गिरेगी या आपकी भयानक तलवार में। हे शठ! सुनो, यही मेरा सच्चा व्रत है-

सीताजी कहती हैं--हे चन्द्रहास (तलवार)! श्रीरघुनाथजी के विरह की अग्नि से उत्पन्न हुई मेरी महान ईर्ष्या को कृपया दूर करें। अरे तलवार! आप शीतल, तीव्र और उत्तम धारा बहाती हैं (अर्थात् आपकी धारा शीतल और तीव्र है), मेरे दुःख का बोझ दूर कर दीजिये। सीताजी के ये वचन सुनते ही वह उन्हें मारने के लिये दौड़ा। तब मय दानव की कन्या मंदोदरी ने नीति कहकर उसे समझाया। तब रावण ने सभी राक्षसों को बुलाया और कहा कि जाओ और सीता को अनेक प्रकार से डराओ।

यदि एक महीने के अन्दर उसने मेरी बात न मानी तो मैं अपनी तलवार खींच लूँगा और उसे मार डालूँगा। यह कहकर रावण घर चला गया। इधर राक्षसों के समूह अनेक दुष्ट रूप धारण करके सीताजी को डराने लगे। उन्हीं में से एक थी त्रिजटा नाम की राक्षसी। उसे श्री रामचन्द्रजी के चरणों में प्रेम था और वह बुद्धि (विद्या) में निपुण थी। उन्होंने सबको बुलाकर अपना स्वप्न सुनाया और कहा- सीताजी की सेवा करके अपना कल्याण करो।

मैंने स्वप्न में देखा कि एक वानर ने लंका जला दी। राक्षसों की सारी सेना मारी गयी। रावण नग्न है और गधे पर सवार है। उसका सिर मुंडवा दिया गया है और उसकी सभी बीस भुजाएं काट दी गई हैं। इस प्रकार वह दक्षिण (यमपुरी) दिशा की ओर जा रहा है और ऐसा प्रतीत होता है मानो विभीषण ने उसे ढूंढ लिया हो। नगर में फिर श्री रामचन्द्र जी की पुकार गूंज उठी। तब भगवान ने सीताजी को बुलाया।

मैं (निश्चितता के साथ) कहता हूं कि यह सपना चार (कुछ) दिनों के बाद सच हो जाएगा। उनकी बातें सुनकर वे सभी राक्षस भयभीत हो गये और जानकीजी के चरणों में गिर पड़े। फिर (इसके बाद) वे सब जहाँ-तहाँ चले गये। सीताजी मन में सोचने लगीं कि एक माह बीत जाने पर दुष्ट राक्षस रावण उनका वध कर देगा।

सीताजी ने हाथ जोड़कर त्रिजटा से कहा- हे माता! तुम संकट में मेरे साथी हो. शीघ्र कोई ऐसा उपाय करो जिससे मैं यह शरीर छोड़ सकूँ। जुदाई असहनीय हो गई है, अब बर्दाश्त नहीं होता. लकड़ियाँ लाओ और चिता बनाओ और उसे दण्ड दो। हे माँ! फिर उसमें आग लगा दें. हे बुद्धिमान! तुमने मेरा प्यार सच्चा कर दिया. शूल के समान दुःख देने वाली रावण की बातें कौन सुन सकता है?

सीताजी की बातें सुनकर त्रिजटा ने उनके पैर पकड़कर उन्हें समझाया और भगवान की महिमा, शक्ति और सौभाग्य के बारे में बताया। [उन्होंने कहा-] हे सुकुमारी! सुनो, रात को आग नहीं लगेगी. यह कह कर वह अपने घर चली गयी. सीताजी मन में कहने लगीं- [मैं क्या करूँ] विधाता ही उल्टा हो गया। न आग मिलेगी, न दर्द मिटेगा। आकाश में अंगारे तो स्पष्ट दिखाई देते हैं, परंतु धरती पर एक भी तारा दिखाई नहीं देता।

चंद्रमा अग्निमय है, परंतु मुझे असहाय समझकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह अग्नि की वर्षा नहीं करता। हे अशोकवक्ष! मेरी विनती सुनो! मेरा दुःख दूर करो और अपना [अशोक] नाम सत्य करो। तुम्हारे नये कोमल पत्ते अग्नि के समान हैं। अग्नि दो, वियोग के रोग को समाप्त मत करो (अर्थात विरह के रोग को हद से ज्यादा मत बढ़ाओ)। सीताजी को विरह से अत्यंत व्याकुल देखकर हनुमानजी के लिए वह क्षण कल्प के समान गुजर गया।

तब हनुमानजी ने मन में विचार करके अंगूठी [सीताजी के सामने] रख दी, मानो अशोक ने अंगारा दे दिया हो। [यह समझकर] सीताजी प्रसन्नतापूर्वक उठीं और उसे हाथ में ले लिया। तभी उनकी नजर राम नाम अंकित एक अत्यंत सुन्दर एवं सुन्दर अंगूठी पर पड़ी। अँगूठी को पहचानकर सीताजी आश्चर्य से उसे देखने लगीं और मन में हर्ष और विषाद से भर गईं।

[वह सोचने लगी--] श्रीरघुनाथजी तो सर्वथा अजेय हैं, उन्हें कौन जीत सकता है? और ऐसी अंगूठी (दिव्य, चमकदार, माया के किसी भी तत्व से पूरी तरह रहित) नहीं बनाई जा सकती। सीताजी मन में अनेक प्रकार के विचार कर रही थीं। इसी क्षण हनुमानजी मधुर वचन बोले--श्रीरामचन्द्रजी के गुणों का वर्णन करने लगे।

सुनते ही सीताजी का दुःख भाग गया। वह पूरे कान और मन से उसकी बात सुनने लगी। हनुमानजी ने आरंभ से सारी कथा सुना दी।

, सीताजी ने कहा--] उन्होंने ही कानों के लिए अमृत के समान यह सुन्दर कथा कही है, हे भाई! दिखाई क्यों नहीं देता? तब हनुमानजी समीप गये। उन्हें देखकर सीताजी चौंककर बैठ गईं (मुख फेरकर); उसके मन में आश्चर्य हुआ. हनुमानजी ने कहा--]हे माता जानकी! मैं श्री रामजी का दूत हूँ। मैं करुणानिधान को सच्ची शपथ देता हूँ। हे माँ! मैं यह अंगूठी लाया हूं. श्री रामजी ने मुझे तुम्हारे लिये यह सहिदानी (चिह्न या पहचान) दी है।

सीताजी ने पूछा- बताओ मनुष्य और वानर की मृत्यु कैसे हुई? तब हनुमानजी ने मिलन की सारी कथा सुनायी। हनुमानजी के प्रेमपूर्ण वचन सुनकर सीताजी के हृदय में विश्वास उत्पन्न हो गया। उसे ज्ञात हो गया कि वह मन, वचन और कर्म से कृपा के सागर श्रीरघुनाथजी का दास है।

उसे भगवान का आदमी (सेवक) जानकर मुझे उससे बहुत प्यार हो गया। नेत्रों में (प्रेम के) आँसू भर आये और शरीर पुलकित हो उठा। [सीताजी ने कहा-] हे पिता हनुमान! तुम विरह के सागर में डूबती हुई मेरी नाव थे।

मैं अभी अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित बलिहारी जा रहा हूं और सुख के शत्रु भगवान से हित की कामना कहता हूं। श्रीरघुनाथजी कोमलहृदय और बुद्धिमान हैं। तब हे हनुमान! उसने यह वफ़ादारी क्यों अपनाई है? अपने सेवकों को सुख देना उनकी स्वाभाविक आदत है। क्या वे श्रीरघुनाथजी कभी मेरा भी स्मरण करते हैं? हे पिता! क्या उनकी कोमल काली आँखों को देखकर मेरी आँखों को कभी ठंडक मिलेगी?

उसके मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे, उसकी आँखों में (वियोग के आँसुओं से) आँसू भर आये। वह बड़े दुःख से बोली-हे प्रभु! तुम मुझे पूरी तरह भूल गये हो! सीताजी को दुःख से अत्यंत व्याकुल देखकर हनुमानजी ने कोमल और विनम्र वचन बोले---हे माता! भाई लक्ष्मणजी सहित भगवान की सुन्दर कृपा का धाम [शरीर से]। वह ठीक हैं, लेकिन तुम्हारे दुःख से दुखी हैं। हे माँ! दोषी महसूस मत करो (दुखी मत महसूस करो)। अरिरामचन्द्रचन्द्रजी के हृदय में आपके प्रति दुगुना प्रेम हो गया है।

हे माँ! अब धैर्य रखें और श्रीरघुनाथजी का सन्देश सुनें। इतना कहकर हनुमानजी प्रेम में विह्वल हो गये। उसकी आँखें (प्यार के) आँसुओं से भर गईं। हनुमानजी ने कहा--श्रीरामचन्द्रजी ने कहा है कि हे सीते! आपके विछोह से मेरे लिए सभी

परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो गई हैं। वृक्षों के नये कोमल पत्ते अग्नि के समान हैं, रात पतझड़ के मौसम के समान है, चंद्रमा सूर्य के समान है।

और कमलों का वन भालों के वन के समान हो गया है। ऐसा लगता है जैसे बादल खुल रहे हों और तेल बरसा रहे हों. जिनको भलाई करनी थी, वे ही अब कष्ट देने लगे हैं। त्रिगुणात्मक वायु (शीतल, मंद, सुगन्धित) सर्प के श्वास के समान (जहरीली और गरम) हो गयी है। अपना दुख व्यक्त करने से भी कुछ कम हो जाता है. लेकिन मुझे किससे कहना चाहिए?

इस दु:ख को कोई नहीं जानता। हे प्रिये तुम्हारे बीच मेरे प्यार का सार (रहस्य) केवल मेरा मन जानता है और वह मन हमेशा तुम्हारे साथ रहता है। बस इसी में मेरे प्यार का सार समझो. प्रभु का सन्देश सुनते ही जानकीजी प्रेम में मग्न हो गयीं। उसे अपने शरीर का होश ही नहीं रहा.

हनुमानजी ने कहा--हे माता! हृदय में धैर्य रखो और सेवकों को सुख देने वाले श्री रामजी का स्मरण करो। श्रीरघुनाथजी का आधिपत्य अपने हृदय में लाओ और मेरे वचन सुनकर कायरता छोड़ दो। राक्षसों के समूह पतंगों के समान हैं और श्री रघुनाथजी के बाण अग्नि के समान हैं। हे माँ! अपने हृदय में धैर्य रखो और राक्षसों को मरा हुआ समझो।

यदि श्री रामचन्द्र जी को समाचार मिलता तो वे देर न करते। हे जानकीजी! रामबाण रूपी सूर्य के उदय होने पर राक्षसों की सेना रूपी अंधकार कहाँ रह सकता है? हे माँ! आइए मैं आपको अभी यहीं से ले चलता हूं; परन्तु मैं श्री रामचन्द्रजी की शपथ खाकर कहता हूँ कि मुझे प्रभु की (उनसे) अनुमति नहीं है। [तो] हे माँ! कुछ दिन और धैर्य रखें. श्री रामचन्द्रजी वानरों सहित यहाँ आयेंगे।

और राक्षसों को मारकर तुम्हें ले जायेंगे। नारद और अन्य ऋषि [ऋषि] तीनों लोकों में उनकी स्तुति गाएंगे। [सीताजी ने कहा--] हे पुत्र! सभी वानर तुम्हारे जैसे ही (छोटे) होंगे, राक्षस तो बड़े बलशाली योद्धा हैं।

अतः आप जैसे वानर राक्षसों को कैसे परास्त करेंगे, इस विषय में मेरे हृदय में बड़ा संदेह है।] यह सुनकर हनुमानजी ने अपना शरीर प्रकट कर दिया। उसका शरीर सोने के पर्वत (सुमेर) के आकार का (अत्यंत विशाल) था, जो युद्ध में शत्रुओं के हृदय में भय पैदा कर देता था, अत्यंत बलशाली और वीर था।

तब (उसे देखकर) सीताजी को निराशा हुई॥ हनुमानजी ने फिर छोटा रूप धारण कर लिया। हे माँ! सुनो, बन्दरों में अधिक बल और बुद्धि नहीं होती। लेकिन

भगवान की महिमा के कारण, एक बहुत छोटा सांप गरुड़ को खा सकता है (यहां तक कि एक बहुत कमजोर व्यक्ति भी एक बहुत मजबूत को मार सकता है)। हनुमानजी की भक्ति, ऐश्वर्य, तेज और शक्ति से परिपूर्ण बातें सुनकर सीता को संतुष्टि हुई।

उन्होंने हनुमानजी को श्री राम का प्रिय जानकर आशीर्वाद दिया और कहा, हे पिताजी! आप शक्ति और विनय की प्रतिमूर्ति हैं।

हे वत्स आप अजर (बुढ़ापे से मुक्त) हैं, अमर हैं और बहुत से लोगों का खजाना हैं। 'रघुनाथजी आपकी बहुत कृपा करें' सुनते ही हनुमानजी प्रेम में डूब गए। हनुमान जी ने बार-बार सीता जी के चरणों में सिर झुकाया और फिर हाथ जोड़कर कहा- हे माता! अब मुझे सफलता मिल गई है.' सर्वविदित है कि आपका आशीर्वाद अमोघ है।

हे माँ! सुनो, सुन्दर फलों के वृक्षों को देखकर मुझे बहुत भूख लग गयी है। [सीताजी ने कहा--] हे पुत्र! सुनो, विशाल योद्धा राक्षस इस वन की रक्षा करते हैं। [हनुमानजी ने कहा--] हे माता! यदि आप हृदय में प्रसन्न हों (कृपा करके अनुमति दें) तो मुझे उनसे तनिक भी भय नहीं है।

हनुमानजी को बुद्धि और बल में निपुण देखकर जानकीजी ने कहा- जाओ. हे पिताश्री रघुनाथजी के चरणों को हृदय में रखकर मीठे फल खाओ। उन्होंने सीताजी को सिर झुकाया और बगीचे में प्रवेश किया। उन्होंने फल खाये और पेड़ तोड़ने लगे। अनेक योद्धा उनकी रक्षा कर रहे थे। उनमें से कुछ को मार डाला और कुछ ने जाकर रावण को पुकारा--

[और कहा--] हे भगवान! एक बड़ा भारी बंदर आया है. उसने अशोकवाटिका को नष्ट कर दिया। उन्होंने फल खाये, पेड़ उखाड़ दिये और रक्षकों को कुचलकर जमीन पर गिरा दिया। यह सुनकर रावण ने अनेक योद्धा भेजे। उन्हें देखकर हनुमानजी ने गर्जना की। हनुमानजी ने सभी राक्षसों को मार डाला, कुछ अधमरे राक्षस चिल्लाते हुए चले गये।

तब रावण ने अक्षय कुमार को भेजा। वह अपने साथ असंख्य महान योद्धाओं को ले गया। उसे आता देखकर हनुमानजी ने हाथ में एक वृक्ष लेकर उसे ललकारा और उसे मारकर बड़े जोर से गर्जना की। उन्होंने सेना में से कुछ को

मार डाला और कुछ को कुचल दिया और कुछ को पकड़कर धूल में मिला दिया। कुछ ने फिर जाकर पुकारा, हे प्रभु! बंदर बहुत ताकतवर है.

अपने पुत्र के वध की बात सुनकर रावण क्रोधित हो गया और उसने (अपने बड़े पुत्र) शक्तिशाली मेघनाद को भेजा। उससे कहा--हे पुत्र! मारना नहीं; उसे बाँध दो। आइए देखें कि वे बंदर कहां से हैं। इन्द्र को परास्त करने वाला अतुलनीय योद्धा मेघनाद आगे बढ़ा। भाई द्वारा जनसूत्र स्वीकार करने से वह नाराज हो गया। हनुमानजी ने देखा कि इस बार तो कोई भयंकर योद्धा आया है। फिर वे आँगन की ओर भागने लगे।

उसने एक बहुत बड़ा पेड़ उखाड़ दिया और [अपने झटके से]। लंकेश्वर ने रावण के पुत्र मेघनाद को उसके रथ के बिना ही मार डाला (रथ तोड़ दिया और उसे नीचे गिरा दिया। हनुमानजी ने अपने साथ आए बड़े-बड़े योद्धाओं को पकड़ लिया और उन्हें अपने शरीर से कुचलना शुरू कर दिया। उन सभी को मारने के बाद वे मेघनाद से युद्ध करने लगे। लड़ते-लड़ते वह ऐसे दिखते थे मानो दो महान हाथी आपस में भिड़ गए हों, हनुमानजी ने उन्हें मुक्का मारा और एक पल के लिए उन्हें बेहोश कर दिया।

तब उसने उठकर बड़ी माया रची; लेकिन पवन पुत्र उस पर विजय पाने में सफल नहीं हो पाते। अंत में उन्होंने ब्रह्मख का प्रयोग किया, तब हनुमान जी ने मन में सोचा कि यदि उन्होंने ब्रह्मख की बात नहीं मानी तो उनकी अपार महिमा नष्ट हो जायेगी। उसने हनुमानजी पर ब्रह्मा बाण चलाया, जिसके लगते ही वह पेड़ से नीचे गिर पड़े, लेकिन गिरते हुए भी उन्होंने बड़ी संख्या में सेना को मार डाला। जब उसने देखा कि हनुमानजी मूर्च्छित हो गये हैं तो वह उन्हें सर्प से बाँधकर ले गया।

शिवजी कहते हैं-- हे भवानी! सुनो, जिसका नाम बुद्धिमान लोग जपते हैं उसका दूत क्या संसार के बंधन (जन्म और मृत्यु) को काट सकता है? लेकिन हनुमानजी ने स्वयं को प्रभु कार्य के लिए तैयार किया। बन्दर को बाँधने की बात सुनकर राक्षस दौड़ पड़े और सभी लोग कौतुक (तमाशा देखने) के लिए दरबार में आये। हनुमानजी ने जाकर रावण की सभा देखी। उनकी अपार महिमा का कोई वर्णन नहीं है।

देवताओं तथा दिक्पाल ने हाथ जोड़कर बड़ी नम्रता से भयभीत होकर रावण की ओर देखा। (उनकी मुद्रा देखकर) इतना वैभव देखकर भी हनुमान जी के मन में कोई भय नहीं हुआ। वह उसी प्रकार निडर खड़ा था, जैसे गरुड़ सपोखी समूह में निडर खड़ा होता है। हनुमानजी को देखकर रावण अपशब्द कहते हुए खूब हंसा।

फिर जब उन्हें अपने पुत्र की हत्या का स्मरण आया तो उनके हृदय में दुःख उत्पन्न हो गया।

लद्दापति रावण ने कहा--अरे वानर! आप कौन हैं ? किसके बल पर तुमने जंगल उजाड़ा? आपके पास कभी नहीं मुझे (मेरा नाम और यश) अपने कानों से सुना? हे शठ! मैं तुम्हें बहुत असहाय देख रहा हूं. आपने किस अपराध से राक्षसों का वध किया? अरे मूर्ख! मुझे बताओ, क्या तुम्हें अपनी जान गंवाने का डर नहीं है? हनुमानजी ने कहा--]हे रावण! सुनना; जिनकी शक्ति से माया संपूर्ण ब्रह्माण्डों के समूह बनाती है;

किसके बल पर है दशाशीष! ब्रह्मा, विष्णु, महेश (क्रमशः) ब्रह्मांड का निर्माण, पालन और विनाश करते हैं; जिनकी शक्ति से शेषजी अपने नुकीले सिर से पर्वतों और वनों सहित संपूर्ण ब्रह्मांड को अपने सिर पर धारण करते हैं; जो देवताओं की रक्षा के लिये नाना प्रकार के शरीर धारण करते हैं और तुम जैसे मूर्खों को शिक्षा देते हैं; जिसने भगवान शिव के कठोर धनुष को तोड़ दिया और उसके साथ ही राजाओं के समूह का घमंड भी चूर-चूर कर दिया।

जिसने खर, दूषण, त्रिसिग और बालिको को मार डाला, ये सभी अतुलनीय रूप से शक्तिशाली थे; जिनके थोड़े से बल से तुमने समस्त चराचर जगत को जीत लिया है और जिनकी प्रिय पत्नी को तुमने (चोरी से) हर लिया है, मैं उनका दूत हूं। मैं आपकी महानता को अच्छी तरह से जानता हूं, आपने सहखबाहु से युद्ध किया था और बालि से युद्ध करके आपने प्रसिद्धि प्राप्त की थी। हनुमानजी की (मर्मस्पर्शी) बातें सुनकर रावण हँसा और बात को टाल गया।

हे [राक्षसों के]। मालिक ! मुझे भूख लगी थी, इसलिए मैंने फल खाये और अपने वानर स्वभाव के कारण मैंने पेड़ तोड़ लिये। हे भगवान (रातों के)! हर कोई शरीर से नफरत करता है. जब दुष्ट मार्ग पर चलने वाले राक्षस मुझे मारने लगे, तब मैंने भी अपने मारने वालों को मार डाला। तब आपके पुत्र ने मुझे बाँध दिया। [लेकिन। मुझे बंधे रहने में कोई शर्म नहीं है. मैं अपने भगवान का काम करना चाहता हूं.

अरे गनो! मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करता हूं कि आप अपना अभिमान त्याग दें और मेरा उपदेश सुनें। जो काल देवताओं, दानवों तथा समस्त प्राणियों को खाता है तथा उससे अत्यंत डरता है, उस पर कभी क्रोध न करना और मेरे आग्रह करने पर उसे जानकीजी को दे देना। श्रीरघुनाथजी उन लोगों के रक्षक हैं जो सभी शत्रुओं के सामने समर्पण कर देते हैं और दया के सागर हैं। जब तुम

शरण मांगोगे तो ईश्वर तुम्हारा अपराध भूल जायेंगे और तुम्हें अपनी शरण में ले लेंगे।

आप श्री रामजी के चरणकमलों को अपने हृदय में रखिये और लद्धा के राज्य को स्थिर कीजिये। ऋषि पुलस्त्यजी की कीर्ति निर्मल चंद्रमा के समान है। तुम उस चाँद पर दाग मत बन जाना. राम नाम के बिना वाणी निष्प्रभावी हो जाती है, नशा और मोह को त्याग कर विचार करें। हे देवताओं के शत्रु! सम्पूर्ण आभूषणों से सुसज्जित सुन्दर स्त्री भी वस्त्रों के बिना (नग्न) अच्छी नहीं लगती।

राम से रहित व्यक्ति का धन और बल चला जाता है और उसे पाना न पाने के समान है। जिन नदियों के उद्गम में जल का कोई स्रोत नहीं होता (अर्थात जो केवल वर्षा पर निर्भर होती हैं) वे वर्षा के तुरंत बाद सूख जाती हैं। हे रावण! सुनो, मैं शपथ खाता हूँ कि रामविमुख की रक्षा करने वाला कोई नहीं है। श्री रामजी को धोखा देने वाले हजारों शंकर, विष्णु और ब्रह्मा भी तुम्हें नहीं बचा सकते।

ऐसे (अज्ञान से उत्पन्न), तमररूप अभिमान को त्याग दो, जिसका मूल मोह है और दया के सागर, रघुकुल के स्वामी भगवान श्री रामचन्द्रजी की पूजा करो। यद्यपि हनुमानजी ने भक्ति, ज्ञान, त्याग और नीति से युक्त अत्यंत हितकारी वचन कहे थे, फिर भी उस महा अहंकारी रावण ने हंसकर (व्यंग्यपूर्वक) कहा कि इस वानर में हमें बहुत ज्ञानी गुरु मिल गया है!

हे दुष्ट! तुम्हारी मृत्यु निकट है. हीन! वह मुझे पढ़ाने आये हैं. हनुमानजी ने कहा--यह तो उल्टा ही होगा (अर्थात् मृत्यु मेरे नहीं, तेरे ही पास आयी है)। यह तुम्हारा भ्रम है, यह मुझे प्रत्यक्ष मालूम हो गया है। हनुमानजी की बातें सुनकर वे बहुत क्रोधित हुए [और बोले--] अरे! आप जल्दी से इस मूर्ख की जान क्यों नहीं ले लेते? सुनते ही राक्षस उन्हें मारने दौड़े। उसी समय विभीषणजी अपने मन्त्रियों सहित वहाँ पहुँचे।

उन्होंने सिर झुकाकर अत्यंत नम्रता से रावण से कहा कि दूत को नहीं मारना चाहिए, यह नीति के विरुद्ध है। हे गोसाईं) कोई और सजा देनी चाहिए. सबने कहा--भाई! यह सलाह उत्तम है. यह सुनकर रावण हंसा और बोला- ठीक है, बंदरों के टुकड़े-टुकड़े करके उन्हें वापस भेज दो। मैं सबको समझाकर कहता हूं कि बंदर का स्नेह पूँछ से होता है। इसलिए किसी कपड़े को तेल में डुबाकर उसकी पूँछ पर बाँध दें और फिर उसमें आग लगा दें।

जब यह बन्दर बिना पूछे वहाँ (अपने मालिक के पास) जाएगा, तब यह मूर्ख अपने मालिक को भी साथ ले आएगा। उन्होंने जिनकी बहुत प्रशंसा की है, जरा

उनकी प्रभुता (शक्ति) भी देख लूं। यह वचन सुनकर हनुमानजी मन ही मन मुस्कुराये और मन ही मन कहा कि मैं जानता हूं कि (इन्हें ऐसी बुद्धि देने में) सरस्वतीजी ने सहायता की है। रावण की बातें सुनकर मूर्ख राक्षस अपनी पूँछों में आग लगाने की तैयारी करने लगे।

पूँछ को लपेटने में इतना कपड़ा और घी-तेल का प्रयोग हुआ कि नगर में कोई कपड़ा, घी-तेल नहीं बचा। हनुमानजी ने ऐसा खेला कि पूँछ बड़ी (लम्बी) हो गयी। शहरवासी तमाशा देखने आये। वे हनुमानजी को लात मारते हैं और उनका मजाक उड़ाते हैं। ढोल बजने लगते हैं, सब तालियाँ बजाते हैं। हनुमानजी को पूरे शहर में घुमाया गया और फिर उनकी पूंछ में आग लगा दी गई। आग जलती देख हनुमानजी तुरंत बहुत छोटे हो गए।

बंधन से छूटकर वे स्वर्णिम शिखरों पर चढ़ गये। उन्हें देखकर राक्षसों की स्त्रियाँ भयभीत हो गईं। उस समय ईश्वर की प्रेरणा से सभी चालीस पवनें चलने लगीं। हनुमानजी हँसते हुए गरजे और आकाश में उड़ गये। शरीर बहुत बड़ा है, परन्तु बहुत हल्का (फुर्तीला) है। वे दौड़ते हैं और एक महल से दूसरे महल तक चढ़ते हैं। शहर जल रहा है, लोग संकट में हैं. आग की लाखों भयानक लपटें उछल रही हैं।

हाय बप्पा! हाय मां! इस अवसर पर हमें कौन बचाएगा? यह पुकार [चारों ओर] सुनी जा रही है। हमने पहले ही कहा था कि यह बंदर नहीं है, यह बंदर के रूप में कोई देवता है! संत के अपमान का परिणाम यह हुआ कि वह नगर अनाथ नगर की भाँति जल रहा है। हनुमानजी ने एक ही क्षण में सारा नगर जला डाला। एक भी विभीषण का घर नहीं जला।

[शिवजी कहते हैं--] हे पार्वती! हनुमानजी अग्नि उत्पन्न करने वाले के दूत हैं। इसी कारण वे आग में नहीं जले। हनुमानजी ने आगे-पीछे (एक ओर से दूसरी ओर) घूमकर सारी लंका जला दी। फिर वे समुद्र में कूद पड़े। अपनी पूँछ को बुझाकर, अपनी थकान मिटाकर और फिर छोटा रूप धारण करके हनुमानजी श्री जानकीजी के सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गये।

[हनुमानुजी ने कहा--] हे माता! मुझे कोई चिह्न (पहचान) दीजिए, जैसा श्री रघुनाथजी ने मुझे दिया था। तब सीताजी ने चूड़ा उतारकर दे दिया। हनुमानजी ने इसे सहर्ष ले लिया। हे प्रभु, यद्यपि आप हर तरह से परिपूर्ण हैं (आपकी कोई इच्छा नहीं है), फिर भी गरीबों (दुखियों) पर दया करना आपका विपरीत है [और मैं गरीब हूं], इसलिए उस विपरीत को याद करते हुए, हे भगवान! मेरा बड़ा संकट दूर करो।

हे पिता! इन्द्रपुत्र जयन्ती की कथा (घटना) सुनाना और भगवान को उनके बाण की महिमा समझाना (याद दिलाना)। अगर एक महीने के अंदर नाथ नहीं आये तो मैं जीत नहीं पाऊंगा. हे हनुमान! मुझे बताओ, मैं अपनी जान कैसे बचा सकता हूँ! हे पिता! अब आप भी मुझे जाने के लिए कह रहे हैं. तुम्हें देखकर मेरे सीने में ठंडक आ गई. फिर मुझे वही दिन और वही रात मिलती है!

हनुमान जी ने जानकी जी को अनेक प्रकार से सांत्वना दी और धैर्य दिया और उनके चरण कमलों पर सिर रखकर श्री राम जी के पास गये। चलते-चलते उसने बड़े जोर से गर्जना की, जिसे सुनकर राक्षसों के गर्भ में गर्भपात होने लगा। समुद्र पार करने के बाद वे यहां आये और उन्हें बंदरों की चहचहाहट की आवाज सुनाई दी।

हनुमानजी को देखकर सभी प्रसन्न हो गए और तब बंदरों को अपने नए जन्म का एहसास हुआ। हनुमान जी के मुख पर प्रसन्नता और शरीर पर तेज है, [जिससे वे समझ गये कि] इन्होंने श्री रामचन्द्र जी का कार्य किया है। सभी लोग हनुमान जी से मिले और बहुत प्रसन्न हुए, मानो तरसती हुई मछली को पानी मिल गया हो। सभी प्रसन्न होकर श्रीरघुनाथजी के पास नई-नई कथाएँ माँगने गए।

फिर सभी लोग मधुवन के अन्दर आये और अंगद की सहमति से सभी ने मीठे फल या शहद और फल खाये। गार्डों के चिल्लाने पर मुक्कों से हमला होते ही सभी गार्ड भाग गये. वे सब जाकर चिल्लाने लगे कि राजकुमार अंगद जंगल को नष्ट कर रहे हैं। यह सुनकर सुग्रीव प्रसन्न हुए कि वानरों ने भगवान का कार्य किया है।

यदि उन्हें सीताजी का समाचार न मिलता तो क्या वे मधुवन के फल खा पाते? राजा सुग्रीव मन में सोच ही रहे थे कि वानर समाज सहित आ गये।

सभी ने आकर सुग्रीव के चरणों में सिर झुकाया। कपिराज सुग्रीव सभी से बड़े प्रेम से मिले। उन्होंने पूछा कि कैसे ठीक है, [तब बंदरों ने उत्तर दिया-] आपके पैर देखकर सब ठीक हो गया है। श्री रामजी की कृपा से एक विशेष कार्य हो गया (कार्य में विशेष सफलता मिली)।

हे नाथ! हनुमान ने सारा काम किया और सभी वानरों की जान बचाई। यह सुनकर सुग्रीवजी पुनः हनुमानजी से मिले और सब वानरों सहित श्रीरघुनाथजी के पास गये।

जब श्री रामजी ने वानरों के लिये काम किया। जब उसने इसे आते देखा, तो उसके हृदय में विशेष खुशी महसूस हुई। दोनों भाई एक स्फटिक शिला पर बैठे थे। सभी बंदर उनके चरणों में जाकर गिर पड़े। श्री रघुताताजी, जो दयालु थीं, ने सभी को प्रेम से गले लगाया और उनकी कुशलक्षेम पूछी। [बंदरों ने कहा-] हे प्रभु! आपके चरणकमलों के दर्शन पाकर अब मैं स्वस्थ हो गया हूँ।

जाम्बवान ने कहा--हे रघुनाथजी! सुनना। हे नाथ! जिस पर आपकी कृपा होती है, उसे सदैव समृद्धि और निरंतर समृद्धि प्राप्त होती है। उनसे देवता, मनुष्य और ऋषि-मुनि सभी प्रसन्न रहते हैं। वह विजयी है, वह विनम्र है और वह गुणों का सागर बन जाता है। उनकी सुन्दर कीर्ति तीनों लोकों में प्रकाशित होती है। सब कुछ ईश्वर की कृपा से हुआ। आज हमारा जन्म सफल हो गया.

हे नाथ! पवनपुत्र हनुमान ने जो किया उसका हजारों मुखों से भी वर्णन नहीं किया जा सकता। तब जाम्बवान ने श्रीरघुनाथजी को हनुमानजी का सुन्दर चरित्र (कार्य) सुनाया। (वे पात्र) सुनकर कृपानिधि श्री रामचन्द्र को वे बहुत पसन्द आये। उन्होंने प्रसन्न होकर हनुमान जी को फिर से गले लगा लिया और बोले- हे तात, बताओ सीता कैसे रहती हैं और अपने प्राणों की रक्षा कैसे करती हैं?

[हनुमानजी ने कहा--] आपका नाम ही दिन-रात रक्षा करने वाला है, आपका ध्यान ही द्वार है। वह अपने पैरों पर नजर जमाए रहती है, यह ताला है; यदि मैं मर जाऊं तो मुझे कौन सा मार्ग अपनाना चाहिए? चलते-चलते वह को उतार दिया चूड़ामणि मेरी ओर से. दिया। श्रीरघुनाथजी ने उसे लेकर हृदय से लगा लिया। [हनुमान जी ने फिर कहा--] हे नाथ- जानको जी ने दोनों आंखों में आंसू भरकर मुझसे कुछ शब्द कहे--

अपने छोटे भाई के साथ भगवान के चरण पकड़ें [और कहें कि] आप विनम्र मित्र हैं, जो शरणागत के दुखों को दूर करते हैं, और मैं मन, वचन और कर्म से आपके चरणों का पालन करता हूं। फिर स्वामी (आपने) किस अपराध से मुझे त्याग दिया? [हां] एक गलती जो मैं [निश्चित रूप से] अपनी मानता हूं, वह यह है कि जैसे ही आप मुझसे अलग हुए, मैंने अपना जीवन नहीं खोया। परन्तु हे प्रभु! ये उन आँखों का दोष है जो आत्मा के निकलने में हठपूर्वक बाधा डालती हैं।

विरह अग्नि है, शरीर कपास है और श्वास वायु है; इस प्रकार अग्नि और वायु के संयोग से। ये शरीर पल भर में जल सकता है. परन्तु नेत्र अपने लाभ के लिए (भगवान् के रूप को देखकर प्रसन्न होने के लिए) जल (आँसू) बहाते हैं, जिससे

विरह की अग्नि भी शरीर को नहीं जलाती। सीताजी का संकट बहुत बड़ा है। हे विनम्र! वह बिना कुछ कहे भी अच्छी है (कहने से आपको बहुत दुख होगा)।

वह दयालु है! उनके हर क्षण अनंत काल की तरह बीत जाता है। अतः हे भगवन्! तुरंत जाओ और अपनी भुजाओं के बल से दुष्टों के समूह को हराकर सीताजी को ले आओ। सीताजी का दुःख सुनकर सुखधाम प्रभु के कमल नयन जल से भर गये [और बोले-] जो मन, वाणी और शरीर से मेरा एकमात्र आश्रय (मेरा एकमात्र आश्रय) है, क्या उसे किसी का सामना करना पड़ेगा? उसके प्यार में भी परेशानी. हो सकती है?

हनुमानजी ने कहा--हे प्रभु! परेशानी तभी है जब आपकी भजन याद नहीं है. हे प्रभो ! राक्षसों के बारे में बात करने के लिए कितना कुछ है? तुम शत्रुओं को परास्त करके जानकीजी को ले आओगे।   भगवान कहने लगे- हे हनुमान! सुनना; मेरे परोपकारी देवता, मनुष्य अथवा मुनि, आपके समान कोई देहधारी नहीं है। आपके उपकार के बदले में मुझे क्या करना चाहिए? मेरा मन भी तुम्हारे सामने नहीं रह सकता.

हे वत्स सुनना; मैंने मन में सोचा और देख लिया कि मैं तुमसे कर्ज नहीं ले सकता। देवताओं के रक्षक भगवान बार-बार हनुमानजी की ओर देख रहे हैं। नेत्रों में प्रेमाश्रु भर आये हैं और शरीर अत्यंत पुलकित है। भगवान के वचन सुनकर और उनके (प्रसन्न) मुख तथा कांपते अंगों को देखकर हनुमानजी प्रसन्न हो गये और प्रेम से वशीभूत होकर बोले, 'हे प्रभु! 'मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो' कहकर वह श्री रामजी के चरणों में गिर पड़ा।

भगवान उन्हें बार-बार उठाना चाहते हैं, लेकिन प्रेम में डूबे हनुमानजी को अपने चरणों से उठना सुविधाजनक नहीं लगता। हनुमानजी के सिर पर प्रभु का कमल है। उस स्थिति को याद करके शिवजी प्रेम में मग्न हो गये। तब शंकरजी ने अपने मन को सचेत करते हुए एक बहुत ही सुंदर कथा सुनानी शुरू की- प्रभेन ने हनुमानजी को उठाकर हृदय से लगा लिया और उनका हाथ पकड़ कर अपने अत्यंत निकट बैठा लिया।

हनुमानजी प्रभु से प्रसन्न हुए और अभिमान रहित होकर बोले- यह बंदर का महान पुरुषार्थ है कि वह एक डाल से दूसरी डाल पर चला जाता है। हे श्रीरघुनाथजी, मैंने समुद्र पार करके सोने की नगरी को जला डाला और राक्षसों को मारकर अशोक वन को नष्ट कर दिया! यह आपकी महिमा है. हे नाथ! इसमें मेरे प्रभुत्व की कोई बात नहीं है.

हे प्रभु), जिस पर आपकी कृपा हो उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। आपके प्रभाव से कपास [जो कि बहुत शीघ्र जलने वाली उपभोग्य वस्तु है] अवश्य ही बदवानल को जला सकती है (अर्थात असंभव को भी संभव कर सकती है) हे भगवन्! कृपया मुझे अपनी दृढ़ भक्ति प्रदान करें जिससे मुझे अत्यधिक प्रसन्नता मिले। हनुमानजी की अत्यंत सरल वाणी सुनकर, यह तो भवानी है! तब भगवान श्री रामचन्द्रजी ने 'एवमस्तु' (ऐसा ही हो) कहा।

हे उमा! जिसने श्री रामजी के स्वरूप को समझ लिया, उसे भजन के अतिरिक्त और कुछ भी अच्छा नहीं लगता। भगवान के वचन सुनकर वानर कहने लगे- दयालु आनंदकन्द श्री रामजी की जय, जय, जय, जय! तब श्रीरघुनाथजी ने कपिराज सुग्रीव को बुलाकर कहा- चलने की तैयारी करो।

अब देर क्यों होनी चाहिए? बंदरों को तुरंत आदेश दो। भगवान की यह लीला (रावण वध की तैयारी) देखकर देवतागण बहुत-से फूल बरसाकर और प्रसन्न होकर आकाश मार्ग से अपने-अपने लोक को चले गये।

वानरराज सुग्रीव ने शीघ्र ही वानरों को बुलाया और सेनापतियों के समूह आ गये। बंदरों और भालुओं के झुंड कई रंगों के होते हैं और उनमें अतुलनीय ताकत होती है। वे भगवान के कमल चरणों में अपना सिर झुकाते हैं। बड़े-बड़े शक्तिशाली तिलचट्टे और वानर गरज रहे हैं। श्री रामजी ने सारी वानर सेना देखी। फिर उन्होंने कमल नेत्रों से उनकी ओर देखा।

राम की कृपा का बल पाकर श्रेष्ठ वानर ऐसे हो गये मानो पंखयुक्त बड़े-बड़े पर्वत हों। तब श्री रामजी प्रसन्न होकर चले गये। अनेक सुन्दर एवं शुभ शकुन घटित हुए। जिसका यश सारे लोकों में व्याप्त हो, उसके प्रस्थान के समय शगुन करना नीति (लीला की गरिमा) है।

प्रभु के चले जाने का समाचार जानकीजी को भी पता चला। उनके बायीं ओर के पंख फड़फड़ा रहे थे मानो कह रहे हों (कि श्री रामजी आ रहे हैं)। जानकीजी को जो भी शकुन दिये गये, वे रावण के लिये अपशकुन बन गये। सेना के मार्च का वर्णन कौन कर सकता है? असंख्य वानर और भालू दहाड़ रहे हैं।

जिनके नाखून ही उनके हथियार हैं, वे इच्छानुसार (सर्वत्र निर्विघ्न) विचरण करते हैं, कुछ आकाश में और कुछ पृथ्वी पर पर्वत और वक्षस्थल लेकर विचरण कर रहे हैं। वे शेर की तरह दहाड़ रहे हैं. उसके चलने और दहाड़ने से अलग-अलग दिशाओं के हाथी व्याकुल होकर चिंघाड़ रहे हैं।

दिशाओं के हाथी गरजने लगे, पृथ्वी हिलने लगी, पर्वत कांपने लगे और समुद्र व्याकुल होने लगे। गशधर्वा, देवता, ऋषि, नाग, किन्नर सभी मन में प्रसन्न हुए कि (अब) हमारा दुःख दूर हो गया। लाखों भयानक वानर योद्धा युद्ध कर रहे हैं और लाखों भाग रहे हैं।

वे 'प्रबल प्रताप कोसलनाथ श्री रामचन्द्रजी की जय हो' कहकर उनका गुणगान कर रहे हैं। उदार (सर्वोत्तम और महान) शेषजी भी सेना का भार सहन नहीं कर पाते, वे बार-बार मोहित (भयभीत) हो जाते हैं और कछुए की कठोर पीठ को अपने दांतों से पकड़ लेते हैं।

ऐसा करते हुए (अर्थात बार-बार अपने दाँतों से कछुए की पीठ पर एक रेखा खींचते हुए) वे कैसे सुन्दर लग रहे हैं मानो श्री रामचन्द्रजी की सुन्दर प्रस्थान यात्रा को अत्यन्त सुखद मानकर नागराज शेषजी उसकी अमर सचित्र कथा लिख रहे हों। कछुए की पीठ पर.

जब से हनुमानजी लंका जलाकर वहाँ (लंका) गये; तभी से राक्षस भयभीत रहने लगे। अपने-अपने घरों में सभी लोग यही सोचते हैं कि अब राक्षस कुल की रक्षा का कोई उपाय नहीं है। यदि उसका दूत, जिसकी शक्ति का वर्णन नहीं किया जा सकता, ख्यान नगर में आये (हमारी बहुत बुरी हालत होगी) तो क्या लाभ? दूतों से नगरवासियों की बातें सुनकर मंदोदरी बहुत दुःखी हुई।

एकान्त में वह हाथ जोड़कर अपने पति (रावण) के चरणों में गिर पड़ी और अमृत से भीगी हुई वाणी में बोली- हे प्रिये! श्रीहरि पर अपना विरोध छोड़ दो। मेरी बातों को अत्यंत हितकर समझो और हृदय में धारण कर लो। हे भगवान, जैसे ही वे दूत के कार्यों के बारे में सोचते हैं (याद करते हैं), राक्षसों की महिलाएं अपनी गर्भावस्था खो देती हैं। यदि तुम भला चाहते हो तो अपने मंत्री को बुलाओ और उसकी पत्नी को उसके साथ भेज दो।

सीता शीतकाल की रात्रि के समान आपके कुल के कमलवन को दुःख देने आयी हैं। हे नाथ! सुनो, शम्भु और ब्रह्मा को सीता दिये बिना (लौटाये) तुम्हारा कल्याण नहीं होगा। श्री गरमजी के बाण सर्पों के समूह के समान हैं और राक्षसों के समूह मेंढ़कों के समान हैं। जब तक वे उसे पकड़कर निगल न लें, तब तक अपनी जिद छोड़ो और उपाय करो।

उसकी बातें सुनकर मूर्ख और घमंडी रावण खूब हँसा और बोला- बच्चों की भावना सचमुच बहुत कायर होती है। तुम्हें सीवर में भी डर लगता है. तुम्हारा दिमाग (हृदय) बहुत कच्चा (कमजोर) है। यदि वानर सेना आयेगी तो बेचारे

राक्षस उन्हें खाकर ही जीवित रहेंगे। यह बड़े हंसी की बात है कि आप उस व्यक्ति से डरते हैं जिसके डर से लोकपाल भी कांपता है।

यह कहकर रावण ने हंसकर उसे गले लगा लिया और अधिक स्नेह दिखाकर सभा में चला गया। मंदोदरी को मन ही मन चिंता होने लगी कि विधाता मेरे पति के विरुद्ध हो गये हैं। जैसे ही वह सभा में जाकर बैठा, उसे समाचार मिला कि शत्रु की सारी सेना समुद्र पार आ गयी है। उन्होंने मंत्रियों से उचित सलाह देने को कहा [अब क्या किया जाना चाहिए?]। तब वे सब हँसे और बोले चुप रहो (इसमें सलाह की क्या बात है?)

आपने देवताओं और दानवों पर विजय प्राप्त कर ली, फिर कोई परिश्रम नहीं करना पड़ा। तो फिर मनुष्य और वानर किस श्रेणी में हैं? मंत्री, वैद्य और गुरु - यदि ये तीनों अप्रसन्नता के भय से या [लाभ की] आशा से कोई हितकारी बात नहीं कहते। प्रिया बोलती है (ठकुरसुहाती कहने लगती है); अतः राज्य, शरीर और धर्म - ये तीनों शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

वही सहायता (संयोग) रावण के लिए भी आई। मंत्रीगण उनकी मौखिक प्रशंसा करते हैं। [इसी समय] मौका जानकर विभीषणजी आ गये। उसने अपने बड़े भाई के चरणों में सिर झुका दिया। तब वह सिर झुकाकर अपने आसन पर बैठ गया और अनुमति पाकर ये शब्द कहने लगा- हे दयालु! जब तुमने मुझसे मेरी राय पूछ ही ली है तो हे पिता! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार आपके हित के लिए बोलता हूं---

जो मनुष्य अपना कल्याण, सुन्दर यश, उत्तम बुद्धि, शुभ गति तथा नाना प्रकार के सुख चाहता है, वही हे भगवन्! चतुर्थी के चंद्रमा के समान भक्त के मस्तक को भी त्याग दें, अर्थात जिस प्रकार लोग चतुर्थी के चंद्रमा को नहीं देखते, उसी प्रकार परस्त्री के मुख को भी नहीं देखते।

चौदह गृहों का स्वामी एक ही है, वह भी प्राणियों से युद्ध करके नहीं रुक सकता (नष्ट हो जाता है)। यदि किसी व्यक्ति में बहुत सारे गुण हों और वह चतुर हो, भले ही उसमें थोड़ा सा भी लालच हो, उसके बारे में कोई कुछ अच्छा नहीं कहता।

हे नाथ! काम, क्रोध, मद और लोभ- ये सब नरक के मार्ग हैं। यह सब छोड़ दो और श्री रामचन्द्रजी को भजो, जिनको साधुजन (सत्पुरुष) पूजते हैं। हे पिता! राम केवल मनुष्यों के राजा नहीं हैं। वह समस्त लोकों का स्वामी है और काल का भी स्वामी है। वह [सम्पूर्ण ऐश्वर्य, यश, कीर्ति, धर्म, त्याग और ज्ञान का भण्डार]

भगवान है; वह निरामय (बिना किसी विकार के), अजन्मा, सर्वव्यापक, अजेय, शाश्वत और शाश्वत ब्रह्म है।

उन वस्त्रों वाले भगवान समुद्र ने पृथ्वी, ब्राह्मण गौओं और देवताओं के कल्याण के लिये ही मानव शरीर धारण किया है। अरे भइया! सुनो, वह सेवकों को आनंद देने वाला, दुष्टों के समूह का नाश करने वाला तथा वेद और धर्म की रक्षा करने वाला है। अपनी शत्रुता त्याग दो और उन्हें अपना सिर झुकाओ।

वे ही शरणागत श्रीरघुनाथजी के दुःख का नाश करने वाले हैं। हे नाथ! जानकीजी को उन प्रभु (सर्वेश्वर) को दे दीजिए और अकारण द्वेष करने वाले श्री रामजी को भेज दीजिए।

जिसने सारे संसार को धोखा देने का पाप किया हो, उसे भी भगवान तब नहीं छोड़ते जब वह उनकी शरण में आता है। जिनका नाम तीनों तापों का नाश करने वाला है, वही प्रभु मनुष्य रूप में प्रकट हुए हैं। हे रावण! दिल में यह समझ लो, यह दशाशीश है! मैं बार-बार आपके चरणों में गिरता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि आप अहंकार, मोह और वासना को त्याग कर भगवान राम की पूजा करें।

ऋषि पुलस्त्यजी ने यह संदेश अपने शिष्य को भेजा है। अरे। तात! मैंने सुन्दर अवसर पाकर तुरन्त वह बात प्रभु (आप) से कह दी। माल्यवान नाम का एक अत्यंत बुद्धिमान मन्ति था। वह (विभीषण) वचन सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ [और बोला--] हे भगवन्! आपका छोटा भाई नीति-विभूषण (नीति को आभूषण के रूप में धारण करने वाला अर्थात धर्मात्मा) है। विभीषण जो भी कह रहे हैं, उसे हृदय से लगा लो।

[रावण ने कहा--] ये दोनों मूर्ख शत्रु की प्रशंसा कर रहे हैं। कोई यहाँ है? उनसे छुटकारा पाओ! तब माल्यवान घर लौट आये और विभीषणजी ने हाथ जोड़कर पुनः कहा- हे प्रभु! पुराण और वेद कहते हैं कि सुबुद्धि (अच्छी बुद्धि) और कुबुद्धि (झूठी बुद्धि) सभी के हृदय में निवास करती हैं, जहाँ अच्छी बुद्धि होती है, वहाँ विभिन्न प्रकार की संपत्ति (सुख की स्थिति) होती है और जहाँ बुरी बुद्धि होती है, वहाँ क्लेश (दुःख) होता है) नतीजतन। है।

एक गलत दिमाग आपके दिल में बस गया है. इससे आप अपने हित की हानि और रिश्तेदारों को मित्र मान रहे हैं। राक्षस कुल के लिए रात्रि के समान सीता से आपका अत्यधिक प्रेम है। हे पिता! मैं आपके पैर पकड़कर विनती करता हूं कि

आप मुझे प्यार से स्वीकार करें (एक बच्चे की प्रार्थना को प्यार से स्वीकार करें)। सीताजी को श्री रामजी को दे दीजिये। जिसमें आपको कोई नुकसान नहीं होता है.

विभीषण ने पंडितों, पुराणों और वेदों द्वारा अनुमोदित शब्दों में नीति बताई। लेकिन जैसे ही रावण ने यह सुना, वह क्रोधित हो गया और बोला, "हे दुष्ट!" अब मौत आपके करीब आ गयी है. अरे मूर्ख! तुम सदैव जीवित हो, मैंने ही तुम्हें जीवित रखा है (अर्थात् तुम मेरे भोजन पर जीवित हो), परन्तु हे मूर्ख! आपको शत्रु पक्ष पसंद है. अरे दुष्ट! बताओ संसार में ऐसा कौन है जिसे मैंने अपनी भुजाओं के बल से न जीता हो?

वह मेरे नगर में रहकर तपस्वियों से प्रेम करता है। बेवकूफ़ ! उनसे मिलें और उन्हें नीति बताएं. यह कहकर रावण ने उसे लात मार दी। लेकिन छोटा भाई विभीषण बार-बार उसके पैर पकड़ता रहा (पीटने के बावजूद)। शिवजी कहते हैं--हे उमा! यह संत की महानता (महिमा) है कि वह बुराई करने पर भी बुराई करने वाले का आदर नहीं करता। केवल अच्छा करो. [विभीषणजी कहते हैं--] आप मेरे पिता समान हैं, आपने मुझे मारकर अच्छा किया; परन्तु हे प्रभु! श्री रामजी का भजन करने में ही तुम्हारे लिए कल्याण है।

इतना कहकर विभीषण अपने मन्त्रियों को साथ लेकर आकाश में चले गये और सबको सुनाकर कहने लगे- श्रीगमजी दृढ़ निश्चयी और [सर्वशक्तिमान] भगवान हैं और [हे रावण!] तुम्हारी सभा काल के वश में है। . अतः मैं अब श्री रघुवीर की शरण लेता हूँ, मुझे दोष मत दीजिये।

इतना कहकर विभीषण जी के जाते ही सभी राक्षस आयुहीन हो गये (उनकी मृत्यु निश्चित हो गयी)। [शिवजी कहते हैं--] हे भवानी! साधु का अपमान करने से तत्काल समस्त कल्याण की हानि (नष्ट) हो जाती है। जिस क्षण रावण ने विभीषण को छोड़ा, उस अभागे व्यक्ति का सारा वैभव नष्ट हो गया; विभीषणजी प्रसन्न हो गये और मन में अनेक कामनाएँ लेकर श्रीरघुनाथजी के पास गये।

वह सोचता था - मैं जाकर भगवान के कोमल और लाल सुन्दर चरणकमलों का दर्शन करूँगा, जो; नौकरों से; वे ही सुख देने वाले हैं, जिनके चरण छूकर ऋषिपाली मूर्च्छित हो गए थे और जो दण्डकवन को पवित्र करने वाले हैं। जिन चरणों को जानकीजी ने अपने हृदय में धारण कर रखा है, जो धोखेबाज मृग को पकड़ने के लिए पृथ्वी पर दौड़ती हैं और जो चरणकमल भगवान शिव के हृदयसरोवर में विराजमान हैं, यह मेरा सौभाग्य है कि मैं आज केवल उन्हीं के दर्शन करूंगी।

भरतजी ने जिनके चरणों में अपना मन एकाग्र किया है, अहा! आज मैं जाकर उन्हीं पैरों को इन आँखों से देखूँगा। इस प्रकार प्रेमपूर्वक विचार करता हुआ वह शीघ्र ही समुद्र के उस पार (जहाँ श्री रामचन्द्रजी की सेना थी) आ गया। जब वानरों ने विभीषण को आते देखा तो वे जान गये कि यह शत्रु का विशेष दूत है।

उन्हें पहरे पर रखकर वे सुग्रीव के पास आये और उन्हें सब समाचार सुनाये। उन्होंने (श्रीरामजी के पास जाते हुए) कहा - हे रघुनाथजी: सुनिए, रावण का भाई आपसे मिलने आया है। प्रभु श्रीरामजी बोले- हे मित्र! आप क्या सोचते हैं (आपकी राय क्या है)? वानरराज सुग्रीव ने कहा--हे महाराज! सुनो, राक्षसों की माया नहीं जानी जाती। न जाने यह अपनी इच्छानुसार रूप बदलने वाला व्यक्ति क्यों आया है?

[ऐसा लगता है] कि यह मूर्ख हमारी जासूसी करने आया है, इसलिए मुझे लगता है कि इसे बाँध दिया जाए तो बेहतर होगा। श्रीरामजीते ने कहा--हे मित्र! आपने अच्छी नीति सोची है! वह मेरे नगर में रहकर तपस्वियों से प्रेम करता है। बेवकूफ़ ! उनसे मिलें और उन्हें नीति बताएं. यह कहकर रावण ने उसे लात मार दी। लेकिन छोटा भाई विभीषण बार-बार उसके पैर पकड़ता रहा (पीटने के बावजूद)।

[शिवजी कहते हैं--] हे उमा! संत की महिमा (महिमा) यही है कि वह बुरा करने पर भी (बुरा करने वाले के साथ) अच्छा ही करता है। [विभीषणजी कहते हैं---] आप मेरे पिता समान हैं, आपने मुझे मारकर अच्छा किया; परन्तु हे प्रभु! श्री रामजी का भजन करने में ही तुम्हारे लिए कल्याण है। [इतना कहकर] विभीषण अपने मन्त्रियों के साथ आकाश में चले गये और सबको सुनाकर इस प्रकार कहने लगे-

श्री रामजी दृढ़ निश्चयी और [सर्वशक्तिमान] भगवान हैं और (हे रावण!) आपकी सभा समय के वश में है। अतः मैं अब श्री रघुवीर की शरण लेता हूँ, मुझे दोष मत दीजिये। इतना कहकर विभीषणजी के जाते ही सभी राक्षस वृद्ध हो गये (उनकी मृत्यु निश्चित हो गयी)। [शिवजी कहते हैं---] हे भवानी! साधु का अपमान करने से समस्त कल्याण तुरंत नष्ट हो जाता है।

जिस क्षण रावण ने विभीषण को छोड़ा, उस अभागे व्यक्ति का सारा वैभव नष्ट हो गया। विभीषण जी प्रसन्न हो गये और मन में अनेक मनोकामनाएँ लेकर श्री रघुनाथ जी के पास गये। वह सोचता था - मैं जाकर सेवकों को सुख देने वाले, जिनके चरण ऋषियों को हरा कर देते हैं और जो दण्डकण को पवित्र करने वाले हैं, भगवान के कोमल और लाल सुन्दर चरण कमलों का दर्शन करूँगा। हैं।

जिन चरणों को जानकीजी ने अपने हृदय में धारण कर रखा है, जो धोखेबाज मृग को पकड़ने के लिए पृथ्वी पर दौड़ती हैं और जो चरण कमल भगवान शिव के हृदय रूपी कमल तालाब में स्थित हैं, यह मेरा सौभाग्य है कि मैं केवल उन्हीं के दर्शन करूंगी। आज। जिनके चरणों में भरतजी ने अपना मन एकाग्र किया है, अहा! आज मैं जाकर उन पैरों को इन आँखों से देखूँगा।

इस प्रकार प्रेमपूर्वक विचार करता हुआ वह शीघ्र ही समुद्र के इस पार (जहाँ श्री रामचन्द्रजी की सेना थी) आ गया। जब वानरों ने विभीषण को आते देखा तो वे जान गये कि यह शत्रु का विशेष दूत है। उन्हें पहरे पर रखकर वे सुग्रीव के पास आये और उन्हें सब समाचार सुनाये। मुझे बताओ। सुग्रीव ने [श्रीरामजी के पास जाकर] कहा- हे रघुनाथजी! सुनो, रावण का भाई तुमसे मिलने आया है।

प्रभु श्रीरामजी बोले--हे मित्र! आप क्या सोचते हैं (आपकी राय क्या है)? वानरराज सुग्रीव ने कहा--हे महाराज! सुनो, राक्षसों की माया नहीं जानी जाती। न जाने यह अपनी इच्छानुसार रूप बदलने वाला व्यक्ति क्यों आया है? [ऐसा लगता है] कि यह मूर्ख हमारी जासूसी करने आया है, इसलिये मुझे लगता है कि इसे बाँधकर खा जाना ही अच्छा है। [श्री रामजीते ने कहा--]हे मित्र! आपने अच्छी नीति सोची है! लेकिन मेरी प्रतिज्ञा समर्पण के भय को दूर करने की है।

प्रभु के वचन सुनकर हनुमानजी प्रसन्न हो गये (और मन में कहने लगे) कैसा शरणागत (शरण में आया हुआ परंतु पिता के समान प्रेम करने वाला) भगवान है। [श्रीरामजी फिर बोले-] जो मनुष्य अपनी हानि की आशंका से शरण में आये हुए को त्याग देते हैं, वे दरिद्र (शूद्र) हैं, पापी हैं; उनको देखने से भी हानि होती है (पाप जैसा लगता है)

जिस पर करोड़ों ब्राह्मणों की हत्या का आरोप हो, जब वह शरण में आता है तो मैं उसे भी नहीं छोड़ता। मेरे सम्मुख होते ही उसके करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। पापी का यह स्वाभाविक स्वभाव है कि उसे मेरा भजन कभी शोभा नहीं देता। यदि वह (रावण का भाई) निश्चित ही दुष्ट हृदय का होता तो क्या वह मेरे सामने आ सकता था?

मुझे वही पाता है जो निर्मल मनका है। मुझे छल-कपट पसंद नहीं है. हे सुग्रीव, भले ही रावण ने उसे जानकारी लेने के लिए भेजा हो। मुझे कोई डर या नुकसान नहीं है. क्योंकि हे प्रिय! लक्ष्मण संसार के समस्त राक्षसों को एक क्षण में मार सकते हैं और यदि वह भय से मेरे पास आयेगा तो मैं उसकी रक्षा ऐसे करूँगा जैसे मैं जीवित हूँ।

वानरों ने आदरपूर्वक विभीषणजी का अनुसरण किया और फिर वहाँ गये, जहाँ करुणाकी खान श्रीरघुनाथजी थे। विभीषण जी ने दूर से ही नेत्रों को सुख देने वाले (अति सुखद) दोनों भाइयों को देखा॥ फिर शोभाके धाम में श्री रामजी को देखकर उनकी पलकें झपकना बंद हो गईं और वे स्तब्ध रह गए. भगवान की विशाल भुजाएं, लाल कमल के समान आंखें और श्याम शरीर है जो भक्त के भय को नष्ट कर देता है।

उनके कंधे शेर की तरह हैं, उनकी विशाल छाती बहुत आकर्षक है। उनका एक ऐसा चेहरा है जो असंख्य कामदेवों के मन को मोहित कर लेता है। भगवान का रूप देखकर विभीषण जी की आँखों में प्रेम के आँसू भर आये और उनका शरीर पुलकित हो गया। फिर मन में धैर्य रखकर उसने कोमल वचन कहे।

हे नाथ! मैं दशमुख रावण का भाई हूं. हे देवताओं के रक्षक! मेरा जन्म राक्षस कुल में हुआ है। मेरा शरीर तामसिक है, स्वभाव से मुझे पाप प्रिय हैं, जैसे उल्लू को स्वाभाविक रूप से अंधकार प्रिय है। मैं आपका शुभ समाचार सुनकर आया हूँ कि भगवान जन्म और मृत्यु के भय का नाश करने वाले हैं। हे दुखियों के दुःख दूर करने वाले और शरणागतों को सुख देने वाले श्री रघुवीर! मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो.

जब प्रभु ने उसे यह कहते हुए झुकते हुए देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और तुरंत उठ खड़ा हुआ। विभीषणजी के विनम्र वचन सुनकर भगवान बहुत प्रसन्न हुए। उसने उसे अपनी विशाल भुजाओं से पकड़ लिया और अपने हृदय से लगा लिया। श्री रामजी ने अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी को गले लगाकर अपने पास बैठाया और भक्तों का भय दूर करने वाले वचन बोले- हे लंकेश! अपने परिवार सहित अपनी कुशलक्षेम के बारे में बताएं। आपका निवास ख़राब जगह पर है.

तुम दिन-रात दुष्टों की संगति में रहते हो। [ऐसी परिस्थितियों में] हे प्रिय! आप अपने धर्म का पालन कैसे करते हैं? मैं तुम्हारे सारे आचरण (व्यवहार) को जानता हूँ। आप नीति में बहुत निपुण हैं, अनैतिक व्यवहार आपको पसंद नहीं है। हे पिता! नरक में रहना बेहतर है, लेकिन भगवान को दुष्टों का साथ नहीं देना चाहिए। [विभीषणजी ने कहा--]हे रघुनाथजी! अब आपके चरणों के दर्शन करके मुझे अच्छा लग रहा है और मैंने आपको अपना सेवक मानकर मुझ पर दया की है।

तब तक प्राणी का कल्याण नहीं होता, न ही उसके मन में आत्म-प्रेम में भी शांति होती है, जब तक वह दुःख रूपी घर को छोड़कर श्रीगमजी का भजन नहीं करता।

लोभ, मोह, ईर्ष्या, मद और अभिमान आदि अनेक बुराइयाँ हृदय में समय तक निवास करती हैं। हाथ में धनुष-बाण और तलवार धारण करने वाले वे श्रीरघुनाथजी हृदय में नहीं रहते।

प्रेम एक अँधेरी रात है, जो राग-द्वेष रूपी उल्लुओं को सुख देती है। वह (प्रेमरूपी रात्रि) प्राणी के मन में तभी तक निवास करती है, जब तक कि भगवान (आपके) तेज रूपी सूर्य का उदय नहीं हो जाता। हे श्री गयामजी! आपके चरणों के दर्शन करके अब मेरी तबीयत अच्छी हो गई है, मेरा भारी भय दूर हो गया है। हे कपालू! आप जिसके भी अनुकूल होते हैं, उस पर तीन प्रकार के तत्वों (आध्यात्मिक, पारमार्थिक और पारमार्थिक ताप) का प्रभाव नहीं पड़ता।

मैं अत्यंत नीच स्वभाव का राक्षस हूं. मैंने कभी भी अच्छा व्यवहार नहीं किया. जिनके स्वरूप का स्मरण ऋषियों को भी नहीं हो पाता, उन भगवान ने स्वयं प्रसन्न होकर मुझे अपने हृदय में धारण कर लिया। हे कृपा और सुख के स्वामी श्री रामजी! यह मेरा परम सौभाग्य है कि मैंने अपनी आँखों से ब्रह्मा और भगवान शिव द्वारा सेवित चरण कमलों के जोड़े को देखा।

, श्री रामजी ने कहा--] हे मित्र! सुनो, मैं तुम्हें अपना स्वरूप बताता हूं, जिसे काकभुशुण्डि, शिवजी और पार्वतीजी भी जानते हैं। यदि कोई मनुष्य समस्त जड़ और चेतन जगत् का द्रोही हो, वह भी भयभीत होकर मेरी शरण में आये और अभिमान, मोह तथा सब प्रकार के छल-कपट का त्याग कर दे तो मैं उसे शीघ्र ही सन्त के समान बना दूँगा। . माता, पिता, भाई, पुत्र, स्त्री, शरीर, धन, घर, मित्र और परिवार--

जो इन सब मोहरूपी धागों को बाँधकर और सबको एक सूत्र में बाँधकर अपने मन को मेरे चरणों में बाँध लेता है (मुझे ही सब सांसारिक सम्बन्धों का केन्द्र बना लेता है), वह समदर्शी पुरुष है, जिसके मन में किसी भी वस्तु की कोई इच्छा नहीं है। कोई खुशी, दुःख या भय नहीं है. है।

जैसे लोभी के हृदय में धन का वास होता है, ऐसे सज्जन पुरुष मेरे हृदय में कैसे निवास करते हैं? मैं आप जैसे संतों से ही प्रेम करता हूँ। मैं किसी अन्य के प्रति कृतज्ञतावश यह शरीर धारण नहीं करता हूँ। जो सगुण (साकार) भगवान के उपासक हैं, जो दूसरों के कल्याण में लगे रहते हैं, जो अपनी नीति और नियमों के पक्के हैं और जो ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम रखते हैं, वे लोग मेरी आत्मा के समान हैं।

हे लंकापति! सुनो, तुममें उपरोक्त सभी गुण हैं। इस कारण तुम मुझे बहुत प्रिय हो। : श्री रामजी के वचन सुनकर सभी वानरों के समूह कहने लगे- श्री रामजी की जय! वे भगवान के वचनों को सुनते हैं और उसे अपने कानों के लिए अमृत समझकर विभीषणजी स्वयं को नहीं मारते। वे बार-बार श्री गरमजी के चरणकमलों को पकड़ते हैं। प्यार है बेशुमार, दिल में समाता नहीं।

[विभीषणजी ने कहा--]हे भगवन्! हे चराचर जगत के स्वामी! हे शरणागत के रक्षक! हे सबके हृदय के ज्ञाता! सुनो, पहले मेरे हृदय में कुछ वासना थी, वह प्रभु के चरणों की कृपा की नदी में बह गई। अब हे कपालू! मुझे अपनी वह पवित्र भक्ति दीजिये जो भगवान शिव को सदैव प्रिय हो। रणधीर प्रभु श्री राम ने 'अमस्तु' (ऐसा ही हो) कहकर तुरंत समुद्र का जल माँगा।

[और कहा--] अरे मित्र! यद्यपि यह आपकी इच्छा नहीं है, तथापि जगत् में मेरा दर्शन अमोघ है (विफल नहीं होता)। इतना कहकर श्री रामजी ने उनका राज्याभिषेक कर दिया। आकाश से फूलों की अपार वर्षा होने लगी। श्री रामजी ने विभीषण को रावण की क्रोधाग्नि में जलने से बचाया, जो उसके (विभीषण के) वचनों के झोंके से और भी उग्र होती जा रही थी और उसे अखंड राज्य दिया।

भगवान शिव ने अपने दस सिरों की बलि देकर जो धन रावण को दिया था, वही धन श्री रघुनाथजी ने बड़े संकोच से विभीषण को दे दिया। जो लोग परम दयालु भगवान को छोड़कर दूसरों की पूजा करते हैं, वे सींग और पूंछ के बिना जानवर हैं। श्री राम जी ने विभीषण को अपना सेवक स्वीकार कर लिया। भगवान का स्वभाव वानरों को बहुत पसंद आया।

फिर श्री रामजी जो सब कुछ जानते हैं, सबके हृदय में निवास करते हैं, सर्वव्यापक (सभी रूपों में प्रकट), सबसे रहित, उदासीन, निमित्त (भक्तों पर दया करने के लिए) मनुष्य बने हैं और संहारक हैं राक्षसों के कुल में नीति की रक्षा करने वाले वचन बोलने वाले - हे वीर वानरराज सुग्रीव और लद्धापति! विभीषण! सुनो, इस गहरे समुद्र को कैसे पार किया जाए? मगरमच्छों, साँपों और मछलियों की अनेक प्रजातियों से भरे इस विशाल महासागर को पार करना हर तरह से कठिन है।

विभीषणजी ने कहा--हे रघुनाथजी! सुनो, यद्यपि तुम्हारा एक बाण करोड़ों समुद्रों को सोख सकता है, तथापि नीति में यह कहा गया है (उचित होगा) कि पहले जाकर समुद्र की प्रार्थना करनी चाहिए। हे भगवान! समुद्र आपके परिवार के बड़े (पूर्वज) हैं, वे विचार करेंगे और समाधान सुझायेंगे। तब रीछों और वानरों की सारी सेना बिना किसी प्रयास के समुद्र पार कर जायेगी।

[श्री रामजी ने कहा--] हे सखा! आपने एक अच्छा समाधान सुझाया. ऐसा तभी करना चाहिए जब भगवान मदद करें. लक्ष्मणजी को यह सलाह अच्छी नहीं लगी। श्री रामजी के वचन सुनकर उन्हें बहुत दुःख हुआ।

लक्ष्मणजी ने कहा--]हे प्रभु! भगवान पर कौन भरोसा कर सकता है? मन में क्रोध करो और समुद्र को सुखा डालो। यह देवता तो कायर के मन का सहारा (सांत्वना देने का उपाय) मात्र है। आलसी लोग ही देवी-देवताओं को पुकारते हैं। यह सुनकर श्री रघुवीर हँसे और बोले- मैं वैसा ही करूँगा, मन में धैर्य रखो। यह कहकर और अपने छोटे भाई को समझाकर भगवान श्री रघुनाथजी समुद्र के निकट चले गये।

रामजी ने पहले सिर झुकाकर प्रणाम किया। फिर वह किनारे पर तकिया बिछाकर बैठ गया। जैसे यहाँ। जैसे ही विभीषणजी भगवान के पास आये थे, रावण ने उनके पीछे दूत भेजे थे। फिर वे प्रत्यक्ष रूप में भी अत्यंत प्रेम से श्री रामजी की इच्छा की स्तुति करने लगे; वह अपना छल (छल का भेष) भूल गया। तब वानरों को एहसास हुआ कि ये शत्रु के दूत हैं और वे उन सभी को बाँधकर सुग्रीव के पास ले आये।

सुग्रीव ने कहा--सभी वानर! सुनो, राक्षसों को दूर भेजो। सुग्रीव की बात सुनकर वानर भाग गये। उन्होंने दूतों को बाँध दिया और उन्हें सेना के चारों ओर घुमाया। बंदरों ने उन्हें तरह-तरह से मारना शुरू कर दिया। वे त्राहि-त्राहि कर रहे थे, फिर भी बंदरों ने उन्हें नहीं छोड़ा। [तब दूतों ने पुकारकर कहा--] जो हमारे नाक और कान काटते हैं उनमें कोसलादिष श्री रामजी की गंध है।

यह सुनकर लक्ष्मणजी ने सभी को पास बुलाया। इस पर उसे बहुत दया आयी, वह हँसा और उसने तुरंत राक्षसों को मुक्त कर दिया। [और उनसे कहा--] यह पत्र रावण के हाथ में दे दो [और कहा--] हे हत्यारे! लक्ष्मण के वचन (संदेश) को जियो. तब उस मूर्ख को मेरा यह उदार (दया से भरा हुआ) सन्देश कहना - इसे सीताजी को दे दो और उनसे (श्रीरामजी से) मिलो, अन्यथा समझो कि तुम्हारा समय आ गया है।

लक्ष्मणजी के चरणों में सिर झुकाकर और श्रीगमजी के गुणों की कथा सुनाकर दूत तुरंत चला गया। वह श्री रामजी की जय कहता हुआ लड्ढा के पास आया और रावण के चरणों में सिर झुकाया। दशमुख रावण ने हंसकर पूछा- हे शुक! आप मुझे क्यों नहीं बताते कि आप कितने अच्छे हैं? फिर उस भयावहता, मौत की खबर सुनी जो बहुत करीब आ गई थी.

मूर्ख ने शासन करते समय अपने बच्चों को त्याग दिया। वह अभागा अब कीड़ा (घुन) बनेगा (जैसे उसके साथ-साथ घुन भी कुचला जाता है, वैसे ही बन्दरों के साथ वह भी मारा जायेगा); फिर भालू और वानरों की सेना का हाल कहो, जो कठिन समय की प्रेरणा से यहाँ आये हैं। 'वह बेचारी आत्मा जिसके जीवन का रक्षक समुद्र बन गया है (अर्थात यदि उनके और राक्षसों के बीच समुद्र नहीं होता, तो राक्षस अब तक उन्हें मारकर खा गए होते)। फिर मुझे उन तपस्वियों के विषय में बताओ जिनके हृदय में मेरा बड़ा भय है।

क्या आपकी उनसे मुलाक़ात हुई या वे 'मेष सुयश' सुनकर लौट आये? शत्रु सेना की गति और शक्ति के बारे में क्यों नहीं बताते? तुम्हारा मन बड़ा चकित हो रहा है। [दूत ने कहा--] हे प्रभु! जैसे आपने प्रेमपूर्वक कहा है, क्रोध छोड़कर मेरी बात मानो (मैं जो कहता हूँ उस पर विश्वास करो)। जब आपका छोटा भाई जाकर श्री रामजी से मिला तो उसके पहुंचते ही श्री रामजी ने उसका राज्याभिषेक कर दिया।

हे नाथ! आपने श्रीरामजी की सेना से पूछा; अतः उसका वर्णन करोड़ों मुखों से भी नहीं किया जा सकता। वहाँ अनेक रंगों के भालू और वानरों की सेना है, जिनके भयंकर चेहरे, विशाल शरीर और भयानक हैं। जिसने नगर को जला दिया और आपके पुत्र अक्षय कुमार को मार डाला, वह सभी वानरों में सबसे कम बल वाला है। वह असंख्य नामों वाला एक अत्यंत कठोर और भयंकर योद्धा है। उनमें असंख्य हाथियों का बल है और वे बहुत विशाल हैं।

द्विविंद, मायंद, नील, नल, अंगद, गद, विकटस्य, दधिमुख, केसरी, निषथ, शठ और जाम्बवानु- ये सभी बाल्की राशियाँ हैं। ये सभी वानर बल में सुग्रीव के समान हैं और उनके जैसे करोड़ों हैं [एक या दो नहीं]; उन अनेकों को कौन गिन सकता है? श्री रामजी की कृपा से उसमें अतुलनीय बल है। वे तीनों लोकों को तिनके के समान [तुच्छ] समझते हैं।

हे दशग्रीव! मैंने सुना है कि अठारह पद्म ही वानरों के सेनापति हैं। हे नाथ! उस सेना में ऐसा कोई वानर नहीं है जो आपको युद्ध में हरा न सके। हर कोई अत्यधिक गुस्से में हाथ हिलाता है। परन्तु श्रीरघुनाथजी उन्हें आज्ञा नहीं देते। हम मछलियों और साबुनों के साथ-साथ समुद्र को भी सोख लेंगे। अन्यथा वे इसे बड़े-बड़े पहाड़ों से भर देंगे।

और रावण को धूल में मिला देंगे. सभी बंदर एक जैसे शब्द बोल रहे हैं। हर कोई स्वाभाविक रूप से निडर है; वे इस प्रकार दहाड़ते और काँपते हैं मानो योद्धा को

निगल जाना चाहते हों। सभी वानर और भालू स्वभावतः वीर हैं और उनसे ऊपर अभु (सर्वेश्वर) श्री रामजी हैं। हे गवन! वह युद्ध में लाखों लोगों को जीत सकता है।

श्रीरामचन्द्रजी की महानता, शक्ति और बुद्धि का गुणगान लाखों लोग भी नहीं कर सकते। वे एक ही बांस से सैकड़ों समुद्र सो सकते हैं, परंतु नीति में निपुण श्री रामजी ने आपके भाई से (नीति की रक्षा के लिए) उपाय पूछा।

उनके (आपके भाई के) वचन सुनकर वे (श्री रामजी) समुद्र से मार्गदर्शन मांग रहे हैं, उनका हृदय दया से भरा हुआ है (इसीलिए वे उसे ग्रहण नहीं करते हैं)। दूत की यह बात सुनते ही रावण खूब हँसा [और बोला-] चूँकि उसमें ऐसी बुद्धि है, इसलिये उसने वानरों को अपना सहायक बना लिया है।

स्वाभाविक रूप से डरपोक विभीषण की बातों को सिद्ध करके उसने समुद्र से भागने (बचपन) का निश्चय कर लिया है। अरे मूर्ख! झूठी शेखी बघारने का क्या मतलब है? बस, मैंने शत्रु (राम) की शक्ति और बुद्धि को पहचान लिया है।

विभीषण: यदि उसके जैसा कायर व्यक्ति है, तो उसे संसार में विजय और गौरव कहाँ मिल सकता है? दुष्ट रावण की बातें सुनकर दूत क्रोधित हो गया। मौका देखकर उसने पत्रिका निकाल ली। [और कहा--] यह पत्रिका श्री रामजी के छोटे भाई लक्ष्मण ने दी है। हे नाथ! इसे बचाकर रखें और अपनी छाती को ठंडा करें। रावण ने हँसकर उसे बायें हाथ से पकड़ लिया और अपने मन्त्रियों को बुलाकर उस मूर्ख को बचाने लगा।

[पत्रिका में लिखा था-] अरे मूर्ख! केवल बातों से लोगों को बहला-फुसलाकर अपने कुल को नष्ट और भ्रष्ट मत करो। श्री रामजी का विरोध करके विष्णु, ब्रह्मा और महेश की शरण में जाने पर भी तुम्हारा उद्धार नहीं होगा। या तो अपना अभिमान त्याग दो और अपने छोटे भाई विभीषण की तरह भगवान के चरण कमलों का भक्त बन जाओ। अरे दुष्ट! तुम अपने परिवार सहित श्री रामजी के बाण की अग्नि में पतंगा बनो (तुम दोनों को जो अच्छा लगे वही करो)।

जैसे ही रावण ने पत्रिका सुनी, वह मन में भयभीत हो गया, लेकिन चेहरे पर मुस्कान लाते हुए उसने सबको बताया और कहा- जैसे कोई धरती पर लेटकर हाथ से आकाश को पकड़ने की कोशिश करता है, उसी तरह यह भी छोटा तपस्वी (लक्ष्मण) बखान करता है।) हे प्रभो! अहंकारी स्वभाव को छोड़कर [इस पत्र में लिखी गई] हर बात को सत्य समझो। तुम क्रोध छोड़कर मेरी बात सुनो। हे नाथ! बेर श्री रामजी पर छोड़ दो।

यद्यपि श्री रघुवीर समस्त लोकों के स्वामी हैं, तथापि उनकी भावनाएँ अत्यंत कोमल हैं। मिलते ही भगवान तुम पर कृपा करेंगे और तुम्हारा एक भी अपराध अपने हृदय में नहीं रखेंगे। हे भगवान! जितना मैं कहता हूँ उतना करो. जब उसने (दूत ने) इसे जानकीजी को देने को कहा, तब दुष्ट रावण ने उसे लात मार दी।

वह भी (विभीषण की तरह) उनके चरणों में सिर झुकाकर उस स्थान पर गया, जहाँ दया के सागर श्री रघुनाथजी थे। प्रणाम करके उसने अपनी कथा कही और श्री रामजी की कृपा से उसका नाम (मुनिका रूप) पड़ा। [शिवजी कहते हैं--] हे भवानी! वह एक बुद्धिमान ऋषि था और अगस्त्य ऋषि के श्राप के कारण राक्षस बन गया था। श्री रामजी के चरणों की बार-बार वन्दना करके मुनि अपने आश्रम में चले गये।

यहां तीन दिन गुजर गए, लेकिन जमे हुए समुद्र ने विनम्रता स्वीकार नहीं की. तब श्री रामजी क्रोधपूर्वक बोले- भय बिन प्रीति नहीं होती। हे लक्ष्मण! धनुष-बाण लाओ, मैं अग्निबाण से समुद्र को सोख लूँगा। मूर्ख के प्रति नम्रता, कुटिल के प्रति प्रेम, स्वाभाविक रूप से कंजूस के लिए सुंदर नीति (उदारता का उपदेश),

मोह में फँसे हुए मनुष्य से ज्ञानी की कथा, अत्यन्त लोभी मनुष्य से वैराग्य का वर्णन, क्रोधी मनुष्य से लज्जा (शान्ति) की बात और कामी मनुष्य से भगवान की कथा, इन सबका एक ही फल होता है। जैसे कुदाली में बीज बोना (अर्थात् कुदाली में बीज बोने के समान यह सब व्यर्थ हो जाता है)। ऐसा कहकर श्रीरघुनाथजी ने धनुष चढ़ाया। लक्ष्मणजी को यह राय बहुत पसंद आयी। भगवान ने एक भयानक [अग्नि] बाण चलाया, जिससे समुद्र के हृदय में अग्नि की ज्वाला उत्पन्न हो गई।

लेकिन, सांप और मछलियों का समूह व्याकुल हो गए। जब समुद्र प्राणियों को जलाने लगा तो उन्होंने एक सोने का थाल अनेक रत्नों से भर दिया और अपना अभिमान त्यागकर ब्राह्मण का रूप धारण कर आये। [काकभुशुण्डिजी कहते हैं---] हे गरुड़जी! सुनो, कोई कितना ही सींचे, केला काटने पर ही फल देता है। नीच मनुष्य नम्रता से बात नहीं मानता, डांटने पर ही झुकता है (रास्ते पर आता है)।

समुद्र ने घबराकर भगवान के चरण पकड़ लिये और कहा- हे प्रभु! कृपया मेरे सभी दोषों को क्षमा करें। हे नाथ! आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी- इन

सभी की क्रिया प्रकृति में निहित है। आपकी प्रेरणा से माया ने इन्हें सृष्टि के लिये उत्पन्न किया है, ऐसा सभी शास्त्रों ने गाया है। जो अपने स्वामी की आज्ञा के अनुसार जीवन जीने में सुख पाता है।

भगवान ने मुझे शिक्षा (सज़ा) देकर अच्छा किया; लेकिन गरिमा (जीवन का स्वभाव) भी आपकी बनाई हुई है। ढोल, बर्बर, शूद्र, पशु और सतारी - ये सभी दण्ड के पात्र हैं। ईश्वर के तेज से मैं सूख जाऊंगा और सेना पार हो जाएगी, इसमें मुझे कोई अभिमान नहीं (मेरी गरिमा नहीं रहेगी)। तथापि ईश्वर की आज्ञा अपेल है अर्थात् आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया जा सकता, यही वेद गाते हैं। अब तुम्हें जो अच्छा लगेगा, मैं तुरंत कर दूँगा।

समुद्र के अत्यंत विनम्र वचन सुनकर दयालु श्री रामजी मुस्कुराये और बोले- हे पिताजी! वह उपाय बताओ जिससे वानर सेना पार हो जाये। समुद्र ने कहा--हे भगवन्! नील और नल दो वानर भाई हैं। बचपन में उन्हें एक ऋषि से आशीर्वाद मिला था। उनके स्पर्श मात्र से भारी पर्वत भी आपके प्रताप से समुद्र पर तैरने लगेंगे।

मैं भी ईश्वर की प्रभुता को अपने हृदय में रखकर अपनी शक्ति के अनुसार (जितना मुझसे हो सकेगा) सहायता करूँगा। हे नाथ! इस प्रकार समुद्र को बाँध दीजिये, जिससे आपकी सुन्दर कीर्ति तीनों लोकों में गायी जाय। इस बाण से मेरे उत्तरी तट पर रहने वाले पापी लोगों को मार डालो। समुद्र के मन की व्यथा सुनकर दयालु और रणधीर श्री रामजी ने तुरंत ही उसे परास्त कर दिया अर्थात् अपने बाण से उन दुष्टों को मार डाला।

श्री रामजी की महान शक्ति और वीरता को देखकर समुद्र प्रसन्न और प्रसन्न हुआ। उन्होंने उन दुष्टों का सारा चरित्र भगवान को सुनाया। फिर उनके चरणों की पूजा करके वह समुद्र की ओर चला गया। श्रीरघुनाथजी की स्तुति सुन्दर नृत्यों की दाता है। जो इसे आदरपूर्वक सुनेंगे, वे बिना किसी जहाज (अन्य साधन) के ही भवसागर से तर जायेंगे॥

श्री रामचरितमानस

छठा अध्याय

6 / 7. लंका काण्ड

शिव का सेवक, कामदेव का शत्रु, भव (जन्म और मृत्यु) के भय का नाश करने वाला, काल रूपी मतवाले हाथी के लिए सिंह के समान, योगियों का स्वामी (योगीश्वर), ज्ञान से जानने योग्य, गुणों का खजाना, अजेय, निर्गण, निर्विकार, भ्रम से परे, मैं ब्राह्मणों के एकमात्र देवता (रक्षक), पानी के बादल के समान सुंदर, कमल जैसी आंखों वाले, पृथ्वी के स्वामी (राजा) के रूप में सर्वोच्च भगवान श्री रामजी की पूजा करता हूं।

मैं काशीपि के स्वामी, कल्याण के कल्प-वक्ष, गुणों के भंडार, कलियुग के पाप-समूह के विनाशक, और कामदेव को भस्म करने वाले पार्वती के स्वामी, आदरणीय श्री शद्दुरजी को नमस्कार करता हूं। सज्जनों को परम दुर्लभ कैवल्यमुक्ति देने वाले और दुष्टों को दण्ड देने वाले मंगलकारी श्री शम्भु मेरा कल्याण करें।

प्रेम, निमेष, परमाणु, वर्ष, युग और कल्प जिनके भयंकर बाण हैं और काल जिनका धनुष है, हे मन! आप उन श्री रामजी की पूजा क्यों नहीं करते? समुद्र की बात सुनकर भगवान श्री राम ने अपने मंत्रियों को बुलाया और कहा- अब देर क्यों हो रही है? एक पुल तैयार करें जिस पर सेना उतर सके.

जाम्बवान ने हाथ जोड़कर कहा- हे सूर्यकुल के ध्वज (कीर्ति को बढ़ाने वाले) श्री रामजी! सुनना। हे नाथ! [सबसे बड़ा | वह पुल आपके नाम से ही है, जिस पर चढ़कर (जिसका आश्रय लेकर) मनुष्य संसार सागर से पार हो जाते हैं।

तो फिर इस छोटे से सागर को पार करने में कितना समय लगेगा? ,यह सुनकर पवन कुमार फिर से बोले। श्री हनुमानजी ने कहा- प्रभु का ऐश्वर्य भीषण बाढ़ (समुद्र की अग्नि) के समान है। यह पहले समुद्र के पानी को सोख लेता था।

हनुमानजी की यह असाधारण युक्ति सुनकर वानर उत्साहित हो गये और श्रीरघुनाथजी की ओर देखने लगे।

जाम्बवान ने नल-नील दोनों भाइयों को बुलाया और उन्हें सारा वृत्तान्त सुनाया [और कहा- श्री रामजी की महिमा को मन में स्मरण करके पुल तैयार करो, राम प्रताप कोई परिश्रम नहीं कर सकेंगे। फिर उन्होंने बंदरों के समूह को बुलाया और कहा- आप सभी लोग कृपया मेरी विनती सुनें। श्री रामजी के चरणकमलों को हृदय में धारण करो और सभी रीछ-वानरों को खेल खेलने दो।

(आप) भयंकर वानरों का समूह दौड़कर वृक्षों और पर्वतों के समूहों को उखाड़ फेंकता है। यह सुनकर बंदर और भालू दहाड़ने लगे और श्रीरघुनाथजी के प्रतापी दल [या प्रतापी दल श्री गयामजी] की जय बोलते हुए आगे बढ़ गए। खेल की तरह वे ऊंचे-ऊंचे पर्वतों और वृक्षों को उखाड़कर ले आते हैं और नल-नील को दे देते हैं। वे अच्छे पुल बनाते हैं।

वानर बड़े-बड़े पर्वत लाते हैं और नल-नील उन्हें गेंद की तरह ले जाते हैं। पुल की अत्यंत सुंदर संरचना देखकर कृपालु श्री रामजी ने मुस्कुराते हुए कहा- यह भूमि (यहाँ) अत्यंत सुंदर और उत्कृष्ट है. इसकी अपार महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता। मैं यहां भगवान शिव की स्थापना करूंगा. यह मेरे हृदय में एक महान संकल्प है।

श्री रामजी की बात सुनकर वानर राज सुग्रीव ने बहुत से दूत भेजे, जो सभी श्रेष्ठ ऋषियों को बुलाकर ले आये। शिवलिंद्र की स्थापना कर विधि-विधान से पूजा की गई। [तब भगवान ने कहा--] भगवान शिव के समान मुझे कोई प्रिय नहीं है।

जो शाहदार जी के प्यारे हैं, पर मेरे दुश्मन हैं; और जो भगवान शिव के शत्रु हैं और मेरे दास बनना चाहते हैं, वे पूरे कल्प तक घोर नरक में निवास करते हैं। जो लोग [मेरे द्वारा स्थापित] रामेश्वरजी के दर्शन करेंगे, वे अपना शरीर त्याग कर मेरे लोक में चले जायेंगे। और जो मनुष्य मिट्टी का जल लाकर उन्हें अर्पित करेगा, उसे सायुज्य मुक्ति प्राप्त होगी (अर्थात वह मेरे साथ एक हो जाएगा)।

[शिव। कहते हैं--]हे पार्वती! श्रीरघुनाथजी की परंपरा है कि वे समर्पण करने वालों पर सदैव प्रेम रखते हैं। चतुर नाला और नीला ने एक पुल बनाया। श्री रामजी की कृपा से उनकी (उज्ज्वल) कीर्ति सर्वत्र फैल गई। जिन पत्थरों को तुम तौलते हो और दूसरों को डुबाते हो, वे उस जहाज के समान हो गए हैं [जो स्वयं तैरता है और दूसरों को पार ले जाता है]।

इसमें न तो समुद्र की महिमा का वर्णन किया गया है, न पत्थरों के गुणों का, न वानरों के किसी पराक्रम का। श्री रघुवीर के तेज से समुद्र पर पत्थर भी तैरने लगे। जो लोग श्री रामजी को छोड़कर किसी अन्य प्रभु की पूजा करते हैं वे [निश्चित रूप से] मंदबुद्धि हैं। नल-नील पुल बनने से वह बहुत मजबूत हो गया। वह आशीर्वाद देखकर श्री रामजी को बहुत अच्छा लगा। सेना चली, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। योद्धा वानरों के समुदाय दहाड़ रहे हैं।

कपालु श्रीरघुनाथजी सेतुबंध के तट पर चढ़ गये और समुद्र के विस्तार को देखने लगे। जलचर जीवों के सभी समूह भगवान करुणाकंद (करुणा के स्रोत) के दर्शन के लिए उपस्थित हुए (जल पर आए)। वहाँ कई प्रकार के मगरमच्छ, मगरमच्छ, मछलियाँ और साँप थे, जिनमें से प्रत्येक के शरीर बड़े-बड़े थे। कुछ जानवर ऐसे भी थे जो उन्हें खा भी सकते थे। उन्हें भी किसी का डर था.

ये सब (शत्रुता भूलकर) भगवान के दर्शन कर रहे हैं और हटाए जाने पर भी नहीं हटते। सबके विचार. आनंदित हैं; सभी खुश हो गये. उनके अवरोध के कारण पानी दिखाई नहीं देता। भगवान का रूप देखकर वे सभी मग्न हो गये।

प्रभु श्री रामचन्द्रजी की आज्ञा पाकर सेना चली। वानर सेना की प्रचुरता (अत्यधिक संख्या) के बारे में कौन कह सकता है? पुल पर बहुत भीड़ थी, जिसके कारण कुछ वानर आकाश में उड़ने लगे। और अन्य लोग जलीय जीवों पर चढ़कर पार कर रहे हैं।

कृपालु रघुनाथ जी [और लक्ष्मण जी] दोनों भाई ऐसे विलक्षण पुरुष को देखकर हंसते हुए चले गए। _श्री रघुबीर ने अपनी सेना सहित समुद्र पार किया। बंदरों की भीड़ और उनके सेनापति कहीं नहीं जा सकते.

भगवान ने समुद्र के उस पार डेरा डाला और सभी वानरों को आदेश दिया कि वे जाकर सुंदर फल और मूल खाएँ। यह सुनते ही रीछ-वानर इधर-उधर भागने लगे। श्री रामजी के लिये ऋतु-ऋतु की गति को छोड़कर सभी वृक्ष बढ़े और फल देने लगे। बंदर और भालू मीठे फल खा रहे हैं, अपनी छाती हिला रहे हैं और पहाड़ों की चोटियाँ लड़के की ओर फेंक रहे हैं।

घूमते-घूमते जहां भी उन्हें कोई राक्षस मिलता है, सभी उसे घेर लेते हैं और खूब नाचते हैं, उसके नाक-कान को दांतों से काटते हैं, 'भगवान् का सुयश' कहते हैं और फिर उसे जाने देते हैं। जिन राक्षसों के नाक और कान काटे गये थे, उन्होंने

रावण को सारा समाचार सुनाया। जैसे ही रावण ने समुद्र पर पुल बनने की बात सुनी तो वह भयभीत हो गया और अपने दसों मुखों से बोला---

क्या तुमने सचमुच वननिधि, नीरानिधि, जलधि, सिन्धु, वारिष, तोयनिधि, कनपति, उदधि, पयोधि, नदीश को बाँध दिया? तब रावण उसकी चिन्ता को समझकर अपना भय भूलकर हँसता हुआ महलकोण के पास गया। [जब] मंदोदरी ने सुना कि भगवान श्री राम आए हैं और उन्होंने खेल में ही समुद्रों को बांध दिया है।

[तब] वह उसका हाथ पकड़कर अपने पति को अपने महल में ले आई और बहुत सुंदर वचन बोली। उसके चरणों पर सिर झुकाकर उसने अपना आँचल फैलाया और कहा-हे प्रिये! तुम क्रोध छोड़कर मेरी बात सुनो। हे नाथ! शत्रु उसी से करना चाहिए जो बुद्धि और बल से जीत सके। निश्चय ही आपमें और श्रीरघुनाथजी में वही अंतर है, जो जुगनू और सूर्य में है।

जो [विष्णु के रूप में | अति बलशाली मधु और केतभ [देवता] ने मार डाला और। वराह और नृसिंह के रूप में महान शूरवीरों दिति (हिरण्यक्ष और हिरण्यकशिपु) के पुत्रों को नष्ट कर दिया; जो [बौने के रूप में | जिसने बाली को बाँधा और सहस्नबाहु को मारा [परशुराम के रूप में] वह पृथ्वी का बोझ उतारने के लिए [राम के रूप में] अवतरित हुआ है

हे नाथ! उनका विरोध मत करो जिनके हाथ में समय, कर्म और जीव सब कुछ है।
[श्रीरामजीके | फिर चरण कमलों में सिर नवाकर (उन्हें समर्पित होकर) जानकीजी को राज्य सौंप दो और अपने पुत्र को राज्य देकर वन में जाकर श्री रघुनाथजी का भजन करो। हे नाथ! श्रीरघुनाथजी दीन-दुखियों पर दयालु हैं। शरण में जाने पर बाघ भी कुछ नहीं खाता। आपने वह सब कुछ किया है जो आपको करना चाहिए था। आपने देवताओं, राक्षसों और सभी अचलों पर विजय प्राप्त कर ली।

वह दस मुख वाला है! ऋषियों का कहना है कि राजा को चौथी अवस्था (बुढ़ापे) में वन में जाना चाहिए। चाहना। हे भगवान! वहाँ (जंगल में) तुम्हें उसकी पूजा करनी चाहिए जो ब्रह्मांड का निर्माता, पालनकर्ता और संहारक है। हे नाथ. वस्तुओं के प्रति सारा स्नेह छोड़कर उस भगवान की पूजा करो जो शरणागत लोगों से प्रेम करता है। जिनके लिए श्रेष्ठ मुनि साधन करते हैं और राजा राज्य छोड़कर वैरागी हो जाते हैं---

वही कोसलाधीष श्रीरघुनाथजी आप पर दया करने आये हैं। ओ प्यारे! यदि तुम मेरी शिक्षाओं का पालन करोगे तो तुम्हारी अत्यंत पवित्र और सुन्दर कीर्ति तीनों लोकों में फैल जायेगी। ऐसा कहकर आंखों में आंसू भरकर और पति के पैर पकड़कर कांपते शरीर से मंदोदरी बोली- हे प्रभु! श्रीरघुनाथजी से प्रार्थना करो, जिससे मेरा विवाह अटल रहे.

तब रावण ने मंदोदरी को उठा लिया और उस दुष्ट ने उस पर कब्ज़ा कर लिया। प्रभुता कहने लगी-हे प्रिये! सुनो, तुम व्यर्थ ही डरते हो। बताओ, संसार में मेरे समान योद्धा कौन है? मैंने अपनी भुजाओं के बल से वरुण, कुबेर, पवन, यमराज आदि सभी दिक्पालों तथा काल को भी जीत लिया है। देवता, दानव और मनुष्य सभी मेरे वश में हैं। फिर आपके मन में यह भय क्यों उत्पन्न हुआ?

मंदोदरी ने उसे बहुत प्रकार से समझाया [परन्तु रावण ने उसकी एक भी बात न मानी] और वह फिर दरबार में जाकर बैठ गया। मंदोदरी को मन ही मन यह अनुभव हुआ कि उसका पति काल के वश में होकर अहंकारी हो गया है। बैठक में आकर उन्होंने मंत्रियों से पूछा कि उन्हें शत्रु से कैसे लड़ना होगा। मंत्रीगण कहने लगे-हे राक्षसराज! हाय भगवान् ! सुनो, जो तुम बार-बार पूछते हो।

मुझे बताओ, ऐसा कौन सा बड़ा डर है जिस पर विचार किया जाना चाहिए? (इसमें डरने की क्या बात है? मनुष्य और वानर-भालू तो हमारे भोजन की सामग्री हैं। सबकी बातें सुनकर (रावण का पुत्र) हाथ जोड़कर कहने लगा- हे भगवन्! नीति के विरुद्ध कुछ नहीं करना चाहिए, बहुत कम हैं मंत्रियों के बीच बुद्धि है.

ये सब मूर्ख चापलूसी कर रहे हैं। हे नाथ! यह बकवास पर्याप्त नहीं होगी. केवल एक बंदर समुद्र पार करके आया था। सभी लोग आज भी उनके चरित्र को मन ही मन गाते (स्मरण) करते हैं। क्या उस समय आपमें से कोई भूखा नहीं था? [बंदर तो आपका भोजन हैं, फिर] नगर को जलाते समय आपने उन्हें पकड़ कर क्यों नहीं खाया? इन मन्त्रियों ने स्वामी (आप) को ऐसी सलाह दी है जो सुनने में तो अच्छी है परन्तु भविष्य में दुःख देने वाली है।

जो खेलते-खेलते समुद्र पार कर गया और जो अपनी सेना सहित सुबेल पर्वत पर उतरा। अरे भइया। बताओ, क्या वह मनुष्य है जिसे तुम कहते हो कि हम खायेंगे? सब गाल फुलाकर (पागलों की तरह) बातें कर रहे हैं।

हे तत्! मेरी बातें बड़े आदर से सुनो। मुझे दिल से कायर मत समझो. इस दुनिया में ऐसे कई लोग हैं, जो सिर्फ मीठी बातें ही सुनते और कहते हैं। भगवान! सुनने

में पा लेकिन [परिणाम में | अत्यंत हितकारी वचन सुनने और कहने वाले लोग बहुत कम होते हैं। नीति सुनो, [इसके अनुसार] पहले एक दूत भेजो, और [फिर]। कृपया इसे सीता को देकर श्री रामजी से मिलें।

यदि वे खत्री को ढूंढ़कर लौटें तो [अनावश्यक विवाद न खड़ा करें। अन्यथा (यदि तू न फिरे) हे पिता! तुम सामने रणभूमि में उनसे डटकर मुकाबला करो।

हे प्रभो! यदि तुम मेरी इस सलाह का पालन करोगे तो तुम्हें इस संसार में दोनों प्रकार से सौभाग्य प्राप्त होगा। रावण क्रोधित होकर अपने पुत्र से बोला- अरे मूर्ख! तुम्हें ऐसी बुद्धि किसने सिखाई? क्या इस समय आपके हृदय में संदेह (डर) महसूस हो रहा है? हे वत्स तुम बाँस की जड़ों में फँस गये (तुम मेरे वंश के अनुकूल या अनुकूल नहीं थे)। अपने पिता के अत्यंत कठोर एवं कठोर वचन सुनकर प्रहस्त ये कठोर वचन कहता हुआ अपने घर चला गया।

अच्छी सलाह आप पर कैसे असर नहीं करती (कैसे यह आप पर असर नहीं करती), जैसे दवा उस [रोगी] पर असर नहीं करती जो मौत के वश में है? शाम होने का समय जानकर रावण अपनी बीस भुजाओं को देखता हुआ महल की ओर चल दिया। लंका की चोटी पर एक बहुत ही विचित्र महल था। वहां नाच-गाने का अखाड़ा होता था. रावण उस महल में जाकर बैठ गया। यमदूत उसकी स्तुति गाने लगे।

ताल (करतल), पखावज (मृदंग) और वीणा बजाई जा रही है। अप्सराएँ निपुण होती हैं नाच रहे हैं नाच रहे हैं. वह सैकड़ों इन्द्रों के समान सुख भोगता रहता है। यद्यपि (श्री रामजी जैसा) अत्यंत शक्तिशाली शत्रु उनके सिर पर है, फिर भी उन्हें न तो चिंता है और न ही भय (|इधर श्री रघुवीर सेना की एक बड़ी भीड़ के साथ सुबेल पर्वत पर उतरे। वहां एक बहुत ऊंचा, सबसे सुंदर, समतल भाग है पहाड़ की और विशेषकर चमकदार चोटी देखने के बाद--

वहाँ लक्ष्मणजी के स्तन हैं। कोमल पत्तों और सुंदर फूलों को अपने हाथों से सजाकर बिछाया। उस पर सुन्दर एवं कोमल मृगछाला बिछी हुई थी। कल्याणकारी श्री रामजी उसी आसन पर विराजमान थे। भगवान श्री राम ने अपना सिर वानर राज सुग्रीव की गोद में रख दिया है। उनके बायीं ओर धनुष है और दायीं ओर तरकश [खाखा] है। वे अपने दोनों चरण कमलों से अपने बाणों को उन्नत कर रहे हैं। विभीषण जी मेरे कानों के पास आकर उपदेश दे रहे हैं।

इस प्रकार श्री रामजी कृपा, रूप और गुणों के धाम में निवास करते हैं। वे मनुष्य धन्य हैं जो सदैव इस ध्यान में लगे रहते हैं। भगवान श्रीराम ने पूर्व दिशा की ओर

देखते हुए चंद्रमा को उगते हुए देखा। फिर वे सबको बताते हैं. चश्मे को देखो. शेर की तरह कितना निडर. वह सिंह अंधकार रूपी हाथी का मस्तक विदीर्ण करके आकाशरूपी आकाश में निर्भय होकर विचरण कर रहा है।

आकाश में बिखरे हुए तारे मोतियों के समान हैं, जो रात्रि रूपी सुन्दर स्त्री का श्रृंगार हैं। प्रभु ने कहा--भाइयो! चाँद में कालापन क्या है? अपनी बुद्धि के अनुसार कहो। सुग्रीव ने कहा--हे रघुनाथजी! सुनना। चंद्रमा पर पृथ्वी की छाया दिखाई देती है। किसी ने कहा- चंद्रमा को राहु ने मार डाला। उसी चोट का काला दाग दिल पर है.

कोई कहता है--जब ब्राह्मणे [कामदेव की पत्नी | उन्होंने रतिका मुख की रचना की, फिर चंद्रमा का सार निकाला [जिससे रतिका मुख तो बहुत सुंदर हो गया, लेकिन चंद्रमा के हृदय में एक छेद हो गया। चंद्रमा के हृदय में भी वही छिद्र मौजूद है, जिससे उसमें आकाश की काली छाया दिखाई देती है। प्रभु श्री रामजी ने कहा- विष चंद्रमा का अत्यंत प्रिय भाई है.

इस कारण उसने जहर को अपने हृदय में स्थान दे लिया है। वह अपनी विषैली किरणें फैलाकर वियुक्त नर-नारी को जलाता रहता है। हनुमानजी ने कहा--हे प्रभु! सुनो, चाँद तुम्हारा प्रिय दास है। चंद्रमा के हृदय में आपकी सुंदर श्यामल छवि विराजमान है, चंद्रमा में भी अंधकार का वही प्रतिबिम्ब विद्यमान है। पवनपुत्र हनुमानजी की बात सुनकर सुजान श्रीगमजी हंस पड़े। तब कपनिधान प्रभु ने दक्षिण की ओर देखकर कहा-

ये विभीषण हैं! दक्षिण की ओर देखो, कैसे बादल उमड़-घुमड़ रहे हैं और बिजली चमक रही है। भयंकर बादल मधुर (हल्का) गरज रहा है। कहीं तेज ओलावृष्टि न हो जाए। विभीषण ने कहा- हे कपालू! सुनो, यह न बिजली है, न बादल है। लंका की चोटी पर एक महल है। दशग्रीव रावण वहां नृत्य-गान का अखाड़ा देख रहा है।

रावण अपने सिर पर मेघदम्बर (बादलों के समान विशाल एवं काला) छत्र धारण किये हुए है। मानो बादलों में बहुत काला बादल हो। हे प्रभु, मंदोदरी के कानों में जो कर्णफूल बज रहे हैं! मानो बिजली चमक रही हो. हे देवताओं के राजा! सुनो, अनोखी लय और मृदंग बज रही है। वह मधुर [गर्जन] ध्वनि है। रावण के अभिमान को समझकर भगवान मुस्कुराये। उसने अपना धनुष उठाया और उस पर तीर चलाया,

और उसी बांस से उसने [रावण का] छत्र-मुकुट और [मंदोदरी के] कान के फूल काट दिए। सबके देखते-देखते वे भूमि पर गिर पड़े, परन्तु इसका रहस्य

(कारण) कोई न जानता था। उस महान रस-भंग को देखकर रावण की सारी सभा भयभीत हो गयी।

न तो कोई भूकंप आया, न ही बहुत तेज़ हवा (तूफान) आई। न ही आंखों से कोई काला या सफेद देखा जा सकता है। [फिर ये छत्र, मुकुट और कर्णफूल कटकर कैसे गिर गये?] सब लोग मन में सोच रहे हैं कि यह तो बड़ा भयंकर अपशकुन हो गया।

भयभीत सभा को देखकर रावण ने हँसते हुए ये शब्द कहे- जिसके मस्तक का गिरना सदैव शुभ रहा हो, उसके लिए मुकुट का गिरना क्या अपशकुन है? अपने-अपने घर जाकर सो जाओ (डरने की कोई बात नहीं है)। तब सब लोग सिर झुकाकर घर चले गए। जब से कर्णफूल पृथ्वी पर गिरा तब से मंदोदरी के मन में यही विचार बस गये।

वह आँखों में जल भरकर और हाथ जोड़कर (रावण से) कहने लगी- हे प्राणनाथ! मेरी विनती सुनो. ओ प्यारे! श्री राम का विरोध छोड़ो। उसे मनुष्य समझकर मन में जिद न रखें। मेरे इन शब्दों पर विश्वास करो कि वे रघुकुल के मुखिया श्री रामचन्द्रजी विश्वरूप हैं - (यह सम्पूर्ण जगत् उन्हीं का स्वरूप है) वेद जिनके सार में लोकों की कल्पना की गयी है।

पाताल (अंडरवर्ल्ड) सार्वभौमिक भगवान का पैर है, ब्रह्मलोक अन्य सभी (मध्य) दुनियाओं का सिर, आराम (स्थान) है जिसमें अन्य अलग-अलग शयनकक्ष हैं। भौहद्दर काल भुकुटिसंचलन (भौहों का हिलना) वाला है। सूर्य नेत्र है, बादलों का समूह बाल है। धीनीकुमार जिनकी नाक, रात और दिन अनंत निमेष (पलकें झपकाना और खुलना) हैं। दसों दिशाएँ कान हैं, ऐसा वेद कहते हैं। वायु श्वास है और वेदों की अपनी वाणी है।

जिनके होंठ लालची होते हैं, उनके यमराज के दांत भयानक होते हैं। माया हँसी है, दिक्पाल भुजाएँ हैं। अग्नि मुख है, वरुण जिहवा है। जिसका प्रयत्न (कार्य) ही उत्पत्ति, पालन और विनाश है। अठारह प्रकार के असंख्य पौधों में बाल हैं, पर्वत हड्डियाँ हैं, नदियाँ नाड़ियों के जाल हैं, समुद्र पेट है और नरक निचली इन्द्रियाँ हैं। इस प्रकार ईश्वर सर्वव्यापक है, इससे अधिक और क्या कल्पना की जाय?

शिव अहंकार हैं, ब्रहमा बुद्धि हैं, चंद्रमा मन हैं और महान (विष्णु) मन हैं। उसी रूप में भगवान श्री राम मानव रूप में विराजमान हैं। वह जीवन का स्वामी है! सुनो, ऐसा विचार करके भगवान से बैर छोड़कर श्री रघुवीर के चरणों में प्रेम करो, जिससे मेरा सुहाग नष्ट न हो।

रावण अपनी पत्नी की बात सुनकर खूब हँसा [और बोला--] अहो ! मोह (अज्ञान) की महिमा बहुत प्रबल है! सत्रिक का स्वभाव : यह सच है कि उसके हृदय में आठ दोष सदैव रहते हैं - साहस, झूठ, छल, माया (कपट), भय (भीरूता), अविवेक (मूर्खता), अपवित्रता और क्रूरता। आपने शत्रु का सम्पूर्ण रूप गाया और उसका महान् भय मुझे बताया।

हे प्रिये! वह सब (यह सुन्दर संसार) क्रोध के कारण ही मेरे वश में है। आपकी कृपा से मुझे यह बात अब समझ में आ गयी। अरे डार्लिंग, मैं तुम्हारी चतुराई समझ गया। तुम्हें ये (इसी बहाने) पसंद है. मेरे प्रभुत्व की घोषणा. हे मृगनयनी! आपकी बातें बड़ी रहस्यमय हैं, समझने पर सुख देती हैं और सुनने पर भय दूर कर देती हैं। मंदोदरी ने मन में निश्चय किया कि काल के कारण मेरा पति मतिश्रमी हो गया है।

इस प्रकार [अज्ञानतावश] अनेक परिहास करता हुआ रावण प्रातःकाल उठा। तब स्वभाव से निडर और अहंकार में अंधा लंकापति सभा में गया। यद्यपि बादल अमृततुल्य जल बरसाते हैं, फिर भी गन्ना नहीं पनपता। उसी प्रकार ब्रह्मा के समान ज्ञानी गुरु मिल जाने पर भी मूर्ख के हृदय में चेतना (ज्ञान) नहीं होती।

इधर (सुबेल पर्वत पर) श्रीरघुनाथजी ने प्रातःकाल उठकर सभी मंत्रियों को बुलाकर सलाह मांगी. जल्दी बताओ, अब क्या उपाय चाहिए? जाम्बवान ने श्रीरामजी के चरणों में सिर झुकाकर कहा।

हे सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाले), हे सबके हृदय में निवास करने वाले (अंतर्यामी)! हे बुद्धि, बल, तेज, धर्म और गुणों की मात्रा सुनो। मैं अपनी बुद्धि के अनुसार सुझाव देता हूं कि बालिकुमार अंगद को दूत बनाकर भेजना चाहिए। यह अच्छी सलाह सभी को पसंद आई।

कृपालु भगवान राम ने अंगद से कहा- हे बल, बुद्धि और गुणों के धाम बालि के पुत्र! हे पिता! तुम मेरे काम के लिये लंका जाओ।

मैं तुम्हें बहुत समझाकर क्या कह सकता हूँ? मैं जानता हूं, तुम बहुत होशियार हो. शत्रु से वही बात करें जो हमारे काम आये और उसकी भलाई हो। अंगदजी सिर झुकाकर और उनके चरणों की वन्दना करके खड़े हो गये [और बोले--] प्रभु श्री रामजी! आप जिस पर कृपा कर दें वह गुणों का सागर हो जाता है। स्वामी के सभी कार्य स्वयं सिद्ध हैं; यह प्रभु ही है जिसने मुझे सम्मान दिया है [जो मुझे

अपने काम पर भेज रहा है]। यह सोचकर राजकुमार अंगद का हृदय प्रसन्न और शरीर पुलकित हो गया।

अंगद चरणों की वन्दना करके और भगवान की महिमा को हृदय में रखकर सबको प्रणाम करके चले। बालि का वीर पुत्र, जिसके हृदय में भगवान प्रताप हैं, स्वाभाविक रूप से निडर है। उन्होंने अंगद को लात मार दी। अंगदने [उसी] ने उसका पैर पकड़ लिया, उसे मरोड़ दिया और उसे जमीन पर पटक दिया (उसकी हत्या कर दी)। राक्षसों के समूह विशाल योद्धाओं को देखकर जहाँ-तहाँ भाग गये, वे डर गये और पुकार भी न सके।

वे एक-दूसरे को सच नहीं बताते, इसे उसकी (रावण के पुत्र) हत्या समझकर सभी चुप रहते हैं। [रावण के पुत्र की मृत्यु जानकर तथा राक्षसों को भय से भागते देख। सारे नगर में हल्ला मच गया कि वही वानर जिसने लंका को जलाया था, फिर आ गया है। सभी बहुत भयभीत हो गये और सोचने लगे कि न जाने विधाता आगे क्या करेंगे। वह बिना पूछे ही अंगद को रावण के दरबार का रास्ता बता देते हैं। जिसे देखो डर के मारे सूख जाता है.

श्री रामजी के चरणकमलों का स्मरण करते हुए अंगद रावण के दरबार के द्वार पर गये। और वह धैर्यवान, वीर और बलवान राशि अंगद सिंह की भाँति गर्व से इधर-उधर देखने लगा। उसने तुरन्त एक राक्षस को भेजकर रावण को अपने आगमन की सूचना दी। यह सुनकर रावण हँसा और बोला, “बुलाओ, देखूँ बन्दर कहाँ है।”

आज्ञा पाकर बहुत से दूत दौड़े और उन्होंने अंगद को बुलाया, जो वानरों में हाथी के समान थे। अंगद ने देखा कि रावण कणित (जीवित) कालिख के पर्वत के समान बैठा हुआ है! मुंह, नाक, आंख और कान पहाड़ की गुफाओं और कंदराओं के समान हैं।

बाँके का अत्यंत बलशाली और वीर पुत्र अंगद सभा में गया तो उसे मन में तनिक भी संकोच नहीं हुआ। अंगद को देखते ही सभी सदस्य खड़े हो गये। यह देखकर रावण मन ही मन बहुत क्रोधित हुआ।

जैसे सिंह मतवाले हाथियों के झुंड में निर्भय होकर चला जाता है, उसी प्रकार वह (निर्भय) हृदय में श्री रामजी की महिमा का स्मरण करके सिर झुकाकर सभा में बैठ गया। रावण ने कहा--अरे वानर! आप कौन हैं ? [अंगद ने कहा-] हे दशग्रीव!

मैं श्री रघुवीर का दूत हूँ। मेरी और आपके पिता की दोस्ती थी. इसलिये भाई! मैं आपके कल्याण के लिये ही आया हूँ।

आपका परिवार अच्छा है, आप पुलस्त्य ऋषि के पौत्र हैं। तुमने अनेक प्रकार से भगवान शिव तथा ब्रह्माजी की पूजा की है। उनसे वरदान प्राप्त कर सारे कार्य सिद्ध किये। आपने लोकपालों तथा सभी राजाओं को जीत लिया है। तू काम या मोहवश जगत् की प्यारी सीताजी को हरण कर लाया है। अब तुम मेरे उत्तम वचन (मेरी हितकारी सलाह) सुनो! [उसकी बात मानने से] प्रभु श्री राम तुम्हारे सभी अपराध क्षमा कर देंगे।

तथा 'हे शरणागति के अनुयायी रघुवंश शिरोमणि श्री रामजी! मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो. [इस प्रकार प्रार्थना करें.] पुकार सुनते ही भगवान तुम्हें निर्भय कर देंगे। रावण ने कहा--]हे वानर बालकों! ध्यान से बोलो! बेवकूफ़ ! क्या तुम मुझ देवताओं के शत्रु को नहीं जानते? अरे भाई! मुझे अपना नाम और अपने पिता का नाम बताओ. किस रिश्ते को कोई दोस्ती मानता है?

अंगद ने कहा-- मेरा नाम अंगद है, मैं कन्यापुत्र हूं। क्या आप उससे कभी मिले थे? जैसे ही रावण ने अंगद की बात सुनी तो वह थोड़ा सकपका गया [और बोला--] हाँ, मैं जानता था (मुझे याद आया), बाली नाम का एक वानर था। हे अंगद! क्या आप लड़की लड़के हैं? हे विनाशक! तूने अपने कुल के लिए अग्नि रूप में जन्म लिया - बाँस! इसे गर्भ में ही नष्ट क्यों नहीं कर दिया गया? तुम्हारा जन्म व्यर्थ हुआ; आप अपने ही मुख से तपस्वियों के दूत कहलाये!

अब बालिकी कुशल, बताओ वह (इन दिनों) कहां है? तब अंगद ने हंसकर कहा- दस (कुछ) दिन बीत जाने पर स्वयं बालि के पास जाकर अपने मित्र को हृदय से लगाओ और उससे उसका हाल पूछो। वह तुम्हें वह सब कुछ सुनाएगा जो शोरारामजी का विरोध करने पर होता है। अरे मूर्ख! सुनो, भेदभाव उसी के मन पर असर कर सकता है जिसके हृदय में श्री रघुवीर नहीं हैं।

यह सच है, मैं कुल का नाश करने वाला हूँ और हे रावण! आप कुल के रक्षक हैं. ऐसी बात तो अंधा भी नहीं कहता, तुम्हारे पास बीस आंखें और बीस कान हैं! शिव, ब्रह्मा आदि देवताओं का दूत बनकर और ऋषियों का समुदाय जिनके चरणों की सेवा करना चाहता है, मैंने उनके कुल को डुबा दिया है? अरे, इतनी बुद्धि होते हुए भी तुम्हारा कलेजा नहीं फटता?

वानर (अंगद) के कठोर वचन सुनकर रावण ने आँखें तरेरते हुए कहा- अरे दुष्ट! मैं आपके सभी कठोर शब्दों को इसलिए सहन कर रहा हूं क्योंकि मैं नैतिकता को

जानो और धर्म (मैं उनकी रक्षा कर रहा हूं)। अंगद ने कहा- मैंने भी आपकी धर्मनिष्ठा के विषय में सुना है। [वह] तुमने दूसरी औरत से चोरी की है! और दूत की रक्षा की बात मैं ने अपनी आंखों से देखी। ऐसे धर्म के व्रतों का पालन करने वाले तुम डूबकर नहीं मरते!

अपनी बहन को बिना नाक-कान के देखकर तुमने उसका धर्म समझकर ही उसे माफ कर दिया। आपकी धार्मिकता प्रसिद्ध है. मैं भी बहुत भाग्यशाली हूं कि मुझे आपके दर्शन हुए. [रावण ने कहा--हे निर्जीव प्राणी वानर! व्यर्थ बकवाद मत करो; अरे मूर्ख! मेरी बाहों। तो | देखना। ये सब हैं लोकपालों का विशाल समूह. राहु बल के रूप में चंद्रमा को ग्रसने के लिए है।

तब [तुमने सुना होगा] आकाशरूपी तालाब में मेरे भुजाओं के कमलों पर स्थित होकर भगवान शिव सहित कैलाश को हंस के समान शोभा प्राप्त हुई। हे अंगद! सुनना; बताओ, तुम्हारी सेना में ऐसा कौन योद्धा है जो मुझसे युद्ध कर सके? तुम्हारा स्वामी वृक्ष से वियोग के कारण शक्तिहीन हो रहा है। वहीं उसका छोटा भाई उसके दुख से दुखी और उदास है.

आप और सुग्रीव दोनों नदी तट के वृक्ष हैं। [वहां] मेरा छोटा भाई विभीषण है, [इसलिए] वह भी बहुत डरपोक है। मंत्री जाम्बवान बहुत बूढ़े हैं. अब वह युद्ध में कैसे उठ सकता है? नल और नील को विद्या आती है (उन्हें युद्ध करना कैसे आता है?) हां, एक अत्यंत बलवान वानर अवश्य है, जो पहले भी आया था और जिसने लंका जला दी थी। ये वचन सुनकर बाली के पुत्र अंगद ने कहा-

हे राक्षसराज! सच बताओ! क्या सचमुच उस बंदर ने आपका शहर जला दिया? रावण. जैसे जगद्धिजयी योद्धा की नगरी को एक छोटे वानर ने जला दिया था। ऐसी बातें कौन सुनेगा और उन्हें सत्य कहेगा? हे रावण! आपने जिसे महान योद्धा कहकर स्तुति की है, वह तो सुग्रीव का एक छोटा-सा धावक है। वह बहुत चलता है, बहादुर नहीं है। हमने उसे केबल समाचार प्राप्त करने के लिए भेजा था।

क्या सचमुच उस बंदर ने भगवान की अनुमति के बिना आपके नगर को जला दिया था? ऐसा लगता है कि इसी डर से वह सुग्रीव के पास नहीं लौटा और कहीं छिप गया! हे रावण! आप सब सच कहते हैं, मेरी बात सुनकर जरा भी क्रोध नहीं आता। सचमुच, हमारी सेना में कोई भी ऐसा नहीं है जो तुमसे लड़ने के योग्य हो। प्यार और स्नेह अपने बराबर वालों को ही देना चाहिए, यही नीति है। यदि कोई सिंह मेढकों से भी आगे निकल जाए तो क्या कोई उसे अच्छा कहेगा?

यद्यपि तुम्हें मारने में श्री रामजी की कमी है और यह बहुत बड़ा दोष भी है, फिर भी रावण तो है! सुनो, क्षत्रिय जाति का क्रोध बड़ा कठिन है। वक्रोक्ति धनुष से शब्दबाण चलाकर अंगद ने शत्रु का हृदय जला डाला। वीर रावण उन बाणों को सर्पों से प्रतिशोधात्मक ढंग से चलाता हुआ प्रतीत हो रहा था। तब रावण ने हंसकर कहा- बंदर का एक बड़ा गुण है कि जो उसे अपने पास रखता है, उसका वह अनेक प्रकार से कल्याण करने का प्रयास करता है।

वह बंदर धन्य है जो अपने स्वामी के लिए हर जगह नाचता है। नाच-कूद कर. लोगों को मारकर वह अपने मालिक के हितों की पूर्ति करता है। यह उनका धर्म पर प्रभुत्व है। हे अंगद! आपकी जाति अपने स्वामियों के प्रति समर्पित है [फिर] आप इस प्रकार अपने स्वामी के गुणों की प्रशंसा कैसे नहीं कर सकते? मैं सद्गुणों का प्रशंसक (गुणों का आदर करने वाला) और बहुत बुद्धिमान (समझदार) हूं, इसीलिए मैं तुम्हारी बकवास की बातों पर ध्यान नहीं देता।

अंगद ने कहा- हनुमान ने मुझे आपके वास्तविक गुणों के बारे में बताया था। उसने अशोकवन को नष्ट कर दिया, आपके पुत्र को मार डाला और शहर को जला दिया। फिर भी [आपकी कृतज्ञता के कारण आपने सोचा कि] उसने आपको कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है। हे दशग्रीव, आपके सुन्दर स्वरूप का विचार करते हुए! मैंने कुछ साहसिक कार्य किया है. हनुमान ने आकर जो कुछ कहा था, उसे देखकर मैंने प्रत्यक्ष देखा कि तुम्हें न लज्जा है, न क्रोध है, न क्षोभ है।

[रावण ने कहा--] हे वानर! जब तुम्हारे पास ऐसी बुद्धि है तभी तो तुमने अपने पिता को खा लिया है। ऐसे वचन कहकर रावण हँसा। अंगद ने कहा, "मैं अपने पिता को खाने के बाद तुम्हें भी खा लेता।" लेकिन मुझे तुरंत कुछ और ही समझ आया! ॥हे नीच अभिमानी मनुष्य! मैं कन्या की शुद्ध प्रसिद्धि का कारण जानकर तुम्हें नहीं मारता। रावण! बताओ दुनिया में कितने रावण हैं? जितने रावणों के बारे में मैंने अपने कानों से सुना है, उन्हें सुनो -

एक रावण यज्ञ जीतने के लिए पाताल लोक गया था, तब बच्चों ने उसे घोड़े के अस्तबल में बाँध दिया था। बच्चे जब-तब उससे खेलते और मारते थे। बालिको को दया आ गई और फिर उसे छोड़ दिया। तभी एक रावणक सहखाबाहू ने उसे देखा, और उसने दौड़कर उसे एक विशेष प्रकार के (अजीब) जानवर की तरह पकड़ लिया। वह उसे शो के लिए घर ले आए। तब पुलरस्त्य मुनि ने जाकर उसे बचाया।

मुझे रावण के बारे में बात करने में बहुत झिझक होती है - वह एक लड़की की बाहों में [लंबे समय तक] रहता था। आप इनमें से कौन से रावण हैं? परेशान होना बंद करो और सच बताओ. रावण ने कहा--अरे मूर्ख! सुनो, मैं वही बलशाली रावण हूं जिसकी शस्त्र विद्या को कैलाश पर्वत जानता है। जिनकी वीरता को उमापति महादेवजी जानते हैं, जिनकी मैं मस्तकरूपी पुष्प चढ़ाकर पूजा करता हूँ।

शरबत वाले कमल हमारे हैं. मैंने असंख्य बार ऊपर-नीचे हाथ चलाकर त्रिपुरारि शिव की आराधना की है। अरे मूर्ख! मेरी भुजाओं की शक्ति दिकपाल को ज्ञात है, जिसके हृदय में वह आज भी चुभती है। मेरी छाती की कठोरता को दिग्गज (दिशाओं के हाथी) जानते हैं। जिनके भयानक दाँत, जब भी मैं जाकर उनसे बलपूर्वक लड़ता, कभी मेरी छाती में नहीं टूटते (अपना निशान भी नहीं बना पाते), बल्कि मेरी छाती से छूते ही मूली की तरह टूट जाते।

आप उस (महान और संसारी) रावण (मुझ) को छोटा कहते हैं और मनुष्य की प्रशंसा करते हैं? अरे दुष्ट, असभ्य, नीच बंदर! अब मुझे आपके ज्ञान का पता चल गया है. रावण के ये वचन सुनकर अंगद क्रोधित होकर बोले- अरे हे नीच अभिमानी! सोच-समझकर बोलें (ध्यान से सोचें)। जिसकी कुल्हाड़ी सहखबाहु की भुजाओं रूपी विशाल वन को जलाने के लिए अग्नि के समान थी,

कुल्हाड़ी रूपी समुद्र की तेज धारा में अनगिनत राजा कई बार डूब गये, उन्हें देखते ही परशुरामजी का अहंकार भाग गया, हे अभागे दशाशीष! वे कैसे इंसान हैं? ॥तुम मूर्ख और हठीले क्यों हो? क्या श्री रामचन्द्रजी मनुष्य हैं? क्या कामदेव भी धनुर्धर हैं?

और गद्दाजी कौन सी नदी है? कामधेनु कौन सा जानवर है? और कल्पवृक्ष कौन सा वृक्ष है? भोजन किस प्रकार का दान है? और अमृत क्या है? गरुड़जी कौन सा पक्षी हैं? शेषजी, क्या वह साँप है? हे रावण! चिंतामणि किस प्रकार का पत्थर है? अरे मूर्ख! सुनो, वैकुण्ठ कैसा संसार है? और श्रीरघुनाथजी की अखण्ड भक्ति से क्या लाभ है?

तू क्यों दुष्ट है जो अपनी सेना सहित तुझे बदनाम करके, अशोकवन को नष्ट करके, नगर को जलाकर तथा तेरे पुत्र को मारकर लौट आया है? वह हनुमानजी कैसे वानर हैं। अरे दुष्ट! यदि तुम श्रीगमजी के शत्रु बनोगे तो ब्रह्मा और रुद्र भी तुम्हें नहीं बचा सकेंगे।

अरे मूर्ख! व्यर्थ घमंड मत करो. यदि तुम श्री रामजी से युद्ध करोगे तो तुम्हारी हालत ऐसी होगी कि श्री रामजी के बाण लगते ही तुम्हारे सिर वानरों के सामने पृथ्वी पर गिर जायेंगे और रीछ-वानर उन गेंदों की भाँति तुम्हारे अनेक सिरों से खेलेंगे। जब युद्ध में श्रीरघुनाथजी क्रोधित होंगे और उनके बहुत से अत्यंत तीखे बाण छूटेंगे,

तो क्या तुम्हारा ऐसा गाल स्वीकार्य होगा? ऐसा सोचकर उदार (दयालु) श्री रामजी का भजन करो। अंगद के ये वचन सुनकर रावण बहुत क्रोधित हुआ। भड़कती आग में मानो घी डाल दिया गया हो. [उसने कहा--अरे मूर्ख!] कुम्भकर्ण - वह मेरा भाई है, इन्द्र का शत्रु प्रसिद्ध मेघनाद मेरा पुत्र है। और तुमने तो मेरी वीरता का समाचार भी नहीं सुना कि मैंने समस्त जड़-चेतन जगत् को जीत लिया है!

दुष्टों ने वानरों की सहायता से राम ने समुद्र को बाँध दिया; यही उसका प्रभुत्व है. कई पक्षी भी समुद्र पार करते हैं। लेकिन यह उन सभी को बहादुर नहीं बनाता है। अरे मूर्ख युद्ध! अरे दुष्ट! मैं दिकपालों से जल भर लाया और आप मुझे एक राजा की शुभ कामनाएँ बताइये! यदि आपका स्वामी, जिसकी प्रशंसा आप बार-बार करते रहे हैं, युद्ध में लड़ने वाला योद्धा है -

तो फिर वह दूत क्यों भेजता है? जब वह अपने शत्रु से प्रेम करता है तो क्या उसे शर्म नहीं आती? [पहले] मेरी भुजाओं को कैलाश को मथते हुए देखो। तो फिर हे मूर्ख बंदर! अपने बॉस की सराहना करना. रावण के समान वीर कौन है? जिसने अपने ही हाथों से उनके सिरों को काटा और बड़े आनन्द से अनेक बार उन्हें आग में जलाया! गौरीपति शिवजी स्वयं इसके साक्षी हैं।

जब सिर जल रहे थे, तब मैंने अपने माथे पर विधाता के अक्षर लिखे देखे, तब मनुष्य के हाथों अपनी मृत्यु के भय से मैं यह जानकर हँसा कि विधाता (लेखकों) की बातें झूठी हैं। उस बात को समझने (याद रखने) के बाद भी मेरे मन में कोई डर नहीं है. [क्योंकि मैं समझता हूं कि] बूढ़े ब्राह्मण ने अपनी बुद्धि से यह लिखा है। अरे मूर्ख! आप लज्जा और मर्यादा को छोड़कर बार-बार मेरे सामने दूसरी वीरता की बातें करते हैं।

अंगद ने कहा- हे रावण! तेरे जैसा शर्मीला दुनिया में कोई नहीं है. शर्मीलापन आपका स्वाभाविक स्वभाव है। आप कभी भी अपने गुणों के बारे में बात नहीं करते. कैलाश का सिर काटने और उठाने की कथा आपके मन में अटकी हुई थी, उसे आपने बीसियों बार कहा। आपने अपने हृदय में ही भुजाओं का वह बल छिपा रखा है, जिससे आपने सहस्नबाहु, बाली और बालिको को जीत लिया था।

अरे बेवकूफ! सुनो, अभी रुको. क्या सिर कटवा देने से भी कोई योद्धा हो जाता है? जो भ्रम पैदा करता है, वह वीर नहीं कहलाता, भले ही वह अपने हाथों से अपना पूरा शरीर ही काट डाले। अरे मूर्ख! कृपया समझें और देखें. पतंगे आग में फँसकर मर जाते हैं; गधों के झुण्ड अपना बोझ उठाए हुए चलते हैं; लेकिन इसी वजह से उन्हें बहादुर नहीं कहा जाता.

अरे दुष्ट! अब और बात मत करो; मेरी बातें सुनो और अपना अभिमान त्याग दो! हे दशमुख! मैं किसी दूत की तरह [बातचीत करने] नहीं आया हूं। श्री रघुवीर ने मुझे ऐसा सोचकर भेजा है-॥दयालु श्री रामजी बार-बार कहते हैं कि गीदड़ों को मारने से सिंहों को यश नहीं मिलता। अरे मूर्ख! भगवान के उन वचनों को मन में समझकर (स्मरण करके ही) मैंने तुम्हारे कठोर वचनों को सहन किया है।

नहीं तो मैं तुम्हारा मुँह तोड़ देता और सीताजी को बलपूर्वक ले जाता। अरे दुष्ट! देवताओं के शत्रु! मुझे आपकी ताकत का पता तब चला जब आपने रेगिस्तान से एक अजनबी को चुरा लिया। तुम्हें जमीन पर गिरा दूंगा, तुम्हारी सेना को नष्ट कर दूंगा और तुम्हारे गांवों को नष्ट कर दूंगा। ऐसा करो, मूर्ख! आइए मैं आपकी युवतियों सहित जानकीजी को भी ले चलूं।

यदि मैं ऐसा भी करूँ तो इसमें कोई महिमा नहीं है। किसी मृत व्यक्ति को मारने में कोई मर्दानगी (बहादुरी) नहीं है। वामपंथी, कामी, कृपण, अत्यंत मूर्ख, अत्यंत दरिद्र, बदनाम, अत्यंत बूढ़ा, प्रतिदिन रोगी, निरंतर क्रोध करने वाला, भगवान विष्णु से विमुख, वेदों और संतों का विरोधी, अपने शरीर का पोषण करने वाला, दूसरों की निंदा करने वाला और पापों की खान (एक महान) पापी) - ये चौदह प्राणी जीवित रहते हुए मृत व्यक्ति के समान हैं।

अरे दुष्ट! मैं तुम्हें ऐसा सोच कर नहीं मारता. अब मुझे गुस्सा मत दिलाओ (मुझे गुस्सा मत दिलाओ)। अंगद के वचन सुनकर राक्षसराज रावण ने अपने होंठ चबाये और क्रोधित होकर हाथ मलते हुए बोला-

हे नीच बंदर! अब तुम बस मरना चाहते हो! यही कारण है कि छोटा मुँह बड़ी बातें कहता है। अरे मूर्ख बंदर! जिसके बल पर तुम कठोर वचन बोल रहे हो उसमें कोई बल, ऐश्वर्य, बुद्धि या तेज नहीं है। उनके पिता ने उन्हें निकम्मा और बेईमान समझकर देश निकाला दे दिया। वह (उसका) दुःख एक बात है; ऊपर से लड़की से वियोग और फिर रात-दिन भय बना रहता है।

जिनके बच्चों पर तुम दिन-रात गर्व करते हो, ऐसे बहुत से मनुष्यों को राक्षस खा जाते हैं। और मूर्ख! अपनी जिद छोड़ो और समझो (सोचो)। जब उन्होंने श्री रामजी की आलोचना की तो जगत्श्रेष्ठ अंगद अत्यंत क्रोधित हो गये। क्योंकि शास्त्र कहते हैं कि जो मनुष्य भगवान विष्णु और शिव की निंदा कानों से सुनता है, वह गाय के समान पाप करता है।

वानरों में श्रेष्ठ अंगद बड़े जोर से चिल्लाने लगे और गड़गड़ाहट के साथ उन्होंने अपनी दोनों भुजाएं पृथ्वी पर दे मारीं। पृथ्वी हिलने लगी, (जिसके कारण) बैठे हुए सदस्य गिर गये और भय के वायु (भूत) के वशीभूत होकर भाग गये।

रावण गिरकर संभलकर उठा। उसका अत्यंत सुन्दर मुकुट पृथ्वी पर गिर पड़ा। उनमें से कुछ को उठाकर अपने सिर पर रख लिया और कुछ को उठाकर प्रभु श्री रामचन्द्रजी के पास फेंक दिया।

मुकुटों को आता देख बंदर भाग गये। [सोचने लगा] विधाता! क्या दिन में उल्कापात होने लगा (तारे गिरने लगे)? अथवा रावण ने क्रोध में आकर चार रथ चलाये हैं, जो बड़े वेग से आ रहे हैं? भरभुने [उन्हें | हँसकर बोले--मन में मत डरो। ये न उल्का हैं, न वज्र हैं, न केतु या राह हैं। अरे भाई! ये रावण के मुकुट हैं; जो बालिपुत्र अंगद द्वारा फेंका हुआ आ रहा है।

पवनपुत्र श्री हनुमानजी ने छलांग लगाकर उसे हाथ से पकड़ लिया और लाकर प्रभु के पास रख दिया। भालू-बंदर तमाशा देखने लगे। उसका प्रकाश सूर्य के समान था। वहाँ (सभा में) क्रोधित रावण ने सब पर क्रोधित होकर कहा- बन्दर को पकड़कर मार डालो।

यह सुनकर अंगद मुस्कुराने लगे [रावण ने फिर कहा--] उसे मारकर सभी योद्धाओं को तुरंत भाग जाना चाहिए और जहां कहीं भी भालू और बंदर मिलें उन्हें खा लेना चाहिए। पृथ्वी को वानरों से मुक्त करो, दूसरी ओर जाओ और दोनों तपस्वी भाइयों (राम और लक्ष्मण) को जीवित रहते हुए पकड़ लो।

[रावण के ये क्रोधपूर्ण वचन सुनकर] तब राजकुमार अंगद क्रोधित होकर बोले-तुम्हें ढिंढोरा पीटते शर्म नहीं आती! अरे बेशर्म! हे विनाशक! अपना गला काटकर (आत्महत्या करके) मर जाओ! क्या मेरा बल देखकर भी तुम्हारी छाती नहीं फटती? ॥हे भगवान, चोर। हे कुमार्ग पर चलनेवालों! हे दुष्ट, पापी, मन्दबुद्धि और कामी:] तू पागलपन में कैसी बुरी बातें बोल रहा है? हे दुष्ट राक्षस! आप मृत्यु के वश में हैं!

इसका परिणाम आपको तब भुगतना पड़ेगा जब आप पर बंदरों और भालुओं द्वारा हमला किया जाएगा। जैसे ही आप ऐसे शब्द कहते हैं कि राम एक इंसान हैं, आप अहंकारी हैं! क्या तुम्हारी जीभ बाहर नहीं गिरती? इसमें कोई संदेह नहीं कि तुम्हारी जीभें अपने सिरों के साथ युद्ध के मैदान में गिरेंगी [अकेले नहीं]। हे दशकन्ध! वह कैसा आदमी है जिसने एक ही बांस से बच्चों को मार डाला? ओ कुजति रे जद! बीस आँखें होते हुए भी तुम अंधे हो। अपने जन्म को धिक्कार है.

श्री रामचन्द्रजी के बाण तुम्हारे खून के प्यासे हैं। [वे प्यासे रह जायेंगे] इस भय के कारण हे कटु वचन बोलने वाले दुष्ट राक्षसों! मैं तुम्हें छोड़ दुंगा। मैं तुम्हारे दांत तोड़ने में सक्षम हूं. पर क्या करूँ ? श्रीरघुनाथजी ने मुझे आज्ञा नहीं दी। मुझे इतना क्रोध क्यों आता है कि मैं तुम सबके चेहरे तोड़ दूँ और तुम्हारी लंका पर कब्ज़ा कर लूँ और उसे समुद्र में डुबा दूँ?

तुम्हारी लंका गुलाब के वृक्ष के फल के समान है। तुम सभी कीड़े इसके अंदर (अज्ञानतावश) निर्भय होकर रह रहे हो। मैं तो बन्दर हूँ, इस फल को खाने में देरी क्या हुई? परन्तु उदार (दयालु) श्री रामचन्द्रजी ने ऐसी अनुमति नहीं दी। अंगद की चाल सुनकर रावण मुस्कुराया [और बोला--] अरे मूर्ख! आपने इतना झूठ बोलना कहाँ से सीखा? बालीन ने कभी ऐसा गाल नहीं दिया। ऐसा प्रतीत होता है कि आप साधु-संन्यासियों से मिलते-मिलते ऊब गये हैं।

अंगद ने कहा-आओ बीसबाहु! यदि मैंने तुम्हारी दसों जीभें न उखाड़ दीं, तो मैं सचमुच मूर्ख हूं। श्री रामचन्द्रजी की महिमा (याद करके) जानकर अंगद क्रोधित हो गये और उन्होंने प्रतिज्ञा करके (दृढ़ संकल्प के साथ) रावण के दरबार में पैर जमा दिये। [और कहा- अरे मूर्ख- यदि तू मेरे पैर हटा सकेगा तो श्री रामजी लौट आयेंगे। मैंने सीताजी को खो दिया। रावण ने कहा--हे समस्त वीरों! सुनो, अपने पैर पकड़ो और बंदरों को जमीन पर गिरा दो।

इन्द्रजीत (मेघनाद) तथा अन्य अनेक शक्तिशाली योद्धा सर्वत्र प्रसन्न होकर खड़े हो गये। वे पूरी ताकत से झपटते हैं और तरह-तरह के उपाय करते हैं। लेकिन पैर नहीं हिलते तो वे सिर झुकाकर अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाते हैं। काकभुशुण्डिजी कहते हैं---देवों के वे शत्रु (राक्षस) पुनः उठकर झपट पड़ते हैं। परन्तु हे साँपों के शत्रु गरुड़जी! अंगद के पैर उससे विमुख नहीं हो सकते, जैसे कोई कामुक मनुष्य छद्म रूपी वृक्ष को नहीं उखाड़ सकता।

करोड़ों वीर योद्धा, जो शक्ति में मेघनाद के समान थे, हर्ष से खड़े हो गये। वे बार-बार झपटते हैं, लेकिन बंदर के पैर नहीं उठते, फिर शर्म के मारे सिर झुकाकर बैठ जाते हैं। जिस प्रकार साधु का मन लाख कष्ट सहने पर भी अपनी

नीति नहीं छोड़ता, उसी प्रकार वानर (अंगद) का पैर धरती नहीं छोड़ता। यह देखकर शत्रु (रावण) का नशा उतर गया!

अंगद का बल देखकर सभी को पराजय का अनुभव हुआ। तब अंगद के चिल्लाने पर रावण उठ खड़ा हुआ। जब वह अंगद के पैर पकड़ने लगे. फिर बालिकुमार अंगद ने कहा, "मेरे चरण पकड़ने से तुम नहीं बचोगे! अरे मूर्ख! तुम जाकर श्री रामजी के चरण क्यों नहीं पकड़ लेते? यह सुनकर उन्हें बहुत खुशी हुई। वे झिझकते हुए वापस लौट आए। उनकी सारी श्री जाती रही। यह बन गया।" दोपहर के चाँद की तरह नीरस।

वह सिर झुकाये सिंहासन पर बैठ गया। मानो उसने अपनी सारी दौलत खो दी हो. श्री रामचन्द्रजी सम्पूर्ण जगत् के प्राणों और आत्माओं के स्वामी हैं। जो उनसे अलग हो गया है उसे शांति कैसे मिल सकती है? शिवजी कहते हैं--]हे उमा! श्री रामचन्द्र जी के इशारे से जगत् उत्पन्न होता है और फिर नष्ट हो जाता है; जो भूसे को तिनका और वज्र को तिनका बना देता है (अति निर्बल को अति बलवान और अति बलवान को अति निर्बल बना देता है), कहो, उसके दूत की प्रतिज्ञा कैसे टल सकती है?

तब अंगद ने अनेक प्रकार से नीति कही। परन्तु रावण नहीं माना; क्योंकि उनका समय नजदीक आ गया था. शत्रु का अभिमान चूर करके अंगद ने उन्हें प्रभु श्री रामचन्द्रजी का आशीर्वाद सुनाया और तब राजा और राजपुत्र यह कहते हुए चले गये- जब तक मैं तुम्हें युद्धभूमि में खेल-खेल में नहीं मार डालूँगा, तब तक मैं किस बात का अभिमान करूँ। अंगद ने अपने पुत्र को (सभा में आने से पहले ही) मार डाला था। वह वार्तालाप सुनकर रावण दुःखी हो गया।

अंगद की प्रतिज्ञा [सफल] देखकर सभी राक्षस भय से अत्यंत व्याकुल हो गये। बालि के पुत्र अंगदजी ने शत्रुबाले को परास्त करके हर्षित होकर आकर श्री रामचन्द्रजी के चरणकमलों को पकड़ लिया। उसका शरीर रोमांचित हो जाता है और आँखें खुशी के आँसुओं से भर जाती हैं।

दशग्रीव यह जानकर कि संध्या हो गयी है, रोता हुआ (दुखी होकर) महल में चला गया। मंदोदरी ने रावण को समझाया और फिर कहा- हे कंत! मन में समझ लेने के बाद बुरे विचारों को त्याग दें। तुमने और श्रीरघुनाथ के छोटे भाई ने, जो युद्ध पसंद नहीं करते, एक छोटी-सी रेखा खींच दी थी, परन्तु तुम उसे पार नहीं कर सके, यही तुम्हारा पुरुषत्व है।

ओ प्यारे! क्या आप उन लोगों से युद्ध जीत पाएंगे जिनके दूतों के पास ऐसा कार्य है? वह वानरों में सिंह (हनुमान) खेल-खेल में ही समुद्र पार करके निर्भय होकर आपकी लंका में आ गया! उसने रक्षकों को मारकर अशोकवन को नष्ट कर दिया। जब आप देख रहे थे तो उसने अक्षय कुमार को मार डाला और समस्त नागों को जलाकर भस्म कर दिया। उस समय तुम्हारा बालकों जैसा अभिमान कहाँ चला गया था?

अब यही दोष है! (व्यर्थ में) झूठ मत बोलो (अपनी बड़ाई मत करो), जब मैं कहूँ तो अपने दिल में कुछ सोचो। हे पतिदेव! तुम्हें भगवान को राजा नहीं मानना चाहिए, बल्कि उन्हें अग-जगन्नाथ (चरागाहों का स्वामी) और अतुलनीय शक्तिशाली मानना चाहिए। श्रीगमजी के बाण की महिमा तुच्छ मारीच भी जानता था। लेकिन तुमने उसकी एक भी न सुनी. जनक के दरबार में असंख्य राजा थे। आप भी वहाँ अपार एवं अतुलनीय शक्ति से सम्पन्न थे।

वहाँ शिवजी का धनुष तोड़कर श्री रामजी ने जानकी से विवाह किया था, फिर आपने उन्हें युद्ध में क्यों नहीं जीता? इन्द्रपुत्र जयन्त को अपनी सेनाओं के विषय में कुछ मालूम है। श्री राम ने उसे पकड़ लिया और उसकी एक आंख निकाल ली और उसे जीवित छोड़ दिया। आपने शूर्पणखा की हालत देखी है. फिर भी उनसे लड़ने के विचार से तुम्हारे हृदय में कोई विशेष लज्जा नहीं आती।

जिन्होंने विषाद और खर-दूषण को मारने के बाद लीला द्वारा कबंध का भी वध किया; और जिन्होंने एक ही बाँस से बालकों को मार डाला, हे दशकन्ध! आप उन्हें (उनके महत्व को) समझें.' जिन्होंने खेल-खेल में ही समुद्र को जीत लिया और जो भगवान की सेना सहित सुबेल पर्वत पर उतरे, उनके कल्याण के लिए दयालु भगवान ने सूर्य कुल की ध्वजा के रूप में (कीर्ति बढ़ाने वाले) दूत भेजा।

जिसने सभा के बीच में आकर आपकी शक्ति का मंथन इस प्रकार किया जैसे सिंह हाथियों के झुण्ड में आकर उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर देता है। युद्ध में अत्यंत वीर और पराक्रमी अंगद और हनुमान उनके सेवक हैं। हे पतिदेव! आप बार-बार उन्हें इंसान कहते हैं. तुम व्यर्थ ही मान, स्नेह और नशे का बोझ ढो रहे हो। हाँ दोस्त! तुमने श्री रामजी का विरोध किया है और काल के विशेष प्रभाव के कारण अभी भी तुम्हारे मन में ज्ञान उत्पन्न नहीं होता।

हाँ, वह किसी को डंडे से नहीं मारता। वह धर्म, बल, बुद्धि और विचारकों का हरण कर लेता है। जय गुरु! जिसकी मृत्यु निकट आ जाती है, वह तुम्हारी तरह भ्रमित हो जाता है। आपके दोनों पुत्र मारे गये और नगर जला दिया गया। [जो

हुआ सो हुआ] हे प्रिये! अब भी यह भूल पूरी करो (श्री रामजी से बैर छोड़ दो); और हे भगवान! कृपा के सागर श्रीरघुनाथजी की पूजा करके शुद्ध यश का आनंद लो।

स्त्री की तीर के समान बातें सुनकर वह प्रातःकाल उठकर सभा में गया और सारा भय भूलकर गर्व से फूलकर सिंहासन पर बैठ गया। यहां (सुबेल पर्वत पर) श्री राम ने बुलाया अंगद. उन्होंने आकर चरण कमलों पर सिर झुकाया। उनके शत्रु कपालू श्रीरामजी बड़े आदर के साथ उनके पास बैठकर हंसते हुए बोले, हे बालि पुत्र! मैं बहुत उत्सुक हूँ। हे पिता! इसलिए मैं तुमसे पूछता हूं, सच बताओ। रावण, जो राक्षसों के कुल का तिलक है और जिसके अतुलनीय बाहुबल से सारा संसार भयभीत है।

तुमने उसके चार मुकुट फेंक दिये। हे पिता! मुझे बताओ, तुमने उन्हें कैसे पाया! [अंगद ने कहा-] हे सर्वज्ञ! वह समर्पण करने वालों को सुख देने वाला है। सुनना। वे ताज नहीं हैं. राजा के ये चार गुण हैं. हे प्रभो! वेद कहते हैं कि साम, दान, दण्ड और भेद - ये चार राजा के हृदय में रहते हैं। ये नीति-धर्म के चार सुन्दर चरण हैं। [परन्तु रावण में धर्म का अभाव है] यह जानकर वह नाथ के पास आया।

दशशिष रावण अधर्मी, भगवान से विमुख तथा काल के वश में है। इसलिये हे कोसलराज! सुनो, वे गुण रावण को छोड़कर तुम्हारे पास आ गये हैं। अंगद की परम चतुराई [पूर्ण कथन] सुनकर उदार श्री रामचन्द्रजी हँसने लगे। तब बलिपुत्र ने किले (लंका) का सारा समाचार सुनाया।

जब शत्रु का समाचार मिला तो श्री रामचन्द्र जी ने सभी मंत्रियों को बुलाया [और कहा--] लंका के चार बड़े खतरनाक दरवाजे हैं। उन पर कैसे हमला किया जाए, इसके बारे में सोचें। तब वानरराज सुग्रीव, ऋक्षपति जाम्बनु तथा विभीषण ने मन ही मन सूर्यकुल के रत्न श्रीरघुनाथजी का स्मरण किया और विचार करके अपने कर्तव्य का निश्चय किया। वानर सेना के चार दल बनाये।

और उनके लिये उपयुक्त सेनापति नियुक्त किये। तब उन्होंने सभी युवाओं को बुलाया और प्रभु की महिमा के बारे में सुनाकर सबको समझाया कौन बंदर शेरों की तरह दहाड़ कर भाग गये। वे प्रसन्नतापूर्वक श्री रामजी के चरणों में सिर झुकाते हैं और सभी योद्धा पर्वतों की चोटियों की ओर दौड़ पड़ते हैं। रीछ-वानर गरजकर ललकारते हैं, 'कोसलराज श्री रघुवीरजी की जय हो'।

यह जानते हुए भी कि लंका अत्यंत श्रेष्ठ (अजेय) दुर्ग है, प्रभु श्री रामचन्द्रजी के पराक्रम से वानर निर्भय होकर चलते थे। उसने मेघ मेघ के समान लंका को चारों ओर से घेर लिया और मुख से ढोल-नगाड़े बजाने लगा। अपार शक्ति की सीमा

पर वानर-भालू 'श्रीराम की जय, लक्ष्मणजी की जय', 'वानरराज सुग्रीव की जय' जैसे ऊँचे स्वर से सिंह के समान दहाड़ने लगे।

लंका में भारी उत्पात मच गया। यह सुनकर अत्यंत साहसी रावण ने कहा, "बंदरों का दुस्साहस तो देखो!" यह कहकर उन्होंने हँसते हुए राक्षसों की सेना का आह्वान किया। समय की प्रेरणा से वानर आये हैं। मेरे राक्षस सभी भूखे हैं। विधाता ने उन्हें घर पर भोजन भेजा। यह कहकर वह मूर्ख जोर से हंसा।

, और कहा--] हे वीर! सब लोग चारों दिशाओं में चले जाते हैं और रीछ-वानर उन सबको पकड़कर खा जाते हैं। [.शिवजी कहते हैं--]हे उमा! रावण को ऐसा अहंकार था जैसे टिटिहिरी पक्षी अपने पैर ऊपर की ओर करके सोता है मानो वह आकाश को पकड़ लेगा। अनुमति मांगने और अपने हाथों में एक बढ़िया भिंडिपल, संगी (भाला), तोमर, मुदगर, भयंकर कुल्हाड़ी, शूल, दोधारी तलवार, परिषद और पहाड़ों के टुकड़े ले जाने के बाद, राक्षस निकल पड़े।

जिस प्रकार मूर्ख मांसाहारी पक्षी लाल पत्थरों का समूह देखकर उन पर झपट पड़ते हैं, उनकी चोंच टूटने (पत्थरों से टकराने) का दर्द उन्हें समझ नहीं आता, उसी प्रकार ये मूर्ख राक्षस भाग खड़े हुए। लाखों शक्तिशाली और बहादुर राक्षस, विभिन्न प्रकार की कुल्हाड़ियों और धनुष और तीर पहने हुए, बीर कोटा के शिखर पर दौड़ पड़े। ऊपर चढ़ गए।

दीवारों के शिखरों पर वे कैसे शोभायमान हो रहे हैं, मानो सुमेरु के शिखरों पर बादल बैठे हों। लड़ाई के ढोल और लाठियाँ आदि बजाई जा रही हैं, जिनकी ध्वनि से योद्धाओं को लड़ने का मन हो रहा है।

असंख्य घंटियाँ और सीटियाँ बज रही हैं, जिन्हें सुनकर कायरों के हृदय फट जाते हैं। उन्होंने जाकर अत्यंत विशाल शरीर वाले महान योद्धा वानरों और भालुओं के समूह देखे। उन रीक-वानरों को भागते देखा; ओघाट (ऊँची-नीची, दुर्गम) घाटियाँ तो कुछ गिनी ही नहीं जातीं। उन्हें पकड़कर वे पहाड़ों को तोड़कर रास्ता बना लेते हैं। लाखों योद्धा टकराते और दहाड़ते हैं। होठों को दांतों से काटता है और खूब काटता है।

एक तरफ रावण की दुहाई तो दूसरी तरफ श्री रामजी की दुहाई लग रही है। 'जय' 'जय' 'जय' की ध्वनि सुनते ही मारकाट मच गई। राक्षस पर्वत शिखरों के ढेर फेंक देते हैं। बंदर उछलकर उन्हें पकड़ लेते हैं और वापस उनकी ओर भेज देते हैं।

भयंकर वानर और भालू पहाड़ों के टुकड़े उठाकर किले पर रख देते हैं। वे झपटते हैं और पृथ्वी को राक्षसों के ऊपर फेंककर भाग जाते हैं और फिर उन पर चिल्लाते हैं। अत्यंत चंचल और अत्यंत तेजस्वी वानर और भालू बड़ी फुर्ती से किले के ऊपर-नीचे उछलते-कूदते और जहाँ-तहाँ चले गये। वे महलों में प्रवेश करके श्री रामजी के गुण गाने लगे।

तब वानरों ने एक-एक राक्षस को पकड़ लिया और भाग गये। आप ऊपर हैं और [राक्षस] योद्धा नीचे हैं - इस प्रकार वे [किले से] पृथ्वी पर गिर जाते हैं। श्री रामजी की शक्ति से भी अधिक बलवान वानरों के झुण्ड राक्षस योद्धाओं के समूह को कुचलते जा रहे हैं। तब वानर दुर्ग पर सर्वत्र चढ़ गये और तेजस्वी सूर्य के समान श्री रघुवीर की जय बोलने लगे।

जैसे तेज हवा चलने पर बादलों के समूह तितर-बितर हो जाते हैं, उसी प्रकार राक्षसों के झुंड भाग गये। लंका नगरी में भारी उत्पात मच गया। बच्चे, रोगी और रोगी रोने लगे (असमर्थता के कारण)। सब लोग मिलकर रावण को कोसने लगे कि उसने राज्य करते-करते प्राणियों को बुला लिया है। जब रावण ने सुना कि उसकी सेना विचलित हो रही है तो उसने भागते हुए योद्धाओं को पीछे कर दिया और क्रोधित होकर बोला-

जिस किसी को मैं युद्धभूमि की ओर पीठ करके भागते हुए सुनूंगा, उसे मैं स्वयं भयानक दोधारी तलवार से मार डालूंगा। उसने मेरा सब कुछ खा लिया, सब प्रकार की वस्तुओं का आनन्द लिया और अब युद्धभूमि में उसके प्राण प्यारे हो गये! रावण के कठोर वचन सुनकर सभी योद्धा डर गये और लज्जित होकर क्रोधित होकर युद्ध के लिए लौट गये। [शत्रु की] लड़ाई में। वीरता की महिमा आमने-सामने (लड़ते हुए) मरने में है। [यह सोचकर] तब उसने जीवन का लोभ त्याग दिया।

सभी वीर अनेक कवच और अस्त्र-शस्त्र धारण कर ललकारते, ललकारते हुए लड़ने लगे। उन्होंने सभी रीछों और वानरों को तलवारों और त्रिशूलों से मारकर व्याकुल कर दिया। [शिवजी कहते हैं---] वानर भयभीत होकर भागने लगे, यद्यपि हे उमा! बाद में [वह] जीतेगा। कोई कहता है---अंगद-हनुमान कहाँ हैं? महाबली नल, नील और द्विविद कहाँ हैं?

जब हनुमानजी ने सुना कि उनका दल भयभीत है, तब वे मजबूत पश्चिमी द्वार पर थे। वहां मेघनाद उनसे युद्ध कर रहा था। वो दरवाज़ा टूट न सका, बहुत मुश्किल था.. तब पवनपुत्र हनुमानजी को मन ही मन बहुत क्रोध आया। काल

के समान वे योद्धा बड़े जोर से गर्जना करके लंका के किले पर कूद पड़े और पर्वत लेकर मेघनाद की ओर दौड़े।

उसने रथ तोड़ डाला, सारथि को मार डाला और मेघनाद की छाती पर लात मारी। दूसरे सारथी ने यह जानकर कि प्रेघनाद संकटग्रस्त है, उसे रथ में बिठाया और तुरंत घर ले आया। इधर अंगद ने सुना कि पवनपुत्र हनुमान अकेले ही किले में गये हैं तो युद्ध में व्यस्त बाली ने खेल रहे बंदर की तरह किले पर छलांग लगा दी।

।। युद्ध में दोनों वानर शत्रुओं पर क्रोधित हो उठे। वे दोनों हृदय में श्री रामजी की महिमा का स्मरण करके रावण के महल की ओर दौड़े और कोसलराज श्री रामजी से प्रार्थना करने लगे। उन्होंने कलश के साथ-साथ बर्तनों को भी पकड़ लिया और उसे ध्वस्त कर दिया। यह देखकर राक्षसराज रावण भयभीत हो गया।

सभी लड़कियाँ अपने हाथों से अपनी छाती पीटने लगीं [और कहने लगीं--] इस बार दो शरारती बंदर [एक साथ] आए हैं। वे दोनों वानरलीला करके (नृत्य कराकर) उन्हें डराते हैं और श्री रामचन्द्रजी की सुन्दर कीर्ति सुनाते हैं॥ फिर उन्होंने सोने के खंभों को अपने हाथों से पकड़ कर [एक दूसरे से] कहा कि अब हिंसा शुरू होनी चाहिए.

वे दहाड़ते हुए शत्रु सेना के बीच में कूद पड़े और अपनी भारी भुजाओं के बल से उसे पीटने लगे। वे किसी की लात और किसी के थप्पड़ का संज्ञान लेते हैं (और कहते हैं कि) तुम श्री रामजी की पूजा नहीं करते, उसका यह दंड लो। जिन बड़े-बड़े सरदारों (प्रमुख सेनापतियों) को वे पकड़ पाते हैं, उनके पैर पकड़कर भगवान के पास फेंक देते हैं। विभीषणजी उनके नाम बताते हैं और श्री रामजी उन्हें अपना धाम भी देते हैं।

जो दुष्ट दुष्ट राक्षस ब्राह्मणों का मांस खाते हैं, वे भी उस परम गति को प्राप्त करते हैं जिसके लिए योगी भी प्रार्थना करते हैं (लेकिन आसानी से नहीं मिलती)। [शिवजी कहते हैं--] हे उमा! श्री रामजी अत्यंत कोमल हृदय और दयालु हैं। [वे सोचते हैं कि] राक्षस मुझे याद करते हैं, यद्यपि शत्रुता के साथ।

ऐसा हृदय में जानकर वे उन्हें परम मोक्ष प्रदान करते हैं। हे भवानी! बताओ, ऐसे कपालू कौन होते हैं [और]? जो मनुष्य भगवान के ऐसे स्वभाव के बारे में सुनकर भी मोह-माया नहीं त्यागते और भगवान की पूजा नहीं करते, वे अत्यंत दुर्बल बुद्धि वाले और अत्यंत दुर्भाग्यशाली होते हैं।

श्री रामजी ने कहा कि अंगद और हनुमान किले में प्रवेश कर गये हैं। वे दोनों वानर कितने सुन्दर हैं, जब वे लंका में उत्पात मचाते हैं, मानो दो मंदराचल समुद्र को मथ रहे हों। अपनी भुजाओं के बल से शत्रु सेना को कुचल डाला और चूर-चूर कर डाला, फिर दिन का अंत देखकर हनुमान और अंगद दोनों कूद पड़े और बिना किसी प्रयास (थकावट) के उस स्थान पर आ गये, जहाँ प्रभु श्री राम थे।

उसने भगवान के चरण कमलों में अपना सिर झुका दिया। श्रेष्ठ योद्धाओं को देखकर श्रीरघुनाथजी का मन बहुत ऊँचा हुआ। श्री रामजी ने उन दोनों पर कृपादृष्टि की, जिससे वे परिश्रम से मुक्त होकर अत्यंत प्रसन्न हो गये। यह जानकर कि अंगद और हनुमान चले गये, सभी भालू और वानर पीछे लौट गये। प्रदोष (संध्या) के समय काल की शक्ति से राक्षसों ने रावण को ललकारते हुए वानरों पर आक्रमण कर दिया।

राक्षसों की सेना को आते देख वानर लौट गये और योद्धाओं ने सर्वत्र भयंकर युद्ध किया। दोनों पार्टियां बहुत मजबूत हैं. शूरवीर जोर-जोर से लड़ते हैं, हार कोई नहीं मानता। सभी राक्षस अत्यंत वीर और काले रंग के हैं तथा वानर विशाल और अनेक रंगों वाले हैं। दोनों पक्ष बलवान हैं और उनमें योद्धाओं का समान बल है, वे क्रोध में लड़ते हैं और खेलते हैं (बहादुरी दिखाते हैं)।

राक्षस और वानर इसी प्रकार लड़ते हुए दिखाई देते हैं। मानो वर्षा और शरद् के क्रमशः अनेक बादल वायु से प्रेरित होकर युद्ध कर रहे हों। बेचैन और बेचैन इन सेनापतियों ने अपनी सेना को विचलित होते देखा और एक भ्रम पैदा किया। एक क्षण में घोर अन्याय हो गया। जूतों और राख की बारिश होने लगी.

दसों दिशाओं में अत्यंत सघन वन देखकर वानर सेना में भगदड़ मच गई। एक को दूसरा दिखाई नहीं देता और हर कोई इधर-उधर पुकार रहा है। श्रीरघुनाथजी सब रहस्य जानते थे। उन्होंने अगद और हनुमान को बुलाकर सब समाचार सुनाया। सुनते ही दोनों क्रोधित होकर भाग गये।

तब दयालु श्री रामजी ने हंसकर धनुष चढ़ाया और तुरंत अग्निबाण चलाया, जिससे प्रकाश हो गया और कहीं भी अंधकार नहीं रहा। जिस प्रकार ज्ञान उत्पन्न होने पर सभी प्रकार के संदेह दूर हो जाते हैं। भालू और वानर प्रकाश पाकर परिश्रम और भय से मुक्त होकर प्रसन्नतापूर्वक दौड़ते हैं। हनुमान और अंगद युद्ध में गरजे। उनकी हाहाकार सुनते ही राक्षस भाग खड़े हुए।

बंदर और भालू भागते हुए राक्षस योद्धाओं को पकड़ लेते हैं और उन्हें जमीन पर गिरा देते हैं। और वे अद्भुत कार्य करते हैं (दिखाते हैं कि वे युद्ध में कुशल हैं)। वे उनके पैर पकड़कर समुद्र में डाल देते हैं। वहां मगरमच्छ, सांप और मछलियां उन्हें पकड़ कर खा जाती हैं. कुछ मारे गये, कुछ घायल हुए, कुछ भाग गये और किले पर चढ़ गये। अपने बल से शत्रु को विचलित कर रीछ और वानर (वीर) दहाड़ रहे हैं।

रात होने को जानकर वानरों की चारों सेनाएँ (दल) वहाँ आ गईं, जहाँ कोसलपति श्री रामजी थे। जैसे ही श्री राम जी ने सब पर दया की, ये वानर परिश्रम से मुक्त हो गये। वहाँ [लंका में]। रावण ने मंत्रियों को बुलाया और मारे गये सभी योद्धाओं के सामने प्रस्तुत किया। [उन्होंने कहा--] वानरों ने आधी सेना को मार डाला। अब जल्दी बताओ कि क्या (उपाय) मानना चाहिए?

माल्यवन्त एक बहुत बूढ़ा राक्षस था। वह रावण की माँ (अर्थात उसके नाना) के पिता और एक महान मन्त्री थे। उन्होंने अत्यंत पवित्र नीति के वचन बोले- हे तात! मेरी कुछ शिक्षाएँ भी सुनो- जब से तुम सीता को हरण कर लाए हो, तब से इतने सारे अपशकुन हो रहे हैं जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। जिन श्री राम की कीर्ति वेद-पुराणों में गाई गई है, उनसे विमुख होकर किसी को सुख नहीं मिला।

भाई हिरण्यकशिपु, जिसने हिरण्याक्ष और शक्तिशाली मधु-कैटभ को मारा था, वही कपक सागर का स्वामी [रामरूप] था। उतर आये हैं. जो कालरूप है, जो दुष्टों के समूह रूपी जंगल का विनाशक [अग्नि] है, जो गुणों का निवास और ज्ञान का सघन स्थान है, और जो भगवान् शिव और भगवान् ब्रह्मा भी सेवा करते हैं?

[तो] जामुन छोड़कर जानकीजी को दे दीजिए और भगवान की कृपा से श्री रामजी की स्तुति कीजिए। [तो] जामुन छोड़ो और उसे दे दो। रावण को उसकी बातें तीर के समान लगीं। [उसने कहा-]अरे अभागे! अपना मुँह काला करके बाहर निकल जाओ। तुम बूढ़े हो गये हो, नहीं तो मैं तुम्हें मार डालता। अब मेरी आंखें अपना चेहरा नहीं देख पा रही थीं. रावण के ये वचन सुनकर उसने (माल्यवान ने) मन में सोचा कि अब तो धन्य श्री गमजी मुझे मारना चाहते हैं।

उसने रबन को अलविदा कहा और चला गया। तब मेघनाद ने क्रोधित होकर कहा- सुबह मेरा चमत्कार देखना. मैं बहुत कुछ करूंगा; मैं थोड़ा क्या कह सकता हूँ? (मैं जो भी वर्णन करूंगा वह बहुत कम होगा) अपने पुत्र की बातें सुनकर रावण को आत्मविश्वास आ गया। उन्होंने उसे प्यार से अपनी गोद में बैठा लिया. सोचते-सोचते सुबह हो गई। फिर बंदर चारों दरवाजों पर जाने लगे।

बंदरों ने क्रोधित होकर दुर्गन किले को घेर लिया। नगर में बड़ा शोर मच गया। गक्ष विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर दौड़े और दुर्ग की पर्वत चोटियों को ध्वस्त कर दिया। उसने करोड़ों पर्वत शिखरों को ध्वस्त कर दिया और अनेक प्रकार से गोले बरसाने शुरू कर दिये। वे गोले ऐसे गरजते हैं मानो वज्रपात हो गया हो (बिजली गिर गई हो) और योद्धा ऐसे गरजते हैं मानो प्रलय के बादल हों।

भयंकर वानर योद्धा लड़ते हैं, कट जाते हैं (घायल हो जाते हैं), उनका शरीर जर्जर (छलनी) हो जाता है, फिर भी वे हार नहीं मानते (हिम्मत नहीं हारते)। वे एक पहाड़ उठाकर किले पर फेंक देते हैं। राक्षस जहाँ कहीं भी हों, वहीं मारे जाते हैं।

मेघनाद ने कानों से सुना कि वानरओं ने आकर फिर दुर्ग को घेर लिया है। तभी वह वीर किले से नीचे आया और तुरही बजाता हुआ उनके आगे-आगे चला। मेघनाद ने पुकारकर कहा, कोसलदेश के प्रसिद्ध धनुर्धर और सेनापति दोनों भाई कहाँ हैं? नल, नील, द्विन्विद, सुग्रीव और बाल्कि सीमा, अंगद और हनुमान कहाँ हैं?

कहाँ है विभीषण जिसने अपने भाई को धोखा दिया था? आज मैं निश्चय ही (निश्चय ही) सबको तथा उस दुष्ट को मार डालूँगा। यह कहकर उसने धनुष पर कठोर बाण चढ़ाये और बड़े क्रोध से उसे अपने कानों तक खींच लिया। वह बाणों के समूह छोड़ने लगा। मानो अनेक पंखवाले साँप दौड़ रहे हों। जगह-जगह बंदर गिरे हुए नजर आ रहे थे. उस वक्त उनके सामने कोई नहीं हो सकता था.

रीछ-वानर इधर-उधर भागने लगे। सब युद्ध की इच्छा भूल गये। युद्ध के मैदान में उन्हें एक भी वानर या भालू नहीं दिखा, जिसे उन्होंने केवल नश्वर अवशेष न बना दिया हो (अर्थात् जिसके प्राण ही न बचे हों, उसकी सारी शक्ति और पुरुषार्थ नष्ट न हो गया हो)। फिर उसने उनमें से प्रत्येक को दस-दस बाण मारे, वानर भूमि पर गिर पड़े। पढ़ना। बलवान एवं साहसी मेघनाद सिंह के समान दहाड़ने लगा।

सभी सैनिकों को व्याकुल देखकर पवनसुत हनुमान क्रोधित होकर ऐसे दौड़े जैसे स्वयं काल दौड़ता हुआ आया हो। उसने तुरंत एक भारी पर्वत उखाड़ लिया और बड़े क्रोध से उसे मेघनाद पर छोड़ दिया। पर्वतों को आता देख वह आकाश में उड़ गया।

[उनके] रथ, सारथी और घोड़े सभी नष्ट हो गए (टुकड़े-टुकड़े हो गए)। हनुमानजी उन्हें बार-बार ललकारते हैं। परन्तु वह निकट नहीं आता, क्योंकि वह उनका भेद जानता है।

[तब] मेघनाद श्रीरघुनाथजी के पास गया और [उनके विरुद्ध] अनेक प्रकार के अपशब्द कहे। [फिर | उसने उन पर अखना-शखात्र तथा अन्य सभी हथियारों का प्रयोग किया। प्रभु ने खेल में ही सबको अलग कर दिया. वह मूर्ख श्री रामजी की महिमा (शक्ति) देखकर लज्जित हो गया और अनेक प्रकार की माया करने लगा। जैसे कोई व्यक्ति हाथ में छोटा सा सांप पकड़कर गरुड़ को डराता है और उसके साथ खेलता है।

शिवजी और ब्रह्माजी, छोटे-बड़े सभी को, जो अत्यंत शक्तिशाली माया के वश में हैं, तुच्छबुद्धि रात्रि उन्हें अपनी माया दिखाती है। बड़े-छोटे से लेकर शिवजी और ब्रह्माजी तक, जो अत्यंत शक्तिशाली माया के वश में हैं, उन्हें तुच्छ बुद्धिमान निशाचर अपनी माया दिखाता है।

कभी मल, मवाद, रक्त, बाल और हड्डियों की वर्षा होती थी तो कभी अनेक पत्थरों की वर्षा होती थी। यह गिर रहा था. फिर उसने धूल बरसाकर ऐसा अन्धकार कर दिया कि उसका अपना फैला हुआ हाथ दिखाई न दे। हे माया के हृदय के वानर, उठो। वे आते हैं। सोचो इस हिसाब से (ऐसा ही रहा) तो सबकी मौत आयेगी। इस कौतुक को देखकर श्री रामजी मुस्कुराये। उन्हें एहसास हुआ कि सभी बंदर भयभीत हो गये हैं।

तब श्री रामजी ने एक ही बाण से सारी माया को उसी प्रकार काट डाला, जैसे सूर्य अंधकार के समूह को हटा देता है। इसके बाद उन्होंने वानरों और भालुओं की ओर दयालु दृष्टि से देखा, (जिससे) वे इतने शक्तिशाली हो गये कि युद्ध में आजमाने पर भी नहीं रुके। श्री गमजी से आज्ञा लेकर श्री लक्ष्मण जी क्रोधित होकर अंगद आदि वानरों के साथ चले गये।

उसकी लाल आँखें, चौड़ी छाती और विशाल भुजाएँ हैं। शरीर हिमाचल पर्वत के समान उज्ज्वल और कुछ आभा वाला है। यहां रावण ने बड़े-बड़े योद्धा भी भेजे, जिन्होंने कई लोगों को मार डाला। हथियार इसके साथ भागो. पर्वतों, कीलों और वृक्षों रूपी हथियारों से आक्रमण किया। वानर 'श्री रामचन्द्रजी की जय' चिल्लाते हुए दौड़े। वानर और राक्षस जोड़ी बनाकर लड़ने लगे। इधर भी और उधर भी जय की चाहत कम नहीं थी. मतलब, यह मजबूत था.

बंदर उन्हें मुक्का मारते हैं, लातें मारते हैं और दांतों से काटते हैं। विजयी वानर भी उन्हें नकाबपोश कहकर डांटते हैं। 'मारो, मारो, पकड़ो, पकड़ो, पकड़ो और मारो, सिर तोड़ो और हाथ पकड़कर उखाड़ लो। गड्ढों में खून जमा हो गया है और उस पर धूल पड़ रही है [दृश्य ऐसा है] मानो राख अंगारों के ढेर को ढक रही हो। .

घायल योद्धा कितने सुन्दर हैं, खिले हुए पलास वृक्ष के समान। दोनों योद्धा लक्ष्मण और मेघनाद अत्यंत क्रोध में एक दूसरे से युद्ध करते हैं। कोई भी दूसरे को जीत नहीं सकता. जब राक्षस ने छल (माया) और अन्याय (अधर्म) का प्रयोग किया, तब भगवान अनंतजी (लक्ष्मणजी) क्रोधित हो गए और उन्होंने तुरंत उसके रथ को तोड़ दिया और सारथी को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

शेषजी (लक्ष्मणजी) उन पर अनेक प्रकार से आक्रमण करने लगे। केवल राक्षस का जीवन शेष रह गया। रावण के पुत्र मेघनाद ने मन में सोचा कि अब तो मेरी जान खतरे में है, यह मेरी जान ले लेगा। तब उसने वीर शक्ति का प्रयोग किया। वह तेज शक्ति लक्ष्मणजी की छाती पर लगी। शक्ति के प्रभाव से वह अचेत हो गया। तब मेघनाद अपना डर छोड़कर उनकी ओर चला गया।

मेघनाद के समान सौ करोड़ (असंख्य) योद्धा उसे ले जा रहे हैं। परन्तु जगत के आधार श्रीशेषजी (लक्ष्मणजी) उनसे कैसे उठ सकते थे? फिर वह लज्जित होकर चला गया। शिवजी कहते हैं--हे गिरिजा! सुनो, (प्रलय के समय) जिनकी चिल्लाहट (शेषनाग) की अग्नि चौदहों पृथ्वियों को तुरंत जला देती है और देवता, मनुष्य और सभी जीवित प्राणियों को पकड़ कर उनकी सेवा की जाती है, उन्हें युद्ध में कौन जीत सकता है?

इस लीला को वही जान सकता है जिस पर श्री राम की कृपा हो। जब साँझ हुई, तो दोनों ओर की सेनाएँ लौट गईं; सेनापति अपनी-अपनी सेनाओं का प्रबंध करने लगे। सर्वव्यापक, ब्रह्म, अजेय, संपूर्ण ब्रह्मपद के देवता और करुणा की खान श्री रामचन्द्रजी ने पूछा- लक्ष्मण कहाँ हैं? तब तक हनुमान उन्हें ले आये। छोटे भाइयों को [इस स्थिति में]। यह देखकर भगवान को बहुत दुःख हुआ।

जाम्बवंत ने कहा- लंका में सुषेण बैद्य रहते हैं, उन्हें लाने के लिए किसे भेजा जाए? हनुमानजी ने छोटा रूप धारण किया और तुरंत सुषेण को उसके घर सहित ले आये। सुषेण ने आकर श्री रामजी के चरणों में सिर झुकाया। उसने पर्वत और औषधि का नाम बताया। और कहा, हे पवनपुत्र! जाओ दवा ले आओ, मैं अभी ले आता हूँ, इतना कहकर चलो। उधर, एक गुप्तचर ने रावण को इस रहस्य की जानकारी दे दी। तभी रावण कालनेमि के घर आया।

रावण ने उसे सारा वृत्तांत सुनाया। कालनेमाइन ने सुना और बार-बार अपना सिर पीटा (अफसोस व्यक्त किया)। [उसने कहा--] जिसने तेरे देखते नगर को जला डाला उसका मार्ग कौन रोक सकता है? श्रीरघुनाथजी की पूजा करके अपना कल्याण करो। हे नाथ! झूठी बात छोड़ो. नेत्रों को सुख देने वाले नीले कमल के समान सुन्दर श्याम शरीर को अपने हृदय में धारण करो।

मैं-तू का भेदभाव और आसक्ति की मूर्खता त्यागें। तुम घोर मोह (अज्ञान) की अवस्था में सो रहे हो, इसलिए उठो। जो कालरूपी सर्प का भक्षक है, वह क्या युद्ध में भी आत्ममोह में विजयी हो सकता है? ये बातें सुनकर रावण को बहुत क्रोध आया। तब कालने ने मन में विचार किया कि मैं श्री रामजी के दूत के हाथ से मरूं तो अच्छा होगा। यह दुष्ट व्यक्ति पाप कर्मों में लिप्त रहता है।

वह मन में ऐसा कहता हुआ चल दिया और रास्ते में एक माया रची। तालाब, मंदिर और सुंदर उद्यान बनवाया। सुंदर आश्रम देखकर हनुमानजी ने सोचा कि उन्हें ऋषि से पानी पीने के लिए कहना चाहिए, ताकि उनकी थकान दूर हो जाए। राक्षस वहां साधु के वेश में मौजूद था। वह मूर्ख मायापति के दूतों को अपनी माया से मोहित करना चाहता था। मारुति उसके पास गया और सिर झुकाया। वे श्री रामजी के गुणों की कथा कहने लगे।

रावण और राम के बीच महायुद्ध हो रहा है. इसमें कोई संदेह नहीं कि रामजी जीतेंगे. अरे भइया! मैं यहां रहकर सब कुछ देख रहा हूं.' मेरे पास ज्ञान की महान शक्ति है. जब हनुमानजी ने उनसे जल मांगा तो उन्होंने उन्हें कमंडलु दिया। हनुमानजी ने कहा--थोड़े से जल से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। तब उन्होंने कहा- यदि तुम तालाब में स्नान करके तुरंत लौट आओ तो मैं तुम्हें दीक्षा दे दूंगा ताकि तुम्हें ज्ञान प्राप्त हो सके।

तालाब में घुसते ही एक मगरमच्छ ने हनुमानजी का पैर पकड़ लिया। हनुमानजी ने उसका वध कर दिया। तब वह दिव्य देह धारण कर विमान पर चढ़ी और आकाश में उड़ गयी। उन्होंने कहा--]अरे वानर! आपके दर्शन करके मैं निष्पाप हो गया। हे पिता! श्रेष्ठ मुनि का शाप मिट गया। हे वानर! वह साधु नहीं, रात्रिचर है। मेरी बात को सच मानो.

इतना कहकर अप्सरा के जाते ही हनुमानजी निशाचर में चले गये। हनुमानजी ने कहा--हे ऋषि! सबसे पहले गुरुदक्षिणा लीजिए. कृपया मुझे बाद में मंत्र दीजिए. हनुमान जी ने उसका सिर अपनी पूँछ में लपेट लिया और उससे आगे निकल गये। मरते समय उसने अपना (राक्षस) शरीर प्रकट किया। वह राम-राम कहता

हुआ चला गया। यह (उनके मुख से राम नाम का उच्चारण) सुनकर हनुमानजी मन में प्रसन्न होकर चल दिये।

उन्होंने पर्वत की ओर देखा परंतु औषधि की पहचान नहीं कर सके। तभी हनुमानजी ने अचानक पर्वत उखाड़ लिया। हनुमानजी पर्वत लेकर रात्रि में ही आकाश मार्ग से दौड़ते हुए अयोध्यापुरी में पहुँच गये। जब भरतजी ने आकाश में एक विशाल रूप देखा तो मन में सोचा कि यह कोई राक्षस है। उसने धनुष को कान तक खींच लिया और बिना ब्लेड का तीर चला दिया।

बाण लगते ही हनुमानजी 'राम, राम, रघुपति' कहते हुए मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। प्रिय वचन (रामनाम) सुनकर भरतजी उठकर बड़े वेग से हनुमानजी के पास दौड़े। उन्होंने हनुमानजी को व्याकुल देखकर उन्हें हृदय से लगा लिया। उन्हें अनेक प्रकार से जगाने का प्रयत्न किया, परन्तु वे नहीं जागे! तब भरतजी का मुख उदास हो गया। वह मन में बहुत दुःखी हुआ और आँखों में जल [दुःख के आँसू] भर कर उसने ये शब्द कहे -

जिस विधाता ने मुझे श्री राम से विमुख किया, उसी विधाता ने मुझे फिर यह भयंकर दुःख दिया। यदि मन, वचन और शरीर से श्री रामजी के चरणकमलों में मेरी सच्ची प्रीति हो और श्रीरघुनाथजी मुझ पर प्रसन्न हों तो यह वानर थकान और कष्ट से मुक्त हो जाएगा।' यह वचन सुनते ही कपिराज हनुमानजी 'कोसलपति श्री रामचन्द्रजी की जय' कहकर उठ बैठे।

भरतजी ने वानर (हनुमानजी) को अपने हृदय से लगा लिया, उनका शरीर रोमांचित हो गया और उनकी आँखों में (खुशी और प्रेम के) आँसू भर आये। रघुकुल तिलक श्री रामचन्द्रजी को स्मरण करके भरतजी के हृदय में प्रेम नहीं रहा। [भरतजी ने कहा--हे पिताजी! कृपा करके मुझे श्री रामजी सहित उनके छोटे भाई लक्ष्मण तथा माता जानकी का कुशल क्षेम बतायें। वानर (हनुमानजी) ने संक्षेप में सारा वृत्तान्त कह सुनाया। यह सुनकर भरतजी दुःखी हो गये और मन में पश्चाताप करने लगे।

हाय भगवान्! मेरा जन्म इस संसार में क्यों हुआ? प्रभु को कोई मदद नहीं मिली. तब बलवीर भरतजी ने यह जानकर कि यह अशुभ समय है, मन में धैर्य रखकर हनुमानजी से कहा- हे! तुम्हें निकलने में देर हो जायेगी और सुबह होते-होते हालात और भी बदतर हो जायेंगे। अत: तुम पर्वत सहित मेरे बाण पर चढ़ो, मैं तुम्हें वहाँ पहुँचा दूँगा जहाँ श्री रामजी कृपा के धाम हैं।

भरतजी के ये वचन सुनकर हनुमानजी को एक बार मन में अभिमान हुआ कि बाण मेरे बोझ को लेकर कैसे उड़ेगा? [परन्तु] फिर उन्होंने श्री रामचन्द्रजी के प्रभाव का विचार करके भरतजी के चरणों की वन्दना की और हाथ जोड़कर कहा- प्रभु की जय हो प्रभु? मैं आपका यश हृदय में रखकर तुरंत चला जाऊँगा। ऐसा कहकर और भरतजी के चरण वंदन करके आज्ञा पाकर हनुमानजी चले गये।

मारुति श्री हनुमानजी बार-बार मन में प्रभु के चरणों में अपार प्रेम का गुणगान करते हुए चले जा रहे हैं। वहाँ लक्ष्मणजी को देखकर श्री रामजी ने वही शब्द बोले जो आम लोग कहते हैं- रात बहुत हो गई है, हनुमान नहीं आए। इतना कहकर श्री रामजी ने अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी को उठाकर हृदय से लगा लिया। और बोला--अरे भाई! तुम मुझे कभी उदास नहीं देख सकते. आपका स्वभाव सदैव सौम्य रहा। मेरी भलाई के लिए तुमने अपने माता-पिता को त्याग दिया और जंगल में सर्दी, गर्मी और हवा सहन की।

अरे भइया! अब वह प्यार कहां है? तुम मेरी व्याकुलता भरी बातें सुनकर जाग क्यों नहीं जाते? यदि मैं जानता कि मेरा भाई वन में बिछुड़ जायेगा, तो मैं अपने पिता की बात न मानता (जिसका पालन करना मेरा परम कर्तव्य था)। पुत्र, धन, स्त्री, घर और परिवार - ये इस संसार में बार-बार आते और जाते हैं, लेकिन हमें इस संसार में भाई-बहन बार-बार नहीं मिलते हैं। हे पिता, यह विचार अपने हृदय में रखो! जागो।

जैसे बिना पंख वाला पक्षी, बिना मणि वाला साँप और बिना सूंड वाला महान हाथी अत्यंत विनम्र हो जाते हैं, हे भाई! अगर कोई निर्जीव भगवान मुझे जीवित रखेगा तो तुम्हारे बिना मेरी जिंदगी भी ऐसी ही होगी. एक स्त्री के कारण अपने प्यारे भाइयों को खोकर मैं कौन सा मुँह लेकर अवध जाऊँगा?

भले ही मुझे संसार में बदनामी सहनी पड़े (कि राम में कोई वीरता नहीं कि वह अपने बच्चों को खो दे)। महिला की मृत्यु कोई महत्वपूर्ण हानि नहीं थी [इस हानि को देखते हुए]।

अब हे पुत्र! मेरा क्रूर और कठोर हृदय यह अपमान और तुम्हारा दुःख दोनों सह लेगा। हे पिता! आप अपनी माँ के इकलौते पुत्र और उनके जीवन आधार हैं। उन्होंने तुम्हें सब प्रकार से सुख देने वाला और अत्यंत कल्याणकारी जानकर तुम्हारा हाथ पकड़कर मुझे सौंप दिया। अब मैं जाकर उन्हें क्या उत्तर दूँगा? अरे भइया! तुम उठ कर मुझे क्यों नहीं सिखाते?

विचारों से मुक्त करने वाले श्री रामजी अनेक प्रकार से विचार कर रहे हैं। उनके कमल पंखुड़ी रूपी नेत्रों से (दु:ख के आंसुओं का) जल बह रहा है। [शिवजी कहते हैं--] यह उमा है! श्री रघुना थाजी एक (अद्‌वितीय) और अखंड (बिना अलगाव के) हैं। भक्तों पर दया करने वाले भगवान ने लीला करके मनुष्य की दुर्दशा बता दी है।

भगवान की यह बकवास सुनकर वानरों के समूह व्याकुल हो गये। तभी हनुमानजी आ गये, मानो करुणा के सन्दर्भ में वीरता का प्रसंग आ गया हो।

श्रगमजी ने प्रसन्न होकर हनुमानजी को गले लगा लिया। प्रभु अत्यंत दयालु और अत्यंत आभारी हैं। तब त्रेद्‌या (सुशेना) ने तुरंत एक उपाय निकाला। लक्ष्मणजी उनके साथ उठकर बैठ गये। प्रभु भाई से पूरे मन से मिलो।

रीछ-वानरों का समूह सभी प्रसन्न हो गये। तब हनुमानजी वेदी को उसी प्रकार वहाँ ले गये जैसे उस समय (पहले) लाये थे।

जब रावण ने यह समाचार सुना तो अत्यंत दु:ख से बार-बार अपना सिर पीटा। वह व्याकुल होकर कुम्भकर्ण के पास गया और उसे जगाने के लिए अनेक उपाय किये। कुम्भकर्ण जाग गया (उठ गया)। वह कैसा दिखता है, मानो स्वयं काल साकार रूप में बैठा हो। कुम्भकर्ण ने पूछा--हे भाई! बताओ, तुम्हारा मुँह क्यों सूख रहा है?

उस अहंकारी (रावण) ने उसे बताया कि किस प्रकार उसने सीता को [तब से अब तक] हरण किया है। पूरी कहानी बताई. [फिर बोला--] हे पिताजी! वानरों ने सभी राक्षसों को मार डाला। बड़े-बड़े योद्‌धाओं को भी मार डाला। दुर्मुख, देवशत्रु (देवान्तक) गया ताल नागान्तक), थशारि योद्‌धा अतिकाय, ओशो अकम्पन और महोदर आदि तथा अन्य सभी रणधीर वीर युद्‌धभूमि में मारे गये।

तब रावण की बातें सुनकर कुम्भकर्ण (दुखी होकर) रोने लगा और बोला- हे मूर्ख, क्या तू संसार के ज्ञानियों का विनाश करके कल्याण चाहता है? यह राक्षस राजा है! आपने अच्छा नहीं किया. अब मुझे किस बात ने जगाया? हे पिता! अब भी तुम अभिमान छोड़कर श्री रामजी का भजन करो, तुम्हारा कल्याण होगा।

हे रावण! श्रीरघुनाथजी, वह कैसा व्यक्ति है जिसके पास हनुमान जैसे सेवक हैं? हाय भाई ! आपने पहले आकर मुझे यह स्थिति न बताकर गलत किया।

जय गुरु! आपने उस परमेश्वर का विरोध किया, जिसके सेवक शिव, ब्रह्मा आदि हैं। नारद मुनि ने जो ज्ञान मुझे बताया था, वह मैं तुम्हें बता देता; लेकिन अब तो समय बीतता ही जा रहा है. अरे भाई अब [आखिरी बार] आओ और मुझसे मिलो। चलूँ और अपने नेत्रों को सफल बनाऊँ।

मुझे जाकर श्याम शरीर और कमल नेत्रों वाले तथा तीनों तापों को दूर करने वाले श्री रामजी का दर्शन करना चाहिए। श्री रामचन्द्रजी के रूप और गुणों का स्मरण करके वह एक क्षण के लिए प्रेम में मग्न हो गये। तब रावण ने लाखों घड़े शराब और बहुत सी भैंसें मंगवाईं। भैंसें खाकर और शराब पीकर वह वज्र के समान गरजा। युद्ध से उत्साह से भरकर कुम्भकर्ण किले से बाहर चला गया। यहां तक कि सेना भी साथ नहीं ली गई.

उन्हें देखकर विभीषण आगे आये और उनके चरणों में गिरकर उनका नाम लिया। उसने अपने छोटे भाई को उठाकर हृदय से लगा लिया और उसे श्रीरघुनाथजी का भक्त मानकर अपने हृदय का प्रिय बना लिया। विभीषण ने कहा--हाँ पिताजी! अत्यंत हितकारी सलाह और विचार देने के कारण रावण ने मुझे लात मार दी। उसी ग्लानि के कारण मैं श्रीरघुनाथनी के पास आया। गरीबों को देखकर उनके हृदय में प्रभु बहुत प्यारे लगे-

[कुम्भकर्ण ने कहा--] हे पुत्र! सुनो, रावण काल के वश में हो गया है (मृत्यु उसके सिर पर नाच रही है)। क्या अब वह इसे अच्छी शिक्षा मान सकते हैं? हे विभीषण! आप धन्य हैं, धन्य हैं, धन्य हैं। हे पिता! तुम राक्षस कुल के रत्न हो गये हो। अरे भइया! तुमने अपने कुल को तेजस्वी बनाया है, जिसने रूप और सुख के समुद्र के रूप में श्री रामजी की सेवा की है।

मन, वचन और कर्म से छल-कपट छोड़कर भगवान श्री राम की आराधना करें। अरे भइया! मैं काल (मृत्यु) के वश में हो गया हूं, न अपना समझता हूं न पराया; इसलिये अब तुम जाओ। भाई की बात सुनकर विभीषण पीछे मुड़े और जहाँ जगत्रत्न श्री रामजी थे, वहाँ आये। , विभीषण ने कहा--] हे नाथ! पर्वत के समान विशाल शरीर वाला रणधीर कुम्भकर्ण आ रहा है।

जब बंदरों ने यह बात कानों से सुनी तो वे खुशी के मारे जोर-जोर से शोर मचाते हुए भाग गये। पेड़ों और पहाड़ों को [उखाड़ दिया गया] और उठा लिया गया [क्रोध से]। दाँत पीसते हुए वह उस पर दाँत गड़ाने लगा। लाखों पर्वतों की चोटियों से गछ-वानर एक साथ उस पर आक्रमण करते हैं; परंतु इससे न तो उसका मन विचलित हुआ और न ही उसका शरीर विचलित हुआ, जैसे हाथी पर मदार के फल की मार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

तब हनुमानजी ने उन्हें मुक्का मारा; जिससे वह व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और सिर पीटने लगा। फिर उसने उठकर हनुमानजी पर प्रहार किया। वे चक्कर खाकर तुरंत पृथ्वी पर गिर पड़े। फिर उसने नल-नील को पृथ्वी पर गिरा दिया तथा अन्य योद्धाओं को जहां-तहां फेंक दिया। वानर सेना भाग गयी। सभी लोग बहुत डर गये, कोई भी आगे नहीं आया।

सुग्निव सहित अंगदादि वानरों को मूर्छित करने के बाद वे वानरराज सुग्रीव के असीम बलशाली कुम्भकर्ण को अपनी बांह के नीचे दबाकर चल दिये। शिवजी कहते हैं--हे उमा! जैसे गरुड़ साँपों के समूह के साथ नृत्य करते हैं, वैसे ही श्रीरघुनाथजी नृत्य कर रहे हैं। क्या ऐसी लड़ाई उस व्यक्ति को शोभा देती है जो भौंहें हिलाकर (बिना किसी प्रयास के) काल को खा जाता है?

इसके माध्यम से भगवान विश्व को पवित्र करने वाली वह कीर्ति फैलायेंगे जिसका गायन मनुष्य समय-समय पर करते रहेंगे। भवसागर में डूब जाओगे। वह बेहोश हो गये, तभी मारुति हनुमानजी जाग गये और फिर उन्होंने सुग्रीव की खोज शुरू कर दी।

सुग्रीव भी अपनी सुध-बुध खो बैठा, तब वह शव को लेकर फिसल गया (बगल से नीचे गिर पड़ा)। कुम्भकर्ण ने उसे मरा हुआ मान लिया। उसने कुम्भकर्ण के नाक और कान को अपने दांतों से काट लिया और फिर गर्जना करते हुए आकाश की ओर चला गया, तब कुम्भकर्ण को पता चला।

उसने सुग्रीव के पैर पकड़ लिये और उसे पृथ्वी पर पटक दिया। तब सुग्रीव ने झट से उठकर उस पर प्रहार किया। तभी महाबली सुग्रीव भगवान के पास आये और बोले- परमपिता परमेश्वर की जय हो, जय हो, जय हो. यह जान कर कि नाक-कान काट लिये गये हैं, मुझे बड़ा ग्लानि हुई; और वह गुस्से में लौट आया. पहले तो वह स्वभाव (आकृति) से भयानक था और फिर नाक-कान रहित होने के कारण वह और भी भयानक हो गया। उसे देखकर वानर सेना में भय उत्पन्न हो गया।

रघुवेषा माणिकी जय हो, जय हो, जय हो चिल्लाते हुए वानर भाग गये और सबने एक साथ पर्वत और वृक्षों के समूह उसके ऊपर छोड़ दिये। युद्ध के उत्साह में कुम्भकर्ण उसके विरुद्ध हो गया और उसके सामने ऐसे चलने लगा मानो मृत्यु ही क्रोधित होकर आ रही हो। वह लाखों बंदरों को पकड़ कर खाने लगा! [वे उसके मुँह में प्रवेश करने लगे] मानो टिड्डियाँ किसी पहाड़ी गुफा में प्रवेश कर रही हों।

उसने करोड़ों वानरों को पकड़ लिया और उन्हें अपने शरीर से कुचल डाला। करोड़ों रुपये हाथों से मलकर मिट्टी में मिला दिये। भालू और बंदरों की आवाज़ें [जो उसके पेट में हैं] उसके मुँह, नाक और कानों से दूर भाग रही हैं। राक्षस कुम्भकर्ण क्रोध के नशे में इतना अहंकारी हो गया मानो भगवान ने उसे सारा संसार दे दिया हो और वह उसे निगल जायेगा। सभी योद्धा भाग गये, उन्होंने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। वे आँखों से देख नहीं सकते और पुकारने पर सुन नहीं सकते।

कुम्भकर्ण ने वानर सेना को तितर-बितर कर दिया। यह सुनकर राक्षस सेना भी दौड़ पड़ी। श्री रामचन्द्र जी ने देखा कि उनकी सेना व्याकुल हो गयी है और अनेक प्रकार की शत्रु सेनाएँ आ गयी हैं। तब कमलनयन श्री गयामजी ने कहा- हे सुग्रीव! हे विभीषण! और हे लक्ष्मण! सुनो, तुम सेना का कार्यभार संभालो। मैं इस दुष्ट मनुष्य की शक्ति और सेना को देखता हूँ।

हाथ में धनुष और कमर में तरकश लेकर श्रीरघुनाथजी शत्रु सेना को परास्त करने के लिए निकल पड़े। भगवान ने सबसे पहले धनुष पर प्रहार किया, उसकी भयानक ध्वनि सुनकर शत्रु बहरा हो गया। तब सत्यनिष्ठा का प्रण लेने वाली श्रीयमजी ने एक लाख बाण छोड़े।

वे ऐसे चले जैसे कि वे पंख वाले समय-सर्प हों। सर्वत्र अनेक बाण छोड़े गये, जिससे भयंकर राक्षस योद्धा कटने लगे। उनके पैर, छाती, सिर और भुजाएँ कटती जा रही थीं। अनेक वीरों के टुकड़े-टुकड़े हो गये। घायल चक्कर खाकर पृथ्वी पर गिर रहे हैं। तब सर्वश्रेष्ठ योद्धा खड़े होकर लड़ते हैं। बाण लगते ही वे बादलों की भाँति गर्जना करने लगते हैं।

कई लोग कठिन बाणों को देखकर भाग जाते हैं। बिना सिर के भयंकर रूपदास दौड़ रहे हैं और गा रहे हैं (चिल्ला रहे हैं) 'पकड़ो, पकड़ो, मारो, मारो।' भगवान के बाणों ने पल भर में भयानक राक्षसों को काट डाला। फिर वे सभी बाण लौटकर श्री रघुनाथजी के तरकश में समा गये।। मन में विचार करने पर कुम्भकर्ण ने देखा कि श्रीराम ने पल भर में ही राक्षसी सेना का नाश कर दिया है। तब वह पराक्रमी योद्धा अत्यन्त क्रोधित हो गया और उसने बड़े जोर से सिंह गर्जना की।

क्रोध में आकर वह पर्वत को उखाड़कर वहां रख देता है जहां विशाल वानर योद्धा होते हैं। बड़े-बड़े पर्वतों को आते देख भगवान ने उन्हें अपने बाणों से काटकर धूल के समान चूर-चूर कर दिया। तब श्रीरघुनाथजी ने क्रोधित होकर अपना धनुष बढ़ाया और बहुत भयंकर बाण छोड़े। वे बाण कुम्भकर्ण के शरीर में घुसकर [पीछे

से] निकल जाते हैं [इस प्रकार कि उनका पता नहीं चलता], जैसे बादल में बिजली गायब हो जाती है।

उनके काले शरीर से बहता हुआ रक्त ऐसी सुंदरता प्रदान करता है मानो कालिख के पहाड़ से गेरू की धाराएँ बह रही हों। उसे व्याकुल देखकर रीछ-वानर भाग गये। जैसे ही वे निकट आये, वह हँसा और जोर से दहाड़ने लगा। और करोड़ों वानरों को पकड़कर गजराज की भाँति पृथ्वी पर पटकने लगा और रावण की दुहाई देने लगा।

यह देखकर भालू और बंदरों के झुण्ड ऐसे भाग गये जैसे भेड़िये को देखकर भेड़ों का झुण्ड भाग जाता है। शिवजी कहते हैं---यह तो भवानी है! वानर और भालू व्याकुल होकर अर्तवाणी के स्वर में पुकारते हुए भागने लगे। वे कहने लगे- यह राक्षस दुर्भिषेक के समान है, जो अब वानरों के देश में प्रवेश करना चाहता है। हे मेघ रूपी श्री राम, जो दया का जल धारण करते हैं। हे कटु शत्रु! हे शरणागत के दुःखहर्ता! रक्षा करो, रक्षा करो।

जैसे ही भगवान ने करुणामयी बातें सुनीं, उन्होंने अपना धनुष-बाण ठीक किया और चले गये। पराक्रमी श्री राम जी ने अपने पीछे सेना ले ली और वे (अकेले) क्रोधपूर्वक आगे बढ़ गये। उसने अपना धनुष निकाला और सौ बाण चलाये। तीर छूट गये और उनके शरीर में घुस गये। तीर लगते ही वह क्रोधित होकर भाग खड़ा हुआ। उसके दौड़ने से पर्वत डगमगाने लगे और पृथ्वी हिलने लगी।

उसने एक पहाड़ उखाड़ दिया. रघुकुल तिलक श्रीगारामजी ने उसकी वह भुजा काट दी। फिर वह बाएं हाथ में पर्वत लेकर दौड़ा। भगवान ने उसकी वह भुजा भी काटकर पृथ्वी पर गिरा दी। भुजाएँ कट जाने पर उस दुष्ट को बिना पंखे के मँडराते हुए पर्वत के समान कौन-सी शोभा प्राप्त हुई। उसने प्रभु की ओर उग्र नेत्रों से देखा। मानो वह तीनों लोकों को निगल जाना चाहता हो।

वह जोर से चिल्लाया और मुंह चौड़ा करके भागा। आकाश के देवता और देवता भयभीत हैं! हा! हा | वे इस प्रकार पुकारने लगे। करुणा से परिपूर्ण भगवान ने देवताओं को भयभीत कर दिया। फिर उसने अपने धनुष को कानों तक उठाया और राक्षस के मुंह को तीरों से भर दिया। फिर भी वह पराक्रमी पुरुष पृथ्वी पर नहीं गिरा।

उसका मुख बाणों से भरा हुआ है [प्रभु का]। सामने दौड़ा. मानो समय रूपी कोई जीवित तरकश आ रही हो। तब भगवान ने क्रोधित होकर एक तीखा बाण चलाया और उसका सिर काट दिया। वह सिर रावण के सामने जा गिरा। उसे

देखकर रावण मोती खो जाने पर साँप के समान व्याकुल हो गया। कुम्भकर्ण के वज्र की गर्जना से पृथ्वी धँसने लगी। तब प्रभु ने उसके दो टुकड़े कर दिये।

वे दोनों टुकड़े वानरों, भालुओं और निशाचरों को कुचलते हुए पृथ्वी पर गिर पड़े, मानो आकाश से दो पर्वत गिर पड़े हों। उसका तेज प्रभु श्री रामचन्द्रजी के मुख में समा गया। यह देखकर सभी देवता और ऋषि-मुनि आश्चर्यचकित रह गये। देवतागण प्रसन्न होकर स्तुति करते हुए, नगाड़े बजाते हुए बहुत से पुष्पों की वर्षा कर रहे थे। विनती करके सभी देवता चले गये। उसी समय देवर्षि नारद आये।

आकाश के ऊपर से उन्होंने श्री हरि की सुंदर और वीरतापूर्ण स्तुतियाँ गाईं, जो भगवान के हृदय को बहुत प्रसन्न करने वाली थीं। ऋषि यह कहकर चले गये कि अब दुष्ट रावण को शीघ्र मार डालो। [उस समय] श्री रामचन्द्रजी युद्धभूमि में आये और [अत्यन्त] सुशोभित हो गये।

अतुलनीय बल वाले कोसलपति श्रीरघुनाथजी युद्धभूमि में सुशोभित हैं। उनके चेहरे पर पसीने की बूंदें हैं. से संबंधित। किस्मत वाला होना। शरीर पर खून के कण हैं, दोनों हाथों से मलो। चारों ओर भालू और बंदर सजाये गये हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि अनेक (हजारों) मुख वाली ग्रभु की इस छवि का वर्णन शेषजी भी नहीं कर सकते।

[शिवजी कहते हैं--] हे गिरिजा! कुंभकर्ण, जो एक नीच राक्षस और पापों की खान था, को भी श्री राम ने सर्वोच्च शक्ति दी थी। अतः जो मनुष्य श्री रामजी का भजन नहीं करते, वे [निश्चय ही] मंदबुद्धि हैं॥ दिन के अंत में दोनों सेनाएँ पीछे लौट गईं। [आज के युद्ध में | योद्धाओं को बहुत थकान महसूस हुई लेकिन श्री रामजी की कृपा से वानर सेना की शक्ति उसी प्रकार बढ़ गई जैसे घास पाकर अग्नि बहुत बढ़ जाती है।

दूसरी ओर, राक्षस उसी प्रकार दिन-रात कम होते जा रहे हैं, जैसे अपने मुख से बोलने से सद्गुण घटते हैं। रावण बहुत विलाप कर रहा है. वह बार-बार अपने भाई (कुंभकर्ण) के सिर पर अपने हृदय से प्रहार करता है। स्त्रियाँ रो रही हैं और हाथों से अपनी छाती पीट-पीटकर उसकी महान शक्ति और शक्ति की प्रशंसा कर रही हैं। उसी समय मेघनाद ने आकर अपने पिता को अनेक कथाएँ सुनायीं।

[और कहा--] कल आप मेरे प्रयास देखेंगे। अब मैं किस बात पर इतराऊँ? हे पिता! मेरे आशीर्वाद से जो बल और रथ मुझे प्राप्त हुआ था, वह बल। और रथ) तुम्हें

अभी तक दिखाया नहीं गया था। दोनों तरफ के योद्धा अपनी-अपनी जीत के लिए लड़ रहे हैं. हे गरुड़ ! उनके युद्ध का वर्णन नहीं किया जा सकता.

मेघनाद उसी (पूर्वोक्त) मायावी रथ पर चढ़कर आकाश में चला गया और अट्टहास करते हुए गर्जना करने लगा, जिससे वानर सेना में भय उत्पन्न हो गया। वह शक्ति, शूल, तलवार, कृपाण आदि अनेक शस्त्रों, वस्त्रों आदि का प्रयोग करने लगा तथा कुल्हाड़ी, भाले, पत्थर आदि फेंकने लगा तथा अनेक बाणों की वर्षा करने लगा।

बाणों ने आकाश को दसों दिशाओं में छा लिया, मानो मघा नक्षत्र के बादल बरसने लगे हों। कानों में 'पकड़ो, पकड़ो, मार डालो' शब्द सुनाई देते हैं। लेकिन हत्या करने वाले को कोई नहीं जानता. वानर पर्वत और स्तन लेकर आकाश में दौड़ते हैं। लेकिन उसे देख नहीं पाते, उससे गुजर नहीं पाते और लौट नहीं पाते. माया की शक्ति से बादलों ने विचित्र घाटियों, रास्तों और पर्वत की गुफाओं को बाणों का पिंजरा बना लिया (बाणों से ढक दिया)।

जो स्वतंत्र, अनंत, एक हार (अखंड) और अबाधित हैं, खर के शत्रु श्री रामजी [अपने कर्मों से] सर्प की रस्सी से वश में (उससे बंधे हुए) हो गए। श्री रामचन्द्रजी सदैव खटतंत्र, एक, (अद्वितीय) भगवान हैं। वे अभिनेताओं की तरह कई तरह के दिखावटी किरदार निभाते हैं। युद्ध के मैदान की सुंदरता के लिए, भगवान ने खुद को सांप-रस्सी में बांध लिया; परन्तु देवता उससे बहुत डरते थे।

शिवजी कहते हैं--] हे गिरिजा! जो लोग मुनि भव (जन्म और मृत्यु की फाँसी को काटने वाले मुनि) का नाम जपते हैं, वे कहीं न कहीं बंधन में आ सकते हैं, जो सर्वव्यापक और जगत् के निवास स्थान (जगत का आधार) हैं। हे भवानी! श्री रामजी की इन सगुण लीलाओं के विषय में बुद्धि और वाणी की सहायता से तर्क (निर्णय) नहीं किया जा सकता। ऐसा विचारकर जो ज्ञानी हैं और सब विषयों से विरक्त हैं, वे सब वाद-विवाद (संशय) छोड़कर केवल श्री रामजी को ही भजते हैं।

मेघनाद ने सेना को व्याकुल कर दिया। फिर वह #- हो गया और गाली-गलौज करने लगा. इस पर जाम्बवान ने कहा- दुष्ट! खड़े रहो. यह सुनकर वह बहुत क्रोधित हो गया।

अरे मूर्ख! मैंने तुम्हें बूढ़ा समझकर छोड़ दिया था। अरे दुष्ट! अब क्या तुम मुझे फुसलाने लगी हो? यह कहकर उसने एक चमकता हुआ त्रिशूल लहराया। जाम्बवान वही त्रिशूल हाथ में पकड़कर दौड़े।

और उसने उसे मेघनाद की छाती पर फेंक दिया। देवताओं का वह शत्रु चक्कर खाकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। तब क्रोध से भरकर जाम्बवान ने उसके पैर पकड़ लिये, उसे घुमाया और अपनी शक्ति दिखाते हुए उसे पृथ्वी पर पटक दिया। [लेकिन] वह वरदान की महिमा के कारण नहीं मरता। तब जाम्बवान ने उसके पैर पकड़ लिये और उसे लंका पर फेंक दिया। देवर्षि नारदजी ने गरुड़ को भेजा। वह तुरंत श्री रामजी के पास पहुँचे।

गरुड़ पक्षी ने माया और नागों के सभी समूहों को पकड़कर खा लिया। तब समस्त वानरों के झुंड मोह-माया से मुक्त होकर प्रसन्न हो गये। पर्वत, वृक्ष, पत्थर और कीलधारी बन्दर क्रोधपूर्वक दौड़ पड़े। रात्रिचर विशेष रूप से व्याकुल हो गया और भागकर किले पर चढ़ गया। मेघनाद की मूर्छा टूट गई, अपने पिता को देखकर वह बहुत लज्जित हुआ।

अपने मन में यह निश्चय करके कि मुझे अजय (अजेय) यज्ञ करना चाहिए, वह तुरंत श्रेष्ठ पर्वत की गुफा में चला गया।

अरे भाइयों! तुम सब लोग लक्ष्मण के साथ जाओ और यज्ञ का विध्वंस कर दो। हे लक्ष्मण! तुम उसे युद्ध में मार डालो। देवताओं को भयभीत देखकर मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। हे भाई! सुनो, इसे ऐसे बल और बुद्धि से मारो कि यह निशाचर को नष्ट कर दे। हे जाम्बवान, सुग्रीव और विभीषण! आप तीनों सेना सहित। साथ रहना।

[इस प्रकार] जब श्री रघुवीर ने आज्ञा दी, तब रणधीर कमर में तरकश बाँधे, धनुष सजाये, हृदय में श्री लक्ष्मणजी का माहात्म्य धारण किये हुए मेघ के समान गम्भीर स्वर में बोले - यदि मैं आज इसे मारे बिना आऊँ तो। , तो मैं श्रीरूनाथजी का सेवक न कहलाऊँगा। यदि सैकड़ों शद्दर उनकी सहायता करें तो भी श्री रघुवीर दृष्टिगोचर होते हैं; आज मैं उसे अवश्य मार डालूँगा।

श्री रुघनाथजी के चरणों में सिर नवाकर शेषावतार श्री लक्ष्मणजी तुरंत चले गये। उनके साथ अंगद, नील, मयंद, नल और हनुमान जैसे महान योद्धा भी थे। बंदरों ने जाकर देखा तो वह बैठा भैंस को खून पिला रहा था। वानरों ने सारे यज्ञ नष्ट कर दिये। फिर भी जब वह नहीं उठा तो वे उसकी स्तुति करने लगे।

वह अत्यंत क्रोधित होकर बार-बार भयभीत शब्दों में दहाड़ने लगा। मारुति (हनुमान) और अंगद क्रोधित होकर भाग गए। उसने त्रिशूल छाती में मारकर दोनों को भूमि पर गिरा दिया। फिर उसने भगवान श्री लक्ष्मणजी पर भयंकर

त्रिशूल छोड़ा। अनंत (श्री लक्ष्मणजी) ने बाण मारकर उसके दो टुकड़े कर दिये। तब हनुमानजी और राजकुमार अंगद क्रोधित होकर उठे और उन्हें मारने लगे, लेकिन उन्हें कोई चोट नहीं आई।

शत्रु (मेघनाद) मारे जाने के बाद मर न जाए, यह देखकर वीर जब वापस लौटा तो जोर से चिल्लाकर भाग गया। क्रोधित काल के समान उसे आता देखकर लक्ष्मणजी ने भयंकर बाण छोड़े। वज्र के समान आते हुए बाणों को देखकर वह दुष्ट तत्काल अदृश्य हो गया और फिर भिन्न-भिन्न रूप धारण करके युद्ध करने लगा। कभी वह प्रकट हो जाता तो कभी छिप जाता।

कोसलपति श्री रामजी की महानता को याद करते हुए, लक्ष्मणजी वीर दिखे और उन्होंने तीर चलाया। तीर छूटते ही उनकी छाती के मध्य में लगा। मरते समय उसने सारा छल-कपट त्याग दिया। रमन का छोटा भाई लक्ष्मण कहाँ है? राम कहाँ है? इतना कहकर उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। अंगद और हनुमान कहने लगे- धन्य है तुम्हारी माता, तुम धन्य हो कि तुम्हारी मृत्यु हुई और लक्ष्मणजी के हाथ से तुम्हारी मृत्यु हुई। उस समय आपने श्री राम और लक्ष्मण का स्मरण करके उनके नामों का उच्चारण किया।

हनुमानजी ने बिना किसी प्रयास के उसे उठाकर लंका के द्वार पर रख दिया और लौट आये। उसकी मृत्यु सुनकर देवता, गंधर्व आदि सभी विमान पर सवार होकर आकाश में आये। उन्होंने पुष्पवर्षा की, ढोल बजाये और श्रीरघुनाथजी की निर्मल स्तुति गाई। हे अनंत! आपकी जय हो, हे जगदाधर। आपकी जय हो। हाँ प्रभु। आपने सभी देवताओं को एक महान विपत्ति से बचाया।

देवता और सिद्ध स्तुति करके चले गए, तब लक्ष्मणजी वस्त्रसागर में श्री रामजी के पास आए। रावण ने जैसे ही अपने पुत्र के विवाह का समाचार सुना तो वह मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा। मंदोदरी ने छाती पीटी और नगर के बहुत से लोग शोक से व्याकुल हो गये। सभी लोग रावण को नीच कहने लगे। वह जोर-जोर से रोने लगी और जोर-जोर से कराहने लगी।

तब रावण ने सभी योद्धाओं को अनेक प्रकार से समझाया कि सम्पूर्ण जगत का यह (दिखाई देने वाला) स्वरूप नाशवान है, इसका हृदय में विचार करो। रावण ने उन्हें ज्ञान का उपदेश दिया। वह स्वयं तो नीच है, परन्तु उसकी कथाएँ (कहातें) शुभ और पवित्र हैं। कई लोग दूसरों को सलाह देने में माहिर होते हैं. परन्तु शिक्षा के अनुसार आचरण करने वाले लोग बहुत कम हैं।

रात बीती, सुबह हुई. भालू और बंदरों ने [फिर से] चारों दरवाजों पर हमला कर दिया। दस मुख वाले रावण ने योद्धाओं को बुलाते हुए कहा, 'जिस किसी का मन युद्ध में शत्रु के सामने डगमगाता हो, उसके लिए अब भाग जाना ही अच्छा है।' युद्ध में जाकर मुँह मोड़ लेना (भाग जाना) अच्छा नहीं है। ,मैंने अपनी भुजाओं के बल पर बेरी उगाई है। जो शत्रु आया है, उसे मैं उत्तर दूँगा।

यह कहकर उन्होंने वायु के समान तीव्र गति से चलने वाले रथ को सजाया। युद्ध की घंटियाँ बजने लगीं। सभी अतुलनीय बलशाली योद्धा ऐसे चले, मानो कालिख की आँधी आ गई हो। उस समय असंख्य अपशकुन होने लगे। लेकिन रावण उनकी गिनती नहीं करता क्योंकि उसे अपनी भुजाओं के बल पर बहुत घमंड था।

हर अपशकुन पर विचार नहीं करता. हाथों से हथियार छूट रहे हैं. बोर्डी को संदेह है कि हाथी उन्हें छोड़कर चिंघाड़ते हुए भाग जाते हैं। वे भयानक शब्द कर रहे हैं, मानो वे मृत्यु के दूत हों (मृत्यु का सन्देश सुना रहे हों)। जो प्राणियों के साथ विश्वासघात करता है, मोह के वशीभूत है, राम से द्वेष रखता है और काम में आसक्त है, उसे धन, शुभ शकुन नहीं मिलता और क्या उसे मन की शांति मिल सकती है?

राक्षसों की एक विशाल सेना आगे बढ़ी. चतुरंगिनी सेना की अनेक टुकड़ियाँ हैं। अनेक प्रकार की गाड़ियाँ, रथ और सवारियाँ तथा अनेक रंगों की अनेक पताकाएँ और ध्वजाएँ हैं। मदमस्त हाथियों के कई झुंड उधर से गुजरे। मानो वर्षा से प्रेरित मौसमी बादल हों। वहाँ रंगीन पोशाक पहने योद्धाओं का एक समूह है, जो युद्ध में बहादुर हैं और कई प्रकार की माया जानते हैं।

एक बहुत ही विचित्र सेना प्रदर्शित की गई है। मानो वीर वसन्त ने सेना का श्रृंगार कर दिया हो। सेना की गति की दिशा में हाथी डगमगाने लगे, समुद्र उत्तेजित हो गये और पर्वत डगमगाने लगे।

वीर सिंह चिल्ला-चिल्लाकर अपनी शक्ति और साहस का बखान कर रहे हैं। रावण ने कहा- हे महारथियों! सुनना ! आप रीछों और बंदरों के दाँत कुचल देते हैं। और मैं दोनों राजकुमार भाइयों को मार डालूँगा। यह कहकर उसने अपनी सेना को आगे बढ़ाया।

जब सभी वानरों ने यह समाचार सुना तो वे श्री रघुवीर को पुकारते हुए दौड़े। वे बन्दर और भालू के समान विशाल और काले भागे। मानो पंखों वाले पर्वतों के

समूह उड़ रहे हों। ये कई रंगों के होते हैं. नाखून, दांत, पर्वत और बड़े स्तन उनके हथियार हैं। वे बहुत मजबूत हैं और किसी से नहीं डरते। वे रावणरूपी मदमस्त हाथी के लिये सिंहरूपी श्री रामजी की स्तुति करते हैं और उनके सुन्दर यश की स्तुति करते हैं।

दोनों ओर के योद्धा जय-जयकार करते हुए अपनी-अपनी जोड़ी चुनकर एक-दूसरे से युद्ध करने लगे, एक ओर तो श्रीरघुनाथजी की स्तुति कर रहे थे और दूसरी ओर से रावण की स्तुति कर रहे थे। रावण को रथ पर और श्री रघुवीर को रथ के बिना देखकर विभीषण अधीर हो गये। अत्यधिक प्रेम के कारण उसके मन में संदेह हो गया। बिना रथ के वे रावण पर कैसे विजय पा सकेंगे? वह श्री रामजी के चरणों की वन्दना करके स्नेहपूर्वक कहने लगा।

हे प्रभु, हम आपके चरणों में हैं। है; शरीर की रक्षा के लिए न तो कवच है और न ही जूते। वह महाबली रावण कैसे पराजित होगा? उन्होंने श्री रामजी की कृपा से कहा- हे मित्र! सुनो, विजय दिलाने वाला रथ अलग होता है।

भगवान की स्तुति चतुर सारथी [जो उस रथ को चलाता है] है। वैराग्य ढाल है और संतोष तलवार है। दान एक कुल्हाड़ी है, बुद्धि प्रचंड शक्ति है, उत्कृष्ट विज्ञान एक कठिन धनुष है।

शुद्ध (पापरहित) और स्थिर (स्थिर) मन तरकश के समान है। शम (मन को वश में करना), अहिंसक यम और [शौच] नियम - ये बहुत से बाण हैं। ब्राह्मण और गुरु की पूजा अभनेद्य कवच है। इस तरह जीतने का कोई दूसरा तरीका नहीं है.' अरे मित्रों! जिसके पास ऐसा धर्मात्मा रथ है, उसके कोई भी शत्रु जीतने योग्य नहीं है।

हे धैर्यवान और बुद्धिमान मित्र! सुनो, जिसके पास ऐसा बलशाली रथ है, वह वीर संसार के महान शत्रु (जन्म-मृत्यु) पर भी विजय का प्रतीक है, रावण की तो बात ही क्या। ब्रह्मा आदि देवता तथा अनेक सिद्ध और ऋषि विमान पर चढ़कर आकाश से युद्ध देख रहे हैं। ,शिवजी कहते हैं--]हे उमा! मैं भी उस समाज में था और श्री रामजी का उत्साह देख रहा था।

दोनों ओर के योद्धा युद्ध के उत्साह से मतवाले हो रहे हैं। वानरों के पास श्री रामजी की शक्ति है। इस कारण वे विजयी (जीतने वाले) हैं। वे लड़ते हैं और एक-दूसरे को चुनौती देते हैं और एक-दूसरे को ज़मीन पर कुचल देते हैं। वे उन्हें मारते हैं, काटते हैं, पकड़कर गिरा देते हैं और उनके सिर तोड़ने के बाद उन सिरों

से दूसरों को मार देते हैं। वे अपना पेट फाड़ देते हैं, अपनी भुजाएँ उखाड़ लेते हैं और योद्धाओं को पैरों से ज़मीन पर गिरा देते हैं।

भालू राक्षस योद्धाओं को ज़मीन में गाड़ देते हैं और ऊपर से ढेर सारी रेत डाल देते हैं। हे सिंहों, जो अपने शत्रुओं के विरुद्ध हो गए हैं, वे ऐसे प्रतीत होते हैं मानो कई क्रोध काल हों। राक्षस उनके गालों को पकड़कर फाड़ देते हैं, उनकी छाती फाड़ देते हैं और उनकी जाँघें निकालकर उनके गले में डाल देते हैं।

वे वानर ऐसे प्रतीत होते हैं मानो ब्रह्माद के भगवान श्री नृसिंह अनेक शरीर धारण करके युद्धभूमि में खेल रहे हों। पकड़ो, मारो, काटो, पीछा करो आदि कठोर शब्द आकाश और पृथ्वी में व्याप्त हो गये हैं। सचमुच वज्र और वज्र को घास बना देने वाले (निर्बलों को सबल और सबलों को निर्बल बनाने वाले) श्री रामचन्द्रजी की जय हो।

अपनी सेना को विचलित होता देख रावण अपनी बीस भुजाओं में दस धनुष लेकर चबूतरे पर चढ़ गया और गर्व से 'लौटें, लौटें' कहता हुआ चला। रावण क्रोधित होकर भाग गया। वानर दहाड़ते हुए (लड़ने के लिए) उसके आगे आगे बढ़े। उसने संदूक, पत्थर और पहाड़ अपने हाथ में ले लिये और उन्हें एक साथ रावण पर फेंक दिया।

जैसे ही पर्वत उसके चमड़े जैसे शरीर से टकराए, वे तुरंत टुकड़े-टुकड़े हो गए। अत्यंत क्रोधित और युद्ध के नशे में धुत्त रावण ने रथ रोक दिया और निश्चल खड़ा हो गया, बिल्कुल भी [अपनी जगह से] हिल नहीं रहा था। उसका खून खोल उठा था. वह इधर-उधर उछल-कूद कर वानर योद्धाओं को कुचलने लगा और भागने लगा - एगेकोन: चन्नुगल "वे हमें बचाओ, हमारी रक्षा करो" चिल्लाते हुए भागने लगे।

हे रघुबीर! हे गोसाईं! रक्षा करो, रक्षा करो. यह हमें नरक की तरह खा रहा है। उसने देखा कि सभी बंदर भाग गये। तब [रावण] ने दस तीर चलाए। उसने धनुष चलाया और बाणों का एक समूह छोड़ा। वे बाण साँप की भाँति उड़ जायेंगे। पृथ्वी, आकाश और दिशाएँ सर्वत्र बाणों से परिपूर्ण हो रही हैं। बंदर कहाँ भागें? बहुत शोर था.

वानर और भालुओं की सेना व्याकुल हो उठी और पुकारने लगी- हे रघुवीर! हे करुणा के सागर! हे पीड़ितों के दोस्तों! हे हरि, जो सेवकों की रक्षा करते हैं और उनके दुखों को दूर करते हैं।

अपनी सेना को व्याकुल देखकर लक्ष्मणजी क्रोधित हो गये और कमर में तरकस बाँधकर तथा हाथ में धनुष लेकर श्रीरघुनाथजी के चरणों में सिर झुकाया। लक्ष्मणजी उसके पास गये और बोले--]अरे दुष्ट! बंदर-भालुओं को क्या मार रहा है? मुझे देखो, मैं तुम्हारा समय हूँ? [रावण ने कहा--] हे मेरे पुत्र के हत्यारे! मेरी नजरें तुम्हें ही खोज रही थीं। आज मैं तुम्हें मार कर अपना सीना ठंडा कर लूंगा.

यह कहकर उसने भयंकर बाण छोड़े। लक्ष्मणजी ने सबके सैकड़ों टुकड़े कर दिये। रावण ने करोड़ों बाण चलाए। लक्ष्मणजी ने उसे तिल के बराबर काटकर हटा दिया। फिर उसने अपने बाणों से [उस पर] हमला किया और [उसके] रथ को तोड़ दिया और सारथी को मार डाला। [रावण के] ने उसके दसों सिरों में से प्रत्येक में सौ-सौ तीर मारे। वे सिरों में ऐसे घुसे जैसे साँप पर्वत शिखरों में घुस रहे हों।

फिर उसकी छाती में सौ बाण मारे। वह पृथ्वी पर गिर पड़ा, उसे कुछ भी होश नहीं रहा। तब मूर्छा दूर होकर महाबली रावण उठा और ब्रह्माजी द्वारा दी हुई शक्ति का प्रयोग किया। ब्रह्मा द्वारा दी गई वह प्रचंड शक्ति लक्ष्मणजी की ठीक छाती में लगी। वीर लक्ष्मणजी व्याकुल होकर गिर पड़े।

तब रावण उन्हें उठाने लगा, परंतु उसकी असंतुलित शक्ति का प्रताप वैसा ही रहा (वह व्यर्थ गया, वह उन्हें उठा न सका)। जिनके मस्तक पर ब्रह्मपद का भवन धूल के कण के समान विराजमान है, उन्हें मूर्ख रावण हर लेना चाहता है। वह तीन भुवनों के स्वामी लक्ष्मणजी को नहीं जानता।

यह देखकर पवनपुत्र हनुमानजी कठोर वचन बोलते हुए भाग गये। हनुमानजी के आते ही रावण ने उन पर अत्यंत भयानक मुक्के से प्रहार किया। हनुमानजी घुटनों के बल बैठे रहे और पृथ्वी पर नहीं गिरे। और फिर वह क्रोध से भर कर सावधानी से उठा। हनुमानजी ने रावण को मुक्का मारा। वह ऐसे गिरा, मानो पहाड़ पर वज्र गिर पड़ा हो।

बेहोशी टूटने पर वह पुनः जाग उठा और हनुमानजी के महान बल की सराहना करने लगा। हनुमान जी ने कहा- धिक्कार है मेरे पुरुष को, धिक्कार है मुझ पर और धिक्कार है मुझ पर भी, तू जो भगवद्द्रोही है, अभी भी जीवित है। इतना कहकर हनुमानजी ने लक्ष्मणजी को उठाया और श्रीरघुनाथजी के पास ले आये। यह देखकर रावण को आश्चर्य हुआ, श्री रघुबीर [लक्ष्मणजी]। बोला--अरे भाई! अपने हृदय में यह समझ लो कि तुम काल के भक्षक और देवताओं के रक्षक हो।

यह वचन सुनकर दयालु लक्ष्मणजी उठकर बैठ गये। वह कराल शक्ति आकाश में चली गयी। तब लक्ष्मणजी अपना धनुष-बाण लेकर दौड़े और बड़ी तेजी से शत्रु

के सामने पहुँच गये। तब उन्होंने बहुत तेजी से रावण के रथ को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और उसके सारथी को मार डाला और उसे (रावण को) विचलित कर दिया।

अत: उन्होंने उसके हृदय को बाणों से छलनी कर दिया, जिससे रावण अत्यंत व्याकुल हो गया और पृथ्वी पर गिर पड़ा। तब दूसरा सारथी उसे रथ में बिठाकर तुरंत लंका ले गया। प्रताप के दल से श्री रघुवीर के भाई लक्ष्मणजी पुनः आये और प्रभु के चरणों में प्रणाम किया।

वहाँ (लंका में) रावण मूर्च्छा से जागकर कोई यज्ञ करने लगा। वह मूर्ख और अत्यंत अज्ञानी मनुष्य हठपूर्वक श्री रघुनाथजी का विरोध करके विजय चाहता है। इधर विभीषण जी को सब समाचार मिल गये और उन्होंने तुरंत जाकर श्री रघुनाथ जी से कहा कि ये नाथ हैं! रावण यज्ञ कर रहा है. उसकी सिद्धि के बाद वह अभागा व्यक्ति आसानी से नहीं मरेगा।

हे नाथ! तुरंत वानर योद्धाओं को भेजो; जो यज्ञ का विध्वंस करता है, जिससे रावण युद्ध में उतरता है। प्रातः होते ही प्रभु ने वीर योद्धाओं को भेजा। हनुमान और अंगद आदि सभी प्रमुख वीर दौड़ पड़े। वानर खेल-खेल में लंका की ओर कूद पड़े और निर्भय होकर रावण के महल में प्रवेश कर गये। जैसे ही उन्हें यज्ञ करते देखा सभी वानर बहुत क्रोधित हो गये।

[उन्होंने कहा--] अरे बेशर्म! वह रणभूमि से भागकर घर आ गया है और यहाँ आकर बगुले की भाँति ध्यानमग्न बैठा है? यह कहकर अंगद ने लात मारी। परन्तु उसने उनकी ओर देखा तक नहीं, दुष्ट का मन स्वार्थ में डूबा हुआ था। जब उसने नहीं देखा तो बंदर को गुस्सा आ गया और उसने उसे दांतों से पकड़ लिया और काट लिया लात मारने लगे. स्त्रियों को बाल पकड़कर घसीटकर घर से बाहर निकाला गया, वे अत्यंत दयनीय हो गईं और रोने लगीं।

तब रावण काल के समान क्रोधित होकर उठा और वानरों के पैर पकड़कर उन्हें पीटने लगा। इसी बीच वानरों ने यज्ञ को नष्ट कर दिया, यह देखकर वह पराजित (निराश) रहने लगा।

यज्ञ का आयोजन करने के बाद सभी चतुर वानरनाथजी के पास आये। तब रावण को बचने की आशा जगी। वह गुस्से में छोड़कर चला गया. चलते समय उसे अत्यंत भय और अपशकुन होने लगे। गिद्ध उड़कर उसके सिर पर बैठने लगे। परन्तु वह काल के वश में था और इससे कोई अपशकुन नहीं समझता था। उन्होंने कहा--युद्ध का बिगुल बजाओ।

रात्रिचर योद्धाओं की एक विशाल सेना आगे बढ़ी। इसमें बहुत से हाथी, रथ, घुड़सवार और पैदल लोग हैं। दुष्ट लोग यहोवा के आगे कैसे दौड़ सकते हैं, जैसे पतंगों का एक समूह आग की ओर [जलने के लिए] दौड़ता है। इधर देवताओं ने स्तुति की कि हे श्री रामजी! इससे हमें बड़ा दुःख हुआ है। अब इसे मत खेलो [अधिक]। जानकीजी को बहुत दुःख हो रहा है.

उनकी आंखें लाल हैं और उनका शरीर बादल के समान काला है और वे संपूर्ण जगत की आंखों को आनंद देते हैं। भगवान ने अपनी कमर में तरकश बाँध लिया और कठोर शारद्र धनुष अपने हाथ में ले लिया। भगवान ने अपने हाथ में शाई धनुष लिया और अपनी कमर के चारों ओर तीरों का भंडार, सुंदर तरकश कस लिया। उनकी भुजाएं मजबूत हैं और उनकी सुंदर चौड़ी छाती पर ब्राह्मण (भगुजी) के पैरों का निशान सुशोभित है।

तुलसीदासजी कहते हैं, जैसे ही भगवान ने धनुष-बाण हाथ में लेकर लहराना शुरू किया, ब्रह्मांड, दिशाएं, कच्छप, शेषजी, पृथ्वी, समुद्र और पर्वत सभी डगमगा गए।

आक्रमण की शोभा देखकर देवता प्रसन्न हो गये और प्रचुर पुष्पों की वर्षा करने लगे। और जो सौंदर्य, शक्ति और गुणों का धाम है, उस प्रभु की जय, जय, जय [वे इस प्रकार पुकारने लगे]॥ इतने में ही निशाचरों की एक बहुत घनी सेना गरजती हुई (आपस में भिड़ती हुई) आ गयी। उसे देखकर वानर योद्धा प्रलय के बाद के लोगों के समूह की तरह उसके सामने चले गए।

अनेक कृपाणें और तलवारें चमक रही हैं। मानो दसों दिशाओं में बिजली चमक रही हो। हाथियों, रथों और घोड़ों की कठोर गड़गड़ाहट ऐसी प्रतीत होती है मानो बादल भय से गर्जना कर रहे हों। आसमान में बंदरों की कई पूँछें दिखाई देती हैं। [ऐसी सुंदरता दे रहे हैं] मानो कोई सुंदर इंद्रधनुष उभर आया हो। धूल तो ऐसे उठ रही है मानो पानी की धारा हो. बाण के आकार की बूंदों की अपार वर्षा हुई।

दोनों ओर से योद्धा पहाड़ों पर आक्रमण करते हैं। मानो बार-बार आँधी-तूफान आ रहा हो। श्रीरघुनाथजी ने क्रोधित होकर तीरों की बौछार कर दी, जिससे रा क्षमरो की सेना घायल हो गई। तीर लगते ही योद्धा चिल्लाते हुए उठ बैठते हैं और चक्कर खाकर इधर-उधर जमीन पर गिर पड़ते हैं।

उनके शरीर से रक्त ऐसे बह रहा था मानो भारी पहाड़ी झरनों से पानी बह रहा हो। इस प्रकार भयभीतों को भय देने वाली रुधिरको नदी बहती थी।

अत्यंत अपवित्र रक्त की नदी बह निकली, जो डरपोकों को भयभीत कर रही थी। दोनों पार्टियां इसके दोनों तरफ हैं. रथ रेत का है और पहिये भँवर हैं। वह नदी बहुत डरावनी बह रही है. हाथी, पैडल, घोड़े, गधे और असंख्य सवार, जिनकी गिनती भी नहीं की जा सकती, नदी के जलीय जानवर हैं। बाण, शक्ति और तोमर नाग हैं; धनुष लोहे का बना है और ढाल अनेक कछुओं से बनी है।

वीर पृथ्वी पर इस प्रकार गिर रहे हैं, मानो नदी तट के वृक्ष धराशायी हो रहे हों। बहुत सारा मज्जा बह रहा है, वह झाग है। यह देखकर जहाँ कायर डर जाते हैं, वहीं अच्छे योद्धाओं के हृदय में प्रसन्नता होती है। भूत-प्रेत, पिशाच और बेताल, बड़े-बड़े झोटोम्बाले, बड़े-बड़े योद्धा झोटिंग और प्रमथ (शिवगण) उस नदी में स्नान करते हैं। दूसरी ओर, चीलें बाहें फैलाकर उड़ती हैं और एक-दूसरे को छीनकर खा जाती हैं।

कोई कहता है, अरे मूर्खों! इतनी प्रचुरता है, फिर भी आपकी दरिद्रता दूर नहीं होती? घायल योद्धा किनारे पर पड़े कराह रहे हैं, मानो सर्वत्र अधजल (वे लोग जो मृत्यु के समय अधजल में दबे होते हैं) पड़े हुए हों।

मोचियों में योगिनियाँ रक्त एकत्र कर रही हैं। आकाश में भूत-पिशाचों के खतरे नाच रहे हैं। चामुंडा योद्धाओं की खोपड़ी की झांझ बजा रहे हैं और तरह-तरह से गा रहे हैं।

सियारों के समूह शवों को काटकर खाते हैं, कट-कट की आवाज करते हुए दहाड़ते हैं और पेट भर जाने पर एक दूसरे को डाँटते हैं। करोड़ों धड़ बिना सिर के घूम रहे हैं और सिर धरती पर पड़े जय-जय कर रहे हैं। मुंड (कटे हुए सिर) जय-जय चिल्लाते हैं और प्रचंड रुंड (धड़) बिना सिर के दौड़ते हैं। पक्षी अपनी खोपड़ियों में उलझ जाते हैं और एक दूसरे से लड़ते हुए मर जाते हैं;

सर्वश्रेष्ठ योद्धा अन्य योद्धाओं को नष्ट कर रहे हैं। श्री रामचन्द्रजी की शक्ति से प्रकट हुए वानर राक्षसों के झुण्ड का नाश कर देते हैं। श्री रामजी के बाणों से उत्पन्न योद्धा युद्धभूमि में सो रहे हैं।

रावण ने मन में सोचा कि राक्षसों का नाश हो गया। मैं अकेला हूं और वानर और भालू बहुत हैं, अतः मुझे अपार माया रचने दो। जब देवताओं ने भगवान को पैदल चलते (बिना सँवारे युद्ध करते हुए) देखा तो उनके हृदय में बड़ा क्रोध (दुःख) उत्पन्न हो गया। [आगे क्या हुआ] इंद्र ने तुरंत भेजा। [उनके सारथी] मातलि प्रसन्नतापूर्वक उन्हें ले आये।

कोसलपुरी के राजा श्री रामचन्द्रजी प्रसन्नतापूर्वक उस दिव्य, अद्‌वितीय एवं देदीप्यमान रथ पर चढ़ गये। उसमें चड़ालाल, मनोहर, अजर, अमर और मानकी आदि तीव्र गति से चलने वाले (देवलोक के) चार घोड़े जुते हुए थे। श्रीरघुनाथजी को रथ पर आरूढ़ देखकर वानरों में विशेष बल आ गया और वे भागने लगे। बंदरों की पिटाई ठीक नहीं होती. तब रावण ने माया फैलाई।

वह माया केवल एक श्री रघुवीर पर ही नहीं पड़ी। सभी वानरों और लक्ष्मणजी ने भी भ्रम को सत्य मान लिया। वानरों ने राक्षसी सेना में भाई लक्ष्मणजी सहित अनेक रामों को देखा। अनेक राम-लक्ष्मण को देखकर वानर और भालू मन में मिथ्या भय के कारण बहुत भयभीत हो गये।

वे लक्ष्मणजी सहित इधर-उधर ऐसे खड़े हो गये मानो उन्होंने कोई चित्र लिख दिया हो। अपनी सेना को आश्चर्यचकित देखकर कोसलपति भगवान श्रीहरि (दुःखों के विनाशक श्री रामजी) ने हंसकर अपने धनुष पर बाण चढ़ाया और क्षण भर में सारी माया नष्ट हो गई। सारी वानर सेना प्रसन्न हो गई।

तब श्री रमणी ने सबकी ओर देखकर गम्भीर वचन बोले-हे बीरो! तुम सब बहुत थक गये हो इसलिये अब मेरा और रावण का द्‌वन्द्‌व युद्‌ध देखो। 'ज' कहकर श्रीरघुनाथजी ने ब्राह्मणों के चरणकमलों में सिर झुकाया और फिर रथ चलाया। तब । रावण के हृदय में क्रोध उत्पन्न हो गया और वह दहाड़ मारकर रोने लगा।

आओ, हे तपस्वी! सुनो, मैं उन योद्‌धाओं जैसा नहीं हूँ जिन्हें तुमने युद्‌ध में हराया था। मेरा नाम रावण है, मेरी कीर्ति सारी दुनिया जानती है, लोकपाल भी उसके कारागार में है। आपने खर, दूषण और विराध को मार डाला! बेचारी लड़की को कातिल की तरह मारा गया. बड़े-बड़े राक्षस योद्‌धाओं के समूह को मार डाला तथा कुम्भकर्ण और मेघनादक को भी मार डाला।

हे राजा! यदि तुम युद्‌ध से न भागे होते, तो आज मैं सारी घृणा निकाल दूँगा। आज मैं तुम्हें निश्चय ही मृत्यु के हवाले कर दूँगा। तुम रावण से संकट में हो। रावण के बुरे वचन सुनकर और समय-समय पर उसे जानकर श्री रामजी ने हँसते हुए यह कहा- आपकी सारी सत्ता, जैसा आप कहते हैं, बिल्कुल सत्य है। लेकिन अब फालतू बातें मत करो, अपना पुरुषार्थ दिखाओ.

व्यर्थ की बातें करके अपनी सुन्दर कीर्ति को नष्ट न करो। क्षमा करें, मैं आपको एक सबक बताता हूँ: सुनो! दुनिया में तीन तरह के आदमी होते हैं - पाताल (गुलाब), आम और कटहल। एक (पाताल) फूल देता है, एक (आम) फूल और फल देता है और एक (कटहल) केवल फल देता है। इसी तरह [पुरुषों में]। एक

कहता है [नहीं करता], दूसरा कहता है और करता भी है, और तीसरा केवल करता है, परन्तु शब्दों में नहीं कहता।

श्री रामजी की बातें सुनकर वे खूब हँसे [और बोले--) क्या आप मुझे विद्या सिखाते हैं? उस समय उन्हें नफरत से डर नहीं लगता था, लेकिन अब उन्हें अपनी जिंदगी प्यारी लगती है। अपशब्द कहने पर रावण क्रोधित हो गया और वज्र के समान बाण चलाने लगा। विविध आकार के बाण दिशा, दिशा, आकाश और पृथ्वी में सर्वत्र दौड़कर छा गये।

श्री रघुवीर ने अग्नि बाण छोड़ा, [जिसने] क्षण भर में ही रावण के सारे बाण नष्ट कर दिये। फिर वह हँसा और एक तेज़ शक्ति छोड़ी। [किन्तु] श्री रामचन्द्रजी ने उन्हें बाणों से वापस भेज दिया। वह करोड़ों चक्रों और त्रिशूलों का उपयोग करता है, लेकिन भगवान बिना किसी प्रयास के उन्हें हटा देते हैं। दुष्ट मनुष्य की सभी इच्छाओं की तरह रावण के बाण भी कैसे विफल हो जाते हैं!

फिर उसने श्रीराम के सारथी पर सौ बाण चलाए। वह जय श्री रामजी का नारा लगाते हुए पृथ्वी पर गिर पड़े। श्री रामजी ने कृपा करके सारथी को उठा लिया। तब प्रभु बहुत क्रोधित हुए। युद्ध में श्रीरघुनाथजी को शत्रु पर क्रोध आया, तब तरकश में बाण सनसनाने लगे (बाहर निकलने को उत्सुक होने लगे)। उसके धनुष की अत्यंत तीव्र टंकार (टंकार) सुनकर नरभक्षी काल (अत्यंत भयभीत हो गया) मंदोदरी का हृदय कांप उठा; समुद्र, आकाश, पृथ्वी और पर्वत भयभीत हो गये। दिशाओं के हाथी अपने दाँतों से पृथ्वी को पकड़कर गर्जना करने लगे। ला पाह कोटुक को देखकर देवता हँसे।

बाण ऐसे चल रहे थे मानो पंखधारी साँप उड़ रहे हों। उन्होंने सबसे पहले सारथी और घोड़ों को मार डाला। तब रथ टुकड़े-टुकड़े हो गया और ध्वज-पताकाएँ नीचे गिर गयीं। तब रावण ने बड़ी ताकत से गर्जना की, लेकिन भीतर से उसकी शक्ति समाप्त हो गई थी। वह तुरन्त दूसरे रथ पर चढ़ गया और शोर मचाने लगा।

उसके सारे प्रयास उसी प्रकार निष्फल हो रहे हैं जैसे उस व्यक्ति के होते हैं जिसका मन बुराई में डूबा हुआ है। तब रावण ने दस त्रिशूलों का प्रयोग करके श्री राम के चारों घोड़ों को मार डाला और उन्हें पृथ्वी पर गिरा दिया। घोड़ों को खड़ा करने पर श्रीरघुनाथजी ने क्रुद्ध होकर धनुष खींच लिया और बाण छोड़ दिया।

श्री रघुबीर के बाण रूपी भ्रमरों की एक पंक्ति थी जो रावण के सिर के रूप में कमल वन में विचरण कर रही थी। श्री रामचन्द्रजी ने उसके दसों सिरों पर दस-दस बाण मारे, जो आर-पार हो गए और बाणों से रक्त की धाराएँ बहने लगीं।

महाबली रावण लहूलुहान करते हुए भागा। भगवान ने फिर अपने धनुष से बाण चलाया और श्री रघुवीर ने तीस बाण चलाकर बीस भुजाओं सहित दस सिर काट कर पृथ्वी पर गिरा दिये। सिर और हाथ] कटते ही पुनः नये हो गये।

फिर श्री रामजी ने भुजाएँ और सिर काट डाले। इस प्रकार भगवान ने कई बार उसकी भुजाएँ और सिर काट डाले। लेकिन जैसे ही उसे काटा गया, वह तुरंत नया हो गया। भगवान बार-बार उसकी भुजाएं और सिर काट रहे हैं; क्योंकि कोसलपति श्री रामजी बड़े लोभी हैं। सिर और भुजाएँ आकाश में ऐसे छाई हुई हैं मानो असंख्य केतु और राहु हों।

मानो अनेक राहु और केतु आकाश में लहूलुहान होकर दौड़ रहे हों। श्री रघुवीर के भयंकर बाणों के (बार-बार) प्रहार से वे पृथ्वी पर गिरने में असमर्थ हो जाते हैं। सिर छेदे बांसों के समूह आकाश में इस प्रकार उड़ रहे हैं मानो सूर्य की किरणें क्रोधपूर्वक इधर-उधर राहु को बींध रही हों।

जैसे ही भगवान इसके सिरे काटते हैं, वे विशाल हो जाते हैं। जैसे वस्तुओं का उपभोग करने से इच्छा (उनका भोग करने की इच्छा) दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है। सिरों का सैलाब देखकर रावण अपनी मृत्यु को भूल गया और अत्यधिक क्रोधित हो गया। वह महान अहंकारी मूर्ख दहाड़ता हुआ दस धनुष तानकर भाग गया।

युद्धभूमि में रावण ने क्रोधित होकर बाणों की वर्षा करके श्रीरघुनाथजी के रथ को ढक दिया। एक घंटे तक रथ दिखाई नहीं दिया, मानो सूरज कोहरे में छिप गया हो। जब देवताओं ने हाहाकार किया तो भगवान को क्रोध आ गया और उन्होंने अपना धनुष उठा लिया। और शत्रु के बाणों को हटाकर शत्रु का मस्तक काट डाला और उनसे दिशा, विदिशा, आकाश और पृथ्वी को नष्ट कर दिया।

कटे हुए सिर आकाश में दौड़ते हैं और जय-जय की ध्वनि करते हुए भय उत्पन्न करते हैं। 'लक्ष्मण और वानर राज सुग्रीव कहाँ हैं? कोसलपति रघुबीर कहाँ हैं? 'राम कहाँ है?' ऐसा कहकर मुखियाओं के समूह दौड़े, उन्हें देखकर बंदर भाग गये।

तब रघुकुलमणि श्री रामजी ने अपना धनुष तैयार करके हंसकर अपने बाणों से उन सिरों को अच्छी तरह बींध डाला। हाथों में. बहुत-सी कालिकाएँ एकत्र होकर केशों की माला लेकर रुधिस्की नदी में स्नान करने चली गईं। मानो वह युद्ध रूपी वट वृक्ष की पूजा करने जा रही हो।

तब रावण ने क्रोधित होकर प्रचंड शक्ति छोड़ी। वह विभीषण के सामने ऐसे चला जैसे काल (यमराज) उसे दंड दे रहा हो। उस अत्यंत भयानक शक्ति को आते देख और यह सोचकर कि शरणागत व्यक्ति के कष्टों का नाश करना ही उनकी प्रतिज्ञा है, श्रीराम ने तुरंत विभीषण को पीछे धकेल दिया और स्वयं सामने खड़े होकर उस शक्ति को सहन कर लिया।

हुई. भगवान को प्रसव पीड़ा (शारीरिक कष्ट) होता देख विभीषण क्रोधित हो हाथ में गदा लेकर दौड़े और बोले- अरे अभागे! मूर्ख, घृणित मूर्ख! आपने देवता, मनुष्य, ऋषि और नाग सभी का विरोध किया। तुमने आदरपूर्वक अपना शीश भगवान शिव को अर्पित कर दिया। इससे हर एक के बदले करोड़ों मिलते थे.

इसलिये हे दुष्ट! आप अभी भी जीवित हैं। लेकिन अब समय आपके सिर पर नाच रहा है. और मूर्ख! क्या तुम राम से विमुख होकर धन (सुख) चाहते हो? इतना कहकर विभीषण ने रावण की छाती के मध्य भाग में गदा से प्रहार किया।

उसकी छाती के मध्य में एक कठोर गदा का अत्यंत तीव्र प्रहार पाकर वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसके दसों मुखों से रक्त बहने लगा; उसने खुद पर नियंत्रण पा लिया और गुस्से से भर कर भाग गया। दोनों महाबली योद्धा आपस में भिड़ गये और एक-दूसरे के विरुद्ध मल्लयुद्ध करने लगे। श्री रघुवीर के बल पर अभिमान विभीषण उन्हें (रावण जैसे विश्वविजयी योद्धा को) पासंग के बराबर भी नहीं मानते।

, शिवजी कहते हैं--]हे उमा. विभीषण: क्या कंभी रावण के सामने आंख भी उठा सकता था? लेकिन अब वह समय की तरह उससे लड़ रहा है. यह श्री रघुवीर का प्रभाव है। विभीषण को अत्यधिक थका हुआ देखकर हनुमानजी पर्वत लेकर दौड़े। उन्होंने उसके रथ, घोड़े और सारथी को मार डाला और उसकी छाती पर लात मारी।

रावण खड़ा तो रहा, परंतु उसका शरीर अत्यंत कांपने लगा। विभीषण वहां गए जहां सेवकों के रक्षक श्री रामजी थे और रावण ने उन्हें चुनौती दी और हनुमानजी को मार डाला। उन्होंने अपनी पूँछ फैलाई और आकाश में चले गये।

रावण ने पूंछ पकड़ ली, हनुमानजी उसे अपने साथ लेकर उड़ गए। तब महाबली हनुमानजी पीछे मुड़े और उनसे युद्ध किया। दोनों समान योद्धा आकाश में लड़ने लगे और क्रोधित होकर एक-दूसरे को मारने लगे।

वे दोनों आकाश में अनेक करतब दिखाते हुए इस प्रकार प्रकट हो रहे हैं मानो काजलगिरि और सुमेरु पर्वत युद्ध कर रहे हों। जब राक्षस अपनी बुद्धि और बल से पराजित नहीं हो सका, तब मारुति श्री हनुमानजी ने प्रभु का स्मरण किया।

श्री रघुवीर का स्मरण करके वीर हनुमानजी ने रावण को ललकारा और उसका वध कर दिया। वे दोनों पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं और फिर उठकर लड़ने लगते हैं; देवताओं ने उन दोनों की जय-जयकार की। हनुमानजी का दुर्भाग्य देखकर वानर और भालू क्रोधित होकर भाग गए। लेकिन युद्ध के नशे में चूर रावण ने अपनी शक्तिशाली भुजाओं के बल से सभी योद्धाओं को कुचलकर रख दिया।

तब श्री रघुवीर की ललकार सुनकर वीर वानर भाग गये। वानरों के प्रबल समूह को देखकर रावण ने माया प्रकट कर दी। वह एक पल के लिए गायब हो गया. फिर वह स्वरूप अनेक रूपों में प्रकट हुआ। श्रीरघुनाथजी की सेना में जितने रीछ और वानर थे, रावण सब ओर बिखर गया।

वानरों को अनंत रावण का दर्शन हुआ। रीछ-वानर सब इधर-उधर भागने लगे। बंदर धैर्यवान नहीं होते. हे लक्ष्मणजी! हे रघुवीर! वे हमें बचा लो, हमें बचा लो चिल्लाते हुए भाग रहे हैं. करोड़ों रावण दसों दिशाओं में दौड़ रहे हैं और जोर-जोर से भयंकर गर्जना कर रहे हैं। सभी देवता भयभीत होकर यह कहते हुए भाग गये कि हे भाई! अब जीत की उम्मीद छोड़ दो!

एक ही रावण ने सभी देवताओं पर विजय प्राप्त की थी, अब तो अनेक रावण हो गये हैं। इसलिये अब तुम पर्वत की कन्दराओं में शरण लो (अर्थात् उनमें छिप जाओ)। केवल ब्रह्मा, शंभु और वे बुद्धिमान ऋषि ही वहाँ खड़े रह गये, जिन्होंने भगवान की महिमा को कुछ-कुछ जान लिया था। जो लोग भगवान की महानता को जानते थे वे बिना किसी डर के डटे रहे।

वानरों ने शत्रुओं (अनेक रावणों) को सच्चा मान लिया। [इससे] सभी वानर और भालू विचलित हो गये और बोले, 'हे दयालु! मेरी रक्षा करो' [इस प्रकार पुकारते हुए] और डर के मारे भाग गए। हनुमानजी, अत्यंत शक्तिशाली योद्धा, अंगद और नील से युद्ध करते हैं और लाखों योद्धाओं, रावण को कुचल देते हैं, जो विश्वासघाती भूमि से नरक की तरह बढ़े हैं।

भगवान ने सारी माया एक क्षण में काट दी। जैसे सूर्य के उदय होते ही अंधकार का समूह फूट (नष्ट) हो जाता है। अब केवल एक ही रावण को देखकर देवता प्रसन्न हो गये और उन्होंने पीछे मुड़कर भगवान पर बहुत से पुष्पों की वर्षा की।

श्रीरघुनाथजी ने भुजा उठाकर सब वानरों को लौटा दिया। फिर वे एक दूसरे को पुकारते हुए लौट आये। भगवान की शक्ति पाकर रीछ-वानर भाग गये। वे शीघ्रता से कूदकर युद्धभूमि में आ गये।

देवताओं को श्री रामजी की स्तुति करते देख रावण ने सोचा, मैं उनकी बात में एक हूँ। [लेकिन वे नहीं जानते कि मैं उनके लिए काफी हूं। और कहा--अरे मूर्खों! तुम हमेशा मेरे बदमाश हो (वह जो मेरी मार खाता है)। इतना कहकर वह क्रोधित होकर आकाश की ओर (देवताओं की ओर) दौड़ा।

देवता चिल्लाते हुए भागे। [रावण ने कहा--दुष्ट लोग। तुम मुझसे आगे कहाँ जा सकते हो? देवताओं को व्याकुल देखकर अंगद ने दौड़कर छलांग लगायी और रावण के पैर पकड़कर उसे पृथ्वी पर पटक दिया।

उसे पकड़कर, पीठ पर पटककर और लातें मारकर बालिपुत्र अगद प्रभु के पास गये। रावण सावधान होकर उठा और अत्यंत कठोर शब्दों में गर्जना करने लगा। उसने शीघ्रता से दस धनुष चढ़ाये और उन पर अनेक बाणों की वर्षा आरम्भ कर दी। उसने सभी योद्धाओं को घायल और भयभीत कर दिया और उनकी ताकत देखकर वह खुश हो गया।

तब श्रीरघुनाथजी ने रावण के सिर, भुजाएँ, बाण और धनुष काट दिये। लेकिन फिर वे बहुत बढ़ गए, जैसे तीर्थयात्रा में किए गए पाप बढ़ गए (कई गुना अधिक भयानक परिणाम देने वाले)। शत्रु के सिर और भुजाओं की वृद्धि देखकर भालू और वानर अत्यंत क्रोधित हो गये।

यह मूर्ख हाथ और सिर काट देने पर भी नहीं मरता। इतना कहकर रीछ और वानर योद्धा क्रोधित होकर भाग गये।

बालि के पुत्र अंगद, मारुति हनुमानजी, नल, नील, वानर राजा सुग्रीव और द्विविद आदि अपनी छाती और पर्वतों से उस पर आक्रमण करते हैं। वह उन पर्वतों और वृक्षों को पकड़कर वानरों को मार डालता है। कुछ बंदर अपने नाखूनों से शत्रु के शरीर को फाड़कर भाग जाते हैं तो कुछ उसे लात मारते हैं। तब नल और नील रावण के सिर पर चढ़ गये और अपने नाखूनों से उसके माथे को फाड़ने लगे।

खून देखकर उसके हृदय में बड़ा दुःख हुआ। उसने उन्हें पकड़ने के लिए अपने हाथ बढ़ाए, लेकिन वे हटे नहीं, वे उसके हाथों के ऊपर से ऐसे सरकते रहे मानो वे दो प्रभात कमलों के जंगल में घूम रहे हों। उसे क्रोध आ गया और उसने झपटकर

उन दोनों को पकड़ लिया। उन्होंने उसे धरती पर पटकते हुए उसके हाथ मरोड़ दिए और भाग निकले। क्रोधित होकर उसने दस धनुष हाथ में लिये और बाणों से मारकर वानरों को घायल कर दिया।

हनुमानजी और सभी वानरों को मूर्छित करने और शय्या के लिए समय मिलने से रावण प्रसन्न हुआ। समस्त वानर वीरों को मूर्च्छित देखकर रणधीर जाम्बवान दौड़े। जाम्बवान के साथ जो भालू थे, वे पर्वत और संदूक पहनकर रावण को ललकारने और मारने लगे। बलशाली रावण क्रोधित हो गया और अपने पैर पकड़कर अनेक योद्धाओं को भूमि पर पटकने लगा। अपने दल का विनाश देखकर जाम्बवान ने क्रोधित होकर रावण की छाती पर लात मारी।

छाती पर जोरदार लात लगते ही रावण व्याकुल होकर रथ से पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसने अपने हाथों में भालू पकड़ रखे थे। ऐसा ही लग रहा था. मानो तुम रात्रि में कमल के पुष्पों में निवास कर रहे हो। उन्हें मूर्छित देखकर ऋक्षराज उन्हें लात मारकर भगवान जाम्बवान के पास गये। रात्रि होने को जानकर सारथी रावण को मूर्छित करके होश में लाने का उपाय करने लगा।

जब मूर्छा दूर हुई तो सभी रीछ-वानर भगवान के पास आये। उधर सभी राक्षस अत्यंत भयभीत हो गये और उन्होंने रावण को घेर लिया। उसी रात त्रिजटाने सीताजी के पास गईं और उन्हें सारा वृत्तांत सुनाया। शत्रु के सिर और भुजाओं के हिलने का वार्तालाप सुनकर सीताजी के हृदय में बड़ा भय हुआ। [उनका] चेहरा उदास हो गया, मन में चिंता उत्पन्न हो गई। तब सीताजी ने त्रिजटा से कहा- हे माता! आप बताते क्यों नहीं? क्या हो जाएगा ? यह सारी दुनिया को दुःख देने वाला कैसे मरेगा?

श्रीरघुनाथजी के बाणों से उसका मस्तक कट जाने पर भी वह नहीं मरता। रचनाकार सभी पात्रों को विपरीत दिशा में मोड़ रहा है। [सच्चाई यह है कि] यह मेरा दुर्भाग्य है जो मुझे जीवित रखे हुए है, जिसने मुझे भगवान के चरण कमलों से अलग कर दिया है। वही ईश्वर जिसने छल से झूठा स्वर्ण मृग रचा था, वही ईश्वर अब भी मुझ पर क्रोधित है, वही ईश्वर जिसने मुझे अत्यंत कष्टदायी दुःख सहने को मजबूर किया। और लक्ष्मण को कटु वचन बोले,

जो अब भी बार-बार श्रीरघुनाथजी रूपी बड़े-बड़े विषयुक्त बाणों से मुझे मार रहे हैं; और इतनी पीड़ा में भी जो मेरी जान बचा रहा है वह वही विधाता (रावण) है. दुनिया को जीवंत बना रहा है, कोई और नहीं. श्री रामजी के आशीर्वाद को याद करके जानकीजी अनेक प्रकार से विलाप कर रही हैं। त्रिजट ने कहा--अरे. राजकुमारी ! सुनो, देवताओं का शत्रु रावण हृदय में बाण लगते ही मर जायेगा।

रावण के हृदय में जानकी का वास है, यह सोचकर मैं जानकी के हृदय में निवास करता हूं और मेरे पेट में अनेक ग्रह हैं। अत: रावण के हृदय पर बाण लगते ही सारे ग्रह नष्ट हो जायेंगे। ये वचन सुनकर सीताजी अत्यंत प्रसन्न और दुःखी हुईं और त्रिजत्ना ने पुनः कहा- हे सुन्दरी! महान् संदेह का त्याग करो; अब सुनो, दुश्मन ऐसे मरेगा--

जब बार-बार सिर कटने से वह व्याकुल हो जायेगा और आपका ध्यान उसके हृदय से हट जायेगा, तब सुजान (अंतरयामी) श्री रामजी रावण के हृदय में बाण चलायेंगे। यह कहकर और सीताजी को अनेक प्रकार से समझाकर त्रिजटा फिर अपने घर चली गयी। श्री रामचन्द्रजी के स्वरूप का स्मरण करके जानकीजी को उनके वियोग से बड़ा दुःख हुआ।

वह अनेक प्रकार से रात और चंद्रमा की आलोचना कर रही है [और कह रही है-] रात इतनी लंबी हो गई है जितनी उम्र हो जाती है, कटती नहीं। जानकीजी श्री रामजी के वियोग से दुःखी हैं और मन में भारी विलाप कर रही हैं। जब विरह के कारण हृदय में तीव्र जलन होने लगी, तब उनके बाहरी नेत्र और भुजाएँ फड़कने लगीं। उन्होंने इसे शकुन समझकर मन में धैर्य रखा कि अब इपल श्री रघुबीर से अवश्य मिलेंगे।

बेवकूफ़ ! आपने मुझे युद्धभूमि से अलग कर दिया। अरे दुष्ट! अरे बेवकूफ! तुम्हें शर्म आनी चाहिए, तुम्हें शर्म आनी चाहिए। सारथी ने उसके पैर पकड़कर रावण को बहुत समझाया। सुबह होते ही वह रथ पर चढ़कर फिर दौड़ पड़ा। रावण का आगमन सुनकर वानर सेना में बड़ी भगदड़ मच गई। भारी योद्धा सब ओर से पर्वत और वृक्ष उखाड़कर दाँत पीसते हुए [क्रोध में] भागे।

भयंकर और विकराल वानर और भालू पर्वत को हाथ में लेकर दौड़ पड़े। वे अत्यधिक क्रोध से आक्रमण करते हैं। उसके वध से राक्षस भाग गये। शक्तिशाली वानरों ने शत्रु सेना का ध्यान भटका दिया और फिर रावण को घेर लिया। वानरों ने उसे चारों ओर से मारकर तथा उसके शरीर को अपने नाखूनों से नोंच-नोंचकर व्याकुल कर दिया। वानरों को अत्यंत बलवान देखकर रावण ने सोचा और क्षण भर में माया फैला दी।

जब उसने कपट (भ्रम) किया। जब इसकी रचना हुई तो भयानक जीव प्रकट हुए। बेताल, भूत-पिशाच हाथों में धनुष-बाण लिये प्रकट हो गये। 8 योगिनियाँ एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में मानव खोपड़ी लिए ताजा खून पी रही हैं। वह नाचने लगीं और कई गाने गाने लगीं। वह पकड़ो आदि कठोर शब्द कह रही थी।

इस ध्वनि से सभी दिशाएँ भर गईं। वे मुंह खोलकर खाने के लिए दौड़ते हैं। फिर बंदर भागने लगे.

वानर जहाँ भी दौड़ते हैं उन्हें आग जलती हुई दिखाई देती है। वानर और भालू व्याकुल हो गये। तभी रावण ने रेत की वर्षा शुरू कर दी। चारों ओर के वानरों को थका कर रावण फिर गर्जना करने लगा। लक्ष्मणजी और सुग्रीव सहित सभी वीर मूर्छित हो गये। हा राम! हे रघुनाथ! श्रेष्ठ योद्धा पुकारते समय हाथ मलते (पश्चाताप) करते हैं। इस प्रकार सबकी शक्ति को तोड़कर रावण ने फिर एक और माया रची।

उन्होंने अनेक हनुमान प्रकट किये, जो पत्थर लेकर दौड़ते थे। उन्होंने चारों ओर अपने दल फैलाकर श्री रामचन्द्रजी को घेर लिया। वह पूँछ उठाकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा, मार डालो, पकड़ लो, जाने मत दो। उनके लंगूर (पूँछ) दसों दिशाओं की शोभा बढ़ा रहे हैं और उनके मध्य में कोसलराज श्री रामजी हैं।

उनके बीच में कोसल के राजा का सुन्दर काला शरीर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो ऊँचे तमाल वज्ज के लिये अनेक इन्द्रधनुषों की सुन्दर बाड़ बनायी गयी हो। भगवान को देखकर देवता मन में हर्ष और विषाद से (जय, जय, जय) कहने लगे। तब श्री रघुवीर को क्रोध आ गया और उन्होंने एक ही बाण से रावण की सारी माया नष्ट कर दी।

जब माया दूर हो गई तो वानर और भालू प्रसन्न हो गए और सभी अपने स्तन और पर्वत लेकर लौट आए। श्री राम जी ने बाणों का समूह छोड़ा, जिससे रावण के हाथ और सिर फिर कटकर पृथ्वी पर गिर पड़े। यदि सैकड़ों शेष, सरस्वती, वेद और कवि अनेक कल्पों तक श्रीगमजी और रावण के युद्ध की कथा गाते रहें, तो भी वे उससे आगे नहीं बढ़ सकते।

इसी गुण के कुछ गुण मंदबुद्धि तुलसीदास ने कहे हैं, जैसे मक्खी भी अपनी चेष्टा के अनुसार आकाश में उड़ती है। सिर और हाथ कई बार काटे गए। फिर भी वीर रावण नहीं मरता। भगवान खेल रहे हैं; पसन्नत मुनि, सिद्ध और देवता उस क्लेश को देखकर (यह सोचकर कि भगवान को कष्ट हो रहा है) व्याकुल हो रहे हैं।

सिरों का समूह कटते ही बढ़ता है, जैसे हर लाभ के साथ लालच बढ़ता है। दुश्मन मरता नहीं, बहुत मेहनत करनी पड़ी. तब श्री रामचन्द्रजी ने विभीषण की ओर देखा। [शिवजी कहते हैं--हे उमा! जिसकी इच्छा मात्र से समय भी मर जाता है, वही प्रभु के प्रेम की परीक्षा ले रहा है। [विभीषण जी ने कहा--] हे सर्वज्ञ! वह

चराचर का स्वामी और भय का पालनकर्ता है! हे देवताओं और ऋषियों को सुख देने वाले! सुनना-

इसकी नाभि में अमृत का वास है। हे भगवान! रावण अपने बल पर जीता है। विभीषण के वचन सुनते ही दयालु श्रीरघुनाथजी प्रसन्न हो गये और विकगल बाण हाथ में ले लिया। उस समय तरह-तरह के शकुन होने लगे। बहुत से गधे, गधियाँ और कुत्ते रोने लगे। संसार के दुःख (अपशकुन) की सूचना देने के लिए पक्षी बोलने लगे। आकाश में सर्वत्र केतु (धूमकेतु तारे) प्रकट हो गये।

दसों दिशाओं में भीषण जलन होने लगी। बिना किसी उत्सव (योग) के ही सूर्य ग्रहण लगने लगा। मंदोदरी का हृदय जोरों से कांपने लगा और मूर्तियों की आंखों से जल बहने लगा। मूर्तियाँ रोने लगीं, आकाश से बिजलियाँ गिरने लगीं, वायु पीड़ा से बहने लगी, पृथ्वी काँपने लगी, बादल रक्त, बाल और धूल बरसाने लगे।

इस प्रकार इतने अम्ल अस्तित्व में आये कि उनका नाम कौन बता सकता है? इस अनन्त अराजकता को देखकर आकाश में देवता व्याकुल हो गये और जयजयकार करने लगे। देवताओं को भयभीत जानकर दयालु श्रीरघुनाथजी धनुष से बाण चलाने लगे।

श्रीरघुनाथजी ने कानों तक धनुष खींचकर इकतीस बाण छोड़े। श्री रामचन्द्रजी के वे बाण ऐसे चले, मानो कालसर्प हो। एक बाण ने नाभि का अमृत चूस लिया। अन्य तीस बाण क्रोधित होकर उसके सिर और भुजाओं पर लगे। तीर के सिरों और भुजाओं के साथ आगे बढ़ें। बिना सिर और भुजाओं वाला शरीर पृथ्वी पर नाचने लगा।

उसका धड़ बड़े वेग से दौड़ता है, जिससे पृथ्वी कांपने लगती है। तब भगवान ने बाण चलाकर उसके दो टुकड़े कर दिये। मरते समय रावण ने जोर से दहाड़कर कहा- रशम कहाँ है? मैं उन्हें चुनौती देता हूँ और युद्ध में मार डालता हूँ! रावण के गिरते ही धरती हिल गयी। समुद्र, नदियाँ, हाथी और सभी दिशाओं के पर्वत क्रोधित हो गये। क्रोधित होकर रावण ने दोनों टुकड़ों को फैलाया और रीछ-वानरों के समुदाय को दबाते हुए पृथ्वी पर गिर पड़ा।

रावण की भुजाएँ और सिर मंदोदरी के सामने रखकर राम-बाण उस ओर बढ़े जहाँ जगदीश्वर श्रीगमजी थे। सारे तीर जाकर तरकस में घुस गये। यह देखकर देवताओं ने नगाड़े बजाए। भगवान के मुख में रावण का तेज समा गया। यह देखकर भगवान शिव और ब्रह्माजी प्रसन्न हो गये। जय-जय की ध्वनि से ब्रह्मपथ गूंज उठा। मजबूत भुजाओं और गदाओं वाले श्री रघुवीर की जय हो।

देवताओं और ऋषियों के समूह पुष्प वर्षा करते हैं और कहते हैं- जय कृपालु, जय मुकुन्द, जय मुकद। है । क्रोध-विषाद, हर्ष-शोक, जन्म-मृत्यु आदि द्वंद्वों का नाश करने वाला वह भगवान है जो समर्पण करने वालों को सुख प्रदान करता है। हे तृष्णा के समूहों को विभाजित करने वाले! हे करुणा निधान!

करुणा का परम कारण! वह सदैव दयालु है! हे सर्वव्यापी शक्ति! आपकी जय हो। देवताओं की प्रसन्नता में फूल बरस रहे हैं, जोर-जोर से ढोल बज रहे हैं। युद्धभूमि में श्री रामचन्द्रजी के अंगों की बड़ी शोभा हुई।

सिर पर जटाओं का मुकुट है, जिसके बीच में अत्यंत सुंदर फूल सिर पर शोभा पा रहे हैं। मानो बिजली के समूहों सहित नक्षत्र नीले पर्वत की शोभा बढ़ा रहे हों। श्री रामजी अपनी भुजाओं से तीर-धनुष लहरा रहे हैं। शरीर पर रक्त के कण बहुत सुन्दर लगते हैं। मानो अनेक सुन्दर पक्षी तमाल की छाती पर निश्चल होकर अपने महान् सुख में मग्न बैठे हों।

भगवान श्री रामचन्द्रजी ने अपनी वर्षों की कृपा से देवताओं के समूह को शक्तिहीन कर दिया। वानर और भालू अत्यंत प्रसन्न हो गये और जयकारे लगाने लगे, सुखधाम मुकुन्द की जय हो।
अपने पति का सिर देखते ही मंदोदरी व्याकुल हो गई और बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी। स्त्रियाँ रोती हुई दौड़ीं और उसे (मंदोदरी को) उठाकर रावण के पास आईं।

पति की हालत देखकर वह रोने लगी। उनके बाल झड़ गए, उनका शरीर खुद पर काबू नहीं रख पा रहा था. वे अनेक प्रकार से छाती पीटते हैं और रावण की महिमा का बखान करते हैं। वह कहती है--) क्या तेरे ही बल से पृथ्वी सदैव काँपती रहती है? अग्नि, चन्द्रमा और सूर्य आपके सामने तेजहीन थे। आपका शरीर, जिसका भार कछुआ भी सहन नहीं कर सकता, आज धूल से लथपथ पृथ्वी पर पड़ा है!

वरुण, कुबेर, इन्द्र और वायु, इनमें से किसी ने भी युद्ध में आपके सामने धैर्य नहीं दिखाया। जय स्वामी आपने अपनी भुजाओं के बल से काल और यमराज को भी जीत लिया था। आज तुम अनाथ की भाँति वहाँ पड़े हो। आपकी बादशाही तो दुनिया भर में मशहूर है। धिक्कार है तेरे पुत्रों और तेरे कुटुम्बियों के बच्चों पर! इसका वर्णन नहीं किया जा सकता. श्री रामचन्द्रजी के विमुख हो जाने से आपकी ऐसी दुर्दशा हो गई कि आज परिवार में रोने वाला कोई नहीं बचा।

हे नाथ! विधाता की संपूर्ण सृष्टि आपके अधीन थी। लोकपाल सदा डरकर तुम्हें प्रणाम करते हैं। लेकिन अफसोस! अब तुम्हारे सिर और भुजाएँ गीदड़ खा रहे हैं। रामविमुख का ऐसा होना अनुचित नहीं है (अर्थात् उचित है)। हे पतिदेव! काल के वश में होने के कारण आपने किसी की भी बात नहीं मानी और ईश्वर को मनुष्य के रूप में जान लिया।

आप राक्षस रूप धारण करके वन को जलाने के लिये मनुष्य रूप में अग्नि रूप में श्रीहरि बने। हे प्रिय, उन दयालु देवताओं को, जिन्हें शिव और ब्रह्मा आदि देवता नमस्कार करते हैं! आपने नहीं भेजा. तुम्हारा यह शरीर जन्म से ही दूसरों को धोखा देने वाला और पापों से भरा हुआ है! इतना सब होते हुए भी जिन्होंने आपको अपना निवास स्थान दिया है, उन निर्भय ब्रह्मा श्री रामजी को मैं नमस्कार करता हूँ।

मंदोदरी की सच्चाई सुनकर देवता, ऋषि-मुनि और सिद्ध सभी प्रसन्न हुए। ब्रह्मा, महादेव, नारद, सनकादि और अन्य जो महान ऋषि थे जो भगवान के सार को जानते थे और उसके बारे में बात करते थे। श्रीरघुनाथजी को नेत्रों से देखकर वे सब प्रेम में पड़ गये और बहुत प्रसन्न हुए॥ अपने परिवार की सभी स्त्रियों को रोता देख विभीषणजी के मन में बहुत दुःख हुआ और वे उनके पास गये।

अपने भाई की हालत देखकर उसे दुःख हुआ। तब श्रम श्री रामजी ने अपने छोटे भाई को आदेश दिया कि [जाकर विभीषण को सांत्वना दे]। लक्ष्मणजी के बहुत प्रकार से समझाने पर विभीषण भगवान के पास लौट आये। भगवान ने उनकी ओर दयालु दृष्टि से देखा [और कहा--] सारा शोक समाप्त करो और रावण का अंतिम संस्कार करो। भगवान के आदेश का पालन करते हुए और अपने हृदय में समय और स्थान को ध्यान में रखते हुए, विभीषण ने सभी गतिविधियाँ विधिपूर्वक कीं।

मंदोदरी रावण का सारा राज्य त्यागकर हृदय में श्रीरघुनाथजी के गुणों का वर्णन करती हुई महलों में चली गयी। सभी अनुष्ठान करने के बाद, विभीषण ने आकर फिर से सिर झुकाया। तब कृपा के सागर से श्री रामजी ने अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी को बुलाया।

श्रीरघुनाथजी ने कहा कि आप, वानरराज सुग्रीव, अंगद, नल, नील, जाम्बवान और मारुति, सभी बुद्धिमान लोग, एक साथ विभीषण के साथ जाकर उसका राजतिलक करें। मैं अपने पिता के शब्दों के कारण शहर नहीं आ सकता। लेकिन मैं अपने जैसे बंदरों और छोटे भाइयों को भेजता हूं।

भगवान की बात सुनकर बंदर तुरंत चले गए और राज्याभिषेक की सारी व्यवस्था कर दी। विभीषण को आदरपूर्वक सिंहासन पर बिठाया गया और राजतिलक कर उनकी प्रशंसा की गई। सभी ने हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया। इसके बाद विभीषणजी सहित सभी लोग भगवान के पास आये। तब श्री रघुवीर ने वानरों को बुलाया और प्रेमपूर्ण वचन कहकर सबको प्रसन्न किया।

भगवान ने अमृत तुल्य वचन कहकर सबको प्रसन्न कर दिया कि तुम्हारे ही बल से यह बलशाली शत्रु मारा गया और विभीषण को राज्य मिल गया। इससे तीनों लोकों में आपकी कीर्ति सदैव नवीन रहेगी। जो मनुष्य मेरे साथ अत्यंत प्रेम से आपके मंगलमय यश का गान करेंगे, वे इस अपार संसार सागर से बिना किसी प्रयास के पार हो जायेंगे।

भगवान के वचन सुनकर वानरों का समूह संतुष्ट नहीं होता। उन सभी ने बार-बार सिर झुकाया और चरण कमल पकड़ लिये। तब प्रभु ने हनुमानजी को बुलाया। भगवान ने कहा--तुम लद्धा के पास जाओ। हर किसी को पता है। समाचार बताओ और अच्छी खबर लेकर वापस आओ। तभी हनुमानजी नगर में आये। यह सुनकर राक्षस-राक्षस! उनके निमित्त उसने अनेक प्रकार से हनुमानजी की पूजा की और उनके स्वागत के लिए दौड़ा। उन्होंने अनेक प्रकार से श्री जानकीजी के प्रति अपनी भक्ति प्रकट की।

हनुमानजी ने दूर से ही सीताजी को प्रणाम किया। जानकीजी ने पहचान लिया कि यह श्रीरघुनाथजी का दूत है [और पूछा--] हे पिताजी! मुझे बताओ, क्या कृपा के धाम मेरे भगवान अपने छोटे भाई और वानर सेना सहित कुशल से हैं? [हनुमान जी ने कहा--] हे माता! कोसलपति श्री रामजी सब प्रकार से सुरक्षित हैं। उन्होंने युद्ध में दस सिर वाले रावणकों को हराया है और विभीषण ने अचल राज्य को शाप दिया है। हनुमानजी की बात सुनकर सीताजी का हृदय हर्ष से भर गया।

श्री जानकीजी के हृदय में अपार हर्ष हुआ। उसका शरीर रोमांचित हो गया और आँखों में खुशी के आँसू भर आये। वह कहती है बस्ता--है हे। तुम्हारे लिए मैं क्या हूं? देना? इस समाचार के समान तीनों लोकों में और कुछ नहीं है! बोला--वह माँ! सुनो, आज निःसंदेह मैंने शत्रु सेनाओं को युद्ध में परास्त करके अपने भाई के साथ निःसंदेह सम्पूर्ण जगत का राज्य ले लिया है, जिसे मैं निःसंदेह अपने भाई के साथ देख रहा हूँ।

हे पिता! अब आप वैसा ही करें जिससे मैं इन नेत्रों से भगवान के कोमल काले शरीर का दर्शन कर सकूं। तब हनुमानजी श्री रामचड्ढाजी के पास गये और उन्हें जानकीजी का कुशल समाचार सुनाया। संदेश सुनकर सूर्यकुलभूषण श्री राम जी ने राजकुमार अंगद और विभीषण को बुलाया [और कहा--] पबनपुत्र हनुमान के साथ जाओ और जानकी को आदर सहित ले आओ।

वे सब तुरन्त वहाँ गये जहाँ सीताजी थीं। सभी राक्षस विनयपूर्वक उनकी सेवा कर रहे थे। विभीषणजी ने शीघ्र ही उन्हें समझाया। उसने सीताजी को अनेक प्रकार से सजाया, अनेक प्रकार के आभूषणों से अलंकृत किया और फिर एक सुंदर सुसज्जित पालकी लेकर आया। सीताजी प्रसन्न हो गईं और अपने सुखधाम प्रियतम श्री राम का स्मरण किया और आनंदपूर्वक वहां चढ़ गईं।

गार्ड हाथों में लाठियां लेकर घूमते रहे। सबके मन में बड़ा हर्ष (उत्साह) है। जब भालू और वानर सभी दर्शन के लिए आये तो रक्षकों को क्रोध आ गया और वे उन्हें रोकने के लिए दौड़े। श्री रघुवीर बोले- हे मित्र! मेरी बात सुनो और सीताका को पैदल ले आओ, ताकि बंदर उसे माँ की तरह देख सकें। गोसाईं श्री रामजी ने हँसकर यह बात कही।

तभी करुणा के भण्डार श्रोरामजी ने लीला को कुछ कठोर शब्द कहे, जिसे सुनकर शक्षसियाँ दुःखी होने लगीं। हृदय, वचन और कम से शुद्ध श्री सीताजी ने प्रभु को अपना शीश अर्पित करते हुए कहा - हे लक्ष्मण! तुम मेरे धर्म के नेगी (धार्मिक आचरण में सहायक) बनो और तुरंत अग्नि तैयार करो।

श्री सीताजी की विरह, ज्ञान, धर्म और नीति से भरी वाणी सुनकर लक्ष्मणजी की आँखों में दुःख के आँसू भर आये। दोनों हाथ जोड़कर खड़े रहे. वे भी प्रभु से कुछ नहीं कह सके। तब श्री रामजी का रुख देखकर लक्ष्मणजी दौड़े और आग जलाकर ढेर सारी लकड़ियाँ ले आये। आग को इतनी बढ़ती देखकर जानकीजी के हृदय में हर्ष हुआ। उसे डरने की कोई बात नहीं थी.

, सीताजी ने लीला से कहा--) यदि मेरे मन, शरीर और कर्म से श्री रघुवीर के अतिरिक्त मेरे हृदय में अन्य कोई गति (शरण) नहीं है, तो सबके मन की गति को जानने वाले अग्निदेव मुझे अपना लें और बाद में शीतल हो जाएं। अपने मन की गति को जानना। मैं मस्त हो गया. अग्नि में प्रवेश किया. प्रतिबिंब? (सीताजी की छाया) और उनका सांसारिक कलंक भीषण अग्नि में जल गये। परमेश्वर के इन चरित्रों को कोई नहीं जानता था। देवता, सिद्ध और ऋषि सभी आकाश में खड़े होकर देखते रहते हैं।

तब अग्नि ने शरीर धारण किया और वेदों तथा जगत् में विख्यात वास्तविक श्री (सीताजी) का हाथ पकड़कर श्री रामजी को उसी प्रकार समर्पित कर दिया, जैसे क्षीरसागर ने लक्ष्मी को भगवान विष्णु को समर्पित कर दिया था। वह सीताजी श्री रामचन्द्र के बायीं ओर बैठीं। उनका अति सुन्दर सौन्दर्य अति सुन्दर है। मानो स्वर्ण कमल की कली नये खिले नीले कमल को सुशोभित कर रही हो।

देवता प्रसन्न होकर फूल बरसाने लगे। आकाश में बिजलियाँ बजने लगीं। किन्नर ने गाना शुरू कर दिया. विमानों पर चढ़ी हुई अप्सराएँ नृत्य करने लगीं। श्री जानकीजी सहित भगवान श्री रामचन्द्रजी की अपरिमित एवं अपार शोभा देखकर रीछ-वानर प्रसन्न हो गये और प्रसन्नता के मारे 'श्रीरघुनाथजी की जय' कहने लगे।

तब श्रीरघुनाथजी की आज्ञा पाकर सारथि इन्द्र ने मातलि (रथ लेकर) के चरणों में सिर झुकाया। गया। उसके बाद सदैव स्वार्थी देवता आये। वह ऐसे शब्द कह रहे हैं.'

हे दीनबंधु. हे दयालु रघुराज! हे परमेश्वर! आपने देवताओं पर बड़ी कृपा की। यह दुष्ट, कामी और दुराचारी रावण, जो संसार से विश्वासघात करने को तैयार था, अपने ही पाप से नष्ट हो गया। आप सदृश, ब्रह्म, अविनाशी, नित्य, एकरस, किसी भी इच्छा से उदासीन (शत्रु-मित्र-मुक्त भाव वाले), अखण्ड, निर्गुण, अजन्मा, पापरहित, निर्विकार, अजेय, अच्युत (जिसकी शक्ति कभी व्यर्थ नहीं जाती) और दयालु हैं।

आपने स्वयं मत्स्य, कच्छप, बराह, नृसिंह, वामन और परशुराम के शरीर धारण किये। हे नाथ! जब-जब देवताओं को दुःख हुआ तब-तब आपने अनेक शरीर धारण करके उनके दुःखों का नाश किया। वह दुष्ट, मलिन हृदय, देवताओं का शत्रु, वासना, लोभ और नशे का आदी तथा अत्यंत क्रोधी था। ऐसे दुष्टों का नेता भी आपका परमपद प्राप्त कर चुका है। इससे हमें आश्चर्य हुआ.

हम, देवता, महान अधिकार होने के बावजूद, आपके हृदय में समर्पित हैं और आपकी भक्ति को भूल गए हैं और लगातार अस्तित्व के सागर (जन्म और मृत्यु के चक्र) के प्रवाह में हैं। अब हे प्रभु! हम आपकी शरण में आये हैं, कृपया हमारी रक्षा करें। सभी देवता और सिद्ध वहाँ हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए खड़े हो गये। तब ब्रह्माजी अत्यंत प्रेम से भरकर स्तुति करने लगे-

आपके शरीर में कई कामदेवों के समान एक अनोखी लेकिन अनोखी छवि है। सिद्ध, मुनि और कवि आपकी स्तुति गाते रहते हैं। आपकी कीर्ति पवित्र है.

आपने गरुड़ की भाँति क्रोध में आकर रावण रूपी महान सर्प को पकड़ लिया। हे प्रभो। आप सेवकों को आनंद देने वाले, दुःख और भय का नाश करने वाले, सदैव क्रोध से रहित और सदैव ज्ञान से परिपूर्ण रहने वाले हैं। आपका अवतार उत्तम है, अपार दिव्य गुणों वाला है, पृथ्वी का भार उठाने वाला है और ज्ञान का भंडार है।

[लेकिन अवतार लेने के बाद भी] आप अनादि, अजन्मा, सर्वव्यापक, एक (अद्वितीय) और शाश्वत हैं। हे करुणाकी खान श्री रामजी! मैं बहुत खुशी के साथ आपका स्वागत करता हूं। हे रघुकुल के रत्न! हे दुष्ट दानव का नाश करने वाले और सभी बुराइयों का नाश करने वाले! विभीषण गरीब था, आपने उसे (लंका का) राजा बना दिया।

यह गुणों और ज्ञान का भण्डार है। हे सम्मानहीन! हे अजन्मा, सर्वव्यापक और सांसारिक विकारों से मुक्त, श्री राम! मैं तुम्हें प्रतिदिन नमस्कार करता हूँ। आपकी भुजाओं का वैभव और बल अद्भुत है। दुष्ट समूह का नाश करने में आप अत्यंत कुशल हैं। आप दीन-दुखियों पर दया करने वाली, निष्काम भाव से उनका कल्याण करने वाली तथा सौन्दर्य के धाम हैं।

श्री जानकीजी सहित आपको मेरा नमस्कार है। आप हमें भवसागर से छुड़ाने वाले, कारण प्रकृति और कर्म जगत् दोनों से परे हैं तथा मन में उत्पन्न होने वाले कठिन दोषों को दूर करने वाले हैं। जिस प्रकार सूर्य और सूर्य की रोशनी अलग-अलग हैं और अलग नहीं हैं, उसी प्रकार आप भी संसार से अलग और अभिन्न हैं।

हे सर्वव्यापक प्रभु! ये सभी बंदर कृतज्ञता के प्रतीक हैं, जो आपके चेहरे को सम्मान की दृष्टि से देख रहे हैं. [और] अरे हरे! हमारे [अमर] जीवन और दिव्य (दिव्य) शरीर को धिक्कार है, जिसे हम आपकी भक्ति से रहित संसार में (सांसारिक विषयों में) भूल गए हैं।
हे विनम्र! अब दया करो और मेरी उस फूट डालने वाली बुद्धि को दूर कर दो, जिसके कारण मैं गलत काम करता हूँ और दुःख को सुख समझकर आनन्दपूर्वक विचरण करता हूँ।

आप दुष्टों और पृथ्वी के सुन्दर आभूषणों का खण्डन करने वाले हैं। आपके चरण कमलों की सेवा श्री शिव और पार्वती करते हैं। हे राजाओं के राजा: मुझे यह वरदान दें कि मैं अपने कल्याण के लिए आपके कमल चरणों में सदैव अमर प्रेम रख सकूं। इस प्रकार ब्रह्माजी ने बड़े उत्साहित होकर निवेदन किया। श्री रामजी के सुन्दर समुद्र को देखते समय उनके नेत्रों की दृष्टि नहीं हटती थी।

,श्रीरामजी ने कहा--]हे पिताजी! यह सब आपके गुणों का ही परिणाम है कि मैंने अजेय राक्षस राजा को परास्त कर दिया है। पुत्र की बातें सुनकर उनका प्रेम बहुत बढ़ गया। आँखें भर आईं और रोमावली उठ खड़ी हुई। श्रीरघुनाथजी ने उनके पूर्व (जीवनकाल के) प्रेम का विचार करके तथा पिता की ओर देखकर उन्हें अपने स्वरूप का दृढ़ ज्ञान कराया॥ हे उमा! दशरथ जी ने अपना मन भेदभाव में लगा लिया था, इस कारण उन्हें मोक्ष [कैवल्य] की प्राप्ति नहीं हुई।

जो भक्त माया से रहित और दिव्य गुणों से युक्त सच्चिदानंदमय स्वरूप की पूजा करते हैं, उन्हें इस प्रकार की मुक्ति भी नहीं मिलती है। श्री रामजी उन्हें अपनी भक्ति प्रदान करते हैं। भगवान [इष्टबुद्धि] को बार-बार नमस्कार करके दशरथ जी प्रसन्नतापूर्वक देवलोक को चले गये। अपने छोटे भाई लक्ष्मणजी और जानकीजी सहित परम कुशल भगवान श्री कोसलधीश की शोभा देखकर देवराज इन्द्र मन में प्रसन्न हो गये और स्तुति करने लगे-

सौंदर्य के धाम, शरणागत को विश्राम देने वाले, सर्वश्रेष्ठ तरकश, धनुष और बाण वाले, शक्तिशाली और राजसी हथियार और लाठी वाले श्री रामचन्द्र की जय हो। वह खर और दूषण का शत्रु और राक्षसों की सेना का संहारक है। हे नाथ आपकी जय हो! आपने इस दुष्ट को मार डाला, जिससे सभी देवता नष्ट हो गये।

हे जिसने भूमिका का बोझ खो दिया है! हे अपार महिमा वाले! आपकी जय हो। हे शत्रु रावण! है कपालू, आपकी जय। तुमने रणभूमि को दुःखमय (विनाशकारी) बना दिया।

लंका के राजा रावण को अपने पुत्र पर बहुत घमंड था। उसने सभी देवताओं और गंधर्वों को अपने वश में कर लिया था और वह हठपूर्वक सभी ऋषियों, सिद्धों, मनुष्यों, पक्षियों और साँपों आदि के पीछे लग गया। वह दूसरों को धोखा देने के लिए तैयार था और अत्यंत दुष्ट था। उस पापी को वैसा ही फल मिला। अब हे दीनों पर दया करनेवालों! हे कमल के समान विशाल नेत्रों वाली! सुनना -

मुझे बहुत गर्व था कि मेरे जैसा कोई नहीं है, लेकिन अब प्रभु (आपके) के चरणकमलों के दर्शन पाकर मेरा अंगूरदाता होने का गर्व दूर हो गया। कुछ लोग उस निर्गण ब्रह्म का ध्यान करते हैं जिसे वेद अव्यक्त (निराकार) कहते हैं। परन्तु हे रामजी! तुम्हारा यह गुण मुझे बहुत प्रिय लगता है, कोसलराज-सौ। श्री जानकीजी और छोटे भाई, कृपया मेरे हृदय में अपना घर बनाइये। हे रामनिवास! मुझे अपना दास समझो और अपनी भक्ति दो।

हे रामनिवास! हे समर्पण के भय पर विजय पाने वाले, मुझे अपनी भक्ति दो। हे सुखधाम! हे रघु कुल के भगवान औरम चंद्र, जिनके पास कई कामदेवों की छवि है! में तुम्हें सलाम करता हुँ। हे श्री रामजी, जो देवताओं के समूह को आनंद देने वाले हैं, जो सुख और दुःख [जन्म और मृत्यु, खुशी और दुःख, खुशी और दुःख आदि] को नष्ट कर देते हैं, जिनके पास मानव शरीर है, जो अतुलनीय बल वाले हैं, वे ब्रह्मा को स्वीकार्य हैं और शिव आदि तथा करुणा से सौम्य श्री रामजी! में तुम्हें सलाम करता हुँ।

वह दयालु है! अब मेरी ओर कृपा करके (कृपापूर्वक) दृष्टि करके आज्ञा करो कि मैं क्या सेवा करूँ! इन्द्र के ये प्रिय वचन सुनकर दयालु श्री रामजी बोले-- हे देवराज! सुनो, हमारे वानर और भालू, जो रात्रिचर प्राणियों द्वारा मारे गये हैं, पृथ्वी पर पड़े हैं। उन्होंने मेरे कल्याण के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।'

हे सुजान देवराज! उन सबको जीवनदान दो।[काकभुशुण्डिजी कहते हैं--] हे गरुड़! सुनो, प्रभु के ये वचन बड़े गूढ़ (गहरे) हैं। इन्हें केवल बुद्धिमान ऋषि ही जान सकते हैं। भगवान श्री राम त्रिलोकी को मारकर उसे पुनः जीवित कर सकते हैं। यहां उन्होंने केवल इन्द्र की स्तुति की है।

इन्द्र ने अमृत वर्षा करके वानरों और भालुओं को पुनर्जीवित कर दिया। सब लोग आनन्द से उठकर प्रभु के पास आये। दोनों पक्षों पर अमृत की वर्षा हुई। लेकिन केवल भालू और बंदर ही जीवित हुए, राक्षस नहीं। क्योंकि मृत्यु के समय राक्षसों का मन राममय हो गया था।

अत: वह स्वतंत्र हो गया, उसके भव-बंधन मुक्त हो गये। लेकिन वानर और भालू सभी देवांश (भगवान की लीला वाले लोग) थे। अत: श्रीरघुनाथजी की इच्छानुसार वे सभी जीवित हो गये।

दीन-दुखियों की परवाह किसे है? जिसने सभी राक्षसों को मुक्त कर दिया! दुष्ट, पापों के धाम और कामी रावण को भी वह गति प्राप्त हुई जो श्रेष्ठ ऋषि-मुनि भी नहीं पा सके। फलों की वर्षा करके सभी देवता सुन्दर विमानों पर सवार होकर चले। तब अच्छा अवसर जानकर भगवान शिव श्री रामचन्द्रजी के पास आये-

और अत्यंत प्रेम से हाथ जोड़कर, जल से भरे हुए कमल के समान नेत्रों से, कांपते हुए शरीर और गदगद कण्ठ से त्रिपुरारी शिवजी विनती करने लगे- हे रघुकुल के स्वामी! कृपया अपने सुन्दर हाथों में उत्तम धनुष तथा सुन्दर बाण देकर मेरी रक्षा करें। आप महामोह रूपी बादलों को, संशय रूपी जंगल को उड़ाने वाले

दल-सहायक हैं। देवताओं को भस्म करने और उन्हें प्रसन्न करने के लिए अग्नि है।

हे सुन्दर शरीर! हे कमल नयन - हे दीन मित्र! हे शरणागत को दुःख से मुक्त करने वाले! हे गज रामचख्ढाजी! आप छोटे भाई लक्ष्मण और जानकीजी सहित सदैव मेरे हृदय में निवास करते हैं। आप ऋषियों को आनंद देने वाले, पृथ्वी के रत्न, तुलसीदास के स्वामी और भय का नाश करने वाले हैं। हे नाथ! जब आपका राज्याभिषेक अयोध्यापुरी में होगा, तब हे दया के सागर! मैं तुम्हारा उदार खेल देखने आऊँगा।

जब भगवान शिव आग्रह करके चले गये, तब विभीषणजी भगवान के पास आये और उनके चरणों में सिर नवाकर कोमल स्वर में बोले- हे धनुषधारी प्रभु! मेरी प्रार्थना सुनो--- तुमने रावण को उसके परिवार और सेना सहित मार डाला, त्रिभुवन में अपनी पवित्र कीर्ति फैलाई और मुझ दीन, पापी, मूर्ख और जातिहीन को अनेक प्रकार से आशीर्वाद दिया।

अब हे प्रभु! इस सेवक के घर को पवित्र करो और वहां जाकर स्नान करो, जिससे युद्ध की थकान दूर हो जाये। हे दयालु! राजकोष, महल और संपत्ति का निरीक्षण करो और खुशी-खुशी उसे बंदरों को दे दो। हे भगवान! मुझे सब प्रकार से स्वीकार करो और फिर हे प्रभु! मेरे साथ अयोध्यापुरी चलो। विभीषणजी के कोमल वचन सुनते ही दीन भगवान की दोनों विशाल आंखें प्रेमाश्रुओं से भर गईं।

[श्री रामजी ने कहा--] हे भाई! सुनो, तुम्हारा खजाना और घर सब मेरे हैं, यह सत्य है। परंतु भरत की दशा को याद करके मेरे लिए एक-एक क्षण कल्प के समान बीत रहा है। वह साधु के वेश में अपने (पतले) शरीर से निरंतर मेरे नाम का जप कर रहा है। हाय दोस्त! वही उपाय करें जिससे मैं उन्हें यथाशीघ्र देख सकूं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ।

यदि अवधि बीत जाने के बाद मैं चला गया तो मैं अपने भाई को नहीं जीत पाऊंगा। छोटे भाई भरतजी की गीतिका को याद करके भगवान का शरीर बार-बार कांप रहा है। [श्रीगारामजी ने पुनः कहा--] यह विभीषण है! आप सारे कल्प तक राज्य करें, मन में निरन्तर मेरा स्मरण करते रहें। तब तुम्हें मेरा वह स्थान मिलेगा जहां सभी संत जाते हैं।

श्री रामचन्द्रजी के वचन सुनते ही विभीषणजी प्रसन्न हो गये और कृपाधाम श्री रामजी के चरण पकड़ लिये। सभी वानर और भालू प्रसन्न हो गये और भगवान के चरण पकड़कर उनके पवित्र गुणों की स्तुति करने लगे। तब विभीषणजी

महलों में गये और विमान को रत्नों के समूह तथा अन्य वस्तुओं से भर लिया। फिर उस भूतल विमान को लाकर भगवान के सामने रख दिया। तब प्रभु श्री राम हँसे और बोले-

हे सखा विभीषण! सुनो, विमान पर चढ़ो और आकाश में जाकर वस्त्र और आभूषणों की वर्षा करो। तब (आज्ञा सुनकर) विभीषणजी ने आकाश में जाकर सब रत्न और वस्त्र बरसा दिये। उसे जो अच्छा लगता है वह ले लेता है। बंदर रत्नों को खाने लायक न समझकर मुँह में ले लेते हैं और फिर उगल देते हैं। यह दृश्य देखकर परम विनोदी और सुसज्जित श्री रामजी सीताजी और लक्ष्मणजी सहित हँसने लगे।

ऋषिगण जिनका ध्यान भी नहीं करते, वेद जिन्हें नेति-नेति कहते हैं, वही श्री रामजी समुद्र में वानरों के साथ नाना प्रकार की शरारतें करते हैं। [शिवजी कहते हैं--] हे उमा! अनेक प्रकार के योग, जप, दान, तप, यज्ञ, व्रत और नियमों का पालन करने पर भी श्री रामचन्द्रजी उतनी कृपा नहीं करते जितनी निष्काम प्रेम होने पर करते हैं।

रीछ-वानरों को वस्त्र-आभूषण मिल गये और वे उन्हें पहनकर श्रीरघुनाथजी के पास आये। कोसलपति श्री रामजी भिन्न-भिन्न जाति के वानरों को देखकर बार-बार हँस रहे हैं।

श्रीरघुनाथजी ने कृपादृष्टि की और सब पर दया की॥ तब वह कोमल वचन बोले-हे भाइयों! आपके ही बल से मैंने रावण को मारा और फिर विभीषण का राजतिलक किया। अब तुम सब लोग अपने-अपने घर जाओ। तुम मुझे स्मरण करते रहना और किसी से मत डरना। यह वचन सुनकर सभी वानर प्रेम से अभिभूत हो गये और हाथ जोड़कर आदरपूर्वक बोले---

प्रभु की [इस तरह | बातें सुनकर हम शर्म से मरे जा रहे हैं. क्या मच्छरों से भी गरुड़ को कोई लाभ हो सकता है? श्री रामजी के भाव देखकर रीछ-वानर प्रेम में मग्न हो गये। उन्हें घर जाने की कोई इच्छा नहीं है. परन्तु भगवान की प्रेरणा (आदेश) से सभी वानर और भालू हर्ष और विषाद के साथ श्री रामजी के स्वरूप को हृदय में रखकर और उनसे अनेक प्रकार से विनती करते हुए अपने घर चले गये।

वानरराज सुग्रीव, नील, ऋक्षराज जाम्बवान, अंगद, नल, हनुमान, विभीषण तथा अन्य शक्तिशाली वानर सेनापति कुछ नहीं कह सकते; प्रेम से आँखों में आँसू भरकर उन्होंने पलकें झपकाना बंद कर दिया और श्री रामजी की ओर

देखने लगे। उनका अपार प्रेम देखकर श्रीरघुनाथजी ने सबको विमान पर चढ़ा लिया। उसके बाद मन में चल रही भटकन पर सिर झुकाकर मैंने विमान उत्तर की ओर उड़ाया।

विमान चलते समय काफी आवाज कर रहा है. सब बोल रहे हैं जय श्री रघुवीर. विमान में एक बहुत ऊंचा और सुंदर सिंहासन है, भगवान श्री रामचन्द्रजी ताजिये के साथ वहां विराजमान थे। श्री रामजी अपनी पत्नी सहित ऐसे शोभा पा रहे हैं, मानो सुमेर के शिखर पर बिजली चमकाने वाला काला बादल छा रहा हो। खूबसूरत विमान बहुत तेज़ी से आगे बढ़ा। देवताओं ने प्रसन्न होकर पुष्प वर्षा की।

अत्यंत आनंद देने वाली तीन प्रकार की (शीतल, मंद, सुगंधित) हवाएं चलने लगीं। समुद्र, तालाबों और नदियों का पानी साफ़ हो गया। चारों ओर शुभ शकुन दिखाई देने लगे। सबका मन प्रसन्न है, आकाश और दिशाएँ स्पष्ट हैं। श्री रघुवीर ने कहा--हे सीते! युद्ध के मैदान को देखो. यहीं पर लक्ष्मण ने इंद्र पर विजय पाने वाले मेघनाद का वध किया था। युद्धभूमि में हनुमान और अंगद के ये भारी शव पड़े हुए हैं।

देवताओं और ऋषियों को कष्ट देने वाले कुम्भकर्ण और रावण दोनों भाई यहीं मारे गये थे। मैंने यहाँ पुल बनाकर सुखधाम श्री शिवजी की स्थापना की। इसके बाद उन्होंने श्री रामजी के आशीर्वाद से सीताजी सहित श्रीरामेश्वर महादेव को प्रणाम किया।

करुणासागर श्री रामचन्द्रजी ने वन में जहाँ-जहाँ निवास करके विश्राम किया था, वहाँ-वहाँ भगवान ने जानकीजी को वे सब स्थान दिखाये और सबके नाम बताये।

विमान शीघ्र ही उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ परम सुन्दर दशदकवन स्थित था और वहाँ अगस्त्य आदि अनेक महर्षि रहते थे। श्री रामजी इन सभी स्थानों पर गये। ऐसी कृपा पाकर जगदीश्वर श्री रामजी चित्रकूट आये। वहां ऋषियों को संतुष्ट किया। [फिर] विमान वहां से तेजी से आगे बढ़ गया।

तब श्री राम जी ने जानकी जी को कलियुग के पापों को हरने वाली सुन्दर यमुना जी के दर्शन दिये। फिर पवित्र गज्जाजी के दर्शन किये। श्री रामजी ने कहा--हे सीते! उन्हें सलाम. फिर उस पवित्र तीर्थ प्रयाग को देखो, जिसके दर्शन मात्र से करोड़ों जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं।

फिर परम पवित्र त्रिवेणीजी का दर्शन करें, जो दुखों का नाश करने वाली और श्रीहरि के परमधाम तक पहुंचने के लिए सीढ़ी के समान हैं। फिर परम पवित्र अयोध्यापुरी का दर्शन करें, जो तीनों प्रकार के तापों तथा गतिजन्य रोगों का नाश करती है।

ऐसा कहकर दयालु श्री रामजी ने सीताजी सहित अवधपुरी को प्रणाम किया। श्री रामजी बार-बार जलयुक्त नेत्रों और क्षीण शरीर वाले प्रसन्न होते हैं। तब भगवान ने त्रिवेणी में आकर आनंदपूर्वक स्नान किया और वानरों सहित ब्राह्मणों को अनेक प्रकार का दान दिया। इसके बाद भगवान ने हनुमानजी को समझाया और कहा, ब्रह्मचारी का रूप धारण करके अवधपुरी में जाओ। भरत को हमारी शुभकामनाएँ बताओ और उसका सामान लेकर वापस आ जाओ।

पवनपुत्र हनुमानजी तुरंत चले गये। तब अभु भारद्वाज जी के पास गये। इष्टबुद्धि ऋषि ने अनेक प्रकार से उनकी पूजा-स्तुति की और फिर लीला दृष्टि से उन्हें आशीर्वाद दिया। भगवान हाथ जोड़कर मुनि के चरणों की वन्दना करके विमान पर चढ़ गये और फिर प्रस्थान (आगे) करने लगे। इधर जब निषादराज ने सुना कि भगवान आये हैं तो उन्होंने पूछा, “नाव कहाँ है?” नाव कहाँ है? लोगों को बुला रहे हैं.

इतने में विमान गलजी पार कर गया और प्रभु की आज्ञा पाकर तट पर उतर गया। तब सीताजी ने अनेक प्रकार से गंगाजी की पूजा की और उनके चरणों पर गिर पड़ीं। गंगाजी ने मन में प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया-हे सुन्दरी! आपकी शादी बरकरार रहे. जैसे ही निषादराज गुह ने भगवान के तट पर उतरने का समाचार सुना, वह प्रेम से वशीभूत होकर भाग खड़ा हुआ। परम सुख से भरकर वह भगवान के निकट आये,

और श्री जानकीजी सहित भगवान का दर्शन करके वह पृथ्वी पर गिर पड़ा (आनंद समाधि में लीन हो गया) और उसे अपने शरीर का स्मरण नहीं रहा। कर रहा है । उनका अपार प्रेम देखकर श्रीरघुनाथजी ने प्रसन्नतापूर्वक उन्हें उठाकर हृदय से लगा लिया। सुजानस (शिरोमणि) राजा लक्ष्मीकान्त कपनिधान ने उन्हें अपने हृदय से लगा लिया और बहुत निकट बैठाकर उनका कुशल क्षेम पूछा।

वह विनती करने लगा- आपकी सेवा करने वाले ब्रह्माजी और सह्दूजी के चरणकमलों का दर्शन करके मैं अब सुरक्षित हूं। यह सुखधाम! हे पूर्णकाम्! श्रीराम जी ! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूं, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूं।

भगवान ने भरत की भाँति सब प्रकार से हीन उस निषाद को अपने हृदय में ले लिया। तुलसीदासजी कहते हैं: यह मन्दबुद्धि (मैं) मोहवश उस प्रभु को भूल गया। शत्रु रावण का यह पवित्र चरित्र सदैव श्री राम के चरणों में प्रेम जगाता रहता है। यह काम आदि विकारों का नाश करने वाला तथा विशेष ज्ञान को उत्पन्न करने वाला है। देवता, सिद्ध और ऋषिगण इसे हर्षपूर्वक गाते हैं।

जो बुद्धिमान लोग श्री रघुवीर की समरविजय विषयक लीला सुनते हैं, भगवान उन्हें नित्य विजय, बुद्धि और समृद्धि प्रदान करते हैं। हे मन! सोचो और देखो! यह कलिकाल पापों का घर है। इसमें श्रीरघुनाथजी के नाम के अतिरिक्त (पापों से बचने का) और कोई आधार नहीं है॥

(युद्ध का अंत)

श्री रामचरितमानस

सातवाँ अध्याय

7 / 7.   उत्तर काण्ड

अंतिम काण्ड

मोर की गर्दन की आभा के समान नीला (हरा), देवताओं में सर्वश्रेष्ठ, ब्राह्मण भुगुजी के चरण कमलों के चिह्न से सुशोभित, सौंदर्य से परिपूर्ण, पीले वस्त्र धारण करने वाले, कमल की आंखें, हमेशा परम प्रसन्न रहने वाले, तीर और धनुष धारण करने वाले हस्त_पति पुष्प विमान पर सवार रघुवंश में श्रेष्ठ श्री रामचन्द्रजी को मैं निरंतर नमस्कार करता हूँ।

जो चन्द्रमा और शंख के समान सुन्दर हैं, जगतजननी श्री पार्वती के पति हैं, मनोवांछित फल देने वाले हैं, दीन-दुखियों पर सदैव दयालु हैं, उन श्री शद्ददासजी को मैं नमस्कार करता हूँ। सुंदर कमल के समान आँखें हैं, जो मुझे कामदेव से मुक्त करती है, [दाता]।

[श्री रामजी की लोटनेकी | कार्यकाल में सिर्फ एक दिन बचा है, इसलिए शहर के लोग काफी बेसब्र हो रहे हैं. राम के वियोग से निर्बल मनुष्य सर्वत्र आश्चर्य कर रहे हैं [क्या बात है, श्री रामजी क्यों नहीं आये]।

इतने में सब शुभ शकुन होने लगे और सबके मन प्रसन्न हो गये। नगर भी चारों ओर से सुन्दर हो गया। मानो ये सभी संकेत भगवान के आगमन का संकेत दे रहे हों।

कौशल्या आदि सभी माताओं के हृदय में ऐसा हर्ष है मानो कोई यह कहना चाहता हो कि सीताजी और लक्ष्मणजी सहित प्रभु श्री रामचन्द्रजी आ गये हैं। भरतजी की दाहिनी आंख और दाहिनी भुजा बार-बार फड़क रही है। इसे शुभ शकुन समझकर वह अत्यंत प्रसन्न हुआ और सोचने लगा-

जीवन के मौलिक काल में केवल एक दिन शेष रह गया है। बस यही सोचते-सोचते भरतजी के मन में आया. अपार दु:ख हुआ। क्या कारण था कि नाथ नहीं आए? क्या भगवान् ने मुझे कुटिल समझकर भुला दिया है? यह ठीक भी है, क्योंकि यदि भगवान मेरे कर्मों पर ध्यान दें तो करोड़ों (असंख्य) कल्पों तक भी मेरी मुक्ति नहीं हो सकती। [लेकिन एकमात्र आशा यह है कि] भगवान कभी भी सेवक के किसी भी अवगुण पर विचार नहीं करते। वह एक विनम्र व्यक्ति हैं और उनका स्वभाव बहुत ही सौम्य है।'

अत: मेरे हृदय में ऐसा दृढ़ विश्वास है कि मैं श्री गमजी से अवश्य मिलूंगा, (क्योंकि) मुझे बहुत शुभ भविष्यवाणियां मिल रही हैं। परन्तु यदि अवधि बीत जाने पर मेरे प्राण बचे तो संसार में मेरे समान नीच कौन होगा? भरतजी का मन श्री रामजी के विरह सागर में डूब रहा था, उसी समय पवनपुत्र हनुमानजी ब्राह्मण का रूप धारण करके आये, मानो उन्हें डूबने से बचा रहे हों। नाव आ गई है.

हनुमान जी, शरीर से दुर्बल भरतजी को जटाजूट का मुकुट बनाइये, राम! टक्कर मारना ! रघुपति! जप और कमल के समान नेत्रों से युक्त। देखा कुश्का आसन पर बैठी जल बहा रही है।   उन्हें देखकर हनुमानजी बहुत प्रसन्न हुए। उसका शरीर पुलकित हो गया, आँखों से प्रेम के आँसू बहने लगे। उन्होंने अनेक प्रकार से हृदय के प्रसन्न कानों को अमृत के समान वचन सुनाये-

जिनके वियोग में तुम दिन-रात चिंतन (विलीन) होते रहते हो और जिनके गुणों की पंक्तियों का निरंतर पाठ करते रहते हो, वे श्री गमजी, रखुकुल के तिलक, सज्जनों को सुख देने वाले और देवताओं और ऋषियों के रक्षक हैं, जो चले गए सुरक्षित रूप से दूर.

भगवान शत्रुओं से युद्ध जीतकर सीताजी और लक्ष्मणजी के साथ आ रहे हैं; देवता उनकी सुन्दर स्तुति गा रहे हैं। ये शब्द सुनते ही (भरतजी) अपने सारे दुःख भूल गये। जैसे प्यासा मनुष्य अमृत पाकर प्यास की पीड़ा भूल जाता है।

[भरतजी ने पूछा-]हे पिताजी! आप कौन हैं ? और तुम कहाँ से आये हो? [जो] आपने मुझसे ये बहुत प्यारे (अत्यंत आनंददायक) शब्द कहे। [हनुमानु जी ने कहा--] हे धन्य! सुनो, मैं पाटन का पुत्र और जाति का वानर हूँ; मेरा नाम हनुमान है. मैं श्रीरघुनाथजी का दास हूँ, दीनों का मित्र हूँ। यह सुनकर भरतजी उठे और आदरपूर्वक हनुमानजी को गले लगा लिया। जब हम मिलते हैं तो दिल में प्यार नहीं उतरता। आँखों से जल [आनन्द और प्रेम के आँसू] बहने लगे और शरीर पुलकित हो गया।

[भरतजी ने कहा--] हे हनुमान! आपके दर्शन से मेरे सारे दुःख समाप्त हो गये। [तुम्हारी तरह आज मुझे मेरे प्यारे रामजी ही मिल गये। भरतजी ने बार-बार कुशल से पूछा [और कहा-] हे भाई! सुनो, [इस शुभ वार्तालाप के बदले में]। मुझे तुम्हें क्या देना चाहिए?

मैंने सोचा और देखा कि इस सन्देश के समान (इसके बदले में देने योग्य कोई वस्तु) संसार में कुछ भी नहीं है। [इसलिए] हे पिता! मैं तुमसे किसी भी तरह उधार नहीं ले सकता. अब मुझे भगवान का चरित्र बताइये।

क्या रघुवंशरत्न श्री रामजी ने कभी मुझे अपने सेवक के समान स्मरण किया है? भरतजी के अत्यंत विनम्र वचन सुनकर हनुमानजी रोमांचित होकर उनके चरणों में गिर पड़े [और मन में सोचने लगे कि] जो चराचरों के स्वामी हैं और श्री रघुवीर जिनके मुख से जिनके गुणों का वर्णन करते हैं, उन भरतजी को क्यों न ऐसा करना चाहिए। इतना विनम्र, अत्यंत पवित्र और गुणों का सागर हो?

[हनुमानजी ने कहा--] हे नाथ! आप श्री गमजी को प्राणों के समान प्रिय हैं, हे पिता! मेरा वचन सत्य है. यह सुनकर भरतजी बार-बार मिलते हैं। दिल में कोई खुशी नहीं है. तब हनुमानजी भरतजी के चरणों में सिर झुकाकर तुरंत श्री रामजी के पास लौट आए और वहां जाकर बोले कि सब ठीक है। तब भगवान प्रसन्न हो गये और विमान पर चढ़कर चले गये।

इधर भरतजी भी प्रसन्नतापूर्वक अयोध्यापुरी आये और गुरुजी को सब समाचार सुनाये। तभी महल में समाचार आया कि श्रीरघुनाथजी सकुशल नगर में आ रहे हैं। समाचार सुनते ही सभी माताएँ उठकर दौड़ पड़ीं। भरतजी ने भगवान का कुशलक्षेम कहकर सबको समझाया। जब नगरवासियों ने यह समाचार सुना तो वे सब खुशी से दौड़ पड़े।

[श्री रामजी के स्वागत के लिए] सौभाग्यवती रिया हाथी के समान चलकर सोने के थालों में दही, गोबर के उपले, फल, फूल और तुलसी के पत्ते आदि वस्तुएं लेकर गाती हुई ले गई। जो लोग जैसे होते हैं (जहां जिस स्थिति में होते हैं) वहीं से (उसी जगह से उसी स्थिति में) उठकर भाग जाते हैं। [देर होने के डर से।] बच्चों और बूढ़ों को कोई साथ नहीं लाता। वे एक-दूसरे से पूछते हैं--भाई! क्या तुमने दयालु श्रीरघुनाथजी को देखा है?

प्रभु का आगमन जानकर अवधपुरी पूर्ण वैभव की खान बन गयी। तीनों प्रकार की सुन्दर पवनें बहने लगीं। सरयूजी अत्यंत निर्मल जल हो गयीं (अर्थात् सरयूजी का जल अत्यंत निर्मल हो गया)। भरतजी गुरु बशिष्ठजी, अपने परिवार के सदस्यों, छोटे भाई शत्रुघ्न और ब्राह्मणों के समूह के साथ, प्रेमपूर्ण मन और प्रसन्न मन से खुशी-खुशी श्री रामजी की कृपा के स्थान पर (अर्थात् उनका स्वागत करने के लिए) उनके सामने गए।

बहुत-सी स्त्रियाँ अटारियों पर चढ़कर आकाश में विमान को देख रही हैं और उसे देखकर प्रसन्न हो रही हैं तथा मधुर, सुन्दर मद्राल गीत गा रही हैं। श्रीरघुनाथजी पूर्णिमा के चंद्रमा हैं और अवधपुर समुद्र है, जो उस पूर्णिमा के चंद्रमा को देखकर प्रसन्न होता है और शोर मचाते हुए [इधर-उधर दौड़ता हुआ] दौड़ रहा है, उसकी रेखाओं के समान स्त्रियाँ दिखती हैं।

एक खूबसूरत शहर दिखा रहा हूं. वह कहते हैं-- हे सुग्रीव! हे अंगद! हे लंकापति विभीषण! सुनना! यह पुरी पवित्र है और यह देश सुन्दर है। यह सरहवानी पुरी मेरी जन्मभूमि है। इसके उत्तर दिशा में सस्यु नदी बहती है जो प्राणियों को पवित्र करती है, उसमें स्नान करने से मनुष्य बिना किसी परिश्रम के मेरे निकट मोक्ष प्राप्त करते हैं।

यहां के निवासी मुझे बहुत प्रिय हैं। यह पूर्ण सुख का लक्षण है और मुझे परमधाम प्रदान करेगा। भगवान के वचन सुनकर सब वानर प्रसन्न हो गये [और कहने लगे] कि जिस काल की महिमा स्वयं श्री रामजी ने की है वही काल [अवश्य] है। सौभाग्यपूर्ण। जब दयालु प्रभु श्री रामचन्द्रजी ने सभी लोगों को आते देखा तो प्रभु ने विमान को नगर के निकट उतरने की प्रेरणा दी। फिर वह धरती पर अवतरित हुए।

विमान से उतरकर भगवान ने पुष्पक विमान से कहा कि तुम आज कुबेर के पास जाओ। वे श्री रामजी की प्रेरणा से चले। आज मुझे उनके जाने की खुशी भी है और भगवान श्री रामचड्ढाजी से अलग होने का बेहद दुख भी है। भरतजी के साथ सभी आये। श्री रघुवीर के वियोग से सबके शरीर दुर्बल हो रहे हैं। जब भगवान वामदेव, वशिष्ठ आदि महर्षियों को देखा तो उन्होंने अपने धनुष-बाण पृथ्वी पर रख दिये-

उनके साथ छोटे भाई लक्ष्मणजी भी दौड़े और गुरुजी के चरण पकड़ लिये; उसके शरीर का रोम-रोम अत्यंत उत्तेजित हो रहा है। मुनिराज वशिष्ठजी ने [उसे उठाया] उसे गले लगाया और उसका हालचाल पूछा। [प्रभु ने कहा--] आपकी दया से हम सुरक्षित हैं। धर्म की धुरी को धारण करने वाले रघुकुल के भगवान श्री राम सभी ब्राह्मणों से मिले और उन्हें सिर झुकाकर प्रणाम किया। तब भरतजी ने भगवान के चरणकमलों को पकड़ लिया, जिन्हें देवता, ऋषि, शदगरजी और ब्रह्माजी भी नमस्कार करते हैं।

भरतजी पृथ्वी पर पड़े हैं और उठाए नहीं जा सकते। तब कृपासिंधु श्री राम जी ने उन्हें बलपूर्वक उठाकर अपने हृदय से लगा लिया। [उसके] काले शरीर पर बाल

खड़े हो गए। नव कमल जैसी आँखों में [प्रेम के आँसू]। पानी का सैलाब उमड़ पड़ा. कमल के समान नेत्रों से जल बह रहा है।

पुलकावली [अत्यंत] अपने सुंदर शरीर पर सुंदर दिखती है। समस्त जगत के स्वामी भगवान श्री राम अपने छोटे भाई भरतजी से अत्यंत प्रेम और स्नेह से मिले। मैं अपने भाई से मिलते समय प्रभु की सुंदरता की कल्पना नहीं कर सकता। मानो प्यार हो. और सुशोभित शरीर धारण करने के बाद उन्हें उत्तम सौन्दर्य प्राप्त हुआ।

तब भगवान ने प्रसन्न होकर शत्रुघ्नजी को हृदय से लगा लिया और उनसे मिले। तब लक्ष्मणजी और भरतजी दोनों भाइयों से अत्यंत प्रेम से मिले। तब लक्ष्मण जी ने शत्रुघ्न जी को गले से लगा लिया और इस प्रकार विरह वेदना नष्ट हो गयी। तब भरतजी ने भाई शत्रुघ्नजी सहित सीताजी के चरणों में सिर झुकाया और परम सुख प्राप्त किया।

प्रभु के दर्शन पाकर समस्त अयोध्यावासी प्रसन्न हो गये। वियोग से उत्पन्न समस्त दुःख नष्ट हो गये। सभी लोग प्रेम से अभिभूत हैं और मिलने के लिए बहुत उत्सुक हैं। अपने शत्रु कपालू को देखकर श्री रामजी ने चमत्कार किया। श्री रामजी असंख्य रूपों में प्रकट होकर सबके सामने आये। अपनी पात्रता के अनुसार प्राप्त करें। तृष्णा से युक्त श्री रघुवीर की कृपा देखकर सभी स्त्री-पुरुष दुःख से मुक्त हो गये।

मानो नव ब्याही गायें अपने छोटे-छोटे बछड़ों को घर पर छोड़कर जंगल में चरने चली गई हों और दिन के अंत में [बछड़ों से मिलने के लिए] चली गई हों। वे गरजते हुए और अपने थनों से दूध गिराते हुए नगर की ओर भागे। भगवान सभी माताओं से बड़े प्रेम से मिले और उनसे अनेक प्रकार से बातें कीं। आदेश दो। वियोग से उत्पन्न भयानक विपत्ति दूर हो गई और सभी को असंख्य सुख और आनन्द प्राप्त हुए (भगवान से मिलने और उनके वचन सुनने से)।

श्री राम जी के चरणों में अपने पुत्र लक्ष्मण जी के प्रेम को जानकर सुमित्रा जी उनसे मिलीं। श्री रामजी से मिलते समय केकेयीजी के हृदय में बड़ा दुःख हुआ। सभी माताओं से मिलकर और उनका आशीर्वाद पाकर लक्ष्मणजी भी प्रसन्न हुए। वे बार-बार केकेयीजी से मिले, परन्तु उनका क्रोध दूर न हुआ।

जानकीजी ससुराल के सभी लोगों से मिलीं और उनके चरणों में गिरकर बहुत प्रसन्न हुईं। सास आपका हाल-चाल पूछ रही हैं और आशीर्वाद दे रही हैं कि आपका दांपत्य जीवन स्थिर रहे। सभी माताएँ श्रीरघुनाथजी के कमल-स्वरूप

मुख की ओर देख रही हैं। [आँखों में प्रेम के आँसू छलक पड़े। हैं, लेकिन मजाल के समय को जानकर वे अपनी आंखों में आंसू ही रोक लेते हैं। वह आरती करती है और बार-बार भगवान की श्री आज्ञा की ओर देखती है।

वह कई तरह से चमकती है और हर तरह से मेरे दिल को खुशी से भर रही है। कोसल्याजी बार-बार दया के सागर और रणधीर श्री रघुबीरका की ओर देख रहे हैं। माता लक्ष्मणजी और सीताजी सहित प्रभु श्री रामचन्द्रजी को देख रही हैं। उसका मन परमानंद में डूबा रहता है और शरीर बार-बार रोमांचित होता है।

लंकापति विभीषण, वानरराज सुग्रीव, नल, नील, जाम्बवान, अंगद और हनुमानजी आदि सभी वीर वानर अच्छे स्वभाव वाले थे और उन्होंने मनुष्यों का सुंदर शरीर धारण किया। वे सभी आदरपूर्वक भरतजी के प्रेम, सुन्दर भाव, [त्याग] व्रत और नियमों की शाश्वत प्रेम से प्रशंसा कर रहे हैं। और नगरवासी [प्रेम, शील और नम्रता से परिपूर्ण]। अनुष्ठान देखकर वे सभी भगवान के चरणों में प्रेम की प्रशंसा कर रहे हैं।

प्रभु के वचन सुनकर सभी लोग प्रेम और आनंद में मग्न हो गये। ऐसे में उन्हें हर पल नई खुशियां मिलती रहती हैं। फिर उन्होंने कौशल्याजी के चरणों में सिर झुकाया। कोसल्याजी ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया। [और कहा--] तुम मुझे रघुनाथ के समान प्रिय हो।

आनन्दकन्द श्री रामजी अपने महल में चले गये, आकाश फूलों की वर्षा से ढक गया। नगर के नर-नारियों के समूह अटारियों पर चढ़कर उनके दर्शन कर रहे हैं। सभी लोगों ने सोने के कलशों को विचित्र प्रकार [मणि-रात्रादि] से सजाया और सजाया और अपने-अपने दरवाजे पर रख लिया। सभी ने मंगल के लिए बैंड, झंडे और बैनर लगाए।

सारी सड़कें सुगन्धित द्रव्यों से सिंचित हो गईं। कई चोकों की रचना गजमुक्ताओं से की गई थी। नगर में नाना प्रकार के सुन्दर वाद्य सजाये गये और हर्ष के साथ अनेक ढोल बजाए गये। सर्वत्र स्त्रियाँ बरस रही हैं और मन में हर्ष भरकर आशीर्वाद दे रही हैं। अनेक युवतियाँ (सौभाग्यशाली) महिलाएँ सोने के थालों में तरह-तरह की आरती कर रही हैं और मदलगान कर रही हैं।

स्त्रियाँ कुमुदनी हैं, अयोध्या सरोवर है और श्रीरघुनाथजी विरह के सूर्य हैं, वे इस विरह के सूर्य के ताप से सूख गयी हैं। थे। अब उस बिछड़े हुए सूर्य के अस्त होने पर श्री राम के रूप में पूर्ण चन्द्रमा को देखकर वह प्रसन्न हो गयी। अनेक प्रकार

के शुभ शकुन हो रहे हैं, आकाश में नगाड़े बज रहे हैं। प्रभु श्रीरामचन्द्रजी नगर के मनुष्यों और योद्धाओं को परास्त करके महल में चले गये।

शिवजी कहते हैं-- हे भवानी! भगवान को एहसास हुआ कि माता कैकेयी लज्जित हैं। [इसलिए] वह सबसे पहले उसके महल में गया और उसे सांत्वना दी और उसे बहुत खुशी दी। तब श्रीहरि अपने महल में चले गये। आप सभी ब्राह्मण प्रसन्न होकर आज्ञा दें, जिसमें सिंहासन पर श्री गमछाचारी विराजमान हों। ऋषि वशिष्ठ के सुखद वचन सुनते ही सभी ब्राह्मणों को बहुत प्रसन्नता हुई।

वे सभी ब्राह्मण मधुर वचन कहने लगे कि श्री रामजी के राज्याभिषेक से सारे जगत् में हर्ष होगा। हे महामुनि! अब देर मत करो और जल्दी से महाराज का तिलक करो. तब ऋषि ने सुमंतजी से कहा, यह सुनते ही वे प्रसन्न हो गये और चले गये। उसने तुरंत जाकर बहुत से रथ, घोड़े और हाथियों को सजाया;

और सब जगह दूत भेजकर [सूचना देकर] सांसारिक वस्तुएं एकत्र कीं और फिर प्रसन्न होकर वापस आये और वशिष्ठजी के चरणों में सिर झुकाया। अवधपुरी को बहुत सुन्दर ढंग से सजाया गया था। देवताओं ने पुष्प वर्षा की। श्री रामचन्द्र जी ने सेवकों को बुलाकर कहा कि तुम सब जाकर पहले मेरे मित्रों को स्नान कराओ।

भगवान की बात सुनते ही सेवक इधर-उधर दौड़ पड़े और तुरंत सुग्रीवदी को स्नान कराया। तब करुणानिधान श्री रामजी ने भरतजी को बुलाया और अपने हाथों से उनकी जटाएँ खोलीं। तदनन्तर भक्तप्रेमी एवं दयालु भगवान् श्रीरघुनाथजी ने तीनों भाइयों को स्नान कराया। भरतजी के भाग्य और भगवान की कोमलता का वर्णन अरब शेषजी भी नहीं कर सकते।

तब श्री रामजी ने अपने ताले खोले और गुरुजी की आज्ञा लेकर अनुष्ठान किया। श्वास लेने के बाद भगवान ने आभूषण धारण किये। उसकी (सौन्दर्ययुक्त) आज्ञा को देखकर सैकड़ों (असंख्य) कामदेव लज्जित हो गये। [यहाँ] सास-ससुरों ने जानकी जी को आदरपूर्वक स्नान कराया और तुरंत ही उन्हें दिव्य आभूषणों तथा उत्तम आभूषणों से अलंकृत कर दिया।

श्री राम के बायीं ओर रूप और गुणों की देवी राम (श्री जानकीजी) शोभायमान हो रही हैं। उन्हें देखकर सभी माताएँ अपना जन्म (जीवन) सफल मानकर प्रसन्न हो गईं।

[काकभुशुण्डि जी कहते हैं--] हे पक्षी शिकारी गरुड़ जी! सुनना; उस समय, भगवान ब्रह्मा, भगवान शिव, ऋषियों का एक समूह और सभी देवता भगवान आनंदकंद के दर्शन के लिए विमानों पर आए।

भगवान को देखकर ऋषि वशिष्ठ का हृदय प्रेम से भर गया। उन्होंने तुरंत दिव्य सिंहासन मंगवाया, जिसकी चमक सूर्य के समान थी। इसकी खूबसूरती का वर्णन नहीं किया जा सकता. ब्राह्मणों को सिर नवाकर श्री रामचन्द्र जी उस पर बैठ गये। श्री रघुनाथ जी सहित श्री जानकी जी को देखकर ऋषि समुदाय अत्यंत प्रसन्न हुआ। शरीर | ब्राह्मणों ने वेद मंत्रों का उच्चारण किया. आकाश में देवताओं और ऋषियों ने 'जय हो, जय हो!' ऐसे ही कॉल करने लगा.

त्रिभुवन के स्वामी श्री रामचन्द्रजी को अयोध्या के सिंहासन पर विराजमान देखकर देवताओं ने नगाड़े बजाए। आकाश में बहुत से ढोल बज रहे हैं। गंधर्व और किन्नर गा रहे हैं। अप्सराओं के समूह नृत्य कर रहे हैं। देवता और ऋषि-मुनि आनन्द भोग रहे हैं। भरत, लक्ष्मण और श्रुघ्नजी सहित विभीषण, अंगद, हनुमान और सुग्रीव आदि क्रमशः छत्र, पंखा, धनुष, तलवार, ढाल और शक्ति से सुशोभित हैं।

सूर्यवंश के रत्न श्री रामजी के शरीर में श्री सीताजी सहित अनेक कामदेवों की छवि शोभा पा रही है। नवीन जलमय बादलों के समान सुन्दर श्यामल शरीर पर पीला शरीर देवताओं के भी मन को मोहित कर रहा है। मुकुट, बाजूबंद आदि विचित्र आभूषणों से विभूषित हैं। उनके कमल के समान नेत्र, चौड़ी छाती और लंबी भुजाएं हैं; जो लोग उनके दर्शन करते हैं वे धन्य हो जाते हैं।

हे पक्षीशिल्पी गरुड़जी! मैं उस खूबसूरती, उस समाज और उस खुशी का वर्णन नहीं कर सकता. सरस्वतीजी, शेषजी और वेद इसका निरंतर वर्णन करते हैं और केवल महादेवजी ही इसके रस को जानते हैं।

सभी देवताओं ने अलग-अलग एक-दूसरे की स्तुति की और अपने-अपने लोक को चले गये। फिर भाटों का रूप। चारों वेदों को धारण करके वे वहाँ आये, जहाँ श्री रामजी थे। हे सगण और निर्गुणरूप! हे अद्वितीय सौन्दर्य और सौन्दर्य से युक्त! हे राजाओं के मुकुट! आपकी जय हो। आपने अपनी भुजाओं के बल से रावण जैसे भयंकर, शक्तिशाली और दुष्ट निशाचर को मार डाला।

आपने मनुष्य रूप धारण करके संसार का भार नष्ट कर दिया और घोर दुःखों को भी भस्म कर दिया। हे दयालु! हे भगवान जो समर्पण करने वालों की रक्षा करते

हैं। आपकी जय हो। मैं शक्ति (सीताजी) सहित शक्तिमान् आपको नमस्कार करता हूँ।

हे हरे! आपकी शत्रु माया के वश में होकर देवता, दानव, नाग, मु और चर, स्थावर, काल, कर्म और गुणों से परिपूर्ण (उनके प्रभाव में) दिन-रात शाश्वत अस्तित्व (गति) के मार्ग में भटक रहे हैं). हे नाथ! इनमें से जिन पर आपने दया दृष्टि की, वे तीनों प्रकार के दुःखों (मायाजन्य) से मुक्त हो गये। श्री गमजी जन्म-मरण के कष्ट काटने में कुशल हैं! हमारी रक्षा करो। आपकी जय हो।

जिन चरणों की पूजा भगवान शिव और ब्रह्मा करते हैं, और जिनके चरणों का स्पर्श गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या के शुभ राज्य [पत्थर से बने] द्वारा किया जाता है; जिनके चरणों से लोकों को पवित्र करने वाली देवनदी गंगाजी मुनिद्रश दस्यु मुनि निकलीं और जिनके ध्वज, वज्र, अलद्रिसा तथा कमल आदि चिह्नों से युक्त पैर वन में विचरते समय कांटों से चुभने के कारण घट्टियों से भर गये थे; हे मुकुन्द! हे राम! हे रमापति! हम आपके उन दोनों चरण कमलों की प्रतिदिन पूजा करते रहते हैं।

वेदों और शास्त्रों में कहा गया है कि जिसका मूल अव्यक्त (प्रकृति) है; जो [प्रवाहतः] शाश्वत है; जिसमें चार खालें, छह तने, पच्चीस शाखाएँ, और बहुत-सी पत्तियाँ और बहुत-से फूल हों; जिसके दो प्रकार के फल होते हैं, कड़वे और मीठे; जिस पर एक लता ही आश्रित रहती है; जिसमें नित नये पत्ते और फूल निकलते रहते हैं; हम आपको विश्ववृक्ष (संसार रूप में प्रकट) के रूप में नमस्कार करते हैं।

ब्रह्मा अजन्मा, अद्वैत है, केवल अनुभव के माध्यम से जाना जाता है और मन से परे है - जो [इस प्रकार। ऐसा कहकर वे ब्रह्म का ध्यान करते हैं, वे ऐसा कहकर भले ही चले जाएं, परंतु हे भगवन्! हम तो केवल आपके सच्चे गुण गाते हैं। हे करुणा के धाम प्रभु! हे गुणों की खान! अरे बाबा ! हम यह वरदान माँगते हैं कि हम मन, वचन और कर्म से विकारों को त्याग कर आपके चरणों में ही प्रेम करें।

बेदा ने सबके सामने यह नेक अनुरोध किया.   फिर वह गायब हो गया और ब्रह्मलोक चला गया। हे राम! हे मर्मर्मन् (लक्ष्मीकान्त)! हे जन्म और मृत्यु के दुःख का नाश करने वाले! आपकी जय हो; यात्रा के भय से परेशान इस सेवक की कृपया रक्षा करें। हे अवधपति! हे देवों के देव: हे विभो! मैं आपकी शरण में आकर केवल यही मांगता हूं कि हे प्रभु! कृपया मेरी रक्षा करें.

हे श्री राम, जिन्होंने दस सिर और बीस भुजाओं वाले रावण को नष्ट करके पृथ्वी के सभी महान रोगों (कष्टों) को दूर किया! आपके बाण रूपी अग्नि के प्रचंड तेज से राक्षस रूपी सभी पतंगे नष्ट हो गये। तुम पृथ्वी के अत्यंत सुन्दर आभूषण हो।

आप उत्तम बाण, धनुष तथा तरकश धारण किये हुए हैं। आप महान अभिमान, मोह और स्नेह रूपी रात्रि के अंधकार को नष्ट करने वाली सूर्य की उज्ज्वल किरणें हैं।

कामदेव रूपी भील ने कुभोग रूपी बाण से मानव मृगों को मुखौटा बनाकर उनके हृदय पर प्रहार किया है। हे भगवान! हे हरे [पाप और ताप को दूर करने वाले]! उसे मार डालो और वस्तुओं के जंगल में भूले हुए इन अनाथ अनाथ प्राणियों की रक्षा करो। लोग अनेक रोगों तथा वियोगों (दुःखों) से पीड़ित हो रहे हैं। यह सब आपके चरणों के अनादर का ही परिणाम है। जो मनुष्य आपके चरणकमलों में प्रेम नहीं करते, वे अत्यंत दुःख के ताप में पड़े हुए हैं।

जिनके मन में आपके चरणकमलों में प्रेम नहीं है, वे सदैव अत्यंत दरिद्र, दुःखी और अप्रसन्न रहते हैं। और जो आपकी लीला-कथा के आधार हैं, उन्हें संत और भगवान सदैव प्रिय लगते हैं। उनमें न तो मोह है, न लोभ; न कोई सम्मान है, न कोई अभिमान. उनके पास धन (सुख) और विपत्ति (दुःख) समान हैं। इससे ऋषि लोग योग (साधन) में अपनी आस्था सदा के लिए त्याग देते हैं और प्रसन्नतापूर्वक आपके सेवक बन जाते हैं।

वे सभी संत प्रेम और भक्ति के नियमों का पालन करते हुए शुद्ध हृदय से निरंतर आपके चरणकमलों की सेवा करते हैं और अपमान और सम्मान को समान मानकर पृथ्वी पर आनंदपूर्वक विचरते हैं। यह संतों के मन में कमल का भ्रम है!

हे महान रणधीर और अजेय श्री रघुबीर! मैं आपकी पूजा करता हूं (आपकी शरण लेता हूं)। हे हरि मैं आपके नाम का जप करता हूं और आपको नमस्कार करता हूं। आप जन्म-मृत्यु रूपी रोग की महान औषधि तथा अहंकार के शत्रु हैं।

आप सदाचार, शील और अनुग्रह की परम भूमि हैं। आप लक्ष्मीपति हैं, आपको मेरा निरंतर नमस्कार है। हे रघुनन्दन! [आप जन्म और मृत्यु, सुख और दुःख, राग और द्वेष आदि समूहों को नष्ट कर देते हैं। हे पृथ्वी का पालन करने वाले राजा! इस गरीब के प्रति भी बुराई दिखाओ.

हे सविता, मैं तुमसे बार-बार यही वरदान माँगता हूँ कि तुम्हारे भक्तों को सदैव सफलता मिले। हे भगवान लक्ष्मी, मैं आपके चरणों में अटूट भक्ति और पूजा चाहता हूँ! हे गरुड़जी, कृपया अपने हित में मुझे यह दीजिए। सुनो, यह कथा [सबको] पवित्र कर देती है, तीनों प्रकार के तापों [दैहिक, दैविक, भौतिक] तथा जन्म-मृत्यु के भय को नष्ट कर देती है।

महाराज श्री रामचन्द्रजी के हितकारी राज्याभिषेक की कथा [निःस्वार्थ भाव से] सुनने से मनुष्यों को वैराग्य और ज्ञान की प्राप्ति होती है। तथा जो मनुष्य अच्छे भाव से सुनते हैं और गाते हैं, उन्हें अनेक प्रकार के सुख और धन की प्राप्ति होती है।

वे इस लोक में भगवान के दुर्लभ सुखों का उपभोग करके अंत समय में श्री रघुनाथजी के परमधाम को जाते हैं। जो इसे जीवनयुक्त, विशत् और विशिष्टि के रूप में सुनते हैं, [क्रमशः]। भक्ति, मोक्ष और नये धन (नित नये भोग) की प्राप्ति होती है। हे पक्षीराज गरुड़जी! मेरी बौद्धिक पहुंच के अनुसार. रामकथा का वर्णन किया गया है, जो [जन्म और मृत्यु के] भय और दुःख को दूर करता है।

श्री शिवजी, ऋषि-मुनियों और ब्रह्माजी ने भी श्री रामजी के चरणकमलों में प्रणाम किया। जी हाँ- हर किसी को नित नया प्यार होता है. भिक्षुओं और ब्राह्मणों द्वारा अनेक प्रकार के आभूषण पहने जाते थे। तरह-तरह के दान मिले। सभी वानर ब्रह्मानन्द में लीन हैं। भगवान के चरणों में सभी का प्रेम है! दिन बीतते गए और छह महीने बीत गए, उनके बीच कोई बातचीत नहीं हुई।

उन लोगों को घर पर भूल गया. [जागरण की बात तो दूर] उन्हें स्वप्न में भी घर की याद नहीं आती, जैसे संतों के मन में कभी दूसरों को धोखा देने का विचार नहीं आता। तब श्रीरघुनाथजी ने सब सखाओं को बुलाया। सभी ने आकर आदर से सिर झुकाया।

श्री रामजी ने बड़े प्रेम से उन्हें अपने पास बिठाया और भक्तों को सुख देने वाले कोमल वचन बोले- तुम लोगों ने मेरी बड़ी सेवा की है। मैं अपने मुँह पर तुम्हारी प्रशंसा कैसे कर सकता हूँ? मेरे लिए तुमने घर और सभी प्रकार के सुख त्याग दिये। इस कारण तुम मुझे बहुत प्रिय लग रहे हो. छोटा भाई, राज्य, संपत्ति, जानकी, शरीर, घर, परिवार और मित्र-

वे सभी मुझे प्रिय हैं, परन्तु तुम्हारे जितने नहीं। मैं झूठ नहीं बोलता, ये मेरा स्वभाव है. सेवक सबको प्रिय होते हैं, यही नीति (नियम) है। [लेकिन] मुझे स्वाभाविक रूप से अपने नौकर के प्रति विशेष प्रेम है। अरे मित्रों! अब हर कोई

घर जाओ; वहां विधि-विधान से मेरी पूजा करते रहना. मुझे सर्वव्यापी और सबका हितकारी समझकर बहुत प्रेम करो।

उन सभी को भगवान के चरणों में प्रेम हो गया। हम कौन हैं और कहाँ हैं? मैं अपने शरीर की गंध भी भूल गयी. न तो श्रभुक उसके सामने हाथ जोड़कर देखता रह गया और प्रेम के कारण कुछ कह न सका। भगवान भुने ने उसकी अंतरात्मा को देखा, [तब] उसे कई प्रकार से विशेष ज्ञान सिखाया। वे भगवान के सामने कुछ नहीं कह सकते. भगवान के चरणकमलों को बार-बार देखें।

बाल शक ने कई रंगों के अनूठे और सुंदर आभूषण और कपड़े मंगवाए। सबसे पहले भरत जी ने अपने हाथों से सुग्रीव का श्रृंगार किया और उसे वर्त्र भूषण से अलंकृत किया। तब भगवान की प्रेरणा से लक्ष्मण जी ने विभीषण जी को आभूषण और वस्त्र पहनाये, जो श्री रघुनाथ जी को बहुत पसंद आये। अंगद बैठे ही रहे, अपनी जगह से हिले भी नहीं। उनके उत्कट प्रेम को देखकर प्रभु ने उन्हें नहीं बुलाया।

श्रीरघुनाथजी ने स्वयं जाम्बवान और नील आदि को आभूषण पहनाये। वे सब श्री रामचन्द्रजी का स्वरूप हृदय में धारण करके चले और उनके चरणों में सिर झुकाये। तब अंगद उठे, सिर झुकाया, आंखों में आंसू थे और हाथ जोड़कर बड़े विनम्र और मधुर वचन बोले, मानो प्रेम के रस में डूबे हुए हों।

हे सर्वज्ञ! हे कप और खुशी के सागर! वह गरीबों पर दयालु है! हे आर्टन के पुत्रों! सुनना। हे नाथ! मरते समय मेरे पिता बलि ने मुझे आपकी गोद में डाल दिया था। अतः हे भक्तों के हितैषी! अपने अशरण-शबग विरद (बाण) का स्मरण करके मुझे मत त्यागो। आप ही मेरे स्वामी, गुरु, पिता और माता, सब कुछ आप ही हैं। मैं आपके चरणकमलों को छोड़कर कहाँ जाऊँ?

हे महाराज! आप ही सोचो और कहो, भगवान (तुम्हारे) के सिवा घर में मेरा क्या काम? हे नाथ! विद्या, बुद्धि और बल से रहित इस बालक और दीन सेवक को अपनी सुरक्षा में रखिये। मैं घर की प्रत्येक नीच सेवा करूँगा और आपके चरणकमलों का दर्शन करके भवसागर में लीन हो जाऊँगा। ऐसा कहकर वह श्री रामजी के चरणों में गिर पड़ा [और बोला--] हे प्रभु! कृपया मेरी रक्षा करें. हे नाथ! अब मुझे घर जाने को मत कहना.

अंगद के विनम्र वचन सुनकर करुणा की सीमा भगवान श्रीरघुनाथजी ने उन्हें उठाकर हृदय से लगा लिया। भगवान की कमल आँखों में ले लिया [प्रेम के आँसू]। पानी भर गया. तब भगवान ने बालि के पुत्र अंगद को हृदय की माला,

वस्त्र और रत्न (बच्चों के आभूषण) पहनाकर तथा अनेक प्रकार से समझाकर विदा किया।

भक्त के कृत्य को याद करके भरतजी अपने छोटे भाई शरत्रुघ्नी और लक्ष्मणजी के साथ उनके पास पहुँचने के लिए चल पड़े। अंगद के हृदय में थोड़ा भी प्रेम नहीं है (अर्थात् बहुत प्रेम है)। वे भगवान राम की ओर देखते हैं और बार-बार प्रणाम करते हैं। मेरे मन में आता है कि श्री रामजी मुझे रुकने के लिये कहें। वे श्री रामजी के देखने, बोलने, चलने और हँसकर मिलने के ढंग को याद करके सोचते (दुखी होते) हैं।

परंतु प्रभु का रुख देखकर वह बहुत विनम्र वचन कहकर तथा चरण कमलों को हृदय में रखकर चला गया। सभी वानरों को अत्यंत आदर-सत्कार के साथ विदा करके भरतजी अपने भाइयों सहित लौट आये। तब हनुमानजी ने सुग्रीव के पैर पकड़कर अनेक प्रकार से प्रार्थना की और कहा- हे भगवन्! दस (कुछ) दिन तक श्रीरघुनाथजी के चरणों की सेवा करके मैं पुनः आऊंगा और आपके चरणों के दर्शन करूंगा।

[सुग्रीव ने कहा--] यह पवन कुमार है! आप सद्गुण के प्रतीक हैं [कि भगवान ने आपको अपनी सेवा में रखा है]। तुम कृपालोक में जाकर श्री रामजी की सेवा करो। इतना कहकर सभी बंदर तुरंत चले गए। अंगद ने कहा--हे हनुमान! सुनो - मैं तुमसे हाथ जोड़कर कहता हूं, प्रभु को मेरा प्रणाम कहना और बार-बार श्री रघुनाथजी को मेरा स्मरण कराना।

तब कपालू श्री रामजी ने निषादराज को बुलाया और उन्हें आभूषण और वस्त्र उपहार में दिये। [फिर बोले--] अब तुम भी घर जाओ, वहां मेरा स्मरण करते रहना और मन, वचन और कर्म से धर्म का पालन करना। तुम मेरे मित्र और भरत के समान भाई हो। हमेशा अयोध्या आते-जाते रहते हैं. ये शब्द सुनते ही उसे अपार ख़ुशी हुई. वह खुशी और प्रेम के आँसुओं से भरी आँखों से उनके चरणों में गिर पड़ा।

तब वह भगवान के चरणकमलों को हृदय में रखकर घर आया और अपने सम्बन्धियों को भगवान का स्वरूप सुनाया। श्री रघुनाथ जी के इस चरित्र को देखकर अवधवासी बार-बार कहते हैं कि श्री रामचन्द्र जी सुखमय हैं। जब श्री रामचन्द्रजी राज्य में स्थापित हो गये तो तीनों लोक प्रसन्न हो गये और उनके सारे दुःख दूर हो गये। किसी को किसी की परवाह नहीं है. श्री रामचन्द्रजी की महिमा से सबकी असमानता (आंतरिक भेदभाव) मिट गयी।

सभी लोग सदैव बैद-मार्ग का अनुसरण करते हैं और अपनी जाति और आश्रम के अनुसार धर्म का पालन करके सुख प्राप्त करते हैं। उन्हें न किसी बात का डर है, न कोई दुःख है और न ही कोई बीमारी उन्हें सताती है। 'राम राज्य' में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप किसी को प्रभावित नहीं करते। सभी मनुष्य वेदों में बताये नियमों को ध्यान में रखकर अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं।

वह अपने चार चरणों (सत्य, शौच, दया और दान) से संसार में परिपूर्ण हो रहा है; स्वयं में भी कोई पाप नहीं है और सभी राम के भक्त हैं और सभी परम मोक्ष के अधिकारी हैं। लघु अवस्था में न तो मृत्यु होती है और न ही किसी को कोई कष्ट होता है। सभी का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ्य होता है। न कोई गरीब है, न दुखी, न दीन। कोई भी मूर्ख नहीं है और न ही अच्छे गुणों से रहित है।

सभी निःसंदेह, धर्मनिष्ठ एवं प्रेममय आत्मा हैं। मनुष्य और खत्री सभी चतुर और गुणी होते हैं। सभी गुणों का आदर करने वाले, विद्वान और सभी ज्ञानी हैं। सभी कृतज्ञ (दूसरे के उपकार को स्वीकार करने वाले) होते हैं, कोई भी धोखेबाज या धूर्त नहीं होता।

[काकभुशुण्डिजी कहते हैं--] हे पक्षीराज गरुड़जी! सुनना। श्री राम के राज्य में जड़-चेतन जगत में किसी को भी काल, कर्म, कामना और गुणों से उत्पन्न होने वाले दुःख नहीं होते (अर्थात् कोई इनसे बंधा नहीं है)।

अयोध्या में श्रीरघुनाथजी सात समुद्रों की करधनी वाली पृथ्वी के एकमात्र राजा हैं। जिनके रोम-रोम में अनेक ब्रह्माण्ड हैं, उनके लिए सात द्वीपों का यह प्रभुत्व कुछ अधिक नहीं है।।। दरअसल, भगवान की महिमा को समझने के बाद, उन्हें यह कहने में बहुत हीन भावना आती है कि वे सात महासागरों से घिरी सप्तदीपमयी पृथ्वी के एकमात्र सम्राट हैं। परन्तु हे गरुड़जी! जिन्होंने उस महिमा को जाना है वे भी इस लीला को महान प्रेम मानते हैं।

क्योंकि उस महिमा को जानने का परिणाम ही यह लीला (इस लीला का अनुभव) है, ऐसा इन्द्रियों का दमन करने वाले महर्षि कहते हैं। रामराज्य के सुख और सम्पत्ति का वर्णन शेषजी और सरखतीजी भी नहीं कर सकते।

सभी स्त्री-पुरुष उदार हैं, सभी दानशील हैं और सभी ब्राह्मणों के चरणों के सेवक हैं। सभी मनुष्य एकपत्नी होते हैं। इसी प्रकार, महिलाओं को भी अपने मन, वचन और कर्म से अपने पति का कल्याण करना चाहिए।

श्री रामचन्द्रजी के राज्य में दण्ड केवल तपस्वियों के हाथ में है और भेदभाव नर्तकों के समुदाय में है तथा 'जीतो' शब्द केवल हृदय जीतने के लिए (अर्थात राजनीति में शत्रुओं को जीतने के लिए और दबाने के लिए) सुना जाता है चोर, लुटेरे आदि साम, दान, दण्ड और भेद - ये चार उपाय) रामराज्य में कोई शत्रु नहीं होता, इसलिए जीतने के लिए ही 'जीतो' शब्द कहा जाता है।

कोई अपराध नहीं करता, इसलिये किसी को दण्ड नहीं मिलता; दण्ड शब्द केवल सन्यासियों के लिये दण्ड के लिये रह गया है। और चूँकि सभी मित्रवत थे, इसलिए भेदभाव की कोई आवश्यकता नहीं थी; भेद शब्द का प्रयोग सुर और लय के भेद के लिए ही किया जाता है।

जंगलों में पेड़ हमेशा खिलते और फलते हैं। हाथी और शेर एक साथ रहते हैं (शत्रुता भूलकर)। पशु-पक्षियों ने अपनी स्वाभाविक घृणा को भुलाकर एक-दूसरे के प्रति प्रेम बढ़ा दिया है। पक्षी मधुर स्वर में गाते हैं, विभिन्न प्रकार के जानवरों के समूह जंगल में निर्भय होकर विचरण करते हैं और आनंद मनाते हैं। शीतल, मंद, सुगन्धित वायु चलती रहती है। भौंरे पत्तों का रस लेकर चलते समय गुंजन करते रहते हैं।

लताएँ माँगने पर ही शहद (अमृत) टपकाती हैं। गायें उतना ही दूध देती हैं जितना वे चाहती हैं। भूमि सदैव कृषि से परिपूर्ण रहती है। त्रेता में सत्ययुग की स्थिति प्राप्त हो गयी थी।
पर्वतों ने समस्त जगत के आत्मा ईश्वर को जगत का राजा मानकर अनेक प्रकार के रत्नों की खानें प्रकट कर दीं। सभी नदियाँ उत्तम शीतल, निर्मल और सुखदायक रुचिकर जल से बहने लगीं।

समुद्र अपनी सीमा में रहता है। वे लहरों के माध्यम से रत्नों को किनारे पर गिराते हैं, जिन्हें मनुष्य ढूंढ लेते हैं। सभी तालाब कमलों से भरे हुए हैं। दसों दिशाओं (अर्थात सभी क्षेत्रों) के विभाग अत्यंत प्रसन्न हैं। श्री रामचन्द्रजी के राज्य में चन्द्रमा अपनी अमृतमयी किरणों से पृथ्वी को भर देता है। सूर्य उतना ही तपता है जितनी आवश्यकता होती है और बादल जब और जहाँ माँगते हैं पानी देते हैं।

भगवान श्री राम ने करोड़ों अश्वमेध यज्ञ किये और ब्राह्मणों को खूब दान दिये। श्री रामचड्ढा जी वेद मार्ग के अनुयायी, धर्म की धुरी को धारण करने वाले, सत, रज, तम तीनों गुणों में तथा भोगों में उन्हीं के समान हैं।

शोभाकी खान, सुशील और विनम्र सीताजी हमेशा अपने पति के प्रति मित्रवत रहती हैं। वह कृपा के सागर श्री रामजी की महिमा (महिमा) को जानती है और पूरे दिल से उनके चरण कमलों की सेवा करती है। यद्यपि घर में बहुत से (असंख्य) सेवक और दासियाँ हैं और वे सभी सेवा की विधि में कुशल हैं, तथापि श्री सीताजी अपने स्वामी की सेवा का महत्व जानकर घर की सारी सेवा अपने हाथों से करती हैं और उसका पालन करती हैं श्री रामचन्द्रजी की आज्ञा।

कपसागर श्रीरामचन्द्रजी जो कुछ सुख समझते हैं वही करते हैं; क्योंकि वे सेवा की विधि जानते हैं। सीताजी घर में कोसल्या आदि सभी ससुराल वालों की सेवा करती हैं, उन्हें किसी बात का अभिमान या अभिमान नहीं है। [शिवजी कहते हैं--] हे उमा! जगज्जननी राम (सीताजी) ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा पूजित और सदैव स्तुति (सभी गुणों से परिपूर्ण) हैं।

देवता उनका आशीर्वाद चाहते हैं, लेकिन वह उनकी ओर देखती भी नहीं हैं, यह लक्ष्मीजी (जानकीजी) ही हैं जो अपना [महिमा] स्वभाव छोड़कर श्री रामचन्द्रजी के चरणों में प्रेम करती हैं। सभी भाई मित्रवत रहकर उसकी सेवा करते हैं। उन्हें श्री रामजी के चरणों में अत्यंत प्रेम है। वे सदैव भगवान का मुख ही देखते रहते हैं कि कहीं दयालु श्री रामजी कभी उनसे कुछ सेवा करने को न कहें।

श्री रामचन्द्रजी भी अपने भाइयों से प्रेम करते हैं और उन्हें अनेक प्रकार की नीतियाँ सिखाते हैं। नगर के लोग प्रसन्न रहते हैं और सभी प्रकार के देवताओं और दुर्लभ प्रसाद (देवताओं को भी कठिनाई से उपलब्ध होते हैं) का आनंद लेते हैं। वे दिन-रात ब्रह्माजी का भजन करते रहते हैं और श्री रघुवीर के चरणों में प्रेम माँगते हैं। काक लब और कुश--इन दो पुत्रों का जन्म हुआ, जिनका वर्णन वेदों और पुराणों में मिलता है।

वे दोनों विजयी (प्रसिद्ध योद्धा), विनम्र तथा गुणों के धाम हैं तथा अत्यंत सुन्दर हैं, मानो श्रीहरि के प्रतिबिम्ब हों। सभी भाइयों के दो-दो पुत्र थे, जो बहुत सुन्दर, गुणवान और विनम्र थे। वह जो (बुद्धिका) ज्ञान, वाणी और इंद्रियों से परे है और अजन्मा है और माया, मन और गुणों से परे है, वह सच्चिदानंदघन भगवान ही हैं जो सर्वोत्तम मानवीय गतिविधियाँ करते हैं।

प्रातःकाल सरयूजी में स्नान करके ब्राह्मणों तथा सज्जनों के साथ सभा में बैठते हैं। वशिष्ठजी वेद-पुराणों की कथाएँ सुनाते हैं और श्री रामजी सुनते हैं, यद्यपि वे सब कुछ जानते हैं॥ वे अपने भाइयों के साथ खाना खाते हैं. उन्हें देखकर सभी माताएं खुशी से भर जाएंगी। भरतजी और शत्रुघ्नजी दोनों भाई हनुमानजी के साथ बगीचे में जाते थे।

वे वहाँ बैठकर श्री रामजी के गुणों की कथाएँ पूछते हैं और हनुमानजी अपनी सुन्दर बुद्धि से उन गुणों में गोता लगाकर उनका वर्णन करते हैं। श्री रामचन्द्रजी के पवित्र गुणों को सुनकर दोनों भाई अत्यंत प्रसन्न होते हैं और नम्रता से उन्हें बार-बार दोहराते हैं। घर-घर में पुराणों की कहानियाँ और राम की विभिन्न पवित्र कहानियाँ हैं। सभी नर-नारी श्री रामचन्द्रजी के गुण गाते हैं और इस आनंद में दिन-रात के बीतने का भान ही नहीं रहता।

जिस अवधपुरी में स्वयं भगवान श्री रामचन्द्रजी राजा के रूप में विराजमान हैं, उस अवधपुरी के निवासियों के सुख और ऐश्वर्य का वर्णन हजारों शेषजी भी नहीं कर सकते। नारद आदि, सनक आदि ऋषि-मुनि, सभी कोसलराज श्री रामजी के दर्शन के लिए प्रतिदिन अयोध्या आते हैं और उस (दिव्य) नगरी का दर्शन कर अपना वियोग भूल जाते हैं। .

[दिव्या] सोने और रत्नों से बनी अट्टालियाँ हैं। उनमें से [मणि-रत्रोंकी| यहां कई रंगों के खूबसूरत ढले हुए फर्श हैं। शहर के चारों ओर बेहद खूबसूरत दीवारें बनी हुई हैं, जिन पर खूबसूरत रंग-बिरंगे पत्थर बने हुए हैं। मानो नवग्रह ने एक विशाल सेना बनाकर अमरावती को घेर लिया हो। पृथ्वी (सड़कों) पर अनेक रंगों के (दिव्य) शीशों (रत्नों) की मूर्तियाँ बनी (ढली हुई) हैं, जिन्हें देखकर अच्छे-अच्छे ऋषियों का हृदय भी नाच उठता है।

उजले महल ऊपर आकाश को चूम (छू) रहे हैं। महलों पर बर्तन [अपनी दिव्य रोशनी के साथ। ऐसा लगता है मानों सूर्य और चन्द्रमा की रोशनी की भी आलोचना की गयी हो। [महलों में | अनेक रत्नों से बनी खिड़कियाँ शोभायमान हैं और रत्नों से बने दीपक हर घर की शोभा बढ़ा रहे हैं। सभी लोगों ने घूम-घूम कर विभिन्न प्रकार के फूलों के बगीचे लगाए हैं, जिनमें अनेक प्रजातियों की सुंदर और नाजुक लताएं हमेशा वसंत ऋतु की तरह खिलती रहती हैं।

भौंरे सुखद चहचहाहट की आवाज निकालते हैं। तीनों प्रकार की सुन्दर पवनें सदैव बहती रहती हैं। बच्चों ने कई पक्षियों को पालतू जानवर के रूप में पाला हुआ है, जो मीठा बोलते हैं और उड़ते समय सुंदर लगते हैं। मोर, हंस, सारस और कबूतर घरों की शोभा बढ़ाते हैं। उन पक्षियों ने सर्वत्र [रत्नों की दीवारों और छत में] अपना ही प्रतिबिम्ब देखकर उन्हें अन्य पक्षी समझ लिया। वे मधुर बोलियाँ बोलते हैं और अनेक प्रकार से नृत्य करते हैं।

बच्चे तोते और मैना को कहना सिखाते हैं - राम रघुपति जनपालक। राजभागर हर तरह से खूबसूरत है. सड़कें, चौराहे और बाज़ार सभी सुंदर हैं। यह एक

खूबसूरत बाज़ार है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता; वहां चीजें बिना किसी कीमत के मिलती हैं. जिस स्थान का राजा स्वयं लक्ष्मीपति हो, उस स्थान की संपत्ति का वर्णन कैसे किया जाए? बजाज (जो कपड़ों का व्यापार करता है), सराफ (जो पैसों का व्यापार करता है) आदि व्यापारी तो ऐसे बैठे हुए हैं मानो बहुत सारे कुबेर हों। स्त्री, पुरुष, बच्चे और वयस्क सभी सुखी, सदाचारी और सुन्दर हैं।

नगर के उत्तर दिशा में सरयूजी बह रही है, जिसका जल स्वच्छ एवं गहरा है। सुन्दर घाट हैं, किनारों पर रत्ती भर भी कीचड़ नहीं है। कुछ दूरी पर एक सुंदर घाट है, जहां पर घूमते घोड़े और हाथी पानी पीते हैं। यहां पानी भरने के लिए कई घाट हैं, जो बेहद खूबसूरत हैं। वहां पुरुष स्नान नहीं करते.

राजघाट हर प्रकार से सुन्दर एवं उत्कृष्ट है, जहाँ चारों वर्णों के पुरुष प्रार्थना करते हैं। सरयूजी के चारों ओर देवताओं के मंदिर हैं, जो सुन्दर उद्यानों से घिरे हुए हैं। नदी के तट पर कुछ स्थानों पर विरक्त और ज्ञानी ऋषि-मुनि और तपस्वी निवास करते हैं। ऋषियों ने सरयूजी के तट पर तुलसी के अनेक सुन्दर वृक्ष लगाये हैं।

शहर की खूबसूरती कहीं नहीं जाती. शहर के बाहर भी अपार सुंदरता है. श्रीअयोध्यापुरी के दर्शन से सारे पाप दूर हो जाते हैं। [वहां] जंगल, बगीचे, तालाब और पोखर सुंदर हैं। अद्वितीय बावड़ियाँ, तालाब तथा सुन्दर एवं विशाल कुएँ इस स्थान की शोभा बढ़ा रहे हैं, जिनकी सुन्दर स्त्रियाँ, सीढ़ियाँ तथा स्वच्छ जल देखकर देवता तथा ऋषि-मुनि मोहित हो जाते हैं।

[तालाबों में] अनेक रंगों के कमल खिल रहे हैं, अनेक पक्षी गा रहे हैं और भौंरे गुंजन कर रहे हैं। [सबसे सुंदर बगीचे में कोयल आदि पक्षियों की सुंदर बोली] यात्रियों को बुलाती हुई प्रतीत होती है।

क्या उस नगर का वर्णन कहीं भी किया जा सकता है जहाँ स्वयं भगवान राजा हों? अणिमा आदि आठ सिद्धियाँ तथा समस्त सुख-सम्पत्तियाँ अयोध्या में व्याप्त हैं। सर्वत्र लोग श्रीरघुनाथजी के गुण गाते हैं और एक-दूसरे को बैठकर शरण-गत का पालन करने वाले श्री रामजी की पूजा करना सिखाते हैं; रूप, शील, सौन्दर्य और गुणों के धाम श्रीरघुनाथजी को भजो।

कमल नेत्रों और श्याम शरीर वालों की पूजा करो। उसकी पूजा करो जो तुम्हारे सेवकों की वैसे ही रक्षा करता है जैसे पलकें आँखों की रक्षा करती हैं। जो सुन्दर

बाण, धनुष और तरकश धारण करता है, उसकी पूजा करो। साधु रूपी कमल के फूल को खिलाने के लिए सूर्य के रूप में रणधीर श्री रामजी की पूजा करो।

कालरूपी भयानक सर्प को खाने वाले श्री राम के रूप में गरुड़जी की पूजा करें। प्रणाम करते ही प्रेम का नाश करने वाले श्री रामजी को निष्काम भाव से भजो। लोभरूपी मृग समूह का नाश करने वाले श्री राम रूपी किरात की पूजा करो। कामदेव रूपी हाथी के लिए तथा सेवकों को सुख देने वाले भगवान रामरूपी सिंह की पूजा करें।

संशय और दुख के घने अंधकार का नाश करने वाले श्री राम रूपी सूर्य की पूजा करें। श्रीगम रूपी अग्नि की पूजा करें जो राक्षसों रूपी घने जंगल को जला देती है। हम जन्म और मृत्यु के भय को नष्ट करने वाले श्री जानकीजी सहित श्री रघुवीर की पूजा क्यों नहीं करते?

अनेक कामनाओं रूपी मच्छरों का नाश करने वाले श्री रामरूप हिमराशि (बर्फ का ढेर) की पूजा करो। नित्य, अजन्मा और अविनाशी श्रीरघुनाथजी की पूजा करो। ऋषियों को आनंद देने वाले, पृथ्वी का भार हरने वाले तथा तुलसीदासजी के उदार (दयालु) स्वामी श्री यमजी को भजो।

इस प्रकार नगर के नर-नारी श्री रामजी की स्तुति करते हैं और धन्य श्री रामजी सब पर सदैव प्रसन्न रहते हैं। [काकभुशुण्डिजी कहते हैं--] ये पक्षियों के राजा गरुड़जी हैं। जब से राम प्रताप रूपी अत्यंत शक्तिशाली सूर्य का उदय हुआ, तब से तीनों लोक पूर्ण प्रकाश से भर गये। इससे कई लोगों को ख़ुशी मिली तो कईयों को दुःख।

जो लोग दुःखी हैं, उनसे मैं कहता हूँ कि सर्वत्र प्रकाश फैलने से पहले ही अज्ञान की रात्रि नष्ट हो गयी। पापरूपी उल्लू सर्वत्र छिप गये और काम-क्रोधरूपी कुमुदिनी छिप गये। विभिन्न प्रकार के [बंधक कारक] कर्म, गुण, काल और भाव - ये वर्ग हैं, जो [राम प्रताप रूपी सूर्य के प्रकाश में] हैं। कभी ख़ुशी नहीं मिलती. जो लोग ईर्ष्या, अहंकार, मोह और धन रूपी चोर होते हैं, उनकी कुशलता (कला) भी कहीं नहीं जा सकती।

ज्ञान, विज्ञान- ये अनेक रंगों के कमल धर्म के तालाब में खिले हैं। सुख, सन्तोष, गति और विवेक- ये अनेक पहिये दुःखरहित हो गये हैं। जब यह श्रीरामरूपी सूर्य हृदय में प्रकाशित होता है, तब (धर्म, ज्ञान, विज्ञान, सुख, संतोष, वैराग्य और विवेक) जिनका वर्णन किया गया है, उनकी वृद्धि होती है। जाओ और किसका.

जो पहले वर्णित हैं वे (अज्ञान, पाप, काम, क्रोध, कर्म, काल, गुण, स्वभाव आदि) हैं। नाशवान हो जाओ (नष्ट हो जाओ)।

शुभ अवसर को भाँपकर सनकादि मुनि आये, जो तेज, सुन्दर गुणों तथा सदाचार से सम्पन्न हैं तथा सदैव ब्रह्मानन्द में लीन रहते हैं। वे बच्चों की तरह दिखते हैं, लेकिन वे बहुत पहले के हैं। मानो चारों वेदों ने एक शिशु का रूप धारण कर लिया हो। वह ऋषि समदर्शी और भेदभाव रहित है। दिशाएँ ही उनके वस्त्र हैं। उसकी एक ही लत है कि जहाँ भी श्रीरघुनाथजी के चरित्र की कथा होती है, वह वहाँ जाकर अवश्य सुनता है।

,शिवजी कहते हैं--]हे भवानी! सनकादि मुनि उस स्थान पर गये थे (वहाँ से आकर) जहाँ मुनिवर श्री अगस्त्यजी रहते थे॥ महान ऋषि ने श्री गयमजी की कई कहानियाँ सुनाई थीं, जो उसी प्रकार ज्ञान उत्पन्न करने में सक्षम हैं जैसे कच्ची लकड़ी से आग उत्पन्न होती है। सनकादि मुनियों को आते देखकर श्री रामचन्द्रजी प्रसन्न हो गये और उन्होंने भगवान से दण्डवत की खगत (कुशल) पूछी। उसने बैठने के लिए अपनी चटाई बिछा दी।

तब हनुमानजी सहित तीनों भाइयों ने साष्टांग प्रणाम किया, सभी को बहुत प्रसन्नता हुई। श्रीरघुनाथजी की अतुलनीय छवि देखकर मुनि उसमें मग्न हो गये। वे अपने मन पर नियंत्रण नहीं रख सके। वे जन्म-मृत्यु के चक्र से छुड़ाने वाले, काले शरीर वाले, कमल नयन वाले, सौंदर्य के धाम श्री रामजी को देखते रहे और पलकें नहीं झपकाईं। और भगवान हाथ जोड़कर सिर झुका रहे हैं.

उनका [प्रेमविहाल | उनकी यह दशा देखकर श्रीरघुनाथजी की आँखों से प्रेम के आँसू बहने लगे और उनका शरीर पुलकित हो गया। तदनन्तर भगवान ने महर्षियों का हाथ पकड़ कर बैठाया और अत्यन्त सुन्दर वचन बोले- हे मुनियों! सुनो, आज मैं धन्य हो गया। आपके दर्शन के कारण [सभी | पाप नष्ट हो जाते हैं. भाग्य बढ़ने से ही सत्संग की प्राप्ति होती है, जिससे बिना परिश्रम के ही जन्म-मरण का चक्र नष्ट हो जाता है।

मोक्ष का मार्ग (अस्तित्व के बंधन से मुक्ति) संत के पास है और जन्म और मृत्यु के बंधन से मुक्ति का मार्ग कामिका के पास है। संत, कवि, विद्वान तथा वेद, पुराण आदि सभी शास्त्र यही कहते हैं। भगवान के वचन सुनकर चारों ऋषि प्रसन्न हो गये और प्रसन्न शरीर से स्तुति करने लगे- हे प्रभु, आपकी जय हो। आप अन्तर्यामी, विकाररहित, निष्पाप, अनेकानेक (सभी रूपों में प्रकट), एक (अद्वितीय) और दयालु हैं।

हे निर्गुण! आपकी जय हो । हे गुणों के सागर! आपकी जय, आपकी जय. तुम सुखधाम हो। वह बहुत सुंदर और बहुत स्मार्ट है। हे लक्ष्मीपति! आपकी जय हो। हे पृथ्वी के वाहक! कृषक! आपकी जय हो। आप अतुलनीय, अजन्मा, शाश्वत और गौरवशाली हैं।

आप ज्ञान का भण्डार हैं, बिना किसी सम्मान के और [दूसरों को] सम्मान देते हैं। वेद और पुराण आपकी पवित्र और सुंदर स्तुति गाते हैं। आप तत्त्वों के ज्ञाता, की गई सेवा को स्वीकार करने वाले तथा अज्ञान का नाश करने वाले हैं। आप स्वरूप हैं, सर्वत्र व्याप्त हैं और सबके हृदय में सदैव निवास करते हैं; [तो] आप हमारा अनुसरण करें। दुःख, विपत्ति और जन्म-मृत्यु [प्रेम-द्वेष, अनुकूलता-प्रतिकूलता, जन्म-मृत्यु आदि] के जाल को नष्ट करो। हे राम, आप हमारे हृदय में बस जाइये और काम-वासना का नाश कर दीजिये।

आप आनंद स्वरूप, वस्त्रों के निवास और मन की इच्छाओं को पूरा करने वाले हैं। हे श्री रामजी! हमें अपना अटूट प्रेम और भक्ति प्रदान करें। हे रघुनाथजी! कृपया हमें अपनी परम पवित्र भक्ति प्रदान करें जो तीनों प्रकार के तापों तथा जन्म-मृत्यु के कष्टों का नाश कर दे। हे कामधेनु और कल्पवृक्ष रूप, भक्तों की मनोकामना पूर्ण करने वाले भगवान! प्रसन्न होकर हमें यह वर प्रदान करें।

हे रघुनाथजी! आप जन्म और मृत्यु के सागर को सोखने में अगस्त्य मुनि के समान हैं। आप सेवा करने में सहज और सर्व सुख देने वाले हैं। हे नम्र लोगों! मन में उत्पन्न होने वाले कष्टदायक दुखों को नष्ट करें और हमारे अंदर समता का विस्तार करें। आशा, भय और ईर्ष्या आदि को दूर करने वाले तथा शील, विवेक और वैराग्य का विस्तार करने वाले श्री रामजी राजाओं के मुकुट और पृथ्वी के रत्न हैं। अपनी भक्ति को नाव के रूप में संसृति (जन्म और मृत्यु का प्रवाह) नदी में अर्पित करें।

हे हंस, जो ऋषियों के मन रूपी मानसरोवर में निरंतर निवास करता है। आपके चरणकमलों की ब्रह्माजी और शिवजी वन्दना करते हैं। आप रघुकुल के केतु, वेदमर्यादा के रक्षक और काल, कर्म, भाव और गण [रूप और बंधन] के भक्षक (विनाशक) हैं। आप तारण-तारण (स्वयं को मुक्त करके दूसरों को बचाने वाले) तथा समस्त दोषों को हरने वाले हैं। आप तीनों लोक के रत्न हैं - तुलसीदास के स्वामी।

बार-बार स्तुति करने और प्रेम से सिर झुकाने के बाद तथा अपना अभीष्ट वर प्राप्त करके सनकादि मुनि ब्रह्मलोक को चले गये। सनकादि मुनि ब्रह्मलोक चले गये। तब भाइयों ने श्री रामजी के चरणों में सिर झुकाया। सभी भाई भगवान

से माँगने में झिझकते हैं। इसलिए हर कोई हनुमानजी की ओर देख रहा है. वे भगवान के श्रीमुख की वाणी सुनना चाहते हैं, जिसे सुनने के बाद सभी भ्रम नष्ट हो जाते हैं। अन्तर्यामी भगवान् सब कुछ जान गये और पूछने लगे- बताओ हनुमान! क्या बात है ?

तब हनुमानजी ने हाथ जोड़कर कहा- हे नम्र भगवन्! सुनना। हे नाथ! भरतजी कुछ पूछना चाहते हैं, लेकिन प्रश्न पूछने में झिझक रहे हैं। भगवान ने कहा--]हनुमान! मेरा स्वभाव तो आप जानते ही हैं. क्या भरत और मुझमें कभी कोई अंतर है? प्रभु के वचन सुनकर भरतजी ने उनके चरण पकड़ लिये और। बोले--) हे नाथ! हे समर्पण करने वालों के दुःख दूर करने वाले! सुनना।

हे नाथ! मुझे न तो कोई सन्देह है, न कोई चिन्ता है, न मुझे कोई दुःख या मोह है। हे कृपा और. आनंद समूह को आशीर्वाद! कपाका तो तुम्हारा ही है. मुझे तुम्हारे साथ एक चाल खेलने दो। मैं सेवक हूं और तुम सेवक को सुख देने वाले हो [मेरी अदूरदर्शिता को क्षमा करो और मेरे प्रश्न का उत्तर देकर सुख दो]। हे रघुनाथजी! वेदों और पुराणों ने अनेक प्रकार से संतों की महिमा गाई है।

तुमने भी अपने मुख से उनकी स्तुति की है और प्रभु (तुम्हें) उन पर बड़ा प्रेम रखते हैं। हे प्रभो ! मैं उनके लक्षण सुनना चाहता हूं. आप कृपा के सागर हैं और गुणों तथा ज्ञान में अत्यंत निपुण हैं। समर्पण का पालन करने वाले! मुझे साधु और असंत का अंतर समझाओ. [श्रीरामजी ने कहा--अरे भाई! संतों के लक्षण (गुण) असंख्य हैं, जो वेदों और पुराणों में प्रसिद्ध हैं।

साधु-संन्यासियों का आचरण चंदन की कुल्हाड़ी के आचरण के समान होता है। अरे भइया! सुनो, कुल्हाड़ी चंदन को काटती है [क्योंकि उसका स्वभाव या काम वृक्ष काटना है]; लेकिन चंदन. वह अपनी गुणवत्ता (अपनी इच्छानुसार) देकर उसे (काटने वाली कुल्हाड़ी को) कुल्हाड़ी से भी बेहतर आकार देता है।

संत वस्तुओं के मोही (भोगी) नहीं होते, वे तो शील और गुणों की खान होते हैं। वे किसी दूसरे का दुःख देखकर दुःखी होते हैं और सुख देखकर प्रसन्न होते हैं। वे हर चीज़ में, हर जगह, हर समय समभाव बनाए रखते हैं, उनके मन में कोई शत्रु नहीं होता, वे नशे और वैराग्य से मुक्त होते हैं और लालच, क्रोध, खुशी और भय से मुक्त रहते हैं।

उनका मन बहुत कोमल है. वे दीन-दुखियों पर दया करते हैं और मन, वचन तथा कर्म से मेरी शुद्ध भक्ति करते हैं। वे सभी को आदर देते हैं, परन्तु स्वयं आदरहीन हैं। हे भारत! ये जीव (संत) मेरे प्राणों के समान हैं।

कोई इच्छा नहीं है. वे मेरे नाम के प्रति समर्पित हैं. वहाँ शांति, वैराग्य, नम्रता और प्रसन्नता के घर हैं। उनमें शीतलता, सरलता, सबके प्रति मित्रता और ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम है, जिससे धर्म का जन्म होता है।

हे पिता! ये सभी लक्षण जिसके हृदय में हों उसे सदैव सच्चा संत समझना चाहिए। जो लोग शम (मन पर नियंत्रण), दम (इंद्रियों पर नियंत्रण), नियम और नीति से कभी विचलित नहीं होते और कभी कठोर शब्द नहीं बोलते; जो निन्दा और स्तुति दोनों में समान हैं तथा जिन्हें मेरे चरणकमलों में प्रेम है, वे साधु जो गुणों के धाम तथा सुख की राशि हैं, वे मुझे अपने प्राणों के समान प्रिय हैं।

अब असंतों (दुष्टों) का स्वभाव सुनो; भूलकर भी इनकी संगति नहीं करनी चाहिए। उनका संग सदैव दुःखदायी है। जिस प्रकार हरहाई (बुरी जाति) गाय अपनी संगति से कपिला (सीधी और.. दुधारू) गाय को नष्ट कर देती है, उसी प्रकार सबके हृदय में बड़ा दुःख होता है।

वे सदैव पराये धन (सुख) को देखकर जलते रहते हैं। जहां भी वे दूसरों की आलोचना सुनते हैं, ऐसे प्रसन्न होते हैं जैसे उन्हें रास्ते में कोई खजाना पड़ा हो। वे काम, क्रोध, अहंकार और लोभ के प्रति समर्पित होते हैं और क्रूर, धोखेबाज, कुटिल और धोखेबाज लोगों के घर होते हैं। वे बिना किसी बात के हर किसी से दुश्मनी करते हैं। जो अच्छा करता है उसके साथ बुराई भी करता है।

उन्हें झूठा ही लेना है और झूठा ही देना है। भोजन तो मिथ्या है और चबाना भी मिथ्या है (अर्थात लेने-देने के मामले में झूठ का सहारा लेकर दूसरों का हक छीन लेते हैं या झूठा घमंड करते हैं कि हमने लाखों रुपये लिये हैं और करोड़ों रुपये दान किये हैं। इस प्रकार) वे चने की रोटी खाते हैं और कहते हैं कि उन्होंने आज बहुत खाना खाया या वे चबाना बंद कर देते हैं और कहते हैं कि वे अच्छे भोजन से नाखुश हैं, आदि।

इसका मतलब है कि वे हर चीज में झूठ बोलते हैं।) बिल्कुल मोर की तरह [बहुत मीठा बोलता है, लेकिन उसका सिर झूठ से भरा होता है। यह इतना कठोर होता है कि सबसे जहरीले सांपों को भी खा जाता है। इसी तरह ये भी ऊपर से तो मीठी बातें करते हैं, लेकिन दिल से बहुत क्रूर होते हैं।

वे दूसरों को धोखा देते हैं और किसी और की पत्नी, किसी और के धन और किसी और की आलोचना से जुड़े रहते हैं। ये पामर और पापी लोग तरुष से युक्त राक्षस

हैं। लोभ ही उनका आवरण है और लोभ ही एकमात्र वस्तु है)। वे पशुओं की तरह कला और काम की प्रशंसा किसी के सुनने में असमर्थ होते हैं (अर्थात वे सदैव लोभ से घिरे रहते हैं, समर्पित होते हैं, उन्हें यमपुर का भय नहीं होता)।

और जब वे किसी का दुर्भाग्य देखते हैं तो उन्हें ऐसी ख़ुशी होती है मानो वे पूरी दुनिया के राजा बन गए हों। वे स्वार्थी, अपने परिवार के सदस्यों के खिलाफ, कामी और काम और लालच के कारण अत्यधिक क्रोधी होते हैं। वे किसी को माता, पिता, गुरु या ब्राह्मण नहीं मानते। तू तो नष्ट होता ही है, तू दूसरों को भी नष्ट कर देता है। वे मोहवश दूसरों को धोखा देते हैं। उन्हें न तो संतों की रट पसंद है और न ही भगवान की कथा.

वे नीच जाति के समुद्र, मंदबुद्धि, कामी, वेदों की निंदा करने वाले और दूसरों के धन पर बलपूर्वक कब्जा करने (लूटने) वाले हैं। वे निश्चय ही दूसरों को धोखा देते हैं; लेकिन ब्राह्मण विशिष्टता से द्रोह करते हैं। उनके हृदय अभिमान और छल से भरे हुए हैं, परन्तु ऊपर से वे सुन्दर वस्त्र पहनते हैं।

ऐसे नीच और दुष्ट लोग सत्ययुग और त्रेतायुग में नहीं होते। द्वापर में इनकी संख्या कम होगी और कलियुग में इनकी संख्या बहुत होगी। हां भाई! दूसरों की भलाई करने के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को कष्ट पहुंचाने के समान कोई पाप नहीं है। हे पिता! यह निर्णय (निश्चित सिद्धांत) सभी पुराणों और वेदों का तुम्हें बताया गया है, इसे विद्वान लोग जानते हैं।

जो लोग मनुष्य शरीर धारण करके दूसरों को दुःख देते हैं, उन्हें जन्म और मृत्यु के महान कष्ट सहने पड़ते हैं। मोह और स्वार्थ के कारण मनुष्य अनेक पाप करते हैं, इसी कारण उनका परलोक नष्ट हो जाता है। अरे भइया! मैंने उसके लिए जप किया. मैं कालरूप (भयानक) हूं और उनके अच्छे और बुरे कर्मों का [उचित] फल देने वाला हूं! ऐसे अत्यंत चतुर लोग संसार को दुःख स्वरूप मानते हैं और मेरी ही पूजा करते हैं।

इसी से देवता, मनुष्य तथा ऋषिगण शुभ तथा अशुभ फल देने वाले कर्मों का त्याग करके मेरी पूजा करते हैं। [इस प्रकार] मैंने संतों और अविश्वासियों के गुण बताये। जो लोग इन गुणों को समझ लेते हैं वे जन्म और मृत्यु के जाल में नहीं पड़ते।

हे तत् ! सुनो, बहुत से (सभी) गुण और दोष माया द्वारा रचे गए हैं (उनका कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है)। सद्गुण (विवेक) दोनों को न देखने में है, दोनों को देखना अविवेक है।

प्रभु के मुख से ये वचन सुनकर सभी भाई प्रसन्न हो गये। उनके दिलों में प्यार नहीं समाता. वे बार-बार बड़ी-बड़ी मिन्नतें करते हैं। खासतौर पर वहां हनुमानजी के हृदय में अपार हर्ष है। इसके बाद श्रीरामचन्द्रजी अपने महल में चले गये। इस तरह वे हर दिन नई हरकतें करते हैं. नारदमुनि बार-बार अयोध्या आते हैं और श्री रामजी के पवित्र चरित्रों का गान करते हैं।

सनकादि मुनि नारदजी की प्रशंसा करते हैं। यद्यपि वे (सनकादि) मुनि ब्रह्मभक्त हैं, तथापि श्री रामजी की स्तुति सुनकर वे भी अपनी ब्रह्मसमाधि भूल जाते हैं और आदरपूर्वक उनकी बात सुनते हैं। वह [राम कथा सुनने के लिये] सर्वश्रेष्ठ अधिकारी हैं। सनकादि मुनि जैसे जीवनमुक्त और ब्रह्मनिष्ठ लोग भी ध्यान (ब्रह्म-समाधि) छोड़कर श्री रामजी के चरित्र को सुनते हैं। यह जानते हुए भी जो लोग श्री हरिकी कथा से प्रेम नहीं करते, उनके हृदय [वस्तुतः] पत्थर के समान हैं।

एक बार श्रीरघुनाथजी द्वारा बुलायी गयी सभा में गुरु वशिष्ठजी, ब्राह्मण तथा समस्त नगरवासी आये। जब गुरु, मुनि, ब्राह्मण तथा अन्य सभी सज्जन उचित रूप से बैठ गये, तब भक्तों के जन्म-मरण का नाश करने वाले श्री रामजी बोले- हे! समस्त नगरवासी! मेरी बात सुनो। मैं यह बात अपने हृदय में किसी स्नेह से नहीं कहता।

न तो मैं कोई अनैतिक बात कह रहा हूं और न ही इसमें कोई अधिकार है. इसलिए [संकोच और भय को छोड़कर, ध्यान दो] मैं जो कहता हूं उसे सुनो और [फिर] यदि तुम्हें अच्छा लगे तो उसके अनुसार करना!

वह मेरा सेवक है और वह सबसे प्रिय है जो मेरी आज्ञा का पालन करता है। अरे भइया! यदि मैं कोई अनैतिक बात कहूँ तो बिना डरे मुझे रोक देना। बड़े भाग्य से मुझे यह मानव शरीर मिला है। सभी शास्त्रों ने कहा है कि देवताओं का यह शरीर भी दुर्लभ (मुश्किल से मिलना) है। यह साधन का धाम और मोक्ष का द्वार है। जिसने यह प्राप्त करके भी परलोक नहीं बनाया।

वह परलोक में दु:ख भोगता है, सिर पीटता है और पश्चात्ताप करता है तथा (अपना दोष न समझकर) समय, कर्म और ईश्वर को मिथ्या दोष देता है। अरे भइया! इस शरीर को प्राप्त करने का परिणाम यौन सुख नहीं है। [इस संसार के सुखों को क्या भूलना] स्वर्ग के सुख भी बहुत थोड़े हैं और अंततः दुःख ही देते हैं। इसलिए, जो लोग मानव शरीर प्राप्त करने के बाद अपना ध्यान चीजों पर केंद्रित करते हैं, वे मूर्खतापूर्वक जहर के बदले अमृत का आदान-प्रदान करते हैं।

उसे कभी कोई अच्छा (बुद्धिमान) नहीं कहता जो कीमती पत्थर खोने के बाद बदले में अंगूठी लेता है। यह अविनाशी जीव [अण्डज, खेदज, जरायुज और उदधिज्ज] चार खानों और चौरासी लाख योनियों में घूमता रहता है। वह माया की प्रेरणा से काल, कर्म, कामना और गुणों से घिरा हुआ (उनके वश में) सदैव भटकता रहता है। जो भगवान अकारण घृणा करता है, उस पर दया भी कम ही करता है और मनुष्य शरीर देता है।

यदि तुम परलोक और यहाँ दोनों जगह सुख चाहते हो तो मेरी बातें सुनो और उन्हें अपने हृदय में दृढ़तापूर्वक धारण कर लो। अरे भइया! मेरी भक्ति का यह मार्ग सरल और सुखदायक है, ऐसा पुराणों और वेदों ने गाया है। ज्ञान अप्राप्य है, [और] इसे प्राप्त करने में कई बाधाएँ हैं। इसके साधन कठिन हैं और इसमें मन का कोई आधार नहीं है। यदि कोई बहुत कष्ट के बाद भी इसे प्राप्त कर लेता है, तो भी वह मुझे प्रिय नहीं है, क्योंकि वह भक्ति से रहित है।

भक्ति शाश्वत है और सभी सुखों की खान है। परंतु सत्संग (संतों की संगति) के बिना जीव इसे प्राप्त नहीं कर सकता। और गुण समूह के बिना संत नहीं मिलते। केवल अच्छी संगति ही संसृति (जन्म और मृत्यु का चक्र) को समाप्त करती है। संसार में एक ही गुण है, उसके समान दूसरा कोई नहीं। अर्थात मन, कर्म और वाणी से ब्राह्मणों के चरणों की पूजा करना। जो छल-कपट छोड़कर ब्राह्मणों की सेवा करता है, उससे ऋषि-मुनि और देवता प्रसन्न रहते हैं।

एक और गुप्त मत है, उससे मैं हाथ जोड़कर कहता हूं कि बिना षड्भरजी के भजन के! मनुष्य को मेरी भक्ति प्राप्त नहीं होती. किसी से द्वेष मत करो, झगड़ा मत करो, कोई आशा मत रखो, कोई भय मत रखो। उसके लिए सभी दिशाएँ सदैव प्रसन्न रहती हैं। जो (इनाम की इच्छा से कार्य प्रारंभ नहीं करता), जिसका अपना कोई घर नहीं है (जिसके घर में कोई प्रेम नहीं है), जो सम्मानहीन, पापहीन और क्रोधहीन है, जो (भक्ति करने में) संलग्न नहीं है। वह कुशल और जानकार है.

जो सदैव संतों की संगति से प्रेम करता है, जिसके मन में स्वर्ग और मृत्यु भी सब कुछ घास के समान है [भक्ति के सामने], जो भक्ति के पक्ष में दृढ़ है, लेकिन मूर्खता नहीं करता है [दूसरों के विचारों का खंडन करना] और जो सभी कुत्तों को भगा दिया है. जो मेरे समूह के लोगों और मेरे नाम में समर्पित है और जो स्नेह, अहंकार और आसक्ति से मुक्त है, वही भगवान के रूप में परमानंदराशि प्राप्त करने वाले के सुख को जानता है।

श्री रामचन्द्रजी के अमृत के समान वचन सुनकर वे कहते हैं; आशीर्वाद का! आप ही हमारे माता, पिता, गुरु, भाई आदि सब कुछ हैं और प्राणों से भी अधिक प्यारे हैं।

हे राक्षसों के शत्रु! दुनिया में केवल दो ही लोग हैं जो निःस्वार्थ भाव से बिना किसी कारण के भलाई करते हैं - एक आप और दूसरा आपका सेवक। [बाकी] दुनिया में सभी थके हुए दोस्त हैं। हे प्रभो! उनमें परोपकार की भावना स्वप्न में भी नहीं होती। सबके प्रेम से सराबोर वचन सुनकर श्रीरघुनाथजी सबके मन में प्रसन्न हो गये और आज्ञा पाकर सब लोग प्रभु का सुन्दर संवाद सुनाते हुए अपने-अपने घर चले गये।

[शिवजी कहते हैं--] हे उमा! अयोध्या में रहने वाले पुरुष और महिलाएं सभी कृतज्ञता के प्रतीक हैं; जहाँ सच्चिदानन्दघन ब्रह्मा श्रीरघुनाथजी स्वयं राजा हैं। एक बार महर्षि वशिष्ठजी उस स्थान पर आये जहाँ श्री रामजी सुन्दर सुख के निवास थे। श्रीरघुनाथजी ने उनका बहुत आदर-सत्कार किया और उनके चरण धोकर चरणामृत ग्रहण किया।

ऋषि ने हाथ जोड़कर कहा- हे प्रभु श्री राम! मेरी कुछ विनती सुनो! आपके आचरण (मनुष्य के समान चरित्र) को देखकर मेरे हृदय में अत्यंत मोह (भ्रम) उत्पन्न हुआ है। जब मैंने इसे (पुरोहिती का काम) नहीं लिया, तब ब्रह्मा जी ने मुझसे कहा था- हे पुत्र! इससे आपको भविष्य में बहुत फायदा होगा. खय्याम ब्रह्म दर' बकुलके भूषण राजा होंगे। हाँ, भगवान मानव रूप धारण करेंगे और रघुकुल के रत्नमय राजा बनेंगे।

तब मैंने मन में सोचा कि जिसके लिये योग, यज्ञ, व्रत और दान किये जाते हैं, उसे मैं प्राप्त कर लूँगा; फिर इसके समान कोई दूसरा धर्म नहीं है। जप, तप, नियम, योग, अपना धर्म [वर्णाश्रम], अनेक शुभ कर्म (वेदविहित), ज्ञान, दया, शक्ति (इच्छधिनिग्रह), तीर्थयात्रा आदि जहाँ तक वेदों और संतों ने धर्म कहा है [उन्हें करने के लिए] - -

और हे भगवान! विभिन्न तंत्रों, वेदों और पुराणों को पढ़ने और सुनने का सर्वोत्तम फल एक ही है और सभी साधनों का सुंदर फल यह है कि आपके चरण कमलों में सदैव शांति बनी रहे। मैल से धोने से कौन सा मैल दूर हो जाता है? क्या पानी को मथने से कोई इसे प्राप्त कर सकता है? [इसी प्रकार] हे रघुनाथजी! प्रेम और भक्ति के [शुद्ध] जल के बिना, हृदय की मलिनता कभी दूर नहीं होती।

जो है, वह गुणों का घर और अखण्ड ज्ञान वाला है; वह सर्वज्ञ, वही तत्त्व, वही चतुर और समस्त सुन्दर गुणों से परिपूर्ण है, जिसे आपके चरणकमलों में प्रेम है। हे नाथ! हे श्री रामजी! मैं आपसे एक वरदान माँगता हूँ, कृपया मुझे अनुदान दीजिये। भगवान (आपके) के चरणकमलों के प्रति मेरा प्रेम कई जन्मों तक भी कम न हो।

यह कहकर मुनि वशिष्ठजी घर आ गये। वे कृपा के सागर श्री रामजी के हृदय को अत्यंत प्रसन्न करने वाले थे। इसके बाद सेवकों को सुख देने वाले श्री रामजी हनुमानजी और भरतजी तथा अन्य भाइयों को अपने साथ ले गये। तब दयालु श्री रामजी नगर के बाहर गये और वहाँ हाथी, रथ और घोड़े ले आये। उन्हें देखकर भगवान ने कृपापूर्वक सबकी प्रशंसा की और जिसे उन्होंने चाहा, उचित समझकर उसे दे दिया।

भगवान, जो दुनिया के सभी श्रम को जीतते हैं, उन्होंने श्रम का अनुभव किया [हाथियों, घोड़ों आदि को वितरित करने में] और [श्रम को खत्म करने के लिए] उस स्थान पर गए जहां शीतल अमराई (आम का एक बगीचा) था। भरतजी ने वहाँ अपने वस्त्र बिछा दिये। भगवान उस पर विराजमान हो गये और सभी भाई उनकी सेवा करने लगे।

उस समय पवनपुत्र हनुमानजी हवा करने लगे। उसका शरीर पुलकित हो गया और आँखों में प्रेम के आँसू छलक पड़े। उसमें पानी भरा हुआ था. [शिवजी कहने लगे--] हे गिरिजा! हनुमानजी के समान कोई भाग्यशाली नहीं है और श्री रामजी के चरणों का कोई प्रेमी नहीं है, जिनके प्रेम और सेवा की प्रशंसा स्वयं भगवान ने अपने मुख से बार-बार की है।

हे कमल नयन, कृपापूर्वक देखने मात्र से दुःख दूर करने वाली! मेरी ओर देखो (मुझ पर भी कृपा करो) हे हरि! आपका रंग नीले कमल के समान श्याम है और आप कामदेव के शत्रु महादेवजी के हृदय से प्रेम का रस पीने वाले हैं।

आप ही राक्षस सेना की शक्ति को तोड़ने वाले हैं। वह साधु-संतों को सुख देने वाला और पापों का नाश करने वाला है। आप ब्राह्मण रूप में खेती के लिए नये मेघ समूह और आश्रयहीनों को आश्रय देने वाले तथा दीन-दुखियों को अपनी शरण में लेने वाले हैं।

श्रीगामाजी, अपने बाहुबल से पृथ्वी के भारी बोझ को नष्ट करने वाले, घास और शत्रुओं को मारने में कुशल, रावण के शत्रु, आनंद के अवतार, राजाओं में सर्वश्रेष्ठ और कुमुदिनी के चंद्रमा, दशरथ के परिवार के सदस्य ! आपकी जय हो।

पुराणों, वेदों तथा तंत्र शास्त्रों में आपकी सुन्दर कीर्ति प्रकट हुई है। इसे देवता, ऋषि-मुनि आदि समुदाय गाते हैं। आप दयालु हैं, मिथ्या मद को नष्ट करने वाले हैं, सब प्रकार से कुशल हैं और श्री अयोध्याजी के रत्न हैं।

आपका नाम कलियुग के पापों को मथने वाला तथा मोह का नाश करने वाला है। हे तुलसीदास भगवान, शरणागत की रक्षा करें। प्रेमपूर्वक श्री रामचन्द्र जी के गुणों का वर्णन करके मुनि नारद जी का श्रृंगार किया और भगवान समुद्र को अपने हृदय में रखा। जहाँ ब्रह्मलोक है, वहाँ गये।

शिवजी कहते हैं--हे गिरिजा! सुनो, मैंने अपनी सर्वोत्तम जानकारी से यह उज्ज्वल कथा कही है। श्री रामजी के चरित्र सौ करोड़ [अथवा] अपार हैं। श्रुति और शारदा भी उसका वर्णन नहीं कर सकतीं। प्रभु श्री राम अनंत हैं; उसके गुण अनन्त हैं; जन्म, कर्म और नाम भी अनन्त हैं। यद्यपि जल की बूँदें और पृथ्वी के चाँदी के कण गिने जा सकते हैं, फिर भी हम श्री रघुनाथजी के चरित्र का वर्णन करने से नहीं चूक सकते।

यह पवित्र कथा भगवान की सर्वोच्च स्थिति का बोध कराती है। इसके सुनने से अटूट भक्ति प्राप्त होती है। हे उमा! काकभुशुण्डजी ने जो सुन्दर कथाएँ गरुड़जी को सुनाई थीं, वे सब मैंने कह सुनाईं। मैंने श्री गमजी के कुछ गुणों का उल्लेख किया है। हे भवानी! तो बताओ, मैं और क्या कहूँ? श्रीरामजी की मदलमयी कथा सुनकर पार्वतीजी प्रसन्न हो गईं और अत्यंत विनम्र और मृदु स्वर में बोलीं-

हे त्रिपुरारि! मैं धन्य हूं, धन्य हूं कि मैंने जन्म-मरण के भय को दूर करने वाले श्री रामजी के गुण (चरित्र) सुने। यह कृपा का निवास है! अब आपकी कृपा से मैं कृतज्ञ हूँ। अब मेरा मोह नहीं रहा. मैं भगवान हूँ. मुझे सच्चिदानंदघन भगवान श्री रामजी की महिमा का पता चला।

ईश्वर! आपके मुख रूपी चंद्रमा श्री रघुवीर की कथा रूपी अमृत की वर्षा करते हैं। हे मतिधीर! कान से पीकर मेरा मन नहीं भरता।

जो संसार सागर से पार जाना चाहता है, उसके लिए श्री रामजी की कथा एक सशक्त युक्ति के समान है। कामुक मनुष्यों के लिए भी श्रीहरि के गुण कानों को प्रसन्न करने वाले और मन को आनंद देने वाले हैं। संसार में ऐसा कौन कान है जिसे श्रीरघुनाथजी के चरित्र पसंद न हों? जिन्हें श्रीरघुनाथजी की कथा अच्छी नहीं लगती, वे मूर्ख प्राणी अपने प्राणों का घात करने वाले हैं॥

हे नाथ! आपने श्री रामचरित्रमानस का गायन किया, उसे सुनकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। जब आपने कहा कि यह सुन्दर कथा काकभुशुण्डि ने गरुड़जी को कही थी - तो काकभुशुण्डि शरीरधारी होते हुए भी त्याग, ज्ञान और विज्ञान में दृढ़ हैं, हाँ, श्री रामजी के चरणों में उनकी अगाध प्रीति है और वे भक्ति से शापित भी हैं श्रीरघुनाथजी के विषय में मुझे अत्यंत संदेह है। है।

हे त्रिपुरारि! सुनो, हजारों मनुष्यों में एक ऐसा होता है जो एक धर्म की धार तेज करता है और करोड़ों धर्मात्माओं में एक वह होता है जो एक विषय का विशेषज्ञ होता है और पांच विषयों का त्याग करता है) और भक्ति में समर्पित होता है। श्रुति कहती है कि लाखों वैराग्यवान लोगों में से केवल एक ही व्यक्ति को सही ज्ञान प्राप्त होता है। और करोड़ों ज्ञानियों में कोई एक ही मुक्त होता है। संसार में कोई विरला ही ऐसा (जीवनमुक्त) होगा।

हजारों प्राणियों में भी, सभी सुखों की खान, ब्रह्म में लीन बुद्धिमान व्यक्ति और भी दुर्लभ है। धर्मात्मा, तपस्वी, बुद्धिमान, जीवन से मुक्त और ब्रह्म में लीन - इन सभी में, हे देवों के देव, महादेवजी! ऐसा प्राणी मिलना अत्यंत दुर्लभ है जो नशा और माया से रहित और श्री राम की भक्ति में समर्पित हो। हे विश्वनाथ! ऐसे दुर्लभ हरिभक्त तुम्हें कैसे मिले, मुझे समझाओ।

हे नाथ! कहो, (इस प्रकार) श्री राम के भक्त, ज्ञान में डूबे हुए, गुणों से युक्त और शांत मन वाले भुशुंधि जी को यह शरीर क्यों मिला? ।वह दयालु है! बताओ, उस कोने में भगवान का यह पवित्र और सुन्दर चरित्र कहाँ से पाया गया? और हे कामतेव के शत्रु! यह भी बताओ, तुमने यह कैसे सुना? मैं बहुत उत्सुक हूँ।

गरुड़जी एक महान ज्ञानी, गुणों के अवतार, श्री हरि के सेवक और उनके (उनके वाहन) बहुत करीब हैं। वे साधुओं की मंडली छोड़कर कहीं जाकर हरिकथा क्यों सुनने लगे? दोनों हरिभक्तों के बीच कैसे हुआ संवाद? पार्वतीजी का सरल और सुन्दर वर्णन सुनकर शिवजी प्रसन्न हुए और आदरपूर्वक बोले-

और श्री रामजी के चरणों में विश्वास उत्पन्न हो जाता है और मनुष्य बिना परिश्रम के ही संसार सागर से तर जाता है। पक्षीराज गरुड़जी ने भी जाकर काकभुशुण्डिजी से ऐसे ही प्रश्न किये। हे उमा! मैं यह सब आदरपूर्वक कहूँगा, आप ध्यानपूर्वक सुनो। जिस प्रकार मैंने भव (जन्म-मृत्यु) से मुक्ति दिलाने वाली कथा सुनी, हे सुमुखी! हे सुलोचनी! उस प्रसार को सुनो. पहले आपका अवतार दक्ष के घर में हुआ था। तत्र दुद्दा का नाम सती था।

सती, तुमने अत्यंत क्रोध में आकर अपने प्राण त्याग दिये थे; और दक्ष के यज्ञ में आपका अपमान हुआ। मेरे सेवकों ने यज्ञ का विध्वंस कर दिया था। आप उस तत्व प्रसाज्ञ को पहले से ही जानते हैं। तभी मेरे मन में एक बड़ा विचार आया और हे प्रिये! मैं तुम्हारे वियोग से दुःखी हूँ। मैं सुन्दर वनों, पर्वतों, नदियों और तालाबों को विरक्त भाव से देखता फिरता था।

सुमेरु पर्वत के उत्तर में, कुछ दूर, एक अत्यंत सुंदर नीला पर्वत है। इसमें सुंदर सुनहरी चोटियाँ हैं, [उनमें से | मुझे चार सुन्दर चोटियाँ बहुत अच्छी लगीं। उनमें से प्रत्येक शिखर पर बरगद, पीपल, पाकर तथा आम का एक-एक विशाल वृक्ष है। पहाड़ की चोटी पर एक सुंदर तालाब है; जिनकी मणियों की सीढ़ियाँ देखकर मन मोहित हो जाता है।

इसका पानी ठंडा, साफ और मीठा है; उसमें अनेक रंग-बिरंगे कमल खिल रहे हैं, हंस मधुर स्वर में गा रहे हैं और भौंरे सुन्दर गुंजन कर रहे हैं। उस सुन्दर पर्वत पर वही पक्षी (काकभुशुण्डि) निवास करता है। कल्प के अंत में भी इसका नाश नहीं होता। माया द्वारा उत्पन्न अनेक गुण-दोष, मोह, वासना आदि अविवेक,

जो सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त हैं, वे कभी उस पर्वत के निकट नहीं आते। जिस प्रकार वह वहाँ बसकर काक हरिको को भजता है, उसी प्रकार हे उमा! प्रेम से उनकी बात सुनो, वे पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यान करते हैं। इसे प्राप्त करने के बाद वह नीचे पूजा करता है। आमकी की छाया में मानसिक पूजा करते हैं। श्री हरिका भजन के अतिरिक्त उनके पास कोई अन्य कार्य नहीं है।

वट वृक्ष के नीचे वह श्रीहरिकी कथा कहते हैं। वहाँ बहुत से पक्षी आते हैं और कहानी सुनते हैं। वह विचित्र रामचरित्र को अनेक प्रकार से प्रेम और आदर के साथ गाते हैं। तुम सब बुद्धिमान हंस, जो सदैव उस तालाब पर निवास करते हो, उसकी बात सुनो। जब मैंने वहाँ जाकर यह दृश्य देखा तो मेरे हृदय में विशेष आनन्द उत्पन्न हुआ।

तब मैंने हंस का शरीर धारण करके कुछ समय तक वहीं निवास किया और आदरपूर्वक श्री रघुनाथजी के गुण सुनकर केलसको लौट आया। अरे चर्चो! जब मैं काकभुशुण्डिके के पास गया तो मैंने वह सब इतिहास बताया। अब यह कथा सुनो कि पक्षी कुल के ध्वज गरुड़जी उन मामा के पास क्यों गये थे।

जब श्रीरघुनाथजी ने ऐसा युद्ध किया कि मुझे याद करके शर्म आती है - उन्होंने अपने आप को मेघनाद के हाथों में बाँध लिया - तब नारद मुनि ने सर्पभक्षी गरुड़ को भेजा और जब सर्पभक्षी गरुड़जी ने जाकर उनकी गर्दन काट दी, तब एक

उसके हृदय में बड़ा दुःख उत्पन्न हुआ। भगवान के बंधन का स्मरण कर सर्पों के शत्रु गरुड़जी अनेक प्रकार से विचार करने लगे।

मैंने सुन रखा था कि वे परमपिता ब्रह्म के अवतार हैं, जो सर्वव्यापक, विकारों से रहित, वाणी के पति तथा मोह-माया से परे हैं। लेकिन मुझे उसका (अवतार) कोई असर नहीं दिखा. उनका नाम जपने से लोग संसार के बंधन से मुक्त हो जाते हैं, उन्हीं राम को एक तुच्छ राक्षस ने साँप के पाश से बाँध दिया था।

गरुड़जी ने अनेक प्रकार से अपने मन को समझाया। परन्तु उसे ज्ञान न हुआ, उसके हृदय में भ्रम और भी फैल गया। [शंका के कारण] दुःख से दुःखी होकर, उनके मन में कुतर्क बढ़ते हुए, वे भी तुम्हारी भाँति मोहित हो गये। व्याकुल होकर वह देवर्षि नारदजी के पास गये और उन्हें अपने मन की शंका बतायी। यह सुनकर नारद को अत्यंत दया आई। [उन्होंने कहा--] हे गरुड़! सुनना! श्री रामजी की माया बड़ी प्रबल है.

जो ज्ञानियों के मन को पूरी तरह से मोहित कर देता है और उनके मन में बलपूर्वक एक बड़ा आकर्षण पैदा कर देता है और जिसने मुझे भी कई बार नचाया है, हे पक्षीराज! वही माया तुम्हें (गरुड़) भी घेर चुकी है, तुम्हारे हृदय में भारी मोह उत्पन्न हो गया है। यह मेरे स्पष्टीकरण से तुरंत दूर नहीं होगा. अत: हे पक्षियों के राजा! तुम ब्रह्माजी के पास जाओ और वहां तुम्हें जो भी कार्य करने की आज्ञा हो वही करो।

ऐसा कहकर परम सुजान देवर्षि नारदजी श्री रामजी की स्तुति करते रहे और बार-बार श्री हरिकी माया की शक्ति का वर्णन करते रहे। तब पक्षीराज गरुड़ ब्रह्माजी के पास गए और उन्हें अपनी शंका बताई। यह सुनकर ब्रह्माजी ने श्री रामचन्द्रजी को सिर झुकाया और उनका माहात्म्य समझकर उनके मन में अत्यंत प्रेम उत्पन्न हुआ।

हे गरुड़! आप शंकरजी के पास जाइये। हे पिता! किसी और से मत पूछो. वहीं तुम्हारा संशय नष्ट हो जायेगा। जैसे ही गरुड़ ने ब्रह्माजी की बात सुनी, वे चले गए। तभी पक्षीराज गरुड़ बड़ी उत्सुकता से मेरे पास आये। हे उमा! उस समय मैं कुबेर के घर जा रहा था और आप कैलासापार में थे।

गरुड़ ने नम्रतापूर्वक मेरे चरणों में सिर झुकाया और फिर मुझे अपना संदेह बताया। हे भवानी! उसकी विनती और मृदु वाणी सुनकर मैंने प्रेमपूर्वक उससे कहा- हे गरुड़! तुम मुझे रास्ते में मिल गये. मैं रास्ते में तुम्हें यह कैसे समझा

सकता हूँ? सभी संशय तभी नष्ट हो सकते हैं, जब लंबे समय तक सत्कर्म किया जाए।

और वहां (सत्सद्रमा में) सुंदर हरिकथा सुननी चाहिए, जिसे ऋषियों ने अनेक प्रकार से गाया है और जिसके आदि, मध्य और अंत में भगवान श्रीगमचकजी ही वाणी हैं। हाय भाई. मैं तुम्हें उस स्थान पर भेज रहा हूं जहां प्रतिदिन हरिकथा होती है, तुम जाकर कथा सुनो। इसे सुनते ही आपके सारे संदेह दूर हो जायेंगे और आपको श्रीगमजी के चरणों में अपार प्रेम की अनुभूति होगी।

केवल योग, तप, ज्ञान और प्रेम के बिना त्याग करने से श्रीरघुनाथजी की प्राप्ति नहीं हो सकती। [तो आप सतसद्र के लिए वहां जाएं] जहां उत्तर में एक सुंदर नीला पहाड़ है। वहाँ । परम सुशील काकभुशुण्डिजी रहते हैं। वे रामभक्ति के अर्थ में अत्यंत निपुण, ज्ञानी, गुणों के धाम और दीर्घकाल तक जीवित रहे हैं। वे निरन्तर श्री रामचन्द्रजी की कथा सुनाते रहते हैं, जिसे सभी प्रकार के बड़े-बड़े पक्षी आदरपूर्वक सुनते हैं।

वहां जाकर श्रीहरि की स्तुति सुनो. उन्हें सुनने से तुम्हारा मोहजनित दुःख दूर हो जायेगा। जब मैंने उसे सारी बात बताई तो उसने मेरे पैरों पर सिर झुकाया और खुशी-खुशी चला गया। हे उमा! मैंने उन्हें यह बात नहीं बतायी क्योंकि श्रीरघुनाथजी की कृपा से मैंने इसका सार समझ लिया था। उन्हें कभी अहंकार हुआ होगा, जिसे संस्थापक श्रीराम नष्ट करना चाहते हैं।

फिर भी मैंने उसे इस कारण अपने साथ नहीं रखा कि पक्षी पक्षियों की ही बोली समझते हैं। हे भवानी! ईश्वर के प्रति मेरा प्रेम बहुत महान है। वह शक्तिशाली है, कौन बुद्धिमान व्यक्ति उससे मोहित नहीं होगा? गरुड़, जो बुद्धिमानों और भक्तों के मुकुटमणि हैं और त्रिभुवनपति भगवान के वाहन हैं, भी माया द्वारा मोहित थे। फिर भी, नीच लोग मूर्खतापूर्ण अभिमान करते हैं।

जब यह माया भगवान शिव और ब्रह्माजी को भी मोहित कर लेती है, तो इस बेचारे के लिए और क्या है? यह जानने के बाद ही ऋषि लोग माया से मुक्त भगवान की पूजा करते हैं। गरुड़जी उस स्थान पर गये जहाँ निर्मल बुद्धि और पूर्ण भक्ति वाले काकभुशुण्डि रहते थे। उस पर्वत को देखकर उनका मन प्रसन्न हो गया और उसके दर्शन करते ही सारी माया, मोह और विचार दूर हो गये।

वह तालाब में स्नान करके जल पीकर प्रसन्न मन से वटवृक्ष के नीचे गया। श्री रामजी के सुन्दर चरित्र को सुनने के लिए बहुत से बूढ़े पक्षी वहाँ आये थे। भुशुण्डिजी कथा प्रारम्भ करना ही चाहते थे कि उसी समय पक्षीराज गरुड़जी वहाँ

पहुँच गये। पक्षीराज गरुड़जी को आते देख काकभुशुण्डिजी सहित सामान्य पक्षी समुदाय प्रसन्न हो गया।

पक्षीराज गरुड़जी ने कोमल वचन बोले- आप सदैव कृतज्ञता के प्रतीक हैं, जिनकी स्वयं महादेवजी ने अपने मुख से आदरपूर्वक स्तुति की है। हे पिता! सुनो, मैं जिस कारण से आया था, मेरे आते ही सब काम पूरे हो गये। फिर मुझे आपके भी दर्शन हो गये. आपके परम पवित्र आश्रम को देखकर मेरा मोह, संदेह और सभी प्रकार की भ्रान्तियाँ दूर हो गयीं।

अब हे पिता! कृपया मुझे आदर सहित परम पवित्र करने वाली, शाश्वत सुख देने वाली और सभी दुखों का नाश करने वाली श्री रामजी की कथा सुनाइए। हे प्रभो ! मैं आपसे बार-बार ऐसा करने का अनुरोध करता हूं।' गरुड़जी की विनम्र, सरल, सुंदर, प्रेमपूर्ण, सुखद और अत्यंत पवित्र वाणी सुनकर भुशुण्डिजी अत्यंत उत्साहित हुए और श्रीरघुनाथजी के गुणों की कथा कहने लगे।

यह तो भवानी है! सबसे पहले उन्होंने बड़े ही प्रेमपूर्वक रामचरितमानस सरोवर की रूपक व्याख्या की। फिर नारदजी के अपार आकर्षण और फिर रावण अवतार के बारे में बताया। फिर भगवान के अवतार की कथा का वर्णन किया। इसके बाद उन्होंने श्री रामजी की रास लीलाओं का पूरे मन से कीर्तन किया।

अनेक प्रकार की बाल-लीलाओं का वर्णन करके हृदय में बड़े उत्साह से भरकर फिर उन्होंने ऋषि विश्वामित्र के अयोध्या आगमन और श्री रघुवीरजी के विवाह का वर्णन किया। श्री राम का वनवास, केवट का प्रेम, गदाजी को पार कर प्रयाग में रहना, वाल्मिकी जी और भगवान श्री राम का मिलन और भगवान किस प्रकार चित्रकूट में बस गये, वह सब बताया गया।

फिर मंतनी सुमनंतनजी का नगर में लौटना, राजा दशरथजी की मृत्यु, भरतजी की [ननिहालसा | उनके अयोध्या आने और उनके प्रेम का खूब वर्णन हुआ. राजा का अन्त्येष्टि संस्कार करके भरतजी नगरवासियों के साथ उस स्थान पर गये, जहाँ सुख के स्रोत भगवान श्री रामचन्द्रजी थे।

तब श्रीरघुनाथजी ने उसे बहुत प्रकार से समझाया, जिससे वह खड़ाऊं लेकर अयोध्यापुरी में लौट आया और यह सब वृत्तांत कहा। भरतजी ने नंदीगामा में रहने की शैली, इंद्रपुत्र जयंती का उत्सव और फिर भगवान श्री रामचंदजी और अग्रत्रीजी के मिलन का वर्णन किया। जिस प्रकार विराध मारा गया और शरभंग जी ने अपना शरीर छोड़ा, उन्होंने प्रसाद कहा और फिर सुतीक्षण जी के प्रेम का वर्णन किया तथा भगवान और अगास्य जी का सःसंग-वृतत कहा।

और फिर उन्होंने लक्ष्मणजी को अनोखी सलाह देने और शूर्पणखा को कुरूप बनाने जैसी सभी बातों का वर्णन किया. फिर उन्होंने खर-दूषण-वध का सारा समाचार और जिस प्रकार रावण को इसका पता चला, वह सब सुनाकर कहा, 'और जिस प्रकार रावण और मारीच की बातचीत हुई, उसने वह सब बता दिया। फिर मायासीता के हरण और श्री रघुवीर के विरह का कुछ वर्णन हुआ।

तब भगवान ने जिस प्रकार गिद्ध जटायुकी ने कबंध को मारकर शबरी को परम मार्ग दिया और फिर जिस प्रकार श्री रघुवीरजी वियोग का वर्णन करते हुए पम्पासर के बाण से गिरे, उसके विषय में सब कुछ बताया। प्रभु और नारदजी के बीच संवाद और मारुति से मिलन के प्रस्ताव के बाद सुग्रीव से मित्रता का प्रसंग सुनाया गया। एक बच्चे की हत्या का वर्णन किया.

सुगनीव के राज्याभिषेक के बाद भगवान ने प्रवर्षण पर्वत पर निवास किया, प्रसाद में वर्षा और शरद ऋतु का वर्णन, श्री रामजी का सुग्रीव पर क्रोध और सुग्रीव का भय आदि का वर्णन करना चाहिए। वानरराज सुग्रीव ने जिस प्रकार वानरों को भेजा और जिस प्रकार सीताजी की खोज में वे सब दिशाओं में गये, जिस प्रकार वे बिल में घुस गये और फिर वानरों को धन कैसे प्राप्त हुआ, इसकी कथा उन्होंने कही।

संपाती से सारी कथा सुनकर पवनपुत्र हनुमानजी ने किस प्रकार विशाल समुद्र को पार किया, फिर हनुमानजी ने लंका में कैसे प्रवेश किया और फिर सीताजी को किस प्रकार धैर्य दिया, यह सब कुछ बताया। अशोक वन को नष्ट करके, रावण को समझाकर, लंकापुरी को जलाकर, समुद्र को प्रक्षेपित किया और जैसे ही सभी वानर श्री रघुनाथ जी के स्थान पर आये और आकर श्री जानकी जी के अच्छे कर्मों का वर्णन किया।

फिर उन्होंने श्री रघुवीर अपनी सेना सहित समुद्र के तट पर किस प्रकार उतरे और विभीषणजी उनसे आकर कैसे मिले, यह सब कथा सुनायी। जिस प्रकार वानर सेना पुल बनाकर समुद्र के पार उतरी और जिस प्रकार बालि के श्रेष्ठ पुत्र अंगद दूत बनकर गये, वह सब उन्होंने बताया।

फिर राक्षसों और वानरों के बीच हुए युद्ध का अनेक प्रकार से वर्णन किया गया। फिर उन्होंने कुम्भकर्ण और मेघनाद के बल, पुरुषार्थ और विनाश की कथा सुनायी। उन्होंने नाना प्रकार के राक्षस समूहों के संहार तथा श्रीरघुनाथजी और रावण के नाना प्रकार के युद्धों का वर्णन किया। रावण के वध, मन्दोदरी के

शोक, विभीषण के राज्याभिषेक तथा देवताओं के दुःख रहित होने की बात कहते हुए।

फिर सीताजी और श्रीरघुनाथजी का मिलन कहा। उन्होंने कहा, जैसे देवताओं ने स्तुति में हाथ जोड़ दिए और फिर वानरों के साथ पृथ्वी के विमान पर सवार होकर कृपा के धाम अवधपुरी को चले गए। श्री रामचन्द्रजी जिस प्रकार अपनी नगरी अयोध्या आये थे, उन सब उज्ज्वल चरित्रों का वर्णन काकभुशुण्डजी ने विस्तारपूर्वक किया है। फिर उन्होंने श्री रामजी का राज्याभिषेक कहा। [शिवजी कहते हैं--] अयोध्यापुरी तथा नाना प्रकार की राजनीति का वर्णन करते हुए--

भुशुण्डिजिनी ने सारी कथा कही जो हे भवानी! बताया तो। पूरी रामकथा सुनने के बाद पक्षीराज गरुड़जी मन में बहुत उत्साहित (आनन्दित) हो गये और वचन बोलने लगे। मैंने श्रीरघुनाथजी के सभी चरित्र सुने, जिससे मेरा संदेह दूर हो गया। हे काकाशिरोमणि आपकी कृपा से मुझे श्री रामजी के चरणों में प्रेम हो गया।

युद्ध में भगवान को सर्पपाश में बंधा हुआ देखकर मैं बहुत मोहित हुआ कि श्री रामजी तो सच्चे पुरुष हैं, वे इतने चिंतित क्यों हैं। ऐसे सांसारिक लोगों का चरित्र देखकर मेरे हृदय में बड़ा संदेह हुआ। अब मैं उस भ्रम (संदेह) को अपने लिए लाभदायक मानता हूं। कृपानिधान ने किया यह महान मुझ पर एहसान करो.

पेड़ की छाँव का सुख वही जानता है जो धूप से परेशान होता है। हे पिता! यदि मैं अत्यधिक आकर्षित न होता तो मैं आपसे कैसे मिल पाता? ॥और यह सुन्दर हरित कथा कितनी विचित्र सुनी होगी; यह वेद, शास्त्र और पुराणों का मत है जिसे आपने अनेक प्रकार से गाया है; सिद्ध और संत भी यही कहते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं कि-

पक्षीराज गरुड़जी के विनम्र और प्रेमपूर्ण वचन सुनकर काकभुशुण्डजी का शरीर पुलकित हो गया, नेत्रों में जल भर आया और वे मन में अत्यंत प्रसन्न हुए। हे उमा! सुन्दर बुद्धि वाला, विनम्र, पवित्र कथाओं का प्रेमी और हरि का सेवक श्रोता पाकर सज्जन व्यक्ति अत्यंत गोपनीय (सबके सामने प्रकट करने योग्य न होने वाला) रहस्य भी प्रकट कर देता है।

काकभुशुण्डजी ने फिर कहा- पक्षीराज के प्रति उनका प्रेम कम नहीं था (अर्थात् बहुत था)- नाहे नाथ! आप सभी मेरे लिये पूजनीय हैं और श्रीरघुनाथजी के कृपापात्र हैं। तुम्हें न तो संशय है, न मोह है, न मोह है। हे नाथ! तुम्हें मुझ पर

दया आ गयी. हे पक्षीराज! आकर्षण के बहाने श्रीरघुनाथजी ने आपको यहाँ भेजकर मेरा सम्मान किया है।

पक्षियों के दोष! तुमने अपना मोह प्रकट कर दिया है, अत: हे गोसाईं! यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है. नारदजी, शिवजी, ब्रह्माजी और सनकादि जो आत्मतत्त्व को समझकर उसका उपदेश करने वाले श्रेष्ठ मुनि हैं। उनमें से कौन मोहिना के कारण अन्धा (विवेकहीन) नहीं हुआ? संसार में ऐसा कौन है जिसके साथ भगवान ने हमें न नचाया हो? प्यास ने किसे मदहोश नहीं किया है? क्रोध से किसका हृदय न जल उठा?

इस संसार में कोई भी ज्ञानी, तपस्वी, शूरवीर, कवि, विद्वान तथा सद्गुणों का स्वामी ऐसा नहीं है जिसके लोभ के कारण विडम्बना न हुई हो। देवी लक्ष्मी ने किसे टेढ़ा नहीं बनाया और भगवान ने किसे बहरा नहीं बनाया? ऐसा कौन है जिसे मृगनयनी (युवती) के नेत्र बाण न लगे हों।

गुणों (रज, तम आदि) द्वारा उत्पन्न प्रलाप से कौन पीड़ित नहीं हुआ है? ऐसा कोई नहीं है जो अहंकार और क्रोध से अछूता रह गया हो। जवानी के बुखार ने किसको अपना आपा नहीं खो दिया है? मोह से कौन नष्ट नहीं हुआ? मत्सर (ईर्ष्या) से कौन नहीं मारा गया? दुःख की आँधी ने किसे नहीं झकझोरा है? चिंता के साँप ने किसे नहीं निगला?

इच्छा एक कीड़ा है, शरीर लकड़ी है। ऐसा कौन धैर्यवान है, जिसके शरीर पर इस कीड़े का असर न हो? पुत्र, धन और लोक-प्रतिष्ठा इन तीन प्रबल इच्छाओं ने किसकी बुद्धि को मलिन (खराब) नहीं कर दिया है? यह माया का बहुत शक्तिशाली परिवार है। यह अपार है, इसका वर्णन कौन कर सकता है? यदि भगवान शिव और ब्रह्माजी भी उससे डरते हैं, तो अन्य प्राणियों की क्या गिनती?

वह माया श्री रघुवीर की दासी है। यद्यपि समझने में यह मिथ्या है, परन्तु श्री रामजी की कृपा के बिना इसकी मुक्ति नहीं हो सकती। हे नाथ! ये मैं वादे के साथ कहता हूं. जो माया सारे संसार को नचाती है और जिसका चरित्र (कृत्य) आज तक कोई नहीं लिख सका, हे खगराज गरुड़जी! वही माया भगवान श्री रामचन्द्रजी की भौंहों के इशारे पर अपने समाज (परिवार) सहित नृत्य करती है।

श्री राम वही सच्चिदानंदघन हैं जो अजन्मा, ज्ञान स्वरूप, रूप और शक्ति के धाम, सर्वव्यापी और व्यापक (सभी रूपों में), अखंड, अनंत, पूर्ण, अचूक शक्ति (जिनकी शक्ति कभी व्यर्थ नहीं होती) और छः गुणों से संपन्न हैं। ऐश्वर्य),

महान, वाणी और इंद्रियों से परे, सर्वदर्शी, दोषरहित, अजेय, प्रेमहीन, निराकार (जादुई आकार से रहित), सीलरहित, शाश्वत, मायावी, सुख का योग,

प्रकृति से परे, भगवान (सर्वशक्तिमान), जो हमेशा सबके हृदय में निवास करते हैं, अविनाशी ब्रह्म हैं जो इच्छा रहित और विकार रहित हैं। यहाँ (श्री राम में) मोह का कोई कारण नहीं है। क्या अनाषधकार का समूह कभी गाकर सूर्य के सामने जा सकता है? भगवान श्री रामचन्द्रजी ने भक्तों के लिये राजा का शरीर धारण किया और साधारण मनुष्यों की भाँति अनेक पवित्र चरित्र किये।

जैसे नर्तक अनेक वेश धारण करके नृत्य करता है और (वेश के अनुसार) एक जैसी भाव-भंगिमाएं प्रदर्शित करता है, परंतु स्वयं उनमें से कुछ भी नहीं बन पाता, हे गरुड़जी! ऐसी ही श्रीरघुनाथजी की लीला है, जो राक्षसों को मोहित कर देती है और भक्तों को सुख देती है। हे प्रभो! केवल वे ही लोग भगवान पर इस प्रकार की आसक्ति का आरोप लगाते हैं जो मंदबुद्धि हैं, विषयों के प्रभाव में हैं और कामी हैं।

जब किसी को नजर दोष होता है तो वह चन्द्रमा को पीला रंग बता देता है। हे पक्षीराज! जब कोई विचलित हो जाता है तो कहता है कि पश्चिम में सूरज उग आया है। नाव पर सवार मनुष्य संसार को गतिशील देखता है और मोह के कारण अपने को अचल मानता है। बच्चे चारों ओर घूमते हैं (घेरे में दौड़ते हैं), घर के आसपास नहीं घूमते आदि। लेकिन वे एक दूसरे को झूठा कहते हैं।

हे गरुड़जी ! श्री हरिकी के विषय में मोहिकन की कल्पना भी ऐसी ही है, ईश्वर में अज्ञान का अवसर ही नहीं, ईश्वर में भी नहीं। लेकिन जो लोग माया के वश में हैं, वे मंदबुद्धि और भाग्यहीन हैं और जिनके हृदय अनेक प्रकार के पर्दों से ढके हुए हैं। वे मूर्ख हठपूर्वक संदेह करते हैं और अपनी अज्ञानता का दोष श्री रामजी पर लगाते हैं।

जो काम, क्रोध, मद और लोभ में फँसे हुए हैं और दुःख के घर में आसक्त हैं, वे श्री रथुनाथजी को कैसे जान सकते हैं? और मूर्ख आधे रूपी कुएं में पड़े हैं और निर्गण रूप को उपलब्ध हो गये हैं।

गुणों से रहित रूप तो सहज ही प्राप्त हो जाता है (समझने में आसानी से) परंतु जो रूप (गुणों से परे दिव्य) है उसे कोई कैसे जान सकता है। इसलिये उस सगुण भगवान् के नाना प्रकार के सुगम और अप्राप्य चरित्रों को सुनकर ऋषियों की भी बुद्धि भ्रमित हो जाती है।

हे पक्षीराज गरुड़जी! श्रीरघुनाथजी की प्रभुता सुनो। मैं अपनी बुद्धि के अनुसार वह सुखद कथा कहता हूं। हे प्रभो ! मैं तुम्हें कैसे मोहित हुआ इसकी कहानी भी बताऊंगा. हे पिता! आप पर श्री रामजी की कृपा है। तुम्हें श्रीहरि के गुण प्रिय हैं, इसलिये तुम मुझे सुख देने वाली हो। इसलिये मैं तुमसे कुछ भी नहीं छिपाता और बहुत गुप्त बातें तुम्हारे लिये गाता हूँ।

श्री रामचन्द्रजी के सरल स्वभाव को सुनो। वे अहंकार को टिकने नहीं देते क्योंकि अहंकार ही जन्म-मरण रूपी संसार का मूल है और अनेक प्रकार के कष्टों तथा समस्त दुःखों का कारण है। यदि बच्चा पहले (फोड़ा खोलते समय) दुखी हो और अधीरता से रोता हो तो भी | घाव के नाश के लिए माँ बच्चे के दर्द को कुछ भी नहीं मानती (उसकी परवाह नहीं करती। और केवल फोड़ा ही कटवाती है)।

इसी प्रकार श्रीरघुनाथजी अपने सेवक के हित के लिये उसका अभिमान दूर कर देते हैं। तुलसीदास कहते हैं कि हम मोह-माया त्यागकर ऐसे भगवान की पूजा क्यों नहीं करते? हे पक्षीराज गरुड़जी! मैं तुम्हें श्री रामजी की कृपा और अपनी जड़ता (मूर्खता) के विषय में बताता हूँ, ध्यानपूर्वक सुनो। जब-जब श्री रामचन्द्रजी मनुष्य शरीर धारण करके भक्तों के लिये अनेक लीलाएँ किया करते हैं।

मैं समय-समय पर अयोध्यापुरी जाता हूँ और उनकी लीला देखकर प्रसन्न होता हूँ। मैं वहां जन्म उत्सव देखता हूं और [भगवान की बचपन की लीला में] मोहित होकर पांच वर्ष तक वहीं रहता हूं। एक छोटे से कोयोट का शरीर धारण करके और भगवान के साथ, मैं बच्चों के चरित्र देखता हूँ।

एक समय श्री रघुवीर ने सभी पात्रों को बहुत अच्छे से निभाया। भगवान की उस लीला का स्मरण होते ही काकभुशुश्शदिजी का शरीर प्रेम से पुलकित हो गया। भूषुश्शदिजी कहने लगे- हे पक्षीराज! सुनो, श्री रामजी का चरित्र सेवकों को सुख देने वाला है। , अयोध्याका] महल हर तरह से सुंदर है। सोने के महल में तरह-तरह के रत्न जड़े हुए हैं।

उस सुन्दर आँगन का वर्णन नहीं किया जा सकता, जहाँ चारों भाई प्रतिदिन खेलते हैं। श्रीरघुनाथजी माताओं को सुख देने वाले बालकों का उपहास करते हुए आँगन में विचरण कर रहे हैं॥

इसका शरीर पन्ना के समान हरा-काला और मुलायम होता है। अद्गा-अद्रम में अनेक कामदेव दिखाई देते हैं। नवीन लाल कमल के समान कोमल लाल चरण

हैं। उनकी उंगलियां सुंदर होती हैं और उनके नाखून अपनी रोशनी से चंद्रमा की किरणों को दूर कर सकते हैं।

[तलवों में वज्रादि (वज्र, अंकुश, ध्वजा और कमल) के चार सुंदर चिह्न हैं, पैरों में मधुर शब्द सुनाने वाली सुंदर पायल हैं, रत्नों और रत्नों से जड़ी सुंदर सोने की करधनी की ध्वनि सुखद लगती है। पेट पर तीन सुंदर रेखाएं (त्रिवली) होती हैं, नाभि सुंदर और गहरी होती है। विशाल सन्दूक पर विभिन्न प्रकार के बच्चों के आभूषण एवं वस्त्र सुशोभित हैं।

लाल हथेलियाँ, नाखून और उंगलियाँ मनोरम हैं और विशाल भुजाओं पर सुंदर आभूषण हैं। बाल सिंह (शेर का बच्चा) के कंधे और गर्दन शंख के समान (तीन रेखाओं वाली) होती है। उसकी ठुड्डी सुंदर है और उसका मुँह भी बहुत सुंदर है। शब्द निन्दात्मक हैं, होठ लाल हैं।

इसके ऊपर और नीचे दो-दो चमकीले, सुंदर और छोटे-छोटे दाँत हैं। उसके सुंदर गाल, प्यारी नाक और चंद्रमा की किरणों के समान मधुर मुस्कान है जो सभी खुशियां देती है या चंद्रमा जो सभी कलाओं से परिपूर्ण है जो खुशी देता है।

नीले कमल के समान आंखें जन्म और मृत्यु से मुक्ति दिलाती हैं। माथे पर गोरोचन का तिलक सुशोभित है। भौंहें टेढ़ी-मेढ़ी, कान सम और सुंदर, काले और घुंघराले बालों की छवि प्रबल है।

पीली और महीन झंगुलियाँ शरीर की शोभा बढ़ा रही हैं। मुझे उनकी हंसी-मजाक और बातचीत बहुत पसंद है. रूप के राशि चिन्ह श्री रामचन्द्रजी, जो राजा दशरथ के आँगन में विचरते हैं, अपनी छाया देखकर नृत्य करते हैं।

और वे मेरे साथ कई तरह के खेल खेलते हैं जिनके पात्रों का वर्णन करते हुए मुझे शर्म आती है! चिल्लाते हुए जब वह मुझे पकड़ने के लिए दौड़ता और मैं भाग जाती तो वह मुझे पूजा दिखाता. जब भगवान मेरे पास आते हैं तो हँसते हैं और जब भागते हैं तो रोते हैं और जब मैं उनके चरण छूने के लिए उनके पास जाता हूँ तो वे मेरी ओर पीठ कर लेते हैं। वे देखते-देखते भाग जाते हैं।

आम बच्चों की तरह लीला देखकर मैं मंत्रमुग्ध हो गया। सच्चिदानंदघन प्रभु किस प्रकार का [महत्वपूर्ण] चरित्र (लीला) कर रहे हैं? हे पक्षीराज! यह विचार मन में लाते ही श्रीरघुनाथजी की माया मुझ पर हावी हो गयी। परंतु न तो वह मुझे दुःख देने वाली थी और न ही अन्य प्राणियों की तरह मुझे इस संसार में रखने वाली थी।

हे नाथ! यहां एक और कारण है. हे भगवान के वाहन गरुड़जी! उसकी बात ध्यान से सुनो. एक सीतापति श्री रामजी ही अखण्ड ज्ञानस्वरूप हैं और जड़-चेतन सभी जीव माया के वश में हैं। यदि प्राणियों को नीरस (अखण्ड) ज्ञान है तो कहो ईश्वर और प्राणियों में क्या अन्तर है?

अभिमानी जीव माया के वश में है और तीनों गुणों की खान (संत, रज, तम - ये) माया भगवान के वश में है। जीव आश्रित है, भगवान आश्रित है; जीव तो अनेक हैं, श्रीपति भगवान एक हैं। यद्‌यपि माया द्‌वारा किया गया यह भेद मिथ्या है तथापि ईश्वर की आराधना के बिना,

लाख उपाय करने पर भी वह नहीं जा पाता। हे पक्षियों के राजा! उसी प्रकार श्रीहरि के भजन के बिना प्राणियों के कष्ट समाप्त नहीं होते। श्रीहरि के सेवकों पर अज्ञान का प्रभाव नहीं पड़ता। ईश्वर की प्रेरणा से उसमें ज्ञान का प्रसार होता है।

हे श्रेष्ठ पक्षी! इससे दास का नाश नहीं होता और भेदभाव बढ़ता है। जब श्री रामजी ने मुझे आश्चर्य से भ्रमित देखा तो हँस पड़े। सुनिए उस खास किरदार को. उस खेल का मतलब कोई नहीं जानता था, न छोटे भाई और न ही माता-पिता। काले शरीर, लाल हथेलियाँ और तलवों वाले बालक श्री रामजी मुझे पकड़ने के लिए घुटनों और हाथों के बल दौड़े।

गरुड़जी साँपों के शत्रु हैं। फिर मैं भाग गया. श्री रामजी ने मुझे पकड़ने के लिये भुजा फैलायी। मैं आकाश में चाहे कितनी भी दूर उड़ रहा हो, मुझे श्रीहरिकी भुज अपने समीप ही दिखाई देता था। मैं ब्रह्मयाटोक पहुँच गया और उड़ते-उड़ते जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो हे पिता! श्री रामजी की भुजाओं और मेरे बीच केवल दो उंगलियाँ थीं।

मैंने सभी सात परतों को भेदा और जहाँ तक मेरी गति संभव थी, मैं चला गया। परन्तु वहाँ भी प्रभु की भुजा को अपने पीछे देखकर मैं व्याकुल हो गया। हे पक्षीराज! सुनो, मैंने उसके पेट में ब्रह्माण्डों के अनेक समूह देखे। वहाँ (उन ब्रह्माण्डों में) अनेक विचित्र लोक थे, जिनकी रचना एक-दूसरे से भिन्न थी।

करोड़ों ब्रह्माजी और शिवजी, अनगिनत तारे, सूर्य और चंद्रमा, अनगिनत लोकपाल, यम और काल, अनगिनत विशाल पर्वत और भूमि, असंख्य समुद्र, नदियाँ, तालाब और जंगल और कई अन्य प्रकार की सृष्टि देखी। देवताओं,

ऋषियों, सिद्धों, नागों, मनुष्यों, किन्नरों तथा चारों लोकों के जड़-चेतन प्राणियों को देखा।

मैंने वे सभी अद्भुत रचनाएँ देखीं, जो मैंने न कभी देखी थीं, न सुनी थीं और जो मेरे मन में भी नहीं समा सकती थीं (अर्थात् जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी)। फिर आज उसका वर्णन किस प्रकार किया जाय? मैं प्रत्येक ब्रह्मपद पर एक-एक सौ वर्ष तक रहता। मैं इसे अनेक ब्रह्माण्डों में देखता हुआ घूमा।

प्रत्येक लोक में अलग-अलग ब्रह्मा, अलग-अलग विष्णु, शिव, मनु, दिक्पाल, मनु वैताल, किन्नर, राक्षस, पशु, पक्षी, नाग आदि थे और विभिन्न जातियों के देवता और राक्षस थे। वहाँ के सभी प्राणी भिन्न-भिन्न प्रकार के थे। अनेक पृथ्वियाँ, नदियाँ, समुद्र, तालाब, पर्वत और वहाँ की सारी सृष्टि भिन्न-भिन्न प्रकार की थी।

मैंने प्रत्येक ब्रह्मपद में अपना स्वरूप देखा और अनेक अनोखी वस्तुएँ देखीं। प्रत्येक देश में भिन्न-भिन्न अवधपुरी, भिन्न-भिन्न सरयूजी तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के नर-नारी थे।

हे पिता! सुनो, दशरथजी, कोसल्याजी और भरतजी आदि भाई भी भिन्न-भिन्न रूप वाले थे। मैं प्रत्येक ब्रह्मपद में रामावतार और उनकी असंख्य लीलाओं को देखता फिरता हूँ। हे हरिवाहन! मैंने सब कुछ अलग और बहुत अजीब देखा। मैं असंख्य ब्रह्माण्डों में घूमा, परन्तु प्रभु श्री रामचन्द्रजी का अन्य कोई रूप मुझे दिखाई नहीं दिया।

सर्वत्र वही बचपना, वही सौन्दर्य और वही कृपालु श्री रघुबीर! इस तरह विकृत पवन. वे प्रेरणा से जगह-जगह देखते फिरते थे। ऐसा प्रतीत होता है मानो मुझे विभिन्न ब्रह्माण्डों में घूमते हुए सैकड़ों कल्प बीत गये हों। घूमते-घूमते मैं अपने सामान्य काम पर आ गया और वहीं रहकर कुछ समय व्यतीत किया।

मैंने श्री रामचन्द्रजी के पेट में अनेक लोक देखे, जो देखते ही निर्मित हो गये, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। वहाँ मुझे पुनः सुजान माया के स्वामी दयालु प्रभु श्री राम के दर्शन हुए। मैं बार-बार सोचता था. मेरी बुद्धि में मैला कीचड़ भर गया था। ये सब मैंने सिर्फ दो घंटे में देखा. मैं अपने मन में विशेष लगाव रखते-रखते थक गया।

मुझे व्याकुल देखकर दयालु श्री रघुवीर हँसे। हे बुद्धिमान गरुड़जी! सुनो, उसके हँसते ही मेरे मुँह से निकल गया। श्री रामचन्द्र जी मेरे साथ फिर वही बचपन की हरकत करने लगे। मैंने करोड़ों तरीकों से मन को समझाने की कोशिश की, लेकिन उसे शांति नहीं मिली.

इस (बच्चे के) चरित्र और उस दिव्य प्राणी के (पेट के अंदर देखा गया) देखकर, मैं अपने शरीर के बारे में सब भूल गया और कहा, 'हे लोगों के रक्षक! वह रक्षा-रक्षा-रक्षा चिल्लाता हुआ पृथ्वी पर गिर पड़ा। मेरे मुँह से कुछ भी न निकल सका। इसके बाद भगवान ने मुझे प्रेम में देखकर अपनी माया का प्रभाव रोक दिया। भगवान ने अपना कमल का फूल मेरे सिर पर रखा। दयालु ने मेरे सारे दुःख दूर कर दिये।

प्रभु की भक्ति देखकर मेरे हृदय में बहुत प्रेम उत्पन्न हो गया। तब मैंने आँखों में आँसू, उत्साह और हाथ जोड़कर अनेक प्रकार से प्रार्थना की। मेरे प्रेमपूर्ण वचन सुनकर और अपने सेवक को दीन देखकर रामनिवास श्री रामजी ने सुखदायक, गंभीर और कोमल वचन बोले---हे काकभुशुण्डि! तुम मुझे अत्यंत प्रसन्न समझो और वर माँगो। अणिमा आदि आठ सिद्धियाँ, अन्य ऋद्धियाँ और मोक्ष, पूर्ण सुख की खान,

इसमें कोई संदेह नहीं है कि मैं तुम्हें ज्ञान, बुद्धि, वैराग्य, विज्ञान (तत्ज्ञान) और कई अन्य गुण प्रदान करूंगा जो दुनिया में संतों के लिए भी दुर्लभ हैं। जो चाहो मांग लो. प्रभु के वचन सुनकर मैं अत्यंत प्रेम से भर गया। फिर मैं मन ही मन अनुमान लगाने लगा कि यह सच है कि भगवान ने सब सुख देने की बात कही है; लेकिन उन्होंने अपनी श्रद्धा देने की बात नहीं की.

भक्ति के बिना सभी गुण और सभी सुख उतने ही फीके हैं, जितने नमक के बिना अनेक प्रकार के खाद्य पदार्थ। भजन के बिना सुख का क्या लाभ? हे पक्षीराज! ऐसा विचारकर मैंने कहा- हे प्रभु, यदि आप प्रसन्न होकर मुझे वर दें तथा मुझ पर दया और प्रेम करें, तो हे प्रभु! मैं अपनी पसंद का वर मांगती हूं. आप उदार हैं और दिल के अंदर की बात जानते हैं।

आपकी जिस अखंड (तीव्र) और शुद्ध (असीमित) भक्ति के बारे में श्रुति और पुराण गाते हैं, जिसे योगीश्वर मुनि खोजते हैं और जिसे भगवान की कृपा से कोई विरला ही पाता है। हे कल्पवृक्ष [भक्तों को वांछित फल देने वाले]! हे शरणागतों के हितैषी! हे कृपा के सागर! हे सुखधाम श्री रामजी! कृपया मुझे भी अपनी वही भक्ति प्रदान करें।

रघुवंश के स्वामी 'एवमस्तु' (ऐसा ही हो) कहकर परम सुख देने वाले वचन बोले- हे काक! सुनो, तुम स्वभाव से बुद्धिमान हो। कोई ऐसा वरदान कैसे नहीं मांग सकता? आपने सभी सुखों का स्रोत भक्ति को माँगा है, संसार में आपके समान भाग्यशाली कोई नहीं है। जो साधु करोड़ों पूजा-अर्चना करने के बाद भी अपने शरीर को जप और योग की अग्नि से जलाते रहते हैं, उन्हें वह (भक्त) नहीं मिलता।

तुमने वही भक्ति माँगी। मैं तुम्हारी चतुराई देखकर आश्चर्यचकित रह गया। मुझे ये चतुराई बहुत पसंद आई. हे पक्षी! सुनो, मेरी कृपा से अब सब अच्छी बातें तुम्हारे हृदय में निवास करेंगी।

भक्ति, ज्ञान, विज्ञान, त्याग, योग, मेरी लीलाएँ और उनके रहस्य तथा विभाग - इन सबका रहस्य तुम मेरी कृपा से ही जानोगे। आपको साधन का कोई ज्ञान नहीं होगा. माया द्वारा रचित सभी भ्रम अब आपको घेर नहीं पाएंगे। मुझे ब्रह्म, नित्य, अजन्मा, अगुण (माया के गुणों से रहित) और (अगोचर दिव्य) गुणों की खान जानो।

अरे चाचा! सुनो, भक्त मुझे सदैव प्रिय है, ऐसा समझकर शरीर, वाणी और मन से मेरे चरणों में अटूट प्रेम करो। अब मेरी वेदों द्वारा वर्णित सत्य, सहज, परम शुद्ध वाणी सुनो। मैं आपको यह "मेरा सिद्धांत" बता रहा हूं। सुनने के बाद उसे अपने मन में धारण करो और सब कुछ त्याग कर मेरी पूजा करो।

यह सारा संसार मेरी ही माया से उत्पन्न हुआ है। [इसमें] कई प्रकार के चरने वाले जानवर हैं। वे सभी मुझे प्रिय हैं; क्योंकि सभी मेरी रचना हैं. [लेकिन] मुझे इंसान सबसे ज्यादा पसंद हैं। उन लोगों में,

मुझे द्विज प्रिय हैं, वेदों को कंठस्थ करने वाले, वेदों में लिखे धर्म का पालन करने वाले, इनमें से जो विरक्त (निष्पक्ष) हैं वे भी मुझे प्रिय हैं। त्यागशील लोगों में ज्ञानी और वैज्ञानिक भी होते हैं जो ज्ञानी लोगों को बहुत प्रिय होते हैं।

वैज्ञानिकों से भी अधिक प्रिय मेरा सेवक है, जिसे केवल मेरा ही सहारा है और कोई आशा नहीं। मैं तुमसे बार-बार सत्य कहता हूं ("मेरा सिद्धांत") कि मेरे सेवक के समान मुझे कोई प्रिय नहीं है। यदि वह अनीश्वरवादी ब्रह्मा भी है तो भी वह मुझे समस्त प्राणियों के समान ही प्रिय है। परंतु सबसे समर्पित और तुच्छ प्राणी भी मुझे अपने प्राणों के समान प्रिय है, यह मेरी घोषणा है।

एक धर्मपरायण, विनम्र और सुंदर, बुद्धिमान नौकर, मुझे बताओ, कौन उससे प्यार नहीं करता? वेद और पुराण ऐसी ही नीति कहते हैं। अरे चाचा! ध्यान से सुनो। एक पिता के भिन्न-भिन्न गुण, इच्छा और आचरण वाले अनेक पुत्र होते हैं। कुछ विद्वान हैं, कुछ तपस्वी हैं, कुछ ज्ञानी हैं, कुछ धनवान हैं, कुछ शूरवीर हैं, कुछ दानी हैं।

कुछ सर्वज्ञ हैं और कुछ धार्मिक हैं। पिता का प्यार उन सभी के लिए बराबर है. परन्तु यदि उनमें से कोई मन, वचन और कर्म से अपने पिता का भक्त हो और हृदय में भी किसी दूसरे धर्म को न जानता हो, तो वह पुत्र अपने पिता को अपने प्राणों के समान प्रिय होता है, चाहे वह अज्ञानी (मूर्ख) ही क्यों न हो हर तरह से। इस प्रकार तिर्यक (पशु-पक्षी), देवता, मनुष्य और राक्षसों सहित सभी चेतन और निर्जीव प्राणी,

यह सारा संसार (उनसे भरा हुआ) मेरे द्वारा बनाया गया है। अत: मेरी सब पर समान कृपा है। परन्तु इनमें से जो नशा और माया को त्यागकर मन, वाणी और शरीर से मुझे भजता है, हे पक्षी! मैं तुमसे सच कहता हूं, पवित्र (अद्वितीय और निःस्वार्थ) सेवक मुझे भक्तों के समान ही प्रिय है। ऐसा सोचकर तुम सब आशा और विश्वास छोड़कर मेरी पूजा करो।

समय कभी भी आप पर हावी नहीं होगा. तुम निरन्तर मेरा स्मरण और भजन करते रहना। प्रभु के वचन सुनने के बाद मैं कभी संतुष्ट नहीं हुआ। मेरा शरीर रोमांचित हो गया और मन में बहुत खुशी महसूस हो रही थी. उस सुख को केवल मन और कान ही जानते हैं। इसका वर्णन जीभ से नहीं किया जा सकता. केवल वे प्रसन्न आँखें ही ईश्वर की सुंदरता को जानती हैं। लेकिन वे कैसे कह सकते हैं? उसकी कोई वाणी नहीं है.

कई प्रकार से मुझे अच्छी तरह समझाने और खुशी देने के बाद, प्रभु ने फिर से वही बच्चों का खेल खेलना शुरू कर दिया: आँखों में आँसू और चेहरे पर सूखापन लिए हुए, उन्होंने अपनी माँ की ओर देखा - [और चेहरे के भाव के माध्यम से अपनी माँ को समझाया और देखो] वह बहुत भूखा है।

यह देखकर माता तुरन्त उठ बैठी और कोमल वचन कहकर श्री गर्माजी को अपने सीने से लगा लिया। वह उन्हें गोद में लेकर दूध पिलाने लगी और श्री रघुनाथजी की सुन्दर लीलाओं का गान करने लगी। अवधपुरी के नर-नारी सदैव उस सुख में मग्न रहते हैं जिसके लिए [सबको] सुख देने वाले शुभचिंतक त्रिपुरारि शिवजी ने अशुभ वेष धारण किया है।

हे पक्षीराज, जिसने एक बार उस सुख का थोड़ा-सा भी अंश प्राप्त कर लिया था! वे सुन्दर बुद्धिमान सज्जन ब्रह्मा के सुख को भी उसके सामने कुछ नहीं समझते।

मैं कुछ समय तक अवधपुरी में रहा और श्री रामजी की रसपूर्ण नृत्य प्रस्तुतियाँ देखीं। श्री यमजी के आशीर्वाद से मुझे भक्ति का वरदान मिला। उसके बाद भगवान के चरणों की पूजा करके मैं अपने आश्रम में लौट आया।

इस प्रकार जब से श्रीरघुनाथजी ने मुझे अपनाया है, तब से मैं माया से कभी नहीं वश में हुआ हूँ। जिस प्रकार श्री हरिको माया ने मुझे नचाया, उसी प्रकार गुप्त चरित्र में बोली, हे पक्षीराज गरुड़! अब मैं आपको अपना व्यक्तिगत अनुभव बताता हूँ। [अर्थात्] भगवान का भजन किये बिना कष्ट दूर नहीं होता। हे पक्षीराज! सुनो, श्री रामजी की कृपा के बिना श्री रामजी की प्रभुता का पता नहीं चलता;

भगवान को जाने बिना उस पर विश्वास नहीं होता, विश्वास के बिना प्रेम नहीं होता और प्रेम के बिना भक्ति मजबूत नहीं होती, हे पक्षियों! पानी की चिकनाई टिकती नहीं. क्या गुरु के बिना ज्ञान हो सकता है? अथवा क्या त्याग के बिना ज्ञान हो सकता है? इसी प्रकार वेद और पुराण कहते हैं कि श्री हरिकी की भक्ति के बिना कौन सा सुख प्राप्त हो सकता है?

संतुष्टि के बिना इच्छाएँ नष्ट नहीं हो सकतीं और इच्छाएँ रहने पर आत्म-प्रेम में भी सुख नहीं मिल सकता। और क्या श्री राम के भजन के बिना मनोकामनाएं शांत हो सकती हैं? क्या बिना धरती के कहीं भी पेड़ उग सकता है? क्या विज्ञान के बिना समता आ सकती है? क्या आकाश के बिना शांति (ध्रुव) मिल सकती है? आस्था के बिना कोई धर्म [अभ्यास] नहीं है। क्या पृथ्वी तत्व के बिना गंध मिल सकती है?

बिना तप के कौन सा प्रकाश फैल सकता है? 'बिना संसार में क्या स्वाद हो सकता है जल तत्व? विद्वानों की सेवा के बिना कौन सी नैतिकता प्राप्त हो सकती है? हे गोसाईं! जिस प्रकार तेज (अग्नि-तत्त्त्) के बिना कोई रूप प्राप्त नहीं कर सकता। क्या आत्मानन्द के बिना मन स्थिर हो सकता है? क्या वायु तत्व के बिना स्पर्श हो सकता है? क्या विश्वास के बिना कोई सिद्धि प्राप्त की जा सकती है? उसी प्रकार श्रीहरि के भजन के बिना जन्म-मृत्यु का भय नष्ट नहीं होता।

विश्वास के बिना भक्ति नहीं होती, भक्ति के बिना श्री रामजी नहीं पिघलते और श्री रामजी की कृपा के बिना जीव को स्वप्न में भी शांति नहीं मिलती। सबर रखो! ऐसा विचारकर सब प्रकार की कलह और शंकाओं को छोड़कर करुणा की खान का सुन्दर दर्शन कराने वाले श्री रघुवीर का भजन करो।

हे पक्षीराज! हे नाथ! मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार प्रभु की महिमा और महिमा का गान किया। इसमें मैंने कोई भी बात बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कही है. ये सब मैंने अपनी आँखों से देखा है. श्रीरघुनाथजी की महिमा, नाम, रूप और गुण सब की कथा अपार और अनन्त है और स्वयं श्रीरघुनाथजी भी अनन्त हैं। ऋषि-मुनि अपनी बुद्धि के अनुसार श्रीहरि की स्तुति करते हैं। वेद, शेष और शिवजी भी उससे पार नहीं पा सकते।

आप से लेकर मच्छर तक सभी छोटे-बड़े जीव आकाश में उड़ते हैं, लेकिन आकाश का अंत किसी को नहीं मिलता। इसी प्रकार, हे पिता! श्रीरघुनाथजी की महिमा भी अपरंपार है। क्या कभी कोई इसकी थाह ले सकता है? श्री रामजी का शरीर करोड़ों कामदेवों के समान सुन्दर है। वह करोड़ों दुर्गाओं की तरह शत्रुओं का नाश करने वाली है। उनका ऐश्वर्य करोड़ों इन्द्रों के समान है। उसमें अरबों आकाशों के समान अनंत स्थान है। उसमें अरबों हवाओं के समान महान शक्ति और अरबों सूर्यों के समान प्रकाश है।

वे अरबों चंद्रमाओं के समान शीतल और संसार के समस्त भयों का नाश करने वाले हैं। अरबों अश्वेतों की तरह, वे बेहद सख्त, मजबूत और दूरदर्शी हैं। वह प्रभु अरबों घूमते धूमकेतुओं के समान अत्यंत शक्तिशाली है।

ईश्वर अरबों पातालों के समान अथाह है। अरबों लोग यमराज के समान भयानक हैं। वे अनंत टिथोकियों की तरह पवित्र करने वाले हैं। उनका नाम समस्त पापों का नाश करने वाला है। श्री रघुवीर करोड़ों हिमालय के समान स्थिर और अरबों समुद्रों के समान गहरे हैं। भगवान अरबों कामधेनु के समान सभी कामनाओं (वांछित वस्तुओं) के दाता हैं।

उनमें अनन्त सरस्वतीओं के समान चातुर्य है। उनके पास अरबों ब्रह्माओं जैसी संरचना की विशेषज्ञता है। वह करोड़ों विष्णु की तरह रक्षक और अरबों रुद्रों की तरह संहारक है। वह अरबों कुबेरों के समान धनवान है और करोड़ों मायाओं के समान ब्रह्मांड का खजाना है। वे बोझ उठाने में अरबों शेषांकों के समान हैं। [और क्या] जगदीश्वर प्रभु श्री रामजी [हर चीज़ में] असीमित और तुलना रहित हैं।

श्री रामजी उपमा रहित हैं, उनकी कोई उपमा नहीं है। श्री राम, श्री राम जैसे हैं. वेद यही कहते हैं. जैसे यह कहने से कि सूर्य अरबों जुगनूओं के समान है, किसी को केवल बहुत कम ध्यान मिलता है [प्रशंसा नहीं] (सूरज की केवल आलोचना की जाती है)। इसी प्रकार मुनिश्चर श्रीहरिका उसके अनुसार वर्णन करता है बौद्धिक विकास।

श्री रामजी अपार दया के सागर हैं। क्या कोई उनकी थाह ले सकता है? मैंने संतों से जो कुछ सुना, वही तुम्हें सुनाया। सुख का भंडार, करुणा का निवास भगवान की भावनाओं (प्रेम) के अधीन है। [इसलिए] मनुष्य को प्रेम, मान और मान को छोड़कर सदैव श्री जानकीनाथजी की पूजा करनी चाहिए।

भुशुण्डिजी के सुन्दर वचन सुनकर पक्षीराज प्रसन्न हो गये और अपने पंख फैला दिये। उनकी आँखों में (प्रेम और आनंद के) आँसू भर आये और उनका मन अत्यंत प्रसन्न हो गया। उन्होंने श्रीरघुनाथजी की महिमा को अपने हृदय में धारण कर लिया। वह अपने पूर्व मोह को समझकर (याद करके) पश्चाताप करने लगा कि मैंने सनातन ब्राह्मणों को मनुष्य समझा। गरुड़जी ने बार-बार काकभुशुण्डिजी के चरणों में सिर झुकाया और उन्हें श्री रामजी के तुल्य जानकर अपना प्रेम बढ़ाया।

गुरु के बिना कोई भी भवसागर से तर नहीं सकता, चाहे वह ब्रह्माजी और शंकरजी जैसा ही क्यों न हो। [गरुड़जी ने कहा--] हे पिताजी! उस संदेह रूपी साँप ने मुझे पकड़ लिया था और [जैसे साँप के काटने पर विष की तरंगें आती हैं। दुःख की अनेक झूठी लहरें आ रही थीं।

आपके गरुड़ी रूप (सांप के जहर को दूर करने वाले) के माध्यम से अपने भक्तों को सुख देने वाले श्री रघुनाथजी ने मुझे फिर से जीवित कर दिया। आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया और मुझे श्री रामजी का अनोखा रहस्य पता चल गया। अनेक प्रकार से उनकी (भुशुण्डिजी की) स्तुति करने, सिर झुकाने और हाथ जोड़ने के बाद गरुड़जी ने प्रेमपूर्वक विनम्र और कोमल वचन बोले---

हे प्रभो ! हे भगवान - मैं आपसे अपने अविवेक के कारण पूछता हूं। हे कृपा के सागर! आप मुझे अपना 'अपना दास' समझकर मेरे प्रश्न का उत्तर सोच-समझकर दें। आप सब कुछ जानने वाले, तत्वों के ज्ञाता, अंधकार (माया) से परे, उत्कृष्ट बुद्धि से युक्त, विनम्र, सरल आचरण वाले, ज्ञान, त्याग और विज्ञान के निवास स्थान और श्री रघुनाथजी के प्रिय सेवक हैं।

तुम्हें यह काला शरीर क्यों मिला? हे पिता! कृपया मुझे सब कुछ समझाएं। हे प्रभो! यह दिव्य है! मुझे बताएं कि आपको यह सुंदर रामचरितमानस कहां मिली? हे नाथ! मैंने भगवान शिव से सुना है कि आप महाप्रलय में भी नष्ट नहीं होते और भगवान (शिवजी) कभी मिथ्या वचन नहीं बोलते। ये भी मेरे मन में एक शंका है.

, क्योंकि] नाथ है। नाग, मनुष्य, देवता आदि जंगम-जंगम जीव और यह सारा संसार काल का अभिशाप है। असंख्य ब्रह्मपदों को नष्ट करने वाला काल सदैव अपरिहार्य है। वहाँ अत्यन्त भय का काल तुम्हें घेर नहीं पाता और उसका तुम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, इसका क्या कारण है? हे दयालु! बताओ यह ज्ञान का प्रभाव है या योगबल का?

हे प्रभो! आपके आश्रम में आते ही मेरी माया-माया भाग गयी। इसका कारण क्या है ? हे नाथ! ये सब प्यार से कहो. हे उमा! गरुड़जी की वाणी सुनकर काकभुशुण्डिजी प्रसन्न हो गये और अत्यंत प्रेम से बोले- हे शत्रु! धन्य है आपकी बुद्धि! सौभाग्यपूर्ण! मुझे आपके प्रश्न बहुत प्यारे लगे.

आपके सुंदर प्रेमपूर्ण प्रश्न सुनकर मुझे अपने कई जन्मों की याद आ गई। मैं अपनी सारी कहानियाँ विस्तार से बताता हूँ। हे पिता! ध्यान से और सम्मान के साथ सुनें. अनेक जप, तप, यज्ञ, शम (मन को वश में करना), दम (इंद्रियों को वश में करना), व्रत, दान, त्याग, विवेक, योग, विज्ञान आदि सभी का फल श्री रघुनाथजी के चरणों में प्रेम करना ही है। इसके बिना किसी का कल्याण नहीं हो सकता।

इस शरीर से मुझे श्री रामजी की भक्ति प्राप्त हुई है। इसलिए मुझे इससे अधिक लगाव है. हर कोई ऐसे व्यक्ति से प्यार करता है जो उनके हितों की पूर्ति करता है। हे गरुड़जी ! वेदों में ऐसी नीति स्वीकृत है और सज्जन लोग भी यही कहते हैं कि अपने परम कल्याण को जानकर सबसे निचले व्यक्ति से भी प्रेम करना चाहिए।

रेशम का उत्पादन कीड़ों से होता है और उससे सुन्दर रेशमी कपड़े बनाये जाते हैं। यही कारण है कि हर कोई उस सबसे अपवित्र कीट को भी ऐसे पालता है जैसे कि वह उनका जीवन हो। मन, वचन और कर्म से श्री रामजी के चरणों में प्रेम करना ही प्राणी का सच्चा स्वार्थ है। वह शरीर ही पवित्र और सुंदर है, उस शरीर को प्राप्त करने के बाद श्री रघुबीर की पूजा की जाती है।

श्री रामजी का विरोध करने वाले को ब्रह्माजी जैसा शरीर मिल जाए तो भी कवि और विद्वान उसकी प्रशंसा नहीं करते। इसी शरीर से मेरे हृदय में रामभक्ति उत्पन्न हुई। इसलिये हे प्रभु! ये मुझे बहुत प्रिय है. मेरी मृत्यु मेरी अपनी इच्छा से है, परंतु फिर भी मैं इस शरीर को नहीं छोड़ता; क्योंकि वेदों में वर्णित है कि शरीर के बिना पूजा नहीं होती। सबसे पहले, उसने मुझे बहुत परेशान किया। श्री रामजी से दूर रहकर मुझे कभी सुख की नींद नहीं आयी।

मैंने कई जन्मों में अनेक प्रकार के योग, जप, तप, यज्ञ और दान आदि किये हैं। हे गरुड़ जी! संसार में ऐसा कोई जीवन नहीं है जिसमें मैं भटककर [बार-बार] जन्म न पाया हो। हे गुसाईं! मेरे पास है। मैंने सारे कर्म कर लिये, परन्तु अब (इस जन्म में) जैसा सुख मुझे कभी नहीं हुआ। हे नाथ! मुझे कई जन्म याद हैं. [क्योंकि] श्री शिवजी की कृपा से मेरा मन प्रलोभनों से घिरा नहीं था।

हे पक्षीराज! सुनो, अब मैं तुम्हें अपने पहले जन्म का चरित्र बताता हूं, जिसे सुनने के बाद हृदय में भगवान के प्रति प्रेम उत्पन्न हो जाता है, जिससे सभी कष्ट मिट जाते हैं। हे भगवान! पिछले कल्प में पापों का मूल युग कलियुग था, जिसमें सभी स्त्री-पुरुष अधर्मी और वेदविरुद्ध थे।

उस कलियुग में मैं अयोध्यापुरी में गया और शूद्र का शरीर पाकर मेरा जन्म हुआ। मैं मन, वचन और कर्म से भगवान शिव का सेवक था और अन्य देवताओं का अहंकारी आलोचक था। मैं पैसों के नशे में धुत था, बहुत बातूनी और गुस्सैल था; मेरे दिल पर भारी दबाव था. यद्यपि मैं श्रीरघुनाथजी की राजधानी में रहता था, तथापि उस समय उनकी महिमा के बारे में कुछ भी नहीं जानता था।

अब मुझे अवध की तासीर मालूम हुई। वेद, शाख और पुराणों ने गाया है कि जो कोई भी किसी भी जन्म में अयोध्या में बसेगा, वह निश्चित रूप से श्री रामजी का भक्त बन जाएगा। अवध की तासीर को प्राणी तभी जानता है, जब हाथ में धनुषधारी श्री रामजी उसके हृदय में निवास करते हैं। हे गरुड़जी ! वह दौर बहुत कठिन था. उसमें सभी स्त्री-पुरुष पापी (पाप में लिप्त) थे।

सभी लोग मोह के वशीभूत हो गए, अच्छे कर्मों को लालच ने हड़प लिया। हे ज्ञान के भण्डार! हे श्रीहरि के वाहन! सुनो, अब मैं तुम्हें कलि के कुछ धर्म बताऊंगा। कलियुग में न तो वर्णधर्म है और न ही चारों आश्रम। सभी नर-नारी वेदों के विरोध में लगे हुए हैं। ब्राह्मण वेद बेचने वाले हैं और राजा प्रजा को खाने वाले हैं। वेद की आज्ञा को कोई नहीं मानता।

जो किसी को अच्छा लगता है वही सही रास्ता है। जो शेखी बघारता है वही विद्वान है। जो मिथ्या आचरण करता है (आडंबर रचता है) और जो अहंकार करता है, उसे सभी लोग साधु कहते हैं। जो दूसरे का धन [किसी भी प्रकार से] चुरा लेता है, वह बुद्धिमान है। जो अहंकार करता है वह महान अनैतिक व्यक्ति होता है। जो झूठ बोलता है और मजाक करना जानता है, वही कलियुग में सदाचारी कहलाता है।

जो अनाचारी है और वेद मार्ग को छोड़ चुका है, वही कलियुग में ज्ञानी है और वही वैराग्य से मुक्त है। जिसके बड़े-बड़े बाल और लंबी-लंबी जटाएं हों, वह कलियुग में प्रसिद्ध तपस्वी है। जो अमजल वरेश और अमजल भूषण धारण करते हैं तथा भक्ष्य और अभक्ष्य (भक्ष्य और खाने योग्य) सब कुछ खाते हैं, वे ही योगी हैं, वे ही सिद्ध हैं और वे ही कलियुग के पूज्य मनुष्य हैं।

'वे ही हानि पहुँचाने वाले हैं, उनमें बड़ा अभिमान है और वे ही हानि करने के योग्य हैं। कलियुग में वे ही वक्ता माने जाते हैं जो मन, वचन और कर्म से मुक्त हैं (जो झूठ बोलते हैं)। हे गोशेन, यह करो। सभी मनुष्य स्त्रीयान के विशेष नियंत्रण में हैं और बाजीगर के बंदर की तरह नृत्य करते हैं। शूद्र गले में जनेऊ बांधकर ब्राह्मणों को ज्ञान का उपदेश देते हैं और कुदान स्वीकार करते हैं।

सभी मनुष्य काम और लोभ में आतुर और क्रोधी होते हैं। वे देवताओं, ब्राह्मणों, वेदों और संतों के विरोधी हैं। दुर्भाग्य से वह अपने सुंदर पति, गुणों के निवास को छोड़ देती है, और दूसरे पुरुष का फायदा उठाती है। विवाहित खत्री आभूषणों से रहित होते हैं, लेकिन विधवाएँ प्रतिदिन नई टोपी पहनती हैं।

शिष्य और गुरु के बीच एक बहरा और अंधा रिश्ता होता है। एक (शिष्य) गुरु के उपदेशों को सुनता नहीं, एक (गुरु) देखता नहीं (उसे ज्ञान की दृष्टि नहीं होती)।

जो गुरु अपने शिष्य का धन चुरा लेता है, परंतु छीनने वाला शोक नहीं करता, वह घोर नरक में गिरता है। माता-पिता अपने बच्चों को बुलाकर वही धर्म सिखाते हैं जिससे उनका पेट भरता हो। स्त्री-पुरुष ब्रह्मज्ञान के अतिरिक्त और कोई बात नहीं करते, परन्तु लोभ के कारण सिक्कों (बहुत कम लाभ) के लिए ब्राह्मणों तथा गुरुओं की हत्या कर देते हैं।

शूद्र ब्राह्मणों से विवाद करते हैं [और कहते हैं] कि हम क्या तुमसे कम हैं? जो ब्राह्मण को जानता है वही श्रेष्ठ ब्राह्मण है। [यह कहते हुए] वह साहसपूर्वक उनकी ओर देखता है। जो मनुष्य दूसरे के अपराध में आसक्त, कपट में चतुर

तथा मोह, ईर्ष्या और मोह में लिपटे हुए हैं, वे ही मनुष्य विवेकरहित (ब्रह्म तथा प्राणियों को एक बताने वाले) ज्ञानी हैं। मैंने यह किरदार देखा उसका कलियुग.

वे सदैव नष्ट रहते हैं; वे सन्मार्ग पर चलने वालों को भी नष्ट कर देते हैं। जो लोग तर्क करके वेदों की निंदा करते हैं वे प्रत्येक कल्प तक नरक में रहते हैं। तेली, कुम्हार, चांडाल, भील, कोल और कलवार आदि, जो जाति में निम्न हैं, किसी महिला की मृत्यु के बाद या घर की संपत्ति नष्ट हो जाने पर अपना सिर मुंडवा लेते हैं और संन्यासी बन जाते हैं।

वे अपनी पूजा ब्राह्मणों से कराते हैं और अपने ही हाथों दोनों लोकों को नष्ट कर देते हैं। ब्राह्मण अनपढ़, लालची, कामी, अनैतिक, मूर्ख और निम्न जाति की व्यभिचारी स्त्रियों के स्वामी होते हैं। शूद्र नाना प्रकार का जप, तप और व्रत करते हैं तथा ऊँचे आसन (व्यासगद्दी) पर बैठकर पुराणों का पाठ करते हैं। सभी मनुष्य मनमाना आचरण करते हैं। घोर अनीति का वर्णन नहीं किया जा सकता।

कलियुग में सभी ने अपना मान-सम्मान खो दिया है। वे पाप करते हैं और [परिणामस्वरूप] दुःख और अलगाव सहते हैं। मोहवश लोग वेदों पर आधारित, त्याग व ज्ञान पर आधारित ईश्वर भक्ति के मार्ग पर नहीं चलते और अनेक मत-मतान्तरों की कल्पना करते हैं।

सन्यासी लोग अपने घर को सजाने में बहुत पैसा खर्च करते हैं। उनमें त्याग नहीं था, वह तो उनकी प्रजा ने छीन लिया था। तपस्वी अमीर हो गए और गृहस्थ गरीब हो गए। हे पिता! कलियुग की लीला कहीं नहीं जाती। पुरुष कुलीन और सती स्त्रियों को घर से निकाल देते हैं और अच्छी स्त्रियों को छोड़कर नौकरानियों को घर में ले आते हैं। बेटे अपने माता-पिता का सम्मान तब तक ही करते हैं जब तक वे किसी स्त्री का मुख नहीं देखते।

जब से ससुराल प्यारी लगने लगी, घर वाले ही दुश्मन बन गए। राजा और प्रजा पापी हो गये, उनमें कोई धर्म नहीं रहा। वे नियमित रूप से लोगों को दण्ड देकर (बिना कोई अपराध किये) दुःख पहुँचाते हैं। अमीर लोग गंदे (नीची जाति) होने पर भी कुलीन माने जाते हैं। द्विजका चिन्ह केवल जनेऊ ही रह गया और नग्न रहना ही तपस्या थी। जो लोग वेदों और पुराणों को नहीं मानते, कलियुग में वे ही हरि भक्त और सच्चे संत कहलाते हैं।

कवि तो बहुत हुए, परन्तु संसार में किसी उदार (कवियों के संरक्षक) का उल्लेख नहीं मिलता। सद्गुणों की आलोचना करने वाले तो बहुत हैं, परन्तु सद्गुणी कोई नहीं। कलियुग में हम बार-बार अकाल के बारे में पढ़ते हैं। अन्न के बिना

सब दुःखी मरते हैं। हे पक्षीशिकारी गरुड़जी! सुनो, कलियुग में छल, हठ, अहंकार, द्वेष, पाखंड, अहंकार, मोह, वासना आदि (अर्थात् काम, क्रोध और लोभ) और अभिमान समस्त ब्रह्माण्ड में फैल गया है।

लोग तामसी भाव से जप, तप, यज्ञ, व्रत और दान आदि धार्मिक कार्य करने लगे। भगवान (इंद्र) पृथ्वी पर जल नहीं बरसाते और बोया हुआ अन्न उगता नहीं। स्त्रियों के बाल ही उनका आभूषण होते हैं (उनके शरीर पर कोई आभूषण नहीं रहता) और उन्हें भूख बहुत लगती है (अर्थात वे सदैव असंतुष्ट रहती हैं)।

वह पैसों की कमी और प्यार की कमी के कारण दुखी रहती है। वे मूर्खतापूर्ण सुख चाहते हैं, परन्तु उन्हें धर्म से कोई प्रेम नहीं है। बुद्धि छोटी और कठोर है; उनमें कोई नरमी नहीं है.

मनुष्य रोगों से पीड़ित हैं, कहीं कोई आनंद (सुख) नहीं है। वे अहंकारी हो जाते हैं और अकारण ही विरोध करते हैं। उनकी आयु दस-पाँच वर्ष की अल्प है, परन्तु उनका अभिमान ऐसा है कि प्रलय होने पर भी उनका नाश नहीं होगा। एल हाय. वादे और लालच प्रचुर होते जा रहे हैं, समानता ख़त्म हो गई है। सब लोग विरह से मर रहे हैं। वर्णाश्रम-धर्म का आचरण नष्ट हो गया।

आह, दान, दया और समझ अब नहीं रहे। मूर्खता और दूसरों को धोखा देना बहुत बढ़ गया। स्त्री और पुरुष दोनों ही शरीर के रख-रखाव में लगे हुए हैं। जो लोग दूसरों की निंदा करते हैं वे ही संसार में फैले हुए हैं। हे सर्प के शत्रु गरुड़जी! सुनो, कलिकाल पापों और विकारों का घर है। लेकिन कलियुगर्म का एक बड़ा अर्थ यह भी है जिसमें बिना किसी मेहनत के जीवन के बंधन से मुक्ति मिल जाती है।

सत्ययुग, त्रेता और द्वापर में पूजा, यज्ञ और योग से जो गति प्राप्त होती है, वही गति कलियुग के लोगों को केवल भगवान के नाम से प्राप्त होती है। सत्ययुग में हर कोई योगी और वैज्ञानिक होता है। हरिका का ध्यान करने से सभी प्राणी भवसागर में डूब जाते हैं। त्रेता में लोग अनेक प्रकार के यज्ञ करते हैं और अपने सभी कर्मों को भगवान को समर्पित करके भवसागर से पार हो जाते हैं।

द्वापर में श्रीरघुनाथजी के चरणों की पूजा करने से लोग संसार से मुक्त हो जाते हैं, इसके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है। और कलियुग में श्रीहरि के भजन मात्र से ही मनुष्य भवसागर की थाह पा लेते हैं। कलियुग में न तो योग है, न यज्ञ और न

ही ज्ञान। श्री रामजी की स्तुति ही एकमात्र आधार है। अत: जो सब भरोसे छोड़कर श्री रामजी को भजता है और प्रेम से उनके गुण गाता है।

वही भवसागर में भीगने वाला है, इसमें कोई संदेह नहीं है। कलियुग में नाम की महिमा प्रत्यक्ष है। कलियुग का एक पवित्र गौरव यह है कि इसमें मानसिक गुण तो हैं, लेकिन कोई मानसिक पाप नहीं हैं। मनुष्य की मानें तो कलियुग जैसा कोई युग नहीं है। [क्योंकि] इस युग में श्री रामजी के पवित्र गुणों का गान करके मनुष्य बिना परिश्रम ही संसार से तर जाता है।

धर्म के चार चरण (सत्य, दया, तपस्या और दान) प्रसिद्ध हैं, जिनमें से केवल एक [दान] चरण कलीम में प्रमुख है। दान किसी भी प्रकार से दिया जाए, कल्याण ही करता है। श्री रामजी की माया से प्रेरित होकर सभी युगों के धर्म सभी के हृदय में विद्यमान रहते हैं। शुद्ध गुण, समता, ज्ञान और मन की प्रसन्नता, इसे सत्ययुग का प्रभाव समझें।

सत्त्वगुण अधिक हो, कुछ रजोगुण हो, कर्मों में प्रेम हो, सब प्रकार से प्रसन्नता हो, यही त्रेताका धर्म है। रजोगुण बहुत हो, सत्त्वगुण बहुत थोड़ा हो, तमोगुण थोड़ा हो, मन में हर्ष और भय हो, यही द्वापरक धर्म है। तमोगुण बहुत हो, रजोगुण थोड़ा हो, चारों ओर शत्रुता और विरोध हो, यही कलियुग का प्रभाव है। विद्वान लोग युगों के धर्म को अपने मन में जानते (पहचानते) हैं, अधर्म को छोड़कर धर्म से प्रेम करते हैं।

जिसे श्रीरघुना के चरणों में अत्यंत प्रेम है, उस पर काल धर्म का प्रभाव नहीं पड़ता। हे पक्षीराज! बाजीगर द्वारा किया गया कपटी चरित्र (इंजाल) दर्शकों के लिए बहुत खतरनाक होता है, लेकिन बाजीगर के नौकर पर उसकी माया का कोई असर नहीं होता।

श्रीहरिकी माया से उत्पन्न दोष और गुण श्रीहरिकी भजन के बिना दूर नहीं होते। ऐसा मन में विचार करके मनुष्य को समस्त कामनाओं का त्याग करके (निःस्वार्थ भाव से) श्री गमजी की पूजा करनी चाहिए। हे पक्षी पक्षी! उस दौरान मैं कई वर्षों तक अयोध्या में रहा. एक बार वहां अकाल पड़ गया. फिर मुझ पर विपत्ति आई और मैं विदेश चला गया।

हे सर्पों के शत्रु गरदजी! सुनो, मैं दीन, निराश, दरिद्र और दुःखी होकर उज्जेन गया था। कुछ समय बाद कुछ धन पाकर मैं वहीं भगवान षड्दास की पूजा करने लगा। बेदाविधि नाम का एक ब्राह्मण सदैव भगवान शिव की पूजा करता था,

उसके पास कोई अन्य काम नहीं था। वे एक महान संत और परमार्थ के ज्ञाता थे, वे शंभू के उपासक थे, लेकिन श्री हरिकी के आलोचक नहीं थे।

उस श्रेष्ठ ब्राह्मण ने मुझे भगवान शिव का मन्त्र दिया तथा अनेक शुभ उपदेश दिये। मैं भगवान शिव के मंदिर जाऊंगा और मंत्रों का जाप करूंगा। मेरे हृदय में अभिमान और अहंकार बढ़ गया। मैं दुष्ट, नीच जाति का तथा मलिन मन वाला पापी मनुष्य श्रीहरि तथा द्विजों के भक्तों को देखकर जलता था तथा भगवान विष्णु के साथ विश्वासघात करता था।

गुरुजी मेरे आचरण को देखकर दुःखी हुए। वह हमेशा मुझे बहुत अच्छी तरह से बातें समझाते थे, लेकिन (मुझे कुछ समझ नहीं आता था, इसके विपरीत) मुझे बहुत गुस्सा आता था। क्या अहंकारी लोगों को कभी नीति पसंद आती है? ॥ एक बार गुरुजी ने मुझे बुलाया और बहुत सी (परोपकारी) नीतियाँ सिखाईं, हे पुत्र! भगवान शिव की सेवा का फल श्री राम के चरणों में गहरी भक्ति होना है।

हे पिता! शिवजी और ब्रह्माजी भी श्री रामजी की पूजा करते हैं [तब] नीच मनुष्य का तो कहना ही क्या? जो ब्रह्माजी और शिवजी के चरणों के प्रेमी हैं, हे अभागे! क्या आप उन्हें धोखा देकर ख़ुशी चाहते हैं? गुरुजी ने शिवजी को हरिका सेवक कहा। यह सुनकर हे पक्षीराज! मेरा दिल दुख गया. मैं नीच जाति का हूँ, शिक्षा पाकर दूध पिलाने से साँप के समान हो गया।

दुर्भाग्य और दुर्भाग्य के कारण मैं दिन-रात गुरुजी को धोखा देता रहता था। मेरे अत्यंत अवज्ञाकारी होने पर भी गुरुजी मुझे बार-बार उत्तम विद्या सिखाते थे। नीच व्यक्ति सबसे पहले उस व्यक्ति को मारकर नष्ट कर देता है जिससे उसे यश प्राप्त होता है। अरे भइया! सुनो, आग से उत्पन्न धुआँ बादल की उपाधि प्राप्त करके उसी आग को बुझा देता है।

धूल सड़क पर बेअदबी से पड़ी रहती है और हमेशा सभी [यात्रियों] के लातों का खामियाजा भुगतती है। परन्तु जब हवा उसे उड़ाती है (ऊंचा उठाती है) तो सबसे पहले वह उसमें (हवा) भरती है और फिर राजाओं की आंखों और ताजों पर गिरती है।

हे पक्षीराज गरुड़! सुनो, ऐसी बातें समझकर बुद्धिमान लोग नीच की निंदा नहीं करते। कवियों और विद्वानों का कहना है कि बुरे व्यक्ति से न तो झगड़ा अच्छा है और न ही प्यार। हे गोसाईं! इसके प्रति सदैव उदासीन रहना चाहिए। दुष्ट को कुत्ते की तरह दूर से ही भगा देना चाहिए। मैं दुष्ट था, मेरा हृदय छल और कपट

से भरा हुआ था। [इसीलिए यद्यपि] गुरुजी ऐसी बातें कहते थे जो मेरे लिए फायदेमंद होती थीं, लेकिन वे मुझे पसंद नहीं आती थीं।

मन्दिर में आकाशवाणी हुई, हे अभागे! बेवकूफ़ ! अभिमानी ! यद्यपि तुम्हारे शिक्षक क्रोधित नहीं हैं, वे बहुत मूर्ख हैं और उनके पास [पूर्ण और] सटीक ज्ञान है, फिर भी तुम मूर्ख हो! मैं तुझे शाप दूंगा; [क्योंकि] मुझे नीति का विरोध पसंद नहीं है। अरे दुष्ट! यदि मैं तुम्हें दंड न दूँगा तो मेरा वेद पथ ही भ्रष्ट हो जायेगा।

जो मूर्ख अपने गुरु से ईर्ष्या करते हैं वे करोड़ों युगों तक रौरव नरक में पड़े रहते हैं। फिर (वहां से निकलकर) अन्य पशुओं (पशु, पक्षी आदि) की योनियों में जन्म लेते हैं और दस हजार योनियों तक कष्ट भोगते रहते हैं। अरे पापी! आप गुरु के सामने अजगर की तरह बैठे रहे। हे दुष्ट! तेरा मन पाप से ढँका हुआ है, तू साँप बन गया है। और भी बुरा! इस नादिर (साँप का निचला भाग) पर पहुँचकर एक बड़े भारी वृक्ष की खोह में जाकर निवास करो।

शिवजी का भयानक श्राप सुनकर गुरुजी की चीख निकल गयी. मुझे कांपता देख उसका'. हृदय में बड़ा दुःख हुआ।   भगवान शिव को प्रणाम करके ब्राह्मण ने श्री शिवजी के आगे हाथ जोड़ दिये और अपने भयंकर भाग्य का विचार करते हुए दुःखी स्वर में विनती करने लगा-

मैं आपको भगवान को नमस्कार करता हूं, जो निराकार, तुरीय (तीन गुणों से परे), वाणी, ज्ञान और इंद्रियों से परे, कैलाशपति, विकराल, यहां तक कि सबसे महान समय का काल, कपालु, गुणों का निवास, दुनिया से परे है। जो हिमाचल के समान गौरवशाली और गंभीर हैं, जिनके शरीर में करोड़ों कामदेवों का तेज और सौंदर्य है, जिनके सिर पर सुंदर नदी गदाजी विराजमान हैं, जिनके माथे पर द्वितीया का चंद्रमा है और जिनके गले में सांप सुशोभित है।

जिनके कानों में कुंडल घूमते हों, भौहें सुंदर हों और आंखें बड़ी-बड़ी हों; जो प्रसन्नचित्त, नीले गले वाला और दयालु हो; सिंह की खाल पहने और माला पहने हुए; मैं सबको पवित्र करने वाले और सबका कल्याण करने वाले श्री शद्दरजी की पूजा करता हूँ।

मैं उन परम तेजस्वी भगवान, अखण्ड, अजन्मा, करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाश वाले, (रुद्र रूप में), सर्वश्रेष्ठ, तीनों प्रकार के दुखों (दुःखों) को कलम से दूर करने वाले, श्री शद्दजी की पूजा करता हूँ। हाथ में त्रिशूल और भवानी के पति।

कलाओं से परे, कल्याण स्वरूप, कल्प का अंत करने वाले, अच्छे लोगों को हमेशा आशीर्वाद देने वाले, त्रिपुर के शत्रु, सच्चिदानंदघन के शत्रु, मोह को हरने वाले, जो मन को मथता है, हे प्रभु! खुश रहो, खुश रहो.

जब तक पार्वती का पति मनुष्य होकर आपके चरणकमलों की पूजा नहीं करेगा, तब तक वह इस संसार में नहीं रह सकेगा। और परलोक में सुख-शान्ति रहती है और न उनका ताप नष्ट होता है। इसलिए, हे भगवान जो सभी जीवित प्राणियों के हृदय में निवास करते हैं! खुश रहो। मैं न योग जानता हूँ, न जप, न पूजा। हे शम्भो! मैं सदैव आपको ही नमस्कार करता हूँ। हे प्रभो ! बुढ़ापे के दुःखों तथा जन्म-मृत्यु के दुःखों से मेरी रक्षा करो। रब्बा बे! हे शम्भो! मैं तुम्हें सलाम करता हुँ।

शदुर्जी की संतुष्टि के लिए भगवान रुद्र की स्तुति के इस अष्टक को ब्रह्माण्डगारा कहा गया। इसका भक्तिपूर्वक पाठ करने वालों पर भगवान शंभू प्रसन्न होते हैं। सर्वज्ञ भगवान शिव ने प्रार्थना सुनी और ब्राह्मण का प्रेम देखा। तभी मन्दिर में आकाशवाणी हुई कि हे ब्राह्मणश्रेष्ठ वर मांगो।

[ब्राह्मण ने कहा-] हे भगवन्! यदि तुम मुझ पर प्रसन्न हो और हे प्रभु! यदि तुम्हें इस धर्म से प्रेम है तो पहले तुम्हारे चरणों की भक्ति करो फिर दूसरा वर दो। हाँ प्रभु। यह अज्ञानी जीव आपकी माया के वश में है और विस्मृति में भटकता रहता है। भगवान दया के सागर हैं! उस पर गुस्सा मत करो.

शतभूर कल्याण दाता है! अब हे नाथ, उन पर ऐसी कृपा करो कि श्राप के बाद उन्हें अल्प समय में ही कृपा (श्राप से मुक्ति) मिल जाये।   आशीर्वाद का! अब वही करो जिससे उसका परम कल्याण हो। दूसरों के कल्याण से ओत-प्रोत ब्राह्मण की वाणी सुनकर आकाशवाणी फिर हुई- 'एबमस्तु' (ऐसा ही हो)।

यद्यपि उसने घोर पाप किया है और मैंने भी क्रोध करके उसे शाप दे दिया है, फिर भी तुम्हारी दयालुता देखकर मैं उस पर विशेष दया करूँगा।   द्विज! जो क्षमाशील और दानशील हैं वे मुझे खरारी श्री रामचन्द्रजी के समान प्रिय हैं। हे द्विज! मेरा श्राप व्यर्थ नहीं जायेगा. उसे निश्चय ही एक हजार जन्म मिलेंगे।

परंतु जन्म और मृत्यु के साथ मिलने वाले कष्ट और दुख का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा और किसी भी जन्म में इसका ज्ञान नहीं मिटेगा। हे शूद्र, जाकर मेरी प्रामाणिक बातें सुनो। सबसे पहले आपका जन्म श्रीरघुनाथजी की पुरी में हुआ था। फिर तुमने मेरी सेवा करने पर ध्यान केन्द्रित किया। पुरी के प्रभाव और मेरी कृपा से तुम्हारे हृदय में रामभक्ति उत्पन्न हो जायेगी।

अरे भाई अब मेरी सच्ची बात सुनो, दूसरे पुत्र की सेवा ही ईश्वर को प्रसन्न करने वाला व्रत है। फिर कभी किसी ब्राह्मण का अपमान न करना। संतों को सनातन भगवान श्री के समान जानो। जो इन्द्र के वज्र, मेरे विशाल त्रिशूल, काल के दण्ड तथा श्रीहरि के विकराल चक्र से भी नहीं मरता, वह विद्रोह की अग्नि से भी जलकर भस्म हो जाता है।

ऐसी बुद्धिमत्ता मन में रखें. तब संसार में आपके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं रहेगा। मेरा एक और आशीर्वाद है कि आपकी हर जगह अबाधित आवाजाही होगी (अर्थात आप जहां भी जाना चाहेंगे, वहां बिना किसी रोक-टोक के जा सकेंगे)। आकाशवाणी द्वारा शिवजी के वचन सुनकर गुरुजी प्रसन्न हो गये और बोले, 'ऐसा ही हो', मुझे बहुत समझाकर और शिवजी के चरण हृदय में रखकर घर चले गये।

कल्कि की प्रेरणा से वह विंध्याचल जाकर सर्प बन गया। फिर कुछ समय बीतने पर बिना किसी प्रयास के मैंने वह शरीर छोड़ दिया। यह हरिवाहन है! मैं जो भी शरीर धारण करता था, उसे बिना किसी प्रयास के खुशी-खुशी त्याग देता था, जैसे कोई पुराना वस्त्र त्यागकर नया वस्त्र धारण कर लेता है।

भगवान शिव ने बेदा की लाज रखी और मुझे कोई कष्ट भी नहीं हुआ. इस प्रकार, हे पक्षीराज! मैंने अनेक शरीर धारण किये, परन्तु मेरा ज्ञान नष्ट नहीं हुआ। मुझे अंतिम शव एक ब्राह्मण का मिला, जिसे पुराण और वेद देवताओं में भी दुर्लभ बताते हैं। वहाँ भी (ब्राह्मण शरीर में) यदि मैं बालकों के साथ खेलता तो श्रीरघुनाथजी की सारी लीलाएँ कर लेता॥

जब मैं बड़ी हुई तो मेरे पिता ने मुझे पढ़ाना शुरू किया. मैंने समझा, सुना और सोचा, लेकिन पढ़ना अच्छा नहीं लगा। मेरे मन से सारी इच्छाएँ भाग गईं। श्री रामजी के चरणों में ही मेरा प्रेम हो गया। हे गरुड़जी ! बताओ, कौन इतना अभागा होगा जो कामधेनु को छोड़कर गधे की सेवा करेगा? प्यार में डूबकर मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता. पिता ने उनकी शिक्षा पूरी की।

जब मेरे पिता और माता का निधन हो गया, तो मैं भक्तों की रक्षा करने वाले भगवान राम की पूजा करने के लिए बनम गया। जंगल में जहां भी उसे साधुओं के आश्रम मिलते, वह वहां जाकर उन्हें प्रणाम करता। मेरी तीन प्रकार की गहरी इच्छाएँ (कन्या की, धन की और मान की) दूर हो गईं और मेरे हृदय में केवल एक ही इच्छा बढ़ गई कि जब मैं श्री रामजी के चरणकमलों के दर्शन करूँगी तो अपना जन्म सफल समझूँगी।

जिन ऋषि-मुनियों से मैंने पूछा, वे यही कहते थे कि ईश्वर सर्वव्यापी है। यह निर्गुण सिद्धांत मुझे रास नहीं आया। मेरे हृदय में सगुण ब्रह्म के प्रति प्रेम बढ़ता जा रहा था। गुरुजी के वचन याद करके मेरा मन श्री रामजी के चरणों में लग गया। मैं श्रीरघुनाथजी के गुण गाता रहा, हर पल नया प्यार पाता रहा।

लोमश ऋषि सुमेरु पर्वत के शिखर पर छाया में बैठे थे। उन्हें देखकर मैंने उनके चरणों पर सिर झुकाया और अत्यंत विनम्र शब्द बोले। जय पक्षीराज. मेरे अत्यंत विनम्र और सौम्य वचन सुनकर दयालु मुनि आदरपूर्वक मुझसे पूछने लगे- हे ब्राह्मण! तुम यहाँ किस प्रयोजन से आये हो?

तब मैंने कहा--हे कृपानिधि! आप सर्वज्ञ और बुद्धिमान हैं. हाय भगवान्! मुझे सगुण ब्रह्म की पूजा [प्रक्रिया] कहें। यह मन और इंद्रियों से परे, शुद्ध, विनाशरहित, विकाररहित, असीम और सुख का प्रतीक है। वेद गाते हैं कि आप एक ही हैं (तत्तमसि), पानी और पानी की लहर की तरह, उनमें और आप में कोई अंतर नहीं है।

ऋषि ने मुझे अनेक प्रकार से समझाया, परन्तु निर्गुण का विचार मेरे हृदय में नहीं बैठा। फिर मैंने मुनि के चरणों में सिर झुकाकर कहा- हे मुनीश्वर! मुझे सगुण ब्रह्म का उपासक कहो। मेरा मन रामभक्ति के जल में मछली बन रहा है। हे चतुर मुनिश्र! ऐसे में वह उससे कैसे अलग हो सकता है? कृपया मुझे भी वही सलाह (समाधान) दीजिये। मुझे बताइये ताकि मैं श्रीरघुनाथजी को अपनी आँखों से देख सकूँ।

[प्रथम] मैं नेत्र खोलकर श्री अयोध्यानाथ का दर्शन करूँगा और तीस निर्गणों का उपदेश सुनूँगा। तब ऋषि ने एक अनोखी कहानी सुनाकर सगुण सिद्धांत का खंडन किया और निर्गुण की व्याख्या की। हे गर्भवती! सुनो, जब ज्ञानी व्यक्ति का बहुत अपमान होता है तो उसके मन में भी क्रोध आता है। यदि कोई चंदन को अधिक घिसेगा तो उससे भी अग्नि प्रकट हो जायेगी।

ऋषि क्रोधित होकर बार-बार ज्ञान सुनाने लगे। फिर मैं बैठे-बैठे मन ही मन कई अनुमान लगाने लगा. द्वैत के बिना कैसा क्रोध हो सकता है और अज्ञान के बिना कैसा द्वैत हो सकता है? क्या माया के प्रभाव में रहने वाला एक सीमित जड़ प्राणी ईश्वर के तुल्य हो सकता है?

क्या सबके कल्याण की कामना करने से कभी दुःख हो सकता है? जिसके पास बुद्धि है, वह गरीब कैसे रह सकता है? क्या दूसरों को धोखा देने वाले निर्भय हो

सकते हैं और क्या कामी निष्कलंक रह सकते हैं? ब्राह्मण की बुराई करने से कौन सा वंश जीवित रह सकता है? स्वयं की पहचान (आत्म-ज्ञान) होने पर [आसक्ति के साथ] कौन से कार्य किए जा सकते हैं? क्या किसी की बुद्धि दुष्टों की सड़ांध से निकली है? साधक को कौन सी महान गति प्राप्त हो सकती है?

क्या जो लोग ईश्वर को जानते हैं वे जन्म और मृत्यु के जाल में पड़ सकते हैं? क्या ईश्वर की आलोचना करने वाले कभी खुश रह सकते हैं? क्या नीति को जाने बिना कोई राज्य अस्तित्व में रह सकता है? श्रीहरि का चरित्र. कौन से पाप वर्णन करने से रह सकते हैं? क्या बिना पाप किये भी कोई अपयश प्राप्त कर सकता है? क्या भगवान की भक्ति के समान कोई लाभ है, जिसकी महिमा वेद, संत और पुराण गाते हैं?

अरे भइया! क्या मानव शरीर प्राप्त करने के बाद भी श्रीगमजी की पूजा न करने के समान संसार में कोई अन्य हानि है? क्या चुगली के समान कोई दूसरा पाप भी है? और हे गरुड़जी! क्या दया के समान कोई धर्म है? इस प्रकार मैं मन ही मन अनगिनत युक्तियाँ सोचता रहता था और मुनिका का उपदेश आदरपूर्वक नहीं सुनता था। जब मैंने सगुण पक्ष को बार-बार स्थापित किया तो ऋषि क्रोधित होकर बोले -

अरे मूर्ख! मैं तुम्हें सर्वोत्तम शिक्षा देता हूँ, फिर भी तुम उसे स्वीकार नहीं करते और अनेक प्रकार के प्रतिवाद करते हो। मेरी सच्ची बातों पर विश्वास नहीं करता: वह अन्य लोगों की तरह हर किसी से डरता है। अरे मूर्ख! तुम्हारे हृदय में अपने पक्ष का बड़ा हठ है, इसलिये तुम शीघ्र ही चांडाल पक्षी (कोयल) बन जाओ। मैंने ख़ुशी-ख़ुशी साधु का श्राप अपने ऊपर ले लिया। इससे मुझे और रसोइये को नम्रता महसूस हुई।

फिर मैं तुरंत कौआ बन गया. फिर मुनि के चरणों में सिर नवाकर और रघुकुल शिरोमणि श्री रामजी का स्मरण करके मैं हर्ष से उड़ गया। शिवजी कहते हैं--]हे उमा! जो लोग श्री रामजी के चरणों के प्रेमी हैं और काम, अहंकार तथा क्रोध से मुक्त हैं, वे जगत को अपने प्रभु से परिपूर्ण देखते हैं, फिर वे किससे प्रेम करें?

[काकभुशुण्डजी ने कहा--] हे पक्षीराज गरुड़जी! सुनो, इसमें ऋषिका की कोई गलती नहीं थी. रघुवंश रत्न श्री रामजी सबके हृदय में प्रेरणा करने वाले हैं। दयालु भगवान ने ऋषि के मन को मूर्ख बनाकर मेरे प्रेम की परीक्षा ली। जब भगवान ने मन, वचन और कर्म से मुझे अपना सेवक मान लिया, तब भगवान ने फिर ऋषि का मन बदल दिया। ऋषि ने मेरा महान् पुरुषोचित स्वभाव (धैर्य, क्रोध, नम्रता आदि) तथा श्री रामजी के चरणों में विशेष श्रद्धा देखी,

तब मुनि ने बड़े दुःख से बार-बार पश्चाताप किया और आदरपूर्वक मुझे बुलाया। उन्होंने मुझे अनेक प्रकार से संतुष्ट किया और फिर प्रसन्नतापूर्वक मुझे राममंत प्रदान किया। कृपानिधान मुनि ने मुझे बाल रूप श्री राम का ध्यान (साधना की विधि) बताया। मुझे यह सुंदर और सुखदायक ध्यान वास्तव में पसंद आया। वह ध्यान मैं आपको पहले ही बता चुका हू।

हे पिता! भगवान शिव की कृपा से मुझे यह सुन्दर एवं गुप्त रामचरितमानस प्राप्त हुई। मैं तुम्हें श्री रामजी की पत्नी का भक्त जानता हू, इसलिये मैंने तुम्हें अपने सम्पूर्ण चरित्र से कह दिया। हे पिता! जिनके हृदय में श्री रामजी की भक्ति न हो उनके सामने यह बात कभी नहीं कहनी चाहिए। ऋषि ने मुझे अनेक प्रकार से समझाया। फिर मैंने प्रेम से मुनि के चरणों में सिर झुकाया।

मुनिदाचार ने अपने कर कमलों से मेरे मस्तक का स्पर्श किया और प्रसन्न होकर मुझे आशीर्वाद दिया कि अब मेरे कर कमलों से तुम्हारे हृदय में सदैव राम के प्रति अगाध भक्ति का वास रहेगा।   आप श्री रामजी को सदैव प्रिय हैं और सद्गुणों के धाम हैं, बिना सम्मान के इच्छानुसार रूप धारण करने में सक्षम हैं, इच्छामृत्यु (केवल शरीर छोड़ने की इच्छा प्रबल होने पर ही मरने वाले, बिना इच्छा के मृत्यु नहीं) और एक ज्ञान और त्याग का भण्डार।

इतना ही नहीं, जिस आश्रम में तुम प्रभु का स्मरण करते हुए निवास करोगे, वहां एक योजन (चार मील) तक भी अज्ञान (माया-मोह) नहीं फैलेगा। आप बिना किसी प्रयास के उन सभी को जान जायेंगे। श्री रामजी के चरणों में आपका नित नया प्रेम हो। आप अपने मन में जो भी इच्छा रखेंगे, श्रीहरि की कृपा से उसका पूरा होना कठिन नहीं होगा।

हे बुद्धिमान गरुड़जी! सुनो, मुनिका का आशीर्वाद सुनकर आकाश में ब्रह्माजी की गंभीर वाणी आयी- हे मुनिवर! आपकी बातें ऐसी ही (सच्ची) हों। वह कर्म, मन और वचन से मेरा भक्त है। आकाशवाणी सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई. मैं प्रेम में मग्न हो गया और मेरी सारी शंकाएँ दूर हो गईं। तदनन्तर मुनि से प्रार्थना करके, उनकी अनुमति लेकर और उनके चरणकमलों में बार-बार सिर नवाकर-

मैं प्रसन्नता के साथ इस आश्रम में आया हूं। भगवान श्रीगरमजी की कृपा से मुझे दुर्लभ वर प्राप्त हुआ। हे पक्षीराज! जब से मैं यहाँ निवास कर रहा हूँ, सत्ताईस कल्प बीत चुके हैं। मैं यहाँ सदैव श्रीरघुनाथजी का गुणगान करता हूँ और चतुर पक्षी आदरपूर्वक उसे सुनते हैं। जब-जब श्री रघुवीर अयोध्यापुरी में भक्तों के हित के लिए मनुष्य शरीर धारण करते हैं, तब-तब मैं श्री रामजी की नगरी में

जाकर रहता हूँ और भगवान की बाल लीला देखकर सुख प्राप्त करता हूँ। तब हे पक्षीराज! मैं श्री रामजी के शिशु रूप को हृदय में रखकर अपने आश्रम में आता हूँ।

मैं समय-समय पर श्री रामजी की नगरी में जाकर रहता हूँ और प्रभु की बाल लीलाओं को देखकर सुख प्राप्त करता हूँ, फिर हे पक्षीराज! मैं श्री रामजी के शिशु रूप को हृदय में रखकर अपने आश्रम में आता हूँ। इसलिये मुझे यह प्रिय है क्योंकि इसमें मुझे श्री रामजी के चरणों का प्रेम प्राप्त हुआ। इस प्रकार मुझे अपने प्रभु के दर्शन हो गये और मेरे सारे संदेह दूर हो गये।

मैं हठपूर्वक भक्ति मार्ग पर अड़ा रहा, जिसके कारण महर्षि लोमश ने मुझे शाप दे दिया; परंतु परिणाम यह हुआ कि मुझे वह वरदान प्राप्त हुआ जो ऋषियों के लिए भी दुर्लभ है। भजन की महिमा देखो. जो लोग भक्ति की ऐसी महिमा को जानकर भी उसे छोड़कर केवल ज्ञान के लिए परिश्रम (साधन) करते हैं, वे मूर्ख कामधेनु को घर में ही खड़ा छोड़कर दूध के लिए मदार के वृक्ष की खोज में जाते हैं।

हे पक्षी शिकारी! सुनो, जो लोग श्री हरि की भक्ति को छोड़कर अन्य साधनों से सुख चाहते हैं, वे मूर्ख और जड़हीन (भाग्यशाली) लोग बिना जहाज के ही महान् समुद्र को तैरकर पार करना चाहते हैं। [शिवजी कहते हैं] भवानी भुशुंडिका के वचन सुनकर गरुड़जी प्रसन्न हो गए और कोम वाणी से बोले- हे भगवन्! आपके आशीर्वाद से अब मेरे हृदय में किसी प्रकार का संदेह, दुःख, मोह तथा भ्रम नहीं रहा।

आपकी कृपा से मैंने श्री रामचन्द्रजी के पवित्र गुण सुने और शांति प्राप्त की। हे प्रभो ! अब मैं आपसे एक और बात पूछता हूं. हे कृपा के सागर! कृपया मुझे समझाएं। संत-महात्मा, वेद-पुराण कहते हैं कि ज्ञान के समान दुर्लभ कुछ भी नहीं है। हे गोसाईं! वही ज्ञान ऋषि ने तुमसे कहा था, परंतु तुमने भक्ति के समान उसका आदर नहीं किया।

यह कृपा का निवास है! हे प्रभो ! ज्ञान और भक्ति में क्या अंतर है? ये सब मुझे बताओ. गरुड़जी के वचन सुनकर सुजान काकभुशुण्डजी प्रसन्न हुए और आदरपूर्वक बोले- भक्ति और ज्ञान में कोई अंतर नहीं है। ये दोनों ही संसार में उत्पन्न होने वाले संकटों को दूर करते हैं। हे नाथ! मुनीश्वर उनके बीच कुछ अंतर बताते हैं। हे श्रेष्ठ पक्षी! उसकी बात ध्यान से सुनो.

यह हरिवाहन है! सुनना; ज्ञान, वैराग्य, योग, विज्ञान-ये सब पुरुष हैं; मनुष्य का ऐश्वर्य हर प्रकार से प्रबल होता है। अबला (माया) स्वभावतः निर्बल है और जाति (जन्म) से ही जड़ (मूर्ख) है। केवल वे ही पुरुष अपनी स्त्रियों का त्याग कर सकते हैं जो वैराग्य और धैर्यवान हैं, न कि वे कामी पुरुष जो विषयों के वश में (उनके दास) हैं और श्री रघुवीर के चरणों से दूर हैं।

यहां कोई पक्षपात नहीं है. मैं तो वेद, पुराण और संतों के मत (सिद्धान्त) ही कहता हूँ। हे गरुड़जी ! यह अनोखा तरीका है कि एक महिला दूसरी महिला की सुंदरता पर आकर्षित नहीं होती। तुम सुनो, माया और भक्ति - ये दोनों स्त्रीवर्ग की हैं, यह सब कोई नहीं जानता। तब श्री रघुवीर की भक्ति प्रिय है। बेचारी माया तो नर्तकी है ही।

श्रीरघुनाथजी भक्ति के विशेष पक्षधर हैं। इस कारण माया उनसे बहुत डरती रहती है। जिनके हृदय में बिना किसी उपमा और उपाधि के राम की भक्ति बिना किसी बाधा के सदैव निवास करती है; माया उसे देखकर शर्मिंदा हो जाती है। वह उस पर अपने अधिकार का प्रयोग कुछ भी नहीं कर सकती। ऐसा सोचकर विद्वान संत भी भक्ति को सभी सुखों का स्रोत मानकर उसका आवाहन करते हैं।

श्रीरघुनाथजी के इस रहस्य (गुप्त अर्थ) को कोई भी जल्दी से नहीं जान पाता। जो श्रीरघुनाथजी की कृपा से ऐसा जानता है, उसे आत्म-मोह में भी आसक्ति नहीं होती।

हे पिता! सुनिए यह अवर्णनीय कथा (वार्ता) इसे समझकर ही किया जा सकता है, कहीं और नहीं जा सकता. जीव इंश्वक का एक भाग है। [इसलिए] यह अविनाशी, चेतन, शुद्ध और स्वभाव से खुशी का प्रतीक है। हे गोसाईं! माया के वश में होकर वह तोते और बन्दर के समान हो गया। इस प्रकार पदार्थ और चेतना के बीच एक गाँठ बन गयी। यद्यपि वह गाँठ मिथ्या है तथापि उससे छुटकारा पाना कठिन है।

तभी से जीव सांसारिक (जन्म लेने वाला और मरने वाला) हो गया। अब न तो गांठ छूटती है और न ही उसे खुशी मिलती है। वेदों और पुराणों में अनेक उपाय बताए गए हैं, लेकिन गुत्थी दूर नहीं होती और उलझती ही जाती है। जीव के हृदय में अज्ञान का अंधकार विशेष रूप से व्याप्त है, इस कारण गांठ दिखाई नहीं देती, इससे मुक्ति कैसे हो सकती है? यहाँ तक कि जब ईश्वर भी ऐसा संयोग प्रस्तुत करता है (जैसा कि आगे बताया जाएगा) तो वह शायद ही कभी छूटता हो।

यदि श्रीहरि की कृपा से सात्तिकी की भक्तिरूपी सुन्दर गाय हृदयरूपी घर में आकर बस जाय; शास्त्रों में असंख्य जप, तप, व्रत, यम और नियम आदि शुभ धर्म और आचरण बताये गये हैं।

उन हरी घासों को [धर्म की] निवृत्ति (सांसारिक मामलों और बुराइयों से मुक्ति), नोई (गाय दुहने वाले के पिछले पैरों को बांधने के लिए एक रस्सी) कहा जाता है, आस्था दूध दुहने का एक बर्तन है, शुद्ध (पाप रहित) में। जो अपना दास (अपनी लज्जा में) है, दूध दुहने वाला अहीर है।

हे भाई, इस प्रकार (सात्तिकी भक्ति रूपी सात्तिकी भक्ति की सहायता से, मन की सहायता से) परम धर्म रूपी दूध को दोहें और उसे निःस्वार्थ भाव की अग्नि में अच्छी तरह से डालो। फिर उसे क्षमा और संतोष की वायु से ठंडा करें और धैर्य और लज्जा (मन पर नियंत्रण) की गारंटी देकर उसे जमा दें।

फिर दम (इंद्रियों का दमन) के आधार पर (दम आदि रूपी स्तंभ की सहायता से) सत्य और सुंदर वाणी रूपी रस्सी को मुदिता (आनंद) के कक्ष में रखें और मंथन करें इसे तत्त्वचर्य के रूप में और फिर इसमें से शुद्ध, सुंदर और अत्यंत शुद्ध त्याग रूपी मक्खन को निकालें।

फिर योग रूपी अग्नि को प्रकट करें और उसमें सभी अच्छे और बुरे कर्मों रूपी ईंधन को डालें (सभी कर्मों को योग की अग्नि में जला दें)। जब [वैराग्य रूपी मक्खन] और राग रूपी कीचड़ जल जाए, तब [शेष] ज्ञान रूपी घी को [दृढ़ आत्मा] द्वारा बुद्धि द्वारा ठंडा करना चाहिए।

तब विज्ञानरूपी बुद्धि ने शुद्ध घी प्राप्त करके मनरूपी दीपक को उसमें भरकर समतारूपी दीपक बनाकर उस पर दृढ़ता से रख दिया। तीन अवस्थाएं [जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति] और तीन गुण सत्त्व, रज और तम, तुरीय अवस्था रूपी रूई को बाहर निकालकर फिर संवस्कर उसे एक सुंदर और मजबूत प्रकाश बनाते हैं।

इस प्रकार तेज की राशि, 'सोजहस्मि' (जहाँ मैं हूँ) का ज्ञान, अखण्ड (तैलीय धारा जो कभी नहीं टूटती) वृत्ति, सबसे तीव्र दीपक (लो) है [उस ज्ञान के दीपक का] . [इस प्रकार] जब आत्म-अनुभव के सुख का सुंदर प्रकाश फैलता है, तो संसार में अंतर का मूल भ्रम नष्ट हो जाता है, दीपक जलाओ और पतंगें उसके पास जाते ही जल जाती हैं।

और अविद्या की महान शक्ति के मोह और मोह के परिवार का अपार अंधकार मिट जाता है। फिर वही (विज्ञान रूपी) बुद्धि [आत्म-अनुभव रूप में] प्रकाश को खोजती है और हृदय के घर में बैठती है और जड़ और चेतन की गाँठ को खोल देती है।

यदि वह (विज्ञान रूपी बुद्धि) उस गाँठ को खोलने में समर्थ हो जाये तो इस जीव का कल्याण हो जायेगा। परंतु हे पक्षीशिकारी गरुड़जी! यह जानते हुए कि गाँठ खुल रही है, माया फिर कई धमकियाँ देती है।

अरे भइया! वह अनेक ऋद्धि-सिद्धियाँ भेजती हैं, जो आकर बुद्धि को लोभ दिखाती हैं। और वे ऋद्धि-सिद्धियाँ बल और छल से समीप आकर आँचल की हवा से उस ज्ञान के दीपक को बुझा देती हैं। यदि बुद्धि बहुत बुद्धिमान हो जाती है तो वह उन्हें (ऋद्धि-सिद्धियों को) हानिकारक समझकर उनकी ओर देखती ही नहीं। इस प्रकार यदि बुद्धि माया के विघ्नों से बाधित न हो तो देवता विपन विशेषण कहते हैं।

इंद्रियों के दरवाजे हृदय के घर की कई खिड़कियाँ हैं। वहां (प्रत्येक खिड़की पर) देवता थॉर्नी किम डे विराजमान हैं। जैसे ही वे व्यक्तिपरकता की हवा आते देखते हैं, हठपूर्वक अपने दरवाजे खोल देते हैं। तेज हवा दिल के घर में घुसते ही विज्ञान का दीपक बुझ जाता है।

गाँठ भी नहीं गयी और वह प्रकाश (आत्मबोध रूपी) भी लुप्त हो गया। विषय की हवा लगने से बुद्धि व्याकुल हो गयी (सब किये-बनाए काम नष्ट हो गये)।

ज्ञान [स्वाभाविक रूप से] इंद्रियों और उनके देवताओं के अनुकूल नहीं है; क्योंकि उनके कामुक सुखों में सदैव प्रेम रहता है। और बुद्धि को भी पराधीनता की बयार ने उन्मत्त बना दिया। फिर (फिर) उस ज्ञान का दीपक उसी प्रकार कौन जलाएगा?

[इस प्रकार जब ज्ञान का दीपक बुझ जाता है] तब जीव अनेक प्रकार से संसति (जन्म-मृत्यु आदि) कष्ट भोगता है। हे पक्षीराज! हरिकी की माया बड़ी कठिन है, इसे आसानी से नहीं धोया जा सकता।

ज्ञान को कहना (समझाना) कठिन है, समझना कठिन है और अभ्यास करना तो और भी कठिन है। यदि संयोगवश (संयोगवश) यह ज्ञान प्राप्त भी हो जाए तो [इसे सुरक्षित रखना आवश्यक होगा। बहुत सारी समस्याएँ हैं. ज्ञान का मार्ग तलवार (दोधारी तलवार) पकड़ने जैसा है।

यह पक्षियों का राजा है! इस रास्ते से करें जिसमें ज्यादा समय नहीं लगता. जो बिना किसी अलगाव के इस मार्ग का अनुसरण करता है, उसे केवल्य (मोक्ष) के रूप में सर्वोच्च पद प्राप्त होता है। परन्तु हे गोसाईं! वही (दुर्लभ होते हुए भी) श्री रामजी की भक्ति करने से बिना इच्छा के भी मुक्ति बलपूर्वक मिल जाती है।

जिस प्रकार भूमि के बिना जल का अस्तित्व नहीं हो सकता, चाहे कोई कितने ही उपाय क्यों न कर ले। बस, हे पक्षियों के राजा! सुनो, श्रीहरि की भक्ति के बिना मोक्ष का सुख भी नहीं हो सकता। ऐसा सोचकर बुद्धिमान हरि भक्त भक्ति के प्रलोभन में आकर मोक्ष का तिरस्कार करते हैं। भक्ति करने से संसति (जन्म-मृत्यु का संसार) की जड़ अज्ञान, बिना किसी प्रयत्न व परिश्रम के (स्वतः) नष्ट हो जाता है।

जिस प्रकार भोजन तृप्ति के लिए किया जाता है और जठराग्नि स्वतः ही उस भोजन को (हमारे ध्यान के बिना) पचा लेती है, ऐसा कौन मूर्ख होगा जो ईश्वर की ऐसी सहज एवं परम सुखदायी भक्ति न चाहेगा? गरुड़जी साँपों के शत्रु हैं।

इस भावना के बिना कि मैं सेवक हूं और भगवान मेरे सेवक (स्वामी) हैं, कोई भी संसार सागर में तैर नहीं सकता। ऐसा सिद्धांत समझकर श्री रामचंचरजी के चरणकमलों की पूजा करो।

वे प्राणी धन्य हैं जो चेतन प्राणियों को जड़ और जड़ को चेतन बनाने वाले ऐसे शक्तिशाली श्रीरघुनाथजी की पूजा करते हैं। ज्ञान का तत्त्व समझाकर कहा। अब भक्तिरूपी मणि की महिमा सुनो। वह स्वतः ही दिन-रात परम प्रकाश स्वरूप में रहता है।

उसे किसी दीपक, घी या रोशनी की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार मनिका एक प्राकृतिक ज्योति बनी रहती है। तब छद्म सौन्दर्य निकट नहीं आता [क्योंकि मणि कट गई है। है]; और [तीसरे] लोभ की हवा उस रत्न दीपक को नहीं बुझा सकती क्योंकि रत्न स्वयं प्रकाश स्वरूप है, वह किसी अन्य की सहायता से चमकता नहीं है।

[इसके प्रकाश से] अज्ञान का शक्तिशाली अंधकार गायब हो जाता है। मदादी पतंगों का पूरा समूह हार गया। जिसके हृदय में भक्ति का वास होता है उसके पास काम, क्रोध, लोभ आदि दुष्ट प्राणी भी नहीं फटकते। उसके लिए विष अमृत के समान हो जाता है और दुश्मन मित्र बन जाता है. उस रत्न के बिना

किसी को सुख नहीं मिलता। बड़े-बड़े मानसिक रोग, जिनके कारण सभी प्राणी दुःखी हो रहे हैं, उस पर प्रभाव नहीं डालते।

श्री राम - भक्ति रूपी मणि जिसके हृदय में बसती है, उसे स्वप्न में भी तनिक भी दुःख नहीं होता। इस संसार में वे ही लोग चतुरों के मुकुटमणि हैं जो उस भक्ति रूपी रत्न की यात्रा भली-भांति करते हैं। इसे पाने के आसान तरीके हैं, लेकिन दुर्भाग्यशाली लोग उन्हें अस्वीकार कर देते हैं।

संतों [जो इन खानों के रहस्यों को जानते हैं] के पास मार्मी [खुदाई करने वाले] की सुंदर बुद्धि है। यह एक कुदाल है. हे गरुड़जी ! ज्ञान और वैराग्य-ये उनकी दो आँखें हैं।

जो प्राणी इसे प्रेम से खोजता है, उसे समस्त सुखों की खान यह भक्ति रूपी रत्न मिल जाता है। हे प्रभो ! मेरे मन में ऐसी धारणा है कि श्री रामजी का सेवक श्री रामजी से भी बड़ा है। श्री रामचन्द्रजी समुद्र हैं और धैर्यवान संत बादल हैं। श्रीहरि चंदन के वृक्ष हैं और संत वायु हैं। सभी साधनों का फल सुन्दर ईश्वर भक्ति है। बिना संत के कोई नहीं पा सकता।

जो कोई ऐसा विचारकर संतों की संगति करता है, हे गरुड़जी! उसके लिए श्री रामजी की भक्ति सहज हो जाती है। ब्रह्म (वेद) सागर है, ज्ञान सागर है और संत देवता हैं, जो उस सागर को मथकर कथा का अमृत निकालते हैं, जिसमें भक्ति का माधुर्य रहता है।

वैराग्य की ढाल से स्वयं की रक्षा करके और ज्ञान की तलवार से अहंकार, लोभ और छल रूपी शत्रुओं को मारकर जो विजय प्राप्त होती है, वही हरि भक्ति है। हे पक्षियों के राजा! कृपया इस पर विचार करें. पक्षीराज गरुड़जी पुनः प्रेमपूर्वक बोले- हे दयालु! हे प्रभु, यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो, तो मुझे अपना सेवक समझो और मेरे सात प्रश्नों के उत्तर बताओ।

आप संत और तपस्वी के बीच अंतर, उनके प्राकृतिक स्वभाव का वर्णन करते हुए जानते हैं। तो फिर कहो, शास्त्रों में वर्णित सबसे बड़ा पुण्य कौन सा है और सबसे भयानक पाप कौन सा है? फिर मानसिक बीमारियों के बारे में बताएं. आप सर्वज्ञ हैं और मुझ पर आपकी बहुत कृपा है। [काकभुशुण्डजी ने कहा--]हे पिताजी! अत्यंत आदर और प्रेम से सुनें. मैं आपको इस नीति के बारे में संक्षेप में बताता हूं।

मानव शरीर के समान कोई नहीं है। चलते-फिरते सभी प्राणी उन्हीं से प्रार्थना करते हैं। यह मानव शरीर नर्क, पाताल और मोक्ष की सीढ़ी है तथा कल्याणकारी ज्ञान, वैराग्य और भक्ति प्रदान करने वाला है।

जो लोग ऐसे मानव शरीर धारण करके भी श्री हरिका भजन नहीं करते और निम्नतम विषयों में भी आसक्त रहते हैं, वे पारसमणि को अपने हाथ से फेंक देते हैं और बदले में कांच के टुकड़े ले लेते हैं। दयालु संत, भूर्ज वृक्ष की तरह, दूसरों के लाभ के लिए बड़े-बड़े कष्ट सहते हैं (यहाँ तक कि अपनी चमड़ी भी उधड़वा लेते हैं)।

परन्तु दुष्ट लोग पागलों की नाईं दूसरों को बान्धते हैं, और अपना चमड़ा खिंचवाते हैं, और कष्ट उठाते हैं, और मर जाते हैं। हे साँपों के शत्रु गरुड़जी! सुनना; दुष्ट लोग साँप और चूहों की तरह, बिना किसी स्वार्थ के, बिना किसी कारण के दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं। दूसरे की संपत्ति को नष्ट करने से वे स्वयं नष्ट हो जाते हैं, जैसे खेती को नष्ट करने से ओले नष्ट हो जाते हैं। प्रसिद्ध दुष्ट ग्रह केतु के उदय की तरह पाप का उदय संसार के दुःख के लिए ही होता है।

और संतों का उदय सदैव सुखद होता है, जैसे चंद्रमा और सूर्य का उदय पूरे विश्व के लिए सुखद होता है। वेदों में अहिंसा को परम धर्म माना गया है और परनिन्दा के समान कोई घोर पाप नहीं है।

जो व्यक्ति शंकरजी और गुरु की निंदा करता है, वह अगले जन्म में मेंढक बनता है और हजारों जन्मों तक उसी मेंढक का शरीर प्राप्त करता है। जो व्यक्ति ब्राह्मणों की निंदा करता है, वह अनेक नरक भोगता है और फिर इस लोक में दूसरे शरीर में जन्म लेता है।

जो अहंकारी प्राणी देवताओं और वेदों की निन्दा करते हैं, वे रौरव नरक में गिरते हैं। जो लोग संतों की निंदा में लगे रहते हैं, वे उल्लू हैं, जिन्हें अंधकार रूपी रात्रि प्रिय है और जिनके लिए ज्ञान रूपी सूर्य अस्त हो चुका है। वे मूर्ख लोग सबकी निंदा करते हैं। चमगादड़ के रूप में जन्म और रोग सुनो, जिससे सभी लोग पीड़ित होते हैं। जन्म लो. सभी रोगों की जड़ मोह (अज्ञान) है। वे बीमारियाँ फिर अनेक शूल उत्पन्न करती हैं। काम वात है, लोभ अपार (बढ़ा हुआ) कफ है और क्रोध पित्त है जो सदैव छाती को जलाता है।

यदि कहीं ये तीनों भाई (वात, पित्त और कफ) आपस में प्रेम करें (एक साथ आ जाएं) तो कष्टदायक सन्निपात रोग उत्पन्न हो जाता है। जिन कामनाओं का

प्राप्त होना (पूरा होना) कठिन है, वे सभी शूल (कष्टकारी रोग) हैं; उनके नाम कौन जानता है (अर्थात् वे अपार हैं)।

प्रेम दाद है, ईर्ष्या खुजली है, हर्ष और विषाद गले के रोगों (गण्डमाला, कण्ठमाला या ग्रासनली आदि) की बहुतायत है, दूसरे का सुख देखकर जो ईर्ष्या उत्पन्न होती है वह क्षय है। मन की दुष्टता और दुष्टता कोढ़ है। अहंकार बड़ा कष्टकारी रोग है। अहंकार, छल, अभिमान और अहंकार। पैसा (नस) एक बीमारी है. प्यास एक बहुत ही गंभीर बीमारी है. तीन प्रकार की प्रबल इच्छाएँ (पुत्र, सम्मान) प्रबल निधि हैं।

मत्सर और अविवेक दो प्रकार के बुखार हैं। इस प्रकार अनेक बुरी बीमारियाँ हैं, जिनका मैं उल्लेख करूँ। नियम, धर्म, आचरण (उत्तम आचरण), तप, ज्ञान, यज्ञ, जप, दान और कोटि-कोटि औषधियां हैं, परंतु हे गरुड़जी! ये बीमारियाँ उनसे दूर नहीं होतीं।

इस प्रकार संसार के सभी प्राणी रोगी हैं, जो दुःख, हर्ष, भय, प्रेम और वियोग से अधिक दुःखी होते जा रहे हैं। मैंने इन्हें कुछ प्रकार की मानसिक बीमारियाँ कहा है। ये सबके पास हैं, लेकिन कुछ ही लोग इन्हें जान पाए हैं।

प्राणियों को जलाने वाले ये पाप रोग (रोग) मारने से क्षीण अवश्य हो जाते हैं, परन्तु नष्ट नहीं होते। विषय-वस्तु के रूप में नकारात्मक विचार प्राप्त करके ये बातें तो ऋषि-मुनियों के हृदय में भी अंकुरित हो जाती हैं, फिर बेचारे आम लोगों की तो बात ही क्या है। यदि श्री रामजी की कृपा से ऐसा संयोग बन जाए तो ये सभी रोग नष्ट हो जाएं। सद्गुरु रूपी वेद्य के वचनों पर विश्वास रखें। वस्तुओं की आशा न करो, यही संयम (संयम) होना चाहिए।

श्रीरघुनाथजी की भक्ति ही जीवन का मूल है। विश्वास से परिपूर्ण बुद्धि अनुपान (औषधि के साथ लिया जाने वाला शहद आदि) है। यदि ऐसा संयोग हो तो वे रोग नष्ट हो सकते हैं, अन्यथा करोड़ों प्रयत्नों से भी दूर नहीं होते। हे गोसाईं! मनुष्य को यह जानना चाहिए कि हृदय में वैराग्य की शक्ति बढ़ने से मन स्वस्थ रहता है, सद्बुद्धि रूपी भूख दिन-प्रतिदिन बढ़ती रहती है और आशा रूपी दुर्बलता दूर हो जाती है।

हे पक्षियों के राजा; उन सबका मत यही है कि श्री रामजी के चरणकमलों में प्रेम करना चाहिए। श्रुति, पुराण और सभी शास्त्र कहते हैं कि श्री रघुनाथजी की भक्ति के बिना सुख नहीं मिलता। भले ही कछुए की पीठ पर बाल उगते हों, भले ही ए बंजर का बेटा किसी को मार दे, चाहे वह आसमान पर ही क्यों न हो। अनेक

प्रकार के फूल खिलते हैं; परंतु श्रीहरि से विमुख होकर प्राणी को सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती।

भले ही मृगतृष्णा का जल पीने से प्यास बुझ जाए, भले ही खरगोश के सिर पर सींग आ जाएं, भले ही बर्फ से अंधेरा छा जाए या आग दिखाई दे (भले ही ये सभी अनहोनी हो जाएं), लेकिन मुंह मोड़ने से किसी को सुख नहीं मिल सकता श्री राम से. सूरज को नष्ट करो; परंतु श्री राम से विमुख होकर प्राणी को सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती।

भगवान मच्छर को ब्रह्मा बना सकते हैं और ब्रह्मा को मच्छर से भी बदतर बना सकते हैं। ऐसा विचार करके चतुर मनुष्य सब संशय छोड़कर केवल भगवान् राम का ही भजन करते हैं। मैं तुम्हें एक सुप्रतिष्ठित सिद्धांत बताता हूं - मेरी बात अन्यथा (झूठी) नहीं है कि जो मनुष्य श्री हरिका का भजन करते हैं, वे अत्यंत कठिन संसार सागर को [सहजता से] पार कर जाते हैं। हैं।

हे नाथ! मैंने श्री हरिका के अनूठे चरित्र के बारे में अपनी बुद्धि के अनुसार कुछ विस्तार से और संक्षेप में कहा है। हे साँपों के शत्रु गरुड़जी! श्रुतियों का यही सिद्धांत है कि मनुष्य को सब काम भूलकर श्री रामजी का भजन करना चाहिए। भगवान श्रीरघुनाथजी को छोड़कर और किसकी पूजा करनी चाहिए, जिनका मुझ से बढ़कर मूर्ख पर भी अधिक स्नेह (स्नेह) हो। हे नाथ! आप विज्ञान स्वरूप हैं, आपकी कोई आसक्ति नहीं है। आपने मुझ पर बड़ी कृपा की।

आपने मुझसे शुकदेवजी, सनकादि तथा शिवजी को प्रिय परम पवित्र रामकथा के विषय में पूछा। एक क्षण या एक घंटे का एक सतसद भी संसार में दुर्लभ है। हे गरुड़जी! मन में विचार करो कि क्या मैं भी श्री रामजी की प्रशंसा का पात्र हूँ? मैं पक्षियों में सबसे नीच और सब प्रकार से अपवित्र हूँ। लेकिन इसके बावजूद, भगवान ने मुझे पूरी दुनिया को पवित्र करने वाले के रूप में प्रसिद्ध किया [या भगवान ने मुझे दुनिया में प्रसिद्ध और पवित्र बनाया।

हे नाथ! मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार कहा, मैंने कुछ भी छिपाकर नहीं रखा। [फिर भी। श्री रघुवीर के चरित्र समुद्र के समान हैं; क्या कोई उनकी थाह ले सकता है? सुजान भुशुण्डिजी श्री रामचन्द्रजी के अनेक गुणों का स्मरण करके बार-बार प्रसन्न हो रहे हैं। वेदों ने 'नेति-नेति' कहकर जिनकी महिमा गाई है; जिनकी शक्ति, ऐश्वर्य और प्रभुत्व अतुलनीय है;

श्रीरघुनाथजी, जिनके चरण शिवजी और ब्रह्माजी पूजते हैं, मुझ पर कृपा करना उनकी परम कोमलता है। ऐसी भावना मैंने कभी किसी से नहीं सुनी या देखी.

अत: ये पक्षीराज गरुड़जी हैं! श्रीरघुनाथजी के समान मैं किसके पास गिरूं (समझूं)?

साधक, सिद्ध, जीवन से मुक्त, उदासीन, कवि, विद्वान, कर्म [रहस्य] का ज्ञाता, भिक्षु, योगी, बहादुर आदमी, महान तपस्वी, ज्ञानी, भक्त, विद्वान और वैज्ञानिक--

इनमें से कोई भी मेरे प्रभु श्री राम की पूजा किये बिना जीवित नहीं रह सकता. मैं उन्हीं श्रोरामाजी को बार-बार प्रणाम करता हूं। मैं उन अविनाशी श्री रामजी को नमस्कार करता हूँ, जिनकी शरण पाकर मेरे जैसे पापी भी पवित्र (पापरहित) हो जाते हैं। जिसका नाम जन्म-मरण का रोग है [अर्थहीन। जो औषधि तथा तीनों भयंकर दुःखों (आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक दुःख) को दूर करने वाले हैं, वे दयालु श्री रामजी मुझ पर और आप पर सदैव प्रसन्न रहें।

भुशुण्डि जी के कठोर वचन सुनकर और श्री राम जी के चरणों में उनका अगाध प्रेम देखकर गरूड़ जी संशय से मुक्त होकर प्रेमयुक्त वचन बोले। श्री रघुबीर की भक्ति के रस से सराबोर आपकी वाणी सुनकर मैं कृतज्ञ हो गया। श्री रामजी के चरणों में मेरा फिर प्रेम हो गया और माया के सारे कष्ट दूर हो गये।

अँधेरे समंदर में डूबते वक्त तुम मेरे लिए जहाज बन गये। हे प्रभु, आपने मुझे अनेक प्रकार के सुख दिये हैं (अत्यंत प्रसन्न किया है)। मैं प्रतिदान (किसी उपकार के बदले में कोई उपकार) नहीं कर सकता। मैं आपके चरणों की बार-बार वन्दना करता हूँ।

कवियों ने कहा है कि संतों का हृदय मक्खन के समान होता है; परन्तु वे नहीं जानते थे कि [असली बात] कैसे कहें; क्योंकि मक्खन अपनी गर्मी से पिघलता है और परम पवित्र संत दूसरों के दुःख से पिघलते हैं।

मेरा जीवन और जन्म सफल हो गया। आपकी कृपा से सभी संदेह दूर हो गये। मुझे सदैव अपना दास समझना. [शिवजी कहते हैं--] हे उमा! पशिश्रेष्ठ गराडजी बार-बार यही कहते रहे हैं। उनके (भुशुण्डिजी के) चरणों में प्रेम से सिर झुकाकर और श्री रघुवीर को हृदय में धारण करके धैर्यवान गरुड़जी फिर बेकुण्ठ के पास गये।

अरे चर्चो! संत-मिलन के समान दूसरा कोई लाभ नहीं है। परन्तु वह (संत-समागम) श्री हरिको कप के बिना नहीं हो सकता, यही वेद और पुराण गाते हैं। मैंने यह परम पवित्र इतिहास कहा है, जिसे कानों से सुनने से भवपाश (संसार

के बच्चे) मुक्त हो जाते हैं और भक्तों को कल्पवृक्ष (जो उनकी इच्छा के अनुसार फल देता है) मिलता है और श्री रामजी के चरण कमलों में प्रेम उत्पन्न होता है। दया का समूह.

जो मनुष्य इस कथा को कान और मन से सुनते हैं, उनके मन, वचन और कर्म (शरीर) से उत्पन्न होने वाले सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। तीर्थयात्रा आदि अनेक साधन, योग, वैराग्य और ज्ञान में प्रवीणता, अनेक प्रकार के कर्म, धर्म, व्रत और दान, अनेक संयम, शक्ति, जप, तप और यज्ञ, कृतज्ञता, दया, ब्राह्मणों और गुरुओं की सेवा; केवल ज्ञान, शील और बुद्धि की महिमा [आदि]

जहाँ तक वेदों ने साधन बताये हैं, हे भवानी! श्रुतियों में गाई गई श्री रघुनाथ जी की वह भक्ति उन सभी की श्री हरि हरि की भक्ति है। श्री रामजी की कृपा से सभी को कोई (दुर्लभ) ही ऐसा करता है, परंतु जो मनुष्य बिना किसी परिश्रम के इस कथा को श्रद्धापूर्वक निरंतर सुनते हैं, उन्हें उस दुर्लभ हरि भक्ति की प्राप्ति होती है, जिसका मन श्री राम के चरणों में रहता है जी. वह सब कुछ जानने वाला है, वह बुद्धिमान है, वह बुद्धिमान है, वह बुद्धिमान है और वह परिवार का रक्षक है।

जो छल-कपट छोड़कर श्री रघुवीर को भजता है, वही नीति में निपुण है, वही परम बुद्धिमान है। उसे वेदों के सिद्धान्तों को भली प्रकार जानना होगा। वही कवि, वही विद्वान और वही रणधीर। वह देश धन्य है जहाँ श्रीगढ़जी हैं, वह खत्री धन्य है जो पतिव्रत-धर्म का पालन करता है। वह राजा धन्य है जो न्याय करता है और वह ब्राह्मण धन्य है जो अपने धर्म से नहीं डिगता।

वह धन धन्य है जिसकी पहली गति होती है (जो दान देने में खर्च होता है)। वह बुद्धि धन्य और परिपक्व है जो सदाचार में लगी रहती है। वह क्षण धन्य है जब सतसद हो और वह जन्म धन्य है जिसमें ब्रह्म के प्रति अखंड भक्ति हो।

[धन के तीन चरण हैं--दान, भोग और नाश। दान सर्वोत्तम है, भोग मध्यम है और विनाश निम्नतम है। जो मनुष्य न देता है और न भोगता है, उसके धन की तीसरी गति होती है।

हाय उमा. सुनना। वह कुल धन्य है, सारे संसार द्वारा पूजित है और परम पवित्र है, जिसमें श्री रघुवीरपरायण (अनन्य राम) के सामान्य भक्त एक विनम्र व्यक्ति का जन्म हुआ है। यह कथा मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार कही है, यद्यपि पहले मैंने इसे छिपाकर रखा था। जब मैंने तुम्हारे हृदय में प्रेम की प्रचुरता देखी, तब मैंने तुम्हें श्री रधुनाथजी की यह कथा सुनाई।

यह कथा उन लोगों को नहीं सुनानी चाहिए जो धूर्त, जिद्दी हैं और श्रीहरिकी लीला को मन लगाकर नहीं सुनते। यह कथा लोभी, क्रोधी तथा कामी मनुष्यों को नहीं सुनानी चाहिए, जो प्रभु श्री रामजी का भजन नहीं करते। ब्राह्मणों को धोखा देने वाला, चाहे वह देवराज (इंद्र) के समान धनवान राजा ही क्यों न हो, यह कहानी कभी नहीं सुनानी चाहिए। श्री राम की कथा के अधिकारी वही हैं जिन्हें सत्संगति बहुत प्रिय है।

जिनके मन में गुरु के चरणों में प्रेम है, जो नीतिज्ञ हैं और ब्राह्मणों के सेवक हैं, वे ही इसके अधिकारी हैं। और जिनके लिये श्रीरघुनाथजी प्राणों के समान प्रिय हैं, उनके लिये यह कथा अत्यन्त सुखदायक है॥ जो कोई श्री रामजी के चरणों में प्रेम चाहता हो या मोक्ष चाहता हो, उसे अपने दोनों कानों से प्रेमपूर्वक इस कथा रूपी अमृत का पान करना चाहिए।

अरे चर्चो! मैं कलियुग के पापों का नाश करने वाला और मन के मैल को दूर करने वाला हूं। वर्णित राम की कहानी. यह रामकथा संसृति (जन्म-मृत्यु) रूपी रोग को नष्ट करने वाली है, ऐसा वेद और विद्वान पुरुष कहते हैं। इसमें सात सुंदर सीढ़ियाँ हैं, जो श्री रघुनाथजी की भक्ति प्राप्त करने का मार्ग हैं। इस मार्ग पर केवल वही कदम रखता है जिस पर श्री हरिकी की कृपा होती है।

जो मनुष्य छल-कपट छोड़कर इस कथा को गाते हैं, उन्हें मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। जो लोग इसे सुनते हैं और इसका अनुमोदन करते हैं, वे गाय के खुर से बने गड्ढे की तरह संसार सागर से पार हो जाते हैं। याज्ञवल्क्यजी कहते हैं - सारा वृत्तांत सुनने के बाद श्री पार्वतीजी को बहुत प्रिय लगा और उन्होंने सुंदर स्वर में कहा - स्वामी की कृपा से मेरा संदेह दूर हो गया और श्री रामजी के चरणों में नया प्रेम उत्पन्न हो गया।

जय विश्वनाथ! आपकी कृपा से मैं अब सफल हो गया हूँ। मेरे अंदर राम के प्रति दृढ़ भक्ति उत्पन्न हो गई और मेरे सभी कष्ट दूर हो गए। शम्भु-उमा का यह हितकारी संवाद सुख की प्राप्ति और दुःख का नाश करता है। वह जन्म और मृत्यु को समाप्त करने वाले, संदेहों का नाश करने वाले, भक्तों को आनंद देने वाले और संतों के प्रिय हैं।

विश्व के सभी रामभक्तों को इस रामकथा के समान कोई अन्य वस्तु प्रिय नहीं है। श्रीरघुनाथजी की कृपा से मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार इस सुन्दर तथा पवित्र करने वाले चरित्र का गान किया है। माहि सुमिरिया गैया रामहि। संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहीं। [तुलसीदासजी कहते हैं---] इस कलिकाल में योग, यज्ञ, जप,

तप, व्रत और पूजा आदि के समान कोई साधन नहीं है, केवल श्री रामजी का स्मरण करना चाहिए, श्री रामजी के गुण गाने चाहिए और निरंतर उनके गुण सुनने चाहिए श्रीराम जी।

पतितों को पवित्र करना ऐसे कवियों, वेदों, संतों और पुराणों का महान (प्रसिद्ध) कार्य है, मेरा हृदय गाता है! सभी दुष्टताएँ त्यागें और केवल उसकी पूजा करें। श्री राम की पूजा करके किसे परम आनंद की प्राप्ति नहीं हुई है? अरे मूर्ख मन! सुनो, पतितों को भी पवित्र करने वाले श्री राम की पूजा करके किसने परम गति प्राप्त नहीं की है?

उन्होंने गणिका, अजामिल, व्याध, गिद्ध, गज आदि आभीर, यवन, किरात, खस, श्रापच (चपदल) आदि अनेक दुष्टों को परास्त किया, जो अत्यंत पापी हैं और केवल एक बार उनका नाम लेने से ही पवित्र हो जाते हैं, उन श्री को मेरा नमस्कार है रामजिस.

श्री रामचन्द्रजी ही एकमात्र सुन्दर, कृपालु और कृपालु तथा अनाथों से प्रेम करने वाले हैं॥ उनके समान दूसरा कौन है जो निःस्वार्थ कल्याण करता है और मोक्ष देता है? यह है? श्री रामजी के समान कोई भगवान नहीं है, जिनके साथ मंदबुद्धि तुलसीदास को भी परम शांति प्राप्त हुई।

हे श्री रघुवीर! मेरे समान कोई विनम्र नहीं है और आपके समान दीन-दुखियों का हित करने वाला कोई नहीं है। ऐसा सोचो हे रघुवंशमणि! मेरे जन्म और मृत्यु के दारुण दुःख को दूर कर दीजिये।

जैसे कामी को स्त्री से और लोभी को धन से प्रेम होता है, वैसे ही हे रघुनाथजी! हे राम जी ! तुम मुझे हमेशा प्रिय लगते हो. दुर्ग मानस-रामायण, जिसकी रचना पहले महाकवि भगवान श्री शंकरजी ने श्री रामजी के चरणकमलों में निरंतर [असीमित] भक्ति प्राप्त करने के लिए की थी, उस मानस-रामायण को श्री रघुनाथजी के नाम पर समर्पित मानकर तुलसीदास ने व्यक्त किया अपने अंतःकरण के अत्याचार को दूर करने के लिए इसे इस मानस के रूप में धारण किया।

यह श्री रामचरितमानस पुण्य स्वरूप, पापों का नाश करने वाला, सदैव कल्याणकारी, ज्ञान और भक्ति का दाता, माया, मोह और अपवित्रता का नाश करने वाला, परम शुद्ध प्रेम के जल से परिपूर्ण है। और शुभ है. जो लोग भक्ति

भाव से मन के इस सरोवर में गोता लगाते हैं, वे संसार रूपी सूर्य की तीव्र किरणों से नहीं जलते।

बोलो सियावर राम की जय!

बोलो बजरंगबली की जय !

इति श्री रामचरितमानस - गद्य विशेषांक (गद्य रामायण) समाप्त होता है।

इस प्रकार श्री रामचरितमानस - गद्य विशेषांक (गद्य रामायण) समाप्त होता है।

समाप्त

श्री रामायण

श्री रामचरितमानस

गद्य विशेषांक

<u>समाप्त</u>